

मानस्य
अनुक्रमणिका



श्री बडाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

जय हो तुलसीदास की

जन्तिल जिन में जन्म हुआ है राम इनका
सकल ब्रह्मण्डल जिसका कीड़ापूर्ण प्रसन्न
इस कुल मता को जिसने जन्मुत किया था
मानदता को सत्य राम का रूप दिया था
नाम-मिस्त्राण किया रत्न से मूल्य निकाला
अन्धकार-भव-बीघ नाम-मणि-दीपक बाला
दीन रहा, पर चिन्तामणि वितरण करता था
भक्ति-सुधा से जो सन्ताप हरण करता था
प्रभु का निर्मय सेवक था, स्वामी था अपना
जाग चुका था, जग था जिसके आगे सपना
प्रबल प्रचारक था जो उस प्रभु की प्रभुता को
अनुभव था सम्पूर्ण जिसे उसकी विभुता का
राम छोड़कर और की, जिसने कभी न आस की।
'राम-चरित-मानस'-कमल, जय हो तुलसीदास की ॥

• जयशंकर प्रसाद



बेदन उधारयो हिन्दू जगत सँभार्यो
धर्म डूबत उबार्यो फार्यो उदर कली को है।
भाषा कविताई की बड़ाई तिहुँ लोक छाई
गई कुटिलाई वामपंथ पर्यो फीको है ॥
दूरि भए दुरित दया की पैज पूरी भई
प्रगट जवाल भयो जवनन के जी को है।
दसौं अवतारन महीं कीन्ह्यो करतार जीन
तौन करिबे को अवतार तुलसी को है ॥

• विजयानन्द त्रिपाठी

ॐ

मानस - अनुक्रमणिका

गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस की
पंक्तियों का अकारादि क्रम के अनुसार संदर्भ कोश
(आधार : गीताप्रेस, गोस्वपुर द्वारा प्रकाशित ग्रंथ)

परामर्शदाता :

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री

संयोजक :

कृष्ण स्वरूप दीक्षित

सम्पादक :

डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी

डॉ० उषा द्विवेदी



प्रकाशक :

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

कलकत्ता

प्रकाशक :

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

१सी, मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट

कलकत्ता-७०० ००७

दूरभाष : २३८-८२१५

अप्रैल १९९८

२५०० प्रतियाँ

प्रकाशन समिति :

जुगल किशोर जैथलिया

नेमचन्द कन्दोई

विमल लाठ

महावीर बजाज

त्रिभुवन तिवारी

तारा दूगड़

मूल्य : २५० रुपए

अक्षर संयोजन :

जवाहिर प्रिंट्स

१६१/१, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता-७

आवरण - सज्जा :

श्रीजीव अधिकारी

मुद्रक :

छपते-छपते प्रकाशन प्रा. लि.

२६सी, क्रीक रो, कलकत्ता-१४

Manas Anukramanika

Rs. 250/-

तुलसी-पंचशती
के
पावन अवसर पर
तुलसी-भक्तों
को
सादर समर्पित

प्राक्कथन

गोस्वामी तुलसीदास की पंचशती के अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने अपने साहित्यिक उत्तरदायित्व का पालन करते हुए कई कार्यक्रम आयोजित किए। पंचशती-वर्ष को अविस्मरणीय बनाने के लिए एक भव्य-प्रकाशन की योजना भी हमारे मस्तिष्क में थी परन्तु गोस्वामीजी के विराट साहित्य पर ग्रंथों, स्मारिकाओं तथा प्रकाशनों का विपुल भंडार देखते हुए आलोचनात्मक ग्रंथ के प्रकाशन को लेकर उल्हासपोह बना रहा।

प्रकाशन हेतु कई प्रस्ताव सामने आए किन्तु अन्त में रामचरितमानस की पंक्तियों के अकारादि क्रमानुसार संदर्भ कोश प्रकाशन की आवश्यकता पर बल देने वाला प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। वास्तव में इस प्रकार के ग्रंथ का अभाव हर मानस-प्रेमी को खटकता रहा है।

अपने बहुमुखी गुणों के कारण श्रीरामचरितमानस जन-जन का कंठहार है। उसकी पंक्तियाँ एक ओर श्रद्धालु भक्तों के लिए मंत्र सदृश हैं तो दूसरी ओर उसकी उक्तियाँ तुलसी की टकसाल से निकली हुई प्रेरक वाणियों के रूप में सर्वसाधारण का मार्गदर्शन हर परिस्थिति में करती रहती हैं। मानस एवं मानसकार की लोकप्रियता का अन्दाजा इसी बात से लग जाता है कि सामान्य जन संदर्भ ज्ञात न होने पर भी मानस की पंक्तियों का धड़ल्ले से प्रयोग करते रहते हैं। फिर भी कभी-कभी उद्धृत करनेवाले को समग्र संदर्भ की या पाठ संबंधी शंका उत्पन्न होने पर शुद्ध पाठ के ज्ञान की उत्कंठा बनी रहती है। वे विद्वज्जन भी ऐसी आवश्यकता का अनुभव करते हैं जो अपने आलेखों में पंक्तियों का शुद्ध पाठ तथा सही संदर्भ प्रस्तुत करना चाहते हैं।

इन परिस्थितियों का सामना करने वाले सहृदय पाठक हमारी इस बात से सहमत होंगे कि इस विराट ग्रंथ की पंक्ति-विशेष का संदर्भ खोजना कितना दुरूह कार्य है। शायद ही कोई ऐसा मानसप्रेमी होगा जिसे इस स्थिति से गुजरकर श्रीरामचरितमानस की अनुक्रमणिका की आवश्यकता का अनुभव न हुआ हो।

इसी अभाव की पूर्ति के लिए पावन तुलसी पंचशती वर्ष में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने 'मानस अनुक्रमणिका' प्रकाशन का संकल्प किया। यह ठीक है कि मानस-अनुक्रमणिका का प्रकाशन हमारा कोई अनूठा या प्रथम प्रयास नहीं है। इस ग्रंथ से पूर्व भी इस

दिशा में दो-तीन प्रकाशन हमारी दृष्टि में आये हैं। शाहजहाँपुर से सं० २०२७ में प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस वर्णानुक्रमणिका' (रचयिता: मोहिनी श्रीवास्तव) तथा सागर (म०प्र०) से सं० २०३९ में प्रकाशित 'मानस मुक्ता' (संपादक: मुरलीधर अग्रवाल) ग्रंथ इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय हैं। इन प्रकाशनों की प्रसार-संख्या अत्यंत सीमित होने के कारण ये सर्वसुलभ नहीं हैं। अधिसंख्य मानस-प्रेमियों को इस प्रकार के प्रकाशन की जानकारी भी नहीं है। हमारे इस प्रकाशन से मानस-प्रेमियों की आवश्यकता की कुछ मूर्ति अवश्य होगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

अपने पूर्ववर्ती प्रकाशकों तथा संपादकों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुए उनकी निष्ठा तथा समर्पण भाव के प्रति हम अपनी प्रणति निवेदित करते हैं। हम विशेष रूप से आभारी हैं उन सहयोगियों के, जिनके आर्थिक सौजन्य से यह ग्रंथ प्रकाशित हो सका है। हम कृतज्ञ हैं गीता प्रेस, गोरखपुर के भी, जिनके द्वारा मुद्रित 'श्रीरामचरित- मानस' को इस अनुक्रमणिका का आधारग्रंथ बनाया गया है।

भक्तों की दृष्टि में 'श्रीरामचरितमानस' भगवान श्रीराम का वाङ्मय रूप है। प्रभु का यह रूप श्रद्धालु जन यथोचित रूप से ग्रहण कर सकें यही इस प्रकाशन की मूल भावना है।

पूरी सावधानी एवं प्रयासों के बावजूद इस ग्रंथ में त्रुटियाँ रह जाना असम्भव नहीं है, हमें विश्वास है कि सुधी पाठक 'संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकार' की भावना से हमें क्षमा करेंगे और त्रुटि की सूचना लिखित रूप से हमें देने की कृपा करेंगे ताकि अगले संस्करण में हम उसे सुधार सकें।

हमारा यह प्रयास श्रीरामचरितमानस के उन पाठकों को अवश्य संतोष प्रदान करेगा जो वर्षों से ऐसी अनुक्रमणिका की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे। हमें विश्वास है कि भावुक भक्त, सहृदय पाठक तथा सुधी साहित्यकार इस प्रकाशन का स्वागत करेंगे।

पाठ संकेत

यह ग्रंथ दो भागों में विभाजित है। प्रथम खंड में अर्द्धाली के प्रथम अंश को तथा द्वितीय खण्ड में अर्द्धाली के द्वितीय अंश को अकारादि क्रम से प्रस्तुत किया गया है। उदाहरणार्थ :

सीय राम मय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥१-७॥२

इस अर्द्धाली का पहला अंश 'सीयराम मय सब जग जानी' प्रथम खण्ड (आद्याक्षरी) में है तथा दूसरा अंश 'करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी' द्वितीय खण्ड (मध्याक्षरी) के अन्तर्गत रखा गया है।

प्रत्येक पंक्ति के बाद जो संख्याएँ दी गई हैं उनका विश्लेषण पाठक को इस रूप में करना चाहिए :- प्रारंभिक संख्या १ का तात्पर्य प्रथम सोपान अर्थात् बालकाण्ड से है। मध्य में आई संख्या ७ का संकेत दोहा संख्या से लेना चाहिए तथा परवर्ती संख्या २ का तात्पर्य दोहे के बाद की दूसरी पंक्ति से लगाना चाहिए। इस प्रकार ऊपर छपी पंक्ति के पार्श्व में मुद्रित संख्या १-७॥२ का अर्थ हुआ - बालकाण्ड के सातवें दोहे के बाद की दूसरी पंक्ति।

दोनों खण्डों में पंक्ति के ठीक बाद लिखी १, २, ३, ४, ५, ६, ७ संख्याएँ क्रमशः बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड का संकेत देती हैं।

छंदों, सोरठों, दोहों की आरंभिक आधी पंक्ति को आद्याक्षरी में ही रखा गया है। मध्याक्षरी में केवल चौपाइयाँ ही संकलित हैं। श्लोकों के लिए संदर्भ में 'श्लोक' का प्रयोग किया गया है।

ग्रंथ में दोहों की मुद्रित संख्या के पूर्व जो छंद या सोरठ आदि आए हैं उनकी गणना पूर्ववर्ती दोहे के क्रमांक के बाद पंक्ति के अनुसार की गयी है। उदाहरणार्थ सुन्दरकाण्ड में तीसरे दोहे के पूर्व १२ पंक्तियाँ का छंद है - कनक कोट विचित्र मनिकृत सुंदरायतना घना। इस छंद की अंतिम पंक्ति 'रघुवीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही' का संकेत दूसरे दोहे के बाद आई ११ चौपाइयों के बाद १२ जोड़कर अर्थात् ५-२॥२३ के अनुसार दिया गया है। कांड के प्रारंभ में प्रथम दोहे के पूर्व की पंक्तियाँ ० (शून्य) के बाद रखी गई हैं।

शक्ति स्तव



मामभिरक्षय रघुकुलनायक ।
धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥

ॐ

श्री गणेशाय नमः



श्री जानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस - अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड : आद्याक्षरी

अ

अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । ६-३६	अग्य अकोबिट अंध अमागी । १-११४।१
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । १-११३	अग्य जानि रिस उर जनि धरहू । १-१०८।२
अकल अगुन अज अनघ अनामय । ६-१०९।६	अग्या पुनि पुनि माइन्ह दीन्ही । १-३५५।६
अकल अनीह अनाम अरूपा । ७-११०।४	अग्या सम न सुसाहिब सेवा । २-३००।४
अखिल बिस्व यह मोर उपाया । ७-८६।७	अगर घूप बहु जनु अँधिआरी । १-११४।५
अग जग जीव नाग नर देवा । ७-९३।७	अगवानन्ह जब दीखि बराता । १-३०४।७
अग जगमय जग मम उपराजा । ७-५९।५	अगुन अखंड अनंत अनादी । १-११३।४
अग जगमय सब रहित बिरागी । १-१८४।७	अगुन अदम्य गिरा गोतीता । ७-७१।५
अगनित भुवन फिरेउँ प्रमु । ७-८१।०क	अगुन अमान जानि तेहि । ६-३१।०क
अगनित रवि ससि सिव चतुरानन । १-२०१।१	अगुन अमान मातु पितु हीना । १-६६।८
अगनित लोकपाल जम काला । ७-७९।६	अगुन अरूप अलख अज जोई । १-११५।२
अगम देखि नृप अति पछिताई । १-१५६।८	अगुन अलेप अमान एकरस । २-२९८।६
अगम पंथ बन भूमि पहारा । २-९७।७	अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । १-२२।१
अगम सनेह भरत रघुबर को । २-२४०।५	अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । १-२०।८
अगम सबहि बरनत बरबरनी । २-२८।१	अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । ६-११४।३
अगमु पंथु गिरि कानन भारी । २-१११।६	अघ अवगुन छमि आदरहिं । २-२३३।०

अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । ४३०४
 अघ कि पिसुनता सम कछु जाना । ४-१११।१०
 अचल करौ तनु राखहु प्राणा । ४-१२
 अचल होउ अहिवातु तुम्हारा । २-६८८
 अछत अंकुर लोचन लाजा । १-३४५।५
 अघबौइ दीन्हे पान गवने । १-९८।१२
 अछत राम राजा अवध । २-२४३।०
 अज व्यापकनेकमनादि सदा । ६-११०।४
 अज महेश नारद सनकादी । ६-१०४।२
 अजर अमर गुननिधि सुत होहु । ५-१६।३
 अजर अमर सो जीति न जाई । १-८१।७
 अजस पेटारी ताहि करि । २-१२।०
 अजसु लोक परलोक दुख । २-२१८।०
 अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । २-४४।१
 अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ । २-१२३।१
 अजहुँ देत दुख रबि ससिहि । १-१४०।०
 अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी । १-१४०।५
 अजहुँ बल्ल बलि धीरज धरहु । २-१६४।५
 अजहुँ कछु संसउ मन मोरें । १-१०८।५
 अजहुँ तात त्वागि अभिमाना । ६-६२।२
 अजहुँ मानहु कहा हमारा । १-४१।१
 अजहुँ हृदउ जरत तेहि आँचा । २-३१।५
 अजा अनादि सनि, अबिनासिनि । १-९४।३
 अजिन बसन फल असन महि । २-२११।०
 सङ्गहास करि यज्ज । ५-२५।०
 अटनु राम गिरि बन तापस थल । २-२४१।७
 अदुकि परहि फिरि हेरहि, पीछें । २-१४२।६
 अति अकेल बन बिपुल कलेसू । १-१५६।६
 अति अघ गुर अपमानता । ४-१०६।४

अति अनुराग अंब उर लाए । २-२४४।५
 अति अनूप जहँ जनक निवासू । १-२१२।७
 अति अपार जे सरित बर । १-१३।०
 अति आदर खगपति कर कीन्हा । ४-६२।७
 अति आदर दोउ तनय बोलाए । १-२०४।२
 अति आदर रघुनायक कीन्हा । ४-४४।२
 अति आदर सब कपि पहुँचाए । ४-१८।६
 अति आदर समीप बैठारी । ६-३४।४
 अति आनंद उमगि अनुरागा । २-१००।४
 अति आरति कहि कथा सुनाई । १-१३१।५
 अति आरति पूछउँ सुरराया । १-१०९।३
 अति आरति सब पूँछहि रानी । २-१४४।१
 अति उत्तंग गिरि पादप । ६-१।०
 अति उत्तंग जलनिधि बहु पासा । ५-२।११
 अति कटुबचन कहति कैकेई । २-२१।८
 अति कृपाल रघुनायक । ३-१।०
 अति कोप करहि प्रहार भारत । ६-११।१३
 अति कोमल रघुबीर सुमाऊ । ५-५६।५
 अति खल जे बिषई बग कागा । १-३४।३
 अति गर्ब गनइ न संगुन असगुन । ६-४४।१०
 अति गहगहे बाजने बाजे । १-२८५।१
 अति डरु उतरु देत न्युप नाही । १-२६३।५
 अति तरल तरुन प्रताप तरपहि । ६-४०।११
 अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा । ४-१०५।८
 अति दीन मलीन दुखी नितहीं । ४-१३।११
 अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । ४-११८।३
 अति नागर मव सागर सेतुः । ३-१०।१४
 अति निर्मल बानी अस्तुति टानी । १-२१०।६
 अति नीचहु सन प्रीति । ४-१५।४

अति परिताप सीय मन माहीं । १-२५७।८
 अति प्रबंड रघुपति के माया । १-१२७।८
 अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी । ३-४२।११
 अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे । १-१२।१४
 अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी । ७-३।७
 अति प्रीति लौकिक रीति लागीं । १-३२६।१६
 अति पुनीत गिरिजा के करनी । १-७५।८
 अति प्रेम अधोरा पुलक सरीस । १-२१०।३
 अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि । १-८६।११
 अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटीं । ७-५।१२
 अति प्रेम हृदयें लगाइ अनुजहि । ७-४।१०
 अति बड़ि मोरि टिटाई खोरी । १-२८।११
 अतिबल कुमकरन अस भ्राता । १-१७१।३
 अतिबल मधुकैटम जेहिं मारे । ६-५।७
 अति बिचित्र कछु बरनि न जाई । ३-२६।२
 अति बिचित्र तहें लोक अनेका । ७-७१।४
 अति बिचित्र बाहिनी बिराजी । ६-७८।५
 अति बिचित्र भगवत गति । ३-७७।०
 अति बिचित्र रघुपति चरित । १-४१।०
 अति दिनीत बोलेउ बचन । ७-१७।३
 अति दिनीत मृदु सीतल बानी । १-२७८।१
 अति दिवाद बस लोग लोगी । ३-५०।७
 अति दिस्तार चारु मघ दासी । १-२२३।२
 अति बिसमय पुनि पुनि मछिताई । ७-११२।५
 अति बिसाल तरु एक उपारा । ५-१८।५
 अति रिच बोले बचन कठोरा । १-२६१।३
 अति लघु बात लागि दुखु पाया । २-४४।७
 अति लघु रूप धरौं निसि । ५-३।०
 अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । ५-४।४

अति लालसा बसहिं मन माहीं । ३-१०१।३
 अति सनेह बस सखी सयानी । १-३३३।६
 अति सनेह सादर भरत । २-११८।०
 अति सप्रेम तन पुलकि बिधि । ६-११०।०
 अति सप्रेम सिय पायें परि । ३-११७।०
 अति समीत कह सुनु हनुमाना । ४-०।३
 अति समीत नारद पहिं आए । १-१३८।२
 अति सरोब माखे लखनु । ३-२३०।०
 अति सुकुमार जुगल मेरे बारे । ७-६।८
 अति सुकुमार न तनु तप जोगू । १-७३।२
 अति सुंदर दीन्हेउ जनबासा । १-३०५।६
 अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला । १-७१।२
 अति संघरथन जौ कर कोई । ७-११०।१६
 अति हरष मन तन पुलक लोचन । ६-१०६।१९
 अति हरषु राजसभाज दुहु दिसि । १-३१६।१९
 अति हरि कृपा जाहि पर होई । ७-१२८।४
 अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । १-३१।८
 अतिसय देखि धर्म के रत्नानी । १-१८३।४
 अतिसय प्रबल देव तव माया । ४-२०।२
 अतिसय प्रीति देखि रघुबीसा । ३-९।१४
 अतिसय प्रीति देखि रघुराई । ६-११८।११
 अतिसय बड़नागी चरनन्हि लागी । १-२१०।४
 अनुलित बल अनुलित प्रनुताई । ३-१।१२
 अनुलितबलधाम..... । ५-३६३।११
 अनुलित बल प्रताप द्वी भ्राता । ३-२१।७
 अनुलित भुज प्रताप बल धाम । ३-१०।१५
 अदभुत सलिल सुनत गुनकारी । १-४२।२
 अधम जाति मैं बिद्या पाएँ । ७-१०५।३
 अधम ते अधम अधम अति नारी । ३-३४।३

अघम निसाचर लीन्हें जाई । ३-२८८
 अघम सिरोमनि तव पद पावा । ६-१०१/१०
 अघर अरुन रद सुंदर नासा । १-१४६/१२
 अधर लोम जम दसन कराला । ६-१४४/५
 अधिक प्रीति मन भा संदेहा । ६-७९/१२
 अधिक सनेहें गोद बैठारी । १-९५/७
 अधिक सनेहें देह भै भोरी । १-२३१/६
 अत्र कनकभाजन भरि जाना । १-१००/८
 अत्र सौ जोड़ जोड़ भोजन करई । १-१६७/६
 अनमिल आखर अरथ न जापू । १-१४४/६
 अनरथु अवध अरंभेउ जब तें । २-१५६/५
 अनल टाहि पीटत घनहिं । ७-३७/०
 अनवध अखंड न गोचर गो । ६-११०/१५
 अनुसुइया के पद गहि सीता । ३-४/१
 अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई । ७-१०/५
 अनहित तोर प्रिया केई कीन्हा । २-२५/१
 अनारंभ अनिकेत अमानी । ७-४५/६
 अनिप अकंपन अरु अतिकाया । ६-४५/१०
 अनिमादिक सिधि अपर रिधि । ७-८३/७
 अनिमादिक सुख संपदा । ७-२९/०
 अनुचित आजु कहब अस मोरा । २-२८२/७
 अनुचित उचित काजु किछु होऊ । २-२३०/३
 अनुचित उचित बिचारु तजि । २-१७४/०
 अनुचित कहि सब लोग पुकारे । १-२७५/८
 अनुचित नाथ न मानब मोरा । २-२२८/७
 अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता । १-२८४/६
 अनुज उठाइ हृदयें तेहि लागो । ६-६३/७
 अनुज क्रिया करि सागर तीरा । ४-२७/१
 अनुज जानकी सहित निरंतर । ६-११४/८

अनुज जानकी सहित प्रभु । ६-११२/०
 अनुज जानकी सहित प्रभु । ३-११/०
 अनुज बधू भगिनी सुत नारी । ४-८/७
 अनुज राज संपति बैदेही । ७-१५/६
 अनुज सखा सँग भोजन करहीं । १-२०४/४
 अनुज समेत गए प्रभु तहवीं । ३-२९/५
 अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना । ५-३०/३
 अनुज समेत देहु रघुनाथा । १-२०६/१०
 अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । ६-१११/२
 अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । ५-४५/३
 अनुज सहित सिर जटा बनाए । २-९३/४
 अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । ७-२५/३
 अनुपम बालक देखेन्हि जाई । १-११२/८
 अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर । १-३२४/२३
 अनूप रूप भूपतिं । ३-३/२१
 अपडर डरेउँ न सोच समूलें । २-२६६/३
 अपतु अजामितु गजु गनिकाऊ । १-२५/७
 अपनैं चलत न आजु तगि । २-२०/०
 अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी । १-२७३/६
 अपनयें कुटिल महीप डेराने । १-२८४/८
 अपर जलचरन्हि उपर । ६-४/०
 अपर देउ अस कौउ न आही । १-२९९/८
 अपर नाम उडगन विमल । ३-४२/०
 अपर महोदर आदिक बीरा । ६-६१/१२
 अपर सुतहि अरिभर्दन नामा । १-१५२/६
 अपर हेतु सुनु सैलकुमारी । १-१४०/१
 अपराधु छमिबो बोलि पटए । १-३२५/१८
 अब अति कीन्हेहु भरत मल । २-२०७/०
 अब अपलोकु सोकु सुत तोरा । ६-६०/१३

अब अभिलाषु एकु मन मोरें ।२-२७७
 अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली ।१-२७५।४
 अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी ।१-७४।२
 अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें ।२-१०१।७
 अब करि कृपा देहु बर एहू ।२-१०६।८
 अब करि कृपा बिलोकि मोहि ।६-११३।०
 अब करुनाकर कीजिअ सोई ।२-२६७।२
 अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी ।१-१३।३
 अब कहु कुसल बाति कहैं अहई ।६-२०।७
 अब कुसल कौसलनाथ आरत ।७-४।१५
 अब कुसल पद पंकज बिलोकि ।६-१२०।१५
 अब कृतकृत्य भयउँ मै माता ।५-१६।६
 अब कृपाल जस आयसु होई ।२-३०६।७
 अब कृपाल निज भगति पावनी ।५-४८।७
 अब कृपाल मोहि सो मत भावा ।२-२६८।७
 अब गृह जाहु सखा सब ।७-१६।०
 अब गोसाईं मोहि देखै रजाई ।२-३१२।८
 अब जन गृह पुनीत प्रमु कीजे ।६-११५।५
 अब जनमि तुम्हरे भवन ।१-१७।११
 अब जनि कबहूँ ब्यापे ।१-२०२।०
 अब जनि करहि बिर अपमाना ।७-१०८।१२
 अब जनि कोउ माखै मट मानी ।१-२५१।३
 अब जनि देखै दोसु मोहि लोगू ।१-२७४।३
 अब जनि बतबद्दाव खल करही ।६-२१।१
 अब जनि राम खेलावहु एही ।६-८५।६
 अब जहै राउर आयसु होई ।२-१२५।२
 अब जाना मै अवध प्रभावा ।७-१६।५
 अब जानी मै श्री चतुराई ।३-५।७
 अब जाँ तात दुरावउँ तोही ।१-१६१।४

अब जाँ तुम्हहि सुता पर नेहू ।१-७१।१
 अब तव सिर मुज जंबुक खाहीं ।६-१०३।१२
 अब तहैं रहहिं सक के प्रेरे ।१-१७८।२
 अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू ।२-१७६।७
 अब तुम्ह मम अनुसासन मानी ।१-११७।८
 अब तें रति तव नाथ कर ।१-८७।०
 अब तोहि नौक लाग करु सोई ।२-३५।६
 अब दसस्थ कहैं आयसु देहू ।१-३३।१७
 अब दीनदयाल दया करिऐ ।६-११०।११
 अब देखि प्रमु पद कंज ।६-११२।१२
 अब धौं कहा करिहि करतास ।६-१७।१
 अब नाथ करि करुना बिलोकहु ।४-१।१०
 अब पति मृषा गाल जनि मारहु ।६-३५।७
 अब पद देखि कुसल रघुराया ।५-४५।८
 अब प्रमु कृपा करहु एहि माँती ।४-६।२१
 अब प्रमु घरित सुनहु अति पावन ।३-०।२
 अब प्रमु परम अनुग्रह तोरें ।२-११४।८
 अब प्रमु संग जाउँ गुर पाहीं ।३।११।३
 अब प्रसन्न मै संसय नाही ।१-१६३।५
 अब बिधि अस बूझिअ नहिं तोही ।१-५८।४
 अब बिनती मम सुनहु सिव ।१-७६।०
 अब बिलंबु केहि काम ।६-०४
 अब बिलंबु केहि कारन कीजे ।५-३३।७
 अब भरि अंक भेंदु मोहि माई ।६।६२।७
 अब ना झूठ तुम्हार पन ।१-८१।०
 अब मरिहि स्वि एहि बिधि सुनहि ।६-१८।१७
 अब मारुतसुत दूत समूहा ।४-१८।४
 अब मुनिवर बिलंब नहिं कीजे ।७-१।८
 अब मै कुसल मिटे भय भारे ।५।४६।५

अब मैं जन्मु संमु हित हारा । १-८०।२
 अब मोहि आपनि किकरि जानी । १-१११।४
 अब मोहि मा भरोस हनुमंता । १-६।४
 अब रघुपति पद पंकरुह । १-४३।४
 अब लागि मोहि न मिलेउ कोउ । १-१६१।४
 अब श्रीराम कथा अति पावनि । ४-६३।३
 अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई । २-३६।१७
 अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं । १-३२१।७
 अब साघेउँ रिपु सुनहु नरेसा । १-१७०।३
 अब सुख सोवत सोधु नहिं । १-७१।०
 अब सुनहु दीन दयाल । ६-११२।१०
 अब सुनु परम बिमल मम बानी । ४-८५।१
 अब सुम कहा सुनहु तुम्ह मोरा । ६-११।६
 अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । ४-५७।२
 अब सो मंत्र देहु प्रमु मोही । ३-१२।३
 अब सोइ कहउँ प्रसंग सब । १-३५।०
 अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । ६-१०७।१
 अब सोइ जतनु करहु मन लाई । ४-२०।८
 अब हम नाय सनाथ सब । २-१३५।०
 अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वय । ४-१२।१७
 अबला कथ मूढन भूरि छुधा । ४-१०१।१
 अबला बालक बृद्ध जन । २-१२।१०
 अबला बिलोकहि पुरुषमय । १-८४।११
 अबहिं मालु मैं जाउँ लवाई । १-१५।३
 अबहीं ते उर संसय होई । ६-१।३
 अबिगत अवस्थ अपार । २-१२६।०
 अबिगत गोतीत चरित पुनीत । १-१८५।६
 अबिचल राजु द्विभूषन पायो । ६-१०६।८
 अबिनय विनय जयारुचि बानी । २-२११।८

अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई । ३-१।१३
 अबिरल भगति बिरति विग्याना । ३-१०।२६
 अबिरल भगति बिरति सतसंगा । ३-१२।११
 अबिरल भगति बिसुद्ध तव । ४-८४।४
 अबिरल भगति मागि बर । ३-३२।०
 अभिमत दानि देवतरु बर से । १-२१।११
 अमर नाग किंनर दिसिपाला । २-१३।११
 अमर नाग नर राम बाहुबल । २-२८।७
 अमल अचल मन त्रोन समाना । ६-७१।११
 अमलमखिलमनद्वयमपारं । ३-१०।१२
 अमिअ मूरिमय चूरन चारु । १-०।२
 अमित दानि भर्ता बयदेही । ३-४।६
 अमित नाम भट कटिन कराला । १-५३।८
 अमितबोध अनीह मितमोगी । ३-४४।८
 अमित रूप प्रगटे तेहि काला । ४-५।५
 अयमय खाँड न उखमय । १-२७।५
 अरथ अनूप सुभाव सुभासा । १-३६।६
 अरथ धरम कामादि सुख । १-१५।४।०
 अरथ धरम कामादिक चारी । १-३६।११
 अरथ न धरम न काम रुचि । २-२०।४।०
 अर्क जवात्त पात बिनु भयाउ । ४-१४।३
 अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्ह । १-१८।१।३
 अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ । ६-६०।२
 अर्ध राति पुर द्वार पुकारा । ४-५।३
 अरि बस टैउ जिआवत जाही । २-२०।२
 अरिहुक अनमल कीन्ह न रामा । २-१८।२।६
 अरुण नयन राजीव सुवेशं । ३-१०।७
 अरुन वरन पंकज नख जोती । १-११।८।२
 अरुन नयन उर बाहु बिसाला । १-२०।८।१

अरुन नयन बारिद तनु स्थामा । ६-८५।९
 अरुन नयन मृकुटी कुटिल । १-२६७।०
 अरुन पराग जलजु भरि नीके । १-३२४।९
 अरुन पानि नख करज मनोहर । ७-७६।९
 अरुनोदर्य सकुचे कुमुद । १-२३८।०
 अरुंधती अरु अग्नि समाऊ । २-१८६।५
 अल्पमृत्यु नहीं कवनिउ पीरा । ७-२०।५
 अलिंगन गावत नावत मोरा । २-२३५।७
 अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं । २-२७५।९
 अवगुन एक मोर मैं माना । ५-३०।५
 अवगुन तजि सब के गुन गहहीं । २-१३०।९
 अवगुन मूल सूत्रप्रद । ३-४४।०
 अवगुन सिंधु मंदमति कामी । ७-३९।७
 अवघट घाट बाट गिरि कंदर । ६-७२।६
 अवतरेउ अपने मगत हित । १-५०।१२
 अवतार उदार अपार गुन । ६-११०।६
 अवतार नर संसार मार । ७-१२।३
 अवध उजारि कीन्ह कैकेई । २-२८।९
 अवध तहाँ जहाँ राम निवासू । २-७३।३
 अवध प्रबेसु कीन्ह औंधिजार । २-१४६।५
 अवध प्रभाव जान तब प्राणी । ७-९६।७
 अवध समीप पुनीत दिन । १-३४३।०
 अवधनाथु चाहत चलन । १-३३३।०
 अवध नृपति दसस्थ के जाए । ३-२१।३
 अवध राजु सुर राजु सिहाई । २-३२३।६
 अवधपुरी अति रुचिर बनाई । ७-१०।९
 अवधपुरी नर नारि तेहि । ७-८८।७
 अवधपुरी प्रति भुवन निनारी । ७-८०।६
 अवधपुरी प्रमु आवत जानी । ७-२।९

अवधपुरी बसिन्ह कर । ७-२६।०
 अवधपुरी सम प्रिय नहीं सोऊ । ७-३।४
 अवधपुरी सोहइ एहि माँती । १-१९४।३
 अवधपुरी रघुकुलमनि राऊ । १-१८७।७
 अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । २-५६।२
 अवधि मेँटि जो बिनु सुधि पाएँ । ४-२५।८
 अवधेस सुरेस रमेस बिभो । ७-१३।२
 अवनि जगहि जावति कैकेई । २-२५१।६
 अवनिप अकनि रामु पगु धारे । २-४३।१
 अवलोकनि बोलनि मिलनि । १-४२।०
 अवलोकि खरतर तीर । ३-१९।३
 अवलोकि निज दल बिकल भट । ३-१९।२१
 अवलोकि रघुकुल कमल रवि । १-३१८।१२
 अवलोकि सकहिं न सकुच । १-१९।१२
 अवलोकि सीलु सुमाउ प्रमु को । १-३२०।१२
 अवलोके रघुपति बहुतेरे । १-५४।४
 अवलंब भवत कथा जिन्ह के । ७-१३।१२
 अवसर जानि बिभीषनु आवा । ५-३७।२
 अवसर जानि सप्तारिषि आए । १-८८।७
 अवसि अत्रि आयसु सिर घरहू । २-३०७।५
 अवसि काज मैं करिहउँ तोरा । १-१६७।३
 अवसि चलिअ बन रामु जहाँ । २-१८४।०
 अवसि दूनु मैं पठइब प्राता । २-३०।७
 अवसि नरेस बघन फुर करहू । २-१७४।१
 अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी । २-५२।३
 अस अनुमानि सोच परिहरहू । २-१६०।४
 अस अनंदु अविरिजु प्रतिग्रामा । २-२२२।८
 अस अभिमान जाइ जनि मोरे । ३-१०।२१
 अस अगिलाषु नगर सब काहू । २-२३।७

अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्ह ॥१-१६॥
 अस उर धरि महि बिचरहु जाई ॥१-१३०॥
 अस कपि एक न सेना माहीं ॥४-२१३॥
 अस कवन सठ हटि काटि सुरतरु ॥४-११॥
 अस कस कहहु मानि मन ऊना ॥२-२०॥
 अस कहि अट्टहास सठ कीन्ह ॥६-३१॥
 अस कहि अति सकुचे रघुराऊ ॥२-२८१॥
 अस कहि आयसु पाइ पद ॥६-६०॥
 अस कहि अंगद मारा लाता ॥६-८४॥
 अस कहि फटिन बान संधाने ॥६-४१॥
 अस कहि कपि गदगद भयउ ॥५-१४०॥
 अस कहि कपि सब चले तुरंता ॥७-५८१०॥
 अस कहि करत दंडवत देखा ॥५-४५११॥
 अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ॥५-४०१६॥
 अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ॥२-३३११॥
 अस कहि गरुड़ गीघ जब गयऊ ॥४-२८१५॥
 अस कहि गई अपछरा जबहीं ॥६-५०१३॥
 अस कहि गहे नरेस पद ॥१-१६१०॥
 अस कहि गे विश्रामगृह ॥१-३५५१०॥
 अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही ॥७-१०१८॥
 अस कहि चला बिनीषनु जबहीं ॥५-४१११॥
 अस कहि चला महा अग्निमानी ॥४-०१११॥
 अस कहि चला रघिसि मग माया ॥६-५६११॥
 अस कहि चले देवरिषि ॥७-५११०॥
 अस कहि चलेउ बालिसुत ॥७-१११७॥
 अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई ॥१-८३१३॥
 अस कहि छाड़ैसि बान प्रखंडा ॥६-८२१३॥
 अस कहि जोग अग्नि तनु जारा ॥१-६३१८॥
 अस कहि जोग अग्नि तनु जारा ॥३-८१११॥

अस कहि तरल त्रिसूल चलायो ॥ ६-७३१६॥
 अस कहि दोउ भागे भयै भारी ॥ १-१३४१०॥
 अस कहि नयन नीर मरि ॥ ६-७०॥
 अस कहि नारद सुमिरि हरि ॥ १-७०१०॥
 अस कहि पग परि पेम अति ॥ २-२८५१०॥
 अस कहि परी चरन धरि सीसा ॥ १-७०१०॥
 अस कहि परेउ चरन अकुलाई ॥ ४-२१५॥
 अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई ॥ ५-५०१६॥
 अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा ॥ ३-५११०॥
 अस कहि प्रभु सब कथा बखानी ॥ २-१२४१८॥
 अस कहि प्रेम बिबस भए भारी ॥ २-३००१५॥
 अस कहि फिरि धितए तेहि ओरा ॥ १-२२११३॥
 अस कहि बहुत भाँति समुझाई ॥ ६-१११११॥
 अस कहि बिबिध बिलाप ॥ ३-२११०॥
 अस कहि बिहसि ताहि उर लाई ॥ ५-३६१५॥
 अस कहि बंधु समेत नहाने ॥ २-२२१५८॥
 अस कहि भले भूप अनुरागे ॥ १-२४११०॥
 अस कहि भेंट सँजोवन लागे ॥ २-११२१२॥
 अस कहि मरुत बेग रथ साजा ॥ ६-७०१०॥
 अस कहि मातु भरत हियेँ लाए ॥ २-१६८१५॥
 अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आए ॥ ७-४११११॥
 अस कहि मुरुछि परा महि राऊ ॥ २-८११८॥
 अस कहि रघुपति चाप चढ़ाया ॥ ५-५०१५॥
 अस कहि रवेउ रुचिर गृह नाना ॥ २-२१३१४॥
 अस कहि रथ रघुनाथ चलावा ॥ ६-८१११॥
 अस कहि रही चरन गहि रानी ॥ १-३३६१११॥
 अस कहि राउ सहित सुत रानी ॥ १-३५११८॥
 अस कहि राम गवनु तब कीन्ह ॥ २-४५१५॥
 अस कहि राम तिलक तेहि सारा ॥ ५-४८११०॥

अस कहि लखनु ठाउँ देखरावा । २-१३२।५
 अस कहि लगे जपन हरिनामा । १-५१।८
 अस कहि लछिमन कहूँ कपि ल्यायो । ६-८३।५
 अस कहि लवन सिंधु तट जाई । ४-२५।१०
 अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ । २-१५३।४
 अस कहि सब महिदेव सिघार । १-१७४।१
 अस कहि सारद गइ बिधि लोका । २-२९४।८
 अस कहि सीय बिकल भइ मारी । २-६७।१
 अस को जीव जंतु जग मारी । २-१६१।६
 अस कौतुक करि राम सर । ६-१३।४
 अस कौतुक बिलोकि द्वो भाई । ६-४।१
 अस जानि संसय तजहु गिरिजा । १-१७।१२
 अस जियै जानि रहिअ सोइ ठाउँ । २-१२५।५
 अस जियै जानि जानकी देखी । १-२६०।४
 अस जियै जानि तजहु कुटिलाई । २-२१८।८
 अस जियै जानि दसानन संग । ३-२५।७
 अस जियै जानि भजहि मुनि । ७-६२।४
 अस जियै जानि सुजान सिरोमनि । २-६५।७
 अस जियै जानि सुजान सुदानी । २-२०३।८
 अस जियै जानि सुनहु सिख भाई । २-७०।१
 अस जियै जानि संग बन जाहू । २-७३।८
 अस तप काहुँ न कीन्ह भवानी । १-७४।१
 अस तव रूप बखानउँ जानउँ । ३-१२।१३
 अस तीस्थपति देखि सुहावा । २-१०५।२
 अस दीनबंधु कृपाल अपने । ३-४५।१०
 अस निज हृदयै बिचारि । १-११५।०
 अस पन तुम्ह विनु करइ को जाना । १-५६।५
 अस प्रभु छाडि भजहि जे जाना । ५-४१।१
 अस प्रभु दीनबंधु हरि । १-२११।०

अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी । ६-४४।६
 अस प्रभु हृदयै अछत अबिकारी । १-२२।७
 अस बरु तुम्हहिं मिलाउब आनि । १-७९।४
 अस बरु मागि चरन गाहि रहेऊ । १-१५०।७
 अस बिचारि उर छाडहु कोहू । २-४१।१
 अस बिचारि केहि देइअ दोसू । २-१७१।१
 अस बिचारि खल बघउँ न तोही । ६-३०।५
 अस बिचारि गवनहु घर भाई । १-२४४।४
 अस बिचारि गुहै ग्याति सन । २-१८१।०
 अस बिचारि जस आयसु होई । २-५९।६
 अस बिचारि जियै जागहु ताता । ६-६०।८
 अस बिचारि जुबराज । ६-१७।४
 अस बिचारि जे तम्य बिसारी । ६-७३।२
 अस बिचारि जे परम सयाने । ७-४०।६
 अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी । ७-११५।८
 अस बिचारि जोइ कर सतसंगा । ७-१११।११
 अस बिचारि तजि संसय । ७-१२२।४
 अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका । १-७१।४
 अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू । २-१२।१
 अस बिचारि प्रगटउँ निज मोहू । १-४५।१
 अस बिचारि मजु मोहि । ७-८७।४
 अस बिचारि मतिघोर । ७-९०।४
 अस बिचारि मन माहिं । १-१४०।०
 अस बिचारि रघुबंस मनि । ७-१३०।७
 अस बिचारि सब सोच बिहाई । २-३१४।६
 अस बिचारि सुधि सेवक बोले । २-१८५।६
 अस बिचारि सुनु प्रानपति । ६-१५।४
 अस बिचारि सोइ करहु उपाई । २-५६।३
 अस बिचारि सोइ करहु जो भावा । २-७८।५

अस बिचारि सोचहि मति माता । १-१६।६
 अस बिचारि संकरु मतिघोरा । १-५६।३
 अस बिचारि हरि मगत स्याने । ७-११८।७
 अस बिबेक जब देइ बिघाता । १-६।९
 अस बिबेक राखेहु मन माहीं । ७-१०८।१५
 अस भ्रष्ट अवास ना संसास । १-१८२।११
 अस मन आनि मुदित नर नारी । २-२७२।२
 अस मन गुनइ राउ नहि बोला । २-४४।३
 अस मन गुनत चले मग जाता । २-२३३।४
 अस मन समुझु कहति जानकी । १-८।८
 अस मम जिवन बंधु बिनु तोही । ६-६०।१०
 अस मानस मानस चरख चाही । १-३८।९
 अस मैं अधम सखा सुनु । १-४।०
 अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । २-२६८।६
 अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । १-५४।३
 अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो । २-३१३।५
 अस सज्जन मम उर बस कैसै । १-४४।७
 अस समर्थ रघुनायकहि । ७-११९।४
 अस समुझत मन संसय होई । १-१४९।७
 अस स्वामी एहि कहै नितिहि । १-६७।०
 अस सुभाउ कहूँ सुनउँ न देखउँ । ७-१२३।४
 अस संजोग ईस जब करई । ७-११६।८
 अस संसय आनत उर माहीं । १-११८।६
 अस संसय मन भयउ अपारा । १-५०।४
 अस्त मरै बिगसत भई । ७-१।४
 अस्तुति करत जोरि कर । १-१८५।०
 अस्तुति करत देवतन्हि देखे । ६-१६।५
 अस्तुति करहि नाग मुनि देवा । १-११०।८
 अस्तुति करहि सकल मुनि वृन्दा । ३-८।४

अस्तुति करि करि सब चले । ३-२०।४
 अस्तुति करि न जाइ भय माना । १-२०१।७
 अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए । ६-७६।५
 अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू । १-८२।८
 अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा । १-१४४।४
 अस्थि समूह देखि रघुराया । ३-८।६
 अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे । ६-५०।६
 अस्त्र सस्त्र सब साजु बनाई । १-२९८।८
 असगुन अमित होहिं तेहि काला । ६-७७।९
 असगुन अमित होहिं भयकारी । ३-१७।७
 असगुन होहिं नगर पैठारा । २-१५७।४
 असन पान सुधि अमिअ अमी से । २-२१४।५
 असन बसन बासन ब्रत नेमा । २-३२३।४
 असन ससन बर बसन सुहाए । १-३०३।७
 असमंजस बस अवध नेवासी । २-२६९।२
 असरन सरन बिरदु संभारी । ७-१७।३
 असि प्रतीति सब के मन माहीं । १-२४४।२
 असि रघुपति लीला उरगारी । ७-७२।१
 असि रब पूरि रही नव खंडा । ६-५२।७
 असि रिस होति दसउ मुख तोरौ । ६-३३।२
 असि सब नाँति अलौकिक करनी । १-११७।८
 असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ । ७-४६।४
 असि हरि भगति सुगम सुखदाई । ७-१८।१०
 असुम बेध भूषन धरें । ७-९८।७
 असुम होन लागे तब नाना । ६-१०१।४
 असुर नाग खग नर मुनि देवा । १-३३।७
 असुर मारि थापहि सुरन्ह । १-१२१।०
 असुर समूह सतावहिं मोही । १-२०६।९
 असुर सुरा बिष संकरहि । १-१३६।०

असुर सैन सम नरक निकंदिनि । १-३०१
 अहह एक अति सुगम उपाई । १-१६६।२
 अह्निसि बिधिहि मनावत रहहीं । ७-२४।५
 अहह कंत कृत राम बिरोधा । ६-३६।६
 अहह तात वारुनि हठ ठानी । १-२५७।२
 अहह दैव मैं कत जग जायउँ । ६-५१।३
 अहह धन्य लछिमन बड़नागी । ७-०।३
 अहह नाथ रघुनाथ सम । ६-१०४।०
 अहह बन्धु तैं कीन्हि खोटाई । ६-६२।४
 अहह मंद मनु अवसर चूका । २-१४३।६
 अहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई । २-१८३।८
 अहिम महिम जहैं लगी प्रभुताई । २-२५३।७
 अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा । १-१०३।४
 अहोभाग्य मम अमित अति । १-४७।०
 अहंकार अति दुखद डमरूआ । ७-१२०।३५
 अहंकर सिव बुद्धि अज । ६-१५।७
 अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं । २-१३१।७
 अत्रि कहेउ तव भरत सन । २-३०१।०
 अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ । ३-२।४
 अत्रि सुनायउ रघुबरहि । २-३१०।०

आ

आइ गए बगमेल । ३-१८।०
 आइ गयउ हनुमान । ६-६१।०
 आइ नहाए सरित बर । २-१३२।०
 आइ पाय पुनि देखिहउँ । २-५३।०
 आइ बना भल सकल समाजू । २-२२१।५
 आइ बिनीषन पुनि सिरु नायो । ६-१०५।१
 आइ राम पद नावहिं माथा । ४-२१।२
 आइ सबन्हि नावा पद सीसा । ५-२८।३

आए कपि सब जहैं रघुराई । ७-६६।६
 आए कीस काल के प्रेरे । ६-३१।३
 आए देखन चापमख । १-२२१।०
 आए टैव सदा स्वारथी । ६-१०१।२
 आए निकट देखि अनुरागे । २-२७४।६
 आए ब्याहि रामु घर जब तैं । १-३६०।५
 आए भरत संग सब लोग । ७-४।१
 आए मिलन सिद्ध मुनि म्यानी । १-१४२।६
 आए मुनिबर निकर तब । १-३३०।०
 आकर चारि जीव जग अहहीं । १-४५।४
 आकर चारि लच्छ चौरासी । ७-४३।४
 आकर चारि लाख चौरासी । १-७।१
 आखर अरथ अलंकृति नाना । १-८।१
 आखर मधुर मनोहर टोऊ । १-११।१
 आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । १-१०२।८
 आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । २-२१२।७
 आगम निगम पुरान अनेका । ७-४८।३
 आगिल काजु बिचारि बहोरी । २-११।७
 आगिलि बात समुझि डरु मोही । २-१७।८
 आगें कह मृतु बचन बनाई । ४-६।७
 आगें किए निषाद गन । २-२०२।०
 आगें कै हनुमंतहि लीन्हा । ४-२३।८
 आगें चलै बहुरि रघुराया । ४-०।१
 आगें दीखि जरत रिस भारी । २-३०।१
 आगें देखि राम तन स्वामा । ३-१।२०
 आगें परा गीघपति देख्य । ३-२१।१८
 आगें मुनिबर ब्राह्मन आछैं । २-२२०।५
 आगें राम अनुज पुनि पाछैं । ३-६।२
 आगें रामु लखनु बने पाछैं । २-१२२।१

आगें होइ चलि पंथ तेहिं ।५-५२।०
 आगें होइ जेहि सुरपति लेई ।२-१७।४
 आचारु करि गुर गौरि गनपति ।१-३२२।९
 आजन्म ते परद्रोह रत ।६-१०३।१६
 आजु करउँ खलु काल हवाले ।६-८९।८
 आजु देउँ सब संसय नाही ।७-८३।२
 आजु दया दुखु दुसह सहावा ।१-२७९।३
 आजु धन्य मैं धन्य अति ।७-१२३।७
 आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा ।७-३२।७
 आजु बयरु सबु लेउँ निबाही ।६-८९।७
 आजु राम सेवक जसु लेऊँ ।२-२२९।३
 आजु लगेँ अरु जब तें भयऊँ ।१-१६६।४
 आजु सबहि कहैं भच्छन करऊँ ।४-२६।३
 आजु सुफल जग जनमु हमारा ।१-३५६।७
 आजु सुफल तुपु तीरथ त्यागू ।२-१०६।५
 आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ।५-१।३
 आठवैं जथालाम संतोषा ।३-३५।४
 आत्म अनुभव सुख सुप्रकासा ।७-११७।२
 आतुर बहोरि बिमंजि स्थंदन ।६-८३।९
 आतुर समय कहेसि पद जाई ।३-१।११
 आदर दान प्रेम परिपोषे ।१-३५१।४
 आदर दान विनय बहु माना ।१-१०२।२
 आदि अंत कोउ ज्ञासु न पावा ।१-११७।४
 आदिदेव प्रमु दीनदयाला ।१-१४१।६
 आदिसवित जेहिं जग उपजाया ।१-१५१।४
 आदिसृष्टि • उपजी जबहिं ।१-१६२।०
 आदिहु तें सब आपनि करनी ।२-११९।८
 आधा कटकु कपिन्ह संघारा ।६-४७।४
 आन उपाउ न देखिअ देवा ।२-२६४।७

आन उपाउ मोहि नहिं सुझा ।२-१८२।१
 आन उपावैं निधन तव नाही ।१-१६५।४
 आन डंड कछु करिअ गोसौई ।५-२३।८
 आन बीर बल सठ मम आगें ।६-२८।४
 आनन अनल अंबुपति जीहा ।६-१४।६
 आनन रहित सकल रस भोगी ।१-११७।६
 आनहु रामहि बेगि बोलाई ।२-३८।१
 आनि काठ रघु चिता बनाई ।५-११।३
 आनि देखाई नारदहि ।१-१३०।०
 आनि देहिं नल नीलहि ।६-१।०
 आने फेरि कि बनहि सिधाए ।२-१४८।४
 आनेउँ सब तीरथ सलिलु ।२-३०७।०
 आनंद कटु बिलोकि दूखहु ।१-३२०।१०
 आनंदकटु बिलोकि दूखहु ।१-३१७।११
 आनंद मगन राम महतारी ।२-७।४
 आप अछत जुबराज पद ।२-१।०
 आपन चरित कहा हम गाई ।४-१।४
 आपन जानि न त्यागिहहिं ।२-२८३।०
 आपन मोर नीक जौ चहहू ।२-६०।३
 आपन रूप देहु प्रमु मोही ।१-१३१।६
 आपनि दारुन दीनता ।२-१८२।०
 आपनें बय बल रूप गुन ।१-३१५।१०
 आपु आश्रमहि धारिअ पाऊ ।२-२९०।५
 आपु गए अरु तिन्हू घालहिं ।७-९९।३
 आपु चढ़ेउ स्थंदन सुमिरि ।१-३०१।०
 आपु छोटि महिमा बड़ि जानी ।२-३०२।७
 आपु बिरधि उपरोहित रूपा ।१-१७१।११
 आपु लखन पहिं बैठेउ जाई ।२-८९।४
 आपु सरिस खोजीं कहैं जाई ।१-१४९।२

आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू १२-२०२३
 आपनु आवइ ताहि पहिं ११-१५१७
 आपुनु उटि धावइ रहै न पावइ ११-१८२१०
 आपुहि सुनि खद्योत सम १५-११०
 आमीर जमन किरात खस १७-१२१११
 आँब छौह कर मानस पूजा १७-१६६६
 आयउ प्रभु श्री अनुज जुत १७-०१
 आयसु करहि सकल मयमीता ११-१८११३
 आयसु काह कहिअ किन मोही ११-२७०१२
 आयसु देइअ देव अब १२-३००१०
 आयसु देइअ हरषि द्वियै १२-४५१०
 आयसु देहि मुदित मन माता १२-५२१७
 आयसु देहु सो करौ अब १७-६३१७
 आयसु पाइ दूत बहु धार १६-१८३
 आयसु पाइ राखि उर रामहि ११-३५०१५
 आयसु पाति जनम फलु पाई १२-४५३
 आयसु मागि करहिं पुर काजा ११-२०४१८
 आयसु मागि चरन सिरु नाई १४-२२१८
 आयसु मागि सम पहिं १६-५२१०
 आयसु मोर सासु सेवकाई १२-६०१४
 आयसु होइ त रहौ सनेमा १२-३२२१७
 आयसु होइ सो करौ गौसाई १२-८१८
 आयुध अनेक प्रकार १३-१११६
 आयुध सब समर्पि कै ११-२०११०
 आरजसुत पद कमल बिनु १२-१७१०
 आरत कहहिं बिचारि न काऊ १२-२५७११
 आरत गिरा सुनी जब सीता १३-२७१२
 आरत जननी जानि सब १२-१८६१०
 आरत लोग राम सबु जाना १२-२४३११

आरति करहिं मुदित पुर नारी ११-३४७१७
 आरति बस सनमुख भइउँ १२-१७१०
 आरति बिनय दीनता मोरी ११-४२११
 आरति मोर नाथ कर छोहू १२-३१३१६
 आरति हरन सरन सुखदायक १३-२८१२
 आराम रम्य पिकादि खग रव १७-२८११२
 आवत एहिं सर अति कठिनाई ११-३७१६
 आवत कपिहिं हन्यो तेहिं १६-८३१०
 आवत जनकु चले एहिं मौती १२-२७७१५
 आवत जानि मानुकुल कैतू ११-३०३१५
 आवत जानि बरात बर ११-३०४१०
 आवत दीखि बरातिन्ह स्तीता ११-३२२१२
 आवत देखहिं बिषय बयारी १७-१७७१२
 आवत देखि अधिक रव बाजी ११-१५६११
 आवत देखि क्रुद्ध जनु काला १६-७५११०
 आवत देखि कृतांत समाना १३-२८११२
 आवत देखि गयउ नभ सोई १६-५०३
 आवत देखि बिटप गहि तजा १५-१७१८
 आवत देखि मुदित मुनिबृदा १२-१३३१६
 आवत देखि लोग सब १७-४४१७
 आवत देखि सक्ति अति घोरा १६-१३११
 आवत देखि सकल खगराजा १७-६२१६
 आवत देखि सैल प्रभु भारे १६-६८१४
 आवत निकट हँसहिं प्रभु १७-७७१७
 आवत पंथ कबंध निपाता १३-३२१६
 आवत मुकुट देख कपि भागे १६-३११७
 आवत सुत सुनि कैकयनदिनि १२-१५८१२
 आवा प्रथम नगर जेहिं जारा १६-२२१६
 आवा परम क्रोध कर मारा १६-७५१५

आवे पिता बोलावन जबहीं । १-४४।३
 आस त्रास इरिषादि निवारक । ४-३४।५
 आसन उचित दिए सब काहु । १-३२०।४
 आसन उचित सबहि नृप दीन्हे । १-३२४।४
 आसन दीन्ह अस्त रवि जानी । १-१५८।२
 आसन सयन विभूषन हीना । २-१४४।५
 आसन सयन सुबसन बिताना । २-२१४।३
 आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे । २-२०५।६
 आश्रम उदधि मिली जब जाई । २-२४५।६
 आश्रम एक दीख मग माहीं । १-२०९।११
 आश्रम देखि जानकी हीना । ३-२९।६
 आश्रम परम पुनीत सुहावा । १-१२४।२
 आश्रम सागर सांत रस । २-२४५।०
 आसा बसन ब्यसन यह तिन्हहीं । ४।३।१।६
 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । ५-१६।२
 आसिष दीन्हि सखीं हरषानी । १-२६८।५
 आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह । ४-८।७
 आसिष देइ गई सी । ५-२।०
 आसुतोष तुम्ह अवदर दानी । २-४३।८
 आह दइअ मैं काह नसावा । २-१६२।६

इ

इच्छामय नरवेष सैवार्ये । १-१५१।१
 इच्छित फल बिन सिव अवराधे । १-६९।८
 इत उत झपटि दपटि कपि जोधा । ६-८१।५
 इत कपि भालु काल सम बीर । ६-४१।१०
 इति वेद बर्दति न दंतकथा । ६-१००।१६
 इंद्र कुलिस मम सूत बिसाला । ४-१०८।१३
 इंद्रजाति कहूं कहिअ न बीरा । ६-२८।१०
 इंद्रजीत आदिक बलवाना । ६-३३।११

इंद्रजीत कर आपु बँधायो । ४-५४।४
 इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ । १-१८२।१
 इन्द्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहवाई । ४-११४।१५
 इन्द्री द्वार झरोखा नाना । ४-११४।११
 इन्द्री सकल बिकल भई मारी । २-१५३।२
 इन्ह के नाम अनेक अनूपा । १-११६।४
 इन्ह कै दसा न कहेउ बखानी । १-८४।४
 इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि । १-२१६।३
 इन्ह महुँ रावन तैं कवन । ६-२४।०
 इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे । १-३०९।२
 इन्ह सम कोउ न भयउ जग माहीं । १-३०९।३
 इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ४-८।८
 इन्हहि देखि बिधि मनु अनुसाग । २-१११।५
 इन्हहि बिलोकत अति अनुसाग । १-२१५।५
 इमि कुपंथ पग दैत खगेसा । ३-२४।१०
 इरिषा परवाच्छर लोलुपता । ४-१०१।४
 इष्टदेव मम बालक रामा । ४।४।५
 इष्टदेव सैं बल स्थ पायउ । ६-४१।८
 इहाँ अर्धनिसि रावनु जाग । ६-११।४
 इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा । १-२००।४
 इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाही । १-२४२।३
 इहाँ दसासन सुमट पठाए । ६-५२।२
 इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही । ६-८५।५
 इहाँ देवरिषि गरुड पठायो । ६-४३।१०
 इहाँ न पच्छपात कछु राखउ । ४-११५।१
 इहाँ न सुधि सीता कै पाई । ४-२५।४
 इहाँ निषाद सुना प्रमु आए । ६-१२०।६
 इहाँ प्रात जागे रघुराई । ६-१६।१
 इहाँ पवनसुन हृदयै बिचारा । ४-१८।१

इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा । ७-११३।१०
 इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं । ४-२५।१
 इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा । ६-७४।३
 इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई । ६-८४।१
 इहाँ माएँ मैं देखउँ माई । ६-५६।६
 इहाँ भरतु सब सहित सहाए । २-२३२।४
 इहाँ मानुकुल कमल दिवाकर । ७-३।१
 इहाँ मोह कर कारन नाहीं । ७-७१।८
 इहाँ राम अंगदहि बोलावा । ६-३७।३
 इहाँ राम जसि जुगुति बनाई । ३-२२।८
 इहाँ साप बस आवत नाहीं । ७-५।१३
 इहाँ सुबेल सैल रघुवीरा । ६-१०।१
 इहाँ सेतु बौध्याँ अरु । ६-१११।७
 इहाँ संभु अस मन अनुमाना । १-५१।५
 इहाँ हरी निसिचर बैदेही । ४-१।३
 इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना । १-१३।२

ई

ईति नीति धनु प्रजा दुखारी । २-२३४।३
 ईस प्रसाद असीस तुम्हारी । २-२८२।१
 ईस भजनु सारथी सुजाना । ६-७१।७
 ईस रजाइ सीस सबही के । २-२८१।५
 ईस्वर अस जीव अबिनासी । ७-११६।२
 ईश्वर जीव भेट प्रमु । ३-१४।०
 ईस्वर राखा धरम हमारा । १-१७३।२

उ

उग्र बचन सुनि सकल डेराने । ६-४।११
 उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका । ६-६१।१२
 उधरहिं अंत न होइ निवाहू । १-६।६
 उधरहिं बिमल बिलोचन ही के । १-०।७

उचित कि अनुचित किएँ बिचारु । २-१७६।४
 उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा । २-२८१।६
 उठइ धूरि मानहुँ जल धारा । ६-८६।६
 उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । २-४१।८
 उठहु राम मंजहु भव चापा । १-२५३।६
 उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी । ६-८२।८
 उठि उठि पहिरि सनाह अनागे । १-२६५।२
 उठि कर जोरि रजायसु मागा । २-२२१।१
 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । ५-१८।१९
 उठि बहोरि मारुति जुबराजा । ६-७५।८
 उठी रेनु रवि गयउ छपाई । ६-७८।७
 उठे भरत गुर बचन सुनि । २-१६१।०
 उठे राम सुनि पेम अघीस । २-२३१।८
 उठे लखनु निसि दिगत सुनि । १-२३६।०
 उठे लखनु प्रमु सोवत जानी । २-८१।१
 उठे सकल जब रघुपति आए । १-२१४।६
 उठे समासद कपि कहूँ देखी । ६-१८।८
 उठे हरनि सुखसिधु महुँ । १-३०७।०
 उत पचार दसकंधर । ६-८०।१
 उत रावन इत राम दोहाई । ६-४०।७
 उतपात अमित बिलोकि नम सुर । ६-१०१।१३
 उत्तम कुल पुलस्तिक कर नाती । ६-११।३
 उत्तम के अस बस मन माहीं । ३-४।१२
 उत्तम मध्यम नीच लघु । १-२४।०
 उतर देत छोड़उँ बिनु-मारेँ । १-२७४।७
 उतरु काह दैहउँ तेहि जाई । ६-६०।१६
 उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई । २-२६८।५
 उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही । २-१८०।४
 उतरु देत मोहि ब्रधब अमार्गे । ३-२५।६

उतरु देव मैं सबहि तब । २-१४५।०
 उतरु न आव बिकल बैदेही । २-६३।३
 उतरु न आव लोग भए मोरे । २-२५४।४
 उतरु न आवत प्रेम बस । २-७१।०
 उतरु न देइ दुसह रिस रूखी । २-५०।१
 उतरु न देत दसानन जोधा । ३-२८।१८
 उत्तर दिसि सरजू बह । ७-२८।०
 उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । ७-६१।२
 उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्ह । ७-११०।१४
 उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि । ७-४।४
 उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । २-१०१।१
 उतरि तुम्हा तें कीन्ह प्रनामा । १-१५७।८
 उतरि देवसरि दूसर बासु । २-३२१।४
 उतरि नहाए जमुन जल । २-१०१।०
 उतररचो बीर दुर्ग तें । ६-४१।०
 उतरे राम देवसरि देखी । २-८६।२
 उदउ करहु जनि रवि रघुकुल गुर । २-३६।३
 उदभव पालन प्रलय कहानी । १-१६२।६
 उद्भवस्थितिस्वरूपरिणि । १-३३७।५
 उदय अस्त गिरि अरु कैलासु । २-१३७।६
 उदय केत सम हित सबही के । १-३।६
 उदर उदधि अघगो जातना । ६-१४।८
 उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं । ६-८०।६
 उदर माझ सुनु अंडज राया । ७-७१।३
 उदित अगस्ति पंथ जल सोषा । ४-१५।३
 उदित उदयगिरि मंच पर । १-२५४।०
 उदित बिमल जन हृदय नम । २-३०३।०
 उदित सदा अंधइहि कबहूँ ना । २-२०८।२
 उदासीन अरि मीत हित । १-४।०

उदासीन नित रहिअ गोसाईं । ७-१०५।१५
 उपजइ राम चरन बिस्वासा । ७-५४।९
 उपजहिं एक संग जग माहीं । १-४।५
 उपजा प्यान चरन तब लागी । ४-१०।६
 उपजा प्यान बचन तब बोला । ४-६।१५
 उपजा जब प्याना प्रभु मुसुकाना । १-१११।११
 उपजि परी ममता मन मोरें । १-१६३।४
 उपजी राम भगति दूढ़ । ७-२२१।०
 उपजे जदधि पुलस्त्यकुल । १-१७६।०
 उपजेउ सिव पद कमल सनेहू । १-६७।५
 उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे । २-७४।९
 उपमा न कोउ कह दास तुलसी । १-३१०।९
 उपमा बहुरि कहेउँ जिवौ जोही । २-१२२।४
 उपमा सकल मोहि लघु लागीं । १-२४६।२
 उपरोहित जेवनार बनाई । १-१७२।१
 उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । १-३१२।१
 उपरोहितहि देख जब राजा । १-१७१।६
 उपरोहितहि भवन पहुँचाई । १-१७४।३
 उपरोहित्य कर्म अति मंदा । ७-४७।६
 उपल किए जलजान जेहिं । १-२८।७
 उपबरहन बर बरनि न जाहीं । १-३५१।३
 उपबीत ब्याह उछाह मंगल । १-३६०।११
 उमय अगम जुग सुगम नाम तें । १-२२।५
 उमय घरी अस कौतुक भयऊ । १-८५।१
 उमय घरी महैं दीन्ही । ४-२१।०
 उमय घरी महैं मैं सब देखा । ७-२१।८
 उमय बीच श्री सोहइ कैसी । ३-६।३
 उमय बीच सिय सोहति कैसैं । १-२२२।२
 उमय भाँति तेहि आनहु । १-४४।०

उभय नाँति देखा निज मरना ।३-२५५
 उमगी अवध अनंद मरि ।१-३५१।०
 उमहि बिलोकि नयन भरे बारी ।१-७१।६
 उमा अवधबासी नर ।७-४७।०
 उमा एक अखंड रघुराई ।६-६०।१८
 उमा करत रघुपति नरलीला ।६-६५।१
 उमा कहउँ मैं अनुभव अपना ।३-३८।५
 उमा कहिउँ सब कथा सुहाई ।७-५१।६
 उमा काल मर जाकी ईश्र ।६-१०।६
 उमा चरित सुन्दर मैं गावा ।१-७४।६
 उमा जे राम चरन रत ।७-११२।४
 उमा जोग जप दान तप ।६-११७।४
 उमा दारु जोषित की नाई ।४-१०।७
 उमा न कछु कपि कै अधिकाई ।५-२।१
 उमा प्रसन्न तव सहज सुहाई ।१-११३।६
 उमा बचन सुनि परम बिनीता ।१-१११।८
 उमा विभीषनु रावनहि ।६-१४।०
 उमा महेस बिबाह बराती ।१-३१।७
 उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता ।७-२३।१
 उमा राम की भृकुटि बिलासा ।६-३४।७
 उमा राम गुन गूढ़ ।३-०।
 उमा राम बिषइक अस मोहा ।१-११६।४
 उमा राम सम हित जग माहीं ।४-११।१
 उमा राम सुमाउ जेहि जाना ।५-३३।३
 उमा रावनहि अस अभिमाना ।६-३१।६
 उमा संत कइ इहइ बड़ाई ।५।४०।७
 उयउ अरुन अवलोकहु ताता ।१-२३।७
 उयउ भानु बिनु श्रम तम नासा ।१-२३।८।४
 उर अनुभवति न कहि सक सौऊ ।१-२४।१७

उर अभिलाष निरंतर होई ।१-१४३।३
 उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई ।३-२६२।७
 उर आनहु रघुपति प्रभुताई ।५-१४।१०
 उर आयत भ्राजत विविध ।७-७६।०
 उर उमगेउ अंबुधि अनुरागु ।२-२८।५।५
 उर कछु प्रथम बसना रही ।५-४८।६
 उर ताड़ना करहिं बिधि नाना ।६-१०३।४
 उर दहेउ कहेउ कि धरहु धार ।३-१८।१५
 उर धरि उमा प्रानपति घरना ।१-७३।१
 उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ ।१-६७।८
 उर धरि धीर राम महतारी ।२-१५३।४
 उर धरि धीरजु गयउ दुआरें ।२-३८।४
 उर धरि राम चरन जुग ।४-२५।०
 उर धरि रामहि स्वीय समेता ।१-३५२।३
 उर मनि माल कंबु कल गीवा ।१-२३३।७
 उर मनिहार पदिक की सोभा ।१-११८।६
 उर माझ गटा प्रहार घोर ।६-१३।१
 उर लात घात प्रचंड लागत ।६-१७।१६
 उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला ।१-१४६।६
 उर सीस मुज कर चरन ।३-११।१
 उलटा नामु जपत जगु जाना ।२-११३।८
 उलटा होइहि कह हनुमाना ।५-२३।४
 उलटि पलटि लंका सब जारी ।५-२५।८
 उहाँ दसानन जागि करि ।६-८४।०
 उहाँ दसानन सचिव हैंकारे ।६-४७।३
 उहाँ दूत एक मरमु जनाव ।६-१५।२
 उहाँ निसाचर रहहिं ससंका ।५-३५।१
 उहाँ राम रजनी अवसेषा ।२-२२।३
 उहाँ राम लछिमनहि निहारी ।६-६०।१

उहीं सक्रोधि दसानन ।६-३२ख

ऊ

ऊत्तरु देइ न लेइ उसासु ।२-१२।
 ऊत्तरु देउ छमब अपराधु ।३-१७।
 ऊपर आपु हेठ भट ।६-४१।
 ऊपरि तरु बिसाल तब माया ।३-१२।
 ऊपर बरषइ तून नहिं जामा ।४-१४।
 ऊँच निवासु नीचि करवृती ।२-११।
 ऊँच नीच कारजु भल पोवू ।२-३२।
 ऊँच नीच मध्यम नर नारी ।२-२७।

ए

ए कपि सब सुग्रीव समाना ।५-४।
 ए किरोट दसकधार केरे ।६-३१।
 ए तरु सरित रामीप गोसाँई ।२-३६।
 ए दारिका परिचारिका ।१-३५।
 ए दोऊ दसरथ के दोटा ।१-२०।
 ए प्रिय सबहिं जहाँ लमि प्रानी ।१-२५।
 ए बिघरहिं मग बिनु पदत्राना ।२-१९।
 ए महिं परहिं डासि कुसपाता ।२-१९।
 ए सब राम भगति के बाधक ।४-६।
 ए सब लच्छन बसाहिं जासु उर ।४-३७।
 ए सब सखा सुनुहु नुनि मेरे ।४-४७।
 एक अनीह अरूप अनामा ।१-१२।
 एक जाइ अस कहा बहोरी ।२-२६।
 एक एक जग जीति सक ।१-१८।
 एक एक ब्रह्मांड महुँ ।४-८।
 एक एक सन भिरहिं पचारहिं ।६-८।
 एक एक सन मरमु न कहहीं ।६-१७।
 एक एक सर सिर निकर छेदे ।६-११।

एक एक साँ मदहिं ।६-४४।
 एक एकन्ह कहैं बूझहिं भाई ।४-२।
 एक कलप एहि बिधि अवतारा ।१-१२।
 एक कलप एहि हेतु प्रभु ।१-१३।
 एक कलप सुर देखि दुखारे ।१-२२।
 एक कलस भरि आनहिं पानी ।२-१४।
 एक कहइ नृपसुत तेइ आली ।१-२८।
 एक कहत मोहिं सकुच अति ।६-२४।
 एक कहहिं ए सहज सुहाए ।२-११।
 एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई ।६-८७।
 एक कहहिं कहहिं करहिं अपर ।६-८१।
 एक कहहिं भल भूप न कीन्हा ।२-४७।
 एक कहहिं भल भूपति कीन्हा ।२-८८।
 एक कहहिं रघुबीर बड़ाई ।२-३०।
 एक कहहिं हम बहुत न जानहिं ।२-११।
 एक कीन्हि नहिं मरत भलाई ।२-२८।
 एक कुसल अति जोड़न खाँडे ।२-१०।
 एकछत्र रिपुहीन महि ।१-१६।
 एक जनम कर कारन एहा ।१-२३।
 एकटक रहे जोरि कर आगे ।४-१६।
 एकटक रहे निमेष न लावहिं ।४-३२।
 एकटक सब सोहहिं वहुँ ओरां ।२-१४।
 एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा ।३-१४।
 एक देखि बट छाँह भलि ।२-१४।
 एक धरम परमिति पहिचाने ।२-४७।
 एक नखन्दि रिपु बपुष बिदारी ।६-१७।
 एक नयन मग छबि उर आनी ।२-१३।
 एक निमेष बरष सम जाई ।२-१७।
 एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं ।२-२३।

एक पिता के बिपुल कुमारा । ७-८६।१
 एक ब्याधि बस नर मरहिं । ७-१२१।७
 एक बहोरि सहसमुज देखी । ६-२३।१५
 एक बात नहिं मोहि सोहानी । १-११३।७
 एक बात प्रभु पूछउँ तोही । ७-११४।८
 एक बान काटी सब माया । ६-५१।७
 एक बानि करुनानिधान की । ३-९।८
 एक बार अतिसय सब । ७-७५।४
 एक बार आबत सिव संगी । १-२७।७
 एक बार करतल बर बीना । १-१२७।३
 एक बार कालउ किन होऊ । १-२४४।७
 एक बार कुबेर पर धावा । १-१७८।८
 एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । ४-१७।२
 एक बार गुर लीन्ह बोलाई । ७-१०५।१
 एक बार बुनि कुसुम सुहाए । ३-०।३
 एक बार जाननी अन्हबाए । १-२००।१
 एक बार तिन्ह के हित लागी । १-१२२।२
 एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ । १-१०५।४
 एक बार प्रभु सुख आसीना । ३-१३।५
 एक बार बसिष्ट मुनि आए । ७-४७।१
 एक बार भरि मकर नहाए । १-४४।३
 एक बार भूपति मन माहीं । १-१८८।१
 एक बार रघुनाथ बोलाए । ७-४२।१
 एक बार हर मंदिर । ७-१०६।७
 एक बार त्रेता जुग माहीं । १-४७।१
 एक बिधातहि दूषनु देहीं । २-४८।१
 एक भरत कर संमत कहहीं । २-४७।६
 एक रचइ जग गुन बस जाके । ३-१४।६
 एक राम अवधेस कुमारा । १-४५।७

एक लालसा बड़ि उर माहीं । १-१७८।३
 एक सखी सिय संगु बिहाई । १-२२७।७
 एक समय सब सहित समाजा । २-१।१
 एक सराहहिं भरत सनेहू । २-२०१।५
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल । ६-८१।१३
 एक सूल मोहि बितार न-कोऊ । ७-१०९।२
 एकनारि ब्रत रत सब झारी । ७-२१।८
 एकलप तुम्ह आता दोऊ । ४-७।५
 एकु एकु निसिबर गहि । ६-४।१०
 एकु छत्रु एकु मुकुटमनि । १-२०।०
 एकु दारुगत देखिअ एकु । १-२२।४
 एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । २-३०७।१
 एकु मै मंद मोह बस । ४-३।०
 एकइ उर बस दुसह दबारी । २-१८१।६
 एकइ धर्म एक ब्रत नेमा । ३-४।१०
 एकउ जुगुति न मन ठहरानी । २-२५२।७
 एकन्ह एक बोलि सिख देहीं । २-११३।६
 एकहि एक देहिं उपदेसू । २-८५।४
 एकहि एक न देखई । ६-४६।०
 एकहि एक सकइ नहिं जीती । ६-५३।३
 एकहि बात मोहि दुखु लागी । २-११।४
 एकहि बार तासु पर । ६-६६।०
 एकहिं आँक इहइ मन माहीं । २-१८२।२
 एकहिं डर डरपत मन मोरा । १-१६५।८
 एकहिं बान प्राण हरि लीन्हा । १-२०८।६
 एकहिं बार आस सब पूजौ । २-१५।१
 एतना कपिन्ह सुना जब काना । ६-६४।३
 एतना करहु तात तुम्ह जाई । ४-२१।११
 एतना कहत छौंक मइ बाँए । २-१११।४

एतना कहत नीति रस मूला । २-२२८।५
 एतना मन आनत खगराया । ४-४४।१
 एतनेइ कहैहु भरत सन जाई । २-१५६।३
 एतेहु पर करिहहिं जे असंका । १-११।८
 एवमस्तु करि रमानिवासा । ३-११।१
 एवमस्तु कहि कपट मुनि । १-१६।१०
 एवमस्तु कहि प्रमु रनधीरा । ५-४८।८
 एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । ४-८४।१
 एवमस्तु तब बच मुनि म्यानी । ४-११३।६
 एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा । १-१४६।५
 एवमस्तु मुनि सन कहेउ । ३-४२।०
 एहि अवसर चाहिअ परम । १-१३१।०
 एहि अवसर मंगलु परम । २-४।०
 एहि अवसर त्वाछिमन पुर आए । ४-१८।८
 एहि कर नामु सुमिरि संसारा । १-६६।६
 एहि कर फल पुनि बिषय बिरागा । ३-१५।४
 एहि कर होइ परम कत्याना । ४-१०८।१
 एहि कुरोग कर औषधु नाहीं । २-२११।२
 एहि के हृदय बस जानकी । ६-१८।१४
 एहि के एक परम बल नारी । ३-३४।१२
 एहि के कंठ कुठारु न दीन्हा । १-२४।८
 एहि तन कर फल बिषय न भाई । ४-४३।१
 एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा । २-६०।५
 एहि तें कवन ब्यथा बलवाना । २-८०।४
 एहि तें जानहु मोर हित । २-१७४।०
 एहि ते तव सेवक होत मुटा । ४-१३।१४
 एहि तें मोर काह अब नीका । २-१७१।६
 एहि दुख दाह दहइ दिन छाती । २-२११।१
 एहि धनु पर ममता केहि हेतू । १-२४०।८

एहि प्रकार गत बासर सोऊ । २-४२।३
 एहि प्रकार बल मनहि देख्यै । १-१३।१
 एहि प्रकार भरि माघ नहाही । १-४४।१
 एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ । २-४६।२
 एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु । ६-३२।१
 एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनऊँ । ४-१११।११
 एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी । २-१०५।५
 एहि बिधि उपजे लच्छि जब । १-२४४।०
 एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती । ४-२६।१
 एहि बिधि करत प्रलाप कलापा । २-८५।४
 एहि बिधि करत पंथ पछितावा । २-१४६।१
 एहि बिधि करत बिनोद बहु । ६-१६।४
 एहि बिधि करत सप्रेम विचारा । १-४२।१
 एहि बिधि करेहु उपाय कटंबा । २-८१।६
 एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । ५-४।२
 एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय । २-१२०।०
 एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना । १-३०३।४
 एहि बिधि कृपा रूप गुन । ६-११।४
 एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी । ३-२१।१६
 एहि बिधि गए कछुक दिन बीती । ३-१६।२
 एहि बिधि गयउ कालु बहु बीती । १-४५।३
 एहि बिधि गर्भ सहित सब नारी । १-१८१।५
 एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई । १-११४।१
 एहि बिधि जनम करम हरि केरे । १-१३१।१
 एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना । ६-४१।१
 एहि बिधि जाइ कृपानिधि । ५-२५।०
 एहि बिधि जीय चराचर जेते । ४-८६।६
 एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही । २-१६१।५
 एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी । १-५१।१

एहि बिधि देखत फिरउँ मैं । ४-८०।०
 एहि बिधि धरेउँ बिबिधि तनु । ४-१०१।४
 एहि बिधि नगर नारि नर । ४-३०।०
 एहि बिधि नाथ पयोधि बैधाइअ । १-५१।४
 एहि बिधि निज गुन दोष कहि । १-२१।४
 एहि बिधि नित्य करम करि पुरजन । २-२४।२
 एहि बिधि प्रभु बन बसहि सुखारी । २-१४।३
 एहि बिधि पूँछहि प्रेम बस । २-११।०
 एहि बिधि बासर बीते चासी । २-२४।१
 एहि बिधि बिलपत रैन बिहानी । २-१५।८
 एहि बिधि बिलपहि पुर नर नारी । २-५०।४
 एहि बिधि बीते बरष षट । १-१४।१०
 एहि बिधि बूझत सबहि सुबानी । २-२२।८
 एहि बिधि भए सोचबस ईसा । १-४८।३
 एहि बिधि भरत चले मग जाहीं । २-२१।५
 एहि बिधि भरत सेनु सबु संग । २-११।३
 एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीं । २-३१।१
 एहि बिधि भलेहि देवहित होई । १-८२।७
 एहि बिधि भलेहि सो रोग नसाहीं । ४-१२।८
 एहि बिधि भूप कष्ट अति शोरे । १-१६।१
 एहि बिधि मज्जनु भरतु करि । २-११।१०
 एहि बिधि मन बिचार कर राजा । ५-२।२
 एहि बिधि मुनिबर भवन देखिए । २-१३।१
 एहि बिधि रचुकुल कमल रबि । २-१२।१०
 एहि बिधि रहा जाहि जस माऊ । १-२४।८
 एहि बिधि राउ मनहिं मन झाँखा । २-२१।१
 एहि बिधि सति लोगु सबु जागा । २-२०।७
 एहि बिधि राम बिआह उछाहू । १-३३।८
 एहि बिधि राम जगत पितु माता । १-११।११

एहि बिधि राम सबहि समुझावा । २-८०।१
 एहि बिधि रामु मंडपहिं आए । १-३१।८
 एहि बिधि लेसे दीप । ४-११।४
 एहि बिधि सकल कथा समुझाई । ४-३।५
 एहि बिधि सकल जीव जग रोगी । ४-१२।१
 एहि बिधि सकल बल तोरि । ६-१००।२
 एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । १-३१।१
 एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । २-२८।१
 एहि बिधि सब संसय करि दूरी । १-३३।१
 एहि बिधि सबहि नयन फलु देता । १-३३।८
 एहि बिधि सबहि सुखी करि रामा । ४-५।८
 एहि बिधि सबही अम्या दीन्ही । १-१८।१४
 एहि बिधि सबही देत सुखु । १-३४।८
 एहि बिधि सबहीं भोजनु कीन्हा । १-३२।८
 एहि बिधि सर रचि मुनि सरमंगा । ३-४।८
 एहि बिधि सिय समेत टोउ भाई । २-१३।४
 एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा । १-११।७
 एहि बिधि सीतहि सो ले गयऊ । ३-२८।६
 एहि बिधि सीय मंडपहिं आई । १-३२।७
 एहि बिधि सो दक्खिन दिसि जाई । ५-१०।५
 एहि बिधि सोचत भरत मन । २-१५।१०
 एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा । १-३१।३
 एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ । १-१३।२
 एहि बिधि होत बतकही । ४-२।१०
 एहि बीच कपिन्ह विधंस कृत । ६-८।१३
 एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय । १-२५।११
 एहि भाँति जानि बरात आवत । १-३१।११
 एहि भाँति देव पुजाइ सीतहि । १-३२।४
 एहि भाँति निज निज भाँति बिलास । ४-११।११

एहि भाँति सिंधारी गौतम नारी । १-२१०।१५
 एहि मई रघुपति नाम उदास । १-१११
 एहि मई रचि रघु तोपाना । ७-१२८।३
 एहि मिस मोहि उपदेसेहु । ६-८०।४
 एहि राज साज समेत सेवक । १-३२५।१६
 एहि लागि तुलसीदास इन्ह की । ५-२।२
 एहि सन हठि करिहउ पहिचानी । ५-५।४
 एहि सम निपट नीच कोउ नाही । २-२४२।८
 एहि सुख जोग न लोग सब । २-२८०।०
 एहि सुख ते सत कोटि गुन । १-३५०।४
 एहि सुख तुघीँ सोचि सब काहू । २-२०२।८
 एहि संदेस सरिस जग नाही । ७-१।३
 एहि कलिकाल न साधन दूजा । ७-१२१।५
 एहि जग जामिनि जागहिं जोगी । २-१२।३
 एहि तन राम भगति मैं पाई । ७-१४।७
 एहि तन सतिहि भेट मोहि नाही । १-५६।२
 एहि थल जोँ किछु कहिअ बनाई । २-२१०।२
 एहि प्रतिपालउँ सबु परिवारु । २-११।७
 एहिं लालसाँ मगन सब लोगू । १-२४८।६
 एहिं समाज थल दूझब राउर । २-२१२।५
 एहि सर मम उत्तर तट बासी । ५-५१।५
 एहीँ बीच निसावर अनी । ६-८६।१
 एहूँ मिस देखीँ पद जाई । १-२०५।७

ऐ

ऐसिअ प्रसन्न बिहंगपति । ७-५५।०
 ऐसिउ पीर बिहसि तेहिं गोई । २-२६।५
 ऐसे अधम मनुज खल । ७-४०।०
 ऐसे प्रभुहि बिलोकउँ जाई । ३-४०।७
 ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी । १-४६।८

ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई । १-१४३।७
 ऐसेउ बचन कटोर सुनि । २-६७।०
 ऐसेहि प्रभु सब भगत तुम्हारे । १-२३।३
 ऐसेहिं हरि बिनु भजन खगेसा । ७-७८।१
 ऐसेहु पति कर किए अपमाना । ३-४१।१
 ऐसेहुँ दुख जोँ राख मम प्राना । ६-१८।१०

ओ

ओर निबाहेहु नायक भाई । २-१५१।५

औ

और एक तोहि कहउँ लखाऊ । १-१६८।३
 औरउ एक आसिषा मोरी । ७-१०८।१६
 औरउ एक कहउँ निज चोरी । १-१११।३
 औरउ एक गुपुल मत । ७-४५।०
 औरउ क्या अनेक प्रसंगा । १-३६।१५
 औरउ ध्यान भगति कर । ७-११६।४
 औरउ जे हरिभगत सुजाना । १-२१।८
 औरउ राम रहस्य अनेका । १-११०।३
 औरउ सबहिं सोय समुझाई । २-७७।६
 औरु करे अपराधु कोउ । २-७७।०
 औरु करिहि को भरत बड़ाई । २-२५६।४
 औषध मूल फूल फल पाना । २-५।२

अं

अंग अंग पर वारिअहिं । १-२२०।०
 अंगद अरु हनुमंत प्रवेसा । ६-४४।७
 अंगद कहइ जाउँ मैं पारा । ४-२१।१
 अंगद तहीँ बालि कर बालक । ६-२०।५
 अंगद दीख दसानन बैसैं । ६-१८।४
 अंगद नाम बालि कर बेटा । ६-२०।३
 अंगद नील मयंद नल । ६-७५।०

अंगद बचन विनीत सुनि । ७-१८७
 अंगद बचन सुनत कपि बीरा । ४-२५७
 अंगद बचन सुनत सकुचाना । ६-२०४
 अंगद बैठ रहा नहीं डोला । ७-१६८
 अंगद स्वामिमक्त तब जाती । ६-२३३
 अंगद सहित करहु तुम्ह राजू । ४-१११
 अंगद सुना पवनसुत । ६-४३०
 अंगद हनुमत अनुचर जाके । ६-३६४
 अंगद हृदय प्रेम नहीं थोरा । ७-१८१
 अंगदादि कपि मुरछित । ६-६५०
 अँगरी पहिरि कूँडि सिर धरहीं । २-१९०५
 अँचड़ पान सब कहाँ पाए । १-३५४।२
 अँजलि गत सुम सुमन जिमि । १-३३७
 अँड कटाह अमित लय कारी । ७-९३८
 अँडकोस प्रति प्रति निज रूपा । ७-८०५
 अंतर प्रेम तासु पहिचाना । ३-२६।७
 अंतरजामी प्रमु सम जाना । ७-३५४
 अंतरजामी रामु । २-२०१०
 अंतरजामी रामु सिय । २-२५६।०
 अंतरधान भए अस माषी । १-७६७
 अंतरधान भयउ छन एका । ६-१५१
 अंतरधान भए पुनि । ७-१३७
 अंतरहित सुर आशिष देहीं । १-३५०।३
 अंतरहित होइ निमिष मुहँ । ६-१००।०
 अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू । २-५५४
 अंतावरी गाँहे उड़त गीध । ३-११।१८
 अँथयउ आजु मानुकुल भानू । २-१५५।६
 अंधउ बधिर न अस कहहि । ६-२१।०
 अंधकार बरु रबिहि नसावै । ७-१२१।१८

अंब इस आधीन जगु । २-२४४।०
 अंब एक दुखु मोहि बिसेषी । २-४१।५
 अंबोज अंबक अंबु जमगि । १-३१७।१२
 अंबोज नयन बिसाल उर मुज । ७-११।१६
 अंसन्ह सहित देह धरि ताता । १-१५१।२
 अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । १-१८६।२

क

कछु तेहि ते पुनि मैं नहीं राखा । ७-६११
 कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे । ६-३१६
 कछु दिन भोजनु वारि बतासा । ७-३३५
 कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं । १-५५।२
 कछु पुनि जाइ पुकारे । ५-१८।०
 कछु मारेसि कछु मर्दसि । ५-१८।०
 कछु मारे कछु घायल । ६-४७।०
 कछुक उँचि सब गाँति सुहाई । १-२२३।५
 कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ । २-१५१।२
 कछुक काल बीते सब माई । १-२०२।२
 कछुक दिवस जननी घरु धीरा । १-५५।४
 कछुक दिवस बीते एहि भाँती । १-१९६।१
 कछुक दूरि सजि दान सरासन । २-८१।२
 कछुक राम गुन कहेउँ बखानी । ७-५१।७
 कटकटहि जंबुक भूत प्रेत । ३-११।१४
 कटकटहि मर्कट बिकट मट । १-३४।१३
 कटकटान कपिवुंजर भारी । ६-३१।३
 कटकटाहि कोटिन्ह मट मर्जीहिं । ६-४०।६
 कटहिं चसन उर सिर मुजदंडा । ६-६७।५
 कटि किसि निषंग बिसाल मुज । ३-१७।१६
 कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा । १-१९८।४
 कटितट परिकर कस्यो निषंगा । ६-८५।१०

कटि तूनीर पीत पट बँधे । १-२४३।१	कनक कलस मनि कोपर रुरे । १-३२३।५।
कटि पट पीत कसें बर माथा । १-२०८।२	कनक कलस मंगल भरि थारा । १-१९३।४
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधे । १-२६७।८	कनक कलित अहिबेलि बनाई । १-२८०।२
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके । ६-३०।८	कनक कोट बिचित्र मनि । १-२।१२
कठिन करम गति जान बिधाता । २-२८।१।४	कनक कोट मनि रघुवित दृढ़ । १-१७८।७
कठिन काल मल कोस । ३-६।४	कनक थार आरती उतारहिं । ७-६।४
कठिन कुसंग कुपथ करात्ता । १-३७।७	कनक थार भरि मनि गन नाना । १-५७।८
कठिन भूमि कोमल पद गामी । ४-०।८	कनक थार भरि मंगलन्हि । १-३४६।१०
कत बिधि सृजौं नारि जग माहीं । १-१०१।५	कनक बरन तन तेज बिराजा । ४-२९।७
कत सिख देइ हमहि कोउ माई । २-१३।१	कनक बसन मनि भरि भरि जाना । १-३३२।८
कतहुँ निभज्जन कतहुँ प्रनामा । २-३११।५	कनक बसन मनि ह्य गय स्यंदन । १-३३०।६
कतहुँ बिरिद बंदी उच्चरहीं । १-२१६।६	कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । २-१९८।३
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई । २-३११।६	कनक भूधराकार सरीस । ५-१५।८
कतहुँ मुनिन्ह उपदेसाहिं ग्याना । १-७।११	कनक सिंघासन सीय समेता । २-१०।५
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई । ४-१७।३	कनकउ पुनि पषान तें होई । १-७१।६
कतहुँ होइ निसिचर सैं भेटा । ४-२३।१	कनककसिपु अरुहाटक लोचन । १-१२१।६
कथा अरंभ करै सोइ चाहा । ७-६२।५	कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहैं । २-२०४।१
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी । १-३२।४	कपट कुवालि सीदैं सुरराजू । २-३०१।१
कथा कही सब तेहिं अमिमानी । ६-६१।९	कपट नारि बर वेष बनाई । १-३१७।७
कथा जो सकल लोक हितकारी । १-१०६।६	कपट बिप्र बर वेष बनाएँ । १-३२०।७
कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई । ७-११३।१५	कपट बोरि बानी मृदुल । १-१६०।१०
कथा समस्त मुसुंड बरजानी । ७-६७।७	कपट सनेहु बढाइ बहोरी । २-२६।८
कथा सुधा मथि काढ़हिं । ७-१२०।१०	कपट सयानि न कहति कछु । २-३६।१०
कथा सुनाई गुरहि सब । १-२९३।१०	कपटी कायर कुमति कुजाती । २-११५।१
कदलि ताल बर धुजा पताका । ३-३७।२	कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी । २-१६७।२
कद्रू बिनतहि दीन्ह दुरखु । २-११।१०	कपटी कुटिल मोहि प्रमु चीन्हा । ७-०।४
कनक कल्प बर बेलि । २-१६३।१०	कपि अकुलाने माया देखें । ६-५१।५
कनक कलस तोरन मनि जाला । १-२९५।८	कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । १-१३६।७
कनक कलस भरि कोपर थारा । १-३०४।१	कपि उठाइ प्रमु हृदयें लगावा । १-३२।४

कपि कर मन बिचार एहे रीती ।४-३८
 कपि करि हृदय विचार ।५-१२।०
 कपि के बचन सप्रेम सुनि ।५-१३।०
 कपि के ममता पूँछ पर ।५-२४।०
 कपि तव दरस भड़ुँ निष्ठापा ।६-१७।१
 कपि तव दरस सकल दुख बीते ।७-१।११
 कपि देखा दारुन भट आवा ।५-१८।४
 कपि बल देखि सकल हियँ हारे ।६-३४।१
 कपि बल प्रबल देखि तेहिँ ।६-१५।०
 कपि बंधन सुनि निसिचर घाए ।५-११।५
 कपि मालु चढ़ि मंदिरन्ह ।६-४०।१२
 कपि लंगूर बिपुल नम छाए ।६-८६।५
 कपि सब उठे गीध कहँ देखी ।४-२६।६
 कपि सब चरित समास बखाने ।६-५१।२
 कपि सेन संग सँघारि निसिचर ।४-२१।१३
 कपिपति नील रीछपति ।६-११८।४
 कपिपति बेगि बोलाए ।५-३४।०
 कपिपति रीछ निसाधर राजा ।१-१७।१
 कपिलीला करि तिन्हहि डेरारहिँ ।६-४३।५
 कपिन्ह विनीषनु आवत देखा ।५-४२।२
 कपिन्ह सहित बिग्रन्ह कहँ ।६-१२०।४
 कपिहि तिलक करि प्रमु कृत ।७-६६।४
 कपिहि बिलोकि दसानन ।५-२०।०
 कबहि देखिबे नयन भरि ।१-३००।०
 कबहिँ बोलाइ लगाइ हियँ ।२-६८।०
 कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना ।१-११७।८
 कबहुँ कि कौजी सीकरनि ।२-२३।१०
 कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकेँ ।७-१११।१
 कबहुँ दिवस महीं निबिडु तम ।४-१५।४

कबहुँ न कियहु सबति आरेसु ।२-४८।७
 कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा ।४-२६।४
 कबहुँ नयन मम सीतल ताता ।५-१३।६
 कबहुँ निकट पुनि दूर पराई ।३-२६।१२
 कबहुँ प्रबल बह मारुत ।४-१५।४
 कबहुँकर करि करुना नर देही ।७-४३।६
 कबहुँकर फिरि पाछेँ पुनि जाई ।३-१।१२
 कबहुँ काल न ब्यापिहि तोही ।७-८७।१
 कबहुँ जोग बियोग न जाकेँ ।१-४८।८
 कबि अलखित गति बेधु बिरागी ।२-१०१।८
 कबि कुल अगम भरत गुन गाथा ।२-२३।२
 कबि कुल जीवनु पावन जानी ।५-३६०।७
 कबि कोबिद गावहिँ असि नीती ।७-१०५।१४
 कबि कोबिद रघुबर चरित ।१-१४।१
 कबि न होउँ नहिँ चतुर कहावउँ ।१-११।१
 कबि न होउँ नहिँ बचन प्रबीनू ।५-८।८
 कबि बूँद उदार दुनी न सुनी ।७-१००।१
 कबित बिबेक एक नहिँ मोरै ।१-८।११
 कबित रसिक न राम पद नेहू ।१-८।३
 कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुरगु ।२-२२।१०
 कबिहि अस्थ आखर बलु साँचा ।२-२४०।४
 कमठ पीठ जासहिँ बरु बारा ।७-१२।११५
 कमठ पीठि पबि कूट कठोरा ।५-३५६।४
 कमल कोक मधुकर खग नाना ।१-२३।२
 कमल नाल जिमि चाप चढ़ावै ।१-२५।२।८
 क्यों करे बिनय विदेहु ।१-३२।१२३
 कर कमलनि धनु सायकु फेरत ।२-२३।८।८
 कर गहि पतिहि भवन निज जानी ।६-५।३
 कर गहि प्रमु मुनिबर बैठारे ।७-३२।६

कर जोरि जनकु बहोरि । १-३२५।१३	करत दंडवत लिए उठाई । ३-४०।१०
कर जोरें सुर दिसिप बिनीता । ५-११।७	करत न सपनेहुँ लखनु चितु । २-१३१।०
कर परसा सुग्रीव सरीरा । ४-७।६	करत प्रबेस भिटे दुख दावा । २-२३।८।३
कर मीजहैं सिरु धुनि पछिताहीं । २-४५।५	करत पान सादर सकल । १-३२१।०
कर सरोज जयमाल सुहाई । १-२६३।२	करत बतकही अनुज सन । १-२३१।०
कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । ७-८२।४	करत बिचार भयउ भिनुसारा । ६-४८।८
कर सरोज सिर परसेउ । ३-३०।०	करत बिनय बहु विधि नरनाहू । १-३३०।४
कर सारंग साजि कटि माथा । ६-६७।१	करत बिलाप बहुत यहि मौती । २-१६।८।६
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा । १-११।५	करत मनोरथ जस जिरैं जाके । २-२२।४।३
करइ जो धरम करम मन बानी । १-१५५।२	करत राज लंका सठ त्यागी । ५-५२।५
करइ जो करम पाव फल सोई । २-४६।८	करत राम हित नेम ब्रत । २-१८।८।०
करइ पान सोवइ षट मासा । १-१७।१।४	करति बिलाप जाति नम सीता । ३-२८।२।४
करइ गिवारु कुडुद्धि कुजाती । २-१२।३	करति बिलाप मनहिं मन मारी । ६-११।४
करइ मनोहर मति अनुहारी । १-३५।२	करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषू । २-२०६।८
करइ स्वयंबर सो नृपबाला । १-१२१।६	करन चहउँ रघुपति गुन गाहा । १-७।५
करइ स्वामि हित सेवकु सोई । २-१८।५।५	करनघार तुम्ह अवध जहाजु । २-१५।३।६
करउ अनुग्रह सोई । १-०।२	करनघार सटगुर दृढ़ नावा । ७-४३।८
करउ सो मम उर धाम । १-०।६	करनबेध उपबीत बिआहा । २-१।६
करउँ कृपानिधि एक डिटाई । ७-३६।१	करब सदा लरिकन्ह पर छोहू । १-३५।१।७
करउँ प्रनाम करम मन बानी । १-१५।७	करब साधुमत लोकमत । २-२५।८।०
करउँ बिचार बहोरि बहोरी । ७-८।१।७	करब सोइ उपदेसु । २-१५।१।०
करउँ सदा तिन्ह के स्पवारी । ३-४२।५	करबि पार्यँ परि बिनय बहोरी । २-१५।०।७
करउँ सदा रघुपति गुन गाना । ७-११३।११	करम धरम इतिहास अनेका । १-१६।२।५
करत अकंटक राजु पुरै । २-२३।५।०	करम बचन मन छाड़ि छलु । २-१०।७।०
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ । ७-४४।४	करम बचन मन राउर चेरा । २-१३।०।८
करत चरित धरि मनुज तनु । २-१३।०	करम बचन मानस दिमल । २-३०।४।०
करत दंडवत देखि तेहि । २-११।३।०	करम लिखा जौ बाउर नाहू । १-१६।७
करत दंडवत मुनि उर लाए । ३-२।६	करम सुभासुम तुम्हहि न बाधा । १-१३।६।४

करमनास जलु सुरसरि परई । २-१९३७
 करम प्रधान बिस्व करि राखा । २-२१८४
 करसि पान सोवसि दिनु राती । ३-२०७
 करहिं जाइ तपु सैलकुमारी । १-७२११
 करहिं सखा सोइ बेगि उपाऊ । २-१७१२
 करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी । १-१२०७
 करहिं अहार साक फल कटा । १-१४३१
 करहिं आरती आरतिहर के । ७-८७
 करहिं आरती पुर नर नारी । १-२६४६
 करहिं आरती बारहिं बारा । १-३४८१
 करहिं उपद्रव असुर निकाया । १-१८२४
 करहिं कूटि नारदहिं सुनाई । १-१३३३
 करहिं गान कल मंगल बानीं । १-२१७८
 करहिं गान बहु तान तरंग । १-१२५५
 करहिं जोग जप जाग तप । २-१३४७
 करहिं जोग जोगी जोहिं लागी । १-३४०५
 करहिं जोहार भेंट धरिं आगे । २-१३४५
 करहिं निछावरि आरती । १-३३५०
 करहिं निछावरि भनिगन वीरा । १-३४७६
 करहिं निछावरि लोग सब । १-२६२०
 करहिं प्रनाम नगर नर नारी । २-१९६५
 करहिं पाप पावहिं दुख । ७-१००७
 करहिं बिदूषक कौतुक नाना । १-३०१८
 करहिं बिनय अति बारहिं बारा । ७-४१२
 करहिं विविध विधि भोग विलासा । १-१०२५
 करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । २-१५५४
 करहिं मोह बस द्रोह परावा । ७-३१६
 करहिं मोह बस नर अध नाना । ७-४०४
 करहु कृपा हरि जस कहउ । १-१४७

करहु जाइ जा कहूँ जोइ भावा । १-२४५६
 करहु राजु परिहरहु मलानी । २-१७४४
 करहु राम पर सहज सनेहु । २-४८६
 करहु सफल आपनि सेवकाई । १-२५६६
 करहु सीस धरि भूप रजाई । २-१७३६
 करहु सुफल सबके नयन । १-२९८०
 करहु कृपा प्रभु अस सुनि काना । ५-९६४
 कराल महाकाल काल कृपाल । ७-१०७४
 करि आरति नैवछावरि करहीं । १-१९३५
 करि आरती अरपु तिन्ह दीन्हा । १-३१८४
 करि उपाय रिपु मारे । ३-२०४
 करि छर सरिस सुभग भुजदंडा । १-१४६८
 करि कुवालि सोवत सुरराजू । २-२१५१
 करि कुर्मनु मन साजि समाजू । २-२२७५
 करि कुरूप विधि परबस कीन्हा । २-१५५
 करि कुल शीति बेट विधि राऊ । १-३०१२
 करि केहरि कपि कोल कुरगा । २-१३७१
 करि केहरि निसिचर चरहिं । २-१९१०
 करि केहरि बन जाइ न जोई । २-१११७
 करि कोप श्रीरघुबीर पर । ३-१९२३
 करि चिक्कार घोर अति । ६-७००
 करि छलु मूढ़ हरी ब्रैदेही । १-४८५
 करि जतन मट कोटिन्ह बिकट तन । ५-२३०
 करि तड़ाग मज्जन जलपाना । ७-६२३
 करि दाप चाप चढ़ाई दस । ६-९६११
 करि दंडवत कहत कर जोरी । २-३१२६
 करि दंडवत भेंट धरि आगे । २-८७३
 करि दंडवत मुनिहि सनमानी । १-२०६२
 करि दंडवत सप्रेम द्विज । ७-१०७४

करि ध्यान ग्यान बिराग जोग । ३-३१।१२
 करि न जाइ सर मज्जन पाना । १-३८।३
 करि नृप क्रिया संग पुरबासी । ७-६४।६
 करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । २-२६।१५
 करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । ५-५।६
 करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी । १-११।१५
 करि प्रनाम तब रामु सिघार । २-२९।०६
 करि प्रनाम तिन्ह पाती दीन्ही । १-२८।९।३
 करि प्रनाम पूँछहिं जोहि तेही । २-२२।५
 करि प्रनाम पूजा कर जोरी । १-३२।१५
 करि प्रनाम बोले भरतु । २-२६।१०
 करि प्रनाम बोले भरतु । २-२९।०१०
 करि प्रनाम भैंटी सब सासू । २-३१।१२
 करि प्रनाम मुनि मंडलतिहि । २-२९।०१०
 करि प्रनाम रिषि आयसु पाई । २-१०।८।६
 करि प्रनाम सब कहैं कर जोरे । २-२९।१५
 करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ । २-२९।२०
 करि प्रेम निरंतर नेम लिए । ७-१३।१५
 करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी । २-२४।११
 करि पूजा कहि बचन सुहाए । ३-२।८
 करि पूजा नैबेद्य ददावा । १-२०।३
 करि पूजा भूपति अत्त भाषा । १-१९।६।३
 करि पूजा मान्यता बढ़ाई । १-३०।५।४
 करि पूजा मारीच तब । ३-२४।०
 करि पूजा मुनि सुजसु बरवानो । १-४४।६
 करि पूजा सब बिधि सेवकाई । १-२९।६।८
 करि पूजा समेत अनुरागा । ७-६२।८
 करि बनाव सजि बाहन नाना । १-१४।२
 करि बर बिनय ससुर सनमाने । १-३४।१७

करि बिचार जिये देखहु नीके । २-२५।३।८
 करि बिचार तिन्ह मंत्र ददावा । ६-३८।४
 करि बिचार मन दीन्ही टीका । २-२६।१।७
 करि बिनती जब संभु सिघार । ६-११।५।१
 करि बिनती दुख दुसह सुनाए । २-१३।३।४
 करि बिनती निज कथा सुनाई । १-२४।३।५
 करि बिनती पद गहि टस सीसा । १-१७।६।३
 करि बिनती पायन्ह परेउ । २-१४।०
 करि बिनती मुनि आयसु पाई । ७-११।३।८
 करि बिनती मंदिर ले आए । ४-११।५
 करि बिनती सुर सकल सिघार । ६-७।११।०
 करि बिनती सुर सिद्ध सब । ६-११।०।०
 करि बिनय सिय रामहि समरपी । १-३३।५।९
 करि बिलाप सब रोवाहिं रानी । २-१५।२।७
 करि बिलापु रोदति बढति । १-९।६।०
 करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी । १-२३।६।५
 करि मज्जनु प्रभु नूषन साजे । ७-१०।८
 करि मज्जन सरऊ जल । १-२०।६।०
 करि मज्जनु पूजहिं नर नारी । २-२४।२।४
 करि मज्जनु मागहिं कर जोरी । २-१९।६।६
 करि मधुप मन मुनि जोगिजन । १-३२।३।१५
 करि मुनि बरन सरोज प्रनामा । १-२३।७।५
 करि रुधिर सरि मज्जनु मनाहु । ६-१२।१।२
 करि लोक बेद बिधानु । १-३२।३।२०
 करि सद्य सोनित पान । ६-१०।०।४
 करि सबु जतनु राखि रखवारे । २-१८।५।८
 करि सोइ रूप गवउ पुनि तहवा । ५-७।६
 करि होमु बिधिवत गाँठि जोरी । १-३२।३।२४
 करिजा कृपा सिसु सेवक जानी । १-२४।६।४

करिअ न सोचु सनेह बस । २-८९।०
 करिअ न संसय अस उर आनी । १-३२।८
 करिहउँ इहाँ संमु थापना । ६-१।४
 करिहहिं बिप्र होम मख सेवा । १-१६।८
 करिहहिं माइ सकल सेवकाई । २-३५।४
 करु परितोषु मोर संग्रामा । १-२८।२
 करुना सुख सागर सब गुन आगर । १-१९।१७
 करुना निधान सुजान सीतु । १-२३।१०
 करुनानिधि मन दोख बिचारी । १-१२।४
 करुनामय मृदु राम सुमाऊ । २-३१।३
 करुनामय रघुनाथ गोसाँई । २-८।२
 करुनायतन प्रभु सदगुनाकर । ७-१२।२३
 करुनासिंधु सुबंधु के । २-७।०
 करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह । ६-११६।४
 करेहु सदा संकर पद पूजा । १-१०।३
 करे सो तपु जेहिं मितहिं महेसु । १-७।२
 करौ कवन बिधि बिनय बनाई । १-३३।८
 करौ काह मुख एक प्रसंसा । १-२८।५
 करौ जाइ सोइ जतन बिचारी । १-१३।७
 कल कपोल श्रुति कुंडल लोला । १-२४।४
 कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । १-३२६।४
 कल गान मधुर निसान बरषहिं । १-३१७।१०
 कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं । १-३२१।११
 कल बल छल करि जाहिं समीपा । ७-११।८
 कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं । १-१३।२
 कल्प कल्प भरि एक एक नरका । ७-११।४
 कल्पबेलि जिमि बहुबिधि त्पल्ली । २-५।३
 कल्पभेट हरिचरित सुहाए । १-३२।७
 कलबल बचन अघर अरुनारै । ७-७६।३

कल्याण काज बिबाह मंगल । १-१०२।१२
 कलस सहित गहि मबनु दहावा । ६-४३।३
 कलातीत कल्याण कल्यान्तकारी । ७-१०७।११
 कलि अघ खल अवगुन कथन । १-४१।०
 कलि कर एक पुनीत प्रतापा । ७-१०२।८
 कलि कुकाट कर कीन्ह कुजंजू । २-२१।४
 कलि के कबिन्ह करउँ परनामा । १-१३।४
 कलि केवल मल मूल मलीना । १-२६।४
 कलि बारहिं बार दुकाल परै । ७-१००।१०
 कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा । १-१४।५
 कलिकाल तुलसी से सठन्हि । २-३५।१२
 कलिकाल बिहाल किए मनुजा । ७-१०१।५
 कलिजुग केवल हरि गुन गाहा । ७-१०२।४
 कलिजुग जोग न जय्य न ग्याना । ७-१०२।५
 कलिजुग सम जुग आन नहिं । ७-१०३।७
 कलिमल ग्रसे धर्म सब । ७-१७।७
 कलि मल मथन नाम ममताहन । ७-५०।९
 कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम । ७-१२९।१४
 कलिमल समन दमन मन । ३-६।७
 कलित करिबरन्हि परीं औबारीं । १-२११।११
 कवच अभेट बिप्र गुर पूजा । ६-७१।१०
 कवन चरित्र करत प्रभु । ७-७७।४
 कवन जोनि जनमेउँ जहँ नहिं । ७-१५।८
 कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला । ७-१२०।६
 कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी । ३-४१।४
 कवन सो काज कठिन जग माहीं । ४-२१।५
 कवन हेतु मन व्यग्र अति । ३-४।०
 कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । ७-८१।८
 कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ग्याना । ७-१०८।८

कवनेहुँ जतन देइ नहिँ जाना । ५-११६
 कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । ४-१६६
 कवने अवसर का मयउ । २-२९०
 कस कीन्ह बरु बीराह बिधि जेहिँ । ५-१५१
 कस न कहहु अस रघुकुल केनू । २-१२५८
 कस रे सठ हनुमान कपि । ६-२६०
 कस्यप अदिति तहाँ पितु माता । १-१२२३
 कस्यप अदिति महात्म कीन्ह । १-१८६३
 कसे कनकु मानि पारिखि पारै । २-२८२६
 कह अंगद बिचारि मन माहीं । ४-२६७
 कह अंगद लोचन भरि बारी । ४-२५३
 कह अंगद सलज्ज अंग माहीं । ६-२८५
 कह कपि तव गुन गाहकताई । ६-२३५
 कह कपि धर्म सीतला तोरी । ६-२१५
 कह कपि मुनि गुरदछिना लेह । ६-५७७
 कह कपि हृदयँ धीर धरु नाता । ५-१४१
 कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । १-१६४१
 कह तापस नृप जानउँ तोही । १-१६२८
 कह दसकंठ कवन तँ बंदर । ६-१११
 कह दास तुलसी कहि न सक । ६-७०१६
 कह दास तुलसी जबहिँ प्रमु । ६-८५१३
 कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी । १-१११५
 कह नृप जे बियान निधान । १-१६०१
 कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा । १-२४८८
 कह प्रमु जाहु जो बिनहिँ बोलारै । १-६१८
 कह प्रमु सखा बुझिऐ काहा । ५-४२५
 कह प्रमु ससि महुँ मेघकताई । ६-११७
 कह प्रमु सुनु सुग्रीव हरीसा । ४-११७
 कह प्रमु हर तुम्हार पन रहेऊ । १-७६६

कह प्रमु हंसि जनि हृदयँ डेसाह । ६-२११
 कह बाली सुनु मौरु प्रिय । ४-७०
 कह बिधि तुन्ह प्रमु अंतरजामी । १-८७८
 कह मुनि तात भयउ अंधिआस । १-१५८८
 कह मुनि प्रमु सुनु बिनती मोरी । ३-२०१
 कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नोका । १-२१५६
 कह मुनि बिहसि गूढ मृदु बानी । १-६६१
 कह मुनि राम जाइ रिस कैसे । १-२७८७
 कह मुनि राम सत्य तुन्ह भाष । २-२५७६
 कह मुनि सुनहु मानुकुल नायक । २-१३१२
 कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबोना । १-२८५७
 कह मुनि सुनु रघुबीर कृगाला । ३-७११
 कह मुनीस हिमवंत सुन । १-६८०
 कह रघुपति सुनु मामिनि बाता । ३-३४४
 कह रघुबीर कहा मम मानहु । ६-१०७११
 कह रघुबीर देखु रन सीता । ६-११८११
 कह रघुबीर समुझु जियँ माता । ६-८३६
 कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । ५-८४
 कह रिषिबधू सरस मृदु बानी । ३-४४
 कह लंकेस कवन तँ कीसा । ५-२०१
 कह लंकेस कहसि निज बाता । ३-२१२
 कह लंकेस सुनहु रघुनायक । ५-४१७
 कह सिव जदपि उचित अस माहीं । १-७६१
 कह सीता घरि धीरजु गाढ़ा । ३-२७१४
 कह सीता बिधि मा प्रतिकूला । ५-११७
 कह सीता सुनु जती गोसाई । ३-२७१२
 कह सुक नाथ सत्य तव बानी । ५-५६३
 कह सुग्रीव नयन भरि बारी । ४-४१२
 कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । ४-४४

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । ४-६११
 कह सुग्रीव सुनहु रघुसाई । १-४२४
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । ६-११५
 कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । १-५१३
 कह सुमंत्र पुनि भूम सँदसु । २-१५६
 कह हनुमंत विषति प्रमु सोई । ५-३१३
 कह हनुमंत सुनहु प्रमु । ६-१२४
 कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी । ६-१८१२
 कहें कुंभज कहें सिंधु अपारा । १-२५५४
 कहें कोसलाधीस द्वौ भ्राता । ६-४९१९
 कहें धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । १-२५४४
 कहें नल नील दुबिद सुग्रीवा । ६-४९१२
 कहें निसिबर अति घोर कठोरा । १-२०४६
 कहें रघुपति के चरित अपारा । १-१११९०
 कहें रामु कहि सिर निकर धार । ६-१३१९
 कहें लगी कहें हृदय कठिनाई । २-१०८८
 कहें लगी सहैअ रहैअ मनु मारें । २-२२८८
 कहें लछिमन सुग्रीव कपीसा । ६-१३८
 कहें हम लोक बंद बिधि हीनी । २-२२२६
 कहइ करहु फिन कोटि उपाया । २-३२५
 कहइ घेरि सुधि अहइ कि नाहीं । २-२१४
 कहइ दसानन सुनहु सुमझा । ६-४८१११
 कहइ बिभीषणु तिन्ह के नामा । ६-४४१२
 कहइ मसुंड सुनहु खगनायक । ४-४५१९
 कहइ मुजालु सुनिअ मुनिनायक । २-२१
 कहइ रीछपति सुनु हनुमाना । ४-२१३
 कहइ सुभाय सनेह बस । २-१८१०
 कहउ कथा सोइ सुखाद सुहाई । १-३४१३
 कहउ जान बन तौ बड़ि हानी । २-५४५

कहउ जुगल मुनिवर्य कर । १-४३४
 कहउ नामु बड़ राम तें । १-२३१०
 कहउ बचन सब स्वारथ हेतु । २-२६८४
 कहउ राम गुन गाय । १-१३४४
 कहउ साँवु सब सुनि पतिआह । २-१०८१९
 कहउ सुभाउ न कुलाहें प्रसारी । १-२८३४
 कहउ सुभाउ न छलु मन माहीं । २-३२१२
 कहउ सुभाउ सत्य सिब सारखी । २-२६३१९
 कहउ सुमार्य सपथ सत मोही । २-६०८
 कहउ सो मति अनुहारि । १-४४१०
 कहत अनुज सन कथा अनेका । ४-१२४
 कहत कठिन समुझत कठिन । ४-११८४
 कहत कथा इतिहास पुरानी । १-२२५१२
 कहत कूप महिमा सकल । २-३१०१०
 कहत चले पहिरें पट नाना । १-२१५१९
 कहत धरम इतिहास संप्रती । २-३१०१९
 कहत नशाइ होइ हिंदी नौकी । १-२८४
 कहत परम आरत बचन । २-३४१०
 कहत परसपर राम जसु । १-३५३१०
 कहत बचन मनु अति सकुचाई । १-४४४
 कहत बिभीषन सुनहु कृपाला । ६-१२३
 कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । २-२३१८
 कहत राम गुन गन अनुसारे । २-२४३४
 कहत राम गुन भा भिनुसारा । २-१३१२
 कहत राम गुन सील सुभाऊ । २-१००४
 कहत राम जसु बिसद बिसाला । १-३११३
 कहत राम जसु लंकाँ आए । १-५२३
 कहत राम सिय राम सिय । २-२४३०
 कहत सप्रेम नाइ महि माथा । २-२३१४

कहत सबहि देखहु ससिहि । ६-११७
 कहत सारदहु कर मति हीवे । २-२८२४
 कहत सुनत रघुपति गुन गाथा । १-४७५
 कहत सुनत रघुबीर निकाई । २-१३४४
 कहत सुनत सति भाउ भरत को । २-३०३२
 कहत सुनत सुमिरत सुटि नीके । १-११३
 कहत सुनत हरषहि पुलकाहीं । १-४०६
 कहत सुनत हरि हर सुजसु । २-३१२०
 कहत सो मोहि लागत मय लाजा । १-४४८
 कहति न सीय सकुचि मन माहीं । २-२८६॥
 कहति राम प्रिय तात तुम्ह । २-१६८१०
 कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । २-२५१४
 कहब सँदेसु भरत के आएँ । २-१५१३
 कहँस्त भट घायल तट गिरे । ६-८७४
 कहसि न खल अस को जग माहीं । ५-४०४
 कहसि न रिपु दल तेज बल । ५-५३१०
 कहसि मोर दुखु देखि बड़ । २-२११०
 कहहिँ एक अति मल नरनाहू । २-१२१३
 कहहिँ गर्वीइअ छिनुकु श्रमु । २-११४०
 कहहिँ झूटि फुरि बात बनाई । २-१५३
 कहहिँ ते बेट असमत बानी । १-११४३
 कहहिँ परसपर कोकिलबयनी । १-३०१७
 कहहिँ परस्पर नारि । १-३११०
 कहहिँ परसपर पुर नर नारी । २-४५३
 कहहिँ परसपर बचन सप्रीती । १-२११५
 कहहिँ परसपर भा बड़ काजू । २-१८४५
 कहहिँ परसपर मिलि दस पाँचा । २-२०५२
 कहहिँ परसपर लोग लोगाई । २-१२१४
 कहहिँ परसपर सिधि समुदाई । २-२१३२

कहहिँ पुरातन कथा कहानी । २-१४०२
 कहहिँ बचन मृदु बिप्र अनेका । ७-१७
 कहहिँ बसिस्तु धरम इतिहासा । १-३५८५
 कहहिँ बेट इतिहास पुराना । १-५४
 कहहिँ भगति भगवंत के । १-४४१०
 कहहिँ भरतु मुनि कहा सो कीन्हे । २-२५५७
 कहहिँ लहेउ एहिँ जीवन लाहू । २-११५७
 कहहिँ सचिव सठ ठकुरसोहाती । ६-८१
 कहहिँ सचिव सुनु निसिचर नाहा । ६-७८
 कहहिँ सत्य प्रिय बचन बिचारी । २-१२१४
 कहहिँ सनेह मगन मृदु बानी । २-२४१५
 कहहिँ सपेम एक एक पाहीं । २-२२११
 कहहिँ सुनहिँ अनुमोदन करहीं । ७-१२८६
 कहहिँ सुनहिँ अस अधम नर । १-११४०
 कहहिँ सुसेवक बारहिँ बारा । २-२०२५
 कहहिँ संत कवि कोबिट । ७-३३१०
 कहहिँ संत मुनि बेट पुराना । ७-११४१
 कहहु कवन प्रमु के असि रीती । ३-४४२
 कहहु कवन बिधि भा संबादा । ७-५४५
 कहहु कवन मय करिअ बिचारा । ६-७१९
 कहहु कवन मैं परम कुलीना । ५-६७
 कहहु कवन सुखु अस बरु पाएँ । १-७८७
 कहहु काहिँ यहु लामु न भावा । १-२५५१
 कहहु ग्यान बिराम अरु माया । ३-१३८
 कहहु जथा जानकी बिबाहीं । १-१०१६
 कहहु तात केहिँ भाँति कोउ । २-१७३०
 कहहु तात केहिँ भाँति जानकी । ५-२१८
 कहहु तात जननी बलिहारी । २-५१७
 कहहु तात प्रमु आयसु पाई । २-३०७२

कहहु तात प्रनु कृपानिकेता । १-१०६।६
 कहहु नाथ गुन दोष सब । १-१३०।०
 कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक । १-२१५।१
 कहहु नाम कर अस्य बखानी । १-१६१।८
 कहहु पाख महुँ आव न जोई । ७-१८।५
 कहहु पुनीत राम गुन गाथा । १-१०८।८
 कहहु बिदेह कवन बिधि जाने । १-२९०।८
 कहहु बेनि का करिअ उपाई । ६-१६।३
 कहहु भगति पथ कवन प्रयासा । ७-४५।१
 कहहु सखी अस को तनुधारी । १-२२०।१
 कहहु सुता के दोष गुन । १-६६।०
 कहहु सुपेम प्रगट को करई । २-२४०।३
 कहा एक मै आत्तु निहारे । १-३१०।५
 कहा नाम गिरि औषधी । ६-५५।०
 कहा मुसुंछि बखानि । १-१२०।४
 कहा मूप मल सबहि सोहाना । २-२७७।८
 कहा हमार न सुनेहु तब । १-८९।०
 कहाँ बिभीषनु भ्राताद्रोही । ६-४९।३
 कहाँ लखनु कहाँ रामु सनेही । २-१५४।२
 कहि अनीति ते मूढहि काना । १-२१२।८
 कहि अनेक बिधि कथा पुरानी । २-२६२।३
 कहि अस ब्रह्ममवन मुनि गयऊ । १-७०।१
 कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख । ३-३५।१४
 कहि कथा सुहाई मातु बुझाई । १-१११।१२
 कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा । २-८६।५
 कहि कहि कोटिक कपट कहानी । २-१९।३
 कहि जग गति मायिक मुनिनाथा । २-२४६।२
 कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । १-२८४।७
 कहि जयजीव बैट सिरु नाई । २-३७।६

कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए । २-४।२
 कहि जाति नहिं बिनती परस्पर । १-३२५।२०
 कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर । ६-१०।१
 कहि देखा हर जतन बहु । १-६२।०
 कहि दंडक बन पावनताई । ७-६५।१
 कहि न जाइ कछु दाइज मूरी । १-३२५।२
 कहि न जाइ कछु नगर बिभूती । २-०।५
 कहि न जाइ कछु हृदय मलानी । १-५८।५
 कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू । २-५३।३
 कहि न जाइ सब भाँति सुहावा । १-३१५।८
 कहि न सकत कछु अति गंभीरा । १-५२।२
 कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । २-६९।३
 कहि न सकत रघुबीर डर । १-२५२।०
 कहि न सकति गुन रुचि अधिकारि । २-३०२।८
 कहि न सकहिं कछु प्रेम बस । ६-११८।१
 कहि न सकहिं सत सारद सेसू । १-३५४।५
 कहि न सकहिं सुभमा जसि कानन । २-१३८।६
 कहि नाम बारक तेपि पावन । ७-१२१।१२
 कहि निज धर्म ताहि समुझावा । ३-३३।३
 कहि निषाद निज नाम सुबानी । २-१९५।४
 कहि नेति निगम पुरान आगम । १-५०।१०
 कहि प्रनामु कछु कहन लिय । २-१५२।०
 कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई । २-६७।५
 कहि प्रिय बचन बिबेकमया । २-६०।०
 कहि प्रिय बचन सकल समुझाए । २-७९।२
 कहि बन के दुख दुसह सुनाए । २-७७।४
 कहि बातें मृदु मधुर सुहाई । १-२२४।८
 कहि बिराध बध जेहि बिधि । ७-६५।०
 कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह । १-२४०।०

कहि सक न सारद सेष नारद । ३-४५१
 कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए । २-८४३
 कहि सप्रेम सब कथाप्रसंगू । २-२२१७
 कहि सब मरमु धरमु भल भाषा । २-१८५७
 कहि सिय लखनहि सरखहि सुनाई । २-१०५३
 कहिअ काह कहि जाइ न बाता । १-१४७
 कहिअ तात सो परम बिरागी । ३-१४८
 कहिअ न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि । ७-१२७४
 कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई । १-२७८६
 कहिअ सुमेरु कि सेर सम । २-२८८१०
 कहिउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी । ७-११३११६
 कहिसि कथा सत सवति कै । २-१८१०
 कहिहउँ सोइ संवाद बखानी । १-२११२
 कही कुसल सब जाइ । ७-२१४
 कही जनक जसि अनुचित बानी । १-२५२१२
 कही तात तुम्ह नीति सुहाई । २-२३०६
 कही समय सिर भरत गति । २-२८७१०
 कहु कपि कबहुँ कृपाल गोसाई । ७-१११६
 कहु कपि केहि बिधि राखौँ प्राणा । ५-२६७
 कहु कपि रावन पावित लंका । ५-३२१५
 कहु कहँ तात कहँ सब माता । २-१५८८
 कहु कारनु निज हरष कर । १-२२८१०
 कहु केहि रंकि करौँ नरेसू । २-२५१३
 कहु खगैस अस कवन अमागी । ७-१०९७
 कहु तजि रोषु राम अपराधू । २-३१६
 कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । ५-५२८
 कहु निज नाम जनक कर भाई । ६-२०१२
 कहु रावन रावन जग केते । ६-२३११२
 कहु लंकेस सहित परिवारा । ५-४५४

कहँ कहँ वृष्टि सारदी थोरी । ४-१५११०
 कहँ कहँ सरिता तीर उदासी । ७-२८१५
 कहँ कहँ सुंदर बटप सुहाए । ३-३७४
 कहँ महिष मानुष धेनु खर अज । ५-२१२१
 कहँ माल देह बिसाल सैल । ५-२१९८
 कहेउ कृपाल मानुकुल नाथा । २-६७३
 कहेउ कृपाल लेहि उतराई । २-१०१४
 कहेउ बनावन पालकी । २-१८६१०
 कहेउ बहोरि कहँ वृषकेतू । १-५२८
 कहेउ भूप जिमि भयउ बिबाहू । १-३५३६
 कहेउ भूप मुनिराज कर । २-५१०
 कहेउ राम बियोग तव सीता । ५-१४११
 कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । १-२७५११
 कहेउ लेहु सब तिलक समाजू । २-१८६३
 कहेउँ प्यान सिद्धांत बुझाई । ७-१११११
 कहेउँ न कष्टु करि जुगति बिसेषी । ७-१०१२
 कहेउँ नाथ हरि चरित अनूषा । ७-१२२११
 कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । ७-१२५११
 कहेउँ राम बन गवनु सुहावा । २-१४१४
 कहेसि बहोरि राम जमिषेका । ७-६७६
 कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । ५-१८
 कहेहु तात अस मोर प्रनामा । ५-२६३
 कहेहु टंडवत प्रभु सैं । ७-११७
 कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा । १-६११
 कहेहु मुखगार मूढ़ सन । ५-५२१०
 कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना । २-८७८
 कहेहु तें कष्टु दुख घटि होई । ५-१४१५
 कहँ कहाँ का अब स्वामी । २-२६६११
 कहँ कहँ लगि नाम बड़ाई । १-२५८

का आचरजु भरतु अस करहीं ।२-१८८।
 का छति लामु जून धनु तोरें ।१-२७१।
 का देखें तोहि त्रैलोक महुँ कपि ।६-१०६।१०
 का देखें पूरनकाम संकर ।१-१००।१०
 का न करै अबला प्रबल ।२-४४०।
 का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना ।२-१८२।
 का बरशा सब कृषी सुखाने ।१-२६०।३
 का सुनाइ बिधि काह सुनावा ।२-४४।१
 काई कुमति केकई केरी ।१-४०।८
 काक समान पाकरिपु सीती ।२-३०१।२
 काक कंक लै मुजा उड़ाहीं ।६-८४।२
 काकमसुंछि मागु बर ।४-८३।४
 काकमुसुंछि संग हम टोऊ ।१-११५।४
 काँख दाबि कपिराज कहूँ ।६-६५।०
 काँच किरिच बदलें ते लेहीं ।४-१२०।१२
 काचे घट जिमि डारौं फोरी ।१-२५२।५
 काजु सँवारेहु सजग सबु ।२-२२।०
 काजु हमार तासु हित होई ।६-१६।८
 काटइ परसु मलय सुनु भाई ।४-३६।८
 काटत बढ़ाहीं सीस समुदाई ।६-१०१।१
 काटत सिर होइहि बिकल ।६-११।०
 काटतहीं पुनि भए नवीने ।६-१५।११
 काटिअ तासु जीभ जो बसाई ।१-६३।४
 काटे बहुत बढ़े पुनि ।६-१४।०
 काटे सिर नभ मारग धावहि ।६-१३।४
 काटे सिर मुज बार बहु ।६-१०१।४
 काटैसि दसन नासिका काना ।६-१५।६
 काटैसि पंख पस खग घरनी ।३-२८।२२
 काटैहि पइ कदरी फरइ ।५-५८।०

काटें मुजा सोह खल कैसा ।६-६१।११
 कादर देखि डरहिं तहैं ।६-८४।०
 कादर भयंकर रुधिर सरिता ।६-८६।११
 कादर मन कहूँ एक अधारा ।५-५०।४
 कान नाक बिनु भगिनि निहारी ।६-२१।४
 कान मूदि कर रद गहि जीहा ।२-४४।४
 कानन करउँ जनम भरि बासू ।२-२५५।८
 कानन गयउ बाजि चंदि तेहीं ।१-१७।१४
 काननु कठिन भयंकरु भारी ।२-६१।४
 कानन्हि कनक फूल छबि देहीं ।१-२१।४
 काने खोरे कूबरे ।२-१४।०
 काम आदि मद दंभ न जाके ।३-१५।१२
 काम कला कछु मुनिहि न ब्यापे ।१-१२५।४
 काम कुसुम धनु सायक लीन्हे ।१-२५६।१
 काम कोटि छबि स्याम सरीरा ।१-११८।१
 काम क्रोध मद गज पंचानन ।६-११४।४
 काम क्रोध मद मत्सर भेका ।३-४३।३
 काम क्रोध मद लोभ पसायन ।४-३८।५
 काम क्रोध मद लोभ रत ।४-४३।४
 काम क्रोध मद लोभ सब ।५-३८।०
 काम क्रोध लोभादि मद ।३-४३।०
 काम कोह कलिमल करिगन के ।१-३१।४
 काम कोह मद मान न मोहा ।२-१२१।१
 काम कोह मद मोह नसावन ।१-४२।५
 काम चरित नारद सब भाषे ।१-१२४।४
 काम बात कफ लोभ अपारा ।४-१२०।३०
 कामरूप इच्छमरन ।४-११३।४
 कामरूप खल जिनस अनेका ।१-१७५।४
 कामरूप जानहिं सब माया ।१-१८०।१

कामरूप सुंदर तन धारी । १-१३१५	काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा । १-१७५११
कामद भे गिरि राम प्रसादा । २-२७८१९	काल ब्याल कर भच्छक जोई । ६-५५१८
कामधेनु सत कोटि समाना । ७-१९१४	कालब्यालकरात्मसुगणरं । ६-४७७२(२)
कामादिदोषरहितं कुरु । ५-४७७२(७)	काल बिबस पति कहा न माना । ६-१०३१९३
कामादिहर विग्यानकर सुर । ६-१२०१२०	काल सुमाउ करम बरिआई । १-६१२
कामिन्ह के दीनता देखीई । ३-३८१२	कालराति निसिचर कुल केरी । ५-३९१८
कामिहि नारि पिआरि जिमि । ७-१३०४४	कालरूप खल बन दहन । ६-४८४४
कामु जारि रति कहूँ बरु दीन्हा । १-८८१२	काल रूप तिन्ह कहँ मै भ्राता । ७-४०१५
कार्य बबन मन मम पद । ७-८५४४	कालउ तुअ पद नाइहि सीसा । १-१६४१२
कारन कवन देह यह पाई । ७-१३३३	कालकेतु निसिचर तहँ भावा । ७-१६९१३
कारन कवन नाथ नहिँ अग्रउ । ७-०१२	कालनेमि कलि कपट निघानू । १-२६१८
कारन कवन बसहु बन । ७-५१०	कालहि कर्महि इंस्वरहि । ७-४३१०
कारन कवन भरतु बन जाहीँ । ३-१८८१३	कालि लगन नलि केतिक बारा । २-१०१४
कारन कवन आप मुनि दीन्हा । १-१२३१७	काशीशं कलिकल्मषौघशमनं । ६-४७७२(३)
कारन कवन सो नाथ सब । ७-१४४४	कासी नग सुरसरि क्रम नासा । १-५१८
कारन तँ कारजु कठिन । २-१७११०	कासी भरत जंतु अवलोकी । १-१९८११
कारन मोहि सुमाउ । २-२५१०	काह करीं सखि सूध सुमाऊ । २-१९१७
कारण्यौककलकअलोचनं । ७-४७७३(२)	काह करीं सुनि प्रिय बधन । ६-१९३१०
कारुनीक दिनकर फुल केतू । ६-३६१२	काह न पावकु जारि सक । २-४७१०
कारुनीक ब्यालीक मद्र खंडन । ७-५०१८	काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । २-१९१४
काल कर्म गुन ग्यान सुमाऊ । १-२०११२	काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा । १-१३३१७
काल कर्म गुन दोष सुमाऊ । ७-१९३१५	काहुहि दोसु देहु जनि ताता । २-१६४१७
काल करम बस होहिँ गोसाई । २-१४११६	काहुहि लात चपेटन्हि केहू । ६-४३१८
काल कर्म सुमाव गुन । ७-२११०	काहु की जाँ सुनहिँ बड़ाई । ७-३९१२
काल कराल ब्याल खगराजहि । ७-२११५	काहू सुमति कि खल सँग जानी । ७-१९११४
काल कबलु होइहि छन माहीं । १-२७३१३	काहूँ बैठन कहा न ओही । ३-११५
काल कोटि सत सरिस अति । ७-१९१४	काहे न होइ बिनीत परम । ७-१२०
काल दंड गहिँ काहु न मारा । ६-३६१७	किए अमित उपदेस । २-२७६१०
काल धर्म नहिँ ब्यापहिँ ताली । ७-१०३१७	किए चरित पावन परम । ७-७२४

किए धरम उपदेस घनेरे । २-८४४
 किए भृंग बहु रंग बिहंगा । १-२८७५
 किए सकल भट घायल भयाकुल । ६-१६१९२
 किए सुरभी कही बानी सुधा सम । ६-१०५१९
 किए जाहि छाया जलद । २-२१६१०
 किए अन्यथा होइ नहिं । १-१७४१०
 किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू । १-६७
 किंकिनि लखाम लगामु ललित । १-३१५१९२
 किंनर नाग सिद्ध गंधर्वा । १-६०१९
 किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा । १-२८११९९
 किमि चलिहहिं नारग अगम । २-१२०१०
 किमि समुद्रौ मैं जीव जड़ । १-३०७
 किमि सहि जात अनख तोहि पाही । ३-२९११५
 किसउ निषादनाथु अगुआई । २-२०२१९
 किलकत मोहि धरन जब धायहिं । ७-७६१९०
 की तजि मान अनुज इव । ५-५६७
 की तनु प्रान कि केवल प्राना । २-५७४
 की तुम्ह अखिल मुवन पति । ४-९१०
 की तुम्ह तीन देव महीं कोऊ । ४-०१९०
 की तुम्ह रामु दीन अनुसारी । ५-५६
 की तुम्ह हरि दासन्ह महीं कोई । ५-५७
 की घी श्रवन सुनेहि नहिं मोही । ५-२०२
 की भइ भेंट कि फिरि गए । ५-५३१०
 की मैनाक कि खगपति होई । ३-२८१९३
 की रावन करि कोष चलाए । ६-३१६
 कीजिज गुर आयसु अवसि । २-१७५१०
 कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला । १-१११११४
 कीट मनोस्थ दारु सरीस । ७-७०१५
 कीन्ह अनुग्रह अमित अति । २-२६६१०

कीन्ह कपटु मैं संभु सन । १-५७१०
 कीन्ह कपिन्ह सब जग्य बिधंसा । ६-७५१२
 कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला । १-५६७
 कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई । ७-३२१९
 कीन्ह निमज्जनु तीस्यराजा । २-२९५१९
 कीन्ह निषाद दंडवत तेही । २-१९०१५
 कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा । १-२९७१९
 कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । २-१९९१६
 कीन्ह बासु भल ठाउँ बिचारो । २-१९५१४
 कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ भाई । १-१७६१९
 कीन्ह मोह बस द्रोह । ३-२१०
 कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोह । ७-८२५
 कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरो । २-३०६१५
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । ६-१०४६
 कीन्हि जोरि कर बिनय बड़ाई । १-३२०१२
 कीन्हि प्रसन्न जेहि भाँति मवानी । १-३२१९
 कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी । १-३५९१६
 कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । ४-४१९
 कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई । १-३४२१६
 कीन्हि मानु मिस काल कुघाली । २-२५२१९
 कीन्हि सीच सब सहज सुधि । १-३५८१०
 कीन्ही कृपा सुमिरि गुन । ५-७१०
 कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । १-१०७
 कीन्हैउँ प्रगट न कारन तेहीं । १-२३५१४
 कीन्हैहु प्रभु बिरोध तेहि देवक । ६-६२५
 कीरति बिजय बीरता भारी । १-२५०१४
 कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । २-२०९१९
 कीरति भनिति भूति भलि सोई । १-१३१९
 कीरति सरित छहूँ रितु रूरी । १-४११९

कुजौरि चढ़ाई पालकिन्ह । १-३३८।०	कुमजादि मुनिनायक नाना । ६-१११।२
कुजौरि मनोहर बिजय बड़ि । १-२५१।०	कुमतिहि कसि कुबेयता फाबी । २-२४।७
कुजौरु कुजौरि कल नाँवरि देहीं । १-३२४।१	कुमुख अकंपन कुलिसरद । १-१८०।०
कुजर मनि कठा कलित । १-२४३।०	कुमुदबंधु कर निंदक हौसा । १-२४२।५
कुटिल कठोर कुबुद्धि अमागी । २-४६।४	कुल इष्ट सरिस बसिष्ट पूजे । १-३११।११
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी । २-२२७।४	कुल कषाट कर कुसल करम के । २-३१५।७
कुडल कंकन पहिरे ब्याला । १-११।२	कुल कलंकु करि सृजेउ बिघाताँ । २-२००।६
कुडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । १-१४६।५	कुल कलंकु जेहिं जनमेउ मोही । २-१६३।५
कुद्वे कृतांत समान कपि । ६-८०।१	कुल रीति प्रीति समेत रवि । १-३२२।१३
कुंद इंदु दर गौर सरीरा । १-१०५।६	कुल समेत रिपु मूल बहाई । १-१७०।५
कुंद इंदु सम देह । १-०।४	कुलबंति निकारहिं नारि सती । ७-१००।३
कुंद कली दाडिम दामिनी । ३-२१।११	कुलिस अस्थि तें उपल तें । १-१७१।०
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दर । ७-४०३।१	कुलिस कठोर नितुर सोइ छाती । १-११२।७
कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ । ४-४०६।१	कुलिस कठोर सुनत कटु बानी । २-२४६।५
कुपथ कुतरक कुयालि कलि । १-३२।७	कुलिसहु चाहि कठोर अति । ७-११।१
कुपथ निवारि सुपथ चलावा । ४-६।४	कुस किसलय साथरी सुहाई । २-६५।२
कुपथ माग रुज ब्याकुल रोगी । १-१३२।१	कुस कटक काँकरौ वुराई । २-३१०।५
कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । २-२२।१	कुस कटक मग काँकर नाना । २-६१।५
कुबरी करि कबुली कैकेई । २-२१।१	कुस साँथरी निहारि सुहाई । २-११८।१
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा । ५-१४।३	कुसकेतु कन्या प्रथम जो । १-३२४।१७
कुमकरन अस बंधु मम । ६-२७।०	कुसगुन लंक अवध अति सोकु । २-८०।४
कुमकरन कपि फौज बिडारी । ६-६६।७	कुसमउ देखि सनेहु सँनारा । २-२१६।२
कुमकरन घननाद कर । ७-६७।०	कुसल प्रसन्न करि आसन दीन्हे । २-१०६।१
कुमकरन दुमंद रन रंगा । ६-६३।२	कुसल प्रसन्न कहि बारहिं बारा । २-११४।३
कुमकरन ब्रह्मा कहु भाई । ६-६१।८	कुसल प्रानप्रिय बंधु टोउ । १-१२०।०
कुमकरन मन दीख बिचारी । ६-६८।१	कुसल मूल पद पंकज पेखी । २-११४।७
कुमकरन रन रंग बिरुद्धा । ६-६६।१	कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा । १-१२५।२
कुमकरन रावन ह्री भाई । ६-११८।११	कुह कुहू कोकिल धुनि करहीं । ३-३१।१
कुमकरन रावन सुभट । १-१२२।०	कूजत कलरव हंस गन । ७-५६।०

कूजत पिक मानहुँ गज माते । ३-३७५
 कूजहिँ खग मृग नाना बृंदा । ७-२२३
 कूटि लंक गढ़ ऊपर आवा । ६-४२६
 कूटे जुगल विगत अम । ६-४५०
 कूबर टूटेउ फूट कपारु । २-१६२५
 कूर कुटिल खल कुमति कलकी । २-२९८२
 कृतकृत्य विमो सब बानर ए । ६-११०१९
 कृतजुग सब जोगी बिग्यानी । ७-१०२११
 कृतजुग त्रेताँ द्वापर । ७-१०२४
 कृपा अनुग्रह अंगु अघाई । २-२९९५
 कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । २-८७७
 कृपा कोपु बधु बंधव गोसाई । १-२७८५
 कृपा बारिधर राम खरारी । ६-६९७
 कृपा रहित हिंसक सब पापी । १-१७५८
 कृपादृष्टि कपि मालु बिलोके । ६-५१८
 कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु । ६-१०३०
 कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका । ६-१०४७
 कृपादृष्टि रघुवीर बिलोकी । ७-५६
 कृपाँ मलाई आपनी । २-२९८०
 कृपासिंधु जब मंदिर गए । ७-९३
 कृपासिंधु प्रभु होहिँ दुखारी । २-१४०५
 कृपासिंधु प्रिय बंधु सन । २-२५१०
 कृपासिंधु फेरहिँ तिन्हहि । २-११२०
 कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिँ । ८-८२४
 कृपासिंधु बोले मुसुकाई । २-१००१९
 कृपासिंधु मतिधोर । १-२०८४
 कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें । १-१६३७
 कृपासिंधु मुनि मति करि मोरी । ७-११२१२
 कृपासिंधु मैं आउब । ६-११५०

कृपासिंधु रघुनाथ भजि । ६-३७०
 कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । २-३०२११
 कृपासिंधु सनमानि सुबानी । २-३००७
 कृपासिंधु सादर कहहु । ७-९३४
 कृपासिंधु सिव परम अगाधा । १-५७२
 कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन । ६-११७४
 कृमि पालइ सबु कोइ । ७-१५४
 कृष्णतनय होइहि पति तोरा । १-८७२
 कृषी निरावहिँ चतुर किसाना । ४-१४८
 कृस तनु सीस जटा एक बेनी । ५-७८
 कृस सरीर मुनिपट परिधाना । १-१४२८
 केकि कंठ दुति स्यामल अंगा । १-३१५१
 केकीकण्ठामनील..... । ७-४७१(१)
 केतिक बात प्रभु जातुधान की । ५-३१४
 केवट उतरि दंडवत कीन्हा । २-१०११
 केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । २-१५०११
 केवट बुध बिद्या बडि नावा । २-२७५४
 केवट राम रजायसु पावा । २-१००६
 केवल कृपा तुम्हारिहि । ७-३६०
 केहरि कटि घट पीत घर । १-२३३०
 केहरि कंधर चारु जनेऊ । १-१४६७
 केहरि कंधर बाहु बिसाला । १-२९८५
 केहरि नाद वीर सब करहीं । ६-४८११०
 केहरिनाद मालु कपि करहीं । ५-३४११०
 केहिँ अघ एकहि बार मोहि । २-२००
 केहि अवराधु का तुम्ह चहहु । १-७७३
 केहि कारन आगमन तुम्हारा । १-२०६८
 केहि कै लोभ बिडबना । ७-७०४
 केहि बिधि अवध चलहिँ रघुराऊ । २-२४४२

केहि बिधि अस्तुति करौ तुम्हारी । ३-३४।२
 केहि बिधि कहौ जाहु अब स्वामी । ३-५।९
 केहि बिधि होइ राम अभिषेकू । ३-२५२।२
 केहि भाँति बरनि सिरात रसना । १-३२४।१४
 केहि सुकृती केहि धरौ बसाए । २-११२।२
 केहि हेतु रानि रिसानि परसत । २-२४।९
 के तापस तिय कानन जोगू । २-१९।३
 केकड़ कत जनमी जग माझा । २-१६३।४
 केकड़ कहँ पुनि पुनि मिले । ४-६।४
 केकड़ जठर जनमि जग माहीं । २-१४९।४
 केकड़ सुअन जोगु जग जोई । २-१८०।१
 केकयनदिनि मंदमति । २-११।०
 केकयसुता सुनत कटु बानी । २-११।१
 केकयसुता सुमित्रा दोऊ । १-१९४।१
 केकेई कहँ नृप सो दयऊ । १-१८९।३
 केकेई भव तनु अनुरागे । २-१४१।१
 केकेई सुअ कुटिलमति । २-१४८।०
 केकेइ हरषित एहि भाँती । २-१५८।५
 को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ । २-१०५।१
 को कृपाल विनु पालिहे । २-२९९।०
 को जान केहि आनंद बस । १-३१४।९
 को जानै केहि सुकृत सयानी । १-३३४।४
 को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें । १-१५८।३
 को तुम्ह तात कहौं ते आए । ४-१।४
 को तुम्ह स्यामल गौर सरीस । ४-०।४
 को न कुसंगति पाइ नसाई । २-२३।८
 को प्रमु सँग मोहि चितवनिहारा । २-६६।४
 को बड़ छोट कहत अपराधू । १-२०।३
 को बिबेकनिधि बल्लमहि । २-२८।०

को रघुबीर सरिस संसारा । २-२३।४
 को साहिब सेवकहि नेवाजी । २-२९।५
 को तिमुवन मोहि सरिस अभागी । २-१६३।६
 कोउ कह ए भूपति पहिचाने । १-२२।३
 कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । ६-४२।२
 कोउ कह चलन चहत हर्हि आजू । १-३३।३
 कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा । ६-११।४
 कोउ कह जिअत घरहु द्वी माई । २-१४।९
 कोउ कह जौ भल अहइ बिधाता । १-२२।५
 कोउ कह दूधनु रानिहि नाहिन । २-२२।५
 कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू । २-१८४।४
 कोउ कह संकर चाप कटोरा । १-२२।२
 कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा । २-२४।४
 कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं । २-१५।२
 कोउ न हमारें कटक अस । ६-२३।४
 कोउ नहिं सिव सनान प्रिय मोरें । १-१३।४
 कोउ नृप होउ हमारे का हानी । २-१५।६
 कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा । ४-८६।४
 कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । ४-८६।२
 कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । ६-११२।१३
 कोउ ब्रिथाम कि पाव । ४-८९।४
 कोउ मुख हीन बिपुल मुख काहू । १-१२।४
 कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी । १-२२।३
 कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई । ४-८६।३
 कोउ सुनि संसय करै जनि । १-१००।०
 कोक तिलोक प्रीति अति करिही । २-२०।३
 कोक सोकप्रद पंकज द्रोही । १-२३।४
 कोट कैंगूरन्हि चढ़ि गए । ६-४०।०
 कोट कैंगूरन्हि सोहहिं कैसे । ६-४०।१

कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा । १-२७२।८
 कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । ६-६६।२
 कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा । ६-६४।५
 कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई । २-२२७।६
 कोटि बिघ्न ते संत कर । ६-३४।४
 कोटि बिघ्न बध लागहिं जाहू । ५-४३।१
 कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई । ७-५३।३
 कोटि भांति समझावई । ७-८२।४
 कोटि मनोज लजावनिहारे । २-११६।१
 कोटिन्ह आयुध रावन खारे । ६-८२।४
 कोटिन्ह काँवरि चले कहारा । १-२९९।७
 कोटिन्ह गहि सशेर सन मर्दा । ६-६६।३
 कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारै । ६-९०।५
 कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा । ७-७९।५
 कोटिन्ह बाजिमेघ प्रमु कीन्हे । ७-२३।१
 कोटिन्ह मैघनाद सम । ६-३४।४
 कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्नहिं । ६-८७।१०
 कोटिहुँ बदन नाहिं बने बरनत । १-२९।९
 कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर । ३-१७।१४
 कोदंड खंडेउ राम तुलसी । १-२६०।१२
 कोदंड धुनि अति चंड सुनि । ६-९०।१०
 क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु । ७-१११।४
 क्रोध के परुष बचन बत । ३-३८।४
 क्रोध मनोज लोभ मद माया । ३-३८।३
 क्रोधवंत तब भयउ अनंता । ६-५३।४
 क्रोधवंत तब रावन । ३-२८।०
 क्रोधवंत लछिमन सुनि काना । ४-११।२
 क्रोधिहि सम कामिहि हरि कया । ५-५७।४
 कोप समाजु साजि सबु सोई । २-२२।७

कोपमवन सुनि सकुवेउ राऊ । २-२४।१
 कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ घेस । ६-४८।९
 कोपि कूदि ह्री धरिसि बहोरी । ६-९७।९
 कोपि मरुतसुत अंगद धार । ६-७५।६
 कोपि महीधर लेइ उपारी । ६-६८।३
 कोपेउ जबहिं बारिघरकेतू । १-८३।६
 कोपेउ समर श्रीराम । ३-१९।२
 कोमल चरन चलत बिनु पनहीं । २-३१०।४
 कोमलचित अति दीन दयाला । ३-३२।१
 कोमलचित कृपाल रघुसाई । ५-१३।४
 कोमलचित दीनन्ह पर टाया । ७-३७।३
 कोल कराल दसन छवि गाई । १-१५५।७
 कोल किरात कुर्मग बिहना । २-१७।८
 कोल किरात बेध सब आए । २-१३२।७
 कोल किरात भित्तर बनचारी । २-३२०।२
 कोल किरात भित्तर बनबासी । २-२४९।१
 कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा । १-१५६।७
 कोलाहतु सुनि सीया सकानी । १-२६६।५
 कोसलपति कर देखि समाजू । १-३५२।६
 कोसलपति गति सुनि जनकौरा । २-२७०।१
 कोसलपति समधी सजन । १-३४०।०
 कोसलपुर बासी नर । १-२०४।०
 कोसलेन्द्रपदकअमञ्जली..... । ७-४०२।(१)
 कोसलेस दसरथ के जाए । ४-१।१
 कोसलेस सुत लछिमन रामा । ४-६।२९
 कोहबरहिं आने कुर्जर कुर्जरि । १-३२६।१५
 कौड़ी लागि लोभ बस । ७-९९।४
 कौतुक कहै आए पुरबासी । ५-२४।६
 कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका । ६-८४।५

कौतुक देखत सैल बन । १-११०
 कौतुक देखहिं मालु कपि । ६-३२१क
 कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । १-२२४६
 कौतुक देखि पतंग मुलाना । १-११४८
 कौतुक देखि राम मुसुकाने । ६-५१६
 कौतुक देखि चुमन बहु बरषी । ५-३३१क
 कौतुक श्रात देखिअहू मोरा । ६-४८६
 कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न । १-३२६।२१
 कौतुक लागि भवन तै आवा । ६-२३१६
 कौतुक सिंधु नाघि तव लंका । ६-३५४
 कौतुकहीं कैलास पुनि । १-१०९।०
 कौल कामबस कृपिन विमूढा । ६-३०१२
 कौसल्या कह दोसु न काहू । २-२८१।३
 कौसल्या कह धीर धरि । २-२८३।०
 कौसल्या के चरनन्हि । ७-८।क
 कौसल्या के बचन सुनि । २-१६६।०
 कौसल्या कैकेई हाथ धरि । १-१८९।४
 कौसल्या जब बोलन जाई । १-२०२।७
 कौसल्या धरि धीरजु कहई । २-१७५।१
 कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि । ७-६।६
 कौसल्या सम सब महतारी । २-१४।५
 कौसल्या सुत सो सुख खानी । १-२२०।६
 कौसल्या अत्र काह बिगास । २-४८।८
 कौसल्या नृपु दीख मलाना । २-१५३।३
 कौसल्या सादर सनमानी । २-२८०।४
 कौसल्यादि नारि प्रिय । १-१८८।०
 कौसल्यादि मातु सब घाई । ७-५।९
 कौसल्यादि मातु सब । ७-०।५
 कौसल्यादि राम महतारी । १-३४४।८

कौसल्यादि सकल महतारी । २-१७४।६
 कौसल्यादि सासु गृह माहीं । ७-२३।८
 कौसिक कहा छमिअ अपराधू । १-२७४।५
 कौसिक कहि कहि कथा पुरानी । २-२७७।४
 कौसिक कहेउ मोर मनु माना । १-२१३।६
 कौसिक बामदेव जावाली । २-३१८।६
 कौसिक राउ लिए उर लाई । १-३०७।२
 कौसिक सतानंद तव जाई । १-३३१।६
 कौसिक सुनहु मंद यह बालकु । १-२७३।१
 कौसिकरूप पर्योनिधि पावन । १-२६१।२
 कौसिकहि पूजत परम प्रीति । १-३१९।२
 कौसिकादि मुनि सच्चिव समाजु । २-२९२।३
 कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । १-२२१।१
 कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं । १-३१७।४
 कंचन कलस बिचित्र सँवारे । ७-८।१
 कंचन थार आरती नाना । ७-८।६
 कंचन थार सोह बर पानी । १-१५।३
 कंदु सूख मुख आव न बानी । २-३४।२
 कंत करष हरि सन परिहरहू । ५-३५।६
 कंत राम बिरोध परिहरहू । ६-१३।८
 कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । ६-३५।१
 कंद मूल फल अमिअ अहारु । २-६५।३
 कंद मूल फल अंकुर नीके । २-१०६।२
 कंद मूल फल पत्र सुहाए । ४-१२।२
 कंद मूल फल फूल हम । २-२१२।०
 कंद मूल फल भरि भरि दोना । २-१३४।२
 कंद मूल फल भोजन । १-२०९।०
 कंद मूल फल सुरस अति । ३-३४।०
 कंदर खोह नदी नद नारे । २-६१।७

कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । ७-७६।२
 कंप न भूमि न मरुत बिसेषा । ६-१३।१
 कंप पुलक तन नयन सनीरा । २-६९।२
 कंपहिं भूप बिलोकत जाकें । १-२९।३
 कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । १-३६।३
 कंपित मोहि बिलोकि अति । ७-१०७।७
 कंबल वसन बिचित्र पटोरे । १-३२।३
 कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । १-१९।७

ख

खग कंक काक सुगाल । ३-१९।१३
 खग मृग परिजन नगर बन । २-६५।०
 खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । ३-१२।८
 खग मृग बृंद अनदित रहहीं । ३-१३।३
 खग मृग मगन देखि छवि होहीं । २-१२।८
 खग मृग सहज बयरु बिसराई । ७-२२।२
 खग मृग हय गय जाहिं न जोए । २-१५।७
 खगपति राम कथा मैं बरनी । ७-१४।६
 खगहा करि हरि बाघ बराहा । २-२३।३
 खपरिन्ह खग अलुड्डि जुड्डिहिं । ६-८०।१२
 खबरि लीन्ह सब लोग नहाए । २-२०।३
 खबरि लेन हम पटए नाथा । २-२७।७
 खर आरुढ़ नगन दससीसा । १-१०।४
 खर कुठार मैं अकरुन कोही । १-२७।६
 खर दूषन तिसिरा कर घाता । ३-२५।१२
 खर दूषन तिसिरा बधेउ । ३-२५।०
 खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । ३-१७।२
 खर दूषन बध बहुरि बखाना । ७-६५।४
 खर दूषन बिसध तुम्ह मारा । ६-८९।५
 खर दूषन मोहि सम बलवंता । ३-२२।२

खर दूषन सुनि लगे पुकारा । ३-२१।११
 खर दूषन तिसिरा अरु बाली । १-२०।९
 खर स्वान सुजर सुकाल मुख । १-९२।११
 खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । २-१५।७।५
 खर्व निसाचर बाँधेउ । ७-५८।०
 खरमरु देखि बिकल पुर नारी । १-२६।७।१
 खरमरु नगर सोधु सब काहू । २-४८।२
 खल अध अगुन साधु गुन गाहा । १-५।१
 खल कामादि निकट नहिं जाहीं । ७-११९।६
 खल खंडन मंडन रम्य छमा । ६-११०।२१
 खल तव कठिन बचन सब सहऊँ । ६-२१।४
 खल दल बिदारन परम कारन । ६-१०२।१३
 खल परिहास होइ हित मोस । १-८।१
 खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा । ३-२७।१
 खल बिनु स्वास्थ्य पर अपकारी । ७-१२०।१८
 खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । ६-४४।३
 खल मल धाम काम रत रावन । ६-११३।१०
 खल मंडलीं बसहु दिनु राती । ५-४५।५
 खलउ फरहिं भल पाइ सुसंगू । १-६।४
 खलन्ह हृदयें अति ताप बिसेयी । ७-३८।३
 खलानां दण्डकृद्योऽसौ । ६-स्लोक३(२)
 खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे । २-१८।४
 खाई सिंधु गमीर अति । १-१७।८।६
 खाएसिं फल अरु बिटप उपारे । १-१७।४
 खायउँ फल प्रमु लागी भूखा । १-२१।३
 खाहिं निसाचर दिवस निसि । ६-३१।७
 खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं । ६-४।६
 खाहु जाइ फल मूल सुहाए । ६-४।४
 खेद खिन्न छुद्वित तृषित । १-१५।७।०

खेट खिन्न मन तर्क बढ़ाई । ७-५८१२
 खेलते तहँ बालकन्ह मौला । ७-५०१४
 खेलत मनसिज मीन जुग । १-२५८१०
 खेलत रहे तहँ सुधि पाई । १-२८११७
 खेलहि बालक मारहि जाई । ६-२३१५४
 खैचहि गोध आँत तट मए । ६-८७५५
 खैचि धनुष सर सत संघाने । ६-६९१७
 खैचि सरासन श्रवन लागि । ६-५०२१०
 खोज मारि स्थु हाँकहु ताता । २-८४१८
 खोजइ सो कि अग्य इव नारी । १-५०१२
 खोजत कतहुँ मिलइ नहिँ धूरी । ४-१४१४
 खोजत ब्याकुल सरित सर । १-१५७१०
 खोजत रहेउँ तोहि सुतघाती । ६-८२१२
 खोजन मंजु तिरिछे नयननि । ३-११६१७
 खोजन सुक कपोत मृग मीना । ३-२१११०

ग

गढ़ बिषम बिपति बियोग भव । ७-५११३
 गढ़ मुरुछा तब मूपति जामे । २-८०५
 गढ़ मुरुछा रामहि सुमिरि । २-४३१०
 गढ़ लछिमन रिपु भगिनी जानी । ३-१६१२२
 गढ़ बहोर गरीब नेवाजु । १-१२१७
 गढ़ मबानी भवन बहोरो । १-२३४१४
 गढ़ सहमि सुनि बचन कठोरा । २-७२१६
 गढ़ समीप महेश तब । १-५५१०
 गए अवघ चर भरत गति । २-३७११०
 गए जनकु रघुनाथ समीप । २-२१५१२
 गए जानि अगद हनुमान । ६-४५१३
 गए देव सब निज निज धामा । १-१८७११
 गए बिभीषन पास पुनि । १-१७७१०

गए बीति कछु दिन एहि गौती । १-३१११४
 गए लखनु जहँ जानकिनाथु । २-७५१९
 गए सकल तुहिनावल गेह । १-१३१६
 गए सुमंत्रु तब राउर माहीं । २-३७१३
 गए काल कछु संपति पाई । ७-१०४१२
 गए जाम जुग मूपति आवा । १-७११५
 गए मवन पूछहि पितु माता । १-१४१६
 गए समीप सो अवसि नसाई । १-८११८
 गए सरन प्रभु राखिहै । ५-२२१०
 गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । १-६१९
 गगन पंथ देखी मैं जाता । ७-४१४
 गगन ब्रह्मवानी सुनि वाना । १-१८६१८
 गगन बिमल संकुल सुर जूथा । १-११०६
 गगन समीर अनल जल धरनी । ५-५८१२
 गगन सिद्ध सुर त्रासित । ६-७०१०
 गगनगिरा गंभीर भइ । १-१८६१०
 गगनोपरि हरि गुन गन गाए । ६-७०११५
 गज बाजि खच्चर निकर पदचर । ५-२११४
 गज रथ तुरग चिकार कठोरा । ६-८६१४
 गज स्थ तुरग दास अरु दासी । १-३२५१४
 गज रथ तुरग हेम गो हीरा । १-११५१८
 गत ग्रीषम बरना रिनु जाई । ४-१११८
 गति कूर कबिता सरित की । १-११२२
 गननायक बरदायक देवा । १-२५६१७
 गनपति गौरि गिरीसु मनाई । २-८०१२
 गनिका अजामिल ब्याघ गोध । ७-१२११०
 गनी गरीब ग्रामनर नागर । १-२७१६
 गयउ गरुड़ जहँ बसइ मुसुंडा । ७-६२११
 गयउ गरुड़ बैकुंठ तब । ७-१२५१७

गयउ जहाँ बाहेर नगर । २-८२।०
 गयउ दसानन मंदिर माहीं । ५-४।६
 गयउ दूरि धन गहन बराहू । १-१५६।५
 गयउ न गूह मन बहुत गलानी । १-१५७।४
 गयउ निकट तप देखि बिघाता । १-१७६।२
 गयउ बसीठी बीरबर । ७-६७।६
 गयउ भवन अति सोचबस । ३-२२।०
 गयउ नोर संदेह । ७-६८।६
 गयउ सभा दरबार तब । ६-१८।०
 गयउ सर्मा मन नेकु न मुरा । ६-१८।७
 गयउ राहनि नाँहें कलु कहि आवा । २-२८।५
 गयउ उज्जैनी सुनु उरगारी । ७-१०४।१
 गयउ तहाँ प्रभु मुज निरखि । ७-७१।४
 ग्यान अखंड एक सीताबर । ७-७७।४
 ग्यान आगम प्रत्युह अनेका । ७-७४।३
 ग्यान गिरा गोतीत अज । ७-२५।०
 ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । ७-४८।२
 ग्यान निधान अमान मानप्रद । ७-३३।५
 ग्यान निधान सुजान सुवि । २-२९।०
 ग्यान पंथ कृपान कै धारा । ७-११८।१
 ग्यान विवेक बिरति बिय्याना । ७-८३।१
 ग्यान बिरति बिय्यान निवासा । ७-९३।२
 ग्यान बिराग जोग बिय्याना । ७-११४।१५
 ग्यान बिराग सकल गुन अयना । १-२०५।८
 ग्यान मान जई एकउ नाहीं । ३-१४।७
 ग्यान सर्मा जनु तनु धरें । २-३३।०
 ग्यानवंत अपि सो नर । ७-७८।६
 ग्यानवंत कोटिक महीं कोऊ । ७-५३।४
 ग्यानहि भगतिहि अंतर केता । ७-११४।११

ग्यानी तापस सुर करि । ७-७०।६
 ग्यानी भगत सिरोमनि । ७-६२।६
 गरइ गलानि कुटिल कैकेई । २-२७२।१
 गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा । १-३००।१
 गर्जहिं तर्जहिं मगन उडाहीं । ३-१७।८
 गर्जहिं तर्जहिं मालु कपीसा । ६-३८।८
 गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । ५-५४।८
 गर्जहिं मालु बलीमुख । ६-४७।०
 गर्जहिं सिधनाद कपि । ६-३९।०
 गर्जिं परे रिपु कटक मझारी । ६-४३।७
 गर्जेउ अट्टहास करि । ६-४२।०
 गर्जेउ मरत घोर स्व भारी । ६-१०२।४
 गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानो । ६-९२।२
 गर्म न गयहु ब्यर्थ तुन्ह जायहु । ६-२०।६
 गर्म स्त्रवहिं अवनिप रवनि । १-२७१।०
 गर्मन्ह के अर्मक दतन । १-२७२।०
 गरल कंठ उर नर सिर माला । १-९१।४
 गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । ५-४।२
 गरल सुधासम अरि हित होई । ७-११९।७
 गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा । ७-९४।१
 गरुड़ महाग्यानी गुन रासी । ७-५४।३
 गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही । ५-४।३
 गर्ली सकल अरगजाँ सिंघाई । १-३४३।५
 गवनो बाल मराल गति । १-२६३।०
 गवनु नितुरता निकट किय । २-२४।०
 गवने तुरत तहाँ रिषिराई । १-१३२।४
 गवने मरत पयादेहिं पाए । २-२०२।४
 गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ । ५-३४।१६
 गह सिंसु बच्छ अनल अहि घाई । ३-४२।६

गहड़ छहँ सक सो न उड़ाई । ५-२३
 गहत चरन कह बालिकुमारा । ६-३४।२
 गहवरि हियँ कह कौसिला । २-२८२।०
 गहसि न राम चरन सट जाई । ६-३४।३
 गहहु घाट भट समिटि सब । २-१९२।०
 गहि कर पादप उपल पहास । ६-८१।२
 गहि गिरि तरु अकास कधि धावहिं । ६-७२।५
 गहि गिरि निसि नम धावत भयऊ। ६-५७।८
 गहि गिरि पादप उपल नख । ६-७४।७
 गहि गिरीस कुस फन्या पानी । १-१००।२
 गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । २-२३।१७
 गहि पद कमल अनुज कर जोरी । ३-२९।४
 गहि पद डारहिं सागर माहीं । ६-४६।८
 गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । २-३३।६
 गहि पद भरत मातु सब राखी । २-१६।२
 गहि पद लगे सुमित्रा अंका । २-२४।३
 गहि बाँह सुर नर नाह । ४-९।१३
 गहि बालु बीसहुँ कर मनहुँ । ६-९७।१७
 गहि भूमि पारखो लात मारखो । ६-९६।९
 गहि सेल तेहि गढ़ पर चलावहिं । ६-४८।१४
 गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना । ६-९४।५
 गहें छत्र चामर ब्यजन धनु । ४-११।१२
 गहे चरन सिय सहित बहोरी । २-८।४
 गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । ६-९७।८
 गहे भरत पुनि प्रमु पद पंकज । ४-४।६
 गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । ६-६५।७
 गहेसि जाइ मुनि चरन तब । १-१२६।०
 गा वह पार जतनु हियँ हेरा । २-२५६।३
 गाइ राम गुन गन बिमल । ४-१०३।७

गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई । २-१९२।८
 गाथे महामनि भीर मंजुल । १-३२६।११
 गाथितनय मन चिंता व्यापी । १-२०५।५
 गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि । १-२७५।०
 गाधिसूनु सब कथा सुनाई । १-२११।२
 गान निसान कोलाहलु भारी । १-३२२।६
 गारी मधुर स्वर देहिं सुंदरि । १-९८।९
 गारी सकल कैकड़हि देहीं । २-१५५।७
 गावत राम चरित मृदु बानी । ३-४०।९
 गावन लगे राम कल । ४-५०।०
 गावहिं किंनर सुरबधू । ६-१०९।७
 गावहिं गीत मनोहर नाना । १-३००।५
 गावहिं छबि अवलोकि सहेली । १-२६३।८
 गावहिं बेद पुरान । ७-८९।७
 गावहिं मंगल कोकिलबयनीं । २-७।७
 गावहिं मंगल मंजुल बानीं । १-२९६।३
 गावहिं सुंदरि मंगल गीता । १-२९६।७
 गावहिं सुनहिं सदा मम लीला । ३-४५।७
 गावें गावें अस होइ अनंदू । २-१२१।१
 गिरत सँमारि उठा दसकंधर । ६-३१।५
 गिरबो धरनि दसकंधर बिकलतर । ६-८३।१०
 गिरा अस्थ जल बीचि सम । १-१८।०
 गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । १-२५८।१
 गिरा ग्राम्य सिय राम जस । १-१०।०
 गिरा मुखर तन अरघ भवानी । १-२४६।५
 गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । १-१८७।५
 गिरि तरु नख आरुध सब बीरा । १-१८७।४
 गिरि ते उत्तरि पवनसुत आवा । ४-२३।७
 गिरि भर चढ़ि लंका तेहिं देखी । ५-२।१०

गिरि पर बैठे कपिन्ह निहासी । ३-२८२५
 गिरि बन नदी ताल छबि छार । ३-१३३२
 गिरि सरि सिंधु मार नहीं मोही । १-१८३५
 गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी । ७-५५७
 गिरिबर गुह्री पैठ सो जाई । ४-५५
 गिरिबरु दीख जनकपति जबहीं । २-२७४२
 गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । ४-२७११
 गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी । १-१७७५
 गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । ७-५७१९
 गिरिजा चकित भई सुनि बानी । १-१२३६
 गिरिजा जासु नाम जापि । ६-७३१०
 गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । ७-४११९
 गिरिजा ते नर मंदमति । ६-७११०
 गिरिजा रघुपति के यह रीती । ६-२३६
 गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । ७-५११९
 गिरिजा सुनहु राम के लीला । १-११२८
 गिरिजा संत समागम । ७-१२५१०
 गिरिहिं रसना संसय नाहीं । ६-३२१९
 गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन । १-७७१०
 गीध अधम खग आमिष भोगी । ३-३२३२
 गीध देह तजि धरि हरि रूपा । ३-३११९
 गीधराज सुनि आरत बानी । ३-२८७
 गीधराज सै भेंट भइ । ३-१३१०
 ग्रीषम दुसह राम बनगवनू । १-४११४
 गुन अवगुन जानत सब कोई । १-४१९
 गुन कृत सन्यपात नहीं केही । ७-७०१९
 गुन ग्यान निधान अमान अज । ६-११०१९
 गुन तुम्हार समुझइ निज दोषा । २-१३०१३
 गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । ७-१८१४

गुन यह उमय न देखिअहिं । ७-४११०
 गुन सागर नागर नर जोऊ । ५-३७८
 गुन सागर नागर बर बीरा । १-२४०१२
 गुन सील कृपा परमायतन । ७-१३११९
 गुनउ बहुत कलिजुग कर । ७-१०२३७
 गुनह लखन कर हम पर रोषू । १-२८०५५
 गुनागार संसार दुख । ३-४५१०
 गुनातीत सचराचर स्वामी । ३-३८१९
 गुप्त रूप अवतरेउ प्रमु । १-४८८७
 गुर अनुरागु भरत पर देखी । २-२५८१९
 गुर अनुसासन श्रवन सुनि । २-१५७१०
 गुर आगमनु सुनत रघुनाथा । २-८२
 गुर आशुउ अभिमान तें । ७-१०६१७
 गुर के बचन सचिव अभिनंदनु । २-१७५७
 गुर के बचन सुरति करि । ७-११०१७
 गुर के बचन प्रतीति न जेही । १-७१८
 गुर गुरतिय पद बंदि प्रमु । २-३२०१०
 गुर गोसाई साहिब सिय रामू । २-२६०८
 गुरुजन लाज समाजु बड़ । १-२४८१०
 गुर तें पहिलेहिं जगतपति । १-२२६१०
 गुर नित मोहि प्रबोध । ७-१०५१४
 गुर नृप भरत समा अवलोकी । २-३१२३३
 गुर पद कमल प्रनामु करि । २-२५३१०
 गुर पद प्रीति नीति रत जेई । ७-१२७१७
 गुर पद पंकज नाइ सिर । १-२२५१०
 गुर पद पंकज सेवा । ३-३५१०
 गुर पद बंदि सहित अनुरागा । १-२५४१४
 गुर प्रमाउ पालिहि सबहि । २-३०५१०
 गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला । २-२६६१२

गुर प्रसाद सब जानिअ राजा । १-१६३।२
 गुर पितु मातु न जानउँ काहू । २-४१।४
 गुर पितु मातु बचन अनुसारी । २-२५३।४
 गुर पितु मातु बंधु सुर साई । २-४३।५
 गुर पितु मातु महेश भवानी । १-१४।३
 गुर पितु मातु स्वामि हित बानी । २-१४।३
 गुर बसिष्ट कहैं गयउ हँकारा । १-११२।४
 गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे । ४-४।६
 गुर बसिष्ट द्विज लिए दुलाई । ४-१।४
 गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई । ४-१२।५
 गुर बिबेक सागर जगु जाना । २-१८।१५
 गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं । १-२५।३।३
 गुर श्रुति संमत धरम फलु । २-६।१०
 गुर सन कहब सँदेसु । २-१५।१०
 गुर सन कहि बरषासन दीन्है । २-४१।३
 गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई । २-२१६।६
 गुर समाज भाइन्ह सहित । २-२४।१०
 गुर समाज लघु बंधु गुन । २-३०।१०
 गुर समीप गवने सकुचि । १-२४।१०
 गुर सिष बधिर अंध का लेखा । ४-१८।६
 गुर सुर संत पितर महिदेवा । १-१५।४।४
 गुरगृहैं गए पढ़न रघुराई । १-२०।४।४
 गुर गृह गवउ तुरत महिपाला । १-१८।१२
 गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू । २-४१।४
 गुरतिय पद बंटे दुहु माई । २-२४।१५
 गुरपतिनिहि मुनि तियन्ह समेता । २-२४।१२
 गुरहि देखि सानुज अनुरागे । २-२४।३।३
 गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा । १-३१।२।८
 गुरहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा । १-२६।१।५

गुरहि सुनावैं चढ़ाइ सुहाई । २-२०।१।८
 गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा । ३-२५।२
 गुरु पद रज मूढ मंजुल अंजन । १-१।१
 गुरु पितु मातु प्रजा परिवारु । २-४०।४
 गुरु पितु मातु बंधु पति देवा । ३-१५।१०
 गुरु पितु मातु स्वामि सिख पाले । २-३१।१।५
 गुरु बसिष्ट तेहि राखा । १-११।४।०
 गुरु सिख देइ राय पहिँ गयऊ । २-१।४
 गृह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । २-१४।३।१
 गृहैं बोलाइ पाहरु प्रसीती । २-८।३।३
 गृहैं सँवारि सौंधरी डसाई । २-८।४।४
 गुज मंजुतर मधुकर श्रेनी । २-१३।६।८
 गुजत मधुकर मुखर अनूपा । ४-१६।३
 गुजत मधुकर मुखर मनोहर । ४-२।३।३
 गुजत मंजु मत रत मृगा । १-२१।१।४
 गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि । २-१६।१०
 गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी । १-२३।३।४
 गूढ़ सनेह भरत मन माहीं । २-२८।३।४
 गूढ़उ तत्व न साधु दुरावहिँ । १-१०।१।२
 गूलरि फल समान तव लंका । ६-३।३।३
 गृह कारज नाना जंजाता । १-३।४।८
 गृह गृह बाज बधाव सुभ । १-११।४।१०
 गृही बिरति रत हरष जस । ४-१३।१०
 ग्रंथि न छूटि भिटा सो प्रकासा । ४-११।४।१४
 ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस । २-१८।०।१०
 ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारु । १-३१।१।६
 ग्रह भेषज जल पवन पट । १-४।४
 ग्राम निकट जब निकसहिँ जाई । २-१०।८।४
 ग्राम बासु नहिँ उचित सुनि । २-८।१०

गे नहाइ गुर पहिँ रघुराई । २-२८९।३
 गै जननी सिसु पहिँ भयनीता । १-२००।५
 गै निसि बहुत सयन अब कीजे । १-१६८।७
 गै श्रम सकल सुखी नृप भयऊ । १-१५८।९
 गो गोघर जहँ लगी मन जाई । ३-१४।३
 गो द्विज धेनु देव हितकारी । १-३८।३
 गो द्विज हितकारी जय असुरारी । १-१८५।२
 गोट राखि कराव पय पाना । ७-८७।८
 गोट राखि पुनि हृदयँ लगाए । २-५१।४
 गोदावरी निकट प्रमु । ३-१३।०
 गोपद जल बूझहिँ घटजोनी । २-२३।२
 गोबिंद गोपर हंहर । ३-३१।८
 गोमाय गौघ कराल खर रव । ६-७७।१२
 गौतम त्रिय गति सुरति करि । १-२६५।०
 गौतम नारि श्राप बस । १-२१०।०
 गौर किलोर बेबु बर काछें । १-२२०।७
 गौर सरीर स्याम मन माहीं । १-२७६।७
 गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई । ७-५४।६
 गौरि सरीर भूति भलि भ्राजा । १-२६७।४
 गंग अरवि थल तीनि बड़ेरे । २-२८६।४
 गंग गौरि सम सब सनमानी । २-२४४।२
 गंग बचन सुनि मंगल मूला । २-१०३।१
 गंग सकल मुद मंगल मूला । २-८६।४

घ

घटइ बढइ बिरहिनि दुखदाई । १-२३७।१
 घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । ६-३८।१०
 घन घमंड नम गरुजत घोश । ४-१३।१
 घर घर करहिँ जागरन नारी । १-३५७।२
 घर घर साजहिँ बाहन नाना । २-१८५।१

घर तरु तर सर बाग बन । २-११६।०
 घर पुर देस राखि रखवारे । २-२७१।४
 घर मसान परिजन जनु मूला । २-८२।७
 घरी कुघरी समुझि जियँ देखू । २-२५।८
 घरु जाउ अपजसु होउ जग । १-१५।१२
 घहरात जिमि पबिपात गर्जत । ६-४८।१२
 घायल बीर बिराजहिँ कैसे । ६-५३।१
 घुरुघुरात हय आरी पाएँ । १-१५५।८
 घुमिँ घुमिँ घायल महि परहीं । ६-६७।६
 घेरेन्हि नगर निसान बजाई । १-१७४।५
 घोर जंतु सम पुर नर नारी । २-८२।६
 घोर घर मृगनाथ रिसानी । १-४०।४
 घोर निसाचर बिकट भट । १-३५६।०
 घंट घंटी धुनि बरनि न जाहिँ । १-३०१।७

च

चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीर्यी । ५-२।१३
 चक चकोर चातक सुक पिक गन । २-२३५।६
 चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी । २-१८६।१
 चक्रवर्ति के लच्छन तोरें । १-१५८।४
 चक्रबाक बक खग समुदाई । ३-३१।३
 चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं । ४-२३।६
 चक्रबाक मन दुख निसि फेखी । ४-१६।४
 चकित चितव मुदरी पहिचानी । ५-१२।२
 चकित विप्र सब सुनि नभबानी । १-१७३।६
 चकित बिलोकति सकल दिसि । १-२२१।०
 चट्टि गिरि सिखर चहुँ दिसि देखा । ४-२३।५
 चट्टि चट्टि रथ बाहेर नगर । १-२९१।०
 चट्टि पिपीलिकउ परम लघु । १-१३।०
 चट्टि बर बाजि बार एक राजा । १-१५५।३

चढ़ि बिमान आर सब । ७-११०	चरन सरोज धूरि धरि सीसा । १-३३८७
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन । ६-११६५	चरन सरोरुह नाथ जनि । ३-४१०
चढ़ि रथ सीय सहित दौड भाई । २-८२२	चरनपीठ करुनानिधान के । २-३१५५
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं । ७-८१४	चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । २-४२२५
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारिं । १-३००४	चरम देह द्विज कै में पाई । ७-१०१३
चढ़ु मम सायक सैल समेत । ६-५९३६	चरित करत नर अनुहरत । २-८१०
चढ़े दुर्ग पुनि जहै तहै बानर । ६-४१२	चरित राम के सगुन भवानी । ६-७३११
चतुर गँभीर राम महतारी । २-१७११	चरित सिंधु गिरिजा रमन । १-१०३१०
चतुर सरखी लखिं कोहा बुझाई । १-२६३५	चरित सिंधु रघुनायक । ७-१२३१४
चतुर सरखी सुंदर सकल । १-२४६१०	चल न ब्रह्मकुल सन बरिजाई । १-१६४५
चतुर सिरोमनि वेइ जग माहीं । ७-१११११०	चलइ जाँक जल ब्रह्मगति । २-४२१०
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा । ७-५८८	चलइ बहुत सो वीर न होई । ६-२२११०
चतुरंगिनो सेन संग लीन्है । ३-३७११०	चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं । ६-७८६
चपरि चलेउ हय सुटुकि मृप । १-१५६१०	चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े । १-११२
चर अरु अचर नाग नर देवा । १-१०६१८	चलत्कुंडल मू सुनेत्रं विशालं । ७-१०७७
चर अरु अचर हर्षजुत । १-११०१०	चलत गगन मै गिरा सुहाई । १-५६१४
चरन कमल बंदउ तिन्ह केरे । १-१३३	चलत दसानन डौलति अवनी । १-१८१५
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । २-६१६	चलत न देखन पायउँ तोही । २-१५१५
चरन कमल रज कहँ सबु कहई । २-१११४	चलत पयादें खात फल । २-२२२१०
चरन कमल रज चाहति । १-२१०१०	चलत प्रात लखि निरनउ नीके । २-१८४२
चरन कमल सिरु नाइ कपि । ५-२७०	चलत बिमान कोलाहल होई । ६-११८३
चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी । २-११७३	चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । ५-२७११
चरन तलिन उर धरि गृह आवा । ७-११५	चलत मार अस हृदयँ बिचास । १-८३४
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । ६-५४	चलत मोहि चूडामनि दीन्ही । ५-३०११
चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही । ४-११५	चलत राम सब पुर नर नारी । १-२५४६
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा । १-२०६३	चलत रामु लखि अवध अनाथा । २-८२३
चरन परेउ प्रेमाकुल । ५-३२०	चलत होहिं अति असुम भयंकर । ६-८५१५
चरन राम तीरथ बलि जाहीं । २-१२८५	चलन चहत बन जीवननाथु । २-५७३
चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । २-११८२	चलहिं सदा पावहिं सुखहिं । ७-२०१०

चलहु तात मुनि कहैउ तब । १-२३१/०
 चलहु बेगि रघुबीर बराता । १-२१७/२
 चलहु बेगि सुनि गुर बचन । १-२१४/०
 चलहु सफल श्रम सब कर करहु । २-१३१-८
 चला अकेल जान झट्टि तहबी । ३-२२/७
 चला इंद्रजित अतुलित जोधा । ५-१८/३
 चला कटकु को बरनै पारा । ५-३४/८
 चला कटकु प्रभु आयसु पाई । ६-३/१९
 चला गगनपथ आतुर । ३-२८/०
 चला न अचल रहा रथ रोपी । ६-८१/४
 चला रुधिर रघुनाथक जाना । ३-०/८
 चलि त्याइ सीतहि सखी सादर । १-३२१/१९
 चलिअ करिअ बिश्रामु । २-२०१/०
 चलिहि बरात सुनत सब रानी । १-३३३/२
 चली अग्र करि प्रिय सखि सीई । १-२२८/८
 चली तमोदर अनी अपारा । ६-८५/३
 चली न अचल समाधि सिव । १-८६/०
 चली नाइ पद प्रदुम सिरु । २-६१/०
 चली बरात निसान बजाई । १-३४२/७
 चली बलीमुख सेन पराई । ६-६४/१०
 चली विभीषन सन्मुख । ६-१३/०
 चली सुमग कबिता सरिता सो । १-३८/११
 चली सुहावनि त्रिविध ब्यासी । १-१२५/३
 चली सेन कछु बरनि न जाई । ६-३/२
 चली मुदित परिछनि करन । १-३१७/०
 चली मुदित परिछनि करन । १-३४६/०
 चली सती सिव आयसु पाई । १-५१/४
 चली संग लै सखी सयानी । १-२४७/१९
 चले अवध लेइ रथहि निषादा । २-१४३/२

चले अग्रपति अवधपुर । १-३३१/०
 चले चित्रकूटहि भरतु । २-२७१/०
 चले जनक मंदिर मुदित । १-३३४/०
 चले जहाँ दसरथु जनवासे । १-३०६/८
 चले जात मुनि दीन्हि देखाई । १-२०८/५
 चले जात सिव सती जमैता । १-४१/४
 चले जुगल मुनि पद सिर नाई । १-१३८/८
 चले तमीचर बिकलतर । ६-७४/४
 चले नहाइ नदिहि सिर नाई । २-२२०/४
 चले निषाद जोहारि जोहारी । २-११०/३
 चले निसाचर आयसु मागी । ६-३१/७
 चले निसाचर निकर पराई । ६-४१/३
 चले निसान बजाइ सुर । १-३५३/०
 चले पढ़त गावत गुन गाथा । १-३३०/४
 चले पराइ भालु कपि नाना । ६-८१/६
 चले बान सपच्छ जनु उरगा । ६-१३/१
 चले बिचलि मर्कट मालु सकल । ६-१५/१०
 चले बिपिन सुनि सिय संग लागी । २-१६५/२
 चले बीर सब अतुलित बली । ६-७७/८
 चले भरत मन प्रेम आति । ४-३/४
 चले भरतु जहाँ सिय रघुराई । २-२३२/६
 चले भवानिहि नाइ सिर । १-१०/०
 चले भागि कपि मालु भवानी । ६-६१/२
 चले मत गज घंट बिराजी । १-२११/२
 चले मत गज जूथ घनेरे । ६-४८/३
 चले मिलन मुनिनाथकहि । १-२१४/०
 चले राम त्यागा बन सोऊ । ३-३६/१
 चले राम मुनि आयसु पाई । ३-१२/१८
 चले राम लछिमन मुनि संग । १-२११/१

चले सकल गृह काज बिसारी । १-२३१।६
 चले सकल इन खोजत । ४-२३।०
 चले सकल सेवक समुदाई । १-२९९।८
 चले सखा कर साँ कर जोरें । २-११७।५
 चले सप्रेम असीस सुनि । २-३१८।०
 चले सवेग रामु तेहि काला । २-२४२।२
 चले समीर बेग ह्य हौंके । २-१५७।१
 चले ससीय मुदित दोउ भाई । २-१११।२
 चले सहित सिंग लखन जन । २-१०८।०
 चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई । २-८३।७
 चले संग हिमवंतु तब । १-१०३।०
 चले हरषि तजि नगर नृप । ४-१६।०
 चले हरषि बरषि प्रसून निज निज । १-३२६।२६
 चले हरषि रघुनायक पासा । ५-२७।६
 चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । ५-१७।१
 चलेउ निसावर कटकु अपारा । ६-४८।१
 चलेउ निसावर कृष्ण होइ । ६-८५।०
 चलेउ सुमंत्रु राय रुख जानी । २-३८।२
 चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । ५-४१।४
 चवैर चारु किंकिनि धुनि करहीं । १-२९८।४
 चवैर जमुन अरु गंग तरंगा । २-१०४।८
 चले कि जल बिनु नाव । ७-८९।४
 चहत न भरत भूपतहि भोरें । २-३५।१
 चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रमाऊ । १-२१।८
 चहुँ चतुर कहुँ नाम अधारा । १-२१।७
 चहुँ जुग तीनि कार तहुँ लोका । १-२६।१
 चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला । १-२२३।३
 चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि । ६-११।१५
 चहुँ दिसि वितइ पूछि मालीगन । १-२२७।१

चातक कोकिल कीर चकोरा । १-२२६।६
 चातक स्टत तृषा अति ओही । ४-१६।५
 चातक हंस सराहिअत । २-३२४।०
 चातकु स्टनि घटें घटि जाई । २-२०४।४
 चाप समीप रामु जब आए । २-१५१।३
 चाप सुवा सर आहुति जानू । १-२८२।२
 चापत चरन लखनु उर लाएँ । १-२२५।७
 चामर चरम बसन बहु भौंती । २-५।३
 चारा चाधु बाम दिसि लेई । १-३०२।२
 चारि खानि जग जीव अपारा । १-३४।४
 चारि पदास्थ करतल ताकें । २-४५।२
 चारि पदास्थ भस मँडारु । २-१०४।४
 चारि भाँति भोजन विधि गाई । १-३२८।४
 चारि लच्छ बर धेनु मगाई । १-३३०।२
 चारि सिंघासन सहज सुहाए । १-३४।१
 चारिउ चरन धर्म जग माहीं । ७-२०।३
 चारिउ माइ सुभार्य सुहाए । १-३३४।१
 चारिउ सील रूप गुन धामा । १-११७।६
 चारु चरन नख लेखति धरनी । २-५७।५
 चारु चिबुक नासिका कपोला । १-२३२।५
 चारु चित्रसाला गृह । ७-२७।०
 चारु पुरट मनि रचित बनाई । ७-७५।८
 चारु बजारु विचित्र अँबारी । १-२१२।२
 चारु विचित्र पवित्र बिसेषी । २-३११।३
 चालति न भुजबत्नी बिलोकनि । १-२२६।२०
 चाहउँ तुम्हहि समान सुत । १-१४९।०
 चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा । १-४६।४
 चाहिअ करन सो सब करि बीते । ६-६।२
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । २-२२३।५

चिक्कन कध कुञ्चित गुमुआरे । १-१९८।१०
 चिक्करत लागत बान । ३-१९।१०
 चिक्करहि दिग्गज डोल महि अहि । १-२६०।१०
 चिक्करहि दिग्गज डोल महि गिरि । १-३४।११
 चिक्करहि दिग्गज दसन गहि महि । ६-९०।१२
 चिक्करहि मर्कट मालु छल बल । ६-८०।१२
 चितइ सबन्हि पर कीन्ही टाया । ६-१९४।३
 चितई सीय कृपायतन । १-२६०।०
 चित खगेस राम कर । ७-१९।१
 चित दिआ भरि धरै दृढ़ । ७-१९४।४
 चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ । १-१९६।३
 चितवत पंथ रहेउँ दिन राती । ३-४।३
 चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु । ३-१७।१७
 चितवति चकित चहुँ दिसि सीता । १-२३।११
 चितवनि चारु भूकुटि बर बाँकी । १-२९।८
 चितवनि चारु मार मनु हरनी । १-२४।३
 चितवहि चकित विचित्र बिताना । १-३१।५
 चितवहि सादर रूप अनुपा । १-१४।६
 चिता कबनिहु बात कै । २-१५।०
 चिता साँपनि को नहिँ खाया । ७-७०।४
 चिदानंद सुखधाम सिध । १-४५।०
 चिदानंद संदोह मोहापहारी । ७-१०४।१२
 चिदानंद संदोह । ७-६८।४
 चिदानंदमय देह तुम्हारी । २-१२६।५
 चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु । २-२८।७
 चिरु जिअहुँ जोरै चारु चारबो । १-३२६।२४
 चिरु जीवहुँ सुत चारि । १-२१।५।०
 चित्र लिखे जनु जहँ तहँ टाढ़े । २-१३४।६
 चित्रकूट के बिहय मृग । २-१३८।०

चित्रकूट गिरि करहु निवासू । २-१३१।३
 चित्रकूट जनु अचल जहेरी । २-१३२।४
 चित्रकूट महिमा अमित । २-१३२।०
 चित्रकूट रपुनंदनु छाए । २-१३३।५
 चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । २-३०७।३
 चित्रकेतु कर घरु उन घाला । १-४८।२
 चुपहिँ रहे रघुनाथ सँकोकी । २-२६१।३
 चूडाकरन कीन्ह गुरु जाई । १-२०२।३
 चूडामनि उतारि तब दयऊ । ५-२६।२
 चौंच भंग दुख तिन्हहि न सूझा । ६-३१।१०
 चौचन्ह मारि बिदारेसि देही । ३-२८।२०
 चौकें चारु सुमित्राँ पूरी । २-४।३
 चौकें भौति अनेक पुराई । १-२८७।७
 चौथि भगति मम गुन गन । ३-३५।०
 चौथेपन पायउँ सुत चारी । १-२०७।२
 चीदह भुवन एक पति होई । ५-३४।७
 चीहट सुंदर मली सुहाई । १-२१२।४
 चंचल सुरग मनोहर चारी । ६-८८।४
 चंद किरन रस रसिक चकोरी । २-५८।८
 चंदु चवै बरु अनल कन । २-४८।०
 चंदन अगर नार बहु जाए । २-१६१।३
 चंद्रहास हरु मम परिताप । ५-१।५
 चंपक बकुल कदंब तमाला । ३-३१।६

छ

छल दम सील बिरति बहु करमा । ३-३५।३
 छलें श्रवन यह परत कहानी । १-१६५।२
 छतज नयन उर बाहु बिसाला । ६-५२।१
 छन एक सोच मगन होइ रहे । ४-२५।८
 छन महिँ सबहि मिले भगवाना । ७-५।७

छन महुँ प्रभु के साथकन्हि । ६-६८०
 छन महुँ ब्यापेउ सकल पुर । १-९८०
 छन महुँ सब के परसि गे । १-३३८०
 छन सुख लागि जनम सत कोटी । ३-४१७
 छबि ललना गन मध्य जनु । १-३२२०
 छबिरखानि मातु भवनि गवनी । १-९९१११
 छबिसमुद्र हरि रूप बिलोकी । १-१४७१५
 छमब आजु अति अनुचित मोरा । २-२९६६
 छमासील जे पर उपकारी । ७-१०८१५
 छमिहाहि सज्जन मोरि टिटाई । १-७८
 छमहु घूक अनजानत केरी । १-२८१७
 छमेहु सकल अपराध अब । १-१०११०
 छरस रुविर बिंजन बहु जाती । १-३२८१५
 छरे छबीले छयल सब । १-२९८०
 छल करि टारेउ तासु ब्रत । १-१२३०
 छल बिहीन सुवि सरल सुबानी । २-१६६४
 छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही । १-२८०३
 छत्र मुकुट ताटक तब । ६-१३१
 छत्र मेघडंबर सिर धारी । ६-१२५
 छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई । १-१७३११
 छत्रि जाति रघुकुल जनमु । २-२२९०
 छत्रिय तनु धरि समर सकाना । १-२८३३
 छाड़हु बचनु कि धीरजु धरहु । २-३४७
 छाड़ा बान माड़ु उर लागे । ६-७५१६
 छाड़िसि तीव्र सक्ति खिसिआई । ६-९०४
 छाँड़े बिपुल नाराव । ३-११८
 छाँड़े बिपन बिसिख उर लागे । १-८६३
 छाँह करहि घन बिबुधगन । २-११३०
 छिति जल पावक गगन समीर । ४-१०४

छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं । ६-११८
 छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । २-६१४
 छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी । २-१३९३
 छिनु छिनु लखि सिय राम पद । २-१३९०
 छीजहि निसिचर दिनु अरु राती । ६-७१३
 छीनि लेइ जनि जान जड़ । १-१२५०
 छीरसिधु गवने मुनिनाथा । १-१२७४
 छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू । १-२७१३
 छुअत सिला मइ नारि सुहाई । २-११५
 छुअतहि टूट पिनाक पुराना । १-२८२८
 छुद्र नदी भरि चली तोराई । ४-१३५
 छुधा छीन बलहीन सुर । १-१८१०
 छुधा न रही तुम्हहि तब काह । ६-८३
 छुहे पुरट घट सहज सुहाए । १-३४५६
 छूट जानि बन गवनु सुनि । २-५१०
 छूट न राम कृपा बिनु । ७-७१४
 छूटइ मल कि मलहि के घोरैं । ७-४८५
 छूटी त्रिविधि इंधना माड़ी । ७-१०९१३
 छेमकरी कह छेम बिसेपी । १-३०२७
 छेनु अगम गदु गाड़ सुहावा । २-१०४५
 छोटे बटन कहरुं बढ़ि बाता । २-२२२६
 छोरेत ग्रथि जानि खगराया । ७-११७६
 छोरेन ग्रथि पाव जौ सोई । ७-११७५
 छंद सोरठा सुंदर दोहा । १-३६५

ज

जग कारन तारन भव । ४-११०
 जग जस भाजन चातक मोना । २-२३३३
 जग पतिब्रता चारि बिधि अहलीं । ३-३१११
 जग पावनि कीरति बिस्तरिहहिं । ६-६५३

जग बहु नर सर सरि सम भाई । १-७।१३
 जग बिस्तारहि बिसद जस । १-१२।१०
 जग मल पौष ऊँच अरु नीचू । २-२१।१६
 जग मुहुँ सखा निसावर जेते । १-४३।७
 जग मंगल गुनग्राम राम के । १-३।१२
 जग मंगल मल काजु बिबाश । २-४।६
 जग संभव पालन लय कारिनि । १-२।७।४
 जगत प्रकास्य प्रकासक रामु । १-११६।७
 जगत बिदित तुम्हारि प्रमुताई । ६-१०३।१
 जगत मातु पितु संमु भवानी । १-१०२।४
 जगत मातु सर्वम्य भवानी । १-७।१८
 जगतगुरुं च शश्वतं । ३-३।१८
 जगदातमा प्रानपति रामा । ६-३।४।६
 जगदातमा महेसु पुरारी । १-६३।५
 जगदाधार सेष किमि । ६-५।१०
 जगदंबा जहँ अवतरी । १-२।४।०
 जगदंबा हरि आनि अब । ६-६२।०
 जगदंबिका जानि भव मामा । १-११।७
 जगनिवास प्रमु प्रगटे । १-११।१।०
 जगत पिता रघुपतिहि द्विवारी । १-२।४।१३
 जगमगत जीनु जराव जोति । १-२।१।१।१
 जग्य करत जबहीं सो देखा । ६-८।४।६
 जग्य बिधसि कुसल कपि । ६-८।५।०
 जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्ह । १-६।४।२
 जग्य बिधंस बिलोकि मृगु । १-६।४।०
 जगु अनमल मल एकु गोसाई । २-२६।७
 जगु जान षन्मुख जन्मु कर्मु । १-१०२।१
 जगु पैखन तुम्ह देखनिहारे । २-१२६।१
 जगु बिरयि उपजावा जब तें । १-३।११।५

जगु भय मगन गगन नइ बानी । २-२३।०।१
 जगु मल कहिहि भाव सब काहू । १-२४।८।५
 जटा जूट दूढ़ बाँधें माथे । ६-८।५।८
 जटाजूट सिर मुनिपट धारी । २-३२३।३
 जटा मुकुट सीसनि सुभग । २-११।५।०
 जटा मुकुट सुरसरित सिर । १-१०६।०
 जड़ चैतन गुन दोषमय । १-६।०
 जड़ चैतन जग जीव जत । १-७।१
 जड़ चैतन मग जीव घनेरे । २-२१६।१
 जड़ चैतनहि ग्रथि परि गई । ७-११६।४
 जड़ता जाड़ बिषम उर लागे । १-३।८।२
 जतन अनेक साथ हित कीन्हे । २-१८।६
 जथा अनेक बेष धरि । ७-७।२।४
 जथा अनंत राम भगवाना । १-११३।४
 जथा गगन घन पटल निहारी । १-११६।२
 जथाजोग सनमानि प्रमु । २-३।४।०
 जथाजोग सेनापति कीन्हे । ६-३।५
 जथा जोगु करि बिनय प्रनामा । २-३।१८।७
 जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई । १-१४।८।५
 जथा धर्मसीलन्ह के । ३-३।१।४
 जथा पंख बिनु खग अति दीना । ६-६।०।१
 जथा बिलोकि अकेल । ३-१८।०
 जथा मत्त गज जूथ मुहुँ । ६-११।०
 जथा सुअंजन अजि दृगु । १-१।०
 जदपि अकाम तदपि भगवाना । १-७।५।२
 जदपि अहइ असमजस भारी । १-८।२।४
 जदपि कबित रस एकउ नार्हीं । १-१।७
 जदपि कही कथि अति हित बानी । १-२३।१
 जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा । ७-१०।८।३

जदपि जोषिता नहिं अधिकारी । १-१०१।१	जन अवगुन प्रमु मान न काऊ । ७-०।६
जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें । ४-२।१	जन कहुँ कहुँ अदेय नहिं मोरें । ३-४।५
जदपि प्रथम दुख पावइ । ७-७।१४	जन गुन गाहक राम । १-३३६।०
जदपि बिरज ब्यापक अदिनासी । ३-१०।१७	जन मन मंजु कंज मधुकर से । १-११।८
जदपि मित्र प्रमु पितु गुर गेहा । १-६।१५	जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । १-०।४
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ । १-११७।०	जन रंजन मंजन खल ब्राता । ५-३८।४
जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । ७-१६।४	जन रंजन मंजन भव भारू । २-३२।५।८
जदपि सखा तव इच्छा नाही । ५-४।१९	जन रंजन मंजन लोक भयं । ६-११०।५
जदपि सती पूछा बहु भौंती । १-५६।८	जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा । १-८२।५।५
जदपि सुनहि मुनि अटपटि बानी । १-१३३।६	जनक गहे कौसिक पद जाई । १-३४।२।२
जद्यपि अवघ सदैव सुहावनि । १-२१५।५	जनक जाति अवलोकहि कैसें । १-२४।१।२
जद्यपि गृहं सेवक सेवकिनी । ७-२३।५	जनक दूत तेहि अवसर आए । २-२६।१।४
जद्यपि जग दारुन दुख नाना । १-६२।७	जनक पाटमहिषी जग जानी । १-३२।३।१
जद्यपि जनमु कुमातु तैं । २-१८।३।०	जनक बचन सुनि सब नर नासी । १-२५।१।७
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । ५-४१।८	जनक बहोरि आइ सिरु नावा । १-२६।८।४
जद्यपि तव गुर कें नहिं क्रोधा । ७-१०६।२	जनक बाम दिसि सोह सुनयना । १-३२।३।४
जद्यपि नीति निपुन नरनाहू । २-२६।७	जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई । १-२३।८।१०
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । १-५०।५	जनक भरत संबादु सुनाई । २-२९।५।४
जद्यपि प्रमु के नाम अनेका । ३-४।१।७	जनक भवन के सोभा जैसी । १-२८।८।६
जद्यपि प्रमु जानत सब बाता । ४-२२।१३	जनक राज गुन सीतु बड़ाई । १-३५।३।७
जद्यपि बर अनेक जग माहीं । १-६।१।६	जनक राम गुर आयसु पाई । २-२८।५।३
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । ३-१।२।१२	जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई । १-२६।२।४
जद्यपि भगिनी कीन्हि कुस्ला । ३-१।८।५	जनक सनेहु सीतु करतूती । १-३३।१।१
जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक । ३-१।८।११	जनक सर्मी अगनित मृपाला । ६-३।५।१०
जद्यपि मैं अनमल अपराधी । २-१।८।२।३	जनक सुकृत मूरति बैदेही । १-३०।१।१
जद्यपि सह समुझत हउँ नीकें । २-१७।६।६	जनकसुतहि समुझाइ करि । ५-२।७।०
जद्यपि लघुता राम कहुँ । ६-२।३।७	जनकसुता कइ सुधि मामिनी । ३-३।५।१०
जद्यपि सब बैकुंठ दरखाना । ७-३।३	जनकसुता कहुँ खोजहु जाई । ४-२।१।७
जद्यपि सम नहिं राग न रोपू । २-२।१।८।३	जनकसुता कैं आगैं । ५-२६।०

जनकसुता जग जननि जानकी । १-१७७
 जनकसुता सब उर धरि धीरा । २-२४१७
 जनकसुता परिहरिहु अकेली । ३-२९१२
 जनकसुता रघुनाथहि दीजे । ५-५६७
 जनकसुता सन बोले । ३-२३१०
 जनकसुता समेत प्रमु । ६-१०९।ख
 जनकसुता समेत रघुबीरहि । ७-२९१८
 जनकसुता समेत रघुराई । ७-११३
 जनकु रहे पुर बासर चारी । २-३२१६
 जननि जनक गुर बंधु हमारे । ७-४६१२
 जननि जनक सिय राम प्रेम के । १-३११४
 जननिन्ह सादर बदन निहारे । १-३५७।८
 जननिहि बहुरि मिलि बली उचित । १-१०११९
 जननिहि बिकल बिलोकि मवानी । १-९६१५
 जननी जनक बंधु सुत दास । ५-४७४
 जननी तू जननी भई । २-१६११०
 जननी भवन गए प्रमु । १-२०८।क
 जननी सम जानहिं परनारी । २-१२९।६
 जननी हृदयै धीर धरु । ५-१५१०
 जननी उमा बोलि तब लीन्ही । १-१०११२
 जननी सकल परितोषि परि परि । २-११०।१११
 जन्म कोटि लागि रगर हमारी । १-८०।५
 जन्म जन्म प्रमु पद कमल । ७-४९।०
 जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । ४-९।३
 जन्ममूमि मम पुरी सुहाबनि । ७-३।५
 जन्म महोत्सव देखउँ जाई । ७-७४।४
 जन्म महोत्सव रथहिं सुजाना । १-३३।८
 जनम एक दुइ कहउँ बखानी । १-१२१।३
 जनम जनम रति राम पद । २-२०४।०

जनम मरन सब दुख सुख भोगा । २-१४१।५
 जनम रंक जनु पारस पावा । १-३४१।७
 जनम हेतुं सब कहैं पितु माता । २-२५४।६
 जनमत मरत दुसह दुख होई । ७-१०८।७
 जनमी प्रथम दच्छ गृह जाई । १-९७।५
 जनमु मरनु जहैं लागि जग जातू । २-११।६
 जनमु सिंधु पुनि बंधु बिधु । १-२३७।०
 जनमे एक संग सब भाई । २-१।५
 जनवासेहि गवने मुदित । १-३२१।०
 जनहि मोर बल निज बल ताहि । ३-४२।९
 जनि आचरजु करहु मन माहीं । १-१६२।१
 जनि जननी मानहु जियै उना । १-१३।१०
 जनि जल्पना करि सुजसु नासाहि । ६-८९।११
 जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि । ६-२२।क
 जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । १-१८६।१
 जनि मानहु शियै हानि गलानी । २-१६४।६
 जनि लेहु मातु कलंकु करुना । १-९६।१
 जनि सनेह बस डरपासि नोरें । २-५२।८
 जनु असोक अंगार । ५-१२।०
 जनु आनंद समुद्र दुइ । १-३०५।०
 जनु इंद्रधनुष अनेक की बर । ६-१००।१८
 जनु उछाह सब सहज सुहाए । १-३४४।३
 जनु अंगार रासिन्ह पर । ६-५३।०
 जनु कठोरपनु धरें सरीरु । २-४०।३
 जनु कनठ खपरं सर्राज सो । ५-३४।१८
 जनु कालदूत उलूक बोलहिं । ६-७।१३
 जनु कोपि दिनकर कर निकर । ६-११।१८
 जनु चित्र लिखित समेत लछिमन । ६-८८।१०
 जनु जीव उर चारिउ अवस्था । १-३२४।३६

जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह । ३-५१०	जब जदुबंस कृष्ण अवतारा । १-८०११
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल । ६-१०२१३	जब जब अवधपुरी रघुबीरा । ३-११३१२
जनु पाए नहिपाल मनि । १-३२५१०	जब जब नाथ सुरन्ह दुर्यु पायो । ६-१०११८
जनु प्रेम जरु सिंगार तनु धरि । ७-४११२	जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । २-६०१६
जनु बाजि ब्येु बनाइ मनसिजु । १-३१५११	जब जब रामु अवध सुधि करहीं । २-१४०१३
जनु बिरधि सब निज निपुनाई । १-२२९१६	जब जब राम मनुज तनु धरहीं । ७-४४१२
जनु रायमुनी तमाल पर । ६-१०२१११	जब जब होइ घरम के हानी । १-१२०१६
जनु राहु केतु अनेक नम पथ । ६-११११५	जब जेहि दिसि भ्रम होइ खगंसा । ७-४२१४
जनु सब साधे होन हित । १-३०३१०	जब ते तुम्ह सीता हरि आनी । ६-४७१७
जनु सिंघलबासिन्ह भयउ । २-२२३१०	जब ते राम कीन्ह तहैं बासा । ३-१३११
जनु सोहत सिंगार धरि । १-२४११०	जब ते राम प्रताप खगंसा । ७-३०११
जप जोग धर्म समूह तें नर । ३-५११३	जब तें जाइ रहे रघुनाथकु । २-१३६१५
जप जोग बिरागा तप मख भागा । १-१८२११	जब तें उमा सैल गृह जाई । १-६४१७
जप तप कछु न होइ तेहि काला । १-१३०१८	जब तें कुमति सुना मैं स्वामिनि । २-२०१६
जप तप नियम जोग निज धर्मा । ७-४८११	जब तें प्रमु पद पदुम निहारे । २-२५०१७
जप तप नेम जलाश्रय झारी । ३-४३१२	जब तें रामु ब्याहि घर आए । २-०११
जप तप ब्रत जम नियम अपार । ७-११६११०	जब तें सर्ती जाइ तनु त्यागा । १-४४१७
जप तप ब्रत दम संजम नेमा । ३-४५१३	जब तेहिं कहा देन बैदेही । १-५६१८
जप तप मख सम दम ब्रत टाना । ७-१४१५	जब तेहिं कीन्हि राम के निंदा । ६-३१११
जपउ मन्त्र सिव मन्दिर जाई । ७-१०४१८	जब तेहिं जानेउ मरम तब । १-१२३१०
जपहिं नामु जन आरत भारी । १-२११५	जब तें कुमति कुमति जियैं ठयऊ । २-१६१११
जपहिं राम धरि ध्यान उर । १-३४१०	जब न लेउं मैं तब विधि मोही । ७-४७१७
जपहिं सदा रघुनाथक नामा । १-४४१८	जब प्रतापरवि मयउ । १-१५३१०
जपहु जाइ संकर सत नामा । १-१३७१५	जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । ७-५६११०
जपि नाम तब विनु भ्रम तरहिं । ७-१२११२	जब रघुनाथ कीन्हि रन क्रीडा । ७-५४१३
जब अति मयउ बिरह उर दाह । ६-१११५	जब रघुनाथ समर रिगु जीते । ३-२०११
जब एकांत बोलाइ सब । १-१६११०	जब रघुबीर दीन्हि अनुसासन । ६-४४१११
जब काहु के देखहिं बिपती । ७-३११३	जब रावनाहि ब्रह्म बर दीन्ह । ५-३१६
जब कीन्ह तेहिं पाथंड । ६-१००११	जब लमि आवी सीतहि देखी । १-०१३

जब लगि उर न बसत रघुनाथा । १-४६२
जब लगि प्रसत न तब लगि । १-३६०
जब लगि जिऔ कहउँ कर जोरी । २-३५७
जब लगि भजत न राम कहूँ । १-४६०
जब समुद्रत रघुनाथ सुभाऊ । २-२३३।६
जब सिय कानन देखि डेराई । २-८१३
जब सिय सखिन्ह प्रेमवस जानी । १-२३१।८
जब सुग्रीव भवन फिरि आए । ४-१११।०
जब सुग्रीवै राम कहूँ देखा । ४-३१६
जब सो प्रमंजन उर गूहँ जाई । ७-११७।१३
जब हरि माया दूरि निवारी । १-१३७।१
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती । २-८४।७
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । १-५०।८
जबहिं राम सब कहा बखानी । ३-२३३।३
जबहिं रामु कहे लेहि उसासा । २-२१९।६
जबहिं समर कौपिहि रघुनायक । ६-२६।६
जबहिं संभु कैलासहिं आए । १-१०२।३
जबहिं त्रिविक्रम भए खरारी । ४-२८।८
जम मन मुहँ मसि जग जमुना सी । १-३०।११
जमिहहिं परंख करसिं जानि विंता । ४-२७।९
जमुन तीर तेहि दिन करि बासू । २-२२०।१
जमुना उत्तरि पार सबु मयऊ । २-३२१।३
जय अनंत जय जगदादाश । ६-७६।४
जय इंदिरा रमन जय मूधर । ७-३३।४
जय कृपा कंद मुकुंद द्वाद । ६-१०२।१२
जय कृपाल कहि कपि चले । १-४४।०
जय कोसलेस महेश बंदिता । ६-१०८।१०
जय गजबदन षडानन माता । १-२३४।६
जय-जय अथिनासी सब घट बासी । १-१८।१५

जय-जय गिरिबरराज किरासोरी । १-२३४।५
जय-जय-जय करुनानिधि । ६-८६।०
जय-जय-जय रघुबंस मनि । ६-६६।०
जय-जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । ६-१०२।१०
जय-जय सुस्नायक जन सुखदायक । १-१८।११
जय दूषनारि खरारि । ६-११२।३
जय धुनि बिमल बेद बर बानी । १-३४७।२
जय धुनि बंदी बेद धुनि । १-३२४।०
जय निर्गुन जय-जय गुन सागर । ७-३३।३
जय प्रनतपाल दयाल-अनु । ७-१२।४
जय पाइअ सो हरि भगति । ७-१२०।४
जय नगवंत अनंत अनामय । ७-३३।२
जय रघुबंस बनज बन भानू । १-२८४।१
जय राम जो तून ते कुलिस कर । ६-८०।१६
जय राम प्रबल प्रताप । १-३४।१४
जय राम रमारमन समन । ७-१३।१
जय राम रावन मत गज । ६-७८।१७
जय राम रूप अनूप निर्गुन । ३-३१।३
जय राम सदा सुखधाम हरे । ६-११०।१
जय राम सोभा धाम । ६-११२।१
जय रावनारि कृपाल । ६-११२।६
जय सगुन निर्गुन रूप रूप । ७-१२।१
जय सच्चिदानंद जग पावन । १-४९।३
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । १-२८४।२
जय हरन धरनी मार । ६-११२।५
जयति राम जय लछिमन । ६-३३।०
ज्यौं मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी । २-२२३।३
जरइ नगर भा लोग बिहाला । १-२५।२
जरउ सो संपति सदन सुखु । २-१८।१०

जरठ भयउँ अब कहइ रिछेस । ४-२८७
 जरत बिभीषनु राखेउ । ५-४९१क
 जरत बिलोकेउँ जबहिं कपात्ता । ६-२८१
 जरत सकल सुर बूढ़ । ४-०३
 जरहिं पतंग मोह बस । ६-२९०
 जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा । २-५०५
 जरा जन्म दुःखीघ तातप्यमान । ७-५०७११६
 जरा मरन दुख रहित तनु । १-१६४०
 जरि तुम्हारि चह सबति उखारी । २-१६४
 जरे पंख अति तेज अपारा । ४-२७४
 जल ज्यों दादुर मोर । २-२५१०
 जलजंतु गज पदचर तुरग खर । ६-८६१३
 जल भरि नयन कहहिं रघुराई । ३-३०४
 जल संकोच बिकल भई मीना । ४-१५४
 जलचर थलचर नभचर नाना । १-२४
 जलज बिलोचन स्यामल गातहि । ७-२९३
 जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ । २-२०४३
 जलधि अगाध मीलि बह फेनू । १-१६६४
 जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । ५-०१९
 जल सीकर महि रज गनि जाहीं । ७-५१४
 जलु यलु देखि बसे निशि बीतें । २-२२५२
 जलु पय सरिस बिकाइ । १-५७१ख
 जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें । १-३०३
 जस बौसिलीं मोर मल ताका । २-३२४
 जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा । ५-११९
 जस दूतहु तसि बनी बराता । १-९३१
 जस बरु मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं । १-६८२
 जस मानस जेहि बिधि भयउ । १-३५०
 जसि बिबाह के बिधि श्रुति गाई । १-१००११

जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी । १-३२५१
 जसु गावत श्रुति चारि । ३-५क
 जसु तुम्हार मानस बिमल । २-१२८०
 जसु पावन रावन नाग महा । ६-११०४
 जहँ असि टसा जड़न्ह के बरनी । १-८४३
 जहँ कहँ निन्दा सुनिहिं पराई । ७-३८४
 जहँ कहँ फिरत निसावर पावहिं । ६-४७
 जहँ चितवहिं तहँ प्रमु आसीना । १-५३६
 जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं । १-२०५३
 जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा । २-१६९७
 जहँ जहँ आवत बसे बराती । १-३३२३
 जहँ जहँ कृपासिंधु बन । ६-१११ख
 जहँ जहँ जाहिं कुजैर बर दोऊ । १-२४३६
 जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया । ३-६५
 जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए । १-१४२७
 जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ । ७-१०९११०
 जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । २-११२३
 जहँ जहँ राम बास बित्रामा । २-२२०४
 जहँ जाहिं मर्कट भागि । ६-१००७
 जहँ तहँ काक उलूक बक । २-२८१०
 जहँ तहँ गई सकल तव । ५-११०
 जहँ तहँ चले बिपुल नाराघा । ६-४७४
 जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा । १-८५४
 जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि गानिनि । १-२९६१
 जहँ तहँ शक्ति करि कीस । ६-१००१९
 जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं । ७-२७६
 जहँ तहँ धावन पठइ पुनि । ७-१०१ख
 जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं । ७-२११
 जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं । ७-८५

जहँ तहँ परत देखिअहिं बानर । ६-४१।६
 जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं घर । ३-११।१७
 जहँ तहँ परीं अनेक लराई । १-१५।३।६
 जहँ तहँ पिअहिं विविध मृग नीरा । ३-३८।८
 जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस । १-३०१।०
 जहँ तहँ बिप्र बेटधुनि करहीं । १-२६।४।४
 जहँ तहँ भागि चले कपि रीछ । ६-४९।४
 जहँ तहँ मूघर बितप उपासी । ६-९१।११
 जहँ तहँ मुनिन्ह सुआग्रम कीन्हे । १-६४।८
 जहँ तहँ रहे पथिक धकिं नाना । ४-१४।१२
 जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा । १-३६।०।४
 जहँ तहँ लागे खान फल । ५-३५।०
 जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । २-११।७।१
 जहँ तहँ सोचहिं नारि नर । ७-०।४
 जहँ न होहु तहँ देहु कहि । २-१२।०।०
 जहँ बस संभु भवानि । ४-०।४
 जहँ बिलोक मृग सावक नैनी । १-२३।१।२
 जहँ बैठे देखहिं सब नारी । १-२२।३।७
 जहँ मूप रमानिवास । ७-२।७।१०
 जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे । १-३५।३।२
 जहँ लगी कहे पुरान श्रुति । १-१५।५।०
 जहँ लगी जगत सनेह सगाई । २-७।१।५
 जहँ लगी नाथ नेह अरु नाते । २-६।४।३
 जहँ लगी बेद कही बिधि करनी । २-११।१।३
 जहँ लगी रहे अपर मुनि बृंदा । ३-११।१।३
 जहँ लगी साधन बेद बखानी । ७-१२।५।७
 जहँ सिय रामु लखनु निजि सोए । २-११।७।७
 जहँ सिंसुपा पुनीत तर । २-११।८।०
 जहँ जनक गुर गति मति भोरी । २-३।७।११

जहँ बैठि मुनिगन सहित । २-२३।७।०
 जहँ रामु तहँ सबुइ समाजू । २-८।३।६
 जहँ सकल सुर सीस मनि । १-२९।७।०
 जहँ सुमति तहँ संपति नाना । ५-३।१।६
 जा दिन तें मुनि गए लवाई । १-२९।०।७
 जा दिन तें हरि गर्भहिं आए । १-१८।९।६
 जा बल सीस धरत सहसानन । ५-२।०।६
 जा मज्जन ते विनहिं प्रयासा । ७-३।६
 जाइ उतरु अब देहुउं काहा । १-५।३।२
 जाइ उपाय रचहु नृप एहु । १-१६।७।८
 जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा । ६-७।५।१
 जाइ जननि पग नायउ माथा । २-७।२।४
 जाइ दीख रघुवंसमनि । २-३।१।०
 जाइ देखि आवहु नगरु । १-२९।८।०
 जाइ न बरनि मनोहर जोरो । १-३२।४।२
 जाइ न बरनि मनोहरताई । २-७।८।५
 जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी । २-२।४।८
 जाइ निकट पहिघानि तरु । २-२६।७।०
 जाइ निसावर होहु नृप । १-१७।३।०
 जाइ पवनसुत नायउ माथा । ६-५।६।४
 जाइ पुकारे ते सब । ५-२।८।०
 जाइ बिधिहि तिन्ह दीन्हि सो फती । १-१।०।६
 जाइ बिबाहहु सैलजहि । १-७।६।०
 जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाए । १-८।१।१
 जाइ समीप राखि निज डोली । २-१८।७।४
 जाइ समीप राम छबि देखी । १-२६।३।४
 जाइ सासु पद कमल जुग । २-५।७।०
 जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । ७-६।१।५
 जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । २-१४।७।४

जाइ सुराज सुदेस सुखारी । २-२३४४
 जाइ संभु पद बंदनु कीन्हा । १-५११४
 जाइहि सुनत सकल संदेहा । ४-६०८
 जाउँ राम पहिं आयसु देहू । २-१४४१४
 जाउँ समीप गहन पद । ४-४४१४
 जा कर चित अहि गति सम भाई । ४-६१८
 जा कर नाम मरत मुख आवा । ३-३०६
 जाकर नाम सुनत सुभ होई । १-११२१५
 जा करि तैं दासी सो अबिनासी । १-१८३१२
 जा कहूँ करिअ सो पैहउँ । ४-४८१०
 जाकी कृपा लवलेस ते । ४-१२११११
 जाकी सहज स्वस श्रुति घारी । १-२०३१५
 जाके बल लवलेस तैं । ५-२११०
 जाके सुमिरन ते रिपु नासा । १-११६१८
 जाके हृदयें भगति जसि प्रीती । १-१८४१३
 जाके अस स्थ होइ दृढ़ । ६-८०१४
 जाके डर अति काल डेराई । ५-२१११
 जाके डर सुर असुर डेराहीं । ३-२४१८
 जाके नख अरु जटा बिसाला । ४-१४४८
 जाके बल बिरत्रि हरि ईसा । ५-२०१५
 जागइ मनोभव मुएहुँ मन बन । १-८५११
 जागत सब निशि मयउ बिहाना । २-१८६१२
 जागबलिक जो कथा सुहाई । १-२११११
 जागबलिक बोले मुमुकाई । १-४६१२
 जागबलिक मुनि परम बिबेकी । १-४४१४
 जागा निसिघर देखिअ कैसा । ६-६११७
 जागे सकल लोग भएँ भोरु । २-८५११
 जागेउ अजहुँ न अवधपति । २-३४१०
 जागेउ नृप अनमएँ बिहाना । १-१४११२

जागे लामु न हानि कछु । २-१२१०
 जावक जन जावहि जोइ जोई । १-३५०१४
 जावक दान मान संतोषे । २-४११४
 जावक तिए हँकारि । १-२१५१०
 जावक सकल संतोषि संकरु । १-१०११११
 जात न जाने दिवस तिन्ह । ४-१५१०
 जात पवनसुत देवन्ह देखा । ५-१११
 जात मनावन रघुबरहि । २-२२२१०
 जात रहेउँ कुबेर गृह । ४-६०१०
 जात रहेउँ बिरत्रि के घामा । ३-४१२
 जात सराहत मनहिं मन । १-३६०१०
 जातरूप मनि रचित अटारी । ४-२६१३
 जातहिं जासु समीप । ४-११४१४
 जाति पाँति कुल धर्म बडाई । ३-३४१५
 जाति पाँति धनु धरमु बडाई । २-१०३१५
 जाति हीन अघ जन्म महि । ३-३६१०
 जातुघान अंगद पन देखी । ६-३४११३
 जातुघान प्रदोष बल पाई । ६-४५१४
 जातुघान ब्रह्म बल मंजन । ४-५०१३
 जातुघान सुनि रावन बचना । ५-२४१४
 जाते लाग न छुछा पिपासा । १-२०८१८
 जाते बैगि द्रवउँ मै भाई । ३-१५१२
 जाते मोहि न कहत कछु राऊ । २-४११८
 जाते होइ चरन रति । ३-१४१०
 जान आदिकवि नाम प्रतापू । १-१८१५
 जान उमापति जासु सुराई । ६-२४१२
 जानइ ब्रह्म सो बिप्रवर । ४-१११४
 जानउँ मै तुम्हारि प्रमुताई । ५-२१११
 जानउँ सदा मरत कुलदीपा । २-२८१५

जानकीकरसरोजमालिनी..... । ७-४६३२(२)
 जानकी लघु भगिनी सकल । १-३२४।१९
 जानन्त जन की पीर । १-१८४।०
 जानन्त परम दुर्ग अति लंका । ६-३८।९
 जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं । ४-११।५
 जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । ५-७।९
 जानतहूँ पृच्छिज कस स्वामी । ३-८।७
 जानत ही मोहि दीन्ह । २-१४६।०
 जानति कृपासिंधु प्रभुताई । ७-२३।४
 जानब ते सबही कर भेदा । ७-८४।८
 जान्यो मनुज करि दनुज कानन । ६-१०३।१४
 जानसि मोर सुभाउ बरोरु । २-२५।४
 जानहिं तीनि काल निज म्याना । १-२९।७
 जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । ६-२४।५
 जानहिं यह चरित्र मुनि म्यानी । ४-१७।७
 जानहिं सानुज रामहि मारी । २-१८८।५
 जानहु तात तरनि कुल सीती । २-३०४।९
 जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ । ३-४१।३
 जानहूँ राम कुटिल करि मोही । २-२०४।९
 जाना चहहिं गुढ गति जेऊ । १-२१।३
 जाना जरठ जटायू एहा । ३-२८।१४
 जाना प्रताप ते रहे निर्भय । ६-१५।९
 जाना मन क्रम बवन यह । १-१३।०
 जाना मरमु नहात प्रयागा । २-२०७।५
 जाना राम प्रभाउ तब । १-२८४।०
 जाना राम सती दुखु पावा । १-५३।३
 जानि कठिन सिवचाप बिसूरति । १-२३४।९
 जानि कुअवसरु प्रीति दुराई । १-६४।६
 जानि कुअवसरु मन धरि धीरा । ६-५९।४

जानि कृपाकर किंकर मोह । १-७।३
 जानि गरुड गुर गिरा बहोरी । २-२९२।२
 जानि गौरि अनुकूल । १-२३६।०
 जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा । २-३०५।७
 जानि न जाइ निसावर माया । ५-४२।६
 जानि नृपहि आपन जाधीन । १-९६।१९
 जानि पानि जुग जोरि जन । १-४।०
 जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा । १-१०६।३
 जानि रामप्रिया दीन्हि असीसा । २-१९२।६
 जानि तखन सम देहिं असीसा । २-१९५।५
 जानि सगुन मन हरब । ७-०।४
 जानि समय सुरभूमि सुनि । १-१८६।०
 जानि समय सनकादिक आए । ७-३१।३
 जानि सरद रितु खंजन आए । ४-११।६
 जानि सुअवसरु सीय तब । १-२४६।०
 जानिअ तब मन बिरुज गीसाई । ७-२११।९
 जानिअ तबहिं जीव जग जागा । २-२२।४
 जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई । ६-१५।६
 जानी अमित सीय मन माली । २-११४।३
 जानी सिय बरात पुर आई । १-३०५।७
 जानु टेकि कपि भूमि न गिरा । ६-८३।९
 जानु पानि धार मोहि धरना । ७-७८।६
 जाने ते छीजहिं कछु पापी । ७-१२१।३
 जानेउँ तब बल अधम सुरारी । ६-२९।६
 जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई । २-२७।९
 जानेउँ राम प्रताप प्रभु । ७-५२।४
 जानेसु ब्रह्म अनादि अज । ७-८५।४
 जानेहि नहीं मरमु सठ मोर । ५-३।३
 जानेहु सदा मोहि निज किंकर । ७-१२४।१०

जानें बिनु न होइ परतीती । ४-८८७
 जापक जन प्रह्लाद जिमि । १-२७७
 जाब जहाँ लगी तहँ पहुँचाई । २-१११८
 जामवंत अंगद दुख देखी । ४-२५११
 जामवंत कह खल रहु जड़ । ६-७३४
 जामवंत कह तुन्ह सब लायक । ४-२१२
 जामवंत कह बैद सुषेना । ६-५४७
 जामवंत कह सुनु रघुराया । ५-२११
 जामवंत के बचन सुहाए । ५-०११
 जामवंत नीलादि सब । ४-१७७
 जामवंत बोले दौड भाई । ६-०१५
 जामवंत मैं पूँछउँ तोही । ४-२११०
 जामवंत मन्त्री अति बूढ़ा । ६-२२४
 जामवंत सुश्रीव विभीषन । ६-७४१०
 जायँ जिअत जग सो महि भारु । २-१८९८
 जायँ जीव बिनु देह सुहाई । २-१७७६
 जास नगरु निमिष एक माहीं । ५-२५६
 जास सकल पुर कीन्हैसि छारा । ६-३५६
 जासै जीनु सुमाउ हमारा । २-१५७
 जावक जुत पद कमल सुहाए । १-३२६३
 जासु अंस उपजहिं गुनखानी । १-१४७३
 जासु कथा कुंमज सिधि गई । १-५०७
 जासु कृपा अज सिव सनकादी । ३-५१५
 जासु कृपा कटाच्छु सुर । ४-२४७
 जासु कृपा छूटहिं मद मोहा । ४-१७६
 जासु कृपाँ सो दयाल । १-०१२
 जासु म्यानु रवि भव निसि नासा । २-२७६१
 जासु घान अस्विनीकुमारा । ६-१४३

जासु घरन अज सिव अनुरागी । ४-१०५४
 जासु चरित अवलोकि भवानी । १-१४०४
 जासु चलत डोलति इमि धरनी । ६-२४७
 जासु दूत बल बरनि न जाई । ५-३५३
 जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई । १-१५७२
 जासु नाम जपि सुनुहु भवानी । ५-११३
 जासु नाम पावक अघ तुला । २-२४७२
 जासु नाम बल संकर कासी । ४-९४
 जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । १-११५४
 जासु नाम भव भेषज । ४-१२४८
 जासु नाम सुमिरत एक बारा । २-१००३
 जासु नाम त्रय ताप नसावन । ५-३८८
 जासु पतित पावन बड़ बाना । ४-१२१७
 जासु प्रबल माया बस । ६-५१०
 जासु परसु सागर खर घारा । ६-२५३
 जासु बियोग बिकल पसु ऐसैं । २-११११
 जासु बिरहैं सोचहु दिन राती । ४-१३
 जासु बिलोकि अलौकिक सोभा । १-२३०३
 जासु बिलोकि भगति लवलेसू । २-३०२५
 जासु मवनु सुरतरु तर होई । १-१०७३
 जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । २-७०६
 जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । ५-४६८
 जासु सकल मंगलमय कीती । ५-३४५
 जासु सत्यता तैं जड़ माया । १-११६८
 जासु सनेह सकोच बस । २-२०९७
 जासु समीप सरित पय तीरा । २-२२४६
 जासु सुमाउ अरिहिं अनुकूला । २-३१८
 जासु हृदय आगार बसहिं । १-१७७
 जासु त्रास डर कहूँ डर होई । १-२२४७

जाहि दीन पर नेह करउ । १-०४
 जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु । २-१३१०
 जाहि कहीं ब्याकुल भए बंदर । ६-४२७
 जाहि चले देखत बिपिन । २-१२२१०
 जाहि जहाँ जहाँ बंधु दोउ । १-२२३१०
 जाहु न निज पर सूझ मोहि । ६-६४१०
 जाहु बेगि संकट अति भ्राता । ३-२४३
 जाहु भवन कुल कुसल बिचारी । ३-२५११
 जाहु भवन मम सुमिरिन करेहू । ४-१११२
 जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । २-५६४
 जाहु सुमंत्र जगावहु जाई । २-३४२
 जिअत राम बिधु बटनु निहास । २-१५५१२
 जिअन मरन फलु दसरथ पावा । २-१५५११
 जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ । २-५८६
 जिअसि सदा सट मोर जिआवा । ५-४०३
 जिऐ मरे भल भूपति जाना । २-१६५१८
 जिऐ मीन बरु बारि बिहीना । २-३२११
 जिति पवन मन गो निरस करि । ४-२१७
 जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी । २-२८६३
 जितेहु सुरासुर तव श्रम नाही । ५-३६११
 जिन्ह एहिँ बारि न मानस धोए । १-४२७
 जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं । १-३१४११
 जिन्ह कर नासा कान निपाता । ६-४१९
 जिन्ह कर मुजबल पाइ दसानन । ३-२११५
 जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिँ राता । १-२०३१२
 जिन्ह कृत महामोह मद पाना । १-११४४
 जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं । १-२४११८
 जिन्ह के चरन सरोरुह लागी । १-२२५४
 जिन्ह के जस्त प्रताप के आगे । १-२१११२

जिन्ह के जीवन कर रखवारा । ५-५२७
 जिन्ह के दसन कराल न फूटे । ६-२४६
 जिन्ह के बल कर गर्व तोहि । ६-३१४
 जिन्ह के यह आचरन भवानी । १-१८३३
 जिन्ह के अवन समुद्र समाना । २-१२७४
 जिन्ह के अगुन न सगुन बिबेका । १-११४१५
 जिन्ह के असि मति सहज न आई । ४-६३
 जिन्ह के कपट दम्भ नहिँ माया । २-१२११२
 जिन्ह के रही भावना जैसी । १-२४०४
 जिन्ह के कीन्हिसि बहुत बड़ाई । ५-२४१२
 जिन्ह के लहहिँ न रिपु रन पीठी । १-२३०४
 जिन्ह जानकी राम छबि देखी । १-३०११५
 जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय । २-१२३१०
 जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । २-४४६६
 जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा । २-२३६३
 जिन्ह निज रूप मोहनी डारी । १-२२८१५
 जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि । ५-४२१०
 जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिँ सब भाई । १-२०३१८
 जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । ५-२११५
 जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी । १-११११२
 जिन्ह हरि कथा सुनी नहिँ काना । १-११२१२
 जिन्ह हरिभगति हृदयें नहिँ जानी । १-११२१५
 जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी । २-२६११८
 जिन्हहि बिरचि बड़ मयउ बिधाता । १-१५४
 जिन्हहि सोक ते कहऊँ बरगानी । ४-३०३
 जिन्हहिँ न सपनेहुँ खेद । १-१४१४
 जिन्हहिँ राम तुम्ह प्रान पिआरे । २-१२११८
 जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । ५-०८
 जिमि अरुनोपल निकर निहारी । ६-३१११

जिमि कपूत के उपजें । ४-१११क
 जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । २-२२१३
 जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । २-१४४११
 जिमि कोउ करै गरुड़ सँ खेला । ६-५०८
 जिमि कोटि सत खद्योत सम । ७-२१११०
 जिमि यह कुसल अकारन कोही । १-२६६२
 जिमि चातक चातकि तृषित । २-५२०
 जिमि छौरसागर इंदिरा । ६-१०८११४
 जिमि जतु निघटित सरद प्रकासे । २-३२४३
 जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा । १-१६११५
 जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । ७-७८८
 जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर । ६-१२०
 जिमि तुम्हार आगमन सुनि । १-२३८१०
 जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । ७-११८१५
 जिमि धोर्ये मदपान कर । २-१४४१०
 जिमि निज बल अनुरूप ते । ६-१०११क
 जिमि नूतन पट पहिरइ । ७-१०११ग
 जिमि पाखंड बाट तें । ४-१४१०
 जिमि पिपीलिका सागर थाहा । ३-०१६
 जिमि बासव बस अमरपुर । २-१४११०
 जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु । २-४११११
 जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । १-२१३१२
 जिमि सिसु तन व्रन होइ गोसाई । ७-७३१८
 जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा । ३-२०११५
 जिमि हरि भगति पाइ श्रम । ४-१६१०
 जिय बिनु देह नटी बिनु बारी । २-६४१७
 जीतहु मनहि सुनिअ अस । ७-२२१०
 जीति को सक संग्राम । १-३४५१०
 जीति को सकइ अजय रघुराई । ५-१२३

जीति बरी निज बाहुबल । १-१८२१क
 जीति मोह महिपालु दल । २-२३५१०
 जीतेहु जे मट संजुग माहीं । ६-८१३
 जीम कमान बचन सर नाना । २-४०१२
 जीव करम बस सुख दुख भागी । २-११४
 जीव चराचर जो संसारा । १-५४१२
 जीव चराचर जंतु समाना । ३-१२३७
 जीव चराचर बस कै राखे । १-११११४
 जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । ५-२१२
 जीव हृदयें तम मोह बिसेषी । ७-११६१७
 जीवत पाउ न पाछें धरहीं । २-११११२
 जीवत सकल जन्म फल पाए । २-१६०३
 जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । ७-१२४१९
 जीवन लाहु लखन भल पावा । २-१८११७
 जीवनमुक्त ब्रह्मपर । ७-४२१०
 जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । ७-५२१२
 जुग अंगुल कर बीच सब । ७-७११क
 जुग पदचर असवार प्रति । १-२१८१०
 जुग बिच भगति देव धुनिधारा । १-३१३
 जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका । ७-१२०३३
 जुग सम नृपाहिँ गए दिन तीनी । १-१७११७
 जुगति बिभीषन सकल सुनाई । ५-७१५
 जुगति बेधि पुनि पोहिअहिँ । १-१११०
 जुगति सुनत रावन मुसुकाई । ६-३३१५
 जुद्ध विरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर । ६-४३११
 जुबति बूंद रोवत उठि घाई । ६-१०३१२
 जुबती भवन झरोखन्हि लागी । १-२१११४
 जुझे सकल सुमट करि करनी । १-१७४१६
 जूठनि परइ अजिर महीं । ७-७५१क

जूय जूय भिति बली सुआसिनि । १-३४४/५
 जूय जूय भिति सुमुखि सुनयनी । १-२८५/२
 जे अघ तिरा बालक बघ कीन्हें । २-१६६/६
 जे अघ मातु भित्त सुत मारें । २-१६६/५
 जे अनकारी चार । ७-९८/४
 जे असि भगति जानि परिहरहीं । ७-११४/११
 जे एहि कथाहिं सनेह समेता । १-१४/१०
 जे कछु समाचार सुनि पावहिं । २-१२१/२
 जे कामी लोलुप जग माहीं । १-१२४/८
 जे यान मान विमत्त तव । ७-१२/१
 जे गावहिं यह चरित सँभारे । ३-३७/११
 जे गुरु चरन रेनु तिर धरहीं । २-२/५
 जे गुरु पद अंबुज अनुरागी । २-२५८/५
 जे चरन सिंव अज पूज्य रज । ७-१२/१३
 जे जन कहहिं कुसल हम देखें । २-२२३/७
 जे जनमे कलिकाल कराता । १-११/१
 जे जल चलहिं धलहि की नाई । १-२१८/७
 जे जानहिं ते जानहुं स्वामी । ३-१०/११
 जे जे बर के दोष बखाने । १-६८/३
 जे जैसेहिं तैसेहिं उटि धावहिं । ७-२/७
 जे तिन्ह महुँ बयविरिध सयाने । २-१०९/४
 जे दिन गए तुम्हहिं बिनु देखें । १-३५६/८
 जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी । ३-४४/३
 जे न भजहिं हरि नरतनु पाई । २-१६७/६
 जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । ४-६/११
 जे नर नारि न अक्सर आए । २-१२०/६
 जे नहिं साधुसंग अनुरागे । २-१६७/५
 जे नाथ करि करुना बिलोके । ७-१२/७
 जे निज भगत नाथ तव अहहीं । १-१४१/८

जे नृप सीय स्वयंबर आए । १-३११/२
 जे पद जनकसुती उर लाए । १-४१/७
 जे पद परति तारी रिशिनारी । १-४१/६
 जे पद सरोज मनोज अरि । १-३२३/११
 जे पर दोष तराहि सहसायी । १-३/४
 जे पर भनिति सुनत हरषाहीं । १-७/१२
 जे परसि मुनिबनिता लही । १-३२३/१३
 जे परिहरि हरि हर चरन । २-१६७/१०
 जे प्राकृत कवि परम सयाने । १-१३/५
 जे पातक उपपातक अहहीं । २-१६६/७
 जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । २-११२/११
 जे बरनाधम तेलि कुन्हारा । ७-११/५
 जे ब्रह्म अजमडैतमनुभव । ७-१२/२१
 जे बिरति निरलेष उपाए । २-३१६/८
 जे मरि नयन बिलोकहि रामहि । २-११२/५
 जे मति मलिन विषयबस कामी । ७-७/२
 जे मतिमंद विमोह बस । १-४१/०
 जे महिसुर दत्तरथ पुर बासी । २-२७७/११
 जे मृग राम बान के मारे । १-२०४/३
 जे यह कथा निरंकर । १-२६/०
 जे राखे रघुवीर । १-८/१०
 जे राम मंत्र जपत संत । ३-३१/११
 जे रामेश्वर दरसनु करिहहिं । ६-२/११
 जे श्रद्धा संबल रहित । १-३८/०
 जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । ७-१४/३
 जे सजीव जग अचर चर । १-८/१०
 जे सठ गुरु सन इरिषा करहीं । ७-१०६/५
 जे सर सरित राम अवगाहहिं । २-११२/६
 जे सकल सुमिरत विमलता मन । १-३२३/१२

जे सुनि सादर नर बड़ भागी । १-१५१३
 जे सुर समर धीर बलवाना । १-१८१२
 जे हर हिय नयननि कबहुँ । २-२०१०
 जे हरषहिं पर संपति देखी । २-२२१७
 जे हरि कथाँ न करहिं रति । ७-४२१०
 जे हित रहे करत तेइ पीरा । ५-१४१४
 जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । २-१४१३
 जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा । १-१५२१८
 जेन केन बिधि टीन्हें । ७-१०३१४
 जेवैत जो बह्यो अनंदु सो । १-१८१११
 जेवैत देहि मधुर धुनि गारी । १-३२८१६
 जेहि इमि गावहिं बेद बुध । १-११८१०
 जेहि कर मनु रम जाहिं सन । १-८०१०
 जेहि कारन अज अगुन अरुपा । १-१४०१२
 जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । १-२५८१६
 जेहि कै अस्तुति सादर । ७-६३१४
 जेहि खोजत जोगीस मुनि । ७-८४१४
 जेहि चाहत नर नारि सब । २-५२१०
 जेहि जन पर ममता अति छोहू । १-१२१६
 जेहि जस जोग बीटि गृह दीन्हें । १-१७८१७
 जेहि जस रघुपति करहिं जब । १-१२४१४
 जेहि जानें जग जाई हेराई । १-११११२
 जेहि तरु तर प्रमु बैठहिं जाई । २-११२१७
 जेहि तुरंग पर रामु बिराजे । १-३११५७
 जेहि ते नीच बड़ाई पावा । ७-१०५११
 जेहि ते बिपरीत क्रिया करिए । ६-११०१२०
 जेहि तें कछु निज स्वास्थ्य होई । ७-१४१८
 जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं । १-३३१६
 जेहि दिसि बेटे नारद फूलो । १-१३४११

जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे । १-१८५११४
 जेहि न होइ रन सनमुख कोई । १-१७११८
 जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर । ६-१०३११५
 जेहि नामु श्रुतिकीरति सुलोचनि । १-३२४१२१
 जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी । १-१०४१६
 जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । १-१३७१७
 जेहि पूछुँ सोइ मुनि अस कहई । ७-१०१११५
 जेहि बस जन अनुचित करहिं । १-२७७१०
 जेहि बिधि अबध आव फिरि सीया । २-१५१७
 जेहि बिधि उतारै कपि कटकु । ५-१११०
 जेहि बिधि कपट कुंरंग सँग । ३-२११०
 जेहि बिधि कपिपति कीस पटाए । ७-६६११
 जेहि बिधि कृमासिंधु सुख मानइ । ७-२३१७
 जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा । १-१३१७
 जेहि बिधि प्रनु प्रसन्न मन होई । २-२६८१२
 जेहि बिधि मोह भयउ प्रमु मोही । ७-७३१२
 जेहि बिधि राम नगर निज आए । ७-६७१५
 जेहि बिधि सुरखी होहिं पुर लोगा । १-२०४१५
 जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला । १-१८२१५
 जेहि बिधि होइ राम कल्याणु । २-७१६
 जेहि बिधि होइहि परम हित । १-१३२१०
 जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ । २-४१११
 जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । ७-६०१६
 जेहि राखहिं रहु घर रखवारी । २-१८४१६
 जेहि लखि लखनहु तें अधिक । २-२४३१०
 जेहि लागि बिरानी अति अनुरागी । १-१८५१७
 जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक । ३-३११११
 जेहि समान अतिसय नहिं कोई । ३-५१८
 जेहि सुख लागि पुरारि । ७-८८१४

जेहि सुभार्य चितवहिं हितु जानी । १-२६८।३
 जेहिं अघ बघेउ ब्याघ जिमि बाती । १-२८।६
 जेहिं आश्रम तुम्ह बसब पुनि । ७-११३।४
 जेहिं उपाय पुनि पाय । २-३१३।०
 जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा । ६-९८।७
 जेहिं कौतुक सिवसैलु उठावा । १-२११।८
 जेहिं गिरि घरन देइ हनुमंता । ५-०।७
 जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला । ६-३६।१
 जेहिं जेहिं जोनि करम बस भ्रमहीं । २-२३।५
 जेहिं जेहिं देस घेनु द्विज पावहिं । १-२८२।६
 जेहिं जेहिं बेध अजादि सुर । १-५४।०
 जाहिं जोनि जन्मीं कर्म बस । ४-१।११
 जेहिं ताड़का सुबाहु हति । ३-२५।०
 जेहिं तेरहुति तेहि समय निहारी । १-२८८।७
 जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू । २-२७०।२
 जेहिं देखीं अब नयन भरि । २-३२।०
 जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू । २-७४।८
 जेहिं षट सुरसरिता परम पुनीता । १-२१०।१३
 जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । ५-५३।७
 जेहिं बन जाइ रहब रघुआई । २-१०३।५
 जेहिं बर बाजिं रामु असवारा । १-३१६।१
 जेहिं बलि बाँधि सहसमुज मारा । ६-५।८
 जेहिं बहु बार नचावा मोही । ७-५८।६
 जेहिं बिधि तुम्हहिं रूनु अस दीन्हा । १-१५।८
 जेहिं बारीस बँधायउ हेला । ६-८।५
 जेहिं बिधि मोहि दुख दुसह सहए । ६-१८।८
 जेहिं बिधि राम विमुख मोहि कीन्हा । ६-५८।५
 जेहिं बिरंचि रचि सीय सँवारी । १-२२२।७
 जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं । १-११।११

जेहिं मारे सोइ अवतरेउ । ६-४८।६
 जेहिं मंडप दुलहिनि बैदेही । १-२८८।४
 जेहिं यह कथा सुनी नहिं होई । १-३२।३
 जेहिं रघुनंदन जानकिहि । २-११।०
 जेहिं राउर अति अनमल ताका । २-२०।५
 जेहिं रिपु छय सोइ रचेन्ह उपाऊ । १-१६१।८
 जेहिं रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी । १-२८०।८
 जेहिं समाज बैठे मुनि जाई । १-१३३।१
 जेहिं सायक मारा मैं वाली । ४-१७।५
 जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी । २-१८२।८
 जेहिं सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई । १-१८५।१९
 जैसें जाइ मोह भ्रम भारी । ५-१५।३
 जैसें मिटे मोर भ्रम भारी । ४-४६।१
 जैहउं अवध कवन मुहु लाई । ६-६०।११
 जो अगम सुगम सुमाव निर्मल । ३-३१।१५
 जो अति आतप ब्याकुल होई । ७-६८।३
 जो अति सुमट सराहेहु रावन । ६-२२।९
 जो अपराधु भगत कर करई । २-२१७।५
 जो अवलोकत लोकपति । १-३३३।०
 जो आनन्द सिंधु सुखरासी । १-११६।५
 जो आपन चाहै कल्याणां । ५-३७।५
 जो इच्छा करिहेहु मन माहीं । ७-११३।४
 जो इन्ह कर मारा नहिं मरई । ७-१०८।१४
 जो एतेहुं दुख मोहि जिआवा । २-१६४।८
 जो एहि बरइ अमर सोइ होई । १-१३०।३
 जो अचर्वत नृप मातहिं तेई । २-२३०।७
 जो कछु आयसु ब्रह्मां दीन्हा । १-१८७।२
 जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । ४-६।२३
 जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं । १-१५०।२

जो कह झूठ मसखरी जाना । ७-१७१६	जो बसिष्ठ कछु हृदयै बिचारा । १-१८८७
जो कह रामु लखनु बेदेही । २-१४२७	जो बिलोकि अनुचित कहेउं । १-२७३१०
जो किहु कहब थोर सांख सोई । २-२२२२	जो बिलोकि शीझै कुजौरिं । १-१३२१०
जो कोसल पति राजिव नेना । ३-१०१२०	जो भव भय भंजन । १-१८५१११
जो गति होइ सो कलि हरि । ७-१०२१३	जो भुसुडि मन मानस हंसा । १-१४५१५
जो ग्यनिन्ह कर धित अपहरई । ७-५८५	जो माया सब जगहि नधावा । ७-७११५
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें । १-११५५३	जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं । ७-८४१४
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । ६-२१२	जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । २-६११
जो चेतन कहै जड़ करइ । ७-११११३	जो मोरें सिव चरन सनेहैं । १-५८८
जो जहै सुनइ धुनइ सिरु सोई । २-४५१८	जो रन विमुख सुना मै काना । ६-४११७
जो जानइ रघुपति कृपा । ७-११६१३	जो सरल बस सिव मन माहीं । १-१४५१४
जो जिअत रहिहि बरात देखत । १-१४११५	जो सहज कृपाला दीनदयाला । १-१८५१४
जो जेहि भायें रहा अमिलायी । २-४४३१२	जो सहससीसु जहीसु महिधरु । २-१२५१११
जो तुम्ह कहा सो मृगा न होई । १-५५३	जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । १-११६
जो न तरे भव सागर । ७-४४१०	जो सुखु भा सिध मातु । १-३९८१०
जो न गजइ रघुवीर पद । २-१११५१०	जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं । १-३४२१४
जो नहाइ बह एहिं सर भाई । १-३८८	जो सुनत गावत कहत समुद्रत । ४-२११५
जो नहिं करइ राम गुन गाना । १-११२१६	जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारे । २-२१३
जो नहिं देखा नहिं सुना । ७-८०१३	जो सुनि होइ राम पद । ७-११६१३
जो नाघइ सत जोजन सागर । ४-२८१५	जो सुमिरत भयो मौन । १-२६१०
जो निर्बिघ्न पंथ निबोहई । ७-११८१२	जो सुमिरत सिधि होइ । १-०११
जो प्रतिपालइ तासु हित । ६-२३१०	जो सृजति जगु पालति हरति । २-१२५११०
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । १-१३१८	जो सृजि पालइ हरइ बहोरी । २-२८११२
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा । १-१४०१३	जो सेवकु साहिबहि सैंकोची । २-२६७१३
जो प्रभु मै पूछा नहिं होई । १-११०१४	जो संपति सिव सवनहि । ५-४११३
जो पावैरु अपनी जड़ताई । २-१८३१६	जो संपदा नीच गृह सोहा । १-२८८१८
जो फलु बहिअ सुरतरहिं । १-१५११०	जो हटि भयल सकल दुख भाजनु । २-४७१३
जो बरु नाथ चतुर नृप माया । १-१४११४	जो हमार हर नासा काना । ५-५११६
जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्हैं । १-३५११५	जो हसि सो हसि मुँह मसि लाई । २-१६११८

जोड़ जोड़ मन मावड़ सोड़ लेहैं । ६-११६।७
जोड़ जोड़ सगुन जानकिहि होई । १-३४।७
जोड़ तनु धरउँ तजाउँ पुनि । ४-१०१।१
जोड़ पूछिहि तेहि उतरु देब । २-१४५।५
जोग अगिनि करि प्रगट तब । ४-११७।३
जोग ग्यान बैराग्य निधि । १-१०७।०
जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्ह । ३-७।७
जोग जुगुति तप मंत्र प्रमाऊ । १-१६७।४
जोग बियोग भोग मल मंदा । २-११५।५
जोग भोग महँ राखेउ गोई । १-१६।२
जोग लगन ग्रह बार तिथि । १-११०।०
जोग सिद्धि फल समय जिनि । २-२१।०
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाई । २-१०।५
जोगवहिं प्रमु सिय लखनहिं कैसैं । २-१४१।१
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई । ३-३५।८
जोगि बृंद दुर्लभ गति । ६-१०४।०
जोगिन्ह परम तत्वमय भासा । १-२४१।४
जोगिनि गहैं करबाल । ६-१००।३
जोगिनि मरि भरि खप्पर संचहिं । ६-८७।७
जोगी अकंटक भए पति गति । १-२६।१९
जोगी जटिल अकाम मन । १-६७।०
जोगी सूर सुतापस ग्यानी । ४-१२३।६
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव । १-३२६।२५
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानु । २-२१०।२
* जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा । १-५।७
जोबन जवर केहि नहिं बलकावा । ४-७०।२
जोरि पानि कह तब हनुमंता । ४-३५।५
जोरि पानि प्रमु कीन्ह प्रनामू । १-५२।७
जोरि पानि बर मागउँ एहू । २-११६।८

जोरि पानि बोले बचन । १-२८४।०
जोरि पानि सबहैं सिर नाए । ६-१०५।७
जोरि पंकरुह पानि सुहाए । १-३४०।३
जोसि सोसि तब चरन नमामी । १-१६०।५
जो कृपाल पूछिहु मोहि बाता । १-३७।४
जो अति प्रिय ती करिअ उपाई । १-२७७।३
जो अनाथ हित हम पर नेहू । १-१४५।३
जो अनीति कछु माषी भाई । ४-४२।६
जो अनीह ब्यापक बिमु कोऊ । १-१०८।११
जो अपने अवगुन सब कहऊँ । १-११।५
जो अब करउँ सती सन प्रीती । १-५५।८
जो अस करैं तदपि न बड़ाई । ६-३०।५
जो अस हिसिषा करहिं नर । १-६१।०
जो असत्य कछु कहब बनाई । २-१८।५
जो असि मति पितु खाए कीसा । ६-२३।१९
जो अहि सेज सयन हरि करहीं । १-६८।५
जो आवड़ मरुट कटकाई । १-३६।३
जो ए कंद मूल फल खाहीं । २-१११।११
जो ए मुनि पट धर जटिल । २-१११।०
जो एहि खल नित करब अहार । १-१४६।७
जो अंतहुँ अस करतबु रहेऊ । २-३४।४
जो कछु कहीं कपटु करि तोही । २-२५।६
जो कदाचि मोहि मारहिं । ४-७।०
जो करनी समुझै प्रमु मोरी । ४-०।५
जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई । १-३८।११
जो केवल पितु आयसु ताता । २-५५।१
जो खल भएसि राम कर द्रोही । ६-२६।२
जो धरु बरु फुलु होइ अनूपा । १-४०।३
जो छबि सुधा पयोनिधि होई । १-२४६।७

जौ जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा । २-१२०४
 जौ जनतेउँ बन बंधु बिछोहू । ६-६०६
 जौ जनतेउँ बिनु मट मुबि नाई । १-२५१६
 जौ जियँ धरिअ बिनय पिय मोरी । २-१५३८
 जौ जियँ होति न कपट कुवाली । २-२२७७
 जौ तपु करै कुनारि तुम्हारी । १-६९१५
 जौ तुम्ह औतेहु मुनि की नाई । १-२८१३
 जौ तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा । १-८०१
 जौ तुम्हरे हठ हृदयँ बिसेधी । १-८०३
 जौ तुम्हरेँ मन अति संदेहू । १-५१११
 जौ तुम्हरेँ मन छाड़ि छलु । २-७४१०
 जौ तुम्हारि अनुसासन पावौ । १-२५२४
 जौ तेहि आजु बधेँ बिनु आवौ । ६-७४१३
 जौ तेहि बिघ्न बुद्धि नहिँ बाधी । ७-११७११०
 जौ दिन प्रति अहार कर सोई । १-१७११५
 जौ न करौँ प्रमु पद सपथ । १-२५३१०
 जौ न बलब हम कहेँ तुम्हारेँ । १-१६५७
 जौ न जाउँ तव होइ अकाजू । १-१६६१५
 जौ न जाउँ बन ऐसेहु काजा । २-४१२
 जौ न ब्रह्मसर मानउँ । १-१११०
 जौ न मिलिहि बरु गिरिजहि जोगू । १-७०१५
 जौ न राम अपमानहिँ डरऊँ । ६-२९८
 जौ न होइ बल घर फिरि जाहू । ३-१८१२
 जौ न होत जग जनम भरत को । २-२३२११
 जौ न होति सीता सुधि पाई । ५-२८११
 जौ नर तात तदपि अति सूरा । ३-२४८
 जौ नररूप भूपसुत कोऊ । ३-२२६
 जौ नर होइ चराचर द्रोही । ५-४७१२
 जौ नरेस मैं करौँ रसोई । १-१६७१५

जौ नहिँ जाउँ रहइ पछितावा । १-४८१२
 जौ नहिँ दंड करौँ खल तोरा । ७-१०६४
 जौ नहिँ फिरिहिँ धीर दोउ भाई । २-८१११
 जौ नहिँ लगिहहु कहेँ हमारे । २-४९१५
 जौ नहिँ होत मोह अति मोही । ७-६८४
 जौ नृप तनय त ब्रह्म किमि । १-१०८१०
 जौ पटतरिअ तीय सम सीया । १-२४६४
 जौ प्रमु दीनदयालु कहाया । १-१८६
 जौ प्रमु पार अवसि गा चहहू । २-९१८
 जौ प्रमु सिद्ध होइ सो पाइहि । ६-७४१५
 जौ प्रमु होइ प्रसन्न बर देहू । ७-८३७
 जौ प्रसन्न प्रमु मो पर । ७-१०८४
 जौ परलोक इहाँ सुख चहहू । ७-४४११
 जौ परिहरहिँ मलिन मनु जानी । २-२३३११
 जौ परिहास कीन्हि कछु होई । २-४९१६
 जौ पौचहिँ मत लागे नीका । २-४३
 जौ मितु मातु कहेउ बन जाना । २-५५२
 जौ पिय मानहु मोर सिखावन । ६-६८
 जौ प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे । २-१७१२
 जौ पै इन्हहिँ दीन्ह बनबासू । २-११८५
 जौ पै कुरुचि रही अति तोही । २-१६०७
 जौ पै कृपा जरिहिँ मुनि गाता । १-२७१५
 जौ पै जियँ न होति कुटिलाई । २-१८८४
 जौ पै दुष्टहृदय सोइ होई । ५-४३४
 जौ पै प्रमु प्रभाउ कछु जाना । १-२७६२
 जौ पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा । २-८५६
 जौ पै समर सुमट तव नाथा । ६-२७६
 जौ पै सीय रामु बन जाहीं । २-७३४
 जौ फुर कहहु त नाथ निज । २-२५६०

जौ बरसाइ बर बारी बिचारु । १-१०१९
 जौ बहोरि कोउ पूछन आवा । १-३८७
 जौ बालक कह तोतरि बाता । १-७१९
 जौ बिदेहु कछु करे सहाई । १-२६५५
 जौ बिधि जनमु देख करि छोहू । २-१४७
 जौ बिधि पुरब मनोरथु काली । २-२२३
 जौ बिधि बस अस बनेँ सँजोगू । १-२२१७
 जौ बिनु अवसर अथर्वे दिनेसू । २-३०४७
 जौ बिनु बोलें जाहु भवानी । १-६१४
 जौ बिग्रन्ह बस करहु नरेसा । १-१६४४
 जौ बिबाहु संकर सन होई । १-६८७
 जौ मन बच क्रम मम उर माहीं । ६-१०८७
 जौ मम चरन सकसि सठ टारी । ६-३३१९
 जौ महेशु मोहि आयसु देखीं । १-६०६
 जौ मागा पाइअ बिधि पाहीं । २-१२०५
 जौ मृगपति बघ मेडुकन्हि । ६-२३१
 जौ मैं राम त कुल सहित । ३-३१०
 जौ मैं सिव सेये अस जानी । १-८१४
 जौ मो पर प्रसन्न सुखरासी । १-१०७१९
 जौ मोरें मन बच अरु काया । ६-५८६
 जौ मोरें सिव चरन सनेहू । १-५८८
 जौ यह बचन सत्य श्रुति भाषा । १-१४३८
 जौ यह साँची है सदा । १-२१७
 जौ रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । ५-६५
 जौ रघुबीर होति सुधि पाई । ५-१५१
 जौ रन हमहिं पचारे कौऊ । १-२८३२
 जौ साउर आयसु मैं पावौं । १-२१७६
 जौ लरिका कछु अचगरि करहीं । १-२४६३
 जौ साखि इन्हहि देख नरनाहू । १-२२१२

जौ सत संकर करहिं सहाई । ६-४४१४
 जौ सपनेँ सिर काटे कोई । १-११७२
 जौ सब कें रह ग्यान एकरस । ७-४४५
 जौ समीत आवा सरनाई । १-४३८
 जौ सहाय कर संकरु आई । २-२२१८
 जौ सिय भवन रहे कह जांबा । २-५१७
 जौ सुत कहाँ संग मोहि लेहू । २-५१६
 जौ सुत सहित करहु सेवकाई । २-१८८
 जौ हठ करउँ त निपट कुकरु । २-२५२६
 जौ हठ करहु प्रेम बस बामा । २-६१३
 जौ हम निदरहिं बिग्र बदि । १-२८३०
 जंबुक निकर कटकटक कहहिं । ६-४७९

झ

झपटहिं करि बल बिपुल उपाई । ६-३३१२
 झपटहिं चरन गहि पटकि महि । ६-४०१०
 झपटहिं टरै न कपि चरन । ६-३४१
 झरना झरहिं मत्त गज गाजहि । २-२३५५
 झरना झरहिं सुधासम बारी । २-२४८६
 झलका झलकत पायन्ह कैसैं । २-२०३५
 झौंझि बिरव डिंडिमी सुहाई । १-३४३२
 झौंझि मृदंग संख सहनाई । १-२६२१
 झूठइ लेना झूठइ देना । ७-३८७
 झूठि न होइ देगरिषि बानी । १-६४७
 झूठेउ सत्य जाहि बिनु जानैं । १-१११५
 झूठेहुँ हमहि दोषु जानि देहू । २-२७३

ट

टूट चाप नहिं जुसिहि रिसाने । १-२४७२
 टूटतहीं धनु मयउ बिबाहू । १-२८५८
 टेढ़ जानि सब बंदइ काहू । १-२८०६

ट

टाढ़ रहा अति कंपित गाता । ६-१४३
 टाढ़े जाहें नाहें आयसु पाई । ४-२१५
 ठाढ़े भए जठि सहज सुभाएँ । १-२५३८

ड

डागइ न संभु सरासनु कैसैं । १-२५०२
 डरपाहिं धीर रहन सुधि आएँ । २-६२४
 डरपे गीघ बचन सुनि काना । ४-३६५
 डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू । २-१८१५
 डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । १-२४०६
 डरे सकल सुर बते पराई । ६-१५६
 डहकि डहकि परिबेहु सब काहू । १-१३६३
 डारइ परसु पश्चि प्राधाना । ६-४२२
 डेरा कीन्हैउ मनहुं तब । ३-३४५
 डोलत धरनि समालद खत्ते । ६-३१४
 डोली भूमि गिरत दसकंधर । ६-१०२५

ढ

ढाहत भूपरूप तरु मूला । २-३३४
 ढाहें महीधर सिखर कोटिन्ह । ६-४८१११
 ढौल गवाँर सूद्र पसु नारी । ५-५८६

त

तकि तकि तीर महीस चलावा । ११५६६
 तग्य कृतग्य जग्याता मंजन । ४-३३६
 तजउँ तोहि तेहि त्रास । ६-३३४
 तजउँ न तन निज इच्छा मरना । ४-१५५
 तजउँ न नारद कह उपदेसू । १-८०६
 तजउँ प्राण रघुनाथ निहारेँ । २-१८१६
 तजब छेभु जनि छाड़िअ छोहू । २-६८५

तजहु आस निज निज गृह जाहू । १-२५१४
 तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू । ३-२८१६
 तजि जोग पावक देह हरि पट । ३-३५१५
 तजि तजि भूषन भोग सुख । २-३२२०
 तजि मद मोह कपट छल नाना । ५-४४३
 तजि मम चरन सरोज प्रिय । ३-४५०
 तजि ममता मद मान । ४-१३४
 तजि माया सेइज परलोका । ४-२२५
 तजि श्रुतिपंथु बाम पथ चलही । २-१६४
 तजि सकल आस भरोस गावहिं । ५-१९१२
 तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू । १-६३६
 तजे रामु जेहिं बचनहि लागी । २-१४३
 तजौं देह करु बेगि उपाई । ५-११२
 तडित बिनिंदक पीत पट । १-१४४
 तख प्रेम कर मम अरु तोरा । ५-१४६
 तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई । ४-११८
 तदपि अनुज श्री सहित खरारी । ३-१०१८
 तदपि असंका कीन्हिह सोई । १-११२
 तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । २-८६
 तदपि एक मैं वहाउँ उपाई । १-६८
 तदपि कठिन टसकंठ सुनु । ६-२३४
 तदपि करब मैं काजु तुम्हार । १-८३५
 तदपि करहिं सम विषम बिहारा । २-२१८
 तदपि कही गुर बारहिं बारा । १-३०१
 तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी । १-११३
 तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी । १-१०४
 तदपि जाइ तुम्ह करहु अब । १-२८६
 तदपि तुम्हारि साधुता देखी । ४-१०८
 तदपि देवि मैं देवि असीसा । २-१०२

तदपि धीर धरि समउ बिघारी । २-३१४
 तदपि न उलझ धरिन्हि कव जाई । ६-७५३
 तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई । १-२१५६
 तदपि बिरोध मान जहाँ कोई । १-६१६
 तदपि मलिन मन बोधु न आवा । १-१०८४
 तदपि महीसुर श्राप बस । १-१०६१०
 तदपि सकोध समेत कवि । १-२४७१०
 तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । २-१८२४
 तदपि साप सट दैहउं तोही । ७-१०६३
 तदपि संत मुनि ब्रह्म पुराना । १-१२०४
 तन अनुहरत सुचंदन खोरी । १-२१८४
 तन कूस मन दुखु बटन भलीने । २-७५४
 तन काम अनेक अनूप छबी । ६-११०३
 तन खीन कोउ अति पीन पावन । १-१२१९
 तन छार ब्याल कपाल मूषन । १-१४१९
 तन यसेउ कदली जिमि कौपी । २-१११२
 तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन । ३-५१११
 तन पुलकहि अति हखु हिये । १-२२४१०
 तन पुलकित मुख बचन न आवा । १-२०१५
 तन बिनु परस नयन बिनु देख । १-११०४
 तन मन बचन उमग अनुराग । २-३९६५
 तन मन बचन मोर पनु साद्य । १-२५८४
 तन सकोधु मन परम उछाहू । १-२६३३
 तनय जजातिहि जौबनु दयऊ । २-१७३८
 तनय मातु पितु तोषनिहास । २-४०४
 तनु तजि तात जाहु मम धामा । ३-३०११०
 तनु तिय तनय धामु धनु धरनी । २-३४४
 तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । २-६४४
 तनु धनु धाम राम हितकारी । ७-४६३

तनु परिहरि रघुबर बिरहै । २-१५५०
 तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपने । १-३२४१२
 तनु पुलकित जलु लोचन बहई । २-८९६
 तनु पुलकेउ हिये हरषु सुनि । २-२०५०
 तनु पोषक नारि नरा सगरै । ७-१०११०
 तनु पोषक निंदक अघ खानी । ६-३०४
 तनु महु प्रबिसि निसरि सर जाही । ६-६८६
 तप अधार सब सृष्टि भवानी । १-७२५
 तपबल तें जग सुजइ बिधाता । १-१६२१
 तपबल तेहि करि आपु समाना । १-१६८५
 तपबल बिष सटा बरिआरा । १-१६४३
 तपबल रचइ प्रपंचु बिधाता । १-७२३
 तपबल संनु करहि संघार । १-१६२३
 तपबल संनु करहि संघार । १-७२४
 तपसी धनवंत दरिद्र मृही । ७-१००१२
 तब अति सोच मराउ मन मोरें । ७-५५५
 तब अदूरय मए पावक । १-१८९१०
 तब अनुजहि समुझावा । ७-१८०
 तब असोक पाटप तर । ३-२११०
 तब आपन प्रमाउ बिस्तारा । १-८३५
 तब उठि मृष बसिह कहै । १-२१३०
 तब उठैउ क्रुद्ध कृतांत सम । ६-८४११
 तब अंगद उठि नाइ सिरु । ७-१०४
 तब कछु काल मराल तनु । ७-५०१०
 तब कपीस बरनन्हि सिरु नावा । ४-११६
 तब कपीस रिचोस दिगीवन । ६-३८३
 तब कर अस बिमोह अब नाही । १-१०८४
 तब कर कमल जोरि रघुसाई । २-१२४५
 तब कर जोरि जनकु मनु बानी । १-३२५८

तब कह गीघ बचन धरि धीरा । ३-३०।१
 तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । ६-२६।७
 तब किछु कीन्ह राम रुख जानी । २-२१।३
 तब केवट ऊँचे चढ़ि धाई । २-२३६।११
 तब खगपति बिरवि पहिँ गयऊ । ७-५१।१
 तब खिसिआनी राम पहिँ गई । ३-१६।११
 तब मनपति सिव सुमिरि प्रमु । २-१०।४।०
 तब गुरु भूसुर सहित गृहँ । १-३५।१।०
 तब चले बान कराल । ३-११।१
 तब चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ । १-६२।५
 तब जनक पाइ बसिष्ट आयसु । १-३२।१।१५
 तब जनमैउ षटवदन कुमारा । १-१०२।७
 तब जानकी सासु पग लागी । २-६८।३
 तब तकि राम कठिन सर मारा । ३-२६।१४
 तब तब अबधपुरी मैं जाऊँ । ७-७४।३
 तब तब कथा मुनीसन्ह गाई । १-१३१।३
 तब तब जाइ राम पुर रहऊँ । ७-११३।१३
 तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी । २-६०।७
 तब तब प्रमु धरि विविध सरीरा । १-१२०।८
 तब तब राम लखनहिँ निहारी । १-३१०।२
 तब तब बदन पैठिहउँ आई । ५-१।५
 तब ते जीव मयउ संसारी । ७-११६।५
 तब ते मोहि न व्यापी माया । ७-८८।३
 तब दसकंठ विविध विधि । ६-७७।०
 तब देखी मुद्रिका मनोहर । ५-१२।१
 तब देवन्ह दुंदुभी बजाई । १-८८।६
 तब नरनाहँ बसिष्ठु बोलाए । २-८।१
 तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । ६-१७।६
 तब नारद गवने सिव पाहीं । १-१२६।५

तब नारद बोले हरषाई । ३-४१।६
 तब नारद मन हरष अति । ३-४२।०
 तब नारद सबही समुझावा । १-१७।१
 तब नारद हरि पद सिर नाई । १-१२८।७
 तब निज भुज बल राजिवनेना । ४-२१।१२
 तब निषादपति उर अनुमाना । २-८८।४
 तब नृप दूत निकट बैठारे । १-२१०।३
 तब नृप सीय लाइ उर लोन्ही । २-७७।३
 तब प्रमु कपिन्ह दिवाए । ७-१४।७
 तब प्रमु कोपि तीव सर लोन्हा । ६-७०।४
 तब प्रमु गुहहि कहेउ घर जाइ । २-१०३।२
 तब प्रमु मरद्गाज पहिँ जाए । २-१०५।७
 तब प्रमु भूषन बसन मगाए । ७-१६।५
 तब प्रमु सिपिन्ह समेत नहाए । १-२११।३
 तब फिरि जीव विविध विधि । ७-११८।७
 तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा । १-१८६।१
 तब बसिष्ट बहुविधि समुझावा । १-२०७।८
 तब बसिष्ट मुनि समय सम । २-१५६।०
 तब विग्यानरूपिनी बुद्धि । ७-११७।४
 तब बिदेह बोले कर जोरी । १-३३१।७
 तब विवाह मैं चाहउँ कीन्हा । ३-४२।३
 तब बिरवि सन जाइ पुकारे । १-८१।८
 तब बोले विधि गिरा सुहाई । ७-५१।६
 तब बंदीजन जनक बोलाए । १-२४८।७
 तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा । २-१०२।१
 तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता । ७-११६।१६
 तब मधुवन भीतर सब आए । ५-२७।७
 तब मन हरषि बचन कह राऊ । १-२०६।७
 तब मयना हिमवतु अनंदे । १-१८।१

तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ । १-१८१।०
 तब मारीच हृदयँ अनुमाना । ३-२५।३
 तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । ६-६४।७
 तब मुनि अति समीत हरि चरना । १-१३७।२
 तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन । ७-१०।३
 तब मुनि बोले भरत सन । २-२५१।०
 तब मुनि सन कह कृपानिधाना । ३-५।३
 तब मुनि सादर कहा बुझाई । १-२०१।१
 तब मुनि हृदयँ धीर धरि । ३-१०।०
 तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा । १-२०५।६
 तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । ७-११०।१
 तब मैं कहा कृपानिधि । ७-११०।३
 तब मैं निर्गुन मत कर दूरी । ७-११०।१३
 तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । ७-७८।७
 तब मैं हृदयँ बिचारा । ७-४८।०
 तब मोहि कई जसि देव रजाई । २-१०३।६
 तब रघुनाथ कौसिकहिं कहेऊ । २-२७७।५
 तब रघुनाथ निकट यति आए । ३-१।१६
 तब रघुपति अनुसासन पाई । ६-१०१।१
 तब रघुपति उठाइ उर लावा । ४-२।६
 तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । ५-३३।६
 तब रघुपति जानत सब कारन । ३-२६।६
 तब रघुपति बोले मुसुकाई । ४-२०।७
 तब रघुपति रावन के । ६-१७।०
 तब रघुपति सब सखा बोलाए । ७-१५।२
 तब रघुपति सबही सिरु नाई । २-१६५।४
 तब रघुपति सुग्रीव पठावा । ४-६।२६
 तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा । २-१०७।२
 तब रघुबीर अनेक बिधि । ३-१११।०

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । ३-१२।१
 तब रघुबीर पचारे । ६-१५।०
 तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे । ६-१०५।८
 तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । २-१२३।३
 तब रामहिं बिलोकि बैदेहे । १-२५६।४
 तब रावन दस सूल चलावा । ६-११।५
 तब रावन निज रूप देखावा । ३-२७।१३
 तब रावन मयसुता उठाई । ६-७।१
 तब रावनहि हृदय महुँ । ६-११।०
 तब शिषि निज नाथहि जियँ घीन्ही । १-२०८।७
 तब लगी कुसल न जीव कहूँ । ५-४६।०
 तब लगी न तुलसीदास नाथ । २-११।१२
 तब लगी बसति जीव मन माहीं । ५-४६।४
 तब लगी बैठ अहउँ बटाछहीं । १-५१।२
 तब लगी मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । ५-०।२
 तब लगी रहहु दीन हित लागी । ३-७।६
 तब लगी लै आयउ हनुमाना । ६-५४।६
 तब लगी सुखु सपनेहुँ नहीं । २-१०७।०
 तब लगी हृदयँ बसत खल नाना । ५-४६।१
 तब लक्ष्मिन सीतहि लै आए । ३-२०।२
 तब लंकेस क्रोध उर छावा । ६-८।२
 तब सक्रोध निसिबर खिसिआना । ३-२८।२१
 तब सखी मंगल गान करत । १-३२।१३
 तब सत बान सारथी मारेसि । ६-१०।७
 तब सब लोग नहाइ नहाई । २-२७८।६
 तब सिय देखि भूप अभिलाषे । १-२६५।१
 तब सिवें तीसर नयन उधारा । १-८६।६
 तब सीतौ पूजी सुरसरी । ६-१२।८
 तब सुग्रीव चरन गहि नाना । ७-१८।७

तब सुग्रीव बिकल होइ भाग । ४-४१३
 सब सुग्रीवहि आगसु दीन्हा । ४-१०१८
 तब सुग्रीव बोलाए । ४-२२१०
 तब सुमंत्र दुइ भयंदन साजी । १-३००६
 तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए । २-८२११
 तब सेवकन्ह सरस शलु देखा । २-३०९५
 तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । ४-११७४
 सब संकर देखेउ धरि ध्याना । १-५५४
 तब संकर प्रभु षट सिरु नावा । १-५६११
 तब हनुमान राम पहि जाई । ६-१०७१२
 तब हनुमंत उभय दिसि । ४-४१०
 तब हनुमंत कहा सुनु व्राता । १-७४४
 तब हनुमंत कही सब । १-६१०
 तब हनुमंत नगर भहुँ आए । ६-१०६१३
 तब हनुमंत नाइ पद माथा । ४-१११५
 तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । १-१२४
 तब हनुमंत बोलाए दूता । ४-१८१६
 तब हम जाइ सिवहि सिर नाई । १-८२३६
 तब हर यन बोले मुसुकाई । १-१३४१६
 तबहिं राय प्रिय नारि बोलाई । १-१८९११
 तबहिं लखन रघुबर रुख जानी । २-११७१५
 तबहिं सप्तशिखि सिव पहि आए । १-७६१८
 तबहिं होइ सब संसय मंगा । ४-६०४
 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । २-२१९१२
 तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । २-१२४
 तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । १-२४११७
 तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप । १-२५०१०
 तमसा तीर निवासु किय । २-८४१०
 तमसा प्रथम दिवस करि बासू । २-१८७१८

तमेकमद्वगुंत प्रभु । ३-३१५७
 त्यागहिं कर्म सुभासुन दायक । ४-४०७
 तरकि पवनसुत कर गहे । ६-३२१४
 तरनिउ मुनि धरिनी होइ जाई । २-१९१६
 तरपन होम करहिं विधि नाना । २-१२८१७
 तरहिं न बिनु सेई मम स्वामी । ४-१२३१७
 तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । १-८११
 तरुन अरुन अबुज सम बरना । १-१०५१७
 तरुन तमाल बचन तनु सोहा । २-११४१६
 तरुवर दास इन्हहिं गोधि दीन्हा । २-११८१८
 तलफल विप्रम मोह मन मापा । २-१५२१६
 तलफल मीन मलीन जनु । २-११४१७
 त्वदधि मूल ये नराः । ३-३११३
 तव अनुचरीं करतै पन मोस । १-८१५
 तव उर कुमति बसी बिपरीता । १-३१७
 तव कुल कमल बिपिन दुखदाई । १-३५१९
 तव जुबतिन्ह समेत सठ । ६-३०१०
 तव नाम जपामि नमामि हरी । ४-१३११८
 तव प्रताप उर राखि प्रभु । ६-६०१४
 तव प्रताप महिमा भगवाना । २-२५२१६
 तव पद पैकज प्रीति निरंतर । ४-४८४
 तव प्रभावे बड़वानतलि । १-३३१०
 तव प्रभु नारि बिरह बलहीना । ६-२२१२
 तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । १-१६४१८
 तव प्रसाद प्रभु मम उर नार्हीं । ४-११४१६
 तव प्रसाद मम मोह नसाना । ४-१२४
 तव प्रेरित मार्या उपजाए । १-५८१३
 तव बतकही मूढ़ मृगलोचनि । ६-१५१७
 तव बल नाश डोल नित धरनी । ६-१०३१५

तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा । ६-५०३।५९
 तव बिषम माया बस सुरासुर । ७-१२।५
 तव भुज बल महिमा उटघाटी । १-२३।६
 तव मन प्रीति देखि अधिकाई । ७-१२।२
 तव माया बस जीव जड़ । ७-१०।१
 तव माया बस फिरतै मुलाना । ७-१।१
 तव मूर्ति बिधु उर बसति । ६-१२।७
 तव रिपु नारि कटन जल धारा । ६-०।३
 तव सरूप गारुडि रघुनायक । ७-१२।७
 तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । ६-२६।४
 तव सोनित की प्यास । ६-३३।४
 तस उतपातु तात बिधि कीन्हा । २-३०।६
 तस मगु भयउ न राम कहैं । २-२९।१०
 तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही । १-१२०।५
 तसि मति फिरी अहड़ जसि भाबी । २-१६।२
 तहैं असोक उपवन जहैं रहई । ४-२७।१२
 तहैं करि भोग बिसाल । १-१५।१०
 तहैं करि मुनिन्ह केर संतोषा । ६-११।३
 तहैं तब सहिहि सुखेन सिय । २-१६।०
 तहैं तरु किसलय सुमन सुहाए । ६-१०।३
 तहैं तहैं तुम्हहि अहेर खोलाउब । २-१३।५।७
 तहैं न अस्मन नहिं बिप्र सुजारा । १-१०।३।७
 तहैं पुनि कछुक दिवस रघुराया । १-२०।१।७
 तहैं पुनि देखुँ राम सुजाना । ७-८।१।६
 तहैं पुनि सकल देव मुनि आए । ३-४०।३
 तहैं पुनि संभु समुद्रि पन आपन । १-५०।७
 तहैं बसि कंट मूल फल खाई । २-१२।३।४
 तहैं बसि हरिहि भजइ जिमि काग । ७-५६।४
 तहैं बैठे महेश गन दोऊ । १-१३।३।२

तहैं रचि रुचिर परन तून साला । २-१२।५।६
 तहैं रह सचिव सहित सुग्रीवा । ४-०।२
 तहैं सिय रामु समन निसि करहीं । २-१०।२
 तहैं होइहि तव संसय हानी । ७-५१।८
 तहैंतै तुम्हार अलप अपराध । २-२०।७
 तहैंतै सती संकरहि बिबाहीं । १-१७।६
 तहैं जलंधर रावन भयऊ । १-१२।३।२
 तहैं जाइ देखीं बन सोभा । ५-२।६
 तहैं बेट अस कारन राखा । १-१२।२
 तहैं रहे सनकादि भवानी । ७-३।१।७
 तहैं राम रघुबंस मनि । १-२९।२।०
 तहैं होइ मुनि रिषय समाजा । १-४३।७
 ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । ५-२।५।७
 ता कर सुख सोइ जानइ । ७-४।६।०
 ता कहैं यह बिसेष सुखदाई । ७-१२।७।८
 ता कहैं प्रभु कछु अगम नहिं । ५-३।३।०
 ताके कर रावन कहैं । ३-१७।०
 ताके गुन गन कछु कहे । ६-१०।१।६
 ताके जुग पद कमल मनावउँ । १-१७।८
 ताके बचन बान सम लागे । ६-४।८।२
 ताके भय रघुबीर कृपाला । ४-५।१२
 तात अनल कर सहज सुनाऊ । १-८।१।७
 तात अनादि सिद्ध थल एह । २-३०।१।४
 तात अनुज तव नीति बिभूषन । ५-३।१।२
 तात कपिन्ह राव निसिचर मारे । ६-६।१।१०
 तात कहाँ मोहि जानि अनाथा । ५-६।२
 तात करहु जनि सोचु बिरोधी । २-२१।६।८
 तात कहउँ कछु करउँ विटाई । २-४।४।६
 तात किए प्रिय प्रेम प्रनादू । २-७।६।४

तात कुतरक करहु जनि जाएँ । २-२६३।२
 तात कुसल कहु सुखनिधान की । ६-५१।९
 तात कृपा करि कीजिअ सोई । २-९४।९
 तात कैकड़हि दोसु नहिं । २-२०६।०
 तात गलानि करहु जियै जाएँ । २-२०९।२
 तात गहरु होइहि तोहि जाता । ६-५९।५
 तात चढ़हु रथ बलि महतारी । २-९८।७।५
 तात चरन गहि मागई । ५-४०।०
 तात जनकतनया यह सोई । १-२३।०।९
 तात जाउँ बलि कीन्हहु नीका । २-५४।८
 तात जाउँ बलि बेगि नहाहु । २-५२।९
 तात जायै जियै करहु गलानी । २-२६२।५
 तात तात बिनु बात हमारी । २-३०४।५
 तात तात ह्य तात पुकारी । २-१५९।४
 तात तीनि अति प्रबल खल । ३-३८।७
 तातु तुम्हहि मैं जानउँ नीकें । २-२६३।५
 तात तुम्हार बिमल जसु गाई । २-२०६।२
 तात तुम्हारि मातु बैदेही । २-४३।२
 तात तुम्हारि मोरि परिजन की । २-३१४।९
 तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा । २-२३।०।२
 तात प्रनामु तात सन कहेहु । २-१५।०।६
 तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे । २-५३।६
 तात प्रेम बस जनि कदराहु । २-६९।८
 तात बचन पुनि मातु हित । २-१२५।०
 तात बचन मम सुनु अति आदर । ६-८।७
 तात बात फुरि राम कृपाहीं । २-२५५।९
 तात बात मैं सकल सँवारी । २-१५९।९
 तात बिचारु करहु मन माहीं । २-१७९।२
 तात भरत अस काहे न कहहु । २-१८३।५

तात भरत कह तेरहुति राज । २-२९।८
 तात भरत तुम्ह धरम धुरीना । २-३०३।८
 तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू । २-२०४।७
 तात भाँति तेहि राखव राज । २-१५९।६
 तात मातु हा सुनिअ पुकारा । ५-२५।३
 तात मोर अति पुन्य बहूता । ५-३।८
 तात राउ नहिं सोवै जोगू । २-१६।०।२
 तात राम कहुँ नर जनि मानहु । ४-२५।१२
 तात राम जस आयसु देहु । २-२९५।५
 तात राम नहिं नर भूपाला । ५-२८।९
 तात लात रावन मोहि मारा । ६-६३।५
 तात सकसुत कथा सुनाएहु । ५-२६।५
 तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । ६-११९।३
 तात स्वर्ग अपवर्ग सुख । ५-४।०
 तात सुनहु सादर अति प्रीती । ७-१२।०।८
 तात सुनहु सादर मनु लाई । ५-४६।५
 तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । २-५४।८
 तात सुनावहु मोहि निदानू । २-५३।८
 तात हृदयै धीरजु धरहु । २-१६९।०
 ताते उमा न मैं समुझावा । ७-६९।७
 ताते उमा मोच्छ नहिं पायो । ६-११९।६
 ताते करहिं कृपानिधि दूरी । ७-४३।७
 ताते कीन्ह निवारन । ३-४४।०
 ताते नहिं कछु तुम्हहिं दुरावउँ । ७-४३।४
 ताते नास न होइ दास कर । ७-४८।३
 ताते प्रमु पूछउँ सतिभाऊ । १-२१५।४
 ताते मुनि हरि लीन न मयऊ । ३-८।२
 ताते मैं अति अल्प बखाने । ५-११।६
 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । ७-१५।५

ताते यह तन मोहि प्रिय । ७-११४।क
 ताते सुर सीसन्ह चढ़त । ७-३७।०
 ताते अब लागि रहिउँ कुमारी । ३-१६।१०
 ताते कछुक बात अनुसारी । २-१५।८
 ताते गुपुत रहउँ जग माहीं । १-१६।११
 ताते मैं तोहि बरजउँ राजा । १-१६।११
 ताते रामचरितमानस बर । १-३४।१२
 ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । २-२६।३८
 ता पर मैं रघुबीर दोहाई । ४-२।३
 ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला । ६-१०।४
 ता पर हरषि चढ़ी बैदेही । ६-१०।८
 ता सन आइ कीन्ह छलु । ३-१।०
 तानि सरासन श्रवन लागि । ३-११।ख
 तानेउ चाप अवन लागि । ६-११।०
 तापस अंध साप सुधि आई । २-१५।४।ख
 तापस तप फलु पाइ जिमि । २-२३।६।०
 तापस नृप निज सखहि निहारी । १-१७।०।१
 तापस नृपहि बहुत परितोषी । १-१७।०।६
 तापस बेष गात कुस । ६-११।६।ख
 तापस बेष जनक सिय देखी । २-२८।६।१
 तापस बेष जानकी देखी । २-२८।५।२
 तापस बेष बिसेषि उदासी । २-२८।३
 तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । २-२९।१।५
 तापस सम दम दया निधाना । १-४३।२
 तामस तनु कछु साधन नाहीं । ५-६।३
 तामस धर्म करहिं नर । ७-१०।१।ख
 तामस बहुत रजोगुन थोरा । ७-१०।३।५
 तारकु असुर भयउ तोहि काला । १-८।१।५
 तारन तरन हरन सब दूषन । ७-३४।१

तारा बिकल देखि रघुसाया । ४-१०।३
 तारा सहित जाइ हनुमाना । ४-११।४
 ताल समीप मुनिन्ह गृह छाप । ३-३१।५
 तासु अनुज काटे श्रुति नासा । ३-२१।१०
 तासु कनकमय सिखर सुहाए । ७-५।८
 तासु खोज पटइहि प्रमु दूता । ४-२७।८
 तासु गर्ब जोहि देखत मागा । ६-२५।४
 तासु चरन सिरु नाइ करि । ७-१२।५।क
 तासु तनय तजि दुसह दुख । २-२६।२।०
 तासु तरक तियगन मन मानी । २-२२।१।५
 तासु तेज प्रमु बदन समाना । ६-७०।८
 तासु तेज समान प्रमु आनन । ६-१०।२।१
 तासु दसा देखी सखिन्ह । १-२२।८।०
 तासु दूत कि बंध तरु आवा । ५-११।४
 तासु दूत तुम्ह तजि कटराई । ४-२८।४
 तासु दूत मैं जा करि । ५-२१।०
 तासु दूत होइ हम कुल बोरा । ६-२१।२
 तासु नारि निज सखि बोलार्इ । ५-३५।८
 तासु प्रभाउ जान नहिं सोई । १-१४।८।६
 तासु प्रीति प्रमु सन कही । ७-११।ख
 तासु बचन अति सियहि सोहाने । १-२२।८।४
 तासु बचन मेटत मन सोचू । २-२६।३।७
 तासु बचन सुनि ते सब डरीं । ५-१०।८
 तासु बचन सुनि सब हरणार्नीं । १-२२।२।८
 तासु बचन सुनि सागर पाहीं । ५-५।३।३
 तासु बिरोध न कीजिअ नाथा । ६-५।१
 तासु भजन कीजिअ तहैं भर्ता । ६-६।४
 तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा । ६-७।६।२
 तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए । ६-३।७।७

तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना । १-१२३११
 तासु समीप गवन नृप कीन्हा । १-१५७१६
 तासौ तात बयरु नहिं कीजै । ३-२४४
 तासौ बयरु कबहुं नहिं कीजै । ५-२९१९०
 ताहि कबहुं मल कहइ न कोइ । ७-४३३३
 ताहि कि संपति सगुन सुम । ६-७८१०
 ताहि देइ गति राम उदारा । ३-३३१५
 ताहि दिखावइ निसिचर । ६-५९१०
 ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । ७-९१२
 ताहि प्रसंसि बिबिधि विधि । ७-९३१७
 ताहि बयरु तजि नाइअ माया । ५-३८५
 ताहि मजहि मन तजि कुटिलाई । ७-१२९१८
 ताहि मारि मारुतसुत बेरा । ५-२१५
 ताहि मोह माया नर । ७-६२१७
 ताहि राखि कपीस पहिं आए । ५-४२३
 ताहि सदा सुम कुसल निरंतर । ५-२९१२
 तिन्ह कर भय माता मोहि नार्है । ५-१६१९
 तिन्ह कर सकल मनोरथ । ४-३०१७
 तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । ७-३८१२
 तिन्ह कहैं कहिअ नाथ किमि चीन्हैं । १-२९१३
 तिन्ह कहुं मानस अगम अति । १-३८१०
 तिन्ह कहुं सदा उछाहु । १-३६११०
 तिन्ह की ओट न देखिअ बारी । ६-३१८
 तिन्ह के आयुध तिल सम । ३-१९१४
 तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए । १-२२३१६
 तिन्ह के हृदय कमल महुं । ३-१६१०
 तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई । १-३८६५
 तिन्ह कें परस किरैं गिरि भारे । ५-५९१२
 तिन्ह कें मन मंदिर बसहु । २-१२११०

तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक । २-१२७१८
 तिन्ह के गति मोहि संकर देख । २-१६७१८
 तिन्ह के दसा देखि रघुबीरा । ७-३२१५
 तिन्ह चढ़ि चले बिप्रवर बृदा । १-२९९१४
 तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । ७-८५१७
 तिन्ह तें अधिक रम्य अति बंका । १-१७७१८
 तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा । १-४९१७
 तिन्ह पर एक एक बटिप बिसाला । ७-५५१९
 तिन्ह पर कुअरि कुअरि बैटारे । १-३४९१२
 तिन्ह महुं अति दारुन दुखद । ३-४३१०
 तिन्ह महुं जिन्ह देखे दोउ शता । २-१२४३३
 तिन्ह महुं जो परिहरि मद माया । ७-८६१८
 तिन्ह महुं द्विज द्विज महुं श्रुतिधारी । ७-८५१५
 तिन्ह महुं प्रथम रेख जग मोरी । १-१९१४
 तिन्ह महुं प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी । ७-८५१६
 तिन्ह रामु घेरे जाइ । ६-१००११४
 तिन्ह सब छ्यल भए असवारा । १-२९७१७
 तिन्ह सहस्र महुं सब सुख खानी । ७-५३१५
 तिन्ह सिय निराखि निपट दुखु पावा । २-२४५१६
 तिन्हहि अमय करि पूछेसि जाई । ४-२६१९०
 तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन । ६-७७१९
 तिन्हहि जीति रन आनेसु बाँधी । १-१८९१३
 तिन्हहि देइ बर ब्रह्म सिधाए । १-१७७१९
 तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारी । १-३९३१०
 तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारी । १-३२९१६
 तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । ५-१८१७
 तिन्हहि बिलोकि बिलोकति घरनी । २-१९६१३
 तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा । २-१०१७
 तिभुवन तोनि काल जग नार्है । २-११४

तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु । २-४९१९२
 तिमि जनक रामहिं शिष्य समरणी । ५-३२३।२२
 तिमि जनि हरिहिं सुनावहु कबहुँ । ५-९२६।८
 तिमि रघुनाथ निरंतर । ७-९३०।८
 तिमि रघुपति निज दास कर । ७-७४।८
 तिमि रघुपति महिमा अवगाह । ७-९०।६
 तिमि सुख संपति बिनहि बोलाएँ । १-२९३।३
 तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलाई । २-२३९।९
 तिय बिसेषि पुनि बेरि कहि । २-९४।०
 तिलक समाजु साजि सबु आना । २-२६७।८
 तीतिर लावक पदचर जूथा । ३-३७७
 तीनि अवस्था तीनि गुन । ७-९७।७
 तीनि काल विमुअन मत मोरें । २-२६२।६
 तीनि लोक मई जे मटमानी । १-२९९।६
 तीनिउ भाइ राम सम जानी । १-३२७।६
 तीर तीर तुलसिका सुहाई । ७-२८।६
 तीर तीर देवन्ह के मंदिर । ७-२८।४
 तीरथ अमित कोटि सम पावन । ७-९९।२
 तीरथ मुनि आश्रम सुरधाना । २-२२३।२
 तीरथपति पुनि देखु प्रवागा । ६-९९९।७
 तीरथ बर नैमिष दिख्याता । ५-१४२।२
 तीरथाटन साधन समुदाई । ७-१२५।४
 तीस तीर रघुबीर पवारे । ६-९९।१०
 तुन्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई । ७-९५।४
 तुन्ह अपराध जोगु नहिं ताता । २-४२।३
 तुन्ह आनंद करहु मृग जाए । ३-३६।६
 तुन्ह कपीस अंगद नल नीला । ६-९०५।२
 तुन्ह कहैं भरत कलक यह । २-२०८।०
 तुन्ह कहूँ ती न दीन्ह बनबासू । २-७७।८

तुन्ह कहूँ बन सब भीति सुपासू । २-७४।७
 तुन्ह कहूँ सब काल कल्याना । १-२९३।८
 तुन्ह कानन गवनहु दोउ भाई । २-२९५।३
 तुन्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ५-४६।६
 तुन्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ । १-९९।२
 तुन्ह केहि भीति सुना मदनारी । ७-५४।२
 तुन्ह गलानि जियै जनि करहु । २-२०६।०
 तुन्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेबी । ५-२९३।४
 तुन्ह चाहत सुखु मोहबस । २-१७८।०
 तुन्ह जानहु कपि मोर सुमाऊ । ७-३५।७
 तुन्ह जानहु जेहि कारन आयउ । ३-९२।२
 तुन्ह जो कहहु करहु सबु साँचा । २-९२६।८
 तुन्ह जो कहा राम कोउ आना । १-९९३।८
 तुन्ह जो कहा हर जारेउ मास । १-८९।६
 तुन्ह जो कही यह कथा सुहाई । ७-५२।८
 तुन्ह जो हमहि बडि बिनय सुनाई । २-१०२।७
 तुन्ह तजि तात सोहात गृह । २-२९०।०
 तुन्ह तजि दीनदयाल निज । १-९६।०
 तुन्ह ते अधिक पुन्य बड्ढ काकें । १-२९३।६
 तुन्ह ते अधिक गुरहि जियै जानी । २-१२८।८
 तुन्ह ती बालु हाँक जनु लावा । १-२७४।९
 तुन्ह ती देहु सरल सिख सोई । २-१७६।५
 तुन्ह ती भरत मोर मत एहू । २-२०७।८
 तुन्ह निज मोह कही खग साई । ७-६९।५
 तुन्ह पर अस सनेहु रघुबर कें । २-२०७।६
 तुन्ह परिपूरन काम । १-३३६।०
 तुन्ह पावक महुँ करहु निवासा । ३-३३।२
 तुन्ह पितु सरिस मलेहिं मोहि मास । ५-४०।८
 तुन्ह पितु असुर सरिस हिलकारी । २-९६।८

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे । २-२५०।१
 तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । २-२५।१
 तुम्ह पुनि राम राम दिन राती । १-१०४।७
 तुम्ह पूछहु मैं कहत डेरार्जु । २-१६।३
 तुम्ह प्रेरक सब के हृदयें । २-४४।०
 तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । २-१८२।७
 तुम्ह पंडित परमास्थ ग्याता । २-१४२।२
 तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । १-१४१।६
 तुम्ह बिग्यानरूप नहिं मोहा । ७-१२२।४
 तुम्ह बिनु असमजस समन । २-२११।०
 तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं । २-२१०।३
 तुम्ह बिनु भरतहि मूपतिहि । २-५१।०
 तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु । २-६४।०
 तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा । २-२८१।८
 तुम्ह मम सखा भरत सम दाता । ७-११।३
 तुम्ह माया भगवान सिध । १-८।१०
 तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी । २-३१४।८
 तुम्ह रघुबीर चरन अनुशगी । १-१११।८
 तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । ६-७४।८
 तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । २-१४।८
 तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका । १-१६।८
 तुम्ह सब कहहु कड़ावन टीका । २-१८०।३
 तुम्ह सब भाँति परम हितकारी । १-७६।४
 तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा । १-१६०।४
 तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी । ३-१६।८
 तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी । ६-१०१।५
 तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दोन्हे । २-४२।६
 तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिमाऊ । २-२१०।३
 तुम्ह सर्वग्य तम्य तम पारा । ७-३।१

तुम्ह सर्वग्य सिरामनि स्वामी । २-२२६।८
 तुम्ह सहित गिरि तें गिरी पावक । १-१५।११
 तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । ५-४७।८
 तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा । २-४१।६
 तुम्ह सुधीव कूलदुम टोऊ । ६-२२।३
 तुम्ह सुवि सुमति परम प्रिय मोरें । १-१६।१३
 तुम्ह हटकहु जौं चहहु उवारा । १-२७३।४
 तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा । २-१२४।७
 तुम्ह त्रिभुवन गुर बेट बखाना । १-१०।५
 तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । २-१२६।४
 तुम्हरी कृपाँ कृपायतन । ७-५२।८
 तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा । १-३२१।६
 तुम्हरी कृपाँ सुलभ सोउ मोरे । १-१३।११
 तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया । १-१६८।४
 तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । ६-२२।१
 तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं । १-१२८।०
 तुम्हरेई मजन प्रभाव अघारी । ३-१२।५
 तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं । २-७४।३
 तुम्हरे अनुग्रह तात कानन । २-१५०।१
 तुम्हरे चलत यलिहि सब लौगू । २-१८७।६
 तुम्हरे जान कामु अब जारा । १-८१।२
 तुम्हरे बल मैं रावनु मार्यो । ६-११७।४
 तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंत । ७-१०।५
 तुम्हहि छाडि गति दूसरि नाहीं । २-२२१।५
 तुम्हहि देत अति सुगम गोसाईं । १-१४८।४
 तुम्हहि न व्यापत काल । ७-१४।८
 तुम्हहि न सोधु सोहाग बल । २-१७।०
 तुम्हहि न संसय मोह न माया । ७-६१।३
 तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं । २-१२८।२

तुम्हहि नीक लागे रघुराई । ३-१०३५
 तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा । ७-१७१५
 तुम्हहि बिदित सबही कर करमू । २-३०७३
 तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । ६-५६
 तुम्हहु दियो निज धाम राम । ६-१०३१७
 तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । ६-११६
 तुरग नचाबहि कुअर बर । १-३०२१०
 तुरग लाख रथ सहस पवीसा । १-३३२६
 तुरत आन रथ चढ़ि शिखिआना । ६-११३
 तुरत कीन्ह नृप सर संधाना । १-१५६२
 तुरत गयउ गिरिबर कंदरा । ६-७४१२
 तुरत चले कोपि सुनि प्रमु बचना । ६-१०५५
 तुरत नाइ लछिमन पद माथा । ५-५२११
 तुरत निसावर एक पठावा । ६-१८११
 तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । ६-१२०३
 तुरत बिभीषन पाछे मेल्य । ६-१३१२
 तुरत बिमान तहाँ चलि आवा । ६-१११११
 तुरत बैद तब कीन्ह उपाई । ६-६१२
 तुरत भयऊँ मैं काग तब । ७-११२१६
 तुरत भवन आए गिरिराई । १-१०२११
 तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू । १-२३१८
 तुरत सुनीछन गुर पहिं गयऊ । ३-११६
 तुरत सो मैं प्रमु सन कही । ५-३११०
 तुरतहिं रुचिर रत्न तेहिं पावा । ३-६७
 तुरतहिं सकल गए जहाँ सीता । ६-१०७५
 तुलसिदास ऐसे प्रमुहि । ७-७४१४
 तुलसिदास सठ तेहि भजू । १-२११३०
 तुलसी उठे अवलोकि कारनु । २-२३५११
 तुलसी करेहु सोइ जतनु जोहिं । २-१५०१२

तुलसी कहैं न राम से । १-२११६
 तुलसी कृपा रघुवंसमनि की । २-२५०१२
 तुलसी जसि भवतब्यता । १-१५११४
 तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए । २-२३६७
 तुलसी दरसन लोमु । १-४८१०
 तुलसी देखि सुबेषु । १-१६११०
 तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु । २-२००११
 तुलसी न समरथु कोउ जो । २-२७५१२
 तुलसी नृपति भवितब्यता । २-२४११२
 तुलसी प्रमुहि सिख देइ आयसु । ६-७४१११
 तुलसी प्रीति कि रीति सुनि । २-३०६१०
 तुलसी बिकल सब लोग सुनि । २-३००१२
 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि । १-२३५१२
 तुलसी भीतर बाहेरहुँ । १-२११०
 तुलसी रघुवर नाम ये । १-२०१०
 तुलसी सराहत सकल सादर । २-१७५१२
 तुलसी सुमग सनेह बन । १-३११०
 तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज । १-३३५१२
 तुषाराद्रि संकाश गौर गमीर । ७-१०७१५
 तुई सराहसि करसि सनेहु । २-३१७
 तुल सुरीय सैवारि पुनि । ७-११७११
 तुल न ताहि सकल मिलि । ५-४१०
 तून ते कुलिस कुलिस तून करई । ६-३४८
 तून धरि जोट कहति बैदेही । ५-८६
 तूषा जाइ बरु मृगजल पाना । ७-१२११७
 तृपित निरखि रबि कर भव बारी । १-४२८
 तृपित बारि बिनु जो तनु त्यागा । १-२६०१२
 तूस्ना उदरबृद्धि अति भासी । ७-१२०३६
 तूस्ना केहि न कीन्ह बौराहा । ७-६१८

ते अब फिरल बिपिन पदचारी । २-२००३	ते फल मच्छक कठिन कराता । ३-१२८
ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव । ७-१२१२	ते बन सहहि बिपति सब भाँती । २-१११४
ते कि नदा सब दिन मिलहि । २-६२०	ते भरतहि गँटव सनमाने । १-२८८
ते किमि जानहि रघुपतिहि । ७-७३१७	ते भाजन सुख सुखस के । २-१७४०
ते जइ कामधेनु गूहँ त्यागी । ७-११४१२	ते मतिमंद जे राम तजि । ६-३१०
ते जइ जीव निजात्मक घाती । ७-५२६	ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं । ७-१११७
ते तव सिर कंदुक सम नाना । ६-२६१५	ते श्रौता बकता समसीता । १-२१६
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ । २-५५८	ते सज्जन मम प्रानप्रिय । ७-३८१०
ते तुम्ह राम अकाम पिआरे । ३-५६	ते सट महासिंधु बिनु तरनी । ७-११४४
ते तुम्ह सकल लोकपति साई । ३-१२१९	ते सट हठ बरा संसय करहीं । ७-७३१९
ते दसरथ कौसल्या रत्ना । १-१८६४	ते सनमुख नहिं कराई लराई । १-१८०६
ते धन्य तुलसीदास आस । ३-४५१२	ते सब भए परम पद जोगू । २-२१६३
ते नर करहिं कल्प मरि । ६-२१०	ते सिय रामु ताधरिं सोए । २-१०३
ते नर पाँवर पापमय । ५-४३१०	ते सिर कटु तुंबरि समतुला । १-११२४
ते नर पाँवर पापमय । ७-३११०	ते सोवत कुस डासि महि । २-२००१०
ते नर प्रान समान मम । ५-४८१०	ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दहन्ति । ७-१३०१८
ते नर यह सर राजाहिं न काऊ । १-३८१७	तेइ अमेदवादी म्यानी नर । ७-१११२
ते नहिं गनाहिं खगोल । ७-८८१४	तेइ एहि पावन सुभग सर । १-३६१०
ते नहिं सुर कहावहिं । ६-२९१०	तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर । ७-१८१८
ते निज निज मरजाद तजि । १-८४१०	तेइ तृन हरित चरै जब गाई । ७-११६१११
ते पद आजु बिलोकिहउँ । ५-४२१०	तेइ दौड बंधु प्रेम जनु जीते । १-२२५५
ते पद परखारत भाग्यभाजनु । १-३२३११६	तेइ रघुनंदनु लखनु सिय । २-२६३१०
ते प्रमु समाचार सब कहहीं । २-२२३१६	तेई कछु कान न कीन्ह । २-५०१०
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि । ७-१२११०	तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । २-१२६१२
ते पासक मोहि होहैं बिधाता । २-१६६१८	तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं । २-४११४
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । २-८८१२	तेउ बिलोकि रघुबर भरत । २-३१७१०
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । २-११०१७	तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं । ७-८१९
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए । २-१२१५	तेउ सुनि सरन सामुहैं आए । २-२१८१३
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । २-११११८	तेऊ आजु राम पदु पाई । २-२३७३३

तेज कृसानु रोष महिषेसा । १-३४
 तेज न सहि सक सो फिरि आवा । ४-२७।३
 तेज पुज स्य दिव्य अनुपा । ६-८८।३
 तेन्ह कर मरन एक बिधि होई । १-१८०।७
 तेल नावै भरि नृप तनु राखा । २-१५६।५
 तेल बोरि पट बाँधि पुनि । ५-२४।०
 तेहि अवसर आए दोउ भाई । १-२१४।४
 तेहि अवसर आए लखन । २-१०।०
 तेहि अवसर एक तामसु आवा । २-१०९।७
 तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहार । १-३२२।८
 तेहि अवसर कर हरष बिषाद । २-२४४।६
 तेहि अवसर कुबरी तहँ आई । २-१६२।२
 तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि । २-२४१।८
 तेहि अवसर खग मृग जल मीना । २-३२०।६
 तेहि अवसर जौ जेहि बिधि आवा । १-१९५।७
 तेहि अवसर टसरथ तहँ आए । ६-१११।१
 तेहि अवसर नारद सहित । ५-१७।०
 तेहि अवसर फल फूल दल । २-२७८।०
 तेहि अवसर बन अधिक उछाह । २-२७८।४
 तेहि अवसर भाइन्ह सहित । १-३३४।०
 तेहि अवसर भंजन महिभारा । ५-४७।७
 तेहि अवसर रघुबर रुख पाई । २-११२।१
 तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । ५-८।२
 तेहि अवसर सीता तहँ आई । १-२२७।२
 तेहि आश्रमहि मदन जब गयऊ । ५-१२५।१
 तेहि कह गति मोहि देउ बिधि । २-१६७।०
 तेहि कर भेट सुनहु तुम्ह सोऊ । ३-१४।४
 तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहह । ६-३६।५
 तेहि कारन आवत हियँ हारे । १-३७।५

तेहि कारन करुनानिधि । ६-१०८।०
 तेहि कारन खल अब लागि बाँच्यो । ६-१३।७
 तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई । १-६४।६
 तेहि कि मोह ममता निअराई । २-२७६।२
 तेहि की क्रिया जयोचित । ३-३२।०
 तेहि के रधि पछि बंध बनाए । १-२८७।३
 तेहि के सत सुत अरु दस भाई । १-१६९।५
 तेहि के बचन मानि बिस्वासा । १-७८।५
 तेहि कें भए जुगल सुत बीरा । १-१५२।४
 तेहि कौतुक कर मरमु न काहँ । ४-७८।५
 तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला । १-१०५।२
 तेहि वह उदावन मूढ रावन । ६-८२।२
 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा । १-२६०।८
 तेहि ते मै कछु कहा बखानी । १-३६०।८
 तेहि तें कछु गुन दोष बखाने । ५-५।२
 तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी । २-२५७।७
 तेहि तें कहहि संत श्रुति टेरे । १-१६०।३
 तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू । २-१०४।१
 तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना । १-१५९।५
 तेहि न भजसि मन मंद । ४-०।४
 तेहि निसि आश्रम पिंजरी । २-२१५।०
 तेहि निसि नीद परी नहिँ काह । २-३६।८
 तेहि पर क्रोध न करिअ प्रमु । ४-१०८।५
 तेहि पर सम सपथ करि आई । २-२७।७
 तेहि परिहरि गुन आए । ६-३८।४
 तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें । २-२२०।६
 तेहि पाछें समीप चहुँ पासा । १-२२३।४
 तेहि पिआइअ बारुनी । १-१८०।०
 तेहि पुर के सोभा कहत । १-२८।१०

तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । २-२०९।५
 तेहि बधव हम निज पानि । ३-११।५
 तेहि बन निकट दसानन गयऊ । ३-२६।१
 तेहि बहुबिधि त्रासइ देस निकासइ । १-१८२।१२
 तेहि बासर बसि प्रातहीं । २-२२४।०
 तेहि बिलोकि माया सकुचाई । ७-११५।७
 तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । २-१९३।४
 तेहि महीं पितु आयसु बहुरि । २-४१।०
 तेहि साति पुनि पुनि करहि प्रभु । २-२००।१०
 तेहि रावन कई लघु कहसि । ६-२५।०
 तेहि सन जागबलिक पुनि पावा । १-२१।५
 तेहि सन नाथ मयत्री कीजे । ४-३।३
 तेहि समय सुनिअ असीस जहैं तहैं । १-३२६।२३
 तेहि सराहि बानी फुरि पूजी । २-२२१।६
 तेहि सेबउँ में कपट समेता । ७-१०४।५
 तेहि हेतु में बृषकेतु सुत कर । १-१०२।१०
 तेहि अपने मन अस अनुमाना । ६-४८।४
 तेहि अवसर मुनि नारद । ७-५०।०
 तेहि अवसर सुनि सिव धनु भंगा । १-२६४।२
 तेहि अंगद कहैं तात उठाई । ६-१७।५
 तेहि करि बिमल बिबेक बिलोचन । १-१।२
 तेहि कलिकाल बरष बहु । ७-१०४।४
 तेहि कलिजुग कोसलपुर जाई । ७-१६।१
 तेहि केहि हेतु काग सन जाई । ७-५४।४
 तेहि खल जहैं तहैं पत्र पठार । १-१७४।४
 तेहि खल पाछिल बयरु सैभारा । १-१६९।७
 तेहि गलागि रघुपति पहि आयउँ । ६-६३।६
 तेहि गिरि रुचिर बसइ खग सोई । ७-५६।१
 तेहि लघु कीन्ह संभु पति लागी । १-८२।३

तेहि तब कहा करहु जल पाना । ४-२४।२
 तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ । ५-११।२
 तेहि देखे कपि सकल पराने । ६-८१।८
 तेहि टोउ बंधु बिलोके जाई । १-२२७।८
 तेहि न चलहि नर मोह बस । ७-१००।४
 तेहि नाही कछु काज बिगारा । १-२७८।४
 तेहि पद गहि बहु बिधि समुझावा । ६-११।१
 तेहि पुनि कहा सुनहु दससीसा । ३-२४।३
 तेहि पुर बसइ सीलनिधि राजा । १-१२९।२
 तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा । २-३२३।७
 तेहि पूछ सब कहैसि बुझाई । ३-१७।३
 तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा । १-१२।९
 तेहि मध्य कोसलराज सुंदर । ६-१००।१७
 तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला । १-१७१।८
 तेहि मम पद सादर सिरु नावा । ७-६०।१
 तेहि मागेउ भगवंत पद । १-१७७।०
 तेहि स्थ रुचिर बसिष्ठ कहैं । १-३०१।०
 तेहि सब आपनि कथा सुनाई । ४-२४।४
 तेहि सब लोक लोकपति जोते । १-८१।६
 तेहि समाज गिरिजा में रहेऊँ । १-१८४।४
 तेहि निसि सीता पहि जाई । ६-१८।१
 तेहि मरतहि सेन समेता । २-२२९।७
 तेहि सुकवि कबित बुध कहहीं । १-१०।३
 तेहि निसिचर पति गर्ब बहूला । ६-२९।७
 तेहि मुद्गर परसु प्रचंडा । ६-३१।८
 तेहि कलंकु मोर पछिताऊ । २-३५।५
 तेहि कोस गृह मोर सब । ६-११६।४
 तेहि धनुषु ब्याहु अवगाहा । १-२४४।६
 तेहि धनुषु चाड़ नहि सरई । १-२६५।४

तोरीं छत्रक टंड जिमि । १-२५३।१
 तोष मरुत तब छर्ना जुड़ावे । ४-११६।१४
 तोहि जिअत टसबंधर । ३-२१।०
 तोहि देखि सैतलि भइ छाती । ५-२६।८
 तोहि निज भगत राम कर जानी । ४-११२।१२
 तोहि पटकि महि सेन हति । ६-३०।०
 तोहि प्रानप्रिय राम । ३-५।४
 तोहि सम हित न मोर संसारा । २-२२।२
 तो अस को जग सुमटु जेहि । १-२८।३।०
 तो कपि होउ बिगत श्रम सूता । ६-५८।४
 तो कृसानु सब के गति जाना । ६-१०८।८
 तो कौतुकिअन्ह आलसु नाही । १-८०।४
 तो जानकिहि मिलिहि बरु एहू । १-२२।१६
 तो तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी । २-८।१२
 तो परिनाम न मोरि भलाई । २-१८।१४
 तो प्रमु विषम बियोग दुख । २-६।१०
 तो प्रमु हरहु मोर अम्याना । १-१०४।२
 तो फुर होउ जो कहेउँ सब । १-१५।०
 तो बसीठ पठवत केहि काजा । ६-२४।४
 तो भगवानु सकल उर बासी । १-२१।८।५
 तो भल जतनु करब सुबिचारी । २-२८।३।३
 तो मैं जाइ बैरु हति करऊँ । ३-२२।४
 तो मैं जाउँ कृपायतन । १-६१।०
 तो मैं बिनय करउँ कर जोरी । १-५८।४
 तो सबटरसी सुनिअ प्रमु । १-५१।०
 तो सिवधनु मृनाल की नाई । १-२५।४।८
 तो हमार मन सुनहु मुनीसा । १-८।१।५

थ

थकित बचन तोचन सजल । २-१५२।०

थके नयन रघुपति छबि देखें । १-२३।१।५
 थके नारि नर प्रेम पिआसे । २-११।३।३
 थर थर कौपहि पुर नर नासी । १-२४।१।५
 थाती राखि न मागिहु काऊ । २-२४।२
 थोरिहिं बात पितहि दुख भारी । २-४।१।६
 थोरेहि महीं सब कहउँ बुझाई । ३-१४।१

द

दच्छ जय्य तब भा अपमाना । ४-५।५।३
 दच्छ न कछु पूछी कुसलाता । १-६२।३
 दच्छ लिए मुनि बोली सब । १-६०।०
 दच्छ सकल निज सुता बोलाई । १-६।१।२
 दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । ४-४।८।८
 दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई । १-४।८।१५
 दच्छिन टिसि अवलोकि प्रमु । ६-१२।४
 दधि चिउसा उपहार अपारा । १-३०।४।६
 दधि दुर्बा रोचन फल फूला । ४-२।५
 दधिमुख केहरि निसट सट । १-५।४।०
 दनुजवनकृशानु..... । ५-२।०।३।२
 दम दान दया नहिं जानपनी । ४-१०।१।१
 दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ । १-२६।०।६
 द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना । २-२१।१।४
 दरस परस मज्जन अरु पाना । १-३।४।१
 दरस लागि प्रमु राखेउँ प्राना । ३-३०।४
 दरस लालसा सकुच न थोरी । १-३२।४।५
 दरसन तृपित न आजु लागि । २-२६।०।०
 दरसनु देब जानि निज दासी । २-११।३।३
 दल फल मूल बंद बिधि नाना । २-२४।८।८
 दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरु । २-२६।४
 दलन मोह तम सो सप्रकासू । १-०।६

दलि दुख सजइ सकल कल्याण । २-२५४७
 द्वन्द्वजुद्ध देखहु सकल । ६-८११०
 द्वन्द्व बिपति भव फट दिग्मंजय । ७-३३१८
 दसकंधर मारीच बतकही । ७-६५१५
 दसकंधरादि प्रचंड निसिचर । ७-१३३२
 दस दस बान भाल दस मारे । ६-९११८
 दस दस बिसिख उर माझ मारे । ३-१११२५
 दस दस सर सब मारेसि । ६-५०१०
 दस दिसि दाह होन अति लाग । ६-१०११९
 दस दिसि रहे बान नम छाई । ६-७२१३
 दसन गहहु तुन कंठ कुठारी । ६-१११७
 दसनन्हि काटि नासिका काना । ६-४४८
 दस बदन सोनिव स्त्रबत पुनि । ६-९३११०
 दसमुख कतहु खबरि असि पाई । १-१७८१३
 दसमुख कहा मरमु तेहि सुना । ६-५५१३
 दसमुख गयउ जहीं मारीचा । ३-२३१६
 दसमुख देखि सगा गय पाई । ६-९३१३
 दसमुख देखि सिरन्ह के बाढ़ी । ६-१२१९
 दसमुख बैठ सभी एक बारा । १-१८०१२
 दसमुख मैं न बसीठी आयउँ । ६-२११२
 दसमुख सकल कथा तेहि आगैं । ३-२४१९
 दसमुख सगा दीखि कपि जाई । ५-१११६
 दसस्थ कौसल्या सुनु ताता । ७-८०७
 दसस्थ गुन मन बरनि न जाहीं । २-२०८८
 दसस्थ तनय राम लघु नाई । २-१८०१२
 दसस्थ पुत्रजन्म सुनि काना । १-११२१३
 दसस्थ बिर बोलि सब लीन्है । १-३३८१६
 दसस्थ राउ सहित सब रानी । १-१५१६
 दसस्थ सहित समाज बिराजे । १-३१८१५

दस सिर ताहि बीस मुजदडा । १-१७५१२
 दससीस बाहु प्रचंड खंडन । ३-३११४
 दससीस बिनासन बीस मुजा । ७-१३१३
 दहन राम गुन ग्राम जिमि । १-३२१७
 दहै दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन । ६-९५१५
 दहै दिसि लैगुर बिराज । ६-१००११६
 दाइज अमित न सकिअ कहि । १-३३३१०
 दाइज दियो बहु भाति पुनि । १-१००१९
 दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई । ४-१४१९
 दान परसु बुधि सवित प्रचंडा । ६-७९१८
 दानव देव ऊँच अरु नीचू । १-५१६
 दानि कहाउव अरु कूपनाई । २-३४१६
 दानि सिरोमनि कूपानिधि । १-१४११०
 दामिनि दमक रह न घन माहीं । ४-१३१२
 दामिनि बरन लखन सुटि नीके । २-१११४७
 दारु बिचारु कि करइ कोउ । १-१०१७
 दारुन अविद्या पंच जनित । ७-१२११६
 दारुन दुसह दाहु उर व्याप । २-५६७
 दासिन्ह दीख सचिव बिकरनाई । २-१४७१३
 दासी दास तुरग स्थ नाग । १-१००७
 दासी दास दिए बहुतेरे । १-३३८१२
 दासी दास बोलाइ बहोरी । २-७९१५
 दासी दास भाखु सब लीन्है । २-२१३१६
 दाहिन काग सुखेत सुहावा । १-३०२१३
 दाहिन दइउ होइ जब सबही । २-२७१५
 द्वादस अच्छर मंत्र पुनि । १-१४३१०
 द्वापर कछुक बृंद बहु । ७-४०१०
 द्वापर करि रघुपति पद पूजा । ७-१०२१३
 द्वार भीर सेवक सचिव । २-३७१०

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । १-१२१४
 दिए दान आनंद समेता । १-२१४८
 दिए दान बिग्रन्ह विपुल । १-३४५०
 दिए दिव्य आसन सबहि । १-३२००
 दिए भरत लहि भूमिसुर । २-१०००
 दिए मुख्य गन संग तब । १-६२१०
 दिगपालन्ह के लोक सुहाए । १-१८१७
 दिगपालन्ह में नीर भरावा । ६-२७१५
 दिन उठि बिदा अवधपति मागा । १-३३१२
 दिन अंत पुर रूख स्त्रवत थन । ७-५१११
 दिन कें अंत फिरीं दीउ अनी । ६-७१११
 दिन दस करि रघुपति पट सेबा । ७-१८१८
 दिन दस गएँ बालि पहिं जाई । ६-२०१८
 दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ । १-३५१४
 दिन प्रति देइ बिबिध बिधि दाना । १-१५४६
 दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । २-११६
 दिन प्रति सकल अजोघ्या आवहिं । ७-२६१२
 दिनेश वंश मंडन । ३-३७
 दिव्य बसन बर भूषन । ७-११४
 दिव्य बसन भूषन पहिराए । ३-४३
 दिवस जात नहिं लागिहि बारा । २-६१२
 दिसि जरु बिदिसि फंथ नहिं सुझा । ३-११११
 दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला । १-२५११
 द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ । ७-१२७५
 द्विज निर्दक बहु नरक भोग करि । ७-१२०१२४
 द्विजभोजन मख होम सराधा । १-१८०१८
 द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । ७-१७१२
 द्विबिट मयद नील नल । १-५४१०
 दीख जाइ उपवन बर । ४-२४१०

दीख निषादनाथ मल टोळ । २-१११३
 दीख मथरा नगर बनावा । २-१२११
 दीन जानि कापि किए सनाथा । ६-११७१८
 दीन बचन कह बहुबिधि रानी । २-२०३
 दीन बचन गुह कह कर जोरी । २-१०३३
 दीन बचन सुनि प्रभु मन नावा । ५-४५२
 दीन मलीन हीन मति जाती । ६-११५४
 दीन दयाल बिरिदु संमारी । ५-२६४
 दीन बंधु दयाल रघुराया । ६-१०१३
 दीगबन्धु रघुपति कर किंकर । ७-११९
 दीनबन्धु सुनि बंधु के । २-३१४०
 दीनबन्धु सुंदर सुखद । २-६६१०
 दीन्ह जावकन्हि जो जेहि भावा । १-३२५४
 दीन्हि असीस ब्रि बहु माँती । १-३५११
 दीन्हि असीस मुनीस उर । २-१०६१०
 दीन्हि असीस लाइ उर लीन्है । २-५१२
 दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । २-५७११
 दीन्हि असीस हरषि मन गंगा । ६-१२०१६
 दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । २-६३६
 दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाई । २-७१११
 दीप दीप के भूपति नाना । १-२५०१७
 दीप मनोहर मनिमय नाना । १-२८८१३
 दीप सिखा सम जुबति तन । ३-४६१७
 दुइ कि होइ एक समव मुआला । २-३४१५
 दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे । १-११८१८
 दुइ दुइ सुत सब भासन्ह केरे । ७-२४१८
 दुइ टंड मरि ब्रह्मांड नीतर । १-८४११२
 दुइ बरदान भूप सन थाती । २-२११५
 दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहूँ । १-८३११२

दुइ सुत मरे दहेउ पुर । ६-३७७
 दुइ सुत सुंदर सीलीं जाए । ७-२४६
 दुख वाह दारिद दंभ दूषन । २-३२५।११
 दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । १-५।५
 दुखु सुखु जो लिखा लिखार हमरें । १-९६।१०
 दुघरी साधि चले ततकाला । २-२७।५
 दुधित कतहुँ परितोषु न लहहीं । २-३०।७
 दुधि मनोगति प्रजा दुखारी । २-३०।६
 दुर्वाचना कुमुद समुदाई । ३-४३।४
 दुरबासा मोहि दीन्ही साय । ३-३२।७
 दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । ६-६९।११
 दुराराध्य पै अहहिं महेसू । १-६९।४
 दुलहिनि लै गे लखिनिवासा । १-९३।४
 दुष्ट उदर्यौ जग आरति हेतू । ७-१२।२०
 दुसरें सूत बिकल तेहि जाना । ६-४२।८
 दुहु दिसि जय जयकार करि । ६-७९।१०
 दुहु समाज आसि रुचि मन माहीं । २-२७।१२
 दुहुँ कर कमल सुधारत बाना । ६-१०।६
 दुहुँ दिसि पबंत करहिं प्रहारा । ६-८६।७
 दुंदुभि अस्थि ताल देखराए । ४-६।१२
 दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा । १-३४।५
 दुंदुभी जय धुनि वेद धुनि । १-३२।२२
 दूत अवधपुर पठवहु जाई । १-२८।१५
 दूत बदन रचना प्रिय लागी । १-२९।६
 दूतन्ह जाई भरत कह करनी । २-२७।११
 दूतन्ह कहा राम सन जाई । ३-१८।८
 दूतन्ह जाइ तुरत सब कहैऊ । ३-१८।१४
 दूतन्ह मुनिबर ब्रह्मी बाता । २-२६।६
 दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । ५-३५।४

दूरि ते ताहि सबन्हि सिरु नावा । ४-२४।१
 दूरि फराक रुचिर सो घाटा । ७-२८।१
 दूरिहि ते देखे ह्यो आता । ५-४४।२
 दूरिहि ते प्रनाम कधि कीन्हा । ६-१०६।५
 दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि । १-३२।२४
 दूलहु रामु रूप गुन सागर । १-२८।५
 दूषन भे भूषन सरिस । २-२९।८
 दूषन रहित सकल गुन रासी । १-७२।३
 दे भक्ति रमानिवास त्रास । ६-११।१७
 देइ पान पूजे जनक । १-३२।१०
 देउ देवतरु सरिस सुगाऊ । २-२६।८
 देखउ जन्म महोत्सव जाई । ७-८।४
 देखत अति बिपरीत । १-९।१०
 देखत गिरि बन बिहग मृग । २-११।१०
 देखत जय निसाधर धावहिं । १-२०।४
 देखत तुम्हाहि नगर जेहिं जारा । ६-५।४
 देखत पुरी अखिल अघ भागा । ७-२८।८
 देखत फिरइ महीप सब । १-१३।१०
 देखत बन सर सैल सुहाए । २-१२।५
 देखत बालक काल समाना । ३-२।६
 देखत भरतु बिकल नए भारी । २-१६।२
 देखत भीमरूप सब पापी । १-१८।३
 देखत भृगुपति बेधु कराता । १-२६।११
 देखत रघुनायक जन सुख दायक । १-२१।२
 देखत रूपु सकल सुर मोहे । १-१९।६
 देखत स्यामल धवल हलारे । २-२०।५
 देखत हनुमान अति हरषेउ । ७-१।१
 देखन कहूँ प्रभु करुना कंदा । ६-३।४
 देखन नगरु भूपसुत आए । १-२९।११

देखन बागु कुअर दुइ आए । १-२२८।१
 देखन भालु कीस सब आए । ६-१०७।१०
 देखन मिस मृग बिहग तरु । १-२३४।१०
 देखन हेतु राम वैदेही । १-३४४।१४
 देखरावा माताहि निज । १-२०१।१०
 देखहि कौनुक नम सुर बृदा । ६-१२।८
 देखहि चराचर नास्मिय । १-८४।१०
 देखहि परसपर राम करि । ३-११।२१
 देखहि राति भयानक सपना । २-१५६।६
 देखहि रूप महा रनधीरा । १-२४०।५
 देखहि सुर नम चढे बिमाना । १-२४५।८
 देखहि हम सो रूप भरि लोचन । १-१४५।६
 देखहु कस न जाइ सब सोभा । २-१३।४
 देखहु खोजि मुअन दस चारी । २-१११।४
 देखहु तात बसंत सुहावा । ३-३६।१०
 देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । १-२।१।८
 देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई । ६-३१।२
 देखहु मुनि अबिबेकु हमारा । १-७७।७
 देखहु रामहि नयन भरि । १-२६६।१०
 देखहु कपि जननी की नाई । ६-१०७।१२
 देख्जा जीव नचावइ जाही । १-२०१।४
 देख्जा सिद्धि बिचारि सब लायक । १-५१।६
 देख्जा भरत बिराल अति । ६-५८।१०
 देख्जा श्रमित बिभीषनु भारी । ६-१४।१
 देख्जा स्ववस कर्म मन बानी । १-१६।१६
 देख्जा सैल न औषध चीन्हा । ६-५७।७
 देखि अजय रिपु डरपे कीसा । ६-७५।१३
 देखि अनूप एक अँवराई । १-२१३।५
 देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । ४-६।१३

देखि इंदु चकोर समुदाई । ४-१६।७
 देखि उमहि तप खीन सरीरा । १-७३।८
 देखि करहि सब दंड प्रनामा । २-२२४।७
 देखि कुअर बर बधुन्ह समेता । १-२२१।३
 देखि कुठार बान धनु घासी । १-२८।१।१
 देखि कुठारु सरासन बाना । १-२७२।४
 देखि कृपा करि सकल सराहे । ७-४१।४
 देखि कृपानिधि मुनि चतुराई । ३-११।४
 देखि कृपाल बिकल मोहि । ७-८२।३
 देखि कौस मंदिर संपदा । ६-११५।६
 देखि गयउ भ्राता सहित । ३-३७।४
 देखि गोसाईंहि पूँछिउँ माता । २-४४।८
 देखि चरन सिरु नायउँ । ७-१०१।४
 देखि चरित अति नर अनुसारी । ७-६८।१
 देखि चरित महिमा सुनत । १-१०८।१०
 देखि चरित यह सो प्रमुताई । ७-८२।१
 देखि चले सन्मुख कपि मझा । ६-८६।२
 देखि जनकपुरु सुर अनुरागे । १-३१३।४
 देखि तात तव सहज सुधाई । १-१६३।३
 देखि दखिन दिसि ह्य हिहिनाहो । २-१४।१।८
 देखि दयाल दसा सबही की । २-३०३।४
 देखि दसा रघुपति जियँ जाना । २-६७।२
 देखि दसा सुर बरिसहिं फूला । २-२१५।८
 देखि दुखारी दीन दुहु । २-३०।१०
 देखि दूरि तें कहि निज नामू । २-११२।५
 देखि देखि आचरन तुम्हारा । ७-४७।४
 देखि देखि तरुबर अनुरागे । २-२७८।७
 देखि देखि रघुबीर तन । १-२५७।१०
 देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । २-११।२

देखि दोष कबहुँ न उर आने । २-२९८।४
 देखि न जाहि बिकल महतारी । २-२६१।२
 देखि नगरबासिन्ह कै सीती । ७-७।४
 देखि निबिड तम दसहुँ दिसि । ६-४६।०
 देखि निषाद बिषादबस । २-९९।०
 देखि प्रताप न कपि मन संका । ५-९९।८
 देखि प्रताप मूढ खिसिआना । ६-५०।७
 देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू । २-२९६।७
 देखि परम पावन तब आश्रम । ७-६३।२
 देखि परम बिरहकुल सीता । ५-५३।८
 देखि परम बिरहकुल सीता । ५-५५।२
 देखि पवनसुत कटक बिहाता । ६-५०।९
 देखि पवनसुत घायल । ६-८३।०
 देखि पवनसुत पति जनुकूला । ४-३।९
 देखि पाय मुनिसाय तुम्हारे । २-९२।५
 देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । ५-९४।९
 देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई । २-९९।३
 देखि प्रेमु बोले मुनि म्यानी । ९-८०।८
 देखि बनाव सहित अंगवाना । ९-३०।६
 देखि बिकट नट बडि कटकाई । ९-५७।४
 देखि बिकल सुर जंगद घायो । ६-९६।८
 देखि बिभीषन प्रमु श्रम पायो । ६-९३।४
 देखि बिभीषनु आगे आयल । ६-६३।३
 देखि बुद्धि बल निपुन कपि । ५-९७।०
 देखि भरत कर सीतु सनेहू । २-९९।४
 देखि भरत कर सोचु सनेहू । २-२३३।८
 देखि भरत गति अकथ अतीव । २-२३७।५
 देखि भरत गति सुनि मूढु बानी । २-२०२।८
 देखि मानुकुलभूषनहि । ९-२३३।०

देखि भानु जनु मन सकुचानी । ९-९९।४
 देखि भालुपति निज दल पाता । ६-९७।९
 देखि भालु कपि हरषे । ६-९०।४
 देखि मधुर सुर हरषित । ७-३।४
 देखि मनहि नहुँ कीन्ह प्रनामा । ५-७।७
 देखि मनोहर चारिउ जोरी । ९-३४।७
 देखि मनोहर सैल अनुपा । ४-९२।३
 देखि महा मर्कट प्रबल । ६-५०।०
 देखि महीप सकल सकुचाने । ९-२६।३
 देखि महोत्सव सुर मुनि नागा । ९-९९।२
 देखि मातु आतुर उठि घाई । ७-८७।७
 देखि मालु सब हरषी । ७-९९।४
 देखि रसाल बिटप बर साखा । ९-८६।९
 देखि राम अति रुचिर तलावा । ३-४०।९
 देखि राम छबि अति अनुरानी । ९-२३।५
 देखि राम छबि कोउ एक कहई । ९-२२।५
 देखि राम छबि नयन जुडाने । २-९२।२
 देखि राम छबि नयन जुडाने । ३-२।७
 देखि राम जननी अकुलानी । ९-२०।८
 देखि राम बल पौरुष भारी । ५-५९।७
 देखि राम बलु निज धनु दीन्ह । ९-२९।२
 देखि राम मुख पंकज । ३-७।०
 देखि राम मुनि आवत । ७-३२।०
 देखि राम रिपुदल चलि जाव । ३-७।९
 देखि राम रुख बानर रीछ । ६-९७।९
 देखि राम रुख लछिमन धार । ६-९०।५
 देखि रामु सब समा जुडानी । ९-२५।२
 देखि रूप मुनि बिरति बिसारी । ९-९३।९
 देखि रूप लोचन ललवाने । ९-२३।४

देखि तामि मधु कुटिल किताती । २-१२४
 देखि लोग सब भए सुखारे । १-२४३३
 देखि सचिव जय जीव कहि । २-१४८१०
 देखि सनेहु लोग अनुरागे । २-१८४३
 देखि सनाजु मुदित रनिवात् । १-३५३५
 देखि सैल प्रसन्न मन मयऊ । ४-६२१२
 देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । १-३५५४
 देखि सल्लभ सनेह सब । २-२२१०
 देखि सहाय मदन हरबाना । १-१२५६
 देखि सिवहि सुरप्रिय मुसुकाहीं । १-११६
 देखि सीय सोभा सुरधु पावा । १-२२१५
 देखि सुजवसर ब्रमु पहि । ६-११४।४
 देखि सुमत् सब लायक जाने । २-११०८
 देखि सुभाउ कहत सबु कोई । २-१६४।३
 देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा । २-३११।४
 देखि सेतु अति सुंदर रचना । ६-११२
 देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं । २-११८
 देखिअत चक्रवाक रया नाहीं । ४-१४।१
 देखिअत प्रगट गगन अंगार । १-११८
 देखिअहि रूप नाम आधीना । १-२०४
 देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठह्रा । ६-४०।४
 देखिहउ जाइ घरन जलजाता । ५-४१।५
 देखिहि सो उगा बिबाहु घर घर । १-१४।१२
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी । ६-८८।८
 देखी जनक भीर नै मारी । १-२३१।४
 देखी नयन दूत रखबारी । ६-२१।६
 देखी व्याधि असाध नुपु । २-३४।०
 देखी विपुल बिकल बैदेही । १-२६०।१
 देखी माया सब बिधि गाढ़ी । १-२०१।३

देखी राम बिकल कटकाई । ६-६६।८
 देखी राम सकल कपि सेना । ५-३४।२
 देखी सुंदर तरुबर छाया । ३-४०।२
 देखी राम दुखित महतारी । २-२४३।६
 देखु गरुड निज हृदय बिचारी । ४-१२२।४
 देखु जनक हटि बालकु एहू । १-२४१।६
 देखु देवपति भरत प्रनाऊ । २-२६।३
 देखु परम पावनि पुनि बेनी । ६-१११।८
 देखु विभीषन दखिन जासा । ६-१२।१
 देखे कपिन्ह अनित दससीसा । ६-१५।३
 देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । १-५४।१
 देखे थल तीरथ सकल । २-३१२।०
 देखे भरत लखन ब्रमु आगे । २-२३८।४
 देखे सिव बिधि बिष्णु अनेका । १-५३।४
 देखेउँ आइ जो कछु कपि माया । ६-२३।८
 देखेउँ करि सब करम गोसाई । ४-१५।१
 देखेउँ नयन बिरचि सिव । ५-४४।०
 देखेउँ पाव सुमंगल मूल । २-२११।३
 देखेउँ मरि तोवन हरि भवमोचन । १-२१०।१०
 देखेसि आवत पवि सम बाना । ६-४५।११
 देखेहु कालि मोरि मनुसाई । ६-४१।४
 देखे बिनु रघुनाथ पद । २-१८२।०
 देखी बेनि सो जतनु करु । ६-११६।४
 देत चापु आपुहिं चलि गयऊ । १-२८३।८
 देत न बनहिं निपट लघु लार्गी । १-३४८।८
 देत चौबडे अरघु सुहाए । १-३११।८
 देबि परंतु भरत रघुबर की । २-२८८।५
 देत लेत मन संक न धरई । ४-६।५
 देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना । २-३१।४

देन कहेहु अब जनि बरु देह । २-२१५
 देन कहेहु बरदान दुइ । २-२७०
 देब काह हम तुम्हहि गोसाईं । २-२५०२
 देबि उचित असि बिनय तुम्हारी । २-२८४२
 देबि तजिअ संसउ अस जानी । १-२५६२
 देबि दंड जुग जामिनि बीती । २-२८३८
 देबि पूजि पद कमल तुम्हारे । १-२३५२
 देबि मोह बस सोचिअ बादी । २-२८१६
 देव एक दिनती सुनि मोरी । २-२६७७
 देव एकु गुनु धनुष हमारे । १-२८१७
 देव गिरा सुनि सुंदर साँची । १-३११७
 देव जच्छ गंधर्ब नर । १-१८२१
 देव दनुज किंनर नर श्रेनी । १-४३१४
 देव दनुज मन नाना जाती । ७-८०३
 देव दनुज धरि मनुज सरीरा । १-२५०८
 देव दनुज नर किंनर ब्याला । १-८४६
 देव दनुज नर नाग खग । १-७१४
 देव दनुज नर नाग मुनि । १-६८०
 देव दनुज नर सब बस मोरें । ६-७४
 देव दनुज भूपति मट नाना । १-२८३१
 देव दया बस बड़ दुखु पायउ । २-३१८२
 देव देखि तव बालक टोक । १-२१२५
 देव देखि रघुवीर बिबाहू । १-३५२८
 देव देव अभिषेक हित । २-३०७०
 देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । २-८७६
 देव न बरवाहिं धरनीं बर । ७-१०१४
 देव पितर पूजे बिधि नीकी । १-३५०१
 देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं । २-५६१
 देव बचन सुनि प्रभु मुसुकाना । ६-८५७

देव सकल सुरपतिहि सिंहाहीं । १-३१६७
 देव दीन्ह सबु मोहि अमारु । २-२६८३
 देव प्रथम कुलगुर गति देखी । २-२१३६
 देवन्ह दीन्हीं दुंदुभी । १-२८५०
 देवन्ह देखे दसस्थु जाता । १-३१४४
 देवन्ह प्रनुहि पयादे देखा । ६-८८११
 देवन्ह समाचार सब पाए । १-८७४
 देवहूति पुनि तासु कुमासी । १-१४१५
 देस काल अवसर अनुसारी । २-४४१५
 देस काल अवसर सरिस । २-३१४०
 देस काल दिसि विदिसिहु माहीं । १-१८४६
 देसु कोसु परिजन परिवारु । २-३१४७
 देसु कालु लखि समउ समाजू । २-३०३६
 देह दिनहुँ दिन दूबरि होई । २-३२४१
 देह धरे कर यह फलु भाई । ४-२२६
 देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं । १-२०७४
 देह बिसाल परम हरुआई । ५-२५११
 देहउ उतरु कौनु मुह लाई । २-१४५७
 देहउ आप कि मरिहउं जाई । १-१३५३
 देहिं असीस जोहारि सब । १-३५१०
 देहिं असीस परम सुखु पाई । २-१०७८
 देहिं असीस बूझि कुसलाता । ७-६२
 देहिं परम गति सो जिये जानी । ६-४४५
 देहिं लोग बहु मोल न लेहीं । २-४११४
 देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं । २-२१४
 देहु एक बर मागउं स्वामी । ३-४१२
 देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं । २-२२६
 देहु तुरत निज नारि दुसाई । ३-१८६
 देहु नाथ प्रभु कहूँ बैदेही । ५-३८६

देहु भगति रघुपति अति पावनि । ७-३४।१
 देहु मूप मन हरषित । १-२०४।०
 दे दोष सकल सरोष बोलहिं । २-२७५।१०
 देहिक दैविक भौतिक तापा । ७-२०।१
 दोउ कूल दल स्थ रेत ब्रक । ६-८६।१२
 दोउ दिसि समुद्रि कहत सबु लोगू । २-३२५।३
 दोउ बर कूल कटिन हट धारा । २-३३।३
 दोउ बासना रसना दसन । २-२४।११
 दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर । ७-२४।७
 दोउ स्थ रुचिर मूप पहिं आने । १-३००।७
 दोउ समाज निमिराजु । २-२७७।०
 दोसु देहिं जननिहि जड़ तेई । २-२६२।८
 द्यौ दल प्रबल पचारि पचारी । ६-४५।६
 द्यौ भिरे अतिबल मत्सजुद्ध । ६-१३।११
 दंड एक स्थ देखि न परेऊ । ६-१२।४
 दंड चारि महिं भा सबु पासा । २-२०१।१
 दंड जतिन्ह कर भेद जहैं । ७-२२।०
 दंड प्रनाम सबहिं नृप कीन्हे । १-३३०।१
 दंड प्रनामु करत मुनि देखे । २-२०५।४
 दंडक बन पुनीत प्रमु करहू । ३-१२।१६
 दंडक बनु प्रमु कीन्ह सुहादन । १-२३।७
 दंपति उर धरि भगत कृपाला । १-१५।७
 दंपति धरम आवचरन नीका । १-१४।१२
 दंपति परम प्रेम बस । १-११।१०
 दंपति बचन परम प्रिय लागे । १-१४।१७
 दंभ मान मद करहिं न काऊ । ३-४५।६
 दंभिन्ह निज मति कल्पि करि । ७-१७।७

घ

घन मद मत् परम बाचाला । ७-१६।३

घनट कोटि सत सम घनवाना । ७-११।७
 घन्य कीस जो निज प्रमु काजा । ६-२३।१
 घन्य घरी सोइ जब सतसंगा । ७-१२६।८
 घन्य जनमु जगतीतल तासू । २-४५।१
 घन्य ते नर एहिं ध्यान जे । ६-११।०
 घन्य दैस सो जहैं सुरसरी । ७-१२६।५
 घन्य घन्य गिरिराजकुमारी । १-१११।६
 घन्य घन्य तव जननी । ६-७६।०
 घन्य घन्य तव मति उरगारी । ७-१४।२
 घन्य घन्य तैं घन्य बिनीषन । ६-६३।८
 घन्य घन्य धुनि गगन पयागा । २-२०१।८
 घन्य घन्य धुनि मंगल मूला । २-११३।२
 घन्य घन्य मैं घन्य पुसारी । ७-५१।१
 घन्य बिहग मृग काननचारी । २-१३५।२
 घन्य भरत जय राम गोसाईं । २-३०८।१
 घन्य भरत जीवनु जग माहीं । २-१८४।७
 घन्य भूमि बन पंथ पहारा । २-१३५।१
 घन्य सती पावन मति तोरी । ७-५४।७
 घन्य सो देसु सैलु बन गाऊं । २-१२१।६
 घन्य सो भूपु नीति जो करई । ७-१२६।६
 घनवंत कुलीन मलीन अपी । ७-१००।७
 घन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति । ४-३३०।७
 घनिक बनिक बर घनद समाना । १-२१२।३
 घनुष चढ़ाइ कहा तब । ४-११।०
 घनुष जग्य सुनि रघुकुल नाथा । १-२०१।१०
 घनुहो सम तिपुरारि धनु । १-२७।१०
 ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूर्जे । १-२६।३
 धरइ जो बिबिध देह सुरत्रता । ५-२०।७
 धरनि धरहिं मन धीर । १-१८।१०

घरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । ६-७०६
 घरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । ६-१०२३
 घरनि धामु धनु पुर परिवारु । २-९१७
 घरनि परेउ द्वौ खंड बड़ाई । ६-१०२६
 घरनि परेउँ मुख आव न बाता । ७-८२२
 घरनिसुताँ धीरजु धरेउ । २-२८६१०
 धरम तड़ाग ग्यान बिय्याना । ७-३०७
 धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना । ३-१५१
 धरम धुरीन धरम गति जानी । २-५२५
 धरम धुरीन धीर नय नागर । २-३०३५
 धरम धुरीन मानुकुल मानू । २-२५३२
 धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । १-१८७८
 धरम धुरंधर धीर धरि । २-३०१०
 धरम धुरंधर नीति निधाना । १-१५२३
 धर्म धुरंधर प्रमु कै बानी । ३-५४
 धरम नीति उपदेसिअ ताही । २-७१७
 धर्म परायन सोइ कुल त्राता । ७-१२६२
 धर्म बिचारि समुझि कुल रहई । ३-४१४
 धरम राजनय ब्रह्मबिचारु । २-२८७४
 धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । ३-१०१६
 धर्म सकल सरसीरुह वृंदा । ३-४३५
 धरम सनेह उभर्य मति घेरी । २-५४३
 धर्मसील कोटिक महीं कोई । ७-५३२
 धर्मसील बिरक्त अरु ग्यानी । ७-५३६
 धर्मसीलता तव जग जागी । ६-२१८
 धर्म सुजस प्रमु तुम्ह कौ । १-२०७१०
 धर्म सेतु करुनायतन । २-२४८१०
 धरम सेतु पालक लुम्ह ताता । १-२१७८
 धर्म हीन प्रमु पद बिमुख । ६-३८१७

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं । ४-८५
 धरमु न दूसर सत्य समाना । २-९४५
 धरहु कपिहि धरि मारहु । ६-३२४
 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । १-१८८१४
 धरि कच बिस्थ कीन्ह महि गिरा । ३-२८११९
 धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट । ६-४०१९
 धरि केस नारि निकारि । ६-८४११०
 धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं । ६-८०११३
 धरि धीरजु उठि बैठ मुआलू । २-१५४१५
 धरि धीरजु एक जाति सयानी । १-२३३१५
 धरि धीरजु करि मरत बड़ाई । २-२७१३
 धरि धीरजु तब कहइ निबादू । २-१४२१५
 धरि धीरजु तहैं रहे सयाने । १-९४१५
 धरि धीरजु पद बदि बहोरी । २-१४४६
 धरि धीरजु सुत बदनु निहारी । २-५३५
 धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं । ३-१२
 धरि नृपतनु तहैं गयउ कृपाला । १-१३४३
 धरि बटु रूप देखु तैं जाई । ४-०४
 धरि बड़ि धीर रामु उर आने । १-२३३८
 धरि मुनितनु जनु बीर रसु । १-२६८१०
 धरि रूप पावक पानि गहि श्री । ६-१०८११३
 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । ६-५४८
 धरी न काहूँ धीर । १-८५१०
 धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना । ६-७२४
 धरु मारु काटु पछारु घोर । ६-८०११५
 धरु मारु बोलहिं घोर । ६-१००१५
 धरे नाम गुर हृदयें बिचारी । १-१९३१५
 ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुल बन । ७-१२११५
 ध्वज पताक तोरन कलस । २-६१०

ध्वज पताक तोरन पुर छावा । १-१९३।१
 ध्वज पताक पट चामर चारु । १-२९५।४
 धवल धाम ऊपर नम चुंबत । ४-२६।४
 धवल धाम मनि पुरट पट । १-२९३।०
 धाइ उठाइ लाइ उर लीन्है । २-२०५।५
 धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा । २-३४।४
 धाइ धरै गुर चरन सरोरुह । ४-४।३
 धाइ पूछिहहिं मोहि जब । २-१४५।०
 धाए जो मर्कट बिकट मालु । ६-९९।१२
 धाए धाम काम सब त्यागी । १-२९९।२
 धाए निस्त्रिचर निकर बस्त्र्या । ३-१७।४
 धाए बिस्साल कराल मर्कट । ६-४८।१४
 धायउ परम क्रुद्ध टसकंधर । ६-८१।१
 धावा क्रोधवंत खग कैसै । ३-२८।१०
 धावा बान बाहु गिरि धारी । ६-६१।१०
 धावा बालि देखि सो भाग । ४-५।४
 धावहिं गनहिं न अवघट घाटा । ६-४०।५
 धावहु बेगि भरत पहिं जाहू । २-१५६।२
 धावहु मर्कट बिकट बस्त्र्या । ६-०।९
 धिग कैकई अमंगल मूला । २-२००।४
 धिग जीवन देव सरीर हरे । ६-११०।१८
 धिग धिग मम पीरुष धिग मोही । ६-८३।४
 धिग मोहि भयउं बेनु बन जापी । २-१६३।८
 धीरज धर्म मित्र अरु नारी । ३-४।७
 धीरज धरहु बिबेकु बिचारी । २-१४९।८
 धीरज धरि भरि लैहिं जसासा । २-१६०।६
 धीरजु धरिअ त पाइअ पालु । २-१५३।४
 धीरजु धरिअ नरेस । २-२४६।०
 धीरजु धरेउ कुअवसर जानी । २-४३।१

धीरजु मन कीन्हा प्रमु कहूँ चीन्हा । १-२१०।५
 धुआँ देखि खरदूषन केरा । ३-२०।५
 धुनि अयरेब कबित गुन जाती । १-३६।८
 धुव बिस्वानु अवधि राका सी । २-३२४।५
 धुवै सगलानि जपेउ हरि नाऊँ । १-२५।५
 धूप दीप नैबेट बेट बिधि । १-३४९।३
 धूप धूम ननु मेवक मयऊ । १-३४६।१
 धूम अगल संमय सुनु भाई । ४-१०५।१०
 धूम कुसंगति कारिख होई । १-६।११
 धूमउ तजइ सहज करुआई । १-९।९
 धूमकेतु सत कोटि सप्तम । ४-११।४
 धूरि पूरि नम मंडल रहा । ३-१४।१०
 धूरि मेरुसप्तम जनक जम । १-१४।१०
 धूसर धूरि भरै तनु आए । १-२०२।९
 धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि । ४-२९।४
 धृत त्रोन बर सर चाप । ६-११२।२
 धेनुधूरि बेला बिमल । १-३१२।०
 धेनु रूप धरि हृदयै बिचारी । १-१८३।४
 धोए जनक अवधपति चरना । १-३२४।४

न

न जानामि योग जप नैव पूजां । ४-१०४।१५
 न त एहि काटि कुठार कटोरें । १-२४४।८
 न त कच्चा बरु रहउ कुआरी । १-४०।४
 न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं । ४-१०४।१४
 न तु कामी बिषयाबस । ४-११५।४
 न यावद् उमानाथ पादारविंद । ४-१०४।१३
 नख आयुध गिरि पादपधारी । ५-३४।९
 नख दसन सैल महाद्रुमायुध । ६-४८।१६
 नख निर्गता मुनि बंदिता । ४-१२।१४

नख सिख देखि राम कै सोमा । १-२३३।४
 नख सिख सुंदर बंधु दोउ । १-२१९।०
 नगर नारि नर गुर सिख मानी । २-३२१।८
 नगर नारि नर निपट दुरखारी । २-१५७।८
 नगर नारि नर ब्याकुल कैसें । २-१४६।८
 नगर नारि नर रूप निधाना । १-३१३।६
 नगर निकट प्रभु प्रेरेंउ । ७-४।७
 नगर निकट बरात सुनि आई । १-९४।१
 नगर फिरी रघुबीर दोहाई । ५-१०।६
 नगर ब्यापि गढ़ बाल सुतीछे । २-४५।६
 नगर लोग सब ब्याकुल सोचा । ६-७६।८
 नगर लोग सब सजि सजि जाना । २-१८६।७
 नगरु सफल बनु गहबर मारी । २-८३।२
 नट इब कपट चरित कर नाना । ६-७२।१२
 नट कृत बिकट कपट खगराया । ७-१०३।८
 नट मरकट इब सबहि नघावत । ४-६।२४
 नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई । २-२६८।११
 नतरु निपट अवलंब बिहीना । २-१५।८
 नतरु प्रजा परिजन परिवारु । २-३०४।६
 नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ । २-२६८।०
 नतरु बौझ भलि बादि बिजानी । २-७४।२
 नतरु लखन सिय राम बियोगा । २-३१६।२
 नदी नाव पटु प्रसन्न अनेका । १-४०।२
 नदी पनच सर सम दम दाना । २-१३२।३
 नदी पुनीत अमित महिमा अति । १-३४।२
 नदी पुनीत पुरान बखानी । २-१३१।५
 नदी पुनीत सुमानस नंदिनि । १-३८।१३
 नदी उमगि अंबुधि कहूँ धाई । १-८४।२
 नम अरु नगर कोलाहल होई । १-३१८।७

नम उड़त बहु मुज मुंड । ३-१९।१२
 नम चाड़ि बरष विपुल अंगारा । ६-५१।१
 नम दुंदुभी बाजहिं विपुल । ७-११।१
 नम धूरिं खग मृग भूरि भागे । २-२२५।१०
 नम नगर गान निसान जय धुनि । १-३२३।१०
 नम पर जाइ बिभीषन तबही । ६-१९६।६
 नम प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि । २-२८३।६
 नमामि इंदिरा पतिं । ३-३।११
 नमामि भक्त वत्सलं । ३-३।१
 नमामीशमीशान निर्वाणरूप । ७-१०७।११
 नयन कमल कल कुंडल काना । १-३२६।८
 नयन दोष जा कहें जब होई । ७-७२।३
 नयन नीर पुलकित अति गाता । ५-४४।६
 नयन नीर मन अति हस्याना । ७-१२।२
 नयन नीरु हटि मंगल जानी । १-३१८।११
 नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई । २-१८।२
 नयन विषय सो कहूँ भयउ । १-३४१।०
 नयन मूदि पुनि देखहिं बीरा । ४-२४।६
 नयन सज्जन तन थर थर काँपी । २-५३।४
 नयन स्रग्विहं जतु निज हित लागी । ५-३०।८
 नयन सुझ नहिं सुनइ न काना । २-१८।४
 नयनन्हि संत दरस नहिं देखा । १-११२।३
 नयनवंत रघुबरहिं बिलोकी । २-१३८।१
 नर अरु नारि अधर्म रत । ७-१६।७
 नर अरु नारि राम गुन गानहिं । ७-२५।८
 नर अहार रजनीचर चरहीं । २-६२।१
 नर कें कर आपन बघ बाँची । ६-२८।२
 नर गंधर्ब भूत बेताला । ७-८०।२
 नर तन सम नहिं कबनिउ देही । ७-१२०।१

नर तनु धरेहु संत सुर काजा । २-१२६६
 नर तनु पाइ बियर्ये मन देहीं । ७-४३१२
 नर तनु भव बारिधि कहूँ बेरो । ७-४३१७
 नर नाग सुर गंधर्व कन्या । ५-२१७७
 नर नाशयन सरिस सुभ्राता । ५-१९१५
 नर नारि निदरहिं नेहु निज सुनि । २-२५०१११
 नर पीडित रोग न भोग कहीं । ७-१०१३
 नर बानरहि संग कहूँ कैसें । ५-१२१११
 नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत । ३-३५११६
 नर सरीर धरि जे पर पीरा । ७-४०३३
 नर सहस्र महुँ सुनहु पुरारी । ७-५३१६
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ७-१२०११०
 नरबर धीर धरम धुर धारी । २-७११२
 नव अंबुज अंब्रक छबि नीकी । १-१४६६३
 नव अंबुधर बर गात अंबर । ७-११११४
 नव गर्गदु रघुबीर मनु । २-५११०
 नव ग्रह निकर अनीक बनाई । ७-२६१५
 नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । ५-१४१२
 नव तुलसिका बृंद तहैं । ५-५१०
 नव नील नीरज निकट मानहुँ । ६-१०८११६
 नव पल्लव कुसुमित तरु नाना । ३-३११७
 नव पल्लव फल सुमन सुहाए । १-२२६१५
 नव पल्लव भए बिटप अनेका । ७-१४१२
 नव विष्णु बिमल तात जसु तोरा । २-२०८११
 नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई । ३-३५१६
 नव रस जप तप जोग बिरामा । १-३६११०
 नव रसाल बन बिहरनसीला । २-६२१७
 नव राजीव अरुन मृदु चरना । ७-७५१६
 नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । ३-३४१७

नवनि नीच कै अति दुखदाई । ३-२३१७
 नवम सरल सब सन छलहीना । ३-३५१५
 नवसप्त साजें सुंदरी सब । १-३२१११०
 नस्वर रूप जगत सब । ६-७७१०
 न्हाइ रहे जलपानु करि । २-१५०१०
 नहिं अतिरिजु जुग जुग चलि आई । २-१११४१५
 नहिं अनीति नहि कछु प्रभुताई । ७-४२१४
 नहिं असत्य सम पातक पुजा । २-३७१५
 नहिं कलि करम न भगति बिबेकू । १-२६१७
 नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । १-५११८
 नहिं धितव जब करि कोप कपि । ६-८४१९
 नहिं तव आदि मध्य अवसाना । १-२३४१७
 नहिं तुन चरहिं न पिअहिं जलु । २-१४२१०
 नहिं तोष बिचार न सीतलता । ७-१०१६
 नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । ७-२०१६
 नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । ७-१२०११३
 नहिं पद ज्ञान सीस नहिं छाया । २-२११५
 नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा । २-२२११४
 नहिं बिषाद कर अवसर आजू । ३-६७१४
 नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । २-९८१२
 नहिं मान पुरान न बेदहि जौ । ७-१००८
 नहिं राग न लोम न मान मदा । ७-१३११३
 नहिं सतसंग जोग जप जागा । ३-९१७
 नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहूँ । १-३७३१७
 नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना । १-४८२१८
 नाइ चरन सिर मुनि चले । १-८११०
 नाइ चरन सिरु आयसु पाई । १-१२६१२
 नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । ७-२०११
 नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी । ६-११५१२

नाइ घरन सिरु चला सो तहाँ । ५-५६।१
 नाइ रान पद कमल सिरु । १-२५२।०
 नाइ सीस करि बिन्य बहुता । ५-२३।७
 नाइ सीसु पद अति अनुरागा । २-७६।२
 नाऊ बारी भाट नट । १-३१९।०
 नाक कान काटे जियें जानी । ६-६५।९
 नाक कान बिनु मइ बिकरारा । ३-१७।१
 नाग असुर सुर नर मुनि जेते । ३-१८।३
 नागर नट घितवहिं चकित । १-३०२।०
 नाघहिं खग अनेक बारीसा । ६-२७।२
 नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । ५-२७।२
 नाघि सिंधु हाटकपुर जारा । ५-३२।८
 नाघहिं अपछरा बूंद परमानंद । ७-११।१०
 नाघहिं गावहिं गीत । १-१३।०
 नाघहिं गावहिं बिबुध बधूटी । १-२६५।३
 नाचि कूदि करि लोग रिझाई । ६-२३।२
 नाथ आजु मैं काह न पावा । २-१०१।५
 नाथ इहाँ कछु कारन आना । ७-७७।३
 नाथ उमा मम प्रान सम । १-१०१।०
 नाथ एक आवा कपि मारी । ५-१७।३
 नाथ एक बर मागउँ । ७-४९।०
 नाथ एक संसउ बड़ मोरैं । १-४४।७
 नाथ कटक महीं सो कपि नाहीं । ५-५४।४
 नाथ करइ रावन एक जागा । ६-८४।२
 नाथ करहु बालक पर छोहू । १-२७६।११
 नाथ कहहु केहि कारन । ७-५४।०
 नाथ कहेउ अस कोसलनाथ । २-९३।६
 नाथ काजु कीन्हैउ हनुमाना । ५-२८।५
 नाथ कुसल पद पंकाज देखें । २-८७।५

नाथ कृतास्थ नयउँ मैं । ७-६३।७
 नाथ कृपा अब नयउ बिबादा । १-११९।३
 नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें । ५-५३।१
 नाथ कृपा मम गत संदेहा । ७-१२८।८
 नाथ कोसलाधीस कुमारा । ३-११।७
 नाथ जयामति मापेउँ । ७-१२३।४
 नाथ जबहिं कोसलपुरीं । ६-११५।०
 नाथ जानि अस आयसु होऊ । १-२५२।७
 नाथ जीव तव मार्यो मोहा । ४-२।२
 नाथ जुगल लोचन भरि बारी । ५-३०।२
 नाथ तवानन ससि स्त्रवत । ७-५२।४
 नाथ दसानन कर मैं भ्राता । ५-४४।७
 नाथ दसानन यह गति कीन्ही । ३-३०।२
 नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह । २-७१।०
 नाथ दीनदयाल रघुराई । ६-६।१
 नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । १-१४८।२
 नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला । २-२३६।२
 नाथ दैव कर कवन मरोसा । ५-५०।३
 नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतु । १-११९।७
 नाथ न मोहि संदेह कछु । ७-३६।०
 नाथ न स्थ नाहिं तन पद ज्ञाना । ६-७९।३
 नाथ नाम तव सेतु । ६-०।४
 नाथ निपट मैं कीन्हि टिटाई । २-२९९।७
 नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । ५-५९।१
 नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । ५-२९।५
 नाथ बयरु बीजे ताही सौं । ६-५।५
 नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई । ४-५।१
 नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं । ४-१९।७
 नाथ भगति जति सुखदायनी । ५-३३।१

नाथ भजहु रघुनाथहि । ६-७०
 नाथ भयउ सुखु साथ गए को । २-३०६६
 नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं । ७-३५६
 नाथ भरतु पुरजन महतारी । २-२८९४
 नाथ भूधराकार सरीरा । ६-६४२
 नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर । ७-११४११४
 नाथ मोहि निज सेवक जानी । ७-१२०२
 नाथ रामु करिअहिं जुबराजू । २-३३२
 नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं । १-२१७५
 नाथ लोग सब निपट दुखारी । २-२४७५
 नाथ सकल साधन मैं हीना । ३-७४
 नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे । २-६४१८
 नाथ सकल संपदा तुम्हारी । १-३५१६
 नाथ सपथ पितु चरन दोहाई । २-२५८४
 नाथ समुझि मन करिअ बिचारु । २-१५३५
 नाथ साथ मुनिनाथ के । २-२७२०
 नाथ साथ सहि पंथु देखाई । २-१०३४
 नाथ साथ सौथरो सुहाई । २-१३९७
 नाथ साथ सुरसदन सम । २-६५०
 नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । ७-१३५
 नाथ सुद्वद सुटि सरल चित । २-२२७०
 नाथ सैल पर कपिपति रहई । ४-३३२
 नाथ सो नयनहि को अपराधा । ५-३०६
 नाथ संमुधनु भंजनिहारा । १-२७०१
 नान्या स्पृहा रघुपते । ५-४०४२(०)
 नाना अखारेन्ह मिरहिं बहु बिधि । ५-२१९
 नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । ७-१२५५
 नाना खग बालकन्हि जिआए । ७-२७४
 नाना जनम कर्म पुनि नाना । ७-१५७

नाना जाति न जाहिं बखाने । १-२९७६
 नाना जिनस देखि सब कीसा । ६-११७१२
 नाना तरु फल फूल सुहाए । ५-२७
 नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् । १-४०४(१)
 नामा बरन अतुल बल । ५-३४०
 नाना बरन मालु कपि धारी । ५-५३६
 नाना बरन सकल दिशि । ४-२१०
 नाना बापीं कूप तड़ागा । १-१५४७
 नाना बाहन नानाकारा । ३-१७५
 नाना बाहन नाना बेधा । १-१२६
 नाना बिधि करि कथा सुहाई । ३-२७११
 नाना बिधि तेहि कहैसि बुझाई । ६-७५
 नाना बिधि प्रहार कर सेवा । ६-५३५
 नाना बिधि बिनती करि । ३-४१०
 नाना बिधि बिलाप कर तारा । ४-१०२
 नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही । ६-१२०४
 नाना भौति निछवरि करहीं । ७-६५
 नाना भौति पिसाध पिसाधी । ६-५१२
 नाना भौति बिनय तेहि कीन्ही । ४-२४८
 नाना भौति मनहि समुझावा । ७-५८१
 नाना भौति राम अवतार । १-३२६
 नाना भौति सुमंगल साजे । ७-८४
 नानाकार सिलीमुख धाए । ६-१०२
 नानायुध सर घाप धर । ६-४००
 नामि मनोहर लेति जनु । १-१४७०
 नामिकुंड पियूष बस याकें । ६-१०१५
 नाम उधारे अमित खल । १-२४०
 नाम एकतनु हेतु तेहि । १-१६२०
 नाम कामतरु काल कराला । १-२६५

नाम गरीब अनेक नेवाजे । १-२४।२
 नाम जीहें जपि जागहिं जोगी । १-२१।१
 नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा । १-१६३।१
 नाम निरूपन नाम जतन तें । १-२२।८
 नाम प्रतापमानु अवनीसा । १-१५८।५
 नाम प्रभाउ जान सिव नीको । १-१८।८
 नाम प्रसाद संमु अबिनासी । १-२५।१
 नाम पाहरू दिवस निसि । ५-३०।०
 नाम बिभीषन जेहि जग जाना । १-१७५।५
 नाम राम लछिमन टोउ भाई । ४-१।२
 नाम रूप गति अकथ कहानी । १-२०।४
 नाम रूप दुइ ईस उपाधी । १-२०।२
 नाम लंकिनी एक निसिधरी । ५-३।२
 नाम सुप्रेम पियूष हृद । १-२२।०
 नाम हमार एकतनु भाई । १-१६१।४
 नाम हमार भिरवारि अब । १-१६०।०
 नामकरन कर अवसरू जानी । १-१६।२
 नामु जपत प्रमु कीन्ह प्रसादू । १-२५।४
 नामु जान पै तुम्हहिं न चीन्हा । १-२८।१।२
 नामु मंथरा मंदमति । २-१२।०
 नामु राम को कलपतरु । १-२६।०
 नामु लेत भवसिधु सुराहीं । १-२४।४
 नामु सप्रेम जपत अनयासा । १-२३।२
 नारद कर उपदेसु सुनि । १-७८।०
 नारद कर मैं काह बिगारा । १-१६।१
 नारद कहा सत्य सोइ जाना । १-७७।६
 नारद कहेउ सहित अभिमाना । १-१२८।३
 नारद जानेउ नाम प्रतापू । १-२५।३
 नारद देखा बिकल जयंता । ३-१।९

नारद बचन न मैं परिहरऊँ । १-७९।४
 नारद बचन सगभं सहेतू । १-७१।३
 नारद बचन सत्य सब करिहउँ । १-१८।३।६
 नारद बचन सदा सुधि सावा । १-२३।५।८
 नारद बोले बचन तब । ३-४१।०
 नारद भव विरंघि सनकादी । ४-६९।६
 नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । ६-६२।६
 नारद श्राप दीन्ह एक बारा । १-१२३।५
 नारद समाचार सब पाए । १-२५।५
 नारद सिख जे सुनहिं नर नारी । १-७८।३
 नारदहूँ यह मेदु न जाना । १-६७।२
 नारदादि सनकादि मुनीसा । ४-२६।१
 नारि कुमुदिनी अवध सर । ४-९।४
 नारि नयन सर जाहि न लागा । ४-२०।४
 नारि पाइ फिरि जाहिं जाँ । ६-९।०
 नारि पुरुष तघु मध्य बड़ेरे । २-३१।८
 नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने । १-१८।२
 नारि बचन सुनि बिसिख समाना । ६-३७।१
 नारि बिबस नर सकल गोसाई । ४-१८।१
 नारि बिरहैं दुखु लहेउ अपारा । १-४५।८
 नारि बिलोकहिं हरषि हियैं । १-२४।१।०
 नारि बृंद कर पीटहिं छाती । ६-४३।४
 नारिबृंद सुर जेवैंत जानी । १-१८।८
 नारि बेष जे सुर बर वामा । १-३२।५
 नारि मुई गृह संपति नासी । ४-१९।६
 नारि सनेह बिकल बस होहीं । २-१२।१
 नारि सहित मुनि पद सिरु नावा । १-६५।४
 नारि सहित सब खग मृग बृंदा । ३-३६।४
 नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । ६-१५।२

नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी । २-१३१।३
 नाहिं त करि मुख भंजन तोरा । ६-२१।५
 नाहिं त कोसल नाथ केँ । २-२७०।०
 नाहिं त चाहत चलन अब । २-१४१।०
 नाहिं त मोर मरनु परिनामा । २-८१।७
 नाहिं त सन्मुख समर महि । ६-१।०
 नाहिं त सपदि मानु मम बानी । ५-१।२
 नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि । १-२२२।०
 नाहिन ठरु बिगरिहि परलोकू । २-२१०।५
 नाहिन तात उरिन मैं तोही । ७-१।१४
 नाहिन समु राज के मुखे । २-४१।३
 निकट काल जेहि आवत साई । ६-३६।८
 निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा । ४-१८।२
 निकसि बसिष्ठ द्वार भए टाढ़े । २-४१।१
 निकसे जनु जुग बिमल बिधु । १-२३२।०
 निकाम श्याम सुंदर । ३-३।३
 निगम नीति कुल रीति करि । १-३४१।०
 नियम नेति सिव अंत न पावा । १-२०२।८
 निगम नेति सिव ध्यान न पावा । ३-२६।११
 निगमागम पुरान मत एहा । ७-६८।६
 निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । १-५७।४
 निज अनुभव अब कहउँ खगोसा । ७-८८।५
 निज आश्रम प्रमु आनि करि । ३-१०।०
 निज इच्छा निर्मित तनु । १-११२।०
 निज इच्छी प्रमु अवतरइ । ४-२६।०
 निज उर माल बसन मनि । ७-१८।४
 निज कबित केहि त्याग न नीका । १-७।११
 निज कर कमल परसि मम सीसा । ७-११२।१५
 निज कर गृह परिचरजा करई । ७-२३।६

निज कर डासि नागरिपु छत्रला । १-१०१।५
 निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । २-४६।३
 निज कर मुदित रायँ अरु रानी । १-२३३।६
 निज करतूति न समुझिअ सपनेँ । २-२२८।६
 निज कुल इष्टदेव भागवान्ना । १-२००।२
 निज कृत कर्म जनित फल पायउँ । ३-१।१३
 निज गिरा पावनि करन कारन । १-३६।०१
 निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं । ३-४५।१
 निज गुन सहित राम गुन गाथा । २-२२३।५
 निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । १-२५७।७
 निज जन जानि ताहि अपनावा । ५-४१।२
 निज जन जानि राम मोहि । ७-१३२।३
 निज जननी के एक कुमारा । ६-६०।१४
 निज दल बिकल देखि कटि । ६-८।०
 निज दल बिकल सुना हनुमाना । ६-४२।३
 निज दल बिचल सुनी तेहि काना । ६-४।६
 निज दल बिचलत देखेसि । ६-८।१०
 निज दास ज्यो रघुबंसभूषन । ७-१।१७
 निज दुख गिरि सम रज करि जाना । ४-६।२
 निज दुख सुख सब गुरहि सुनायत । १-१८८।३
 निज नयनन्हि देखा चहहिँ । १-८८।०
 निज निज आसन बैठे राजा । १-१३२।१
 निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू । ६-११७।५
 निज निज गृह गए आयसु पाई । ७-४६।८
 निज निज गृहँ सब करहिँ बिचारा । ५-३५।२
 निज निज बल सब काहूँ भाषा । ४-२८।६
 निज निज बास बिलोकि बराती । १-२०६।१
 निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिँ । ७-१०।४
 निज निज रुख रामहि सबु देखा । १-२४३।७

निज निज रुचि सब लेहि बोलाई । १-२२४१२
 निज निज साजु समाजु बनाई । १-१९०७
 निज निज सुंदर सदन सँवारे । १-३४३४
 निज पद दीन्ह असुर कहूँ । १-२०१०
 निज पद नयन दिएँ मन । १-५८०
 निज पद भंगति देइ प्रभु । ७-१०८१ख
 निज पन तजि राखेउ पनु मोरा । १-२६५८
 निज प्रतिबिंब राखि तहाँ सीता । १-२३४
 निज प्रतिबिंबु बरकु गहि जाई । १-४६८
 निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ । ७-८१३
 निज प्रभु दरसन पायउँ । ७-११४।क
 निज प्रभु बदन निहारि निहारी । ७-४४।द
 निज प्रभुमय देखहि जगत । ७-११२।ख
 निज परम प्रीतम देखि लोचन । १-२५।९
 निज परिताप द्रवइ नवनीता । ७-१२४।८
 निज पानि जनक सुजान सब । १-३१९।१०
 निज पानि मनि महुँ देखि अति । १-३२६।११
 निज पानि सर संधानि सो मोहि । १-२५।१२
 निज बिकलता बिचारि बहोरी । ६-५।१
 निज बुधि बल भरोस मोहि नार्ही । १-७।४
 निज भ्रम नहि समुझाहिँ अप्यानी । १-११६।११
 निज भवन गवनेउ सिंधु । १-५१।९
 निज मुज बल मैं बयरु बढ़ावा । ६-७।६
 निज मति सरिस नाथ मैं गाई । ७-१०।१
 निज माया के प्रबलता । १-१३७।०
 निज माया बल देखि बिसाला । १-१३१।८
 निज माया बलु हृदय बखानी । १-५२।६
 निज लोकहि बिरंधि मे । १-१८७।०
 निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । ७-८५।२

निज सिर भारु भरत जियै जाना । १-२६५।६
 निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । ७-८१।७
 निज सेन चकित बिलोकि हँसि । ६-८८।११
 निज सौमाम्य बहुत गिरि बरना । १-६५।८
 निज संताप सुनाएसि रोई । १-१८३।८
 निज संदेह मोह भ्रम हरनी । १-३०।४
 निज निगुण निविकल्प निरीह । ७-१०७।२
 नित जुग धर्म होहिँ सब केरे । ७-१०३।१५
 नित नइ प्रीति राम पद पंकज । ७-१४।९
 नित नव चरन उपज अनुराग । १-७३।३
 नित नव चरित देखि मुनि जार्ही । ७-४१।५
 नित नव नगर अनंद उछाहूँ । १-३३१।४
 नित नव मंगल कौसलपुरी । ७-१४।८
 नित नव राम प्रेम पनु पीना । १-२२४।२
 नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीँ । १-३५९।२
 नित नव सोघु सती उर भारा । १-५८।१
 नित नूतन आदरु अधिकाई । १-३३१।३
 नित नूतन द्विज सहस सत । १-१६८।०
 नित नूतन मंगल गृह तासू । १-६५।४
 नित नूतन मंगल पुर माहीं । १-२२९।११
 नित नूतन सब बाढ़त जाई । १-१७१।२
 नित नूतन सुख लखि अनुकूले । १-३०३।८
 नित नौमि राम अकाम प्रिय । १-३१।१०
 नित नौमि रामु कृपाल बाहु । १-३१।६
 नित पूजत प्रभु पाँवरी । १-३२५।०
 नित हरि कथा होत जहाँ माई । ७-६०।७
 नित्यक्रिया करि गुरु पाहिँ आए । १-२३८।८
 नित्य निबाहि भरत दौड भाई । १-३१०।२
 नितरहिँ सरित सिंधु सर मारी । १-१२७।४

निदरि घनहि घुम्मरहिं निसान् । १-३००१३
 निंदहिं आपु सराहि निषादहि । २-२०१५
 निंदहिं आपु सराहहिं मीना । २-८५१५
 निंदा अस्तुति उगय सम । ७-३८१०
 निघरक बैठि कहइ कटु बानी । २-४०१९
 निपट निरंकुस नितुर निसंकू । २-११८१३
 निपटहिं द्विज करि जानहि मोही । १-२८२१५
 निफ्लत होहिं रावन सर कैसें । ६-१०१६
 निबुकि चढेउ कपि कनक अटासीं । ५-२४१९
 निमिष निमिष करुनानिधि । ५-३११०
 निरखि निरखि रघुबीर छबि । ५-२३४१०
 निरखि निषादु नगर नर नारी । २-११५५६
 निरखि बटनु कहि भूप रजाई । २-३८७
 निरखि द्विबेक बिलोचनन्हि । २-२९४१०
 निरखि राम छवि धाम मुख । ३-३०१०
 निरखि राम छबि बिधि हरषाने । १-३१६४
 निरखि राम रथ्य सचिबसुत । २-५४१९
 निरखि राम सोभा उर घरहू । १-३३४१७
 निरखि सहज सुंदर दोउ भाई । १-२११३
 निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । २-२३७१७
 निरखि सैल सरि बिपिन बिनागा । १-१२४१३
 निरगुन तें एहि नाँति बड़ । १-२३१०
 निर्गुन नितज कुबेव कपालीं । १-७८१६
 निर्गुन मत नहि मोहि सोहाई । ७-१०११६
 निर्गुन रूप सुलम अति । ७-४३१४
 निर्गुण सगुण विषम सम रूप । ३-१०११५
 निर्णय सकल पुरान बेट कर । ७-४०१२
 निर्बान दायक श्लोघ जा कर । ३-२५११९
 निर्भर प्रेम भगन मुनि ग्यानी । ३-१३१०

निर्मम निराकार निरमोहा । ७-७११६
 निर्मल मन जन सो मोहि पावा । ५-४३१५
 निरस्य इंद्रियादिक । ३-३११६
 निराकारमोंकारमूल तुरीयं । ७-१०१३
 निरावार जो भ्रुति पय त्यागी । ७-१७१७
 निरुपम न उपमा आन राम । ७-१११९
 निरुग घाम सायकं । ३-३१६
 निसा घोर गंभीर बन । १-१५११६
 निसा जानि कपि चारिउ अनी । ६-४७१५
 निसा सिरानि भयउ भिनुकारा । ६-७७१३
 निसि जानि स्पंदन घालि तेहि । ६-९७१९
 निसि तम घन रघोत बिराजा । ७-१४१६
 निसि दिन सुखद सदा सब काहू । २-२०८४
 निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । ५-१११६
 निसि न नीद नहिं मूख दिन । २-२५३१०
 निसि प्रबेस मुनि आयसु दोन्हा । १-२२५१५
 निसि बासर ध्यावहिं गुन गन । १-१८५१८
 निशिबर करि वरुथ्य मृगराजः । ३-१०१६
 निशिबर अघम मलाकर । ६-७११०
 निशिबर अनी देखि कपि किये । ६-४५१५
 निशिबर कीरा दरसाई । ७-६७१४
 निशिबर जाइ होहु तुम्ह दोऊ । १-१३८१५
 निशिबर निकर दले रघुनंदन । १-२३१८
 निशिबर निकर देखि भट भारी । ६-१७१६
 निशिबर निकर पतंग सम । ५-१५१०
 निशिबर निकर फिरहिं बन भारीं । ३-२९१३
 निशिबर निकर मरन बिधि नाना । ७-६७१५
 निशिबर निकर सकल मुनि खाए । ३-८८
 निशिबर सिखर समूह दहावहिं । ६-५०१८

निसिंघर निकर सुमट संधारेहु । ६-८९३
 निसिंघर मट महि गाड़हिं मालू । ६-८०७
 निसिंघर मारि तोहि तै जैहहिं । ५-१५५
 निसिंघर सकल रावनहि । ६-९८०
 निसिंघर हीन करउँ महि । ३-९१०
 निसिंघरि एक सिंधु महुँ रहई । ५-२१९
 निसिंहि ससिंहि निंदति बहु मौंती । ६-९९३
 नीक मंत्र सब के मन माना । ६-१६५
 नीकें निरखि नयन भरि सोभा । १-२५७/१९
 नीच कीच बिच मगन जस । २-२५२/०
 नीचे टहल गृह के सब करिहउँ । ७-१७७
 नीति धर्म के चरन सुहाए । ६-३७/१०
 नीति निपुन जिन्ह कइ जाग लीका । २-१३०/२
 नीति निपुन सोइ परम स्याना । ७-१२६/३
 नीति प्रीति परमारथ स्वारथु । २-२५३/५
 नीति बिरोध न करिअ प्रमु । ६-८०
 नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । २-१३६
 नीदउँ बदन सोह सुठि लोना । १-३५७/१९
 नील कंज तनु सुंदर स्यामा । ६-१५६
 नील कंज लोचन मव मोचन । ७-७६/५
 नील तामरस स्याम काम अरि । ७-५०/२
 नील महीधर सिखर सम । ५-१५६/०
 नील सघन पल्लव फल लाला । २-२३६/४
 नील सरोरुह नील मनि । ५-१४६/०
 नील सरोरुह स्याम । १-०/५
 नीलकंठ कलकंठ सुक । २-१३७/०
 नीलकंठ लावन्निधि । १-१०६/०
 नीलाम्बुजस्यामलकोमलान्न..... । २-१७७/१९
 नीलोत्पल तन स्याम । ४-३०/४

नूतन किसलय जनल समाना । ५-११/१९
 नृप अभिमान मोह बस किंब । ६-११/५
 नृप अस कहेउ गोसाईं जस । २-१४/०
 नृप उतानपाट सुत तारू । १-१४/१३
 नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा । २-२४६/३
 नृप करि बिनय महाजन फेरे । १-३३१/१९
 नृप किरोट तरुनी तनु पाई । १-१०/२
 नृप जुबराजु राम कहूँ देहू । २-१/८
 नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा । २-१६१/१९
 नृप नायक टे बरदानमिद । ६-११०/२२
 नृप पाप परायन धर्म नहीं । ७-१००/६
 नृप बहु मौंति प्रसंसेउ ठाही । १-१५१/२
 नृप बूझे बुध सचिव समाजू । २-२७०/५
 नृप भुजबलु बिधु सिवधनु सहू । १-२४१/१९
 नृपमंदिर सुंदर सब मौंती । ७-७५/२
 नृप रानी परिजन सुकृत । १-४०/०
 नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु । २-७३/०
 नृप सब नखत करहिं उजिआरी । १-२३८/१९
 नृप सब मौंति सबहि सनमानी । १-३५४/७
 नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे । २-१/३
 नृप समीप सोहहिं सुत चारो । १-३०८/२
 नृप सुनि श्राप बिकल अति त्रासा । १-१७३/४
 नृप हरषेउ पहिचानि गुरु । ६-१७२/०
 नृप हितकारक सचिव स्याना । १-१५३/१९
 नृपन्ह केरि आत्ता निसि नासी । १-२५४/१९
 नृपन्ह बिलोकि जगकु अकुलाने । १-२५०/६
 नृपहि नारि पहिं सयन कराई । १-१७०/८
 नृपहि प्रानप्रिय तुन्ह स्धुबीरा । २-७८/३
 नृपहि बचन प्रिय नहीं प्रिय प्राना । २-१७३/५

नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । २-४१७
 नृपहिं धीर धरि हृदय बिचारी । २-२७०७
 नेगी नेगि जोग सब लेहीं । १-३५२६
 नेगु मागि मुनिनायक लीन्ह । १-३५२२
 नेति नेति कहि जासु गुन । १-१२१०
 नेति नेति जेहि बेद निरुपा । १-१४३५
 नेम धर्म आवार तप । ७-१२११
 नेमु प्रेमु संकर कर देख । १-७५४
 नेवते सादर सकल सुर । १-६०१०
 नेहर जनमु भरव बरु जाई । २-२०१९
 नोइ निवृत्ति पात्र बिस्वासा । ७-१९६१२
 नौकारुद्ध चलत जग देख । ७-७२५
 नौमी तिथि मधु मास पुनीत । १-१९०१९
 नौमी भौम बार मधु मास । १-३३५
 नौमीड्य गिरिजापति गुण । ६-११०२४
 नौमीड्य जानकीशं रघुवरमनिशं । ७-११०१४
 नंदिगावै करि परम कुटीस । २-३२३१२
 नंदीमुख सराध करि । १-११३१०

प

पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी । २-२४३८
 पछिले पहर भूपु नित जागा । २-३७१९
 पछिले बाढ़हिं प्रथम जे । ७-३९१०
 पटइ मोह निस खगपति तोही । ७-६९१४
 पठे दीन्हि नारद सन सोई । १-३९९७
 पठए बालि होहिं मन मैला । ४-०५
 पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना । १-२८६७
 पठए मरतु मूष ननिअउरें । २-१७१२
 पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं । १-८२५
 पठवहु नाथ बेगि भट बंदर । ६-८४३

पठवा तुरत राम पहिं ताही । ३-११०
 पढहिं बेद मुनि मंगल बानी । १-२३३७
 पढहिं माट गुन गावहिं गायक । २-३६६
 पति अनुकूल प्रेम दृढ़ । १-९८८१०
 पति अनुकूल सदा रह सीता । ७-२३३
 पति गति देखि ते करहिं पुकास । ६-१०३३
 पतिदेवता सुतीय महुँ । १-२३५१०
 पति देवर सँग कुसल बहोरी । २-१०२३
 पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई । ३-४१९९
 पति परित्याग हृदयें दुरु भारी । १-६०७
 पति बचक परपति रति करई । ३-४१६
 पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु । ६-३५८
 पति रबिकुल कैरव बिपिन । २-९८१०
 पति सिर देखत मंदोदरी । ६-१०३१९
 पति हियें हेतु अधिक अनुमानी । १-१०६५
 पतिहि एकांत पाइ कह मैना । १-७०१२
 पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । २-१६७
 पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें । २-११५३
 पथिक अनेक मितहिं मग जाता । २-११९३
 पद अंबुज गहि बारहिं बास । ५-४८४
 पद कमल घोइ घड़ाइ नाव । २-११९
 पद कमल परागा रस अनुरागा । १-२१०१२
 पद कंज द्वन्द मुकुंद राम । ७-१२१६
 पद नख निरखि देवसरि हरषी । २-१००५
 पद पखारि जलु पान करि । २-१०१०
 पद पाताल सीस अज धामा । ६-१४१९
 पद राजीव बरनि नहिं जाहीं । १-१४७१९
 पद सरोज अनपायनी । ७-१४१
 पन बिदेह कर कहहिं हम । १-२४११०

पनु करि रघुपति भगति देख्यई । १-१०३।८
 पन्नगारि असि नीति । ७-१५।१
 पनव निस्तान घोर रव बाजहिं । ६-७।८
 पनिघट परम मनोहर नाना । ७-२।१२
 पय अहार फल असन एक । २-१८।१०
 पय मयोधि तजि अयध दिहाई । २-१३।१५
 परउँ कृष तुअ बचन पर । २-२१।०
 पर अकाजु लमि तनु परिहरहीं । १-३।७
 पर उपकार बचन मन काया । ७-१२०।१४
 पर उपकासी पुरुष जिमि । ३-४।०।०
 पर उपदेस कुसल बहुतेरे । ६-७।१२
 पर घर घालक लाज न भीरा । १-१६।४
 परब्रह्म रत अति दुष्ट । ६-११२।१
 परब्रह्मी की होहिं निरंका । ७-१११।२
 पर ब्रह्मी पर दार रत । ७-३१।०
 परबस जीव स्वबस भगवता । ७-७।७
 परबस सखिन्ह लखी जब सीता । १-२३३।५
 पर सुख देखि जरनि सोइ छई । ७-१२०।३४
 पर संपदा बिनासि नसाहीं । ७-१२०।११
 पर संपदा सकहु नहीं देखी । १-१३५।७
 परहित बस जिन्ह के मन माहीं । ३-३।०।१
 पर हित लागि तजइ जो देखी । १-८३।२
 पर हित चरिस धर्म नहीं भाई । ७-४।०।१
 पर हित हानि लाम जिन्ह केरें । १-३।२
 पर त्रिय लंपट कपट सयाने । ७-११।१
 परत पाँवड़े बसन अनूपा । १-३२७।२
 परदखिना करि करहिं प्रनामा । २-२०।१३
 परनकुटि प्रिय प्रियतम संगी । २-१३१।५
 परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । ५-५४।५

परम चतुरता श्रवन सुनि । ६-३।८
 परम तुम्हार राम कर जानिहि । २-७४।७
 परम दुखी भा पवनसुत । ५-८।०
 परम धर्ममय पय दुहि भाई । ७-११६।१३
 परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा । ७-१२०।२२
 परम प्रकास रूप दिन राती । ७-१११।३
 परम ब्रबल रिपु सीस पर । ६-१०।०
 परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । ३-१०।३३
 परम प्रीति कर जोरि जुग । ६-११४।४
 परम प्रीति समीप बैठारे । ७-१।३
 परम पुनीत न जाइ तजि । १-५।१०
 परम पुनीत मस्त आवरनू । २-३२।५
 परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । ७-१६।३
 परम प्रेम पूरन दोउ भाई । २-२४।७
 परम प्रेम मन पुलक सरीरा । १-११२।४
 परम प्रेममय मृदु नसि कीन्ही । १-२३।३
 परम मनोहर धरित अपारा । १-२०२।४
 परम मित्र तापस नृप कैरा । १-१६१।४
 परम-रम्य आरामु यहु । १-२३।०
 परम रम्य उत्तम यह धरनी । ६-१।३
 परम रम्य गिरिबरु कैलासु । १-१०४।८
 परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । १-२१।७
 परम सती असुसधिग नारी । १-२२।७
 परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । १-१३।५
 परम साधु परमारथ बिंदक । ७-१०४।४
 परम सुखद बलि त्रिविध बयासी । ६-११।७
 परम हानि सब कहैं बड़ लाहू । २-१८।७
 परमातमा ब्रह्म नर रूपा । ७-४।८
 परमातुर बिहंगपति । ७-६।०

परमानंद कृपायतन मन । ७-३४१०
 परमानंद पूरि मन राजा । १-११२१६
 परमानंद प्रेमसुख फूले । १-११५१५
 परमानंद मगन नृप । १-१८११०
 परमानंद मगन मन पुनि । ७-७१०
 पर्यो बीर बिकल उठाव दसमुख । ६-८२११०
 परसत पद पावन सोक नसावन । १-२१०११
 परसत मुदुल चरन अरुनारे । २-१२०१३
 परसा सीस सरोरुह पानी । ४-२२११०
 परसि चरन रज अचर सुखारी । २-१३८१२
 परसि जासु पद पंकज धूरी । १-२२२१५
 परसि राम पद पदुम परागा । २-११२१८
 परसु अछत देखउँ जिअत । १-२७११०
 परसुरामु तब राम प्रति । १-२८०१०
 परसुराम पितु अम्या राखी । २-१७३१७
 परहि कलप मरि नरक महुँ । १-६११०
 परा बिकल महि सर के लागे । ७-८११
 परिकर बौधि उठे अकुलाई । १-२४११६
 परिछेसु मोहि एक पखवासा । ४-५१६
 परिजन प्रजा सखिव सब अंबा । २-१७५१४
 परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । २-३२२१५
 परिजन मातु पितहि मिलि सीता । २-३१११५
 परिनाम मंगल जानि अपने । २-२००११२
 परिवार पुरजन मोहि राजहि । १-३३५१११
 परिहरि बयर देहु बैदेही । ६-४८११
 परिहरि मान मोह मद । ५-३११७
 परिहरि रामु सोय जग माहीं । २-१८११३
 परिहरि लखन रामु बैदेही । २-२७११४
 परिहरि सकल भरोस समहि । ३-६१४

परिहरि सोव रहहु तुम्ह सोई । १-१७०१४
 परिहरु दुसह कलेस सब । १-७४१०
 परी न राजहि नीद निसि । २-३८१०
 परी अधिक बस मनहुँ मराली । २-२४५१५
 परख बचन सुनि कादि असि । ५-११०
 परुसन जबहिं लाग महिपाला । १-१७२१५
 परुसन लगे सुआर सुजाना । १-३२८१३
 परे भूमि जिमि नम ते मूधर । ६-७०१७
 परे भूमि नहिं उठत उठाए । ७-४१७
 परेउ दुकाल बिपति बस । ७-१०४१४
 परेउ दंड जिमि धरनिगत । २-११०१०
 परेउ मुरछि महि लागत सायक । ६-५८११
 परेउ राउ कहि कोटि बिधि । २-३६१०
 परेउ लकुट इव घरनहिं लागी । ३-११२११
 पलक नयन फनि मनि जोहि माँती । २-२००१२
 पल्लवत फूलत नवल मित । ७-१२१२०
 पल्लैग पीठ तजि गोद हिंडोरा । २-५८१५
 पल्लैग मंजु मनिदीप जहँ । २-१०१०
 पवनतनय के घरित सुहाए । ५-२११६
 पवन तनय के बचन सुनि । ६-१२१४
 पवन तनय बल पवन समाना । ४-२११४
 पवनतनय मन मा अति क्रोधा । ६-४२१५
 पवन तनय सब कथा सुनाई । ४-११११
 पश्यति जं जोगी जतन करि । ३-२१११६
 पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारु । २-२७६१८
 पसु नाचत सुक पाठ प्रबोना । २-२१८१८
 पसु पच्छी नम जल थलचारी । १-८४१४
 पसु सुस्धेनु कल्पतरु रूखा । ६-२५१६
 पहियानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ । १-२१०१६

महिबान को केहि जान सबहि । १-३२०९
 पहिरहिं सज्जन बिमल उर । १-१११०
 पहिरें बरन बरन बर चीरा । १-३१४१२
 पहुनाई करि हरहु अम । २-२१३१०
 पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी । १-३३६१४
 पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा । १-१४२१५
 पहुँचे दूत राम पुर पावन । १-२८९११
 पत्नी सप्तसिंघेन्ह सोइ दीन्ही । १-९०१५
 प्रकृति पार प्रमु सब उर बासी । ४-४११४
 प्रगट चारि पद धर्म के । ४-१०३१४
 प्रगट बखानहिं राम सुमाऊ । ५-५११
 प्रगट सो तनु तव आगें सोवा । ४-१०१५
 प्रगटत दुरत करत छल मूरी । ३-२६११३
 प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा । १-१५६१४
 प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि । १-३४६१४
 प्रगटि न कहत महेसु कछु । १-५६१०
 प्रगटी गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी । ४-२२१४
 प्रगटी सुंदर सैल पर । १-६११०
 प्रगटे रामु कृतग्य कृपाला । १-४५१५
 प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारु । १-१११५
 प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा । १-८५६
 प्रगटेसि बिपुल हनुमान । ६-१००११३
 प्रकंड प्रकृष्ट प्रगल्भ परेश । ४-१०४१९
 प्रजा पाल अति बेटबिधि । १-१५३१०
 प्रजा सहित रघुबंसमनि । १-११०१०
 प्रति अवतार कथा प्रमु केरी । १-१२३१४
 प्रति उत्तर सडसिन्ह मनहु । ६-२३१३
 प्रति उपकार करी का तोरा । ५-३१६
 प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट । ४-२६१२२

प्रतिपालि आयसु कुलल देखन । २-१५०११०
 प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । ४-८०६
 प्रति संबत अति होइ अनंदा । १-४४१२
 प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक । ६-१०८१११
 प्रतिमा रुदाहिं पबिपात नभ । ६-१०११११
 प्रथम कथा सब मुनिवर बरनी । २-१४०१५
 प्रथम कीन्ह प्रमु धनुष टंकोरा । ६-६४१२
 प्रथम कुमत करि कपटु लैकेला । २-३०१३
 प्रथम गए जई रहीं भवानी । १-८८६
 प्रथम जन्म के घरित अब । ४-१६६
 प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए । २-४११
 प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई । २-२५४१४
 प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहु । १-११११५
 प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्ह । ४-१११५
 प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा । ४-५५१२
 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । ५-५०१४
 प्रथम बरात लगन तें आई । १-३०८१४
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । ६-८११०
 प्रथम बासु तमसा भयउ । २-१५०१०
 प्रथम भगति संतन्ह कर संग । ३-३४६
 प्रथम मोहँ मोहि बहुत बिगोवा । ४-१५६
 प्रथम राम भेंटी कैकेई । २-२४३१४
 प्रथम सो कारन कहहु विचारी । १-१०९१४
 प्रथमहिं अति अनुराम भवानी । ४-६३१४
 प्रथमहिं कहहु नाथ मतिघोरा । ४-१२०३
 प्रथमहिं गिरि बहु गृह रँवराए । १-९३१४
 प्रथमहिं जिन कहुँ आयसु दीन्ह । १-१८२१२
 प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा । ६-३४१२२
 प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा । ४-१२१०

प्रथमहिं बास दिए सब केही । २-२१३।८
 प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती । ३-१५।६
 प्रथमहिं भूप समर सब मारे । १-१६१।६
 प्रथमहिं मैं कहि सिव चरित । १-१०४।०
 प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । ७-१२५।२
 प्रनत काम सुरधेनु कल्पतरु । ७-३४।२
 प्रनतपालु पालिहि सब काहू । २-३१३।४
 प्रनतपाल रघुनायक । ५-२२।०
 प्रनतपाल रघुबंसमनि । ६-२०।०
 प्रनवउँ परिजन सहित बिट्टैहू । १-१६।११
 प्रनवउँ पवनकुमार खल । १-१७।०
 प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी । १-१५।२
 प्रनवउँ प्रथम भरत के चरन । १-१६।३
 प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा । १-१७।६
 प्रनवउँ सौइ कृपाल रघुनाथा । १-१०४।७
 प्रफुल्ल वंज लोचन । ३-३।४
 प्रबल अबिद्या कर परिवारा । ७-११७।३
 प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई । ७-१११।५
 प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । ५-४।१
 प्रबिसे सब निषंग मुहूँ जाई । ६-१०२।८
 प्रभा जाइ कहूँ भानु बिहाई । २-१६।६
 प्रमु अगाध सत कोटि पताला । ७-११।१
 प्रमु अजहूँ मैं पापी । ४-१।०
 प्रमु अपने अबिबेक ते । ७-१३।४
 प्रमु अपने नीचहु आदरहीं । २-२८।३
 प्रमु अवतार कथा पुनि गाई । ७-६३।१
 प्रमु अग्या अपेत श्रुति गाई । ५-५८।८
 प्रमु अग्या धरि सीस । ६-१७।०
 प्रमु आगवन जनाव जनु । ७-०।४

प्रमु आगवनु श्रवन सुनि पावा । ३-१।३
 प्रमु आदरहिं प्रेमु पहिचानी । २-२३।२
 प्रमु आयसु जेहि कहूँ जस अहई । ५-५८।४
 प्रमु आसन आसीन भरि । ३-३।०
 प्रमु आसुतोष कृपाल सिव । १-८६।१२
 प्रमु उठाइ उर लायउ । ७-१८।४
 प्रमु कर पंकज कपि कैं सीसा । ५-३२।२
 प्रमु करि कृपा पाँवरी दीन्हौ । २-३१५।४
 प्रमु करुनामय परम बिबेकी । २-१६।५
 प्रमु कह गरल बंधु ससि केरा । ६-११।१
 प्रमु कह देन सकल सुख सही । ७-८३।४
 प्रमु कहूँ छौंड़ेसि सूल प्रबंधा । ६-७५।७
 प्रमु कीं कृपा भयउ सब काजू । ५-२१।४
 प्रमु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि । ६-१०१।४
 प्रमु कृत सीस कपीस उछंगा । ६-१०।५
 प्रमु के बचन श्रवन सुनि । ६-१०६।०
 प्रमु के बचन सीस धरि सीसा । ६-१०८।१
 प्रमु कौतुकी प्रनत हितकारी । १-१३१।८
 प्रमु गुन ग्राम गनत मन माहीं । २-३२१।२
 प्रमु गुन हृदयै सराहहिं । ५-५१।०
 प्रमु चरित काहूँ न लखे नम । ६-१०८।१२
 प्रमु छन मुहूँ माया सब काटी । ६-१६।१
 प्रमु छण्डेउ करि छोह को । ३-२।०
 प्रमु जब जात जानकी जानी । १-२३।४।२
 प्रमु जानत सब बिनहिं जनारै । १-१६।१।२
 प्रमु जानी कैकई लजानी । ७-१।१
 प्रमु जे मुनि परमारथबादी । १-१०७।५
 प्रमु जो दीन्ह सो बरु मैं पावा । ३-१०।२।७
 प्रमु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । ६-११७।७

प्रमु तन चितइ प्रेम तन ठाना । १-२५८।७
 प्रमु तब मोहि बहु भौति प्रबोधा । १-१०८।६
 प्रमु तरु तर कपि डार पर । १-२९।६
 प्रमु तव आश्रम आएँ । ७-१४।७
 प्रमु ताते उर हतइ न तेही । ६-१८।१३
 प्रमु तुम्हार कुलगुर जलधि । ५-५०।०
 प्रमु तोषेउ सुनि संकर बघना । १-७६।५
 प्रमु देखि हरष बिषाद उर । ६-१००।१९
 प्रमु दोउ चापरखंड महि डारे । १-२६।१९
 प्रमु नारद संबाद कहि । ७-६६।०
 प्रमु निमिष महुँ रिपु सर । ३-१९।२४
 प्रमु पद अंकित अवनि बिसेयी । २-३०७।७
 प्रमु पद कमल गहे अकुलाई । २-३००।६
 प्रमु पद कमल सीस तिन्ह नाए । ६-४५।१९
 प्रमु पद पदुम पराग दोलाई । २-३००।१९
 प्रमु पद पदुम बंदि दोउ भाई । २-३१७।७
 प्रमु पद प्रीति न सामुझि नीकी । १-८।५
 प्रमु पद पंकज नावहि सीसा । ५-३४।९
 प्रमु पद बंदि सीस रज सखी । २-२२८।६
 प्रमु पद रेख बीव बिच सीता । २-१२२।५
 प्रमु पद सपथ कहउँ सति भाऊ । २-२६८।८
 प्रमु पवान जाना बैदेहीं । ५-३४।६
 प्रमु परन्तु सुठि होति डिठाई । १-१४१।५
 प्रमु पहिचानि परेउ गहि चरना । ४-१।५
 प्रमु पाछेँ लछिमन बीरासन । ६-१०।८
 प्रमु पितु बघन मोह बस पैली । २-२१७।५
 प्रमु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । २-२१७।१९
 प्रमु प्रताप उर धरि रनधीरा । ६-७४।१२
 प्रमु प्रताप उर सहज असंका । ६-१७।२

प्रमु प्रताप कहि सब समुझाए । ६-३८।६
 प्रमु प्रताप तेँ गरुडहि । ५-१६।०
 प्रमु प्रताप बडवानल भारी । ६-०।२
 प्रमु प्रताप मै जाब सुखाई । ५-५८।७
 प्रमु प्रनामु करि दीन्ह भरोत्तो । २-३२०।८
 प्रमु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । २-२५६।६
 प्रमु प्रलाप सुनि कान विकल । ६-६१।०
 प्रमु प्रसन्न जाना हनुमाना । ५-३२।६
 प्रमु प्रसन्न मन सकुच तजि । २-२६१।०
 प्रमु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं । २-३।४
 प्रमु प्रसाद सुचि सुमग सुबासा । २-१२८।१९
 प्रमु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । २-२९२।२
 प्रमु प्रेरित कपि मालु सब । ६-११८।६
 प्रमु प्रेरित लछिमन पहिराए । ७-१६।७
 प्रमु बचनमृत सुनि न अधाऊँ । ७-८७।२
 प्रमु बलु पाई मालु कपि धाए । ६-१६।४
 प्रमु बहु बार बाहु सिर हए । ६-११।१२
 प्रमु बिबाहीं जस मयउ उछाहू । १-३६०।६
 प्रमु बियोग लवलेस समाना । २-६५।६
 प्रमु बिलोकि मुनि नयन जुडाने । १-१३१।४
 प्रमु बिलोकि मुनि मन अनुरागा । ७-११।१९
 प्रमु बिलोकि सर सकहिं न डारी । ३-१८।१९
 प्रमु बिलोकि हरषे पुरबासी । ७-५।३
 प्रमु ब्रह्मन्यदेव मै जाना । १-२०८।४
 प्रमु बंधन समुझत बहु भौती । ६-५७।६
 प्रमु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं । १-२१७।२
 प्रमु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । ५-५८।५
 प्रमु भाव गाहक अति कृपाल । ७-११।१२
 प्रमु मनसहिं लयलीन मनु । १-३१६।०

प्रमु मारा बलवर्त भवानी । ७-६१।१०
 प्रमु मिलत अनुजहि सोह भो पहिं । ७-४।११
 प्रमु मुख कमल बिलोकत रहहीं । ७-२४।२
 प्रमु मुसुकान समुझि अमिमाना । ६-१२।८
 प्रमु रघुपति तजि सेइअ काही । ७-१२२।३
 प्रमु रूख देखि बिनय बहु भाषी । ७-१८।५
 प्रमु लछिमनहि कहा समुझाई । ३-२६।८
 प्रमु सक त्रिभुअन मारि जिआई । ६-११३।४
 प्रमु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । ७-१६।४
 प्रमु सन्मुख धार खल कैसें । ६-८५।४
 प्रमु सप्रेम पछितानि सुहाई । २-१।८
 प्रमु समर्थ कौसलपुर राजा । ३-१६।१४
 प्रमु समर्थ्य सर्वग्य सिव । १-१०७।०
 प्रमु सर्वग्य कीन्ह अति । ७-१२।१
 प्रमु सर्वग्य दास निज जानी । १-१४४।५
 प्रमु सिय लखन बैठि बट छाहीं । २-३२०।३
 प्रमु सुजस संगति भनिति भल्ले । १-१।१३
 प्रमु सोइ राम कि अपर । १-४६।०
 प्रमु सोभा सुख जानहिं नयना । ७-८७।४
 प्रमु संदेसु सुनत बैदेही । ५-१४।८
 प्रमु हनुमंतहि कहा बुझाई । ६-१२०।१
 प्रमुता तजि प्रमु कीन्ह सनेह । २-८।७
 प्रमुता प्रथम बिचारि बिचारी । ७-८२।६
 प्रमुहि चितइ पुनि वितव महि । १-२५।८
 प्रमुहि जोहारि बहोरि बहोरी । २-१३।४।८
 प्रमुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी । १-१६।३।८
 प्रमुहि देखि सब नृप हिय हारे । १-२४।४।१
 प्रमुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे । ६-३।७
 प्रमुहि बिलोकि चला नृग भाजी । ३-२६।१०

प्रमुहि सहित बिलोकि बैदेही । ६-१२०।११
 प्रमुहि सेवकहि समरु । १-२८।१।०
 प्रमुदित वीरथराज निवासी । २-२०।५
 प्रमुदित परम दरिद्र जनु । १-३४।५।०
 प्रमुदित पुर नर नारि । २-२३।०
 प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे । १-३२।१।१०
 प्रमुदित मुनिन्ह भौवरीं फेरीं । १-३२।४।७
 प्रलंब बाहु विक्रम । ३-३।५
 प्रसन्न उमा के सहज सुहाई । १-११०।६
 प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा । २-स्त्रो०।२।११
 प्रसीद मे नमामि ते । ३-३।२२
 प्रह्लादपति जनु विविध तनु । ६-८०।१४
 प्राकृत सिसु इव लीला । ७-७७।४
 प्राची दिति ससि उयउ सुहावा । १-२३६।७
 प्रात कहा मुनि सन रघुराई । १-२०९।१
 प्रात नहाइ प्रमुहि लिर नाई । २-२५२।८
 प्रात पार भए एकहिं खेवाँ । २-२२०।३
 प्रात प्रातकृत करि रघुराई । २-१०४।२
 प्रात पुनीत काल प्रमु जागे । १-३५।७।५
 प्रात लेइ जो नाम हमारा । ५-६।८
 प्रात होत प्रमु सुमट पठाए । ६-८४।४
 प्रातकाल उठि के रघुनाथा । १-२०४।७
 प्रातकाल सरऊ करि मज्जन । ७-२५।१
 प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । १-३२९।४
 प्रातक्रिया करि तात पहिं । १-३५।८।०
 प्रातक्रिया करि मातु पद । २-२०२।०
 प्रात कंठगत मयउ मुआतु । २-१५३।१
 प्रात तजत प्रगटेसि निज देहा । ३-२६।१६
 प्रात तें अधिक रामु प्रिय मोरें । २-१४।८

प्राण प्राण के जीव के । २-२९०।०
 प्राणनाथ करुणायतन । २-६४।०
 प्राणनाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । २-६४।६
 प्राणनाथ देवर सहित । २-१०३।०
 प्राणनाथ प्रिय देवर साथी । २-९८।१
 प्राणनाथ रघुनाथ गोसाईं । २-१९८।८
 प्राणहु ते प्रिय लागत । १-२०४।०
 प्राबिट सरद पयोद घनेरे । ६-४५।९
 प्रिय परिजनहि मिली बेटेही । २-२८५।१
 प्रिय परिवार पिता अरु माता । १-४२।८
 प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । १-३५३।७
 प्रियबादिनि सिख दीन्हिउँ तोही । २-१४।१
 प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहिं । ६-८।८
 प्रिय लागिहि अति सबहि मम । १-१०।६
 प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रागी । २-१६।५
 प्रिया प्राण सुत सरबसु मोरें । २-२५।५
 प्रिया बचन कस कहसि कुनींती । २-३०।५
 प्रिया बचन मृदु सुनत नृपु । २-१५४।०
 प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । २-१४०।७
 प्रिया सोवु परिहरहु सबु । १-४१।०
 प्रिया हास रिस परिहरहि । २-३२।०
 प्रीति करहिं जाँ तीनिउ माई । ७-१२०।३१
 प्रीति करहु रघुबीर पद । ६-१५।४
 प्रीति न हृदयें समाइ । ६-५९।०
 प्रीति परम बिलोकि रघुसाईं । ६-१२०।१२
 प्रीति पुनीत भरत के देखी । १-२९०।२
 प्रीति प्रतीति बचन मन करनी । २-३२०।५
 प्रीति प्रनय बिनु मद ते गुनी । ३-२०।११
 प्रीति बिना नहिं भगति दिडाई । ७-८८।८

प्रीति विरोध समान सन । ६-२३।१
 प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । ७-४५।७
 प्रीति सहित सब मेटे । ५-२९।०
 प्रेम अमिअ मंदरु बिरहु । २-२३८।०
 प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर । २-२६९।०
 प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । १-२९४।३
 प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई । २-५१।५
 प्रेम प्रमोदु बिनोदु बडाई । १-३५४।४
 प्रेम पुलक तन हृदयें उछाहू । १-३९३।३
 प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । २-४२।५
 प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी । २-४।२
 प्रेम पुलकि तन मुदित मन । २-२।०
 प्रेमविबस नर नारि सब । १-३३७।०
 प्रेमविबस परिवारु सबु । १-३३८।०
 प्रेम विबस मुख आव न बानी । १-१०३।३
 प्रेम भगति अनपायनी । ७-३४।०
 प्रेम भगति जल बिनु रघुसाईं । ७-४८।६
 प्रेम भगति जो बरनि न जाई । १-३५।६
 प्रेम मगन अस राजसमाजू । २-२२४।८
 प्रेम मगन कौसल्या निसि । १-२००।०
 प्रेम मगन तेहि समय सब । २-२४४।०
 प्रेम मगन मनु जानि नृपु । १-२१५।०
 प्रेम मगन मुख बचन न आवा । ३-३३।९
 प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । ७-१०९।८
 प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी । २-३०९।८
 प्रेम समेत रायें सबु लीन्हा । १-३०५।३
 प्रेम सहित प्रमु खाए । ३-३४।०
 प्रेम सहित मुनि नारद बरनि । ७-५१।०
 प्रेमाकुल प्रमु मोहि बिलोकी । ७-८२।३

प्रेमानुर सब लोग निहारी । ७-१४
 प्रेरित काल बिधि मिरि । ७-१०१४
 प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा । ३-११९
 प्रेरित राम चलेउ सो । ७-४१४
 प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता । ३-४२७
 प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़वा । ७-१०१५
 प्रौढ़ि सुजन जनि जानहि जन की । १-२२३
 पाइ असीस बहुरि सिरु नाई । १-३३६४
 पाइ असीस महीसु अनंदा । १-३३०५
 पाइ उमा अति गोप्यमपि । ७-६९१४
 पाइ रूपट जलु अंकुर जामा । २-२२६
 पाइ रजायसु नाइ सिरु । २-२२१०
 पाइ न केहि गति पतित पावन । ७-१२१९
 पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला । २-२६६५
 पाषंडी हरि पद बिमुख । १-११४१०
 पाछिल दुखु न हृदयें अस व्यापा । १-६२६
 पाछिल मोह समुझि पछिताना । ७-१२३
 पाछें पवन तनय सिरु नावा । ४-२२१९
 पाट कीट तें होइ । ७-१५१४
 पाणौ नाराचचार्य कपिनिकरयुत । ७-श्लोक-१३
 पाणौ वाणाशरारान । ३-श्लोक-२१२
 पाणौ महाशायक चारुचार्य । २-श्लोक-३१२
 पाथोद गात सरोज मुख । ३-३१५
 पानि जोरि आगें भइ ठाडी । ३-३४१९
 पानि सरोज सोह जयमाला । १-२४७६
 पानिग्रहन जब कीन्ह महेशा । १-१००३
 पाप उलूक निकर सुखकारी । ३-४३७
 पाप करत निसि बासर जाही । २-२५०५
 पाप पहार प्रगट भइ सोई । २-३३१२

पाप पुंज कुंजर मृगराजू । २-३२५७
 पापवंत कर सहज सुभाऊ । ५-४३३
 पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं । ४-२८३
 पायो परम विश्रामु राम । ७-१२१२०
 पायो विनीषन राज तिहुँ पुर । ६-१०५११०
 पाय पखारि बैठि तरु छाहीं । २-६६३
 पाय पखारि सकल अन्हवाए । १-३५१३
 पारबतिहि निरमयउ जेहिं । १-७१०
 पारबती तपु कीन्ह अपासा । १-८८४
 पारबती पहिं जाइ तुम्ह । १-७७१०
 पारबती मल अवसरु जानी । १-१०६२
 पारबती महिमा सुनत । १-७३१०
 पारबती सम पतिप्रिय होहू । २-११७१९
 पालइ पोषइ सकल अँग । २-३१५१०
 पालन सुर धरनी अदभुत करनी । १-१८५३
 पालव बैठि पेड़ु एहिं काटा । २-४६५
 पालेहु प्रजहि करम मन बानी । २-१५१४
 पाव नारकी हरिपदु जैसें । १-३३४६
 पावक जरत देखि हनुमंता । ५-२४८
 पावक प्रबल देखि बैटेही । ६-१०८६
 पावकमय ससि सत्रवत न आगी । ५-१११९
 पावक सर छोड़ैउ रघुबीरा । ६-१०३
 पावक सर सुबाहु पुनि मारा । १-२०१५
 पावक साखी देइ करि । ४-४१०
 पावन आश्रम गवनु किय । ३-२४१०
 पावन जस कि पुन्य बिनु होई । ७-१११७
 पावन पर्वत बेद पुराना । ७-१११५३
 पावन पाथ पुन्यथल राखा । २-३०९३
 पावन मृग मारहिं जियें जानी । १-२०४२

पावन पर्यं तिहुँ काल नहाहीं । २-२४८१३
 पावनिहार बिरचि जनु । १-२५११०
 पावहिं मोह बिमूढ जे । ३-०१०
 पावा परम तत्व जनु जोगी । १-३४९१६
 पावों में तिन्ह के गति घोरा । २-१६७१४
 पाहन कुमि जिमि कठिन सुभाऊ । २-५९१२
 पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं । २-२३९१२
 पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं । ६-८११७
 पिअत नयन पुट रूयु पियूषा । २-११०३६
 पिअर उपरमा काखासोती । १-३२६१७
 पिक रथांग सुक सारिका । २-८३१०
 पितर पारु करि प्रमुहि पुनि । २-१०११०
 पितहि ख्यइ खातेउँ पुनि तोही । ६-२३११०
 पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । २-४२१५
 पिता जनक जग बिदित प्रमाऊ । २-९०१६
 पिता जनक टेउँ पटतर केही । २-१९८१६
 पिता जनक भूपाल मनि । २-५८१०
 पिता बचन लजि राज उटारो । १-४७१८
 पिता बचन में नगर न आवउँ । ६-१०५१४
 पिता बधे पर मारत मोही । ४-२५१५
 पिता भवन उत्सव परम । १-६९१०
 पिता भवन जब गई भवानी । १-६२१९
 पिता मंदमति निंदत तेही । १-६३१६
 पिता दीन्ह मोहि कानन राजू । २-५२१६
 पितु असीस आयसु मोहि दीजे । २-७६१३
 पितु आगमनु सुनत दोउ नाई । १-३०६१४
 पितु आपसु पालिहिं दुहु नाई । २-३१४१४
 पितु आयस भूषन बसन । २-१६५१०
 पितु कह सत्य सनेहँ सुबानी । २-२८६१५

पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी । २-८११५
 पितु पद गहि कहि कोटि । २-१५१०
 पितु बनदेत मातु बनदेवी । २-५५१३
 पितु वैभव बिलास में डीठा । २-१७११
 पितु मातु छिय परिवार पुर । २-७४११०
 पितु समीप तब जाएहु मैआ । २-५२१२
 पितु समेत कहि कहि निज नामा । १-२६८१२
 पितु सुरपुर बन रघुबर केतू । २-१६३१७
 पितु सुरपुर सिय रामु बन । २-१७७१०
 पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । २-१६१२
 पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । २-१७०१९
 पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा । ६-३५१३
 पिय हिय की सिय जाननिहारी । २-१०११३
 पीड़हिं संतत जीव कहूँ सो । ७-१२११४
 पीत चीतनीं सिरनिह सुहाई । १-२४२१७
 पीत जय्य उपवीत सुहाए । १-२४३१२
 पीत जनेउ महाछबि देई । १-३२६१५
 पीत झीनि झगुली तन सोही । ७-७६१७
 पीत झगुलिआ तनु पहिराई । १-१९८११९
 पीत पुनीत मनोहर धोती । १-३२६१३
 पीत बसन परिकर कटि भाष्य । १-२९८१३
 पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । ७-५६१५
 पुछिहहिं दीन दुखित सब माता । २-१४५१९
 पुष्य पापहरें सदा शिवकरें... । ७-१३०१७
 पुन्य एक जग महुँ नहिं दूजा । ७-४४१७
 पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा । २-३१११२
 पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । ७-१८१९
 पुन्य पुंज बिनु मिलाहिं न संता । ७-४४१६
 पुन्य पुंज मग निकट निवासी । २-११३१४

पुन्य पुंज सब धन्य अस । २-१३८।०
 पुनि अस कह्यै कहसि घरफोरी । २-१३।८
 पुनि आउब एहि बेरिआँ काली । १-२३३।६
 पुनि आए जहँ मुनि सरमंगा । ३-६।८
 पुनि आयउ प्रभु पहिँ बलवाना । ६-६५।८
 पुनि उठि झपटहिँ सुर आराती । ६-३३।१३
 पुनि उठि तेहिँ मारेउ हनुमंता । ६-६४।८
 पुनि उरं राखि राम तिसुरुपा । ७-११३।१४
 पुनि कहु लखन कही कटु बानी । २-१५।४
 पुनि कपि कही नीति बिधि नाना । ६-३४।१९
 पुनि कर गहि कंचन के खंभा । ६-४३।६
 पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा । ३-११।१२
 पुनि करुनानिधि भरतु हैकारे । ७-१०।४
 पुनि कह कटु कटोर कैकेई । २-३४।३
 पुनि कह भूपति बचन सुहाए । १-३३।१५
 पुनि कह राउ सुहृद जियँ जानी । २-२६।१९
 पुनि कह खबरि बिभीषन केरी । ५-५२।४
 पुनि कहु मालु कौस कटकाई । ५-५२।६
 पुनि कृपाल पुर बाहेर गए । ७-४९।३
 पुनि कृपाल तियो बोलि निनादा । ७-११।१९
 पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा । ६-४६।३
 पुनि कोदंड बान गहि धाए । ६-८३।८
 पुनि गहे पद पाथोज मयनी । १-१००।१२
 पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लोन्हे । २-१०३।८
 पुनि चरनानि मेले सुत झारी । १-२०६।५
 पुनि जननी चरनानि दोउ ग्राता । २-२४४।४
 पुनि जल दीख रूप निज पावा । १-१३५।१९
 पुनि जेवनार भई बहु भाँती । १-३२७।१९
 पुनि जेहि कहँ जस कह्य गोसाई । २-२५७।५

पुनि तिन्ह के गृह जेबई जोऊ । १-१६७।७
 पुनि दसकंठ कुद्ध होइ । ६-१३।०
 पुनि देखब रघुबीर बिआहू । १-३०९।६
 पुनि देखी सुरसरी पुनीता । ६-११९।६
 पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । ६-११९।१९
 पुनि दंडवत करत दोउ भाई । १-३०७।३
 पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । ६-६८।५
 पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । २-८०।८
 पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची । १-२८९।६
 पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही । ४-१।७
 पुनि धीरजु धरि कुँअरि हैकारी । १-३३६।६
 पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ । २-३।५
 पुनि नम सर मम कर निकर । ६-२२।४
 पुनि नल नीलहिँ अबनि पछारेसि । ६-६४।९
 पुनि नाना बिधि मई तराई । ४-७।८
 पुनि नारद कर मोह अपारा । ७-६३।८
 पुनि निज जटा राम बिबराए । ४-१०।७
 पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा । ६-८२।५
 पुनि पठयउ तेहिँ अच्छकुमारा । ५-१७।७
 पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना । १-३।१९
 पुनि प्रभु जाइ त्रिबेनी । ६-१२०।४
 पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा । १-१०९।५
 पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी । १-११०।१९
 पुनि प्रभु कुंभकरन पहिँ गयऊ । १-१७६।६
 पुनि प्रभु गए सरोबर तीरा । ३-२८।६
 पुनि प्रभु गीघ क्रिया जिमि कीन्ही । ७-६५।७
 पुनि प्रभु पंचवटी कृत बासा । ७-६५।२
 पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । ६-१०६।१९
 पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ । ४-२।०

पुनि प्रमु हरणि सत्रुहन । ७-५१०
 पुनि प्रयास बिनु सो तनु । ७-१०१।घ
 पुनि परिहरे सुखानेउ परना । १-४३।७
 पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई । २-२८६।६
 पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । १-१५१।६
 पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । ४-२५।६
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । ५-३१।८
 पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । २-२४१।४
 पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । ७-९२।४
 पुनि पुनि चितइ चरन वित दीन्ह । ४-८।३
 पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा । १-५४।८
 पुनि पुनि प्रमु कह सोबहु ताता । १-२२५।८
 पुनि पुनि प्रमु काटत मुज सीसा । ६-११।१३
 पुनि पुनि प्रमु पद कमल । १-१११।०
 पुनि पुनि प्रमुहि चितव नरनाहू । १-२१६।५
 पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ । २-१४१।१
 पुनि पुनि बिनय करिअ कर जौरी । २-११७।२
 पुनि पुनि बंदत गुरु चरन । १-३५२।०
 पुनि पुनि मिलत भरत सुनि । ७-२।०
 पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना । १-१०१।७
 पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगाई । १-३३६।८
 पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं । १-१३४।२
 पुनि पुनि भोहि देखाव कुठारु । १-२७२।२
 पुनि पुनि रामहि चितव सिय । १-३२६।०
 पुनि पुनि सगुन पच्छ मै रोपा । ७-१११।१२
 पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । ७-८५।८
 पुनि पुनि सिंधनाद करि भारी । १-१८१।८
 पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं । १-३३३।३
 पुनि पुनि सीय राम छबि देखी । १-३४८।४

पुनि पुनि हृदयें बिचारु करि । १-५२।०
 पुनि पुष्पक चट्टि कपिन्ह समेता । ७-६७।४
 पुनि फिरि राम निकट सो आई । ३-१६।१७
 पुनि बसिष्ट पद सिर तिन्ह नाए । १-३०७।५
 पुनि बसिष्टु मुनि कौसिकु आए । १-३५८।३
 पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई । १-१५१।३
 पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता । १-१४।१
 पुनि भानुकुलमूषन सकल । १-३२५।११
 पुनि मन बचन कर्म रघुनायक । १-१७।१
 पुनि मम धाम पाइहहु । ६-११६।५
 पुनि ममता जवास बहुताई । ३-४३।६
 पुनि माया सीता कर हरना । ७-६५।६
 पुनि मुनिगन दुहुँ माइन्ह बंदे । २-२४।१२
 पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला । १-२३१।४
 पुनि मै कहेउँ नाइ पद सीसा । ७-११०।८
 पुनि मंदिर नमबानी मइ । ७-१०८।७
 पुनि मंदिर महीं बात जनाई । ७-२।२
 पुनि रघुनाथ चले बन आगे । ३-८।५
 पुनि रघुपति निज मंदिर गए । ७-४१।३
 पुनि रघुपति बहुबिधि समुझाए । ७-६४।७
 पुनि रघुपति सब सरखा बोलाए । ७-७।५
 पुनि रघुपति सैं जुझी लाग । ६-७२।१०
 पुनि रघुबीर निषंग महुँ । ६-६८।०
 पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी । ७-११५।४
 पुनि रामहि बिलोकि हियें हरये । १-३१४।८
 पुनि रावन कपि हतेउ पवारी । ६-१४।४
 पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । ६-७३।८
 पुनि लछिमन उपदेस अनुषा । ७-६५।३
 पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषन । ६-७२।१

पुनि सकोप टस धनु कर लीन्हें । ६-१७११०
 पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा । ६-३२३
 पुनि सत सर मारा उर माहीं । ६-८२७
 पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । ७-१२०११
 पुनि सब कथा बिनीषन कही । ५-७३
 पुनि सबही बिनवडैं कर जोरी । १-३३२
 पुनि सर्वग्य सब उर बासी । ५-४१३
 पुनि सादर बोले मुनि नारट । ३-४४४
 पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई । २-३२२२
 पुनि सिध चरन घूरि धरि सीसा । २-११०४
 पुनि सिध राम लखन कर जोरी । २-११११
 पुनि सिरु नाइ ब्रैट निज आसन । ५-३७३
 पुनि सीतहि खोजत हौ भाई । ३-३२४
 पुनि सुग्रीव मिताई बालि । ७-६६१०
 पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई । ४-११६
 पुनि संभारि उठी सो लंका । ५-३५
 पुनि हरि हेतु करन तप लागे । १-१४३२
 पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । १-२६४११
 पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर । ७-२६४
 पुर नर नारि सकल पहिराए । १-३५०६
 पुर नर नारि सनाथ करि । ७-१४
 पुर नर नारि सुभग सुवि संता । १-२१२६
 पुर नर भरत प्रीति मैं गाई । ३-०११
 पुर नारि सकल पसारि अंचल । १-३१०१११
 पुर नारि सुर सुंदरैं बरहि । १-३२६११२
 पुर पगु धारिअ देइ असीसा । २-३१८३
 पुर पूरब दिसि गे टोउ भाई । १-२३३११
 पुर पैठत रावन कर बेटा । ६-१७३
 पुर बालक कहि कहि मृदु बचना । १-२२३८

पुरबासिन्ह तब राय जोहारे । १-३४७१५
 पुरबासिन्ह देखे टोउ भाई । १-२४०८
 पुरबासी सुनि चलिहि बराता । १-३३२११
 पुर बाहेर सर सस्ति समीपा । १-२१३४
 पुर बैकुंठ जान कह कोई । १-१८४२
 पुर रघुवारे देखि बहु कपि । ५-३०
 पुर रम्यता राम जब देखी । १-२१११५
 पुर सोमा अवलोकि सुहाई । १-१३८
 पुर सोमा कछु बरनि न जाई । ७-२८८
 पुर सोमा संपति कल्याना । ७-८८
 पुरइनि सघन जोट जल । ३-३१४
 पुरइनि सघन चारु चौपाई । १-३६४
 पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा । १-१५११५
 पुर जन आवत अकनि बराता । १-३४३३
 पुरजन करि जोहारु घर जाए । २-८८६
 पुरजन जननी भरत हित । २-२५७०
 पुर जन नारि मगन अति प्रीती । २-२५१११
 पुरजन परिजन गुर पितु माता । २-१११६
 पुरजन परिजन जातिजन । १-३०८१०
 पुरजन परिजन प्रजा गोसाई । २-३१३११
 पुरजन परिजन सकल निहोरी । २-१५१११
 पुरजन पाइ मुनीस नियोगू । २-२४४८
 पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे । २-१११३
 पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु । २-१५८१०
 पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें । ७-१०८११०
 पुरी विराजति राजति रजनी । १-३५७३
 पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । ६-३३११४
 पुरुष त्यागि सक नारिहि । ७-११५४
 पुरुष नपुंसक नारि वा । ७-८७४

पुरुष प्रताप प्रबल सब मीती । ७-११४।१६
 पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि । १-११६।०
 पुरुषसिंह दोउ बीर । १-२०८।०
 पुलक गात लोचन सजल । १-३१५।०
 पुलक गात लोचन सजल । ७-६९।७
 पुलक गात हिय रामु सिय । २-२१०।०
 पुलक गात हिय सिय रघुबीरु । २-३२५।१
 पुलक बाटिका बाग बन । १-३७।०
 पुलक सरीर नयन जल । ६-३५।७
 पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन । २-२८०।६
 पुलकि गात बोले बचन । १-२५१।०
 पुलकि स्त्रेम परसपर कहहीं । २-६।५
 पुलकि सरीर सनों मए ठाढ़े । २-२५१।३
 पुलकित गात अत्रि उठि धाए । ३-२।५
 पुलकित तन गदगद गिसैं । ६-११४।४
 पुलकित तन मुख आव न बचना । ७-१।६
 पुत्रवती जुवती जग सोई । २-७४।१
 पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ । २-२८६।२
 पूछत अति सनेहैं सकुचाई । १-२८९।८
 पूछत उतरु देव मैं तेही । २-१४५।४
 पूछत जानि अजान जिमि । १-२६९।०
 पूछत प्रमुहि सकल सकुवाही । ७-३५।२
 पूछन जोगु न तनय तुम्हारे । १-२११।१
 पूछा मुनिहि सिला प्रमु देखी । १-२०९।१२
 पूछिहि जबहिं लखन महतारी । २-१४५।२
 पूछेउ तब सिद्धं कहेउ बखानी । १-१०।५
 पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । २-१२।२
 पूछें कोउ न उतरु देई । २-३७।५
 पूछ बुझाइ खोड श्रम । ५-२६।०

पूछहीन बनर तहैं जाइहि । ५-२४।१
 पूछत सखाहि सो ठाउँ देखाऊ । २-११७।६
 पूछिहि जबहिं राउ दुख दीना । २-१४५।६
 पूछी कुसल कुसल पद देखी । ५-२८।४
 पूछी कुसल नाथ अब । ५-२९।०
 पूछे मातु मतिन मन देखी । २-७२।५
 पूछेउ गुनिन्ह रेख तिन्ह खींची । २-२०।७
 पूछिहु नाथ राम कटकाई । ५-५३।५
 पूछेहु मोहि कि रहीं कहैं । २-१२७।०
 पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । १-१११।७
 पूछिहु राम कथा अति पावनि । ७-१२२।५
 पूजन गौरि सखीं तै आई । १-२३०।२
 पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें । २-७३।७
 पूजहिं प्रमुहि देव बहु बेधा । १-५४।३
 पूजहिं माधव पद जलजाता । १-४३।५
 पूजहु गनपति गुर कुलदेव । २-५।८
 पूजा कीन्ह अधिक अनुसगा । १-२२७।६
 पूजि मितर सुर अतिथि गुर । २-२७१।०
 पूजिअ विप्र सौल गुन हीना । ३-३३।२
 पूजिहि सब मनकामना । २-१०३।०
 पूजा ग्रामदेवि सुर नागा । २-७।५
 पूजे गुर पद कमल बहोरी । १-३५५।८
 पूजे जनक देव सम जानें । ५-३२०।८
 पूजे भूपति सकल बराती । १-३२०।३
 पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । २-५५।७
 पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारे । २-१३।५
 पूरन काम राम अनुसगी । ७-१२४।५
 पूरनकाम राम सुख ससी । ३-२१।१७
 पूरन राम सुपेम पियूषा । २-२०८।५

पूरब दिसा बिलोकि प्रमु । ६-१११ख
 पूरब दिसि गिरिगुहा निवासी । ६-१११
 पूरुब कल्प एक प्रमु । ७-१६१ख
 पुरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका । ७-३०१२
 पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा । १-८७१६
 पेड़ काटि तैं पालउं सींचा । २-१६०१८
 प्रेरित काल बिधि गिरि.... । ७-१०११ख
 पैठत नगर सचिव सकुचाई । २-१७६१३
 पैहहि सुख सुनि सुजन सब । १-८१०
 पंक न रेमु सोह असि धरनी । ४-१५१७
 पंच कबल करि जेवन लाने । १-३२८११
 पंच कहें सिवैं सती बिबाही । १-७८१८
 पंच सबद धुनि मंगल गाना । १-३१८१३
 पंचबटी सो गइ एक बारा । ३-१६१४
 पंचबटी बसि श्रीरघुनायक । ३-२०१४
 पंथ कहत निज भगति अनुष । ३-१११५
 पंथ जात सोहहिं मतिधीरा । १-१४२१४
 पंष सरहि जाहु रघुराई । ३-३५१११

फ

फटिक सिला अति सुभ सुहाई । ४-१२१६
 फटिक सिला बैठे ह्यो भाई । ५-२८१८
 फरइ कि कौदव बालि सुसाली । २-२६०१४
 फरकत अधर कोप मन माहीं । १-१३५१२
 फल अनुगामी नहिप मनि । २-३१०
 फल अनेक बर बस्तु सुहाई । १-३०४१३
 फल जुगत बिधि कटु मधुर बेलि । ७-१२११९
 फल भारत नमि बिटप सब । ३-४०१०
 फिरत अहेर राम छबि देखी । २-१३७१२
 फिरत अहेरें परेउं मुलाई । १-१५८१६

फिरत नारि नर अति पछिछाहीं । २-११८११
 फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ । ७-८११२
 फिरत बिपिन आश्रम एक देखा । १-१५७११
 फिरत बिपिन नृप दीख बसाहू । १-१५५१५
 फिरत लाज कछु करि नहिं जाई । १-८५१५
 फिरत सटा माया कर प्रेश । ७-४३१५
 फिरत सनेहैं मगन सुख अपनैं । १-२४१८
 फिरती बार मोहि जो देबा । २-१०१८
 फिरहिं गरैं दिनु पहर अदाई । २-३११८
 फिरहिं मवन प्रिय आयसु पाई । २-२३१३
 फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली । २-१९१४
 फिरि चितवा पाछें प्रमु देखा । १-५३१५
 फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं । ६-२३१४
 फिरि पछितैहसि अंत अमागी । २-३५१८
 फिरि फिरि प्रमुहि बिलोकिहउँ । ३-२६१०
 फिरि फिरि बिलोकति मातु तन सब । १-१०११०
 फिरि सब नगर दसानन देखा । १-१७८१५
 फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी । २-६७१०
 फिरे बीर रिपु मरइ न मारा । ६-७५१९
 फिरे हरष बिसमय सहित । २-३२०१०
 फिरेउ निषादु प्रमुहि पहुँचाई । २-१४१५
 फूलइ फरइ न वेत । ६-१६१४
 फूलत फलत भयउ बिधि बामा । २-५८१४
 फूलत फलत सुपल्लवत । १-२१२१०
 फूलहिं नम बरु बहुबिधि फूला । ७-१२११९
 फूलहिं फरहिं सटा तरु कानन । ७-२२१९
 फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना । २-१३६१६
 फूलें कमल सोह सर कैसा । ४-१६१२
 फूलें कास सकल महि छाई । ४-१५१२

फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । २-२३३।५
 फेरहिँ चतुर तुरग गति नाना । १-२९८।२
 फेरि भरत मति करि निज माया । २-२९४।२
 फेरे सब प्रिय बचन कहि । २-११८।०
 फौरै जोगु कषारु अभागा । २-१५।२

ब

बक्र उक्ति धनु बचन सर । ६-२३।३
 बचन अमिजें जनु बोरि । २-१०६।०
 बचन कर्म मन कपट तजि । ६-६४।०
 बचन कर्म मन मोरि गति । ३-१६।०
 बचन कहत भरे लोचन बारी । १-१०१।४
 बचन कार्य मन मम गति जाही । ५-३१।२
 बचन किशतन्ह के सुनत । २-१३६।०
 बचनु न आव नयन भरे बारी । १-१३।०
 बचनु न आव हृदयें पछिताई । २-१४४।०
 बचन परम हित सुनत कठोरै । ६-८।१
 बचन बज्र जेहि सदा पिआरा । १-३।११
 बचन विनीत मधुर रघुबर के । २-५३।१
 बचन विनीत सप्रेम मृदु । ७-१३।३
 बचनु मोर तजि रहहिँ घर । २-४४।०
 बचन सपेम लखन पहिचाने । २-२३१।३
 बचन सहाइ करबि मै । ४-२०।०
 बचन सुखद गंभीर मृदु । ७-८३।३
 बचन सुनत उपजा सुख भारी । ७-११।४
 बचन सुनत कपि मन मुसुबाना । ५-२४।३
 बचन सुनत पुरजान अनुरागे । २-२५०।८
 बचन सुनत सब बानर । ४-२२।०
 बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । २-२१०।१
 बचनु न आव नयन भरे बारी । १-१३।०

बचनु न आव हृदयें पछिताई । २-१४४।०
 बचनु मोर तजि रहहिँ घर । २-४४।०
 बट छायाँ बेटिका बनाई । २-२३६।८
 बटु बिस्वास अचल निज घरमा । १-१।११
 बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । १-५१।७
 बड़ कुपातु करि पातकिनि । २-२२।०
 बड़ दुख कवन कवन सुख भारी । ७-१२०।४
 बड़भागी अंगट हनुमाना । ६-१०।७
 बड़भागी बनु अवध अभागी । २-५५।५
 बड़ बिधु नहि समात मुख माहौ । १-११५।६
 बड़ें भाग पाइब सतसंगा । ७-३३।८
 बड़ें भाग बिधि बात बनाई । १-३०१।८
 बड़ें भाग मानुष तनु पावा । ७-४२।७
 बड़ें समाज बिलोकेई मागू । २-२९१।४
 बड़े मोर भूपतिमनि जागे । १-३२१।२
 बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं । १-१६६।७
 बड़त देखि जल सम बचन । १-२०६।०
 बड़चो कोलाहत करत जनु । ७-३।१
 बदन पइति पुनि बाहेर आवा । ५-१।११
 बटरीबन कहुँ सो गई । ४-२५।०
 बधि विशध खर दूषनहि । ६-३६।०
 बधुन्ह समेत कुमार सब । १-३५२।०
 बधुन्ह समेत देखि सुत चारी । १-३४८।३
 बधुन्ह सहित सुत परिधि सब । १-३४९।०
 बधू तरिकनी पर घर आई । १-३५४।८
 बधू सप्रेम गोद बैठारि । १-३५३।४
 बघें पापु अपकीरति हारें । १-२४२।७
 बन उजारि रावनहि प्रबोधी । ७-६६।५
 बन उपबन बापिका तड़ाग । १-८५।७

बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा । १-११०४
 बनवर कोल किरात बिचारे । २-२७५५
 बनवर देह धरी छिति माहीं । १-१८७३
 बन विसि देव सौंपि सब काहू । ३-२७६
 बन दुख नाथ कहै बहुतेरे । २-६५५
 बनू देखाइ सुरसरि अन्हवाई । २-९३७
 बनदेवी बनदेव उदास । २-६५१
 बन प्रदेस मुनि वास घनेरे । २-२३५५
 बन वसि कीन्है चरित अपारा । १-१०९७
 बन बहु विषम मोह मद माना । १-३७१
 बन बाग उपवन बाटिका । ५-२१६
 बन बाग कूप तड़ाग सरिता । १-९३१०
 बन विधंसि सुत बधि पुर जारा । ६-२३६
 बन बेहड़ गिरि कंदर खोह्य । २-९३५६
 बन मग मंगल कुसल हमारे । २-१५०८
 बन रघुपति सुरपति नरनाहू । २-१७५३
 बन सागर सब नदी तलावा । १-९३४
 बन सिय रामु समुद्रि मन माहीं । २-१८७२
 बन हित कोल किरात किसोरी । २-५९१
 बनइ न बरनत नगर निकाई । १-२१२१
 बनइ न बरनत बनी बराता । १-३०२१
 बनत उपाउ करत कछु नाहीं । २-२६४२
 बना बजारु न जाइ बखाना । १-३४३६
 बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि । १-९३१२
 बनी बात बेगरन चाहति । २-२१७७
 बनी बिसाल बाजि गज साला । १-२१३२
 बने बराती बरनि न जाहीं । १-३४७४
 बय किसोर सुषमा सदन । १-२२०७
 बय बपु बरन रूपु सोइ आली । २-२२१२

बयरु अकारन सब काहू सौं । ७-३८६
 बयरु न कर काहू सन कोई । ७-१९८
 बयरु करत नहीं तब उरे । ६-९०७
 बयरु बिहाइ चरहि एक संग । २-२३५४
 ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई । १-२४५१
 ब्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । ६-७३३
 ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा । ३-६९६
 ब्याकुल किए भालु कपि । ६-४२७
 ब्याकुल कहहिं कहीं बेदेही । १-३३७२
 ब्याकुल गयउ देवसिधि पाहीं । ७-५८३
 ब्याकुल नगर देखि तब । ४-१९७
 ब्याकुल भए निषाद सब । २-१४२७
 ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता । २-३४११
 ब्याकुल बिलपत राजगृह । २-९६६७
 ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी । २-५०२
 ब्याधि नास हित जननी । ७-७४१७
 ब्यापक अकल अनीह अज । १-२०५७
 ब्यापकु एक ब्रह्म अबिनासी । १-२२६
 ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । ६-५४७
 ब्यापकु बह्यु अलखु अबिनासी । १-३४०६
 ब्यापक ब्रह्म निरंजन । १-९९८७
 ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा । ७-५७७
 ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता । ७-७१४
 ब्यापक बिस्वरूप भगवाना । १-१२४
 ब्यापि रहेउ संसार मुहुं । ७-७११
 ब्यापिहि तहैं न अबिद्या । ७-११३४
 ब्यापहिं मानस रोग न भारी । ७-११९८
 ब्याल करात बिहग बन घोरा । २-६२३
 ब्याल पास बस भए खरारी । ६-४२११

ब्यास आदि कवि पुंगव नाना । १-१३१२
 ब्याह विभूषन विविध बनाए । १-३१५१२
 ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहिं । १-३१०११२
 बर अनुहारि बरात न भाई । १-१३१५
 बर कुअरि करतल जोरि । १-३२३११७
 बर कुअरि सुंदर सकल सखीं । १-३२६१२२
 बर तर कह हरि कथा प्रसंगा । ७-५६७
 बर दायक प्रनतारति भंजन । १-६९७
 बर प्रसाद सो मरइ न मारा । ६-७३१९
 बर मायहु कीन्हैहू सब काजा । ६-१९१४
 बर मागत मन भइ नहिं पीरा । २-१६११२
 बरु बिलोकि दंपति अनुरागे । १-३२३१८
 बरु बौराह बसहैं असवारा । १-१४१८
 बरन धर्म नहिं आश्रम चारी । ७-१७१९
 बरन बरन बिकसे बन जाता । १-२१११८
 बरन बरन बिरदैत निकाया । ६-७८१४
 बरने तुलसीदासु किमि । १-१०३३०
 बरनहिं सारद सेश श्रुति । ७-१२१११
 बरनउँ रघुबर बिलल जसु । २-०१०
 बरनउँ रघुबर बिसद जसु । १-२१११५
 बरनत छबि जहैं तहैं सब लोगू । १-३३८१६
 बरनत पथ विविध इतिहासा । १-५७१६
 बरनत बरन प्रीति बिलगाती । १-१११४
 बरनत रघुबर भरत बियोगू । २-३११७१२
 बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं । २-३२४१८
 बरनन वर्षा सरद अरु । ७-६६१४
 बरनन राम बिबाह समाजू । १-४११३
 बरनहु रघुबर बिसद जसु । १-१०११०
 बरनाश्रम निज निज धरम । ७-२०१०

बरनि उमापति राम गुन । ७-१४१४
 बरनि न जाइ अनीति । १-१८३१०
 बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी । २-११३१५
 बरनि न जाइ मनोहर जोरी । २-११५१९
 बरनि न जाइ रुधिर अँगनाई । ७-७५१३
 बरनि न जाहिं मंजु दुइ सात्वा । २-१३३१८
 बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । २-९१९
 बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ । २-२८८१३
 बरनि सुतीछन प्रीति पुनि । ७-६५१०
 बररे बालकु एक सुभाऊ । १-२७८१३
 बरबस राज सुतहि तब दीन्ह । १-१४२१९
 बरबस राम सुमंत्रु पढाए । २-१११२
 बरबस सोकि बिलोचन बारी । २-६३१४
 बरबस लिए उठाइ उर । २-२४०१०
 बरष चारिदस बासु बन । २-८८१०
 बरष चारिदस बिपिन बसि । २-५३१०
 बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ । १-१४४१९
 बरषा काल मेघ नम छाए । ४-१२१८
 बरषा गत निर्मल रितु आई । ४-१७१९
 बरषा घोर निसाघर रासी । १-४११५
 बरषा विगत सरद रितु आई । ४-१५१९
 बरषा रितु रघुपति भगति । १-१११०
 बरषहिं जलद भूमि निजराएँ । ४-१३१३
 बरषहिं बलाहक रुधिर कव रुज । ६-१०११२
 बरषहिं राम सुजस बर बारी । १-३५१४
 बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा । १-३४८१६
 बरषहिं सुमन देव पुनि वृंदा । ६-१०२११९
 बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी । १-११०१७
 बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि । १-३१६११०

बरषहिं सुमन हरषि सुर । ६-१०१।३
 बरषि धुरि कीन्हेसि अँधिआरा । ६-११।४
 बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ । २-२११।४
 बरषि सुमन कह देष समाजू । २-१३३।३
 बरषि सुमन हुँदुनी बजावहिं । ६-७६।३
 बरषि सुमन सुर सकल सिंहाही । २-१००।८
 बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं । १-३०५।१
 बरिसहिं सुमन रंग बहु माला । १-२६१।६
 बरु अपजस सहतेउँ जाग माहीं । ६-६०।१२
 बरु तीर मारहुँ लखनु पै । २-११।११
 बरु पावक प्रगटे ससि माहीं । १-७०।८
 बरु बिलोकि दंपति अनुरागे । १-३२३।८
 बरु बोराह बसहैं असवारा । १-१४।८
 बरु मल बास नरक कर ताता । १-४५।७
 बरुन कुबेर पवन जम काला । ६-७।३
 बरुन कुबेर सुरेस समीरा । ६-१०३।७
 बरुन पास मनोज धनु हँसा । ३-२१।१२
 बरु निरंबु तेहि दिन प्रमु कीन्हा । २-२४६।८
 ब्रह्म अनामय अज भगवंता । १-३८।२
 ब्रह्म अस्त्र तेहिं सौँधा । १-११।०
 ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर । ७-११।३
 ब्रह्मग्यान रत मुनि विग्यानी । ७-११०।३
 ब्रह्मवरज ब्रत रत मतिधैरा । १-१२८।२
 ब्रह्मघर्ज ब्रत संजम नाना । १-८३।७
 ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । १-२१५।२
 ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज । १-५०।०
 ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका । ३-१।४
 ब्रह्म निरुपन धरम बिधि । १-४४।०
 ब्रह्म पयोनिधि मंदर । ७-१२०।३

ब्रह्मबान कपि कहूँ तेहिं मारा । ५-११।१
 ब्रह्म भवन सनकादि गे । ७-३५।०
 ब्रह्म राम तें नामु बड़ । १-२५।०
 ब्रह्म रुद्र सरनागत । ४-६।०
 ब्रह्मलोक लागि गयउँ मै । ७-७१।३
 ब्रह्म सच्चिदानंद घन । ७-४७।०
 ब्रह्मसर्माँ हम सन दुखु माना । १-६१।३
 ब्रह्मसुराहिं अनुभवहिं अनुषा । १-२१।२
 ब्रह्मसृष्टि जहैं लागि तनुधारी । १-१८१।१२
 ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना । १-१८३।११
 ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं । ५-१।२
 ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया । १-१११।१
 ब्रह्मांड दिग्गज कमठ आहि । ६-८५।५४
 ब्रह्मांड भवन बिराज जाकें । ६-८२।११
 ब्रह्मादि सुरबर बिप्र देष । १-३१८।११
 ब्रह्मादि संकर सेव्य राम । ६-११२।२०
 ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । १-२६।५
 ब्रह्मानंद मगन कपि । ७-१५।०
 ब्रह्मानंदु लोग सब लहहीं । १-३०८।८
 ब्रह्मानंद सदा लयलीना । ७-३१।४
 ब्रह्माम्मोघिसमुद्भव..... । ४-४००।२।१
 बरे नुरत सत सहस बर । १-१७२।०
 बलमप्रभेयमनादिमजमबसनेकमयोवर । ३-३१।७
 बल बिनय विद्या सील सौमा । १-३१०।१०
 बल बिबेक दम परहित घोरे । ६-७१।६
 बलकल बसन जटिल तनु स्यामा । २-२३८।७
 बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह । १-३३५।१०
 बलि बौधत प्रमु बाड़ेउ । ४-२१।०
 बलिहिं जितन एक गयउ पताला । ६-२३।१३

बस्तु प्रतापु बीस्ता बड़ाई । १-२६५।७
 बसइ नगर जेहि लच्छि करि । १-२८९।०
 बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा । १-३२५।५
 बस्तु अनेक निछावरि होहीं । १-३४९।५
 बस्तु सकल राखौ नृप आगें । १-३०५।२
 बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं । १-३०५।५
 बसन हीन नहिं सोह सुसारी । ५-२२।४
 बसह बाजि मज पसु हियें हारें । २-३९९।८
 बसहिं कुटेस कुगाँव कुबामा । २-२२२।७
 बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा । १-९४२।३
 बसहिं तहाँ सुकृती सकल । १-९०५।०
 बसहिं नगर सुंदर नर नारी । १-९२९।९
 बसहु आजु अस जानि तुम्ह । १-९५९।८
 बसहु निरंतर तासु मन । २-९३९।०
 बसि तरु तर नित सहत हिम । २-२९९।०
 बहइ न हाथु दहइ रिस छाती । १-२४९।९
 बहइ सुहावन त्रिविध समीरा । ७-२।९०
 बहु आगुघ धर सुमट सब । ६-४२।०
 बहु कृपान तरवारि चमकहिं । ६-८६।३
 बहु छल बल सुग्रीव कर । ४-८।०
 बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि । १-९२।९२
 बहुतक चढ़ी अटारिन्ह । ७-३।४
 बहु दाम सँवारहिं धाम जती । ७-१००।९
 बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई । १-२४०।७
 बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं । ४-२३।२
 बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । ६-१०६।४
 बहु प्रकार तेहिं ग्यान सुनावा । ४-२४।६
 बहु प्रकार भूषन पहिराए । ६-१०७।७
 बहु प्रकार मारन कपि लागे । ५-५९।५

बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । ४-२२।९९
 बहु प्रकार संकरहि सराहा । १-७५।६
 बहु मट बहहि चढ़े खग जाहीं । ६-८७।६
 बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूदन । १-९६।९२
 बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल । ५-२।५
 बहु रोग बियोगनिह लोग हए । ७-९३।९
 बहु रंग कंज अनेक खग । ७-२८।९९
 बहु लातसा कथा पर बाढ़ी । १-९०३।२
 बहु मनि रचित झरोखा भाजहिं । ७-२६।८
 बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस । ७-९०३।४
 बहु राम लछिमन देखि मर्कट । ६-८८।९
 बहु बासना मसक हिमि रासिहि । ७-२९।९
 बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि । १-९२०।४
 बहुबिधि करत मनोरथ । १-२०६।०
 बहु बिधि कर बिलाप जानकी । ६-९८।९९
 बहुबिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा । १-३५९।५
 बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । ५-८।३
 बहुबिधि चेरिहि आदरु देई । २-२२।४
 बहुबिधि बिनय कीन्हि तेहि काल । १-९३९।३
 बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । २-५६।६
 बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी । १-३५३।८
 बहुबिधि भूप सुता समुझाई । १-३३८।९
 बहुबिधि मुनिहि प्रबोधि प्रमु । १-९३८।०
 बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । ६-७९।५
 बहुबिधि राम सिबहि समुझावा । १-७५।७
 बहु बिधि सोचत सोच विमोचन । ६-६०।९७
 बहु बिधि संभु सासु समुझाई । १-९०९।९
 बहु बिलाप दसकंधर करई । ६-७९।४
 बहुत उछाहु भवनु अति थोरा । २-९९६।८

बहुत कहेउँ का कथा बढ़ाई । ७-४५१४
 बहुत काल मैं कीन्हि मजुरी । २-१०१६
 बहुत कीन्ह प्रभु लखन सिधैं । २-१०२०
 बहुत कहेउँ सब कियउँ टिठाई । २-२४७८
 बहुत दिवस गुर दरसनु पाएँ । ३-११२
 बहुत दिवस बीते एहि भाँती । १-३३१५
 बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ । ६-१६७
 बहुत लाम लोगन्ह लघु हानी । २-२५५६
 बहुरि आइ देखा सुत सोई । १-२००६
 बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई । २-१२२३
 बहुरि कहहु करुनायतन । १-११००
 बहुरि कहेउ रति कर बरदाना । १-१०२
 बहुरि कीन्हि कोसलपति पूजा । १-३२०१
 बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । १-२३३२
 बहुरि धीर धरि उठे सँमारी । २-१५१५
 बहुरि निहारि निषाद सनेहू । २-२६१६
 बहुरि बहुरि भेटहिँ महतारी । १-३३३८
 बहुरि बोलाइ सुजासिनि लीन्हैं । १-३५२५
 बहुरि महाजन सकल बोलाए । १-२८६३
 बहुरि मातु तहवाँ चलि आई । १-२००४
 बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहूँ । १-१११०
 बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई । १-१११५
 बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । ७-६४१९
 बहुरि राम अस मन अनुमाना । ३-२१२
 बहुरि राम छबि धाम बिलोकी । ५-४४३
 बहुरि राम जानकिहि देखाई । ६-१११५
 बहुरि राम पट पंकज धोए । १-३२७५
 बहुरि राममायहि सिरु नावा । १-५५५
 बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । २-११०३

बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । २-१७०८
 बहुरि बच्छ कहि लालु कहि । २-६८०
 बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी । २-११६६
 बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन । १-३२४११०
 बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं । १-३३१४
 बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं । २-२६४३
 बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं । १-२३६८
 बहुरि विभीषन भवन सिधायो । ६-११६३
 बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा । ७-६५८
 बहुरि बिलोकि बिदेह सन । १-२६९०
 बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । १-५४७
 बहुरि बंदि खल गन सतिमाएँ । १-३११
 बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही । १-३११०
 बहुरि सप्तारिषि सिव पहिँ जाई । १-८१२
 बहुरि सपरिजन भरत कहूँ । २-२१४०
 बहुरि समुझि लिय धरमु सयानी । २-५४६
 बहुरि सोचबस भे सियरवनू । २-२६६१
 बहुरे लोग रजायसु मयऊ । १-३६०३
 बाउ कृपा मूरति अनुकूला । १-२७१४
 बागु तडागु बिलोकि प्रभु । १-२२७०
 बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं । २-८२८
 बागुर बिषम तोराइ मनहूँ । २-७५०
 बाजहिँ ढोल देहिँ सब तारी । ५-२४७
 बाजहिँ ढोल निसान जुझाऊ । ६-४०२
 बाजहिँ ताल पखाउज बीना । ६-११९
 बाजहिँ ताल मृदंग अनुपा । ६-१२७
 बाजहिँ बहु बाजने सुहाए । १-२६२२
 बाजहिँ बाजने बिबिध प्रकारा । १-३१७५
 बाजहिँ बाजने बिबिध बिधाना । २-१०१९

बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना । १-१००।५
 बाजहिं भेरि नाफीरि अपारा । ६-४०।३
 बाजार रूचिर न बनइ बरनत । ७-२७।९
 बाजिबिरह गति कहि किमि जाती । २-१४२।८
 बाजे नम गहगहे निसाना । १-२६१।४
 बाढे खल बहु चोर जुआरा । १-१८३।१
 बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई । २-३०।५।६
 बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली । २-२७।८
 बातन्ह मनहि रिझाइ सठ । १-५६।३
 बातहिं बात करष बढ़ि आई । ६-१७।४
 बातुल नूत बिबस मतवारे । १-११४।७
 बाटहिं सूद्र द्विजन्ह सन । ७-११।४
 बाटि गलानि करहु मन माहीं । २-२०।४।८
 बाटि बसन बिनु भूषन भारु । २-१७।४।४
 बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा । २-२२।१।२
 बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । ६-३।१
 बाँधे घाट मनोहर । ७-२८।०
 बाँधे बिरट बीर सन गाढ़े । १-२९।८।१
 बाँधा सेतु नील नल नागर । ६-२।७
 बाँध्यो बननिधि नौरनिधि । ६-५।०
 बान प्रताप जान मारीचा । ६-३।५।९
 बानर कटक उमा मै देखा । ४-२।१।१
 बानर तनु धरि धरि महि । १-१८।७।०
 बानर निसाचर निकर मर्दहिं । ६-८।७।१३
 बानर मालु सकल हरषाने । ६-११।६।२
 बापी कूप सरित सर नाना । १-२१।१।६
 बापी तड़ाग अनूप कूप । ७-२८।१
 बाम नाग सोमति अनुकूला । १-१४।४।२
 बामदेउ अरु देवसिधि । १-३३।०।०

बामदेव आदिक रिषय । १-३२।०।०
 बामदेव रघुकुल गुर ग्यानी । १-३६।०।१
 बामदेउ बसिष्ठ तब आए । २-१६।८।७
 बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक । ७-४।२
 बायस तन रघुमति भगति । ७-५३।०
 बायस पलिअहिं अति अनुरागा । १-४।२
 बारक राम कहत जग जेऊ । २-२९।६।४
 बार बार अस्तुति करि । ७-३।५।०
 बार बार अस कहइ कृपाला । ६-२९।३
 बार बार कर टंड प्रनामा । ७-१८।३
 बार बार करि प्रमुहि प्रनामा । ६-११।१।८
 बार बार करि बिनय बड़ाई । १-३४।२।१
 बार बार कह राउ । २-२।५।०
 बार बार कौसल्या । १-२०।२।०
 बार बार कौसिक चरन । १-३३।१।०
 बार बार गहि चरन सँकोची । २-११।५
 बार बार नाएसि पद सीसा । ५-१६।५
 बार बार नारद मुनि आवहिं । ७-४।१।४
 बार बार नावइ पद सीसा । ४-६।१।४
 बार बार निज सपथ देवाई । २-१५।१।८
 बार बार पचार हनुमाना । ६-५०।४
 बार बार पद लागउँ । ५-३१।३
 बार बार प्रमु चहइ उठावा । ५-३२।१
 बार बार प्रमु पद सिरु नाई । ३-३५।१।३।३
 बार बार बर मागउँ । ७-१।४।३
 बार बार बिनती सुनि मोरी । १-२५।६।८
 बार बार बिनवउँ मुनि तोही । १-१२।६।७
 बार बार बिरिदावलि भाषी । १-३३।१।३
 बार बार बूझी कुसलाता । ७-१।१।२

बार बार मागऊँ कर जोरें । १-३४१।५
 बार बार मिलि भेंटि सिय । २-२८७।०
 बार बार मुख चुंबति माता । २-५१।३
 बार बार मुनि अग्या दीन्ही । १-२२५।६
 बार बार मुनि विप्रवर । १-२८२।०
 बार बार मूढ मूरति जोही । २-६६।६
 बार बार रघुनायकहि । ४-१९।४
 बार बार रघुबीर सैभारी । ५-०।६
 बार बार सनमानाहि रानी । १-३२१।७
 बार बार सब लागहि पाए । २-११५।५
 बार बार सिर नावहि । ६-१०६।०
 बार बार हिलि मिलि दुहु भाई । २-३११।५
 बारबार सकोष मुनि । ४-१११।४
 बार सहस्र सहस्र नृप । १-१५५।०
 बारहि बार आरती करहीं । १-३४९।४
 बारहि बार जोरि जुग पानी । २-७९।७
 बारहि बार लाइ उर लीन्ही । २-६८।७
 बारहि बार लेति उर लाई । १-७९।७
 बारहि बार सनेह बस । १-३१०।०
 बारहि बार सनेह बस । २-७६।०
 बारहि बार सुता उर लाई । १-३३७।८
 बारि मथे घृत होइ बरु । ४-१२३।४
 बारि बिलोचन बीचत पाती । १-२८९।४
 बारिज लोचन मोचत बारी । २-३९६।६
 बारिदनाद जेठ सुत तासू । १-१७९।७
 बारिधि नाधि एक कपि आवा । ६-८।२
 बारेहि ते निज हित पति जानी । १-१९७।३
 बालचरित अति सरल सुहाए । १-२०३।५
 बालचरित कहि बिबिध बिधि । ४-६४।०

बालचरित छह बंधु के । १-४०।०
 बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा । १-२०२।५
 बाल ब्रह्मचारी अति कोही । १-२७९।६
 बालबिनय सुनि करि कृपा । १-३।०
 बालबिनय सुनि सुरुधि लखि । १-१४।१
 बालबिनोद करत रघुराई । ४-७५।४
 बाल बिलोकि बहुत मै बाँचा । १-२७४।४
 बाल बुझाए बिबिध बिधि । १-९५।०
 बाल सखा सुनि हिये हरषाही । २-२३।१
 बालक बृद्ध बिहाइ गृह । २-८४।०
 बालक बृद्ध देखि अति सोभा । १-२९८।२
 बालकु बोलि बधुई नहि तोही । १-२७१।५
 बालक भ्रमहि न भ्रमहि गृहाटी । ४-७२।६
 बालकरुण राम कर ध्याना । ४-११२।७
 बालक न्यान बुद्धि बल हीना । ४-१७।६
 बालमीक नारद घटजोनी । १-२।३
 बालमीक प्रभु मिलन बखाना । ४-६४।४
 बालमीकि मन आनंदु भारी । २-१२४।५
 बालमीकि हंसि कहहि बहोरी । २-१७।२
 बालि एक सर मारगो । ६-३६।०
 बालितनय कौतुक अति मोही । ६-३७।५
 बालितनय बुधि बल गुन घामा । ६-१६।६
 बालितनय मारुति नल नीला । ६-९७।३
 बालि न कबहुँ गाल अस मारा । ६-३३।६
 बालि परम हित जासु प्रसादा । ४-६।१९
 बालि बिमल जस भाजन जानी । ६-२३।१५
 बालि हतेसि मोहि मारिहि आई । ४-५।८
 बालि त्रास ब्याकुल दिन राती । ४-११।३
 बाली ताहि मारि गृह आवा । ४-५।१०

बास करहु तहँ रघुकुल राया । ३-१२।१७
 बासुदेव पद पंकरुह । १-१४३।०
 बाहन अपर अनेक बिधाना । १-२१९।३
 बाहिज नम्र देखि मोहि साई । ७-१०४।६
 बाहेर होइ देखि बहु कीसा । ४-२६।२
 बिकट बेष रुद्रहि जब देखा । १-१५।४
 बिकट मुकुटि कव घूघरवारे । १-२३२।४
 बिकट मुकुटि सम श्रवन सुहाए । ७-७६।६
 बिकल बिलोकि कीस उर लावा । ६-५८।३
 बिकल बिलोकि मालु कपि धाए । ६-६८।८
 बिकल बिलोकि मोहि रघुवीरा । २-१५०।५
 बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति । २-१६०।१
 बिकल रानेहँ सीय सब रानी । २-२४६।१
 बिकल होसि तँ कपि कें मारे । ५-३।७
 बिकसे सरन्हि बहु कंज । १-८५।११
 बिकसे सरसिज नाना रंगा । ३-३९।१
 बिकसे संत सरोज सब । १-२५४।०
 बिगत काम मन नाम परायन । ७-३७।५
 बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई । १-२३६।६
 बिगत बिषाद निषादपति । २-१९०।०
 बिगत निसा रघुनायक जागे । १-२३७।६
 बिगत त्रास भइ सीय सुखारो । १-२८५।४
 बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । १-३१।६
 बिचरहिं महि धरि हृदयँ हरि । १-७५।०
 बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह । ६-९९।१४
 बिद्युरत एक प्रान हरि लेहीं । १-४।४
 बिद्युरत दीनदयाल प्रिय । १-१६।०
 बिजई समर बीर बिख्याता । १-१३१।७
 बिजय विवेक बिभूति नित । ६-१२१।४

बिजय हेतु कटकई बनाई । १-१५३।५
 बिटप बिसाल लता अरुझानी । ३-३७।१
 बिटप बेलि तुन अगनित जाती । २-२४८।७
 बिटप महीघर करहिं प्रहारा । ६-१७।४
 बिद्युरे नम मुकुताहल तारा । ६-११।३
 बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू । २-२१५।७
 बिद्यमान रन पाइ रिपु । १-२४४।०
 बिद्या बिनय निपुन गुन सीला । १-२०३।६
 बिद्या बिनु विवेक उपजाएँ । ३-२०।९
 बिदा किए करि बिनय निषादा । २-१४६।२
 बिदा किए बटु बिनय करि । २-१०९।०
 बिदा किए सिर नाइ सिधाए । २-१३६।३
 बिदा कीन्ह करुनायतन । २-१०२।०
 बिदा कीन्ह भगवान तब । ७-१८।४
 बिदा कीन्ह सजि पालकी । २-३९९।०
 बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । २-३२०।१
 बिदा मातु सन आवउँ मागी । २-४५।४
 बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा । १-२४१।१
 बिंध्याचल गभीर बन गयाऊ । १-१५५।४
 बिधि मुदित मन सुखु न समाई । २-१७७।८
 बिधि केहि भाति धरी उर धीरा । १-२५७।५
 बिधि कैकई किरातिनि कीन्ही । २-८३।३
 बिधि गनपति अहिपति सिव सारद । २-२८७।६
 बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । २-२६०।१
 बिधि निषेधमय कलि मल हरनी । १-११।१
 बिधि बस भयउ बिस्व उपकारु । २-३०९।६
 बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । १-२१०।०
 बिधि बाम की करनी कटिन । २-२००।९
 बिधि बिसमय टायकु बिभव । २-२१४।०

बिधि हरि हर कवि कोविद बानी । १-२।११
 बिधि हरि हर तप देखि अपारा । १-१४४।२
 बिधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ । १-३२०।६
 बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो । १-१८।२
 बिधि हरि हर माया बडि भारी । २-२१४।५
 बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला । २-२५३।६
 बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा । २-१४२।४
 बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । १-२८६।८
 बिधिहि मयाउ आचरजु बिसेयी । १-३१३।८
 बिधिहि मनाव राउ मन माहैं । २-४३।६
 बिधिहैं न नारि हृदय गति जानी । २-१६१।४
 बिधु बिष चवे श्रवै हिमु आगी । २-१६८।२
 बिधु महि पूर मयूखन्हि । ४-२३।०
 बिधुबदनी सब भाँति सँवारी । १-१।४
 बिधुबदनी सब सब मृगलोचनि । १-३१०।११
 बिधुबदनी मृग सावक लोचनि । १-२९६।२
 बिनु गुर होइ कि ग्यान । ४-८१।८
 बिनु पानहिन्ह फयादेहि पाएँ । २-२६१।५
 बिनती करउँ जोरि कर रावन । ५-२१।४
 बिनती करि मुनि नाइ सिरु । ३-४।०
 बिनती प्रभु मोरी मैं मति मोरी । १-२१०।११
 बिनती बहुत करौं का स्वामी । २-६५।८
 बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही । १-३४१।८
 बिनती मूप कीन्ह जेहि माँती । २-१६।१५
 बिनती सच्चिव करहिं कर जोरी । २-४।५
 बिनय करत गदगद गिरा । ४-१३।४
 बिनय करत गदगद स्वर । ४-१०४।४
 बिनय कीन्ह उर अति अनुरागै । १-३५२।११
 बिनय कीन्ह चतुरानन । ६-१११।०

बिनय न मान खगेस सुनु । १-५८।०
 बिनय न मानत जालधि जड़ । १-५४।०
 बिनय प्रेम बस मई भवानी । १-२३५।५
 बिनय सील करुना गुन सागर । १-२८४।३
 बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि । ४-१५।४
 बिनु अबसर मय तैं रह जोई । ३-४।१५
 बिनु कारन दीन दयाल हित । ६-११०।११
 बिनु गुर होइ कि ग्यान । ४-८१।४
 बिनु घन निर्मल सोह अकासा । ४-१५।१९
 बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू । १-१०३।६
 बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । ४-८१।५
 बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना । १-११०।५
 बिनु प्रयास सागर तरिहि । १-५०।०
 बिनु प्रयास हनुमान उठायो । ६-४६।१५
 बिनु पानहिन्ह फयादेहि पाएँ । २-२६१।५
 बिनु पूछैं कछु कहउँ गोसाईं । २-२६।४
 बिनु पूछैं मगु देहिं दिखाई । ६-१४।१०
 बिनु फर बान राम तेहि मारा । १-२०१।४
 बिनु फर सायक मारेउ । ६-५८।०
 बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि । १-८४।०
 बिनु बिग्यान कि समता आयइ । ४-८१।३
 बिनु बिचार फनु तजि नरनाहू । १-२४८।४
 बिनु बिस्वास भगति नहिं । ४-१०।८
 बिनु मंजेहूँ भव धनुषु बिसाला । १-२४४।३
 बिनु रघुपति पद पदुम परागा । २-१४।६
 बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू । ३-१४८।६
 बिनु सतसंग न हरि कथा । ४-६१।०
 बिनु श्रम तुन्ह जानब सब सोऊ । ४-११३।३
 बिनु श्रम नारि परम गति लहई । ३-४।१८

बिनु सतसंग बिबेक न होई । १-२७
 बिनु सनुझे निज अघ परिपाक । २-३६०६
 बिनु संतोष न काम नसाहीं । ७-२१११
 बिनु हरि कृपा न होई सो । ७-१२५१४
 बिनु हरि भजन न भव तरिअ । ७-१२२१३
 बिपति काल कर सतगुन नेहा । ४-६६
 बिपति वीजु बरषा रिनु चेरी । २-२२१५
 बिपति मोरि को प्रमुहि सुनावा । ३-२८१५
 बिपति हमारि बिलोकि बडि । २-१११०
 बिपिन गवन केवट अनुसागा । ७-६४३
 बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना । १-१२४
 बिपुल बाजने बाजन लाने । १-३४७३
 बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना । २-२३५२
 बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी । २-५०६
 बिपुल बिहग बन परेउ निसि । २-१५३१०
 बिपुल सुमन सुर बरषहिं । ३-२७१०
 बिप्र एक बैटिक सिव मूजा । ७-१०४३
 बिप्रकाजु करि बंधु दोउ । १-२२१०
 बिप्र गिरा सुनि परहित सानी । ७-१०८१२
 बिप्र जेबीई देहिं दिन दाना । २-१५६७
 बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसोषा । ७-३१८
 बिप्र घेनु सुर संत हित । १-११२१०
 बिप्र निरच्छर लोलुप कामी । ७-११८
 बिप्र बधु कुलबृद्ध बोलाई । १-३२१४
 बिप्रबधु कुलमान्य जटेरी । २-४८३
 बिप्रबधु सब भूष बोलाई । १-३५२४
 बिप्र बिबेकी बेदबिट । २-१४४१०
 बिप्रबृंद उटि उटि गृह जाहू । १-१७२१६
 बिप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना । २-१८६३६

बिप्र बृंद बंदे दुहै माई । १-३०७६
 बिप्रबृंद सब सादर बंदे । १-२७४१२
 बिप्रबंस कै असि प्रमुताई । १-२८३१५
 बिप्रबेष देखत फिरहिं । १-१३३१०
 बिप्र बेष धरि बेद सब । १-३२३१०
 बिप्रभवन सुरभवन सुहाए । १-१५४८
 बिप्र महाजन सखि सब । २-२५३१०
 बिप्र रूप धरि कपि तहै मयऊ । ७-०६
 बिप्र रूप धरि पवनसुत । ७-१४
 बिप्र रूप धरि बचन सुनाए । ५-५५
 बिप्र सहित परिवार गोसाईं । २-२४
 बिप्र साधु सुर पूजत राजा । २-६२
 बिप्र आप तै दूनउ माई । १-१२१५
 बिप्र आप बिनु सुनु महिपाला । १-१६४६
 बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन । ७-३१२१०
 बिप्रन्ह दान बिबिधि बिधि दीन्है । ७-११७
 बिप्रहु आप बिचारि न दीन्ह्य । १-१७३१५
 बिप्रल होहिं सब उधम ताके । ६-११४
 बिबर प्रवेस कीन्ह जेहि मानी । ७-६६२
 बिबरन मयउ न जाइ निहारी । २-१४४५
 बिबरन मयउ निपट नरपातू । २-२८६
 बिबस्त होइ हरिजान । ७-११५१४
 बिबसहुं जासु नाम नर कहहीं । १-११८३
 बिबिधि कथा कहि कहि मूहु बानी । २-१४२३
 बिबिध कर्म गुन काल सुमाऊ । ७-३०५
 बिबिध जंतु संकुल महि माजा । ४-१४१११
 बिबिध प्रसंग अनूप बखाने । १-१३१४
 बिबिध बसन उपधान तुराई । २-१०११
 बिबिध बिधान बाजने बाजे । १-३४५३

बिबिध बिलाप करति बैदेही । ३-२८।४
 बिबिध बेष धरि करइ तराई । ६-७५।१२
 बिबिध भाँति परितोषु करि । ९-१०२।०
 बिबिध भाँति फूले तरु नाना । ३-३७।३
 बिबिध भाँति मूषन बसन । २-१११।०
 बिबिध भाँति भोजन करवाता । १-२०६।४
 बिबिध भाँति मेवा पकवाना । ५-३३२।४
 बिबिध भाँति मंगल कलस । ९-३४४।०
 बिबिध भाँति होइहि पहुनाई । ५-३१०।१
 बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा । ९-१७२।३
 बिबिधायुध धर निसिचर धार । ६-४८।१०
 बिबिधि पाँति बैठी जेवनास । ९-९८।७
 बिबिधि भाँति बाहन रथ जाना । ६-७८।२
 बिबिधि भाँति मोहि मुनि समुझावा । ७-११०।७
 बिबुध बधू नाचहिँ मुदित । १-३४७।०
 बिबुध बिनय सुनि देबि सयानी । २-२१४।३
 बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन । १-१४।६
 बिबुध बिपिन जहँ तगि जग माहीं । २-१३७।३
 बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की । २-२२०।७
 बिमव भेद कछु कोउ न जाना । १-३०६।२
 बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा । १-३४।६
 बिमल कथा हरि पद दायनी । ७-५१।५
 बिमल ग्यान जल जब सौ नहाई । ७-१२१।११
 बिमल बिबेक धरम नय साली । २-२१६।८
 बिमल बंस यहु अनुचित एकू । २-१।७
 बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा । १-२२६।८
 बिरचेउ मग महुँ नगर तेहिँ । १-१२१।०
 बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ । ७-५३।०
 बिरति चर्म असि ग्यान मद । ७-१३०।४

बिरति बिबेक बिनय बिग्याना । ३-४५।५
 बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी । ७-१४।७
 बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई । २-१४३।८
 बिरह अगिनि तनु तूल समीस । ५-३०।७
 बिरह बिकल नर इव रघुराई । १-४८।७
 बिरह बिकल बलहीन मोहि । ३-३७।७
 बिरहवंत भगवंतहि देखी । ३-४०।५
 बिरही इव प्रभु करत बिपादा । ३-३६।२
 बिलग बिलग होइ चलहु सब । १-१२।०
 बिलग होइ रसु जाइ । १-५७।४
 बिलपत नृपहि भयउ मिनुसारा । २-३६।५
 बिलपत साउ बिकल बहु भाँती । २-१५७।३
 बिलपहिँ बिकल दास अरु दासी । २-१५५।५
 बिलपहिँ बिकल भरत दोउ नाई । २-१६६।१
 बिष बाटिकीं कि सोह सुत । २-११।०
 बिष बाफुनी बंधु प्रिय जेही । १-२४६।६
 बिष संजुत कर निकर पसारि । ६-११।०
 बिषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा । ७-५२।४
 बिषई जीव पाइ प्रमुताई । २-२७।१
 बिषई साधक सिद्ध सयाने । २-२७६।३
 बिष्ठा पूय रुधिर कच हाड़ा । ६-५१।३
 बिष्णु कहा अस बिहसि तब । १-१२।०
 बिष्णु कोटि सम पालन कर्ता । ७-११।६
 बिष्णु चारि भुज बिधि मुख चारी । १-२११।७
 बिष्णु जो सुर हित नरतनु धारी । १-५०।१
 बिष्णु बचन सुनि सुर मुसुकाने । १-१२।२
 बिष्णु बिरचि आदि सुरब्राता । १-११।७
 बिष्णु बिरचि महेशु बिहाई । १-६०।२
 बिषम बियोगु न जाइ बखाना । २-८।८

बिषम बिषाद तोरावति धारा । २-२७५।३
 बिषय अलंपट सील गुनाकर । ७-३७।१
 बिषय करन सुर जीव समेता । १-११६।५
 बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे । ७-१२१।४
 बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । ४-२०।३
 बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । ७-१२०।३२
 बिषय मनोरथ पुंज कंज बन । ६-११४।५
 बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । ७-११७।१६
 बिस्व द्रोह रत यह खल कामी । ६-१०९।४
 बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी । १-१०६।७
 बिस्व विजय जसु जानकि पाई । १-३५६।५
 बिस्व बिदित एक कैकय देसू । १-१५२।२
 बिस्व मरन पोषन कर जोई । १-१९६।७
 बिस्वमोहनी तासु कुमारी । १-१२९।४
 बिस्वरूप रघुबंस मनि । ६-१४।०
 बिसमयवंत देखि महतारी । १-२०१।६
 बिसमउ हरषु न हटयें कछु । २-१६५।०
 बिसमय हरष रहित रघुसाऊ । २-११।३
 बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं । १-३५९।३
 बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी । १-३०६।६
 बिस्वामित्र महामुनि आए । १-२९३।८
 बिस्वामित्र महामुनि म्यानी । १-२०५।२
 बिस्वामित्रु मिले पुनि आई । १-२६८।६
 बिस्वामित्र समय सुभ जानी । १-२५३।५
 बिस्वास करि कह दास तुलसी । ३-३५।१७
 बिस्वास करि सब आस परिहरि । ७-१२।११
 बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं । ७-१५।१
 बिलिख निकर निंसिबर मुख मरेऊ । ६-७०।२
 बिहरत हृदय न हहरि हर । २-११९।०

बिहरहि बन चहु ओर । २-२५१।०
 बिहंसतहीं मुख बाहेर । ७-८२।७
 बिहंसा नारि बचन सुनि काना । ६-१५।१
 बिहसि दसानन पूँछी बाता । ५-५२।३
 बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । ५-५५।१०
 बिहसि मागु मनभावति बाता । २-२५।७
 बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । १-२४२।१
 बिहसे अपर भूप सुनि बानी । १-२४४।५
 बिहसे करुणारैन । २-१००।०
 बिहसे लखनु कहा मन माहीं । १-२७९।८
 बीच बास करि जमुनहिं आए । २-२९९।८
 बीच बीच बर बास करि । १-२४३।०
 बीच बीच बर बास बनाए । १-२०३।६
 बीचहिं पंथ मिले टनुजारी । १-२५५।४
 बीतें अवधि जाउँ जौ । ६-११६।१
 बीतें अवधि रहहिं जौं प्राना । ७-०।८
 बीतें संबत सहस सतासी । १-५९।२
 बीथी सकल सुगंध सिंवाई । ७-८।३
 बीथी सींठी चतुरसम । १-२९६।०
 बीरघातिनी छाड़िसि साँगी । ६-५३।७
 बीरब्रती तुम्ह धीर अछोमा । १-२७३।८
 बीर परहिं जनु तीर तरु । ६-८७।०
 बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे । ६-८०।८
 बीर बिनीत धरम ब्रत धारी । १-२९३।७
 बीर सुधीर धुरंधर देवा । २-१४९।४
 बीस पयोधि अगाध अपारा । ६-२७।४
 बीसहुँ लोचन अंध । ६-३३।७
 बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । ७-१०३।६
 बुध पुरान श्रुति संमत बानी । ५-४०।१

बुध बरनहिं हरि जस अस जानी । १-१२४
 बुध बिश्राम सकल जन रंजनि । १-३०५
 बुधि बल निखिचर परइ न पारयो । ६-९४४
 बुधि बल सील सत्य सब मीना । ३-४३४
 बुद्धि सिरापै ग्यान घृत । ७-११७७
 बूझउँ तिन्हहि राम गुन गाह्य । ७-१०९१११
 बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि । ७-४११३
 बूझब राउर सादर साई । २-२६९४
 बूझहि बैठि राम गुन गाह्य । ७-२५५
 बूझि बिप्र कुलबुद्ध गुर । १-२८६१०
 बूझि गरत सति नाउ कुमाऊ । २-२७०४८
 बूझि मित्र अरि मध्य गति । २-११२१०
 बूझिस मोहि उपाउ अब । २-२५५१०
 बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ५-३६४
 बूडत बिरह जलधि हनुमाना । ५-१३१२
 बूडत बिरह बारीस कृपानिधान । ७-४११६
 बूड सो सकल समाजु । १-२६११०
 बूडहि आनहि बोरहिं जेई । ६-२४८
 बूढ़ एक कह सगुन बिचारी । २-१११५
 बूढ़ जानि सठ छाँडेउँ तोही । ६-७३५
 बूढ़ भएसि न त मस्तेउँ तोही । ६-४८३
 बूढ़ भयउँ न त करतेउँ । ४-२८१०
 बूढ़ अघात सहहिं गिरि कैसें । ४-१३७४
 बूढ़ बूढ़ बिहंग तहैं आए । ७-६२७
 बूढ़ रोगबस जड़ घनहीना । ३-४४८
 बूधम कंध उर बाहु बिसाला । १-२६७७
 बूधम कंध केहरि ठवनि । १-२४३१०
 बूढ़ बूढ़ मिलि चली लोगाई । १-११३१३
 बूढ़ारका गन सुमन बरिसहिं । १-३२५१२१

बेगहु माइहु सजहु सँजोऊ । २-११०१५
 बेगि आनु जल पाय परदारु । २-१००१२
 बेगि करहु किन अखिन्ह ओटा । १-२७९७
 बेगि कुअरि अब आनहु जाई । १-३२११२
 बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । २-१८६७
 बेगि चलिअ प्रमु आनिअ । ५-३११०
 बेगि देखाउ मूढ न त आजू । १-२६९७
 बेगि प्रजा दुख मेटब आई । २-६७६
 बेगि पाउ धारिअ थलहि । २-२८४१०
 बेगि बिभीषन तिन्हहि सिखायो । ६-१०७६
 बेगि बिलंबु न करिअ नृप । २-४१०
 बेगि सो मैं डारिहउँ उखारी । १-१२८५
 बेगि हतहु खल कहि मुनि गए । ६-७०१२
 बेगहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं । २-१६७१९
 बेतपानि रच्छक चहु पासा । ६-१०७१९
 बेताल बीर कपाल ताल । ३-११११५
 बेताल भूत पिसाच । ६-१००१
 बेद पुरान जासु जसु गायो । ६-४७४८
 बेद पुरान बसिष्ट बखानहिं । ७-२५१२
 बेद पुरान सुनिहैं मन लाई । १-२०४६
 बेद पुरान संत मत एहू । १-२६१२
 बेद बचन मुनि मन अगम । २-१३६१०
 बेद बिदित कहि सकल बिधाना । २-५५
 बेद बिदित संमत सबही का । २-१७४३
 बेद बिहित अरु कुल आचारु । १-३१८१२
 बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे । ७-११७
 बेदमंत्र मुनिबर उचवरहीं । १-१००७
 बेदसिरा मुनि आइ तब । १-४३१०
 बेटी पर मुनि साधु समाजु । २-२३८६

बेदी बेट बिधान सँवारी । १-१११२	बैठेउ सनौ खबरि असि पाई । १-३६७
बेनु हरित मनिय सब कीन्है । १-२८७।१	बैदेहि अनुज समेत । ६-११२।१५
बेल पाली महि परइ सुखाई । १-७३।६	बैदेहि राम प्रसाद ते जन । १-३६०।१२
बेलि बिटप तून सफल सफूला । २-२३५।८	बैदेही मुख पटतर दीन्है । १-२३७।३
बेलि बिटप सब सफल सफूला । २-२७८।३	बैनतेय खग अहि सहसानन । ६-२५।७
बेषु न सो सखि सीय न संगी । २-२२।३	बैनतेय बलि जिमि बह कागू । १-२६६।१
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा । १-१३४।८	बैनतेय सुनु संनु तब । ७-१३।१४
बेषु बिलोकं कहेसि कछु । १-२८१।०	बैनतेय संकर पहि जाहू । ७-५१।७
बेसर उँट वृषभ बहु जाती । १-२११।६	बैर न बिग्रह आस न त्रासा । ७-४५।५
बैखानस सोइ सोबै जोगू । २-१७२।१	बैर बिगत दिहरत बिपिन । २-२४१।०
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । ६-१।८	बैरिउ राम बड़ाई करहीं । २-१११।७
बैठ जाइ सिंघासन फूली । ६-३७।२	बैरी पुनि छत्री पुनि राजा । १-१११।६
बैठ रहेसि अजगर दुव पापी । ७-१०६।७	बोरति म्यान बिराय करारै । २-२७५।१
बैठारि आसन आरती करि । १-३१८।१	बोलत जलकुक्कुट कलहंसा । ३-३१।२
बैठारि परम समीप बूझी । ६-१२०।१४	बोलत लखनहि जनकु उँराही । १-२७७।४
बैठि नमित मुख सोचति सीता । २-५७।२	बोल्नि मिलनि सिय राम चरन । २-२५०।१०
बैठि बिटप तर दिवसु गवींवा । २-१४६।४	बोल्हि खग जग आरति हेतू । ६-१०१।८
बैठीं सिव समीप हरपाई । १-१०६।४	बोल्हि मधुर बचन जिमि मोरा । ७-३८।८
बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन । ७-४२।२	बोल्वहिं जो जय जय मुंड रुंड । ६-८७।११
बैठे देखि कुसासन । ७-१।४	बोला बचन नीति अति पावन । ६-४७।६
बैठे प्रनु घाता सहित । १-२१७।०	बोला बिहासि महा अमिमानी । ५-२३।२
बैठे परम प्रसन्न कृपाला । ३-४०।४	बोलि लिए कपि निकर बहोरी । ६-०।७
बैठे बजाज सराफ बनिक । ७-२७।११	बोलि सकल सुर सादर लीन्है । १-११।१
बैठे बरासन रामु जानकि । १-३२४।११	बोलि सुसेवक चारि तब । २-१४३।०
बैठे राजसर्भौ सब जाई । २-१७०।३	बोली अपर कहेहु सखि नीका । १-२२२।१
बैठे सब बट बिटप तर । २-२७७।०	बोलीं गिरिजा बचन बर । १-१११।०
बैठे सिव बिग्रह सिरु नाई । १-११।४	बोली चतुर सरखी मृदु बानी । १-२५५।६
बैठे सुर सब करहिं बिचारा । १-१८४।१	बोली बचन क्रोध करि भारी । ३-२०।६
बैठे सोह कामरिपु कैसें । १-१०६।१	बोली सती मनोहर बानी । १-६०।८

बोले उन्नित बचन रघुनन्द । २-२६२४
 बोले कृपानिधान पुनि । १-१४८।०
 बोले कृपासिन्धु बृषकेरू । १-८७७
 बोले गुर आयस अणुकूल । २-२५८।३
 बोले चितइ परसु की ओरा । १-२७१।४
 बोले बचन नीति प्रतिपालक । १-४९।४
 बोले बचन बानि सरबसु से । २-३०३।७
 बोले बचन विगत सब दूषन । २-४०६
 बोले बचनु राम नय नागर । २-६९।७
 बोले बामदेव सब सीधी । १-३५८।७
 बोले विप्र सकोप तब । १-१७३।०
 बोले बिहसि बराबर राया । १-१२४।६
 बोले बिहसि महेश तब । १-१२४।७
 बोले बिहसि महेशु । १-५१।०
 बोले बंटी बचन बर । १-२४९।०
 बोले भृगुपति सरख हसि । १-२८३।०
 बोले मधुर बचन सुरसाई । १-१३५।५
 बोले मनु करि दंडवत । १-५४।०
 बोले मनोहर बचन सानि । १-३२५।१४
 बोले मुनिवरु बचन बिचारी । २-२५६।७
 बोले मुनिवरु समय समाना । २-२५३।१
 बोले मुनि सुनु सैतकुमारी । १-७७।२
 बोले राउ कठिन करि छाती । २-३०।४
 बोले राम सकोप तब । १-५७।०
 बोले राम सुअवसरु जानी । १-३३५।४
 बोले रामहि देइ निहोरा । १-२७७।७
 बोले लखनु जोरि जुग पानी । १-२३७।८
 बोले लखन मधुर मृदु बानी । २-९१।३
 बोले सुधि मन अनुज सन । १-२३०।०

बोलेउ काकमसुंड बहोरी । ७-६१।१
 बोलेउ प्रेम सहित गिरा । ७-१२४।४
 बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु । १-२९५।०
 बंचक भगत कहाइ राम के । १-१९।३
 बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । १-१३६।६
 बंदउँ अवध पुरी अति पावनि । १-१५।१
 बंदउँ अवध मुजाला । १-१६।०
 बंदउँ किंनर रजनिचर । १-७।४
 बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची । १-१५।४
 बंदउँ खल जस सेष सरोवा । १-३।८
 बंदउँ गुरु पद कंज । १-०।५
 बंदउँ गुरु पद पदुम प्रसागा । १-०।१
 बंदउँ चारिउ बेद भव बारिधि । १-१४।४
 बंदउँ बालरूप सोइ रामू । १-१९१।३
 बंदउँ बिधि पद रेनु । १-१४।४
 बंदउँ प्रथम महीसुर चरना । १-१।३
 बंदउँ पद धरि धरनि सिरु । १-१०९।०
 बंदउँ पद सरोज सब केरे । १-१७।४
 बंदउँ मुनि पद कंजु । १-१४।४
 बंदउँ लछिमन पद जलजाता । १-१६।५
 बंदउँ सब के चरन सुहाए । १-१७।२
 बंदउँ सब के पद कमल । १-७।१
 बंदउँ सीता राम पद । १-१८।०
 बंदउँ संत असज्जन चरना । १-४।३
 बंदउँ संत समान चित । १-३।४
 बंदत धरन करत प्रमु सेवा । १-५३।८
 बंदनवार पताका केतू । ७-८।२
 बंदि चरन उर धरि प्रमुताई । ६-१७।१
 बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । १-१५०।४

बंदि पितर सुर सुकृत सैमारे । १-२५४७
 बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु । २-७११०
 बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता । १-३५४७
 बंदि बंदि पग सिय सबही के । २-२४५३
 बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । १-३५७६
 बंदि राम पद बारहिं बारा । १-५६१२
 बंदि राम सिय चरन सुहाए । २-७५१२
 बंटी बेद पुरान गन कहहिं । २-५०५०
 बंटी शेष बेद तब । ७-१२४४
 बंटी मागध सूतगन । १-२६२०
 बंध मोच्छ प्रद सर्वपर । ३-१५१०
 बंधन कांठि गयो उरगादा । ७-५७५
 बंधु कहइ कटु संमत तोरें । १-२८०११
 बंधु सदा बिलोकि दुख कीन्हा । ६-१०४१५
 बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । २-३१५१२
 बंधु बचन सुनि चला बिभीषन । ६-६४११
 बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुक्काने । १-२३८७
 बंधु बंस तै कीन्ह उजागर । ६-६३१९
 बंधु मनोहर सोहहि संगी । १-३१५१५
 बंधु सरखा सँग लेहिं बोलाई । १-२०४११
 बंधु सनेह सरस एहि ओरा । २-२३११४
 बंधु समेत ज्ञनकु तब आए । १-३३७१४
 बंध कि रह द्विज अनहित कीन्हें । ७-११११३

भ

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी । २-११११
 भइ बड़ि भीर भूप दरबास । २-७५६
 भइ मम कौट मृग की नाई । ३-२४७
 भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । १-११८१८
 भई बिकल अबला सकल । १-१६१०

भई मुदित सब ग्रामबधूर्ते । २-११६१८
 भए अजस अध भाजन प्राणा । २-१४३१५
 भए कामबस जोगीस तापस । १-८४१९
 भए कालबस जब पितु माता । ७-१०११९
 भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति । ६-१०१९
 भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ । ३-१११४
 भए कुमार जबहिं सब भ्राता । १-२०३३
 भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें । १-१३३६
 भए तुरत सब जीव सुखारे । १-८५३
 भए निसाचर जाइ । १-१२२१०
 भए प्रगट कृपाला दीन । १-१११११
 भए परसपर प्रेमबस फिरि । १-३४२१०
 भए प्रेमबस सचिव सुनि । १-३३२१०
 भए बरन संकर कलि । ७-१००४४
 भए बहुत दिन अति अवसेरी । २-६६
 भए बिकल खग मृग एहि भाँती । १-३३७३३
 भए बिकल बानर मालु । ६-१००१८
 भए बिगतअम रामु सुखारे । २-१०६१४
 भए बिलोचन चारु अचंचल । १-२२९१४
 भए बिसुद्ध दिए सब दाना । २-१६१६८
 भए बिसोक कोक मुनि देया । १-२५४१३
 भए मगन छवि तासु बिलोकि । १-४११८
 भए मगन देखत मुख सोभा । १-२०६६६
 भए मगन मन तन बचन । २-३१७१०
 भए मगन सब देखनिहारे । १-३२४६
 भए मगन सिव सुनत सनेहा । १-८१३
 भए लोग सब मोहबस । ७-१७४४
 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता । १-२१४७
 भए म्यानु बरु मिटे न मोहू । २-१६८३

भक्त कल्पपादप आरामः । ३-१०।१३
 भक्ति प्रयच्छ रघुपुङ्गव । ५-श्लोक-२।३
 भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी । ७-४४।५
 भगत बछल प्रभु कृपानिधाना । १-१४५।८
 भगत बछलता प्रभु के देखी । ७-८२।७
 भगत कल्पतरु प्रनत हित । ७-८४।७
 भगत भूमि भूसुर सुरभि । २-९३।०
 भगत सिरोमनि भरत तें । २-२९९।०
 भगत हेतु नाना बिधि । १-२०५।०
 भगत हेतु भगवान प्रभु । ७-७२।७
 भगतिहि ग्यानिहि नहिं कछु भेदा । ७-११४।१३
 भगतिहि सानुकूल रघुराया । ७-११५।५
 भगति करत बिनु जतन प्रयासा । ७-११८।८
 भगति कि साधन कहउँ बखानी । ३-१५।५
 भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । ७-८४।७
 भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । १-११०।२
 भगति स्यानु बैराग्य जनु । २-३२१।०
 भगति जोग सुनि अति सुख पावा । ३-१६।१
 भगति तात अनुपम सुखमूला । ३-१५।४
 भगति निरूपन बिबिध बिधाना । १-३६।१३
 भगति पच्छ हठ करि रहेउँ । ७-११४।७
 भगति पच्छ हठ नहिं सठताई । ७-४५।८
 भगतिवंत अति नीचउ प्राणी । ७-८५।१०
 भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । १-१८८।६
 भगति सुत्तिय कल करन बिभूषन । १-११६।६
 भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । ७-८३।५
 भगति हीन नर सोहइ कैसा । ३-३४।६
 भगति हीन बिरंचि किन होई । ७-८५।९
 भगति हेतु बहु कथा पुराना । १-२०९।८

भगति हेतु बिधि भवन बिहाई । १-१०।४
 भगति हेतु सोइ दीनदयाला । १-२२।५
 भजन हीन सुख कवने काजा । ७-८३।६
 भजसि न मन तेहि राम । ६-०।१
 भजहि राम तजि काम मद । ३-४६।४
 भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि । ७-२१।२
 भजहु राम पद पंकज । ७-११९।७
 भजहु राम रघुनायक । ५-२३।०
 भजहु राम रघुबीर । ७-१०।७
 भजामि ते पदांजुं । ३-३।२
 भजामि भाव बल्सर्म । ३-३।१९
 भजि रघुपति करु हित आपना । ६-५५।५
 भजिअ राम तजि काम सब । ७-१०।४।७
 भजे सशक्ति सानुजं । ३-३।१२
 भट कटत तन सत खंड । ३-११।१९
 भट कपाल करताल बजावहिं । ६-८।८
 भट गिरत स्थ ते बाजि गज । ६-७।१९
 भट जम नियम सैल रजधानी । २-२३।७
 भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ । १-१।३
 भनिति भदस बस्तु भलि बरनी । १-१।५०
 भनिति मोरि सब गुन रहित । १-१।०
 भनिति मोरि सिव कृपा बिभाती । १-१।१९
 भय अरु प्रीति नीति देखराई । ७-१८।७
 भय आतुर कपि भागन लागे । ६-४।१९
 भय उघाट बस मन थिर नाहीं । २-३०।५।५
 भयदायक खल के प्रिय बानी । ३-२३।८
 भय देखाइ ले आवहु । ७-१८।०
 भयउ ईस मन छोमु बिसेवी । १-८६।४
 भयउ कालबस काहु न माना । ६-८५।२

मयउ क्रुद्ध रावन बलवाना । ६-९७१५४
 मयउ कोलाहलु अरुध अति । २-१५३१०
 मयउ कोलाहल नगर मझारी । ६-१७१८
 मयउ कोलाहल हय गय गाजे । १-३०१५
 मयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन । २-१३३३
 मयउ तानु मन परम उछाहा । ७-६३१६
 मयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी । २-३१८
 मयउ तेजहत श्री सब गई । ६-३४१४
 मयउ न अहइ न अब होनिहारा । २-१७२६
 मयउ न नारद मन कछु रोषा । १-१२६१५
 मयउ निमिष महँ अति अधिआरा । ६-४५१९९
 मयउ निषादु विषादबस । २-१४३१०
 मयउ नृषहि चुनि अति अनुरागा । १-१६२४
 मयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं । ६-४६१४
 मयउ पाखु दिन सजत समाजू । २-१८३
 मयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । १-२७१२
 मयउ बिकल बरनत इतिहासा । २-१५४५
 मयउ विषादु निषादहि नारी । २-११२
 मयउ मनोरथ सुफल तव । १-७४१०
 मयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा । १-१७१८
 मयउ रसोई मूसुर मीसू । १-१७२७
 मयउ राम पद नेह तव । ७-६८१०
 मयउ समउ अब धारिअ पाऊ । १-३१२७
 मयउ समय जेहि हेतु जेहि । १-४७१०
 मयउ हृदयँ आनंद उछाहू । १-३८१९०
 मयो अति कोलाहल बिकल कपि । ६-८११९९
 मयो पानिगहनु बितोकि बिधि सुर । १-३३३१८
 मरत अनुज सौमित्रि समेता । ७-१८१९
 मरत अमित महिमा सुनु रानी । २-२८८१२

मरतु अवधि सनेह ममता की । २-२८८६
 मरत अत्रि अनुसासन पाई । २-३०११९
 मरत आइ आगँ मइ लीन्है । २-२११७
 मरत आगमनु सकल मनावहि । २-१०१२
 मरतु कमल कर जोरि । २-१७६१०
 मरतु कहहि सोइ किरँ भलाई । २-२५८८
 मरत कहेउ सुरसरि तव रेनु । २-११६७
 मरतु कि राउर पूत न हौंही । २-२११२
 मरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । २-२२८२
 मरत कुसल पूँछि न सकहि । २-१५८१०
 मरतकूप अब कहिहहिँ लोग । २-३०१७
 मरत बरन सिरु नाइ तुरित । ७-२७
 मरत चरित करि नेमु । २-३२६१०
 मरत चरित कीरति करतूती । २-२८७७
 मरतु जनकु मुनिजन सचिव । २-३०२१०
 मरत जाइ घर कीन्ह बिचारु । २-१८५१२
 मरत तीसरे पहर कहै । २-२०३१०
 मरत दयानिधि दीन्हि छड़ाई । २-१६२८
 मरत दरसु देखत खुलेउ । २-२२३१०
 मरत दसा तेहि अबसर कैसी । २-२३३७
 मरत दसा चुमिरत मोहि । ६-११६७
 मरत दीख बन सैल समाजू । २-३४१२
 मरत दीन्ह निज बसन डसाई । ७-४११६
 मरत दुखित परिवारु निहारा । २-१५८७
 मरत दीख प्रभु आश्रमु पावन । २-२३८१२
 मरत धन्य कहि धन्य सुर । २-२०५१०
 मरत धन्य तुम्ह जसु जगु जयऊ । २-२०१६
 मरतु न मोहि प्रिय राम समाना । २-४८१५
 मरत न राजनीति उर आनी । २-१८८१६

भरत नयन कुज दक्षिण । ७-०४
 भरतु नीति स्व साधु सुज्ञाना । २-२२७।२
 भरत पयादेहिं आए आजू । २-२०३।२
 भरत प्रीति नति बिनय बडाई । २-३०२।४
 भरत प्रेमु तैहि समय जस । २-२२५।०
 भरत बचन मुनिबर मन भाए । २-२१२।४
 भरत बचन सब कहैं प्रिय लागे । २-१८३।१
 भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे । २-२६९।१
 भरत बचन सुनि देखि सनेहू । २-२५६।१
 भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ । २-२९३।१
 भरत बचन सुनि भयउ विषादू । २-१९७।८
 भरत बचन सुनि माझ त्रिबेनी । २-२०४।६
 भरत बचन सुनि मुनि सुस्यु पाई । २-२११।७
 भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे । २-१७०।४
 भरत बाहु बल सील गुन । ६-६०७
 भरत बिनय सादर सुनिअ । २-२५८।०
 भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ । २-३००।८
 भरत बिनय सुनि सबहि प्रसंसी । २-३१३।८
 भरत बिबेक बराहैं बिसाला । २-२९६।४
 भरत बिमल जसु बिमल बिधु । २-३०३।०
 भरत भगति तुम्हरे मन जाई । २-२६५।२
 भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू । २-१८९।४
 भरत भाग्य प्रमु कोमलताई । ७-१०।६
 भरत महा महिमा जलरासी । २-२५६।२
 भरत मातु पद बंदि प्रमु । २-३१९।०
 भरत मुदित अबलंब लहे तें । २-३१५।८
 भरत मातु पहिं गइ बिलखानी । २-१२।५
 भरतु मुनिहि मन भीतर भाए । २-२५६।५
 भरत रहनि समुझनि करतूती । २-३२४।७

भरत रहनि सुरपति सुत करनी । ७-६४।८
 भरत राज रघुबर बनवासू । २-२७०।४
 भरत राम की मिलनि लखि । २-२४०।०
 भरत राम गुन ग्राम सनेहू । २-३०८।३
 भरतु राम प्रिय पुनि लघु माता । २-२९६।५
 भरत राम संबादु सुनि । २-३०८।०
 भरतु रामही की अनुहारी । १-३१०।६
 भरत श्रवन मन सूल सम । २-१५९।०
 भरत सकल साहनी बोलाए । १-२९७।३
 भरत सनेह सील ब्रत नेमा । ७-७।३
 भरत सनेह सुभाऊ सुबानी । २-३२०।४
 भरत सपथ तोहि सत्य । २-१५।०
 भरत सरिस को राम सनेही । २-२९७।८
 भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । २-६।७
 भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा । १-३०७।७
 भरत सत्रुहन दूनउ भाई । १-१९७।४
 भरत सत्रुहन दोनउ भाई । ७-२५।४
 भरत सील गुन बिनय बडाई । २-२८२।३
 भरत सील गुर सचिव समाजू । २-३१५।३
 भरत सुजान राम रुख देखी । २-१२।५
 भरत सुभाऊ न सुगम निगमहू । २-३०३।१
 भरत सुभाऊ समुझि मन माहीं । २-२६।४
 भरत सुभाऊ सीलु बिनु बूझें । २-१९।८
 भरत सुभाऊ सुसीतलताई । १-४।८
 भरत हृदयें सिय राम निवासू । २-२९४।७
 भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू । २-४।१
 भरतु बंदिगृह सेइहहिं । २-१९।०
 भरतु हंस रबिबंस तड़ागा । २-३१।६
 भरतहि अगसि देहु जुबराजू । २-४।२

मरतहि कहहि सराहि सराही । २-१८३४
 मरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । ६-१२०२
 मरतहि देखि मातु उठि धाई । २-१६३१
 मरतहि दोसु देइ को जाएँ । २-२२७८
 मरतहि धरम धुरंधर जानी । २-२५८१२
 मरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत । २-३००१११
 मरतहि बहुरि सराहन लागी । २-२२१८
 मरतहि बिसरेउ पितु मरन । २-१६०१०
 मरतहि मयउ परम संतोषू । २-३०६१३
 मरतहि सहित समाज उछाहू । २-२२४१२
 मरतहि होइ न राजमदु । २-२३११०
 मरतहुँ मातु सकल समुझाई । २-१६६१३
 मरतादि अनुज विगीषनांगद । ७-१११११
 मरतानुज लछिमन पुनि भेंटे । ७-५११
 मरद्दाज आश्रम अति पावन । १-४३१६
 मरद्दाज आश्रम सब आए । २-१०७१६
 मरद्दाज कौतुक सुनहु । १-१२७१०
 मरद्दाज मुनि बसहिं प्रयाग । १-४३११
 मरद्दाज सुनि संकर बानी । १-१४०१७
 मरद्दाज सुनु अपर पुनि । १-१५२१०
 मरद्दाज सुनु जाहि जब । १-१७५१०
 भ्रम तैं चकित राम मोहि देखा । ७-७८१४
 भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । ७-८१११
 भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । २-१२७१५
 भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा । ७-३१११
 भ्राता पिता पुत्र उरगारी । ३-१६१५
 भरि भरि परन पुटीं रचि रुरी । २-२४११२
 भरि भरि बसहैं अपार कहारा । १-३३२१५
 भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं । २-२०११४

भरि भरि हेम थार नामिनी । ७-२१६
 भरि भुवन रहा उछाहु राम । १-३२४११३
 भरि लोचन छबिसिंधु निहारी । १-४११२
 भरि लोचन बिलोकि अवघेसा । ७-११०१११
 भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । ६-१०४१३
 भरे कनक कौपर कलस से । १-३२२११२
 भरे बिलोचन प्रेम जल । १-२५७१०
 भरे भुवन घोर कठोर सब रवि । १-२६०११
 भरे सुधासम सब पकवाने । १-३०४१२
 भरेउ सुमानस सुयल खिराना । १-३५११
 भल अनमल निज निज करतूती । १-४१७
 भल दिन आजु जानि मन माहीं । २-३१२१२
 भल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा । ६-६२११
 भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ । १-२४३१८
 भले भवन अब बाचन दीन्हा । १-१३६१५
 भलेउ षोड सब बिधि उपजाए । १-५१३
 भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा । १-१५२११
 भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता । १-२१३१७
 भलेहिं नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । २-२१२१६
 भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाए । १-३३११८
 भलेहि नाथ सब कहहि सहरषा । २-११०१२
 भलेहि मंद मंदेहि भल करहु । १-१३६१२
 भलो भलाइहि पै लहइ । १-५१०
 भव अंग भूति मसान की । १-१११४
 भव कि परहिं परमात्मा बिंदक । ७-११११५
 भव खेद छेदन दच्छ हम । ७-१२१८
 भव तारन कारन काज परे । ६-११०११२
 भव प्रबाहैं संतत हम परे । ६-१०१११२
 भव पंथ भ्रमत अमित दिबस । ७-१२१६

भव बारन टारन सिंह प्रभो । ६-११०।२
 भव बारिधि कुंभज रघुनायक । ७-३४।३
 भव बारिधि मंदर परमं दर । ६-११४।६
 भव बारिधि मंदर सब बिधि । १-१८५।१५
 भव बंधन ते छूटहिं नर । ७-५८।०
 भव भव बिमव पराभव कारिनि । १-२३४।८
 भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं । ४-३०।७
 भव भंजन गंजन संदेहा । ७-१२१।२
 भव भंजन रघुनाथ मजु । १-१२४।४
 भव भंजन रंजन सुर यूथः । ३-१०।१०
 भव मगु अगम अनंदु तेइ । २-१२३।०
 भव श्रम सोषक तोषक तोषा । १-४२।४
 भव सागर चह पार जो पावा । ७-५२।३
 भव सिंधु अगाध परे नर ते । ७-१३।१०
 भवन एक पुनि टीख सुहावा । १-४।८
 भवन गई रघुपति गुन । ६-१०५।०
 भवन गयउ दसकंधर । ५-१०।०
 भवन बेदधुनि अति मृदु बानी । १-११४।४
 भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं । २-७०।२
 भवानीशङ्करो वन्दे । १-श्लोक-२
 भवनु भयंकरु लाग तेहि । २-१४७।०
 भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । ६-६८।२
 भा निरास उपजी मन त्रासा । ३-१।३
 भा सब के मन मोदु न थोरा । २-१८४।१
 भाइ सचिव गुर पुरजन साथ । २-२७४।१
 भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए । १-३३१।३
 भाइन्ह सहित बिआहि । १-३५०।०
 भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि । २-२७४।८
 भाइहि भाइहि परम समीती । १-१५२।७

भाइहि सौपि मानु सेवकाई । २-११७।४
 भाइहु लावहु धोख जनि । २-१११।०
 भाग छोट अभिलाषु बड़ । १-८।०
 भाग हमारें आगमनु । २-१३५।०
 भाग्य बिमव अवधेस कर । १-११३।०
 भागत मट पटकहिं धरि धरनी । ६-४६।७
 भागि भवन पैठी अति त्रासा । १-१५।५
 भागे बानर धरहिं न घीरा । ६-१५।४
 भागे नालु बलीमुख जूथा । ६-६१।१
 भागेउ बिबेकु सहाय सहित । १-८३।१
 भाजि चले किलकत मुख । १-२०३।०
 भाँति अनेक परे पकवाने । १-३२८।२
 भाँति अनेक भई जेवनारा । १-१८।४
 भाँति अनेक भरतु समुझाए । २-१६६।२
 भाँति अनेक संमु समुझावा । १-६१।७
 भाँति भाँति बोलहि बिहग । २-१३७।०
 भानु कमल कुल पोषनिहारा । २-१६।७
 भानु कृसानु सब रस खाली । १-६८।६
 भानुप्रतापहिं बाजि समेता । १-१७०।७
 भानु पीटि सेइअ उर आगी । ४-२२।४
 भानुबंस भए भूप घनेरे । २-२५४।५
 भानु बंस राकेस कलंकू । १-२७३।२
 भामिनि करहु न कहाँ उपाऊ । २-२०।८
 भामिनि भयउ तौर मनभावा । २-२६।२
 भायें कुमार्ये अनख आलसहई । १-२७।१
 भायप भगति भरत आचरनु । २-२२२।१
 भायप गलि चहुँ बंधु की । १-४२।०
 भार धरन सत कोटि अहीसा । ७-११।८
 भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए । १-२३२।३

भाल बिसाल तिलक झालकाही । १-२४२।६
 भालु कपिन्ह पट भूषण पाए । ६-११७।१
 भालु कीस सब हरषे । ६-१०३।०
 भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । ६-४६।५
 भालु बाघ बृक केहरि नागा । २-६१।८
 भाले बालविधुर्गले च गरलं । २-४७-१(२)
 भाव बस्य भगवान सुख । ७-१२।४
 भाव भेट रस भेट अपासा । १-८।१०
 भाव सहित खोजइ जो प्राणी । ७-१११।१५
 भाव सहित सो यह कथा । ७-१२८।०
 भावी बस प्रतीति उर आई । २-१८।१
 भाषानिबन्धमति मंजुल । १-४७-७(४)
 भाषाबद्ध करवि मैं सोई । १-३०।२
 भाषा भनिति भोरि मति मोरी । १-८।४
 भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए । ७-१२।४
 भिन्न भिन्न मैं दीख सबु । ७-८।१।४
 भिरे उनी बाली अति तर्जा । ४-७।२
 भिरे वीर इत रामहिं । ६-७१।०
 भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । ६-५२।४
 भित्तिनि जिमि छाड़न चहति । २-२८।०
 भीतर भवन दीन्ह बर बासू । १-३५।१७
 भुजन अनेक रोम प्रति जासू । ७-२।१।२
 भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । ६-१६।३
 भुज जुगल फेरत सर सरासन । ६-७०।१५
 भुजदंड ब्रह्म प्रताप बलं । ६-११०।१०
 भुजदंड पीन मनोहरायत । ६-८५।१२
 भुजदंड सर कोदंड फेरत । ६-१०२।१८
 भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । १-४४।४
 भुजबल जितेहु काल जम साई । ६-१०३।८

भुज बल बिपुल भार महि खंडित । ७-५०।५
 भुजबल बिस्व जितव तुन्ह जहिआ । १-१३८।६
 भुजबल बिस्व बस्य करि । १-१८२।४
 भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । १-२७।१।४
 भुज बल रिपु दल दलमलि । ६-४५।०
 भुज बिक्रम जानहि दिगपाला । ६-२४।४
 भुज बिसाल गहि लिए उठाई । ३-१।२२
 भुज बिसाल भूषण जुत भूरी । १-११८।५
 भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी । १-१०।५।८
 भुजा बिटप सिर सुंग समाना । ६-१८।५
 भुवन चारिदस भरा उछाहू । १-२१।५।३
 भुवन चारिदस भूधर मारी । २-०।२
 भुवन भुवन देखत फिरउँ । ७-८।१।४
 भूत दया द्विज गुर सेवकाई । ७-१२।५।६
 भूत द्रोह रत मोहबस । ६-७।८।०
 भूधर नख बिटपायुध धारी । ६-५।२।३
 भूप अनुज अरिमर्दन नामा । १-१७।५।३
 भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई । १-२८।१।२
 भूप धरम जो बेट बखाने । १-१५।४।५
 भूप धरमब्रतु सत्य सराहा । २-१७।०।६
 भूप प्रतापमानु बल पाई । १-१५।४।१
 भूप प्रीति कैकइ कठिनाई । २-३६।४
 भूपै प्रतीति तोरि किमि कीन्हीं । २-१६।१।३
 भूप बचन सुनि इत उत तकहीं । १-२६।६।८
 भूप बचन सुनि सहज सुहाए । १-३५।५।१
 भूप बागु बर देखेउ जाई । १-२२।६।३
 भूप बिकल मति मोहें मुलानी । १-१७।२।८
 भूप बिलोकि लिए उर लाई । १-३५।८।१
 भूप बिलोके जबहिं मुनि । १-३०।७।०

मूप भगौरथ सुरसरि आनी । २-२०८७
 मूप भरत पुनि तिए बोलाई । १-२९७१९
 मूप भरतु मुनि सहित समाजू । २-२९३४४
 मूप भवन किमि जाइ बखाना । १-२९६४४
 मूप भवनु तेहि अवसर सोहा । १-३४४१९
 मूप मनोरथ सुमग बन । ३-२८१०
 मूप मीलि मनि मंडन धरनी । ७-३४४
 मूप रूप गुन सील सराही । २-२७५४
 मूप लम तब राम दुरावा । ३-२९९८
 मूप सजेउ अभिषेक समाजू । २-९१२
 मूप सयानप सकल सिरानी । १-२५५१५
 मूप सहस दस एकहि बारा । १-२५०१५
 मूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । २-५४८१५
 मूपति गवने भवन तब । १-२९४१०
 मूपति जिअब भरत उर आनी । २-२८९७
 मूपति तृषित बिलोकि तेहि । १-९५८१०
 मूपति बोलि बराती लीन्हे । १-३५०४४
 मूपति भवन कोलाहलु होई । १-३४४४७
 मूपति भवन सुमावै सुहावा । २-८९१७
 मूपति भावी मिटइ नहिं । १-९७४१०
 मूपति भरन पेम पनु राखी । २-२६९१५
 मूपति राम सपथ जब करई । २-२९७७
 मूपहि बचन बानसम लागे । २-७८१६
 भूमि जीव संकुल रहे । ४-९७१०
 भूमि न छोडत कपि चरन । ६-३४४
 भूमि परत मा दाबर पानी । ४-९३३६
 भूमि परा कर रहत अकासा । ५-५६१२
 भूमि सप्त सागर मेखला । ४-२९१९
 भूमि सयन पटु मोट पुसना । २-२४४

भूमि सयन बलकल बसन । २-६२१०
 भूर्ज तरु सम संत कृपाला । ७-१२०१६
 भूरि भाग माजनु मयहु । २-७४१०
 भूरि भावै भेंटे भरत । २-२४९१०
 भूषन कराल कपाल कर । १-९२१९०
 भूषन बनमाला नयन । १-९९९१४
 भूषन बसन बाजि गज दीन्हे । १-३३९१२
 भूषन बसन भोग सुख भूरी । २-३२३१५
 भूषन बसन महामनि नाना । १-३०४४४
 भूषन मनि पट नाना जाती । १-३४८१२
 भूषन सकल सुदेस सुहाए । १-२७७१३
 भूषन सजति बिलोकि मृगु । २-२६१०
 भूषित उडगन तडित धनु । १-३९६१०
 भूसुर बोलि भरत कर जोरे । २-३२२१३
 भूसुर भीर देखि सब रानी । १-३५९१२
 भूसुर सचिव समेत समाजा । १-३३८४४
 भूसुर ससि नव बृंद बलाहक । ७-५०४४
 भूकुटि बिलास जासु जग होई । १-९४७१४
 भूकुटि बिलास नचावइ ताही । १-९९९१५
 भूकुटि बिलास भयंकर काला । ६-९४१२
 भूकुटि बिलास सृष्टि लय होई । ३-२७४४
 भूकुटि भंग जो कालहि खाई । ६-६५१२
 भूकुटि मनोज चाप छबि हारी । १-९४६४४
 भूकुटी कुटिल नयन रिस राते । १-२६७४७
 भृगुपति कर सुमाउ सुनि सीता । १-२६९१८
 भृगुपति केरि गरब गरुआई । १-२५९१५
 भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ । १-२८०४४
 भृगुपति सुनि सुनि निरमय बानी । १-२७७१६
 भृगुबर परसु देखावहु मोही । १-२७५१६

मृगसुत समुद्रि जनेउ बिलोकी । १-२७२।५
 मे अति अहित रामु तेउ तोही । २-१६१।७
 मेंटत भरतु ताहि अति प्रीती । २-१९३।१
 मेंटत मुज मरि भाइ भरत सो । २-३१६।४
 मेंटि कुसल बूझी मुनिराया । ७-४।४
 मेंटि भरतु रघुबर समुझाए । २-३१७।४
 मेंटी रघुबर मातु सब । २-४४।०
 मेंटेउ तनय सुमित्राँ राम । ७-६।७
 मेंटेउ बहुरि लखन लघु भाई । २-१६४।२
 मेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । २-२४१।१
 भेद लेन पठवा दससीसा । ५-४३।६
 भेद हमार लेन सठ आवा । ५-४२।७
 भेरि नफीरि बाज सहनाई । ६-७८।९
 भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं । ७-१२१।४
 भे अति प्रेम बिकल महतारी । १-१०१।६
 भे जगबिदित दच्छ गति सोई । १-६४।३
 भैया कहहु कुसल दोउ बारे । १-२९०।४
 भोग बिभूति भूरि मरि राखे । २-२१३।५
 भोग रोगसम भूषन भारु । २-६४।५
 भोगावति जसि अहिकुल बासा । १-१७७।७
 भोजन करत चपल चित । १-२०३।०
 भोजन करत बोल जब राजा । १-२०२।६
 भोजन करिअ तृपिति हित लागी । ७-११८।९
 भोजन कहूँ सब विप्र बोलाए । १-१७२।४
 भोजन कीन्ह अनेक विधि । १-३५४।०
 भोजनु करहिं सुर अति बिलंबु । १-९८।१०
 भोर न्हाइ सबु जुस समाजू । २-३१२।१
 भोरु भएँ रघुनंदनहि जो । २-२४७।०
 भोरहि आजु न्हाइ प्रयागा । २-२७१।६

भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं । २-२८९।०
 भंजि घनुष जानकी बिआही । ६-३५।११
 भंजेउ चापु दापु बड़ बाढ़ा । १-२८२।६
 भंजेउ चाप प्रयास विनु । १-२९२।०
 भंजेउ स्थ सारथी निपाता । ६-४२।७
 भंजेउ सम आपु भव चापू । १-२३।६

म

मइकें ससुरें सकल सुख । २-१६।०
 मकर उरग झप गन अकुलाने । १-५७।७
 मकर नक्र नाना झष ब्याला । ६-३।५
 मकरंदु जिन्ह को संमु सिर । १-३२३।१४
 मख रखवारी करि दुहुँ भाई । १-३५६।२
 मख राखेउ सबु साखि । १-२१६।०
 मगबासी नर नारि सुनि । २-२२१।०
 मगन ध्यान रस दंड जुग । १-१११।०
 मघवा महा मलीन । २-३०१।०
 मच्छर काहि कलंक न लावा । ७-७०।३
 मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता । १-२२७।५
 मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । २-८६।७
 मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए । ४-२४।३
 मज्जन पान पाप हर एका । १-१४।२
 मज्जन पान समेत हय । १-१५८।०
 मज्जन फल पेखिअ ततकाला । १-२।१
 मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । १-४३।८
 मज्जहिं भूत पिसाच बेताला । ६-८७।१
 मज्जहिं सज्जन बृंद बहु । १-३४।०
 मत तुम्हार गहु जो जग कहहीं । २-१६८।४
 मत्त नाग तम कुंभ बिदारी । ६-११।२
 मत्त सहस दस सिधुर साजे । १-३३२।७

मत्सर मान मोह मट घोरा । ४-३०६
 मति अति नीच उँचि रचि आछी । १-४७
 मति अनुरूप कथा मै भाषी । ४-१२७।१
 मति अनुसार सराहन लागे । २-३०८।५
 मति अनुहारि सुबारि गुन । १-४३।४
 मति कीरति गति भूति मलाई । १-२।५
 मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु । ६-१२०।१८
 मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु । १-१३।५।८
 मथि प्रगटेउ सुर साधु हित । २-२३।१०
 मट मोह महा ममता रजनी । ७-१३।६
 मटन अंध ब्याकुल सब लोका । १-८।१५
 मध्यदिवस अति सीत न घामा । १-११०।२
 मध्य बाग सरु सोह सुहावा । १-२२६।७
 मध्यम परपति देखइ कैसें । ३-४।१३
 मधुकर खग मृग तनु धरि देवा । ४-१२।४
 मधुकर मुखर भेरि सहनाई । ३-३७।१
 मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि । १-३२२।११
 मधुर बचन कहि कहि परितोषी । २-११७।४
 मधुर मधुर गरजइ घन घोरा । ६-१२।२
 मन अति हरष जनाब न तेही । ३-२।५।८
 मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । १-७८।४
 मन क्रम बचन अगोचर जोई । १-२०२।५
 मन क्रम बचन कपट तजि । ३-३३।०
 मन क्रम बचन चरन अनुसारी । ५-३०।४
 मन क्रम बचन चरन रत होई । २-७१।६
 मन क्रम बचन छाडि चतुराई । १-१११।६
 मन क्रम बचन जनित अघ जाई । ७-१२।५।३
 मन क्रम बचन राम पद सेवक । ३-१।२
 मन क्रम बचन लवार तैड । ७-१।४

मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु । ४-२२।३
 मन करि बिषय अनल बन जरई । १-३।४।८
 मन कामना सिद्ध नर पावा । ७-१२।५
 मन म्यान गुन गोतीत प्रभु । ३-५।१२
 मन गोतीत अमल अबिनासी । ४-११०।५
 मनजात किरात निपात किए । ७-१३।७
 मनु जाहिं सचेउ मिलिहि सो । १-२३।५।१
 मन तहैं जहैं रघुबर बैदेही । २-२७।४।४
 मन ते सकल बासना भागी । ७-१०१।६
 मन थिर करहु देव डरु नाहीं । २-२६।५।४
 मनु थिर करि तब संभु सुजाना । १-८।१४
 मन पछिताति सीय महतारी । १-२६१।७
 मनु प्रसन्न करि सकुच तजि । २-२६।४।०
 मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा । २-२।५।५
 मन बच क्रम मोहि निज जन जाना । ७-११२।३
 मन बच क्रम बानी छाडि सयानी । १-१८।५।१२
 मन बचन कर्म बिकार तजि । ७-१२।२।४
 मन बिहसे रघुबंसमनि । १-२६।५।०
 मन बुद्धि बर बानी अगोचर । १-३२२।१६
 मन भावत बर मागउँ स्वामी । ७-८।३।८
 मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं । १-३।१०।८
 मनु मलीन तनु सुटर कैसें । १-२७।७।८
 मन मलीन मुह मीठ नृपु । २-१७।०
 मन महुँ करइ बियार बिघाता । ७-५।३
 मन महुँ जात सराहत । ६-६०।४
 मन महुँ तरक करै कपि लागे । ५-५।२
 मन महुँ बहुत गाँति सुख मानी । ७-१।२
 मन महुँ बिप्र चरन सिरु नायो । ६-११।८।२
 मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे । ६-२१।४

मन महुँ सराहत भरत मायप । २-३००।१०
 मन मुसुकाइ मानुकुल मानू । २-४०।५
 मन मंदिर तिन्ह के बसहु । २-१३०।०
 मन समेत जेहि जान न बानी । १-३४०।४
 मन संतोष सुनत कपि बानी । ५-१६।१
 मन संतोषे सबन्हि के जहँ । १-११६।१०
 मन संभव दासुन दुख दास्य । ४-३४।४
 मनु हठ परा न सुनइ सिखावा । १-४०।५
 मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । ४-२३।४
 मन हरष सम गंधर्व सुर मुनि । ५-३४।१२
 मनही मन मनाव अकुलानी । १-२५।५
 मनहीं मन महैसु मुसुकाहीं । १-१२।३
 मनहीं मन भागहिँ बरु एहु । २-२२।३
 मनहुँ करुन रस कटकई । २-४६।०
 मनहुँ कोफ कोकी कमल । २-८६।०
 मनहुँ तौलि निज बाहुबल । १-१०१।०
 मनहुँ न आनिअ अमरपति । २-२१८।०
 मनहुँ पाइ मट बाहुबलु । १-२५०।०
 मनहुँ प्रेमु परमाख्यु दोऊ । २-११०।२
 मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं । २-५४।६
 मनहुँ बारिनिधि बूड जहाजू । २-८५।३
 मनहुँ मत्त गजगन निरखि । १-२६।०।०
 मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा । १-३२४।४
 मनहुँ लखन सन भेंट । २-११३।०
 मनि खंभ मीति बिरचि बिरची । ४-२६।१०
 मनिगन पुर नर नारि सुजाती । २-०।४
 मनिगन मंगल बस्तु अनेका । २-५।४
 मनि दीप रत्नहिँ भवन । ४-२६।१
 मनि बसन भूषन वारि । १-३२६।१३

मनि बसन भूषन मूरि वारहिँ । १-३१८।१०
 मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना । १-११०।६
 मनिमय रचित चारु चौबारे । २-८१।८
 मनि मानिक मुकुता छवि जैसी । १-१०।१
 मनुज बास सचराचर । ६-१५।४
 मनोज बैरि वंदित । ३-३।१
 मम अनुचरन्ह कीन्ह मय भंगा । ४-५५।४
 मम अनुरूप पुरुष जग माहीं । ३-१६।१
 मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी । १-१३६।८
 मम आधीन जुगति नृप सोई । १-१६६।३
 मम उदर मुअन अनेक लागत । ६-१८।१५
 मम उर बसउ सो समन । ३-३१।१८
 मम उर सो बासी यह उपहासी । १-१११।१०
 मम कृत सेतु जो दरसन करिही । ६-२।४
 मम गुन ग्राम नाम रत गत । ४-४६।०
 मम गुन गावत पुलक सरीरा । ३-१६।११
 मम जनकहिँ तोहि रही मिताई । ६-११।२
 मम दरसन फल परम अनुषा । ३-३५।१
 मम परितोष बिबिधि बिधि कीन्ह । ४-११२।६
 मम पाछे घर घावत । ३-२६।०
 मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । ५-४०।५
 मम भुज बल आश्रित तेहि जानी । ४-८।१०
 मम भुज सागर बल जल पूरा । ६-२०।३
 मम माया संभव संसार । ४-८५।३
 मम लोचन गोचर सोई आवा । ४-१५
 मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । ४-४।८
 मम हित लागि तजे इन्ह प्राणा । ६-११३।२
 मम हित लागि तजेहु पितु माता । ६-६०।४
 मम हिय गगन इंदु इव । ३-११।०

मम हिर्य बसहु निरंतर । ३-८१०
 मम हृदय पंकज मृग अंग । ३-३११४
 ममता तरुन तमी अँघिआरी । ५-४६३
 ममता दादु कंडु डरवाई । ७-१२०३३
 ममता रत सन म्यान कहानी । ५-५७३
 मय तनुजा मंदोदरि नामा । १-१७७१२
 मय सुत मायावी तेहि नाऊँ । ४-५१२
 मयना सत्य सुनहु मम बानी । १-९७१२
 मरइ न रिपु श्रम भयउ विसेषा । ६-१०११२
 मर्कट बदन मयंकर देहि । १-१३३१८
 मर्कट बिकट भट जुटत कटत । ६-४८११३
 मर्कटहीन करहु महि जाई । ६-३२१२
 मरकत कलक बरन बर जोरी । १-३१४७
 मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । ७-७५५
 मरकत सगल घर लरत दामिनि । ३-१७१५५
 मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा । ६-९७१२
 मरती बेर नाथ मोहि बाली । ७-१७१२
 मरदहिँ दसानन कोटि कोटिन्ह । ६-९५११२
 मरदहिँ निस्साबर कटक भट । ६-८०११०
 मरिँ गदँ मिलबहिँ दससीसा । ५-५४७
 मरनसीलु जिमि पाव पिउसा । १-३३४५
 मरन हेतु निज नेहु बिचारी । २-२४६४
 मरमु न कौऊ जान कछु । १-५८१०
 मरम बचन जब सीता बोला । ३-२७१५
 मरम बचन सुनि राउ । २-३५१०
 मरीँ सज्जन सुमति कुदारी । ७-११९११४
 मरु गर काटि निलज कुलघाती । ६-३२४
 मरुत उड़ाव प्रथम तेहिँ भरई । ७-१०५११२
 मरुत कोटि सत बिपुल बल । ७-९११४

मलिन बचन बिबरन विकल । २-१६३१०
 मसक दंस बीते हिम त्रासा । ४-१६१८
 मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई । २-२३११३
 मसक समान स्म कपि धरी । ५-३११
 मसकहिँ करइ बिरंधि प्रभु । ७-१२२३७
 महा अजय संसार रिपु । ६-८०११
 महानाद करि गर्जा कोटि । ६-६९१०
 महा बिटप कोटर महुँ जाई । ७-१०६१८
 महाबृष्टि अति फूटि किआरी । ४-१४७
 महा भीर भूपति के द्वारें । १-३००१३
 महा महा मुखिआ जे चारहिँ । ६-४४१५
 महामोह उपजा उर तोरे । ७-५८७
 महामोह तम पुंज जासु । १-०१५
 महामोहु महिषेसु बिसाला । १-४६६
 महामंद मन सुख बहसि । ३-३६१०
 महामंत्र जोइ जपत महेशु । १-१८१३
 महादेव अवगुन भवन । १-८०१०
 महाबीर निसिचर सब कारे । ६-४५७
 महाबीर बिनवउँ हनुमाना । १-१६११०
 महामत गजराज कहूँ । १-२५६१०
 महाराज अब कीजिअ सोई । २-२९०१८
 महाराज कर सुभ अनिषेका । ७-१४१२
 महासैल एक तुरत उपारा । ६-५०१२
 महि पटकइ गजराज इव । ६-६९१०
 महि परत उठि भट भिरत मरत । ३-१९१२६
 महि परत पुनि उठि तरत देवन्ह । ६-१४११०
 महि पाताल नाक जसु व्यापा । १-२६४५
 महि बहु रंग रचित गच कौंचा । ७-२६१६
 महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे । २-३१०६

माहि मंडल मंडन चारुतर । ७-१३/५
 माहि सरि सागर सर गिरि नाना । ७-८०/४
 माहिष खाइ करि मदिरा पाना । ६-६३/१९
 माहिसुर मंत्री मातु गुर । २-२४५/०
 माहिमा अमिति न सकहिं कहि । १-२३५/०
 माहिमा अमिति ब्रेद नहिं जाना । ७-४७/५
 माहिमा अमित मोरि मति थोरी । ३-१०/२
 माहिमा कहिअ कवनि बिधि तासू । २-१३८/४
 माहिमा जासु जान गनराऊ । १-१८/४
 माहिमा तासु कहे किमि तुलसी । २-३०२/६
 माहिमा नाम रूपा गुन गाथा । ७-१०/३
 माहिमा निगम नेति करि गाई । ७-१२३/२
 माहिमा निगमु नेति कहि कहई । १-३४०/८
 माहिमा यह न जलधि कइ बरनी । ६-२/९
 महीं सकल अनरथ कर मूला । २-२६१/३
 मई सनेह सकीच बस । २-२६०/०
 माखे लखनु कुटिल मई भौंहे । १-२५१/८
 मागउं दूसर बर कर जोरी । २-२८/२
 मागउं भीख त्यागि निज धरमू । २-२०३/७
 मागत अभिमत पाव जग । २-२६४/०
 मागत बिदा राउ अनुरागे । १-३५९/५
 मागत बिदा समय सकुचाहीं । १-४२/८
 मागघ सूत बंदि गुनगायक । १-२९१/५
 मागघ सूत बंदिगन गायक । १-१९३/६
 मागघ सूत बंदि नट नागर । १-३४४/९
 मागहिं हृदयें महेश मनाई । २-१५६/८
 मागहु बर जोइ भाव । १-१४८/०
 मागहु बर बहु भौंति लोभाए । १-१४४/३
 मागहु बिदा मातु सन जाई । २-४२/१

मागहु मूमि धेनु धन कोसा । १-२०४/३
 मागा जल तेहि दीन्ह कर्मडल । ६-५६/४
 मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा । ४-४/६
 मागि मागि आयसु करत । २-३२५/०
 मागी नाव न केवटु आना । २-९१/३
 मागु मागु पै कहहु पिय । २-४/०
 मागु मागु बरु मै नम बानी । १-१४४/६
 मागु माथ अबहीं देउं तोही । २-३३/७
 मार्गे बारिद देहिं जल । ७-२३/०
 मार्गेउ बिदा प्रनामु करि । २-३१६/०
 माघ मकरगत रवि जब होई । १-४३/३
 मांडवी श्रुतकीरति उरमिला । १-३२४/१६
 माता पितहि उरिन भाए नीकें । १-४०/२
 माता पुनि बोली सो मति । १-१११/१३
 मातों मरतु गोद बैटारे । २-१६४/४
 मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । २-१०६/२
 मातु कहेहैं बहुरहिं स्धुराऊ । २-२५२/४
 मातु कुमत बढई अघ मूला । २-२११/३
 मातु कुसल प्रमु अनुज समेता । १-१३/९
 मातु चरन सिरु नाइ । २-४५/०
 मातु तात कहीं देहि देख्याई । २-१६३/३
 मातु नहानीं जानि सब । २-११७/०
 मातु पितहि जनि सोचवस । १-४२/०
 मातु पितहि पुनि यह मत भावा । १-४२/२
 मातु पितहि बहुबिधि समुझाई । १-४२/७
 मातु पिता गुर प्रमु कै बानी । १-४६/३
 मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । ७-३९/५
 मातु पिता गुर स्वामि निदेसू । २-३०५/२
 मातु पिता गुरु स्वामि सिख । २-४०/०

मातु पिता परिजन पुरबासी । २-१०१४
 मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं । ७-१८८
 मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । २-६४११
 मातु पिता धाता हितकारी । ३-४५
 मातु बचन सुनि अति अनुकूला । २-५२३
 मातु विवेक अलौकिक तोरें । १-१५०३
 मातु भरत के बचन मृदु । २-१६४०
 मातु भरत के बचन सुनि । २-१६८०
 मातु मते महुँ मानि मोहि । २-२३३०
 मातु मुदित मन आयसु देहू । १-३३५६
 मातु मृत्यु पितु समन समाना । ३-१६
 मातु मोहि तीजे कछु चीन्हा । ५-२६११
 मातु मंदि मैं साधु सुचाली । २-२६०३
 मातु सकल मोरे बिरहैं जेहिं । २-८००
 मातु सखिब गुर पुर नर नारी । २-१८३३
 मातु समीप कहत सकुवाहीं । २-६०११
 माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू । २-३९४२
 माथें हाथ मूदि टोउ लोचन । २-२८७
 मान मोह मारादि मद । ७-१०१४
 मानत सुखु सेवक सेवकाई । २-२१८२
 मानस मूल मिली सुरसरिही । १-३९१५
 मानस रोग कछुक मैं गाए । ७-१२१२
 मानस रोग कहहु संमुझाई । ७-१२०७
 मानस सलिल सुधौं प्रतिपाली । २-६२६
 मानहिं मातु पिता नहिं देवा । १-१८३२
 मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर । १-३३७०
 मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । २-२३६५
 मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही । १-२२९२
 मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर । ६-७८१५

मानहुँ सरोष भुअंग नामिनि । २-२४१०
 मानि मातु कर नात बलि । २-५६०
 मानिक परकत कुलिस परोजा । १-२८७४
 मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । ७-१०५७
 मानी महिप कुमुद सकुचाने । १-२५४२
 मामभिरक्षय रघुकुल नायक । ६-११४१
 मामवलोक्य पंकज लोचन । ७-५०११
 माया ईस न आपु कहैं । ३-१५०
 माया कृत गुन दोष अनेका । ७-५६२
 माया गुन ग्यानातीत अमाना । १-१९१६
 मायाछत्र न देखिए । ३-३९४
 मायातीत सुरेशं खलबधनिरत... । ६-स्तोत्र-१३
 मायापति सेवक सन माया । २-२१७२
 माया ब्रह्म जीव जगदीसा । १-५७
 माया बस्य जीव अभिमानी । ७-७७६
 मायाबस परिछिन्न जड़ । ७-१११४
 मायाबस नतिमंट अभागी । ७-७२८
 माया बिगत कपि भालु हरषे । ६-१००२१
 माया बिगत भए सब । ६-७४१४
 माया बिबस भए मुनि मूढा । १-१३२३
 माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ । ७-११५३
 मायामय तेहिं कीन्हि रसोई । १-१७२२
 मायामानुषरूपिणी रघुवरी । ७-स्तोत्र-१३
 माया संभव भ्रम सब । ७-८५१
 माया हरी हरि निमिष महुं । ६-८८१२
 मार चरित संकरहि सुनाए । १-१२६६
 मारग चलहु प्रयादेहि पाएँ । २-१११५
 मारग जात भयावनि भारी । १-३५५८
 मारग सोइ जा कहुँ जोइ मावा । ७-१७३

मारसि जनि सुत बौधेसु ताही । ५-१८१२
 मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । ६-८०१५
 मारहिं घघेटन्हि डाटि दातन्ह । ६-८०११९
 मारहु धरहु जनि जाइ । ६-१००११५
 मारा बालि राम तब हृदय । ४-८१०
 मारिं असुर द्विज निर्भयकारी । १-२२०१६
 मारिसि भेधनाद के छाती । ६-४३१४
 मारी सो धरि दिव्य तनु । ६-५४१०
 मारु मारु धरु धरु मारु । ६-५२१६
 मारुतसुत अंगद नल नीला । ६-४२१८
 मारुतसुत के संग सिधावहु । ६-१००४४
 मारुतसुत तब मारुत करई । ४-४११४
 मारुतसुत देखा सुभ आश्रम । ६-५६१२
 मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । ४-११८
 मारे निसिचर केहि अपराधा । ५-२०१३
 मारे पछारे उर बिदारे । ३-१११२०
 मारे सहित सहाय किमि । १-३५६१०
 मारेउ राहु ससिहि कह कोई । ६-१११६
 मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । ६-४४१९
 माल्यवंत अति जरठ निसाचर । ६-४४१५
 माल्यवंत अति सधिव सयाना । ५-३११९
 माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । ५-३११४
 माली सुमन सनेह जल । १-३४१०
 मास दिवस कर दिवस भा । १-११५१०
 मास दिवस तहैं रहेउं खरारी । ४-५१०
 मास दिवस बीतैं मोहि । ५-१११०
 मास दिवस महुँ कह न माना । ५-११९
 मास दिवस महुँ नाथु न आवा । ५-२६१६
 मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । २-२११६

मिटा मोदु मन भए मलीने । २-११४०
 मिटिइहिं पाप प्रपंच सब । २-२६३१०
 मिटिहिं सोचु होइहिं हरषु । २-२३४१०
 मिथ्यारंभ टंभ रत जोई । ४-१४१४
 मिथिता अवध बिसेष तें । २-२४०१०
 मिलत कृपा तुम्ह पर प्रमु करिही । ५-५६१६
 मिलत प्रेम नहिं हृदयें समाता । ४-१११०
 मिलत महा दोउ राज बिराजे । १-३११२
 मिलन साजु सजि मिलन सिधाए । २-११२४
 मिलनि परसपर बिनय अति । १-३३०१०
 मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । २-२४०१९
 मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की । २-२४०४०
 मिलब हमार भुलाब निज । ५-१६५१०
 मिलहिं किरात कोल बनबासी । २-२३३४
 मिलहिं तुम्हहिं जब सप्त रिषीसा । १-४४४
 मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा । ४-६११९
 मिला असुर बिराघ मग जाता । ३-६१६
 मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । ५-५३१२
 मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । ४-६६१८
 मिलि केवटहिं उमगि अनुरागा । २-२४३१५
 मिलि जननिहिं सानुज रघुराज । २-२४४४०
 मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई । २-२३११५
 मिलि सपेम रिपुसूदनहिं । २-२४५१०
 मिली सकल सासुन्ह सिग जाई । २-२४५१८
 मिले जथाबिधि सबहिं प्रमु । १-३०८१०
 मिले जनकु दसरथु अति प्रीती । १-३१११९
 मिले न कबहुँ सुमट रन गाढ़े । १-२४५४०
 मिले लखन रिपुसूदनहिं । १-३४२१०
 मिले सकल अति भए सुखारी । ५-२४१५

मिलेहि माझ विधि बात बेगारी । २-४६।१
 मिलेहु गरुड़ मारग महीं मोही । ७-६०।३
 मित्र करइ सत रिपु कै करनी । ३-१।७
 मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । १-१७०।२
 मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । २-१४३।७
 मीन कमठ सूकर नरहरी । ६-१०१।७
 मीन पीन पाठीन पुराने । २-११२।३
 मुकताहल गुन गन चुनइ । २-१२८।०
 मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान । ४-०।१
 मुकुटांगटाटि विचित्र भूधन अंग । ७-११।१५
 मुकुत न भए हते भगवाना । १-१२२।१
 मुकुन मलिन अरु नयन बिहीना । १-११४।४
 मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं । १-२३२।६
 मुख नासा श्रवणन्हि कीं बाटा । ६-६६।४
 मुख नासिका नयन अरु काना । ६-१८।६
 मुख प्रसन्न वित दौगुन चाऊ । २-५०।८
 मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । ५-२७।४
 मुच प्रसन्न मन मिटा बिषाटू । २-३०६।४
 मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू । २-१६५।१
 मुख बाइ छावहिं खान । ६-१००।६
 मुख मलीन उपजी मन चिंता । ६-१८।३
 मुख मलीन मन भए दुखारी । ६-५८।४
 मुख सरोज मकरंद छबि । १-२३१।०
 मुख सुखाहिं लोचन स्त्रवहिं । २-४६।०
 मुखामुख श्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु । २-३०३।२
 मुखिया मुयु सो चाहिए । २-३१५।०
 मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहि । ६-५२।५
 मुठिका एक ताहि कपि मार । ६-८३।२
 मुठिका एक महि कपि हनी । १-३।४

मुठिका मारि बड़ा तरु जाई । ५-१८।८
 मुट मंगलमय संत समाजू । १-१।७
 मुदित अवधपति सकल सुत । १-३२५।०
 मुदित असीस देहिं गुर नारी । १-२१४।४
 मुदित असीसाहिं नाइ सिर । १-३११।०
 मुदित कहहिं जहै तहै नर नारी । १-२६१।८
 मुदित टेवगन रामहि देखी । १-३१६।८
 मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा । २-१०५।६
 मुदित नारि नर देखहिं सोभा । २-११४।४
 मुदित भए सुनि रघुबर बानी । २-७२।२
 मुदित महीपति मंदिर आए । २-४।१
 मुदित मातु परिछनि करहिं । १-३४८।०
 मुदित मातु सब सखीं सहेली । २-०।७
 मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला । १-२८६।२
 मुदितौ मथै बिचार मथानी । ७-११६।१५
 मुघा बचन नहिं ईस्वर कहई । ७-१३।६
 मुघा भेट जघपि कृत माया । ७-७७।८
 मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे । ३-१।१९
 मुनि अगस्ति कर सिथ्य सुजाना । ३-१।१
 मुनि अति बिकल मोहै मति नाटी । १-१३४।५
 मुनि अनुसासन गनपतिहि । १-१००।०
 मुनि आगमन सुना जब राजा । १-२०६।१
 मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । ४-२७।५
 मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू । ४-२७।१०
 मुनि कर हित मम कौतुक होई । १-१२८।६
 मुनि कह उचित कहत रघुसाई । २-२७७।६
 मुनि कह मै बर कबहुं न जावा । ३-१०।२४
 मुनि कहै राम दंडवत कीन्ह । २-१२४।१
 मुनि कौतुकी नगर तेहि गरऊ । १-१२१।७

मुनि कौसिक मख के रखवारे । १-२२०४
 मुनि गति देखि सुरेस डेराना । १-१२४५
 मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । २-३१६७
 मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं । २-२६३३
 मुनिगन मिलनु बिसेषि बन । २-४१०
 मुनि जेहि ध्यान न पावहिं । ६-११७।४
 मुनि तब चरन देखि कह राऊ । १-२१६।१
 मुनि तापस जिन्ह तें दुख लहहीं । १-१२५।३
 मुनि तापस बनदेव निहोरी । २-३१७।८
 मुनितिय तरी लगत पग धूरी । १-३५६।३
 मुनि दुर्लभ बर पायउँ । ७-११४।४
 मुनि दुर्लभ हरि भगति नर । ७-१२६।०
 मुनि धन जन सरबस सिव प्राना । १-११७।२
 मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत । १-५०।९
 मुनि न होइ यह निसिचर घोसा । ६-५७।२
 मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा । २-११४।८
 मुनि पट भूषन भाजन आनी । २-७८।२
 मुनि पद कमल नाइ करि सीसा । ३-६।१
 मुनि पद कमल परे छौ भाई । ३-११।१०
 मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता । १-२१८।१
 मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू । २-२१३।३
 मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । ६-१२०।५
 मुनि प्रमाउ जब भरत बिलोका । २-२१४।१
 मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । २-२।८
 मुनि प्रसादु कहि द्वार सिघाए । १-२१४।७
 मुनि प्रसाद वनु मंगल दाता । २-३०७।६
 मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । १-३५६।१
 मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । ७-११०।१२
 मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन । ५-३१।४

मुनि पूँछब कछु यह बड़ सोचू । २-२०५।७
 मुनि बटु चारि संग तब टीन्हे । २-१०८।५
 मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए । २-१२४।३
 मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी । ६-६।६
 मुनिबर धाइ लिए उर लाई । २-२४२।४
 मुनिबर परम प्रवीन । ३-३।०
 मुनिबर बहुरि राम समुझाए । २-२४६।७
 मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई । १-२२५।३
 मुनि बसिष्ट के बचन सुहाए । ७-१।६
 मुनि बहुबिधि बिदेहु समुझाए । २-२७६।६
 मुनि बहु भौंति भरत उपदेसे । २-१६८।८
 मुनि बिग्यान धाम मन करहिं । ३-३।४
 मुनि मख राखन गयउ कुमारा । ३-२४।५
 मुनि मग माझ अचल होइ बैसा । ३-१।१५
 मुनि मन अगम गाधिसुत करनी । १-३५८।६
 मुनि मन अगम जम नियम सम दम । २-३२५।१०
 मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं । २-१०८।२
 मुनि मन मानस हंस निरंतर । ७-३४।७
 मुनि मन मोद न कछु कहि जाई । २-१०५।८
 मुनि मन हरष रूप अति मोरें । १-१३२।६
 मुनि महिदेव साधु सनमाने । २-३१८।४
 मुनि महिमा मन पहुँ अनुमानी । १-१७१।३
 मुनि महिसुर गुर भरत मुआलू । २-३२१।१
 मुनि मानस पंकज मृग मजे । ७-१३।१७
 मुनि मिथिलेस समौ सब काहू । २-३०८।२
 मुनि मुसुकाने सुनि प्रमु बानी । ३-१२।४
 मुनि मोहि कछुक काल तहँ राख्य । ७-११२।१
 मुनि मोहि बिबिधि भौंति समुझाया । ७-११२।१४
 मुनि मंडलिविह जनक सिरु नावा । १-३४०।१

मुनि रघुपति छवि अतुल बिलोकी । ७-३२।२
 मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीं । २-१३३।७
 मुनि रघुबीर परसपर नवहीं । २-१०७।४
 मुनि रंजन रंजन महि भारहि । ७-२१।१०
 मुनि रंजन महि मंडल मंडन । ६-११४।१९
 मुनि श्राप जो दोन्हा अति भल । १-२१०।१९
 मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी । १-४७।६
 मुनि समाजु अरु तीरथराजू । २-२१०।१९
 मुनि सनोप देखे दोउ भाई । १-२४७।८
 मुनि समूह महँ ब्रैठे सन्मुख । ३-१२।०
 मुनि समेत दोउ बंधु । १-२४४।०
 मुनि सिद्ध नर खग नाग । ६-११२।८
 मुनि सिद्ध सकल सुर परम मयातुर । १-१८५।१६
 मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते । ३-४५।८
 मुनि सुसीलता आपनि करनी । १-१२६।३
 मुनि हित कारन कृपानिधाना । १-१३२।७
 मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई । १-१२।१०
 मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । १-३०७।१९
 मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू । १-२१६।६
 मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई । २-१८४।३
 मुनिहि मित्तत अस सोह कृपाला । ३-१।२३
 मुनिहि मोह मन हाथ पसाएँ । १-१३३।५
 मुनिहि राम बहु भाति जगावा । ३-१।१७
 मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । २-२१२।७
 मुनींद्र संत रंजन । ३-३।८
 मुरयो न मनु तनु टरयो न टारयो । ६-६४।६
 मुरुछा गइ मारुतसुत जागा । ६-६५।४
 मुरुछा गै बहोरि सो जागा । ६-८३।३
 मुरुछा बिगत भालु कपि । ६-१८।०

मुरुछा भै सकित के लार्गे । ६-५३।८
 मुरुछित देखि सकल कपि बीरा । ६-१७।१२
 मुरुछित बिलोकि बहोरि पद हति । ६-१७।१८
 मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । ६-६६।६
 मूक बदन जनु सारद छाई । १-३४१।८
 मूक होइ बाचाल पंगु । १-०।२
 मूठि कुबुद्धि धार निदुराई । २-३०।२
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । ४-८।१९
 मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि । ७-१११।१३
 मूढ़ ब्रूथा जनि मारसि गाला । ६-२६।३
 मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । ५-५५।६
 मूढहु नयन बिबर तजि जाहू । ४-२४।५
 मूढे सजल नयन पुलके तन । २-२८।७।२
 मूढेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ । ७-७१।१९
 मूरति मधुर मनोहर देखी । १-२१४।८
 मूरुच्य हृदयै न धेत । ६-१६।४
 मूलं धर्म तरौबिबेक । ३-स्तोत्र-१।१९
 मृग बधि बंधु सहित हरि आए । १-४८।६
 मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा । ३-२६।७
 मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी । २-३१०।८
 मृगमाला फिरि दाहिनि आई । १-३०२।६
 मृगमद चंदन कुंकुम कीचा । १-११३।८
 मृगलोचनि के नैन सर । ७-७०।४
 मृगाधीश चर्माभ्रंरं मुण्डमालं । ७-१०७।८
 मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । १-१४४।७
 मृत्यु निकट आई खल तोही । १-२३।३
 मृदु पद कमल कठिन मगु जानी । २-१२०।२
 मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ । २-१११।३
 मृदुल मनोहर सुंदर गाता । ४-०।१९

मृषा होउ मम श्राप कृपाला । १-१३०।३	मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । ५-४५।६
मेघनाद कहूँ पुनि हँकरावा । १-१८१।१	मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । २-२१९।५
मेघनाद के मुरछा जागी । ६-४४।१	मैं जाना तुम्हार गुन सीला । १-१०४।१
मेघनाद तहँ करइ तराई । ६-४२।४	मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि । ४-५५।१
मेघनाद तेहि अवसर आयउ । ६-४१।६	मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । ४-४।४
मेघनाद मख करइ अपावन । ६-४४।४	मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना । १-५८।२
मेघनाद मायामय रथ । ६-४२।०	मैं तपबल तोहि तुरग समेता । १-१६८।८
मेघनाद सम कोटि । ६-५४।०	मैं तव दसन तोरिबे लायक । ६-३३।१
मेघनाद सुनि श्रवन अस । ६-४९।०	मैं तुम्हरे संकल्प लागि । १-१६८।०
मेटि जाइ नहिँ सम रजाई । २-९८।४	मैं तुम्हार अनुचर मुनिसया । १-२४४।१
मेघा महि गत सो जल पावन । १-३५।८	मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । ६-५५।४
मेरु सिखर बट छायाँ । ४-११०।४	मैं दुबँचन कहे बहुतेरे । १-१३४।४
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ । १-२०४।१०	मैं देखउँ खल बल दलहि । ६-६४।०
मेली कंठ सुमन के माला । ४-४।४	मैं देखउँ तुम्ह नाहीं । ४-२८।०
मैं अकेल कपि भालु बहु । ६-८८।०	मैं धरि तासु बेषु सुनु राजा । १-१६८।६
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । २-१४४।२	मैं धिग धिग अघ उदधि अमागी । २-२००।५
मैं आपनी दिसि कीन्ह निहोरा । १-४।१	मैं नारि अपावन प्रमु जग पावन । १-११०।४
मैं अपने मन बैठ तब । ४-१११।४	मैं निज मति अनुसार । १-१२०।४
मे अरु मोर तोर तैं माया । ३-१४।२	मैं निसिचर अति अघम सुभाऊ । ५-४६।४
मैं आउब सोइ बेषु धरि । १-१६९।०	मैं प्रमु कृपा रीति जियै जोही । २-२५९।८
मैं आपन किमि कहीं कलेसू । २-१५२।३	मैं पा परउँ कहइ जगदंबा । १-८०।४
मैं एहि परसु काटि बलि दीन्हे । १-२८२।४	मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला । ४-८८।१
मैं कछु कहउँ एक बल मोरें । १-३४१।४	मैं पुनि उर धरि प्रमु प्रभुताई । ५-५९।३
मैं कृतकृत्य भइउँ अब । ४-१२९।०	मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । २-६१।१
मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । ४-१२४।१	मैं पुनि निज गुर सन । १-३०।४
मैं खल मल संकुल मति । ४-१०५।४	मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । २-५८।१
मैं खल हृदयै कपट कुटिलाई । ४-१०५।१६	मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । २-६३।८
मैं गुन गहक परम सुजाना । ६-२३।४	मैं बड़ छोट बिचारि जियै । २-११।०
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई । ४-६१।६	मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथी । २-४०।३

मैं बन दीखि राम प्रभुताई । १-१०८।३
 मैं बानर फल खात न बास । ६-३३।४
 मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । ४-८।६
 मैं रघुबीर सरन अब । ५-४१।०
 मैं स्तु सब अनस्थ कर हेतू । २-१०८।५
 मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूछैं । २-३१।२
 मैं सिसु प्रभु सनेहैं प्रतिपाला । २-७१।३
 मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । २-६६।८
 मैं सेवक सचराचर रूप । ४-३।०
 मैं सोइ धरमु सुलभि करि पावा । २-९४।६
 मैं लंकर कर कहा न माना । १-५३।१
 मैंनां सुभ आरती सँवारी । १-९५।२
 मैना हृदयें भयउ दुखु भारी । १-९५।६
 मो कहैं तिलक साज सज सोऊ । २-१८१।२
 मो कहूँ काह कहब रघुनाथा । २-६१।५
 मो कहूँ दरस तुम्हार प्रभु । २-१२५।०
 मो पर करहिं सनेहु बिसैषी । २-१४।६
 मो पर कृपा सनेहु बिसैषी । २-२५९।६
 मो पहिं होइ न प्रति उपकारा । ७-१२४।४
 मो बिनु को सचराचर माहीं । २-१८०।६
 मो सन कहहु भरत मति फेल् । २-२९४।४
 मो सम दीन न दीन हित । ७-१३०।७
 मो समान को पातकी । २-१६२।०
 मोद प्रभोद बिबस सब माता । १-३४५।१
 मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ । १-३५०।०
 मोर अभाग्य जिआवत जोही । ६-९८।६
 मोर अभागु मातु कुटिलाई । २-२६६।४
 मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु । ३-१८।७
 मोर कहा सुनि करहु उपाई । १-८२।१

मोर चकोर कीर बर बाजी । ३-३७।६
 मोर जनम रघुबर बन लागी । २-१८१।८
 मोर तुम्हार परम पुरुखारथु । २-३१४।३
 मोर दास कहाइ नर आसा । ७-४५।३
 मोर न्याउ मैं पूछा साईं । ४-१।८
 मोर पराक्रम नहिं सुनेहि । ६-२७।०
 मोर प्रमाउ बिदित नहिं तोरें । १-२८२।५
 मोरपंख सिर सोहत नीके । १-२३२।२
 मोर बचन सब के मन माना । १-३८४।८
 मोर भाग्य राउर गुन गथा । १-३४१।३
 मोर मनोस्थु जानहु नीके । १-२३५।३
 मोर मनोस्थु सुरतरु फूला । २-२८।८
 मोर मरनु राउर अजस । २-३३।०
 मोर आप द्विज ब्यर्थ न जाइहि । ७-१०८।६
 मोर साप करि अंगीकारा । ३-४०।६
 मोर सोवु जनि करिअ कछु । २-१८।०
 मोर हंस सारस पारावत । ७-२७।५
 मोरि बात सब बिधिहिं बनाई । २-१७९।८
 मोरि सुधारिहि सो सब माँती । १-२७।३
 मोरें जान भरत रुचि राखी । २-२५७।८
 मोरे जियें भरोस दृढ़ नाहीं । ३-१।६
 मोरे जियें भरोस दृढ़ सोई । ७-०।७
 मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । ७-१७।४
 मोरें प्रौढ़ तनय सम य्यानी । ३-७२।८
 मोरें भरतु रामु दुइ आँखी । २-३०।६
 मोरें मत बड़ नामु दुहू तैं । १-२२।२
 मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा । ७-१११।१६
 मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । २-७१।६
 मोरें सरन रामहि की पनही । २-३३।२

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ । १-१३१२
 मोरें हृदय परम संदेहा । ५-१५७
 मोरेहु कहें न संसय जाहीं । १-५१६
 मोह गएँ दिनु राम पद । ७-६१०
 मोह जलधि बोहित तुम्ह भए । ७-१२४३
 मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । ७-११९७
 मोह न अंध कीन्ह केहि केही । ७-६९७
 मोह न नारि नारि कें लया । ७-११५२
 मोह निसीं सबु सोवनिहारा । २-२२२
 मोह विपिन घन दहन कुशानुः । ३-१०५
 मोह मगन मति नहिं बिदेह की । २-२८५८
 मोह महा घन पटल प्रमंजन । ६-११४२
 मोहमूल बहु सूल प्रद । ५-२३७
 मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला । ७-१२०२९
 मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ । ३-स्लोक१३
 मोहि अछत यहु होइ उछाहू । २-३३
 मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी । १-२३०६
 मोहि अनुचर कर केतिक बाता । २-२५२७
 मोहि उपजइ अति क्रोध । ७-१०५४
 मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । २-१७६१
 मोहि कहु मातु तात दुख कारन । २-३१५
 मोहि कुमालु समेत बिहाई । २-१८०५
 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहैं माई । १-२८५६
 मोहि जानि अति अभिमान बस । ४-९६
 मोहि जानिए निज दास । ६-११२१६
 मोहि तोहि पर अति प्रीति । १-१६३७
 मोहि दीन्ह सुख सुजसु सुराजू । २-१७९७
 मोहि न कछु बांधे कइ ताजा । ५-२१६
 मोहि न मानु करतब कर सोचू । २-२१०४

मोहि न लाज निज नेहु निहारी । २-१६५७
 मोहि नृप करि मल आपन बहहू । २-१७७८
 मोहि प्रबोधि गयउ गृह । ७-१०१६
 मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा । ४-२८२
 मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं । ७-७९२
 मोहि भगत प्रिय संतत । ७-८५४
 मोहि मयउ अति मोह प्रमु । ७-६८४
 मोहि भाव कोसल भूप । ६-११२१४
 मोहि मग चलत न होइहि हारी । २-६६१
 मोहि मुनीस सुत सेवक जानी । १-१५९७
 मोहि रहा अति अभिमान । ६-११२११
 मोहि राजु हठि देइहु जबहीं । २-१७८२
 मोहि राम राजरि जान दसरथ । २-९९१०
 मोहि लागि यहु कुठाटु तेहिं टाटा । २-२११५
 मोहि लागि सहेउ सबहि संतापू । २-३१२७
 मोहि लागि दुख सहिअ । १-१६७७
 मोहि तै जाहु सिंधुतट । ४-२७७
 मोहि सन करहिं बिबिधि बिधि क्रीडा । ७-७६१९
 मोहि सब भौति भरोस तुम्हारा । २-३०४४
 मोहि सम यहु अनुभयउ न दूर्जे । २-२६
 मोहि समान को पाप निवासू । २-१७८३
 मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा । ३-१३७
 मोहि रामेत बिरचि सिव । ३-३३७
 मोहि सहित सुम कीरति तुम्हारी । ६-१०५११
 मोहि सादर पूँछत भए । ७-११०१
 मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा । ५-११२
 मोहि सो कहहु कृपाल । ७-१४१६
 मंगन बहु प्रकार पहिराए । ७-१४१०
 मंगन लहहि न जिन्ह कै नाहीं । १-२३०८

मंगल करनि कलि मल हरनि । १-१।११
 मंगल कलस अनेक बनाए । १-२८८।२
 मंगलगान करहिं बर मामिनि । १-३५४।१
 मंगल द्रव्य मनोहर नाना । १-२१६।५
 मंगल बिपुल तोरन पताका । १-९३।११
 मंगल मवन अमंगल हारी । १-९।२
 मंगल मवन अमंगल हारी । १-१११।४
 मंगलमय कल्याणमय । १-३०३।०
 मंगलमय निज निज मवन । १-२१६।०
 मंगलमय मंदिर सब केरें । १-२१२।५
 मंगलमूरति लोचन भरि मरि । २-२४८।४
 मंगल मूल बिभ्र परितोषू । २-१२५।४
 मंगलमूल रामु सुत जासू । २-१।५
 मंगलमूल लगन दिनु आवा । १-३११।५
 मंगल मोट उछाह नित । १-३५९।०
 मंगलरूप मयउ बन तब ते । ४-१२।५
 मंगल सकल जोहाहिं न केरें । २-३६।४
 मंगल सगुन मनोहरताई । १-३४४।२
 मंगल सगुन सुगम सब तार्कें । १-३०३।१
 मंगल सगुन सुगंध सुहाए । १-३०४।५
 मंगल सगुन होहि सब काहू । २-२२४।१
 मंगल समय सनेह बस । २-४५।०
 मङ्गलानां च कर्तारी । १-४४०-१।२
 मंजीर नूपुर कलित कंकन । १-३२१।१२
 मंजु बिलोचन भोचति बारी । २-५४।४
 मंजु मधुर मूरति उर आनी । १-३३६।५
 मंजुल मनिमय बंदनिबारे । १-३४६।३
 मंजुल मंगल मूल । १-२३६।०
 मंडपु बिलोकि बिचित्र रचनीं । १-३११।१

मंडलीक मनि रावन । १-१८२।४
 मंदाकिनि मज्जनु तिहु काला । २-२४९।६
 मंदिर एक रुचिर तहैं । ४-२४।०
 मंदिर मनि समूह जनु तारा । १-११४।६
 मंदिर महैं सब राजहिं रानीं । १-१८९।४
 मंदिर माझ भई नम बानी । ४-१०६।१
 मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । ५-४।५
 मंदोदरि आगें मुज सीसा । ६-१०२।४
 मंदोदरि उर कंपति भारी । ६-१०१।१०
 मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ । ६-१५।८
 मंदोदरी आदि सब । ६-१०५।०
 मंदोदरी बचन सुनि काना । ६-१०४।१
 मंदोदरी रावनहि । ६-३५।०
 मंदोदरी रुदन कर भारी । ६-४६।४
 मंदोदरी श्रवन ताटका । ६-१२।६
 मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो । ६-५।२
 मंदोदरी सोच उर बसेऊ । ६-१३।६
 मंदोदरी हृदयें अस जाना । ६-४।८
 मंदोदरी हृदयें कर चिंता । १-३६।६
 मंत्र कहउँ निज मति अनुसार । ६-१६।४
 मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा । २-३५।१
 मंत्र न यह लछिमन मन भावा । १-५०।२
 मंत्र परम लघु जासु बस । १-२५६।०
 मंत्र महामनि बिषय ब्याल के । १-३१।१
 मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा । २-१२८।६
 मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साई । ४-५।१
 मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा । ४-४।३
 मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा । २-१४।२
 मंत्री बिकल बिलोकि निषादू । २-४१।६

मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । २-४४

य

यत्पादप्लवमेकमेव हि । १-११०क६।३

यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना । ७-१३०क१०।१

यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं । १-११०क६।३

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं । १-११०क६।३

यमाश्रितो हि वक्रोऽपि । १-११०क६।३

यस्याङ्गे च विभाति मूढरसुता । २-११०क६।३

यह इतिहास पुनीत अति । १-१५२।०

यह इतिहास सकल जग जानी । १-६४।४

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन । १-८८।१

यह उमा संभु बिबाहु जे नर । १-१०२।११

यह कछु नहि प्रभु कइ अधिकाई । ४-२१।४

यह कलिकाल मलायतन । ६-१२।१ख

यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा । ५-०।४

यह कुल उचित राम कहूँ टीका । २-१७।७

यह कौतूहल जानइ सोई । ६-५४।३

यह खल मलिन सदा सुसद्रोही । ६-१०१।१

यह गुन साधन तें नहि होई । ४-२०।६

यह चरित कलि मलहर जयामति । ५-५१।१०

यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं । १-१११।१६

यह जियै जानि सँकोचु तजि । २-२५०।०

यह तनय मम सम बिनय बल । ४-१।१२

यह तुम्हार आचरजु न ताता । २-२०७।२

यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । २-११३।६

यह दुष्ट मारेउ नाथ । ६-११२।४

यह न अधिक रघुबीर बड़ाई । २-२०७।७

यह न कहिअ सठही हठसीलहि । ४-१२७।३

यह नइ रीति न राउरि होई । २-२६६।६

यह निसिचर दुकाल सम अहई । ६-६१।३

यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा । १-१६५।३

यह प्रताप रवि जाकें । ७-३१।०

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । ७-५४।१

यह प्रसंग मैं कहा भवानी । १-१३१।७

यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । १-१२३।८

यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । १-२७।१०

यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी । २-३१३।७

यह बड़ि बात भरत कइ नार्हीं । २-२१६।३

यह बड़ि बात राम कै नार्हीं । २-२४३।४

यह बर मागउँ कृपानिकेता । ३-१२।१०

यह बिचारि नहिं करउँ हठ । २-५६।०

यह बिचारि नारद कर बीना । ३-४०।८

यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं । ३-४२।१०

यह बिचारु उर आनि नृप । २-२।०

यह बृत्तांत दक्षानन सुनेऊ । ६-६१।५

यह मत जौ मानहु प्रभु मोरा । ६-१।१

यह मुद्रिका मातु मैं आनी । ५-१२।१०

यह रहस्य काहूँ नहिं जाना । १-११५।१

यह रहस्य रघुनाथ कर । ७-११६।३

यह शवनारि चरित्र पावन । ६-१२०।११

यह लघु जलधि तरत कति बारा । ६-०।१

यह सपना मैं कहउँ पुकारी । ५-१०।७

यह सब गुप्त चरित मैं गावा । ७-८८।४

यह सब चरित कहा मैं गाई । १-२०५।१

यह सब जागबलिक कहि राखा । २-२८४।८

यह सब माया कर परिवारा । ७-७०।७

यह सब रुचिर चरित मैं भाषा । १-१८७।६

यह सबु सुखु मुनिराज तव । १-३३१।०

यह स्वार्थ परमार्थ सारु । २-२६७।६
 यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । २-१३४।१
 यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई । २-८७।१
 यह सुधि पाइ नगर नर नारी । २-२०१।२
 यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी । २-१०७।५
 यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई । ६-७८।१३
 यह सुनि जवर महिप मुसुकाने । १-२४४।८
 यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि । २-२६।०
 यह सुम चरित जान पै सोई । १-१९५।६
 यह सुम संमु उमा संबादा । ७-१२९।१
 यह संघटु तब होइ जब । १-२२२।०
 यह संबाद जासु उर आवा । ५-३३।४
 यह हमारि अति बड़ि सेवकाई । २-२५०।३
 यह हबि बाँटि देहु नृप जाई । १-१८८।८
 यहउ कहत मल कहिहि न कोऊ । २-२०६।१
 यहउ कहत मोहि आजु न सोभा । २-२६०।२
 यहु सबु भा इन्ह आखिन्ह आगें । २-१६५।६
 यहु सुनि समुझि सोबु परिहरहु । २-१७३।२
 यहु संसउ सब के मन माहीं । २-२५१।८
 याको फलु पावहिगो आगें । ६-३२।७
 याम्यां विना न परवन्ति । १-१०७।२
 ये पठन्ति नरा मक्त्वा । ७-१०७।१८
 यो ददाति सतां शम्भुः । ६-१०७।१९
 योगीन्द्र ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं । ६-१०७।२०
 यों सुधारि सनमानि जन । २-२९१।०

र

रउरे अंग जोगु जग को है । २-२८४।५
 रखबारे जब बरजन लागे । ५-२७।८
 रखबारे हति बिपिन उजारा । ६-३५।५

रखिअहिं लखनु भरतु गवनहिं बन । २-२८३।२
 रघुकुल केनु सेतु श्रुति रच्छक । ७-३४।८
 रघुकुलतिलक चले एहि भौंती । २-१५२।२
 रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । २-५१।१
 रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । ७-१।४
 रघुकुल मनि दसरथ के जाए । १-२१५।८
 रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ । १-११६।०
 रघुकुल सीति सदा चलि आई । २-२७।४
 रघुनायक सायक चले । ६-१०२।०
 रघुनंद निकटय द्वंद्वघनं । ७-१३।२०
 रघुनंदनहिं सकेवु बड़ । २-२४२।०
 रघुपति अनुजहि आवत देखी । ३-२९।१
 रघुपति आएँ उचित जस । २-१७५।०
 रघुपति कटक मालु कपि जेते । ६-९५।२
 रघुपति कर संदेसु अब । ५-१४।०
 रघुपति कीरति बिमल पताका । १-१६।६
 रघुपति कृपाँ जथामति गावा । ७-१२९।४
 रघुपति कोपि बान झरि लाई । ६-८६।८
 रघुपति घरन उपासक जेते । १-१७।३
 रघुपति घरन कमल सिरु नाई । ३-३३।४
 रघुपति घरन नाइ करि माथा । ४-१०।१०
 रघुपति घरन नाइ सिरु । ६-७५।०
 रघुपति घरन हृदयँ धरि । ५-१७।०
 रघुपति चरित देखि पुरबासी । ७-१९।६
 रघुपति चरित महेश तब । १-१११।०
 रघुपति चित्रकूट बसि नाना । ३-२।१
 रघुपति जस गावत फिरउँ । ७-१०।७
 रघुपति निकट गयउ घननादा । ६-१०।५
 रघुपति पटु पालकी मगाई । २-३११।४

रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी । २-८४।१
 रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । ६-१११।५
 रघुपति प्रियमवक्तं..... । ५-११०।४(४)
 रघुपति पितहि प्रेमबस जानी । २-४४।४
 रघुपति पुरीं जन्म तव भयऊ । ७-१०८।१९
 रघुपति बिमुख जतन कर कोरी । १-१११।३
 रघुपति बिरह सबिष सर भारी । ६-९८।१९
 रघुपति भगति सजीवन मूरी । ७-१२१।७
 रघुपति भगति सुमंगल मूला । २-२४२।७
 रघुपति महिमा अगुन अबाधा । १-३६।२
 रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई । ६-९८।५
 रघुबर उर जयमाल देखि । १-२६४।०
 रघुबर कहेउ लखन मल घाटू । २-१३२।१
 रघुबर जेनम अनंद बघाई । १-३९।८
 रघुबर बरन त्रिलोकि बर । २-२२०।०
 रघुबीर एकहिं तीर कोपि । ६-१००।२०
 रघुबीर करुना सिंधु आरत । ६-८१।१९२
 रघुबीर चरित अपार बारिधि । १-३६०।१०
 रघुबीर चरित पुनीत निसि दिन । ३-५।१४
 रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं । ६-९१।१६
 रघुबीर निज मुख जासु गुन गन । ७-१।१९
 रघुबीर पद पाथोज मधुकर । ४-२१।१६
 रघुबीर बल दर्पित विभीषणु । ६-९३।१२
 रघुबीर बान प्रचंड खंडहिं । ३-११।१६
 रघुबीर बंधु प्रताप पुंज । ६-८३।१२
 रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति । ५-३४।१७
 रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि । ५-२।२३
 रघुबंस विभूतन दूखन हा । ६-११०।८
 रघुबंस मूवन चरित यह नर । ७-१२१।१३

रघुबसिन्ह कर सहज सुभाऊ । १-२३०।५
 रघुबसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । १-२५२।१
 रघुसाउ सिथिल सनेहँ साधु । २-३००।१
 रचना देखि बिचित्र अति । १-२८७।०
 रचहु प्रपंचहि पंच मिति । २-२९४।०
 रचहु बिचित्र बितान बनाई । १-२८६।६
 रचहु मंजु मनि बौकें चारु । २-५।७
 रचि पचि कोटिक कुटिलपन । २-१८।०
 रचि प्रपंच माया प्रबल । २-२९५।०
 रचि प्रपंचु मूपहि अपनाई । २-१७।६
 रचि महेस निज मानस राखा । १-३४।११
 रचि रुचि जीन तुरंग तिन्ह साजे । १-२९७।४
 रची आरती बहुत बिधाना । १-३४।१८
 रचे रुचिर बर ब्रदनिवारे । १-२८८।१
 रज मग परी निरादर रहई । ७-१०५।११
 रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं । २-२३७।४
 रजत सीप महुँ भासा जिमि । १-११७।०
 रजनीचर ब्रूंद पतंग रहे । ७-१३।४
 रतनदीप सुठि चारु चँदीवा । १-३५५।४
 रति गवनी सुनि संकर बानी । १-८७।३
 रति होउ अबिरल अमल सिय । २-७४।१२
 रथ अनेक बहु बाजि गज । ७-१०।४
 रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं । २-८५।२
 रथ गिरि सिला दुंदुभी झरना । ३-३७।८
 रथ बड़ाइ देखराइ बनु । २-८१।०
 रथ चढ़ि चलैउ दसानन । ६-८१।०
 रथ तुरंग सारथी निपाता । ६-९४।२
 रथ विभंजि हति केतु पताका । ६-९४।२
 रथ समेत रवि थाकेउ । १-११५।०

स्थ सारथिन्ह बिचित्र बनाए । १-२९८।३
 स्थु पहिघानि बिकल लखि घोरै । २-१४६।७
 स्थु हँकेउ ह्य राम तन । २-११।०
 स्थारूढ रघुनाथहि देखी । ६-८८।५
 रन चाढ़ि करिअ कपट चतुराई । ३-१८।१३
 रन जीति रिपुदल बंधु जुत । ६-१०६।१२
 रन ते निलज भाजि गृह आग । ६-८४।७
 रन बाँकुरा बालिसुत । ६-४३।०
 रन मत रावन सकल सुमट । ६-९४।१२
 रन मद मत निसावर टर्पा । ६-६६।५
 रन मद मत फिरइ जग धावा । १-५८।१३
 रन सोमा लंगि प्रमुहिं बँधायो । ६-७२।१३
 रनिवासु हास बिलास रस बस । १-३२६।१८
 रबि निज उदर ब्याज रघुराया । १-२३८।५
 रबि मंडल देखत लपु लागा । १-२५५।८
 रबि सम तेज सो बरनि न जाई । ७-११।२
 रबि ससि पवन बरुन घनघारी । १-९८।११०
 रमा बिलासु राम अनुरागी । २-३२३।८
 रमा रमन पद बंदि बहोरी । २-२७२।५
 रमानाथ जहँ राजा । ७-२१।०
 रमेउ राम मनु देवन्ह जाना । २-१३२।६
 रस रस सूर्य सरित सर पानी । ४-१५।५
 रहउ चढ़ाउब तोरब भाई । १-२५।१२
 रहति न प्रमु चित चूक किए की । १-२८।५
 रहसि जोरि कर पति पग लागी । ५-३५।५
 रहसी रानि राम रुख पाई । २-४२।१
 रहहु करहु सब कर परितोषू । २-७०।५
 रहहु तात असि नीति बिचारी । २-७०।७
 रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी । २-६२।८

रहा एक दिन अवधि कर । ७-०।६
 रहा न नगर बसन घूत तेला । ५-२४।५
 रहा प्रथम अब ते दिन बीते । २-१६।६
 रहिहि न अंतहुँ अधम सरील । २-१४३।४
 रही न लाज प्रीति उर छाई । १-३३५।२
 रही मुवन भरि जय जय बानी । १-२६।७
 रहे असुर छल छोनिय बेषा । १-२४०।७
 रहे छाइ नम सिर अरु बाहू । ६-९१।१४
 रहे जे सुत सेवक नृप केरे । १-१७५।६
 रहे तहाँ दुइ रुद्र गन । १-१३३।०
 रहे तहाँ निसिचर भट मारे । १-१७८।१५
 रहे तहाँ बहु भट रखवारे । ५-१७।२
 रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि । ६-८१।१०
 रहे ब्यापि समस्त जग माहीं । ७-५६।३
 रहे बिरचि संमु मुनि म्यानी । ६-९५।८
 रहे महामट ताके संगी । ५-१८।६
 रहे राखि सेवा पर मारु । २-२३१।६
 रहेउ एक दिन अवधि अधारा । ७-०।१
 रहेहु सजग सुनि प्रमु के बानी । ३-१७।१२
 रहे करम बस परिहरि नाहू । २-१४४।२
 राउ अवधपुर चहत सिघाए । १-३३५।५
 राउ तृषित नहिँ सो पहिघाना । १-१५७।७
 राउ धीर गुन उदधि अगाधू । २-४१।७
 राउ बहोरि उतरि भए ठाढ़े । १-३३१।६
 राउ सत्यव्रत तुन्हहिँ बोलाई । २-२०६।४
 राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू । २-१४८।७
 राउर आयसु सिर सबही कें । २-२१०।४
 राउर जा पर अस अनुरागू । २-२५८।६
 राउर नगर कौलाहसु होई । २-२२।८

राउर बदि मल भव दुख दाहू । २-३१३।२
 राउर राय रजायसु होई । २-२९५।८
 राउरि शीति सुबानि बडाई । २-२९८।११
 राका रजनी भगति तव । ३-४२।४
 राका ससि रघुपति पुर । ४-३।१
 राकापति षोडस उअहिं । ४-४८।४
 राखइ गुर जौ कोप बिधाता । १-१६५।६
 राखउं सुतहि करउं अनुरोधु । २-५४।४
 राखा मोर दुलार गोसाई । २-२९९।६
 राखि न सकइ न कहि सक जाहू । २-५४।११
 राखि राम रूख धरमु ब्रतु । २-२९३।०
 राखिअ अवघ जो अवधि लागि । २-६६।०
 राखिअ तीरथ तोय तहैं । २-३०९।०
 राखिअ नारि जदपि उर माहीं । ३-३६।९
 राखु राम कहू जेहि तेहि मांती । २-३३।८
 राखेउ रायें सत्य मोहि त्यागी । २-२६३।६
 राखें राम रजाइ रूख । २-२५४।०
 रागु रोषु इरिषा मटु मोहू । २-४४।५
 राखरस कपट बेष तहैं सोहा । ६-५६।३
 राज काज सब लाज पति । २-३०५।०
 राजकुअँर तेहि अवसर आए । १-२४०।१
 राजकुअँर दौड सहज सलोने । २-११५।८
 राजकुअँर बर बाजि टेखावहिं । १-३१५।६
 राजकुमारि बिनय हम करहीं । २-११५।६
 राजकुमारि सिखावनु सुनहू । २-६०।२
 राजघाट सब बिधि सुंदर बर । ४-२८।३
 राज धर्म तन तीनि कर । १-३४।०
 राजधरम सरबसु एतनोई । २-३१५।१
 राज दुआर सकल बिधि चारु । ४-२४।८

राज धनी जो जेठ सुत जाही । १-१५२।५
 राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा । ३-२०।८
 राज बैठि कीन्हीं बहु लीला । १-१०९।८
 राज लखन सब अंग तुम्हारे । २-१११।४
 राज समाज प्रात जुग जागे । २-२८९।२
 राज समाज बिराजत रुरे । १-२४०।३
 राज समाजु एक स्थ साजा । १-३००।८
 राजत राज समाज महू । १-२४२।०
 राजत रामु सहित मामिनी । ६-१९८।५
 राजन राउर नामु जसु । २-३।०
 राजन रामु अतुलबल जैसे । १-२९२।३
 राजहि तुम्ह पर प्रेमु विसेमी । २-१७।५
 राजा के उपरोहितहि । १-१७१।०
 राजा रामु अवघ रजाधानी । १-२४।६
 राजा रामु जानकी रानी । २-२४२।६
 राजा सब रनिवास बोलाई । १-२९४।११
 राजिवनयन धरें धनु सायक । १-१७।१०
 राजीव बिलोचन भव भय मोचन । १-२९०।८
 राजीव लोचन स्त्रवत जल तन । ४-४।९
 राजीवायतलोचन धृत । ४-४०-२।३
 राजु करत यह दैअं बिगोई । २-५०।३
 राजु कि मूजब मरत पुर । २-४९।०
 राजु कि रहइ नीति बिनु जाने । ४-११५।६
 राजु दीन्ह सुग्रीव कहैं । ४-११।०
 राजु देन कहि दीन्ह बनु । २-५५।०
 राजु देन कहूँ सुम दिन साधा । २-५३।७
 रातिहिं घाट घाट की तरनी । २-२२०।२
 रानि कुवालि सुनत नरपालहि । २-२४०।३
 रानि राय सन अवसरु पाई । २-२८३।१

रामिन्ह सहित सोवदस सीया । १-२६६॥
 रानी सुजासिनि बोलि परिछनि । १-३१६।१२
 रानी सुनि उपरोहित बानी । १-३२१।३
 राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । १-१२०।३
 राम अनुज मन की गति जानी । १-२१७।३
 राम अनुज समेत बैदेही । ३-११।८
 राम अनंत अनंत गुन । १-३३।०
 राम अनंत अनंत गुनानी । ७-५१।३
 राम उटाइ मातु उर लाई । २-५६।८
 राम उदर देखेउँ जग नाना । ७-८१।५
 राम उपासक जे जग माहीं । ७-१२१।३
 राम एक तापस तिय तारी । १-२३।३
 रामकथा कलि कामद गाई । १-३०॥७
 रामकथा कलि पंग भरनी । १-३०।६
 रामकथा कलि बिटप कुठारी । १-११३।२
 राम कथा कलि मल हरनि । १-१४१।०
 राम कथा के तेइ अधिकारी । १-१२७।६
 रामकथा के मिति जग नाही । १-३२।५
 राम कथा गिरिजा मैं बरनी । ७-१२८।१
 रामकथा मंदाकिनी । १-३१।०
 रामकथा मुनिबर्ज बखानी । १-४७।३
 राम कथा मुनिबर बहु बरनी । ७-३१।८
 रामकथा ससि किरन समाना । १-४६।७
 रामकथा सुंदर कर तारी । १-११३।१
 रामकथा सुरधेनु सम । १-११३।०
 राम कथा सो कहइ निरंतर । ७-६१।४
 राम कपिन्ह जब आवत देख । ५-२८।७
 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । ७-२४।३
 राम करहु सब संजम आजू । २-१।३

राम करौं केहि माँति प्रसंसा । १-३४०।४
 राम कस न तुम्ह कहहु । २-१।०
 राम कहा अनुजहि समुझाई । ४-१०।१
 राम कहा तनु राखहु ताता । ३-३०।५
 राम कहा मुनि कहहु बिचारी । १-२८२।७
 राम कहा सब कौसिक पाहीं । १-२३६।२
 राम कहा सोवकन्ह बुलाई । ७-१०।२
 राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा । १-२८०।७
 राम काज कारन तनु त्यागी । ४-२६।८
 राम काज लागि तव अवतारा । ४-२९।६
 राम काज तयलीन मन । ४-२३।०
 राम काजु अरु मोर निहोरा । ४-२१।६
 राम काजु करि फिरि मैं आवीं । ५-१४।७
 राम काजु कीन्हें बिनु । ५-१।०
 राम काजु सब करिहुहु । ५-२।०
 राम कीन्ह आपन जबही तैं । २-११।२
 राम कीन्ह चाहिं सोइ होई । १-१२७।१
 राम कीन्ह बिश्राम निसि । २-१०८।०
 राम कुसल कहु सखा समेही । २-१४८।३
 राम कृपा आपनि जड़ताई । ७-७४।१
 राम कृपा करि चितवा सबही । ६-४७।२
 राम कृपा करि जुगल निहारे । ६-४५।२
 राम कृपा करि सूत उठावा । ६-१०।८
 राम कृपा तैं पारबति । १-११२।०
 राम कृपा नहीं करहिं तसि । ६-११७।४
 राम कृपानिधि कछु दिन । ४-१२।०
 राम कृपा बल पाइ कपिदा । ५-३४।३
 राम कृपा बिनु सपनेहुं । ७-१०।७
 राम कृपा बिनु सुनु खगसाई । ७-८८।६

राम कृपा भाजन तुम्ह ताता । ७-७३३
 राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । ५-५४२
 रामकृपाँ अकरेब सुधारी । २-३१६३
 राम कृपाँ कपि दल बल बादा । ६-७१२
 राम कृपाँ तव दरसन भयऊ । ७-६८८
 राम कृपाँ नासाहिँ सब रोगा । ७-१२१५
 राम कृपाल निषाद नेवाजा । २-२४९८
 राम गवनु बन अनस्थ मूला । २-२०६५
 रामघाट कहैं कीन्ह प्रनामू । २-१९६४
 राम चरन दृढ़ प्रीति करि । ४-१०१०
 राम चरन नूतन रति भई । ७-१२७३
 राम चरन पंकज उर धरहू । ६-०८
 राम चरन पंकज उर धरहू । ५-२२११
 राम चरन पंकज प्रिय जिन्हहीं । २-८३८
 राम चरन पंकज मन जासू । १-९६४
 राम चरन बरिज जब देखौ । ७-१०११५४
 राम चरन रति जो चह । ७-१२८१०
 राम चरन सरसिज उर राखी । ६-५५१
 राम चरित अति अमित मुनीसा । १-१०४३
 रामचरित द्वितामनि धारू । १-३१११
 राम चरित जे निरख मुनि । ७-२७१०
 राम चरित जे सुनत अघाहीं । ७-५२११
 राम चरित विचित्र बिधि नाना । ७-५६८
 रामचरितमानस एहि नामा । १-३४७
 रामचरितमानस मुनि भावन । १-३४९
 रामचरित राकेस कर । १-३२४
 रामचरित सत कोटि महीं । १-२५१०
 राम चरित सत कोटि अपारा । ७-५१२
 रामचरित सर गुप्त सुहावा । ७-११२११

राम चरित सर बिनु अन्हवाएँ । १-१०१५
 राम चरित सर सुंदर स्वामी । ७-९३४
 राम चलत अति मयउ बिषादू । २-८०३
 राम जननि जब आइहि घाई । २-१४५३
 राम जनम के हेतु अनेका । १-१२१२
 राम जनमि जगु कीन्ह उजागर । २-११९१५
 राम जबहिँ प्रेरेउ निज नादा । ३-४२२
 राम तिलक हित मंगल साजा । १-४०७
 राम तिलकु जौ साँचेहुँ काली । २-१४४
 राम तुम्हहिँ प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि । २-२००८
 राम तेज बल बुधि विपुलाई । १-५५११
 राम दरस की लालसा । २-२२४१०
 राम दरस बस सब नर नारी । २-१८७११
 राम दरस लगि लोग सब । २-३२२१०
 राम दरस लालसा उछाहू । २-२४४३
 राम दरस हित अति अनुसारी । १-३४५३
 राम दरस हित नेम ब्रत । २-८६१०
 राम दीख मुनि बसु सुहावन । २-१२३६
 राम दूत कर मरी बरु । ६-५६१०
 राम दूत मै मातु जानकी । ५-१२१९
 राम देखावहिँ अनुजहि रचना । १-२२४३
 राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । २-१२६७
 राम धाम पथ पाइहि सोई । २-१२३३
 राम धामदा पुरी सुहावनि । १-३४३
 राम नाम कर अमित प्रनावा । १-४५१२
 राम नाम कलि अभिमल दाता । १-२६६
 राम नाम गुन चरित सुहाए । १-११३३
 राम नाम नरकेशरी । १-२७१०
 राम नाम बर लन जुग । १-१११०

राम नाम बिनु गिरा न सोहा । ५-२२३
 राम नाम मनिदीप धरु । १-२९०
 राम नाम माहिमा सुर कर्हरी । २-१९४।२
 राम नाम सिव सुमिरन लागे । १-५९।३
 राम निकाई रावरी । १-२९।४
 राम निरादर कर फलु पाई । २-२२९।४
 राम* पदारबिंद रति । ४-२४।०
 राम पदारबिंद सिर । ६-५५।०
 रामु पयादेहि पायै सिधाए । २-२०३।६
 राम परायन ग्यान रत । ४-५४।०
 राम पुनीत बिषय रस रूखे । २-१४८।४
 राम प्रताप नाथ बल तोरे । २-१९१।१
 राम प्रताप प्रबल कपिजूथा । ६-४१।१
 राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । ६-०।६
 राम प्रताप सुमिरि मन । ६-११।०
 राम प्रतोषी मासु सब । १-३५।०।०
 राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । २-१००।४
 राम प्रनामु कीन्ह सब काहू । २-१३३।२
 राम प्रभाव बिचारि बहोरी । ६-५९।८
 राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । २-९८।५
 राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना । २-६८।२
 राम प्रसाद भगति बर पायउँ । ४-८८।२
 राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे । २-१६८।१
 राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह । ४-२।४
 राम प्रान प्रिय भरत कहूँ । २-३११।०
 रामप्रिया जग जननि सिय । २-१४०।०
 राम पेम भाजन भरतु । २-३२४।०
 राम पेम बिधु अचल अदोषा । २-३२४।६
 राम बचन गुरु नृपहि सुनाए । २-२१०।४

राम बचन नृदु गूढ़ सुनि । १-५३।०
 राम बचन सब के जिय भाए । ६-२।५
 राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने । १-२४।५
 राम बचन सुनि बानर जूथा । ५-४८।२
 राम बचन सुनि बिहँसा । ६-१०।०
 राम बचन सुनि समय समाजू । २-२४८।१
 राम बदनु बिलोक मुनि ठाढ़ा । ३-१२।४
 राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी । १-११९।६
 राम ब्रह्म परमास्थ रूपा । २-१२।४
 राम ब्रह्म व्यापक जग जाना । १-११५।८
 राम बान गहि मन सरिस । ५-३६।०
 राम बान रवि उएँ जानकी । ५-१५।२
 राम बाम दिसि सोमति । ४-११।४
 राम बालि निज धाम पढाया । ४-१०।१
 राम बास थल बिटप बिलोकें । २-२१५।४
 राम बास बन संपति भ्राजा । २-२३४।५
 राम बाहुवल सिंधु अपारु । १-२५१।८
 राम बिटा मागत कर जोरै । १-३३६।३
 राम बिमुख अस हाल तुम्हारा । ६-१०३।१०
 राम बिमुख लहि बिधि सम देही । ४-१५।३
 राम बिमुख सट चहसि संपदा । ६-१३।८
 राम बिमुख संपति प्रभुताई । ५-२२।५
 राम बियोग बिकल सब ठाढ़े । २-८३।१
 राम बिरहै तजि तनु छनमंगू । २-२१०।४
 राम बिरह ब्याकुल भरतु । २-२१३।०
 राम बिरह सागर महीं । ४-१।४
 राम बिरोध कुसल जसि होई । ६-२०।१
 राम बिरोध न उबरसि । ५-५६।४
 राम बिरोध बिजय चंह । ६-८४।०

राम बिरोधी हृदय तैं । २-१६२।०	राम मनुज कस रे सट बंगा । ६-२५।५
राम बिलोकनि बोलनि बलनी । ४-१८।४	रामु मनुज बोलत असि बानी । ६-३२।८
राम बिलोकि बंधु कर जोरें । २-६१।६	राम मातु गुर पद सिरु नाई । २-३२।१९
राम बिलोके लोग सब । १-२६।०	राम मातु दुखु सुखु सम जानी । २-३०।४
राम भगत अब अमिअँ अघाहँ । २-२०।६	राम मातु सुटि सरलचित । २-१८।१०
राम भगत जग चारि प्रकारा । १-२१।६	राम मारगन गन चले । ६-११।०
रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी । १-४६।३	राम मात्र लघु नाम हमारा । १-२८।१।६
राम भगत परहित निरत । २-२११।०	राम रजाइ मेट मन माहीं । २-२१।४।४
राम भगत प्रिय लागहिं जेही । २-१३।०।४	राम रजायसु सीस धरि । २-११।१०
राम भगत हित नर तनु धारी । १-२३।१९	राम रमापति कर धनु लेहू । १-२८।३।४
राम भगति अबिरल उर तोरें । ४-११२।१६	राम रहस्य ललित बिधि नाना । ४-११३।२
राम भगति एहिं तन उर जामी । ४-१५।४	राम रहित स्थ देखिहि जोई । २-१४।८।८
राम भगति चिंतामनि सुंदर । ४-१११।२	राम राज अभिषेक हित । २-५।०
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । १-१।८	राम राज अभिषेकु सुनि । २-८।०
राम भगति जल मम मन मीना । ४-११०।१९	राम राज कर सुख संपदा । ४-२१।६
राम भगति जिन्ह के उर नाहीं । ४-११२।१३	राम राज नमगेस सुनु । ४-२१।०
राम भगति दृढ़ पावहिं । ३-४६।४	राम राज बैठें त्रैलोक । ४-११।४
राम भगति निरुपम निरुपाधी । ४-११५।६	राम राज सुख विनय बड़ाई । १-४१।६
राम भगति पथ परम प्रबीना । ४-६१।३	राम राम कह राम सनेही । २-१४।४।८
राम भगति भूषित जियै जानी । १-८।४	राम राम कहि छाड़ैसि प्राणा । ६-५४।६
राम भगति मनि उर बस जाकें । ४-१११।१९	राम राम कहि जे जमुहाहीं । २-११३।५
राम भगतिमय भरतु निहारे । २-२१३।४	राम राम कहि तनु तजहिं । ३-२०।४
राम भगति रत नर अरु नारी । ४-२०।४	राम राम कहि राम कहि । २-१५।५।०
राम भगति रस सिद्धि हित । २-२०।१०	राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । ५-५।३
रामभगति सुरसरिताहि जाई । १-३१।१९	राम राम रघुपति जपत । ४-१।४
राम भजत सोइ मुक्ति गोसाई । ४-११८।४	राम राम रट बिकल मुजालू । २-३६।१९
राम भजन बिनु मिटाहिं कि कामा । ४-८।१२	राम राम सिय लखन पुकारी । २-१४।१।४
राम भरत गुन गनत सप्रीती । २-२८।१।१९	राम राम हा राम पुकारी । ४-४।५
राम भालु कपि कटकु बटोरा । १-२।४।३	राम रूपु अरु सिय छवि देखें । १-२४।८।१९

राम रूप गुण सील सुभाऊ । २-१४८६
 राम रूपु गुण सीलु सुभाऊ । २-०८
 राम रूपु गुण सुमिरत । ६-६३०
 रामरूप राकेसु निहारी । १-२६१३
 राम रूपु नख सिख सुमग । १-३१५०
 राम रूपु भूपति मगति । १-३६००
 राम रोष पावक जति घोरा । ३-२८१७
 राम लखन कै कीरति करनी । १-२१४६
 राम लखन तुम्ह सत्रुहन । २-१७३०
 राम लखन पथि कथा सुहाई । २-१२१८
 राम लखन सिय जान चढ़ि । २-८५०
 राम लखन सिय पट सिरु नाई । २-१८८
 राम लखन सिय प्रीति सुहाई । २-१२२७
 राम लखन सिय विनु पग पनहीं । २-२१०८
 राम लखन सिय रूप निहारी । २-८८१
 राम लखन सिय रूप निहारी । २-११३३
 राम लखन सिय रूपु निहारी । २-११०८
 राम लखन सिय सुंदरताई । २-११५२
 राम सकल नामन्ह ते अधिका । ३-४१८
 राम सकल बनवर तब तोषे । २-१३६२
 राम संकुल रन रावनु मारा । १-२४१५
 रामसखाहि मिलि भरत सप्रेमा । २-११४३
 रामसखा कर दोन्हें लागू । २-३१५४
 रामसखीं तेहि समय देखावा । २-२२४५
 रामसखा रिषि बरबस भैंटा । २-२४२६
 राम सखा सुनि संदनु त्यागा । २-११२७
 राम सखीं तब नाथ मगाई । २-१५०३
 राम सच्चिदानंद दिनेसा । १-११५५
 राम सत्यव्रत धरम रत । २-२१२०

राम सत्य सबु जो कष्ट कहहू । २-४२४
 राम सदा सेवक रुचि राखी । २-२१८७
 राम सनेह मगन सब जाने । २-१३४७
 राम सनेह सरस मन जासू । २-२७६४
 राम सपथ मै कीन्हि न काऊ । २-२८२२
 राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ । २-३१११
 राम सपथ सुनि मुनि जनकु । २-२१६०
 राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । २-१०८१
 राम सप्रेम पुतकि उर लावा । २-११०१
 राम सरिस को दीन हितकारी । ६-११३१
 राम सरिस बरु दुलहिनि सीता । १-३०३२
 राम सरिस सुत कानन जोगू । २-४१७
 राम सरूप तुम्हार । २-२६१०
 राम सिंधु घन सज्जन धीरा । ७-११११७
 राम सीय जस सलिल सुघासम । १-३६३
 राम सीय तन सगुन जनाए । २-६४
 राम सीय सिर सेंदुर देहीं । १-३२४८
 राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं । १-३२४३
 राम सुकीरति भनिति नदेसा । १-१३१०
 राम सुकंठ बिभीषन दोऊ । १-२४११
 राम सुनहु मुनि कह कर जोरी । ७-४७३
 राम सुना दुखु कान न काऊ । २-२००११
 राम सुप्रेमहि पोषत पानी । १-४२३
 राम सुभाऊ सुमिरि बैदेही । ६-१११२
 राम सुमंत्रहि आवत देखा । २-३८६
 राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो । १-२७४
 राम सेन निज पाछें घाली । ६-६१६
 राम सैल बन देखन जाहीं । २-२४८५
 राम सैल सोमा निरखि । २-३६१०

राम सो परमात्मा मरानी । १-११८५	रामचंद्र के चरित सुहाए । १-१३१६
राम संग सिय रहति सुखारी । २-१३१९	रामचंद्र के मजन बिनु । ७-७८१६
रामु अभित गुन सागर । ७-१२१६	रामचंद्र गुन बरनै लागा । ५-१२५५
रामु कवन प्रमु पूछउँ तोही । १-४५६	रामचंद्र मुख चंद्र छवि । १-३२१०
रामु कहत पावन परम । २-११४०	रामचंद्र पति सो बैदेही । २-१०१७
रामु काम सत कोटि सुभग तन । ७-१०१७	रामहि केवल प्रेमु पिजास । २-१३६१९
रामु कुर्माति सचिव संग जाहीं । २-३८८	रामहि चितइ रहे धकि लोचन । १-२६८८
रामु बले बन प्रान न जाहीं । २-८०६	रामहि चितइ रहेउ नरनाहू । २-४३१४
रामु चाहिं संकर धनु तोस । १-२५१२	रामहि चितव भायँ जेहि सीया । १-२४१६
रामु जाइ बनु करि सुर काजू । २-२८४६	रामहि चितव सुरेस सुजाना । १-२१६३
रामु जाहिं बन राजु तजि । २-१११०	रामहि चितवत चित्र लिखे से । २-३०२३
रामु तुरत मुनि धेनु बनाई । २-७८८	रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । २-१३२
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के । २-७३६	रामहि तिलक कालि जी भयऊ । २-१८६
रामु रामु रटि मोरु किय । २-३८१०	रामहि देखै कालि जुबराजू । २-२६३
रामु लखनु उर कर बर घीठी । १-२८१५	रामहि देखि एक अनुरागे । २-१३१७
रामु लखनु जिन्ह के तनय । १-२११०	रामहि देखि बसात जुड़ानी । १-३०८१९
रामु लखनु दसस्थ के दोटा । १-२६८१७	रामहि देखि रजायसु पाई । १-३५४३
रामु लखनु दोउ बंधुबर । १-२१६१०	रामहि निरखि ग्राम नर नारी । १-३४२८
रामु लखनु सिय बनाहि सिधाए । २-१६५५	रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । १-३०१९२
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । २-३३२८	रामहि प्रेम समेत लखि । १-२५५१०
रामु लखन सीता सहित । २-१४११०	रामहि बंधु सोच दिन राती । २-६८
रामु सत्यसंकल्प प्रभु । १-४११०	रामहि नजहिं लात सिब धाता । ७-१०५३
रामु सनेह सकोच बस । २-२१४१०	रामहि भरतु मनावन जाहीं । २-१११६
रामु सप्रेम संग सब भाई । १-३५११०	रामहि मातु बचन सब भाए । २-४२८
रामु साधु तुन्ह साधु सयाने । २-३२१७	रामहि मितत वैकई । ७-६१७
रामु सीय' सोभा अवधि । १-३०११०	रामहि सयँ कहेउ बन जाना । २-२११३
रामु सुमारी बले गुरु पाही । १-२६६६	रामहि लखनु बिलोकत कैलें । १-२६२७
रामु सो अवध नृपति सुत सोई । १-१०७१८	रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । ७-१२१६
रामु सँकोची प्रेम बस । २-२१७१०	रामहि सौंपि जानकी । ६-६१०

रामाकार मए तिन्ह के मन । ६-११३४
 रामाखों जगदीश्वर सुपगुरुं । ६-११३(३)
 रामानुज आगें करि आए । ४-२०१०
 रामानुज कहैं रामु कहैं । ६-७६१०
 रामानुज दीन्ही यह पाती । ५-५५१९
 रामानुज लघु रेख खचाई । ६-३५१२
 रामायणे निगदितं । १-११०-७(२)
 रामायुध अंकित गृह । ५-५१०
 राम कामारिसेव्यं भवभयहरणं । ६-११०-९(१)
 रायें राजपदु तुम्ह कहैं दीन्हा । २-१७३३
 रायें राम कहैं काननु दीन्हा । २-१७८७
 रायें राम राखन हित लागी । २-७७१९
 रायें सुभायें मुकुरु कर लीन्हा । २-१६
 रावन आगें परहिं ते । ६-४४१०
 रावन आवत सुनेउ सकोहा । १-१८११६
 रावन कर दीजहु यह पाती । ५-५११८
 रावन क्रोध अनल निज । ५-४९१६
 रावन काल कोटि कहैं । ५-५५१०
 रावन जबहिं विभीषन त्यागा । ५-४९१३
 रावन दूत हमहिं सुनि काना । ५-५३३३
 रावन नगर अत्य कपि दहई । ६-२२१८
 रावन नाम जगत जस जाना । ६-८९१४
 रावन बघ मंदोदरि सोका । ७-६७१२
 रावन बान छुजा नहिं चापा । १-२५५३
 रावन भवन बढे द्वौ घाई । ६-४३३२
 रावन मरन मनुज कर जाचा । १-४८१९
 रावन मार्गेउ कोटि घट । ६-६३१०
 रावन समा ससंक सब । ६-१३१४
 रावन सिर सरोज बनचारी । ६-१९१४

रावन सुत निज मन अनुमाना । ६-५३१६
 रावन हृदयें बिचारा । ६-८८१०
 रावनु एकु देखि सुर हरषे । ६-१६१२
 रावनु जातुधान कुल टीका । ६-३७१६
 रावनु बानु महामट मारे । ५-२४९१२
 रावनु स्त्री बिरथ रघुबीरा । ६-७९१९
 रावनारि जसु पावन । ३-४६१६
 रावनारि सुखरूप भूपवर । ७-५०१६
 रितु बसंत बह त्रिविध बयारी । २-२९४७
 रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । ७-११७७
 रिद्धि सिद्धि सिर धरि मुनिबर बानी । २-२९३१९
 रिद्धि सिद्धि संपति नदीं सुहाई । २-०३
 रिद्धि सिद्धि संपति सुख । १-९४१०
 रिपु उतकरण कहत सठ दौऊ । ६-३९१३
 रिपु कर रूप सकल तै गावा । ६-१५१४
 रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । ५-५९१२
 रिपु के समावार जब पाए । ६-३८१९
 रिपु जिति सब नृप नगर बसाई । १-१७४८
 रिपु तेजसी अकेल अपि । १-१७०१०
 रिपु परम कोपे जानि । ३-१९१७
 रिपु बल धरषि हरषि कपि । ६-३९१६
 रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं । ३-१८११०
 रिपु मद मधि प्रभु सुजसु सुनायो । ६-३४११०
 रिपु रन जीति सुजसु सुर गावत । ७-१५
 रिपु रुज पावक पाप प्रभु । ३-२९१६
 रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी । ४-५११९
 रिपुसूदन पद कमल नमामी । १-१६१९
 रिषय संग रघुबंस मनि । १-२९७१०
 रिषि अर्वास्त की साप भवानी । ५-५६११९

रिषि आगवन कहेसि पुनि । ७-६४।०
 रिषि आयसु असीस सिर राखी । २-२१५।२
 रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं । २-३०७।७
 रिषि निकाय मुनिबर गति देखी । ३-८।३
 रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई । ३-४।२
 रिषि पुलस्त जसु बिमल मर्यका । ५-२२।२
 रिषि पूछी हरिमगति सुहाई । ५-४७।४
 रिषि मम महत सीलता देखी । ७-११२।४
 रिषि रख लखि कह तेरहुतिराजू । २-२७७।७
 रिषि हित राम सुकेतुसुता की । १-२३।४
 रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी । १-७७।१
 रिस उर नारि रंक जिमि राजा । १-१५७।५
 रिस परिहरु अब मंगल साजू । २-३१।३
 रीझत राम सनेह निसोतें । १-२७।११
 रीझिहि राजकुओरि छबि देखी । १-१३३।४
 रोझेउ देखि तोरि चतुराई । ७-८४।५
 रुचिर चौतनी सुमग सिर । १-२१९।०
 रुचिर बिमानु बलेउ अति जातुर । ६-११८।६
 रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई । ३-१६।७
 रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं । ६-६७।८
 रुदन करत देखी सब नारी । ६-१०४।४
 रुद्रहि देखि मदन मय माना । १-८५।४
 रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं । ७-१०७।१७
 रुधिर गाड़ भरि भरि जम्प्यो । ६-५३।०
 रुधिर देखि बिषाद उर मारी । ६-१७।७
 रुख कलपतरु सागरु खारा । २-११८।४
 रुख बदन करि बचन मृदु । १-१२८।०
 रूप धरें जनु चारिउ बेदा । ७-३१।५
 रूप बिसेष नाम बिनु जानें । १-२०।५

रूप रासि नृप अजिर बिहारी । ७-७६।८
 रूप रासि बिधि नारि सँवारी । ३-२१।१
 रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा । १-११८।१२
 रूप सिंधु सब बंधु लखि । १-३३।१०
 रे कपि अधम मरन अब चहसी । ६-३०।७
 रे कपिपोत बोलु संभारी । ६-२०।१
 रे कपि बबर खर्ब खल । ६-२५।०
 रे कुमाय्य सट मंद कुबुद्धे । ६-१३।५
 रे खल का मारसि कपि भालु । ६-८२।१
 रे नृप बालक काल बस । १-२७।१०
 रे रे दुष्ट ठाड़ किन होही । ३-२८।११
 रे त्रिय चोर कुमारग गामी । ६-३२।५
 रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे । १-११८।३
 रेख खँचाइ कहउँ बलु मामी । २-१८।७
 रेखा त्रय सुंदर उदर । ७-७६।०
 रेखें रुचिर कंबु कल गोवीं । १-२४।२८
 रोदति बदति बहु मीति करुना । १-८६।१०
 रोम राजि अष्टादस भार । ६-१४।७
 रोम रोम प्रति लागे । १-२०।१०
 रोवहिं नारि हृदय हति पानी । ६-७१।५
 रंगभूमि आए टोउ भाई । १-२३।१५
 रंगभूमि जब सिय पगु धारी । १-२४।७।४
 रंतिदेव बलि भूप सुजाना । २-१४।४
 रंभादिक सुरनारि नबीना । १-१२।५।४

ल

लड़ आए बनघर बिपुल । २-२७।८।०
 लखइ न रानि निकट दुखु कैसें । २-२१।२
 लखन उतर आहुति सरिस । १-२७।६।०
 लखन कहा जस भाजनु सोई । १-२३।१।२

लखन कहाँ हैंसि हमरें जाना । १-२४११
 लखन कहे कछु बचन कटोरा । २-१५१७
 लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा । १-२४३५
 लखन कहेउ हैंसि सुनहु मुनि । १-२४४०
 लखन जानकी सहित तब । २-११८१०
 लखन जानकी सहित प्रभु । २-१३३१०
 लखन तुम्हार सपथ पितु आना । २-२३१४
 लखन दीख पय उतर करास । २-१३२१२
 लखन बान धनु धरे बनाई । २-१५०४
 लखन राम सिय कहूँ बनू दीन्हा । २-१४१३
 लखन राम सिय कानन बसहीं । २-३२५१२
 लखन राम सिय पंथ कहानी । २-२१५६
 लखन राम सियै सुनि सुर बानी । २-२३२३
 लखन राम सिय सुंदरताई । २-१०१२
 लखन राम सीतहि अति प्रीती । २-२०४४
 लखन रोषु पावकु प्रबल । १-२६६१०
 लखन लखेउ प्रभु हृदयै खमारु । २-२२६६
 लखन लखेउ भा अनस्थ आजू । २-४२४
 लखन लखेउ रघुबंधसमनि । १-२५११०
 लखन सकोप बचन जे बोले । १-२५३११
 लखन सचिवैं सियैं किए प्रनामा । २-८६३
 लखन सपन यह नीक न होई । २-२२५७
 लखन हृदयै लालसा बिसेषी । १-२१४११
 लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि । २-१३१०
 लखनु रामु सिय आनेहु फेरी । २-१३१८
 लखनु रामु सिय जाहुँ बन । २-२८२१०
 लखनु सत्रुसूदनु एकख्या । १-३१०४
 लखनहि भेंटि प्रनामु करि । २-३१८१०
 लखब सनेहु सुमार्यै सुहाएँ । २-११२११

लखहि न भूप कपट चतुराई । २-२६६
 लखा न मरमु राम विनु काहूँ । २-२११३
 लखि अपनैं सिर सबु छरु मारु । २-२११२
 लखि बिधि बाम कालु कठिनाई । २-१४५५
 लखि रिस मरेउ लखन लघु माई । २-१६२३
 लखि रुख सानि जनायउ राऊ । २-२८६८
 लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई । २-२५८४
 लखि सनेह कातरि महतारी । २-६८११
 लखि सनेह सुनि बचन विनीता । २-२८४११
 लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू । २-२६४११
 लखि सिय लखनु बिकल होई जाहीं । २-१४०६
 लखि सिय सहित सरल दोउ माई । २-१११५
 लखि सुमाउ सुनि सरल सुबानी । २-२८३५
 लखि सुबेष जग बंचक जेऊ । १-६५
 लखि हियैं हैंसि कह कृपानिधानू । २-३०१८
 लखी नरेस बात फुरि साँची । २-३३५
 लखी महीप कराल कटोरा । २-३०३
 लखी राम रुख रहत न जाने । २-४४१२
 लखेउ न काहूँ मरम कछु । ४-१२४
 लगन बाति अज सबहि सुनाई । १-१०४
 लगि लगि कान कहहिँ धुनि माथा । २-२६४६
 लगीं देन सिख सीतु सराही । २-४८४
 लगे कहन उपदेश अनेका । २-४४३
 लगे कहन कछु कथा पुनीता । २-१४०८
 लगे कहन हरिकथा रसाला । १-५१५
 लगे जनक मुनिजन पद बंदन । २-४४४
 लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि । २-६०१०
 लगे बहुरि बरनै वृषकेतु । १-१४०८
 लगे सराहन सहस मुख । १-३१३१०

लगे सँवारन सकल सुर । १-१११०
 लगे सुभाग तरु परसत धरनी । १-३४३८
 लगे सुमंगल सज्जन सब । २-८१०
 लगे होन पुर मंगलगाना । १-१८३
 लगे होन मंगल सगुन सुनि । २-२३४१०
 लघु जीवन संबतु पंच दसा । ७-१०१४
 लघु बायस बपु धरि हरि संग । ७-७४१७
 लघु लाग बिधि की निपुनता । १-१३१९
 लघु सुत नाम प्रियवत ताही । १-१४१४
 लच्छन तासु बिलोकि मुलाने । १-१३०२
 लच्छन धाम राम प्रिय । १-११७१०
 लच्छन सब विचारि उर राखे । १-१३०५
 लछिमन अति लाघर्वी सो । ३-१७१०
 लछिमन अरु सीता सहित । ७-७१०
 लछिमन कपीस समेत । ६-१००११०
 लछिमन कर प्रथमहिं लै नामा । ३-२६११५
 लछिमन कहा तोहि सो बरई । ३-१६११८
 लछिमन क्रोधवत प्रभु जाना । ४-१७१८
 लछिमन गए बनाहिं जब । ३-२३१०
 लछिमन चले क्रुद्ध होइ । ६-८२१०
 लछिमन चले क्रुद्ध होइ । ६-५२१०
 लछिमन तुरत बोलाए । ४-१११०
 लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो । ६-१०४१६
 लछिमन दीख उमाकृत बेषा । १-५२११
 लछिमन देखत काम अनीका । ३-३७१११
 लछिमन देखु बिपिन कइ सोमा । ३-३६१३
 लछिमन देखु मोर गन । ४-१३१०
 लछिमन बान सससन आनु । ५-५७११
 लछिमन भरत मिले तब । ७-५१०

लछिमन मन अस मंत्र दृढावा । ६-७५११४
 लछिमन मेघनाद द्वी जोधा । ६-५३१२
 लछिमन सब मातन्ह मिलि । ७-६१४
 लछिमन समुझाए बहु मौंती । ३-२३१८
 लछिमन संग जाहु सब नाई । ६-७४१७
 लछिमनहूँ यह मरमु न जाना । ३-२३१५
 लछिमन होहु धरम के नेगी । ६-१०८२२
 लछिमनु नामु राम लघु भ्राता । १-२२०८
 लता ओट तब सखिन्ह लखाए । १-२३११३
 लता बिटप मार्गे मधु चबहीं । ७-२२१५
 लतामवन तें प्रमट भे । १-२३२१०
 लता ललित बहु जाति सुहाई । ७-२७१२
 लरत अकास जुगल सम जोधा । ६-९४१६
 लरत निसावर भालु कपि करि । ६-८०११
 लरहिं सुमट निज निज जय हेतू । ६-७११११
 लरिका श्रमित उनीद बस । १-३५११०
 लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं । ७-७५१६
 लरिकाइहिं तें रघुबर बानी । २-२७३१५
 ललित अंक कुलिसादिक चारी । ७-७५१७
 ललित कपोल मनोहर नासा । ७-७६१४
 लव निमेष परमानु जुग । ६-०१७
 लव निमेष महुँ भुवन निकाया । १-२२४१४
 लसत मंजु मुनि मंडली । २-२३११०
 लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं । १-२२६११७
 लहहिं चारि फल अछत तनु । १-२१०
 लही न कतहुँ हरि हियँ मानी । १-३१११३
 लहेउ लामु तिन्ह जनम कर । २-७०१०
 लाग न उर उपदेसु । १-५११०
 लागइ अति पहार कर पानी । २-६२१२

लागत बान जलद जिमि गाजहि । ६-६७७
 लागत बान बीर चिक्करहीं । ६-८६१
 लागत सर धावा रिस मरा । ६-६९६
 लागति अवध भयावनि भारी । २-८२५
 लागहि कुमुख बचन सुम कैसे । २-४२७
 लागहि सैल बज्र तन तासू । ६-८९३
 लागि तुम्हा अतिसय अकुलाने । ४-२३३
 लागि बिलोबन सखिन्ह तन । १-२४८।०
 लागि देवमाया सबहि । २-३०२।०
 लागि लागि पग सबनि सिया । २-२४६।०
 लागि सक्ति मुरुछा कछु मई । ६-९३३
 लागि सासु पग कह कर जोरी । २-६३५
 लागीं सुनै श्रवन मन लाई । ५-१२६
 लागे करन ब्रह्म उपदेसा । ७-११०।३
 लागे पखारन पाय मंकाज । १-३२३।९
 लागे बरधन राम पर । ३-१९७
 लागे बिटप मनोहर नाना । १-२२६।४
 लागे सराहन भाग सब । २-२५०।९
 लागेउ तोहि पिसाच जिमि । २-३५।०
 लाजवंत तब सहज सुमाऊः । ६-२८।६
 लाजहिं तन सोमा निरखि । १-१४६।०
 लक्ष्मिं मारे बद्धति सिर । २-२२९।०
 लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । २-१०६।७
 लाभु कि किछु हरि भगति समाना । ७-१११।८
 लालन जोगु लखन लघु लोने । २-१११।९
 लिए उठाइ बिटप अरु नूधर । ६-६४।४
 लिए उठाइ लगाइ उर । २-१६४।०
 लिए गोद करि मोद समेता । १-३५३।३
 लिए सनेह बिकल उर लाई । २-४३।३

लिए फल मूल भेंट मरि मारा । २-८७।२
 लिखत सुधाकर गा लिखि राहू । २-५४।२
 लिए संपदा सकल सुख । १-३०६।०
 लियो हृदयै लाइ कृपा निधान । ६-१२०।१३
 लिंग आपि बिधियत करि पूजा । ६-१।६
 लीन्ह एक तेहिं सैल उपाटी । ६-६९।९
 लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित । ६-५१।०
 लीन्ह नौच मारीचहि संग । १-४८।४
 लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू । २-१७९।४
 लीन्ह आप मै सीस चढ़ाई । ७-१११।१६
 लीन्हि परीछा कवन बिधि । १-५५।०
 लीन्हि रायै उर लाइ जानकी । १-३३७।६
 लीन्हि लाइ उर जनक जानकी । २-२८५।४
 लीला कीन्हि जो तेहिं अवतारा । १-१४०।६
 लीला सगुन जो कहहिं बरधानी । १-३५।५
 लेइ उसासु सोच एहि भौंती । २-१४७।६
 लेत चढ़ायत खँचत गाढ़े । १-२६०।७
 लेत सोच मरि छिनु छिनु छाती । २-१४७।७
 लेन आइहहिं बंधु दोउ । १-३१०।०
 लेन चले सादर एहि भौंती । १-३१२।५
 लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । १-२१४।५
 लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ । १-२६५।३
 लेहु नयन मरि रूप निहारी । १-३३४।३
 ले अगवान बरातहि आए । १-१५।१
 ले उछंग कबहुँक हलरावे । १-१११।८
 ले जानकिहि जाहु गिरि कंदर । ३-१७।११
 ले दखिनि दिसि गयउ गोसाईं । ३-३०।३
 ले पुष्पक प्रभु आगे राखा । ६-११६।४
 ले रघुनाथहि ठाउँ देखाया । २-८८।१

लै राखेसि गिरि खोह महुँ । १-१७१।०
 लै सिर बाहु घते नाराचा । ६-१०२।२
 लै सुग्रीव संग रघुनाथा । ४-६।२५
 लै त्रिसूल घावा कपि भागे । ६-७५।४
 लोक कल्पना बेट कर । ६-१४।०
 लोकपाल अवलोकि सिहाने । १-३२५।६
 लोकपाल बल बिपुल ससि । ६-२२।४
 लोक बेट तें बिमुख ना । २-२२८।०
 लोक बेट, सब भाँतिहिं नीचा । २-११३।३
 लोक बेट संमत सबु कहई । २-२०६।३
 लोकमान्यता अनल सम । १-१६१।०
 लोक रीति जननीं करहिं । १-३५०।४
 लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता । ७-८०।१
 लोक सुजसु परलोक सुखु । २-२६३।०
 लोकप्र होहिं बिलोकत जासू । २-१३१।८
 लोकप्र होहिं बिलोकत तोरें । २-१०२।४
 लोकहुँ बेट बिदित इतिहासा । २-२१७।६
 लोकहुँ बेट बिदित कवि कहहीं । २-२५१।७
 लोकहुँ बेट सुसाहिब रीती । १-२७।५
 लोग उवाटे अमरपति । २-३१६।०
 लोग दुखित दिन दुइ । २-२४८।०
 लोग बिकल नुरुखित नरनाहू । २-७८।७
 लोग बियोग बिषम बिष दागे । २-१८३।२
 लोग सोग श्रम बस गए सोई । २-८४।६
 लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा । १-१११।३
 लोचन गोघर सुकृत फल । २-१०६।०
 लोचन चातक जिन्ह करि राखे । २-१२७।६
 लोचन जलु रह लोचन कोना । १-२५८।२
 लोचन निज पद जंत्रित । १-३०।०

लोचन मग रामहि उर आनी । १-२३१।७
 लोचन सजल जोरि कर दोऊ । ६-१०८।४
 लोचन सजल डीठि भइ थोरी । २-१४४।३
 लोचन सरोरुह स्त्रवत सींचत । २-१७५।१०
 लोभ कें इच्छा दंभ बल । ३-३८।४
 लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया । ४-२०।५
 लोभ मोह मृगजूथ किरातहि । ७-२१।६
 लोभु न रामहि राजु कर । २-३१।०
 लोभइ ओढन लोभइ डासन । ७-३१।१
 लोभी जसु चह चार गुमानी । ३-१६।१६
 लोभी लोलुप कल कीरति चहई । १-२६६।३
 लोभी लंपट लोलुपचारा । २-१६७।३
 लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा । १-३०२।५
 लंका निसिखर निकर निवासा । ५-५।१
 लंकापति कपीस नल नीला । ७-७।१
 लंका बाँके चारि दुआरा । ६-३८।२
 लंका सिखर उपर आगारा । ६-१७।७
 लंका सिखर उपर आगारा । ६-१२।४
 लंका कपि प्रवेस जिमि कीन्हा । ७-६६।४
 लंका द्यौ कपि सोहहिं कैसैं । ६-४४।८
 लंका मयउ कौलाहल मारी । ६-३१।१
 लंकेस अति बल गर्व । ६-११२।७
 लंपट कपटी कुटिल बिसैषी । १-११४।२

व

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं । १-४०।३
 वन्दे विशुद्धविज्ञानी कवीरवर । १-४०।४
 वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं । ३-४०।४
 वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं । १-४०।५
 वन्दे कन्दावदातं सरसिज । ६-४०।५

बन्देऽहं तमशोभकारणपरं । १-११०क६
 वर्णानामर्थसंधानां रसानां । १-११०क७
 वहं सुख संपत्ति समय समाजा । १-११०क८
 वहं सोमा समाज सुख । १-१२१क
 विनिश्चितं वदामि ते । १-१२२क
 विविक्त धासिनः सदा । ३-३११
 विशुद्ध बोध विग्रहं । ३-३११
 वैराग्याम्बुज भारकर हाध । ३-३११(२)
 व्रजति नात्र संशयं । ३-३१४

श

शङ्खेन्द्राभमतीवसुन्दरतनु । ६-११०क२(२)
 शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः । १-११०क३
 शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं । १-११०क४
 शोभाद्यौ वरधन्विनी । ४-११०क५(२)
 शोभाद्यौ पीतवस्त्रं सरसिजं । ४-११०क६
 श्याम तामरसं दाम शरीरं । ३-१०१
 श्रद्धा छमा मयत्री दाया । ३-४५४
 श्रद्धा बिना धर्मं नहिं होई । ७-८९४
 श्रद्धा भगति समेत प्रभु । २-२४७
 श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । २-६६४
 श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन । ६-७०१
 श्रमित भूप निद्रा अति आई । १-१६९
 श्रवन दिसा दस बेट बखानी । ६-१४४
 श्रवन नासिका काटै लागे । ५-५३४
 श्रवन पुटन्हि मन पान करि । ७-५२४
 श्रवन समीप भए सित केस । २-१७
 श्रवन सुजसु सुनि आयउ । ५-४५०
 श्रवन सुधा सम बचन । १-१४५
 श्रवन सुनी सट ता करि बानी । ५-३६१

श्रवणवंत अत्त को जग माहीं । ७-५२५
 श्रवणादिक नव भक्ति दुदाहीं । ३-११८
 श्रवणानुत्त जेहिं कथा सुहाई । ५-१२७
 श्राग अनुग्रह करहु कृपाला । १-१३८
 श्राप सीस धरि हरषि हिये । १-१३७
 श्रीखंड सम पावक प्रबेस क्रियो । ६-१०८
 श्रीगुरु धरन सरोज रज । २-०११
 श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती । १-०५
 श्रीनिवासपुर तें अधिक । १-१२९
 श्रीपति निज माया तब प्रेसी । १-१२८
 श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं । ३-२९१
 श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई । ७-३६३
 श्रीमुख बचन सुनत सब भाई । ७-४११
 श्रीमच्छाम्भुमुखेन्दु सुन्दरवरे । ४-११०क२-३
 श्री मट बक्र न कीन्हि वेहि । ७-७०१
 श्रीरघुनाथ रूप उर आवा । १-११०
 श्रीरघुनाथ नाम तजि । ६-१२१
 श्रीरघुबीर प्रताप ते । ६-३०
 श्रीरघुबीर परायण जेहिं । ७-१२७
 श्रीराम रावन समय बरित । ६-१००
 श्री सहित अनुज समेत कृपा । ३-२५१
 श्री सहित दिनकर बंस नृपन । ७-१११
 श्रीहत भए नृप धनु टूटे । १-२६२
 श्रीहत भए हारि हिये राजा । १-२५०
 श्रीहत सर सरिता बन बागा । २-१५७
 श्रीहत सीय बिरहैं दुतिहीना । २-१९८
 श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर । ७-२३२
 श्रुति पुरान कह नीति अति । ७-८६०
 श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । ७-११६

श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं । ७-१२१।१४
 श्रुति सिद्धांत इच्छ उरगारो । ७-१२२।२
 श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह । १-१२५।९
 श्रुति संमत हरि भक्ति पथ । ७-१००।४
 श्रोता बक्ता ग्याननिधि । १-३०।४
 श्रोता सुमति सुसील सुवि । ७-६९।४
 श्रोता त्रिविध समाज पुर । १-३९।०

ष

षट कंध साका पंच बीस । ७-१२।१८
 षट बिकार जित अनघ अकामा । ३-४४।७

स

सई उतरि गोमती नहाए । २-३२।५
 सई तीर बसि चले बिहाने । २-१८।१५
 सक सर एक सोषि सत सागर । ५-५५।२
 सक संग्राम जीति को ताही । ६-५४।२
 सकइ उटाइ सुरासुर मेरु । १-२९।७
 सकइ न बोलि बिकल नरनाहू । २-७६।९
 सकउँ तोर अरि अमरउ मारी । २-२५।३
 सकित सूल तरवारि कृपाना । ६-७२।९
 सक कोटि सत सरिस बिलासा । ७-९०।८
 सकरान बचन सुनत भगवाना । ६-६९।५
 सकल अमानुष करम तुम्हारे । १-३५।६
 सकल अलौकिक सुंटरताई । १-३५।४
 सकल जवनि मंडल तोहि कात्ता । १-१५।३।८
 सकल अंग संपन्न सुराऊ । २-२३।८
 सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई । ३-१०।५
 सकल कला करि कोटि बिधि । ५-८।०
 सकल कहाँहँ कब होइहि काली । २-१०।६
 सकल कामना हीन जे । १-२२।०

सकल काम प्रद तीरथराऊ । २-२०।६
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । २-१५।७
 सकल गिरिन्ह दब लाइअ बिनु । ७-७८।४
 सकल गुण निधान । ५-४०।३।३
 सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । ५-५९।८
 सकल चरित तिन्ह देखे । ५-५९।०
 सकल तनय विर जीवहुँ । १-१९।६।०
 सकल द्विजन्ह भिलि नायउ माथा । ७-४।५
 सकल देखाए जानकिहि । ६-११।४
 सकल प्रकार बिकार बिहाई । २-७४।६
 सकल बरात जनक सनमानो । १-३२।५
 सकल बिकार रहित गतभेदा । २-९२।८
 सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही । ५-३८।५
 सकल बिलोकत भरत मुखु । २-२९।०
 सकल भौति सम साजु समाजू । १-३९।६
 सकल मरमु रघुनयक जाना । ६-४६।९
 सकल मलिन मन दीन दुखारी । २-२२।५
 सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि । ३-९।०
 सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई । ३-२।३
 सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा । ६-११।३
 सकल लोग सब भूप डेराने । १-२५।२
 सकल सखी गिरिजा गिरि मैना । १-६७।३
 सकल सनेह सिथिल रघुबर कें । २-२२।९
 सकल समहि हटि हटकि तब । १-६३।०
 सकल समा के मति मै भोरी । १-२५।६
 सकल सराहत राम सो । २-२३।०
 सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू । २-७४।४
 सकल सुकृत फल भूरि भोग से । १-३१।३
 सकल सुकृत भूरति नरनाहू । २-१।२

सकल सुमट मिले दक्षिण जाहू । ४-२२१२
 सकल सुमंगल अंग बनाएँ । १-३१७१३
 सकल सुमंगल दायक । ५-६०१०
 सकल सुमंगल मूल जग । २-२६५१०
 सकल सुमंगल मूल जग । २-२०७१०
 सकल सुमंगल सजे आरती । १-३४४१६
 सकल सुरन्ह के हृदयै । १-८८१०
 सकल सुरासुर जुरहिं जुझास । २-१८८१७
 सकल सोक संकुल नर नारी । २-२७६१७
 सकल सौच फेरि जाइ नहाए । १-२२६१९
 सकल सौच करि राम नहावा । २-९३१३
 सकहु न आगसु धरहु सिर । २-४०१०
 सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । ६-६०१३
 सकुच बिहाइ मागु नृप मोहि । १-१४८१८
 सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा । २-१९४१५
 सकुचउ तात कहत एक बात । २-२५५१२
 सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं । १-३०६१५
 सकुचहि कहत श्रुति सेव सारद । १-९१११०
 सकुचि राम निज सपथ देवाई । २-१५१५
 सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । २-११६१४
 सकुचि सीयै तब नयन उधारे । १-२३३१३
 सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी । १-२५८१३
 सकुचे सकल मुआल जनु । १-२६४१०
 सकुनाधम सब भाँति अपावन । ७-१२२१८
 सकुल सदल प्रमु रावन मार्यो । ६-११५१३
 सखर सुकोमल मंजु दोष । १-१४१४
 सखाहि सनेह बिबस मग मूला । २-२३७१६
 सखा अनुज सिय सहित । २-१०४१०
 सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । ५-५०१९

सखा धर्ममय अस रथ जाकै । ६-३९११९
 सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । ५-४२१८
 सखा परम परमारथु एहू । २-९२१६
 सखा बचन सुनि उर धरि धीरा । २-२०११९
 सखा बचन सुनि बिटप निहारी । २-२३७१९
 सखा बचन सुनि हरये । ४-५१०
 सखा रामु सिय लखनु । २-१४९१०
 सखा समुझि अस परिहरि मोहू । २-९३१९
 सखा समेत मनोहर जोटा । २-२३८१९
 सखा सोच त्यागहु बल मोरें । ४-६११०
 सखि इन्ह कहैं कोउ अस कहहीं । १-२२२१४
 सखि जस राम लखन कर जोटा । १-३१०१३
 सखि परंतु पनु राज न तजई । १-२२११४
 सखि सब करब पुरारि पुन्य । १-३१११०
 सखि सब कौतुक देखनिहारे । १-२५५१९
 सखि हमरें आरति अति तातैं । १-२२११८
 सखिन्ह मध्य सिय सौहति कैते । १-२६३१९
 सखिन्ह सहित हरषी अति रानी । १-२६२१३
 सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत । २-५०१०
 सखी बचन सुनि मै परतीती । १-२५६१३
 सखी कहहिं प्रमुपद गहु सीता । १-२६४१८
 सखी सीय मुख पुनि पुनि चाही । १-३४८१५
 सखी संग लै कुआँरि तब । १-१३४१०
 सगुन उपासक परहित निरत । ५-४८१०
 सगुन उपासक संग तहैं । ४-२६१०
 सगुन ब्रह्म अवराधन । ७-११०१४
 सगुन बिचारि धरी मन धीरा । ६-१९१६
 सगुन सुगंध न जाहिं बखानी । १-३४५१७
 सगुन होहिं तुंदर चहुँ पासा । ६-१९८१८

सगुन होहिं सुंदर सकल । ७-११२
 सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता । २-२३१५
 सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । १-११५११
 सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं । ६-१११७
 सचिउ समीत सकइ नहिं पूछी । २-३७१८
 सचिव आगमनु सुनत सबु । २-१४७७०
 सचिव जो रहा धरमरुचि जासू । १-१७५४
 सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती । १-१५४१३
 सचिव धीर धरि कह मृदु बानी । २-१४११३
 सचिव नारि गुर नारि सयानी । २-७७१७
 सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू । २-२३४१६
 सचिव बेट गुर तीनि जी । ५-३७१०
 सचिव बोले बोले खर दूषन । ३-१८१२
 सचिव राम आगमन कहि । २-४३१०
 सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । २-१०४१३
 सचिव सगय सिख देख न कोई । १-२५७१३
 सचिव समीत बिभीषन जाकें । ५-५५१७
 सचिव सग्यान बंधु बलबीरा । १-१५३१२
 सचिव सुभट भूपति विचार के । १-३११६
 सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । २-३२२११
 सचिव संग ले नभ पथ गयऊ । ५-४०१९
 सचिवैं उठाइ राउ बैठारे । २-७५१७
 सचिवैं बलायउ तुरत रयु । २-८५१०
 सचिवैं सँभारि राउ बैठारे । २-४३१३
 सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई । २-८६१६
 सचिवागवन नगर नृप मरना । ७-६४१५
 सची सारदा रमा भवानी । १-३१७१६
 सजल नयन कछु मुख करि रूखा । ७-८७१६
 सजल नयन कह जुग कर जोरी । ६-१३१७

सजल नयन तन पुलकि निज । २-११०१०
 सजल नयन तन पुलकित । ६-१२०१७
 सजल नयन पुलकित कर जोरी । ७-८२१८
 सजल बिलोचन पुलक सरीरा । २-११३१४
 सजल बिलोचन हृदयें गलानी । २-११८१४
 सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । ५-२२१६
 सज्जन कुनुट बकोर चित । १-३२१०
 सज्जन सकृत् सिंधु सम कोइ । १-७११४
 सजि आरती अनेक बिधि । १-३१७१०
 सजि आरती मुदित उठि घाई । २-१५८१३
 सजि गज पथ पदवर तुरग । १-३०४१०
 सजि प्रीति बहुबिधि गढ़ि छोली । २-१६१४
 सजि बन साजु समानु सबु । २-७११०
 सजि सासंग एक सर । ६-१६१०
 सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही । ६-१११८
 सठ सत बिनय कुटिल सन प्रीती । ५-५७१२
 सठ स्वपच्छ तव हृदयें बिसाला । ७-१११११५
 सठ साखानुग जोरि सहाई । ६-२७११
 सठ सुघरहि सतसंगति पाई । १-२११९
 सठ सूर्ने हरि आनेहि मोही । ५-८११९
 सठ सेवक की प्रीति रुचि । १-२८१७
 सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल । ६-१६१६
 सत जोजन आयउं छन माहीं । ३-२४१६
 सत जोजन तेहिं आमन कीन्हा । ५-१११०
 सत पंच नौपाई मनोहर । ७-१२११५
 सत सत सर मारे टस भाला । ६-८२१६
 सतसमाज सुरलोक सब । १-११३१०
 सत सुरेस सम बिभव बिलासा । १-१२११३
 सत सेव सारद निगम कबि । ६-१००१२४

सतसंगत मुट मंगल मूला । १-२१८
 सत संगति दुर्लभ संसार । ७-१२२६
 सतरूपहि बिलोकि कर जोरें । १-१४१३
 सत्य करहि मम प्रीति सयानी । ५-११७
 सत्य कहउँ खग तोहि सुधि । ७-८७७
 सत्य कहउँ मृगति सुनु तोही । १-१६७२
 सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि । ६-२३७
 सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ । २-४६७
 सत्य कहहु गिरिमव तनु एहा । १-७१५
 सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने । १-३३२२
 सत्य तीयनिधि कंथति । ६-५०
 सत्यकेतु कुल कोउ नहीं बाँधा । १-१७४७
 सत्यधाम सबंग्य तुम्ह । १-४६३०
 सत्य नगर कपि जारेउ बिनु । ६-२३७
 सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा । १-१६५५
 सत्य बचन कहु निशिचर नाहा । ६-२२७
 सत्य बचन बिस्वास न करही । ७-११११४
 सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । २-२४६
 सत्य सत्य सब तव प्रभुताई । ६-८११०
 सत्य सराहि कहेहु बरु देना । २-२१६
 सत्यलोक नारद चले करत । १-१३८०
 सत्यसंध छाँड़ें सर लच्छा । ६-६७३
 सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । ३-२६५
 सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी । २-२९११
 सत्यसंध पालक श्रुति सेतू । २-२५३३
 सत्यसंध रघुबर बचन । २-२६४०
 सत्य बटामि च । ५-३३०२२
 सत्य बहुत रज कछु रति कर्मा । ७-१०३३
 सतानंद अरु बिप्र सचिव गन । १-३०८५

सतानंद तब आयसु दीन्हा । १-२६२८
 सतानंदु तब जनक बोलाए । १-२३८१
 सतानंद तब सचिव बोलाए । १-११२२
 सतानंद पद बदि प्रभु । १-२३१०
 सतिहि ससोव जानि वृषकेतू । १-५७५
 सती कपटु जानेउ सुरस्वामी । १-५२३
 सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ । १-५२५
 सती बसहिं कैलास तब । १-५८०
 सती बिघात्री इंदिरा । १-५४०
 सती बिलोके व्योम बिमाना । १-६०३
 सती मरनु सुनि संभु गन । १-६४०
 सती समीत महेश पहिं । १-५३०
 सती समुद्रि रघुबीर प्रभाऊ । १-५५१
 सती सिरोमनि सिय मुनगाथा । १-४१७
 सती सो दसा संभु के देखी । १-४१५
 सती हृदयँ अनुमान किय । १-५७७
 सती कीन्ह सीता कर बेधा । १-५५७
 सती जाइ देखेउ तब जागा । १-६२४
 सती जो तजी दच्छ मख देह । १-८२२
 सती दीख कौतुकु मग जाता । १-५३४
 सती मरत हरि सन बरु मागा । १-६४५
 सदगुन सुरगन अंब अदिति सी । १-३०१४
 सदगुर ग्यान बिराग जोग के । १-३१३
 सदगुर बैट बचन बिस्वासा । ७-१२१६
 सदगुर मिलें जाहि जिमि । ४-१७०
 सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महुँ । १-८३१०
 सदा अचल एहि कर अहिवाता । १-६६४
 सदा कृतास्थ रूप तुम्ह । ७-६३७
 सदा रहहिं अपनपौ दुरारैं । १-१६०२

सदा रामु एहि प्रान समाना । २-४६।६	सपनें बानर लंका जारी । ५-१०।३
सदा राम प्रिय होहु तुम्ह । ७-११३।७	सपनें होइ मिखादि नृपु । २-१२।०
सदा रोगबस संतत कोषी । ६-३०।३	सपनेहुँ कंबहुँ न करहि किछु । २-४८।०
सदा सबंगत सबंहित । ७-१६।०	सपनेहुँ दोसक लेसु न काहु । २-२६०।१
सदा सुनहिं सादर नर नारी । १-३७।२	सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काळु । २-२५०।६
सदा सुमन फल सहित सब । १-६५।०	सपनेहुँ सावेहुँ मोहि पर । १-१५।०
सदा सो सानुकूल रह मो पर । १-१६।८	सफल पूगफल कदलि रसाला । १-३४३।७
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह । २-११७।०	सफल रसाल पूगफल केस । २-५।६
सदाचार जप जोग बिरागा । १-८३।८	सफल सकल सुभ साधन साजू । २-१०६।६
सन इव खल पर बंधन करई । ७-१२०।१७	सुख-नौति कल्लोलिनी चारु गंगा । ७-१०७।६
सनकादिक नारदहिं सराहहिं । ७-४१।७	सब अमर हरषे सुमन बरषि । १-१०१।१२
सनकादिक बिधि लोक सिधाए । ७-३५।१	सब उदार सब पर उपकारी । ७-२१।७
सनकारे सेवक सकल । २-११६।०	सब उपमा कबि रहे जुठारी । १-२२१।८
संबंध राजन रावरे हम । १-३२५।१५	सब कर आजु सुकृत फल बीता । २-५६।५
सनमानि सकल बरात आदर । १-३२५।१	सब कर परम प्रकारक जोई । १-११६।६
सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे । २-२२५।१	सब कर फल रघुपाति पद प्रेमा । ७-१४।६
सनमाने प्रिय बचन कहि । २-१०।०	सब कर फल हरि भगति सुहाई । ७-१११।१८
सनमुख आयउ तधि अरु मीना । १-३०२।८	सब कर मत खगनायक एहा । ७-१२१।१३
सन्मुख चितवहिं राम तन । ६-११८।१	सब कर संसउ अरु अग्यानु । १-२५१।४
सन्मुख मरत बीर के सोभा । ६-४१।१०	सब कर हित रुख राउरि राखे । २-२५७।३
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । २-१८९।२	सब कहूँ सुरखद राम अभिषेकु । २-२५४।१
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । १-४३।२	सब के उर अंतर बसहु । २-२५७।०
सनमुख होत जो राम पद । २-१८५।०	सब के देखत बेदन्ह । ७-१३।४
सन्यपात जल्पसि दुबांदा । ६-३२।६	सब के प्रिय सब के हितकारी । २-१२१।३
सप्त दीप मुजबल बस कीन्हे । १-१५३।७	सब के बचन प्रेम रस साने । ७-४६।७
सप्त प्रबंध सुनग सोपाना । १-३६।१	सब के बचन श्रवन सुनि । ६-८।०
सप्ताबरन भेट करि । ७-७१।४	सब के हृदय मदन अमिताषा । १-८४।१
सपथ तुम्हार भरत के आना । २-४२।२	सब के उर अमिताषु अस । २-१।०
सपनें जेहि सन होइ लराई । ४-६।२०	सब के उर निर्मर हरषु । १-३००।०

सब के गृह गृह हैंहिं पुराना । ७-२५७
 सब के देखत महि परे । ६-१३१
 सब के देह परम प्रिय स्वामी । ६-२१७
 सब के प्रिय सेवक यह नीती । ७-१५८
 सब के संमत सब हित । २-२१३
 सब के निंदा जे जड़ करहीं । ७-१२०
 सब के ममता ताग बटोरी । ५-४७५
 सब के सार सँभार गोसाईं । २-७१६
 सब कोउ राम पैममय पेखा । २-२१३
 सब गुन रहित कुकवि कृत बानी । १-१५
 सब गुनग्य षंडित सब ग्यानी । ७-२०८
 सब जगु ताहि अनलहु ते ताता । ३-१८
 सब जानत प्रमु प्रमुता सोई । १-१२५
 सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई । २-१३०
 सब तरु फरे राम हित लागि । ६-४५
 सब ते सो दुलम सुरराया । ७-५३
 सब द्विज देहु हरषि अनुसासन । ७-१५
 सब दुख दुसह सहाबहु मोही । २-४४
 सब दुख बरजित प्रजा सुखारी । १-१५४
 सब नर करहिं परस्पर प्रीती । ७-२०२
 सब नर कल्पित करहिं अचारा । ७-११५
 सब नर काम लौन रत क्रोधौ । ७-१८३
 सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी । १-१०१
 सब निज कथा कहउं नै गाई । ७-१४७
 सब निर्दम धर्मरत पुनी । ७-२०७
 सब नृप भए जोगु उपहासी । १-२५०
 सब प्रकार करिहउं सेवकाई । ७-४४
 सब प्रकार भूपति बड़भागी । २-१७३
 सब प्रकार राजहि अपनाई । १-१६०

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे । १-२८१
 सब पर प्रीति प्रतीति जियै । २-२४०
 सब परिहरि राघुबीरहि । ५-३८०
 सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई । १-१७३
 सब बिधि कुसल कोसलाघोसा । ६-१०६
 सब बिधि गुरु प्रसन्न जियै जानी । २-३१
 सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । ७-६१
 सब बिधि नाथ मोहि अपनाइज । ६-११५
 सब बिधि पुरी मनोहर जानी । १-३४५
 सब बिधि सकल अलंकृत कीन्ही । १-३३०
 सब बिधि सब पुर लोग सुखारी । २-०६
 सब बिधि सबहि समदि नरनाह । १-३५१
 सब बिधि सानुकूल लखि सीता । २-२४१
 सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारे । २-१५२
 सब बिधि सोचिज पर अपकारी । २-१७२
 सब भरोस तजि जो भज रामहि । ७-१०२
 सब भौति अधम निषाद सो । ६-१२०
 सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । ७-१५७
 सब मम प्रिय सब मम उपजाए । ७-८५
 सब मिलि कहहिं परस्पर बात । ७-२५२
 सब मिलि जाहु बिभीषन साथ । ६-१०५
 सब मिलि देहिं रावनहि गारी । ६-४१५
 सब मुदित सुंदरता सराहहिं । १-३२४
 सब मंचन्ह तैं मंचु एक । १-२४१
 सब रघुपति मुख कमल बिलोकहिं । ७-६३
 सब रजनीचर कपि संघारे । १-१७६
 सब रनिवासु बिथकि लखि रहेऊ । २-२८३
 सब रीति प्रीति समेत करि सो । १-३२४
 सब लच्छन संपन्न कुमारी । १-६६३

सब त्थोग बियोग बिलोक हए । ४-१०१८
 सब सन कहा बुझाइ बिधि । १-८२१०
 सब समाचार किरात कोलन्हि । २-२२५१२
 सब समाजु सजि सिधि बल माहीं । २-२१३७
 सब समेत पुर धारिअ पाऊ । २-२४७७
 सब सर सिंधु नदी नद नाना । २-१३७१५
 सब साटर सुनि मुनिबर बानी । २-२५४३
 सब साधन कर सुफल सुहावा । २-२०१४
 सब सिय राम प्रीति कि सि मूरति । २-२८०७
 सब सिसु एहि मिस प्रेमबस । १-२२४१०
 सब सुख खानि भगति तै मागी । ४-८४३
 सब सुखी सब सच्चरित सुंदर । ४-२७१२
 सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाई । १-२०७५
 सब सुंदर सब भूषनधारी । १-२१७८
 सब सुर जिते एक दसकंधर । ६-१५७
 सब सुर बिन्दु बिरति समेत । १-८७५
 सबु असमंजस अहड सयानी । १-२२२३
 सबु करि मागहिं एक फलु । १-२२१०
 सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा । १-१०१९
 सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई । २-४०४
 सबु समाजु एहि भीति बनाई । १-३३३१
 सबइ तामु जग जीव कहैं । १-३४१०
 सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । १-१०८४
 सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । ५-१०२
 सबरी देखि राम गृह आए । ३-३३६
 सबहि देखिं करि बिनय प्रनामा । २-२४१३
 सबहि बिचारु कीन्ह मन माहीं । २-२३५
 सबहि बंदि मागहिं बरदाना । १-३५०२
 सबहि भीति पिय सेवा करिहीं । २-६६२

सबहि भीति मोहि दीन्हि बड़ाई । १-३४११
 सबहि मनहि मन किए प्रनामा । १-३२२३
 सबहि मानप्रद आपु अमानी । ४-३७४
 सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही । २-२३
 सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । १-११२
 सबिधि सितासित नीर नहाने । २-२०३४
 समय देव करुनानिधि जान्यो । ६-७०१९
 समय नरसु प्रिया पहिं नयऊ । २-२४५
 समय बिलोके त्थोग सब । १-२७०१०
 समय रानि कह कहसि किन । २-१३१०
 समय त्थोक सब लोकपति । २-२३०१०
 समय सप्रेम विनीत अति । १-२२५१०
 समय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । १-५८१९
 समय सुमाउ नारि कर साचा । ५-३६२
 समा माइ जेहि तब बल मथा । ६-३६३
 समा माइ परि व्याकुल । ३-२१०
 समा राउ गुर महिसुर मंत्री । २-३०२२
 समा सकल सुनि रघुबर बानी । २-३०६५
 समा सकुब बस भरत निहारी । २-२१६५
 समा समेत राउ अनुरागे । १-२१२७
 समा आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । ६-७७
 सम अमृतरिपु बिमद बिरागी । ४-३७२
 सम जम नियम फूल फल ग्याना । १-३६१४
 सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं । ४-३७८
 सम दम संजम नियम उपासा । २-३२४४
 सम प्रकास तम पाख दुहैं । १-७४
 सम महि तून तरुपत्त्वव डासो । २-६६५
 सम मानि निरादर आदरही । ४-१३१६
 सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती । ३-४५२

समउ जानि गुर आयसु दोन्ह । १-३४६७
 समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाई । १-३२३३
 समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए । १-३२११
 समउ समाजु लाज गुरजन की । २-२०४२
 समउ समुझि धरि धीरजु राजा । २-२९१६
 समदरसी इच्छा कहु नाही । ५-४७५
 समदरसी मोहि कह सब कोऊ । ४-२१८
 समन अमित उतपांत सब । १-४११०
 समन पाप संताप सोव के । १-३१५
 समय जानि उपरोहित आवा । १-७७१८
 समय जानि गुर आयसु पाई । १-२२६२
 समय प्रतापमानु कर जानी । १-१५७३
 समय पाइ तनु तजि अनयासा । १-१५१८
 समय बिलोकि बाजने बाजे । १-३३८५
 समय बिलोकि विवाह कर । १-९९१०
 समय समाज धरम अवरोधा । २-२९५३
 समय सुहावनि गारि बिराजा । १-३२८७
 समय समर्थ सुर बराबहि फूला । १-३९८६
 समर धीर नहि जाइ बंखाना । १-१७१६
 समर बलि सन करि जसु पावा । ५-२१२
 समर बिजय रघुबीर के । ६-१२१४
 समर भूमि दसकंधर कोप्यो । ६-९२३
 समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा । २-१८९३
 समर मरन हरि हाथ तुन्हास । १-१३८७
 समरथ कहु नहि दोषु गोसाई । १-६८८
 समरथ धाइ बिलोकहि जाई । २-१२०८
 समरथ सरनागत हितकारी । २-२९७३
 समाचार कहि जनक सुनाए । १-२६३१
 समाचार जब लछिमन पाए । २-६११

समाचार जानकिहि सुनावहु । ६-१०६२
 समाचार तेहि समय सुनि । २-५७१०
 समाचार पुनि सब कहे । ६-३८१४
 समाचार पुरबासिन्ह पाए । ७-२३४
 समाचार सब कहि समुझाए । ६-४६२
 समाचार सब लोगन्ह पाए । १-२९५२
 समाचार सब सुने निधादा । २-१८८२
 समाचार सब संकर पाए । १-६४१९
 समाचार सुनि तुहिनगिरि । १-१७१०
 समाधानु करि सो सबही का । २-३८१५
 समाधान तब भा यह जाने । २-२२६५
 समिति समिति जल भरहि तलावा । ६-१३७
 समिधि सेन घतुरंग सुहाई । १-२८२३
 समुझत जमित राम प्रमुताई । १-१११२
 समुझत जासु दूत कइ करनी । ५-३५७
 समुझत सरिस नाम अऊ नामी । १-२०१९
 समुझत सुनत सुखद सब काहू । २-२८७८
 समुझब कहब करब तुम्ह जोई । २-३२२८
 समुझाए उर लाइ प्रमु । २-४२०
 समुझाए सुरगुरु जइ जागे । २-४४०८
 समुझावत सब सचिव सयाने । १-३३७७
 समुझि अवध असमंजस दोऊ । २-२७०६
 समुझि करम गति धीरजु कीन्ह । २-११७८
 समुझि कामसुखु सोचहि भोगी । १-८६८
 समुझि देखु जिये प्रिया प्रबोना । २-३२३
 समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी । २-२२८७
 समुझि परी मोहि उन्ह के करनी । ३-२१४
 समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी । १-११७
 समुझि महेस समाज सब । १-१५०

समुद्रि मातु करतब सकुनाही । २-२३२॥
 समुद्रि मोरि करतति कुलु । २-११५॥
 समुद्रि राजसुख दुखिन जसति । १-१५१॥
 समुद्रि राम प्रताप कपि कोषा । ६-३३॥
 समुद्रि सयाने करहु अब । २-२५४॥
 समुद्रि सहम मोहि अपडर अपने । १-२८२ ।
 समुद्रि सुमित्राँ राम सिय । २-७३॥
 समुद्रि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा । १-६२॥
 समुद्रि नहिं तसि बालपन । १-३०॥
 सयन करहु निज निज गृह जाई । ६-१३॥
 सयन किएँ देख्य कपि तेही । १-४७॥
 सयन कीन्ह नृप आशसु मानी । १-१६१॥
 सयन कीन्ह रघुबंसमनि । २-८१॥
 सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे । १-२५३॥
 स्वाम गात कल कंज बिलोचन । १-२२०॥
 स्वाम गात बिसाल मुज चारी । ३-३१२ ।
 स्वाम गात रुजीव बिलोचन । ६-११४॥
 स्वाम गात सरसौरुह लोचन । ६-६२॥
 स्वाम गात सिर जटा बनाएँ । ४-८२ ।
 स्वाम गौर किमि कहाँ बखानी । १-२२८॥
 स्वाम गौर मृदु बयस किसौरा । १-२३४॥
 स्वाम गौर सब अंग सुहाएँ । १-३१०॥
 स्वाम गौर सुंदर दोउ जोरी । १-११७॥
 स्वाम गौर सुंदर दोउ भाई । १-२०८॥
 स्वाम गौर सुंदर दोउ भाई । ३-३३॥
 स्वाम सरौरु सुभायै सुहावन । १-३२६॥
 स्वाम सरोज दाम सम सुंदर । १-१३ ।
 स्वाम नुरभि घय बिसद अति । १-१०॥
 स्वामल गात रोम मए टाढ़े । ७-४॥

स्वामल गात सरौरुह लोचन । ७-३२३ ।
 स्वामल गौर किसौर बर । २-११६॥
 स्वामल गौर धर धनु माया । १-२२०॥
 सर चाप तोमर सक्ति सुल । ३-१८१॥
 सर चाप मनोहर जौन धर । ६-११०॥
 सर निकर छाई सम रावन । ६-१००॥
 सर निवारि रिपु के सिर काटे । ६-१२६ ।
 सर पैदत कपि पद गहा । ६-५७॥
 सर मज्जन करि जातुर आवहु । ६-५६॥
 सर सक्ति तोमर परसु सुल । ३-११२॥
 सर सक्ति तोमर सर्प चाप । ६-८६॥
 सर समीप गिरिजा गृह सोहा । १-२२७॥
 सर समूह सो छाई लागा । ६-४१॥
 सर सरिता बन भूमि बिभागा । २-२७८॥
 सरग नरक अनुराग बिरागा । १-५१॥
 सरगु नरकु अपबरगु समाना । २-१३०॥
 सरजु तीर रचि चिता बनाई । २-१६१॥
 सरजू नाम सुमंगल मूला । १-३८१॥
 सरद इंदु तन चितवत । ३-१२० ।
 सरद चंद चंदिनि लगत । २-७८॥
 सरद चंद निंदक मुख नीके । १-२४२॥
 सरद परब बिधु बदन बर । २-११५॥
 सरद विमल बिधु बदन सुहावन । १-३१५॥
 सरद मयंक बदन छवि सीवा । १-१४६॥
 सरद सबरीनाथ मुखु । २-११६॥
 सरद सचौरुह नैन । २-२२६॥
 सरदातप निसि ससि अपहरई । ४-१६॥
 सरन गएँ प्रमु ताहु न त्यागा । १-३८॥
 सरन गएँ मौ से अघ रासी । ७-१२३॥

सरनागत कहुँ जे तजहि । १-४३०
 सरनि सरोज बिटप बन फूले । २-१२३७
 सरनि सरोरुह जल बिहग । २-४९१०
 सरन्हि मरा मुख सन्मुख धावा । ६-७०३
 सब भाव मज कपट तजि । ७-८७क
 सब सबंगत सब उरालय । ७-३३७
 सबस दान दीन्ह सब काहू । १-१९३७
 सबसु खाइ भोग करि नाना । ६-४१८
 सरल कबित कीरति विमल । १-१४क
 सरल बचन नृप के सुनि काना । १-११९८
 सरल सुभाउ राम महतारी । २-५४७
 सरल सुभाय मायें हियें लाए । २-१६४१
 सरल सुभाय न मन कुटिलाई । ७-४५२
 सरल सुसाहिबु सील निधानू । २-२९७२
 सरल सुसील धरम रत राऊ । २-१६१५
 सरसिज लोधन बाहु बिसाला । ३-३३७
 सरसिज संकुल सकल तड़ागा । ७-२२१०
 सरित समीप राखि सब लोगा । २-२३२१
 सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । ४-१३८
 सरिता बन गिरि अवघट घाटा । ३-६४
 सरिता सकल बहहि बर बारी । ७-२२८
 सरिता सब पुनीत जलु बहहीं । १-६५१
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । ४-१५४
 सरुज सरीर बादि बहु भोगा । २-१७७१
 सरुव समीप दीखि कैकेई । २-३९२
 सक चंदन बनितादिक भोगा । २-२१४८
 सारत रुधिर धायउ बलवाना । ६-९१९
 सारहि सैल जनु निर्झर भारी । ६-८६१०
 सबरी गीघ सुसोबकनि । १-२४१०

सबरी देखि सम गृह आए । ३-३३६
 सबल जुगल दल समबल जोधा । ६-४५८
 स्वपत्र सबर खस जमन जड़ । २-११४०
 स्वभक्त कल्या पादप । ३-३२०
 स्वयं सिद्ध सब काज । ६-१७४
 स्वबस बिस्व करि बाहुबल । १-१५४०
 स्वागत पूँछि निकट बैठारे । ३-४०११
 स्वागत पूँछि पीत पट । ७-३२०
 स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । १-१९७
 स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगथा । १-१०७क
 स्वामि काज करिहउँ रन रारी । २-१८९५
 स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाँई । २-२९७४
 स्वामि धरम स्वास्थ्यहि बिरोधू । २-२९२८
 स्वामि सखा पितु मातु गुर । २-१३००
 स्वामि सुजानु जानि सबही की । २-३१३३
 स्वामिनि अभिनय छमबि हमारी । २-११५७
 स्वयंभू मनु अरु सतरूपा । १-१४११
 स्वास्थ्य नाथ फिरें सबही का । २-२६७५
 स्वास्थ्य बिबस बिकल तुम्ह होहू । २-१९१२
 स्वास्थ्य भीत सकल जग माहीं । ७-४६६
 स्वास्थ्य रत परिवार बिरोधी । ७-३९४
 स्वास्थ्य साँव जीव कहुँ एहा । ७-१५१
 स्वास्थ्य साधक कुटिल तुम्ह । १-१३६०
 सति कर सम सुनि गिरा तुम्हारी । १-११११
 सति गुर तिय गामी नधुपु । २-२२८०
 ससिभूषन अस हृदयें बिचारी । १-१०७४
 ससि सोषक पोषक समुद्रि । १-७४
 ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । १-११३
 ससि सत कोटि सुसीतल । ७-११क

सशि संपन्न सदा रह धरनी । ७-२२१६
 सशि संपन्न सोह महि कैसी । ४-१४१५
 सस्त्री नमी प्रनु सठ धनी । ३-२५४४
 ससुर चक्कवइ कोसलराज । २-१७७३
 ससुर भानुकुल भानु भुआलु । २-१९८७
 ससुरु एतादस अवध निवासु । २-१४१५
 ससुवारि पिआरि लगी जब ते । ७-१००१५
 सहज अपावनि नारि । ३-५१क
 सहज असंक लंकपति । ६-१६१क
 सहज एकाकिन्ह के भदन । १-७९१०
 सहज टेढ अनुहरइ न तोही । १-२७६१८
 सहज पाषण्डिय तामस देहा । ५-४४१८
 सहज प्रकासरत्न भगवाना । १-११५४
 सहज प्रीति नूपति के देखी । १-१६०१६
 सहज बयर बिसराइ रिपु । १-१४१क
 सहज बयर सब जीवन्ह त्यागा । १-६५१२
 सहज बानि सेवक सुख दायक । ५-१३१५
 सहज बिरागरत्न मन मोरा । १-२११५३
 सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । ६-६५११०
 सहज मीरु कर बचन दुढ़ाई । ५-५५१५
 सहज मनोहर मूरति दोऊ । १-२४२१५
 सहज सनेह बिबस रघुसाई । २-८४१४
 सहज सनेह राम लखि तासू । २-१०३७
 सहज सनेहै स्वामि सेवकाई । २-३००१३
 सहज सरल रघुबर बचन । २-४२१०
 सहज सरल सुनि रघुबर बानी । २-१२१७
 सहज सुभायै समाज दुहु । २-२८०१०
 सहज सुभाय सुभग तन गोरे । २-११६१५
 सहज सुहृद गुर स्वामि सिख । २-६३१०

सहज सुर कपि भालु सब । ५-५५१०
 सहजहि बले सकल जग स्वामी । १-२५४१५
 सहमि परेउ लखि सिधनिहि । २-३११०
 सहमि सुखि सुनि सीतलि बानी । २-५३१२
 सहस नाम सम सुनि सिव बानी । १-१८१६
 सहसबाहु भुज गहन अपारा । ६-२५१२
 सहसबाहु मुज छैदानिहारा । १-२७१८
 सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकु । २-२२८१९
 सहस सेष नहि कहि सकहि । ७-२३१०
 सहसा करि पाछे पछिताही । २-२३०१४
 सहि न सके रघुबर बिरहागी । २-८३१४
 सहि सक न भार उदार । १-३४११५
 सहित अनुज मोहि राम गोसाई । ३-१११५
 सहित दोष दुख दास दुरासा । १-२३१५
 सहित बघूटिन्ह कुआर सब । १-३७१०
 सहित बरात राउ सनमाना । १-३०८१६
 सहित बसिष्ठ सोइ नृप कैसे । १-३०११५
 सहित बिदेह बिलोकहि रानी । १-२४११३
 सहित बिपिन मधुकर खग । ३-३०१क
 सहित बिभीषन जपर जे । ६-११८१क
 सहित बिषद परसपर कहहीं । २-११८१२
 सहित सनेह निकट बैदारी । २-१४८१२
 सहित समा संभ्रम उठेउ । २-२७४१०
 सहित समाज तुम्हार हनारा । २-३०५१५
 सहित समाज भरत जनु आए । २-२२५१४
 सहित समाज राउ मिथिलेसू । २-२८११५
 सहित समाज साज सब सादरे । २-३१०१३
 सहित सहाय जाहु मम हेतू । १-१२४१६
 सहित सहाय रावनाहि भारी । ४-२११९

सहित सहाय समीत जति । १-१२६।०
 सही न जाइ कपिन्ह के मारी । ६-८८।६
 सहे सुरन्ह बहु काल बिपादा । २-२६४।५
 सनु मित्र सुख दुख जग माहीं । ४-६।१८
 साखामृग के बड़ि मनुसाई । १-३२।४
 सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना । १-१४१।७
 सागर निज मरजादी रहहीं । ४-२२।९
 सागर सरि सर बिपिन अपारा । ७-७९।७
 सावेहुँ उन्ह ऊँ मोह न माया । १-९६।३
 साँचेहुँ मैं तबार मुज बोह । ६-३३।७
 साजि बाजि गज बाहन नाना । २-३१९।६
 साँझ जानि दसकंधर । ६-३५।४
 साँझ समय सानंद नृपु । २-२४।०
 सातवैं सम मोहि मय जग देखा । ३-३५।३
 सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । ४-११६।९
 साथ किरात छ सातक दीन्हे । २-२७१।८
 साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्ह । २-२०२।२
 साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए । २-१०८।३
 सादर अरघ देइ घर आने । २-८।३
 सादर कहिं सुनिहिं बुध ताहीं । १-६।६
 सादर कुसल पूछि मुनि म्यानी । ३-११।११
 सादर चरन सरोज परखारे । १-४४।५
 सादर जनकसुता करि आगैं । ६-१९।८
 सादर जल तै चरन परखारे । ३-३३।१०
 सादर तात सुनावहु मोहीं । ७-६३।४
 सादर तेहि आगैं करि बानर । ५-४४।११
 सादर पान करत जति । ३-७।०
 सादर पुनि पुनि पूछति ओही । २-१६।१
 सादर पुनि भैंटे जामाता । १-३४।२

सादर बोले सकल बराती । १-९८।६
 सादर भलेहिं मित्री एक माता । १-६२।२
 सादर मज्जन पान किए तैं । १-४२।६
 सादर मिलेउ नाइ पट माथा । ४-३।७
 सादर मोहि यह कथा सुनाई । ७-१९२।१०
 सादर लगे परम धनदारे । १-३२।८
 सादर सकल कुआरि समुझाई । १-३३।७
 सादर सब कहैं रामगुर । २-२७।०
 सादर सब के पाय परखारे । १-३२।३
 सादर सियै प्रसादु सिर धरेऊ । १-२३।६
 सादर सिव कहूँ सीस चढ़ाए । ६-९३।६
 सादर सिवाहे नाइ अब माथा । १-३३।३
 सादर सिंहासन बैठारी । ६-१०५।६
 सादर सुनाहिं जे तिन्ह पर । ३-६।६
 सादर सुनाहिं ते तरहिं भव । १-६०।०
 सादर सुनि रुपयनि गुन । ७-५४।०
 सादर सुमिरन जे नर करहीं । १-११८।४
 सादर सुंदर बदनु निहारी । २-११।६
 साधक एक सकल सिधि देनी । २-३०५।४
 साधक नाम जपहिं लय लारैं । १-२१।४
 साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । ७-१३३।५
 साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । ७-४२।८
 साधन सिद्धि राम पग नेहू । २-२८८।८
 साधु अवग्या कर फलु ऐसा । ५-२५।५
 साधु अवग्या तुरत भवानी । ५-४१।२
 साधु असाधु सदन सुक सारी । १-६।१०
 साधु चरित सुम चरित कथासू । १-१।५
 साधु भूप बोले सुनि बानी । १-२६५।६
 साधु समौ गुर प्रभु निकट । २-२६।१०

साधु समाज न जाकर लेखा । २-१८९।७
 साधु समाज संग महिदेवा । १-३१४।५
 साधु सुजान सुशील नृपाला । १-२७।८
 सान्द्रानन्दपर्योदसौभगतनु । ३-११८।१
 सानी सरल रस मातु बानी । २-१७।१९
 सानुकूल कौसलपति रहहुँ । ६-१०७।०
 सानुकूल तेहि पर मुनि देवा । ७-४४।८
 सानुकूल बह त्रिविध बयासी । १-३०२।४
 सानुकूल सब पर रहहिं । ७-३०।०
 सानुज आपु अत्रि मुनि साधु । २-३०९।२
 सानुज के गुर गेहँ बहोसी । २-३२२।६
 सानुज पठइअ मोहि बन । २-२६८।०
 सानुज मरत उमगि अनुरागा । २-२४१।३
 सानुज मरतु सविव सब माता । २-२४७।६
 सानुज मिलि पल महुँ सब काहू । २-२४३।३
 सानुज राम नृपहि सिर नाई । २-३१८।१
 सानुज राम बिबाह उछाहू । १-४०।५
 सानुज राम समर जसु पावन । १-३१।२
 सानुज सखा समेत मगन मन । २-२३९।१
 सानुज सीय समेत प्रमु । २-३२१।०
 साप अनुग्रह होइ जेहिं । ७-१०८।३
 सापत ताड़त परुष कहँता । ३-३३।१
 साम दान अरु दंड बिनेदा । ६-३७।९
 सामघ देखि देव अनुरागे । १-३१९।४
 सायक एक नाभि सर सोधा । ६-१०२।५
 सारथी दूसर घालि स्थ । ६-८३।११
 सारद कोटि जमित चतुराई । ७-११।५
 सारद कोटि कोटि सत सेवा । २-१९९।८
 सारद दारुनारि सम स्वामी । १-१०४।५

सारद प्रेरि तासु मति फेरी । १-१७६।८
 सारद बोलि बिनय सुर करहीं । २-१०।८
 सारद श्रुति सेवा रिषय असेवा । १-१८५।१३
 सारद रोस महेश बिधि । १-१२।०
 सासंग कर सुंदर निबंध । ६-८६।११
 सालु नुम्हार कौसिलहि माई । २-१७।४
 सार्वकरन अगनित हय होवे । १-२९८।५
 सावकास सुनि सब सिय सासू । २-२८०।३
 सावधान मन करि पुनि संकर । ५-३२।३
 सावधान मानद मदहीना । ३-४४।९
 सावधान सबही सनमानहिं । २-२४३।४
 सावधान सुनु सुमुखि सुतोबनि । २-२८७।३
 सावधान होइ धार ज्ञानि । ३-१९।७
 सासति करि पुनि करहिं पसाऊ । १-८।३
 सासु सकल जब सीर्ये निहारी । २-२४५।४
 सासु समीप गए दोउ भाई । २-३१८।५
 सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू । २-८१।४
 सासु ससुर गुर प्रिय परिवारु । २-१६।३
 सासु ससुर गुर सजन सहाई । २-६४।२
 सासु ससुर गुर सेवा करेहू । १-३३३।५
 सासु ससुर सन मोरि हुँति । २-१२।०
 सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर । २-१३९।६
 सासुन्ह सबनि मिली बैटेही । ७-६।१
 सासुन्ह सादर जानकिहि । ७-११।७
 सास्त्र सुवितित पुनि पुनि देखिअ । ३-३६।८
 साहस अनृत चपलता माया । ६-१५।३
 साहिव सीतानाथ सो । १-२८।०
 सिअरें बचन सूखि गए कैसें । २-७०।८
 सिख सीतलि हित मधुर नुहु । २-७८।०

सिख हमारि सुनि परम पुनीता । १-२४५।२
 सिखर एक उत्तंग अति देखी । ६-१०।२
 सिंध कंध आयत उर सोहा । १-४४।५
 सिंधासन पर त्रिभुवन साई । ७-११।८
 सिंधासन प्रमु पादुका । २-३२३।०
 सिंधासन बैठेउ सिर नाई । ६-३४।५
 सिंधासन भूषन बसन अन्न । २-१७०।०
 सिथिल जंग पग मग डगि डोलहिं । २-२२४।४
 सिथिल सनेहें गुनत मन माहीं । २-२११।२
 सिथिल समाज सनेह समाधी । २-३०६।२
 सिद्ध तपोधन जोगेजन सुर । १-१०५।०
 सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी । १-८४।८
 सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं । २-२१६।६
 सिधि सब सिय आयसु अकनि । १-२०६।०
 सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । ५-०।५
 सिंधु पार प्रमु डेरा कीन्हा । ६-४।३
 सिंधु बचन सुनि राम सचिव । ६-०।४
 सिय कर सोचु जनक पछितावा । १-२५१।६
 सिय निंदक जघ ओघ नसाए । १-१५।३
 सिय निवास सुंदर सदन सोभा । १-२१३।०
 सिय पितु मातु सनेह बस । २-२८६।०
 सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । २-५१।४
 सिय बरनिअ तेइ उपमा देई । १-२४६।३
 सिय बेषु सर्ती जो कीन्ह तेहिं । १-१७।१
 सिय मनु राम चरन अनुरागा । २-१३१।४
 सिय मनु राम चरन अनुरागा । २-७७।५
 सिय महिमा रघुनायक जानी । १-३०६।३
 सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी । १-२३७।४
 सिय मुख समता पाव । १-२३७।०

सिय रघुबीर कि कानन जोगू । २-१०।८
 सिय रघुबीर बिबाहु जे । १-३६१।०
 सिय राम अवलोकनि परसापर । १-३२२।१५
 सिय राम प्रेम पियूष पूरन । २-३२५।१
 सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा । २-२८५।६
 सिय समेत दौउ तनय निहारी । २-७५।८
 सिय समेत सियमातु तब । २-२८५।०
 सिय सुंदरता बरनि न जाई । १-३२२।१
 सिय सुमंत्र भाता सहित । २-८१।०
 सिय सोभा नहिं जाइ बखानी । १-२४६।१
 सिय सोभा हिर्य बरनि प्रमु । १-२३०।०
 सिय सौमित्रि राम छबि देखहिं । २-१३३।८
 सिय सौमित्रि राम फल खाए । २-१२४।४
 सियें सुरसरिहि कहैउ कर जोरी । २-१०२।२
 सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसैं । १-२५८।८
 सिर अरु सैत कथा चित रही । ६-२८।७
 सिर जटा मुकुट प्रसून बिच । ६-१०२।१६
 सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । १-७६।२
 सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । २-१२३।३
 सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू । २-१७५।६
 सिर धरि बचन चरन सिरु नाई । २-१८७।७
 सिर धरि मुनिबर बचन सबु । २-६।०
 सिर परसे प्रमु निज कर कंजा । १-१४७।८
 सिर भर जाउँ उचित अस मोरा । २-२०२।७
 सिर मुज बाढ़ि देखि रिपु केरी । ६-१७।१
 सिर मुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी । ६-१८।२
 सिर मातिका कर कालिका । ६-१२।११
 सिर लंगूर लपेटि पछारा । ६-५७।५
 सिर सरोज निज करन्हि उतारी । ६-२४।३

सिरउ गिरे संतत सुन जाही । ६-१३४
 सिरु धुनि लीन्ह उसास अत्ति । २-३०७
 सिरु नाइ देव मनाइ सब सन । १-३२५/११
 सिरु नाइ बारहिं बार चरनन्हि । ३-४५/११
 सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला । ६-२२५
 सिव अज पूज्य चरन रघुसाई । ७-१२३/३
 सिव अज सुक सनकादिक नारद । ७-१२१/१२
 सिव अनुसासन सुनि सब आए । १-१२५
 सिव अपमानु न जाइ सहि । १-६३/०
 सिव चतुरानन जाहि डैराही । ७-७०/८
 सिव द्रोही मम भगत कहावा । ६-१/७
 सिव पद कमल जिन्हहि रति नाहीं । १-१०३/५
 सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी । १-३०/१३
 सिव बिरंघि कहुँ मोहइ । ७-६२/४
 सिव बिरंघि जेहि सेवहिं । ६-४८/४
 सिव बिरंघि सुर मुनि समुदाई । ६-२१/१
 सिव ब्रह्मादिक बिबुध बल्थ्या । १-३१३/२
 सिव सम को रघुपति ब्रतधारी । १-१०३/७
 सिव समाज जब देखन लागे । १-१४/४
 सिव सेवक मन क्रम अरु बानी । ७-१६/२
 सिव सेवा कर फल सुत सोई । ७-१०५/२
 सिवै कृपासागर ससुर कर संतोषु । १-१००/११
 सिवै राखी श्रुति नीति अरु । ७-१०१/४
 सिवै समुझाए देव सब । १-३१४/०
 सिवहि बिलोकि संसंकेउ मारु । १-८५/२
 सिवहि संमु गन करहिं सिंगारा । १-११/१
 सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा । २-२१/७
 सिबि दधीचि हरिचंद कहानी । २-४७/५
 सिबि दधीच हरिचंद नरेसा । २-१४/३

सिबिका सुमग जोहार उधारी । १-३४७/८
 सिबिका सुमग न जाहिं बखानी । २-१८६/८
 सिसु सब राम प्रेमबंस जाने । १-२२४/१
 सिसु सेवकु आयसु अनुगामी । २-२१२/४
 सिसुपन तेँ परिहरेउँ न संगू । २-२५१/७
 सिंह ठवनि इत उत चितव । ६-१८/०
 सिंहनाद करि गर्जा । ६-५०/०
 सिंहनाद करि बारहिं बारा । ४-२१/८
 सिंहासन अति उच्च मनोहर । ६-११८/४
 सिंघासनु अति दिव्य सुहावा । १-११३/३
 सीतल अमल मधुर जल । ७-५६/०
 सीतल निसित बहसि बर धारा । ५-१/६
 सीतल मंद सुगंध सुमाऊ । ३-३१/८
 सीतल मंद सुरभि बह बाऊ । १-११०/३
 सीतल सिख दाहक भइ कैसें । २-६३/२
 सीतल सुगंध सुमंद मारन । १-८५/१०
 सीतल सुरभि पवन बह मंदा । ७-२२/४
 सीतलता सरलता मयत्री । ७-३७/६
 सीतहि चितइ कही प्रमु बाता । ३-१६/११
 सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी । ३-२८/२३
 सीतहि पहिराए प्रमु सादर । ३-०/४
 सीतहि समय देखि रघुसाई । ३-१६/२०
 सीतहि सासु असीस सिख । २-६१/०
 सीतहि त्रास देखावहिं । ५-१०/०
 सीता अनुज समेत प्रमु । ३-८/०
 सीता केरि करहु रखवारी । ३-२६/१
 सीता के अति बिपति बिसाला । ५-३०/१
 सीता के बिलाप सुनि मारी । ३-२८/६
 सीता चरन बोंच हति भागा । ३-०/७

सीता चरन भरत सिरु नावा । ७-५१२
 सीता चितव स्याम मृदु गाता । ३-२०३
 सीता तैं मम कृत अपमाना । ५-९१९
 सीता देइ मिलहु न त । ५-५२०
 सीता देहु राम कहूँ अहित । ५-४००
 सीता परम रुचिर मृग देखा । ३-२६३
 सीता प्रथम अनल भूँ राखी । ६-१०७/१४
 सीता मन भरोस तब भयऊ । ५-९५९
 सीता मन बिचार कर नाना । ५-९२४
 सीता मातु सनेह बस । ५-२५५/०
 सीता रघुपति मिलन बहोरी । ७-६७३
 सीताराम गुणग्राम । १-१०७/१४
 सीता राम चरन रति मोरैं । २-२०४/२
 सीता राम संग बनबासू । २-२७९/३
 सीता लखन सहित रघुराई । २-११३/१९
 सीतालक्ष्मणसंयुत पथिगत । ३-१०७/२४
 सीता सचिव सहित दौउ भाई । २-८६/१९
 सीता सहित उदध कहूँ । ६-१२०/४
 सीता सहित कृपानिधि संगुहि । ६-११९/४
 सीता हरन तात जनि । ३-३१०
 सीतान्वेषणतत्परी पथिगती । ४-१०७/१४
 सीतापति सेवक सेवकाई । २-२६५/१९
 सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा । ३-२८१
 सीम कि चाँपि सकइ कोउ तासू । १-१२५/८
 सीर्ये असीस दीन्हि मन माहीं । २-२४१/५
 सीय आइ मुनिबर पग लागी । २-२४५/१९
 सीय कि पिय सँगु परिहरिहि । २-४९/०
 सीय चकित चित समहि चाह । १-२४७/७
 सीय चलत ब्याकुल पुरबासी । १-३३८/३

सीय द्विआह्वि राम गरब । १-२४५/०
 सीय बिलोकि धीरता भागी । १-३३७/५
 सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी । २-२८०/८
 सीय मातु कह सत्य सुबानी । २-२८१/८
 सीय मातु तेहि समय पठाई । २-२८०/२
 सीय राम पद अंक बचाएँ । २-१२२/३
 सीय राम पद पैमु अबासि । २-३२६/०
 सीय राममय सब जग जानी । १-७/२
 सीय लखन जन सहित सुहाए । २-१०६/३
 सीय लखन जेहि बिधि सुख लहली । २-१४०/१९
 सीय सकुच बस उतरु न देई । २-४८/१९
 सीय समीप ग्रामतिय जाही । २-११५/४
 सीय स्वयंबर कथा सुहाई । १-४०/१९
 सीय स्वयंबर देखिअ जाई । १-२३१/१९
 सीय स्वयंबर मूप अनेका । १-२९१/४
 सीय सहित सुत सुनग दौउ । २-४६/०
 सीय सासु प्रति बेष बनाई । २-२५१/२
 सीर्ये सासु सेवा बस कीन्हो । २-२५१/४
 सीय सुराहि बरनिअ केहि नाँती । १-२६२/६
 सीय सँवारि समाजु बनाई । १-३२१/८
 सीत कि मिल बिनु बुध सेवकाई । ७-८९/६
 सील सकुच सुति सरल सुभाऊ । २-१८२/५
 सील सराहि सना सब सोची । २-३१२/४
 सीलसिंधु सुनि गुर जागवन् । २-२४२/१९
 सील सकोच सिंधु रघुराऊ । २-२७३/६
 सीतु सनेहु छाडि नहिं जाई । २-८४/५
 सीतु सनेहु सकल दुहु ओरा । २-२८०/५
 सीस जटा कटि मुनि पद बाँधैं । २-२३८/५
 सीस जटा ससिबदनु सुहावा । १-२६७/५

सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी । २-१२८।३
 सुक सनकादि भगत मुनि नारद । १-१७।५
 सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी । १-२५।२
 सुक सारिका जानकी ज्याए । १-३३७।१
 सुक सारिका पदावहिं बालक । ७-२७।७
 सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी । १-२७।७
 सुकबि सरद नभ मन उडगन से । १-३१।१२
 सुकृत जाहि अस कहत तुन्हारे । २-७७।८
 सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । १-३६।७
 सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । २-२१०।६
 सुकृति संमु तन बिमल बिमूती । १-०।३
 सुकृती तुम्ह समान जग माही । १-२९३।५
 सुकृती साधु नाम गुन गाना । १-३६।११
 सुकृतु जाइ जौ फनु परिहरऊँ । १-२५।५
 सुकृत सील सुख सीबै सुहाई । २-५१।८
 सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊँ । २-७८।४
 सुख चाहिं मूढ न धर्म रता । ७-१०१।२
 सुख जुत कछुक काल चलि गयऊँ । १-१८९।८
 सुख धाम पूरनकाम राम । ६-१२०।१६
 सुख धाम राम नमामि काम । ६-११२।१८
 सुखनिधान अस पितु गृह मोरें । २-१७।२
 सुखु पायउ बिंरिचि रधि तेही । २-१२१।७
 सुखु बिदेह कर बरनि न जाई । १-२८५।३
 सुख भवन संसय समन टवन । १-५९।११
 सुख मकरंद भरे श्रियमूला । २-५२।४
 सुख मंदिर सुंदर श्रीरमन । ६-११०।१४
 सुख समाजु नहिं जाइ बखानी । २-२१४।२
 सुख समेत संबत दुइ साता । २-२७९।८
 सुखस्वरूप रघुबंसमनि । २-२००।०

सुख संतोष बिराग बिदेका । ७-३०।८
 सुख संदोह मोहपर । १-११९।१०
 सुख संपति परिवार बड़ाई । ४-६।१६
 सुख संपति सुत सेन सहाई । १-१७९।१
 सुख हरषहिं जड दुख बिलखाहिं । २-१४९।७
 सुखी मीन जे नीर अगाधा । ४-१६।१
 सुखी मीन सब एकरस । ३-३१।४
 सुखमूल दूलहु देखि दंपति । १-३२३।११
 सुगम अगन नाना चरित सुनि । ७-७३।४
 सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । २-२९३।२
 सुगम उपाय पाइबे केरे । ७-११९।१२
 सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराए । ७-१६।६
 सुग्रीवहु कै मुरुछा बीती । ६-६५।५
 सुग्रीवहुं सुधि मोरि विस्तारी । ४-१७।४
 सुधि फल मूल मधुर मृदु जानी । २-८८।८
 सुधि सुबिचित्र सुमोगमय । २-१०।०
 सुधि सुसील सेवक सुमति । ७-८६।०
 सुधि सेवक तुम्ह राम के । १-१०४।०
 सुधि सुंदर आश्रमु निरखि । २-१२४।०
 सुजन समाज सकल गुन खानी । १-१।४
 सुजस पुसन बिदित निगनागम । ७-१०।७
 सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई । १-३२३।२
 सुठि सुकुमार कुमार दोउ । २-८१।०
 सुठि सुंदर संवाद बर । १-३६।०
 सुत कहूँ राज समर्पि । ६-६।०
 सुत बध सुना दसानन जबहीं । ६-७६।६
 सुत बध सुरति कीन्हि पुनि । १-२०।०
 सुत बित नारि भवन परिवारा । ६-६०।७
 सुत बित लोक ईषना सीनी । ७-७०।६

सुत बिलोकि हरषी महतारी । ७-११६
 सुत बिषइक तब पद रति होऊ । १-१५०५
 सुत मानहिं मातु पिता तब लौ । ७-१००४
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । ६-९१२
 सुत सनेहु इत बचनु । २-४०१०
 सुत सनेह बस माता । १-२००१०
 सुत समूह जन परिजन नाती । १-१८०१३
 सुत हिये लाइ दुसह दुख मेटे । १-३०७४
 सुतन्ह समेत दसस्थहि देखी । १-३०८३
 सुतन्ह समेत नहाइ नृप । १-३५४१०
 सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । १-३५८४
 सुतहि राजु रामहिं बनबासू । २-२१६
 सुतहि ससोध देखि मनु मारें । २-१५८६
 सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं । १-१३०६
 सुद्ध मरै दुइ बासर बीते । २-२४७४
 सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद । २-८७१०
 सुद्ध सत्व समता बिग्याना । ७-१०३१२
 सुद्ध सौ भगउ साधु संमत अस । २-२४७१३
 सुदिन सुघसी तात कब होइहि । २-६७८
 सुदिन सुमंगलु तबहिं जय । २-४१०
 सुदिन सोधि कल कंठन छोरे । १-३५९१९
 सुदिनु सोधि मुनिबर तब आए । २-१७०१२
 सुदिनु सोधि सब साजु सजाई । २-३०१८
 सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई । १-१०४
 सुदिनु सुमंगल दायकु सोई । २-१४१२
 सुधा बरषि कपि मालु जिआए । ६-११३५
 सुधाबृष्टि मे दुहु दल उमर । ६-११३६
 सुधा समुद्र समीप बिहाई । १-२४५१५
 सुधा सराहिअ अमरती । १-५१०

सुधा सुधाकर सुरसरि साधु । १-४८८
 सुधा सुरा सम साधु असाधु । १-४४६
 सुधि करि अंबरीष दुरबासा । २-२६४४
 सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी । ७-१५१०
 सुनइ न ब्रवन नयन नहिं सूझा । २-१४७१२
 सुनत अगस्ति तुरत उठि धार । ३-१११९
 सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति । २-१४८१०
 सुनत कृपानिधि मन अति माए । ५-२९७
 सुनत गरुड के गिरा बिनीता । ७-६३५
 सुनत गिरा बिधि गान बखानी । १-७४५
 सुनत गौघ क्रोधातुर धावा । ३-२८१५
 सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल । ६-१२०१०
 सुनत जनक आगवनु सबु । २-२७२१०
 सुनत जातुधानी सब । ६-१०८१०
 सुनत जुगल कर माल उठाई । १-२६३६
 सुनत जुगल तन पुलक मन । ५-६१०
 सुनत तीरबासी नर नारी । २-१०९१९
 सुनत दसानन उठा रिसाई । ५-४०१२
 सुनत नारि नर मए दुखारी । २-११७६
 सुनत निसाचर मारन धार । ५-२३६
 सुनत नौक आगे दुख पावा । ६-८४
 सुनत फिरउं हरि गुन अनुबादा । ७-१०९१२
 सुनत बचन उठि बैठ कपीसा । ६-१८८
 सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । ६-८३७
 सुनत बचन उपजा अति क्रोधा । १-१३५६
 सुनत बचन जहै तहै जन धार । ७-१०३
 सुनत बचन दससीस रिसाना । १-२७१६
 सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । ५-११५
 सुनत बचन पुनि मारन धावा । ५-२७

सुनत बचन प्रेमाकुल बानर । ६-११७६
 सुनत बचन फिरि जनत निहारे । १-२६१२
 सुनत बचन रावन परजरा । ६-२६८
 सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू । १-३३५७
 सुनत बचन बिसमित महतारी । १-७२६
 सुनत बचन बिसरे सब दूरआ । ७-१६
 सुनत बचन बिहसा दससीसा । ५-५५७
 सुनत बचन बिहसे शिष्य । १-७८०
 सुनत बचन मृदु दीनदयाला । ६-११५८
 सुनत बात मृदु अंत कठोरी । २-२१३
 सुनत बालि क्रोधातुर धावा । ४-६१७
 सुनत बिनीत बचन अति । १-५१०
 सुनत बिनीत बचन सुख पावा । ४-११८
 सुनत बिभीषणु प्रभु के बानी । ५-४८३
 सुनत बिभीषण बचन राम के । ६-११६१
 सुनत बिमल गुन अति सुख पावहिं । ७-२५६
 सुनत बिहसि बोला दसकंधर । ५-२३१
 सुनत बिहसि बोला दससीसा । ६-१८२
 सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ५-५०५
 सुनत मस्तु भए बिबस विषाटा । २-१५१३
 सुनत राम अति कोमल बानी । ४-११
 सुनत राम अभिषेक सुहावा । २-६३
 सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । २-२०५३
 सुनत लखन के बचन कठोरा । १-२४४२
 सुनत लखन सिध राम सँदेसू । २-१४५८
 सुनत श्रवन बारिधि बंधाना । ६-४१०
 सुनत सकल जननीं उठि घाई । ७-२३
 सुनत समय मन मुख मुसुकाई । ५-५६१
 सुनत सभासद उठे अकुलाई । ३-२११

सुनत सुधासम बचन राम के । ७-४६१
 सुनत सुमंगल बैन मन । २-२२६०
 सुनतहिं लखनु घले उठि साधा । २-१६५३
 सुनतेउं किमि हरि कथा सुहाई । ७-६८५
 सुनहि कथा इतिहास सब । २-२३७०
 सुनहि बिनय मम बितप असोका । ५-१११०
 सुनहि विमुक्त बिरत अरु बिषई । ७-१४५
 सुनहि मातु में दीख । १-७२१०
 सुनहि सकल मति बिनल मराला । ७-५६१
 सुनहि सती तव नारि सुभाऊ । १-५०६
 सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ । ७-३८१
 सुनहु उदार सहज रघुनायक । ३-४११
 सुनहु उमा ते लोग अभागी । ३-३२३
 सुनहु तात अब मानस रोगा । ७-१२०२८
 सुनहु तात जैहि कारन आयउं । ७-६३१
 सुनहु तात तुम्ह कहूँ मुनि कहहीं । २-७६६
 सुनहु तात माया कृत । ७-४१०
 सुनहु तात यह अकथ कहागी । ७-११६१
 सुनहु देव रघुबीर कृपाला । ३-२६४
 सुनहु देव सबसवर स्वामी । ५-४८५
 सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू । १-२१६४
 सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना । १-२७८२
 सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें । ५-३५१०
 सुनहु नील अंगद हनुमाना । ४-२२१
 सुनहु परम पुनीत इतिहासा । ७-५४८
 सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । ५-६१
 सुनहु प्रानप्रिय भावत जो का । २-२८१
 सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुसीला । ३-२३१
 सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । ५-५६४

सुनहु बिभीषन प्रभु के सीती । ५-६।६
 सुनहु भरत भावी प्रबल । २-१७।१०
 सुनहु भरत रघुबर मन माहीं । २-२०७।३
 सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । २-२०९।३
 सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । २-२०५।८
 सुनहु भानुकुल केतु जामवंत । ६-१।०
 सुनहु भानुकुल पंकज भानू । १-२५२।३
 सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह । १-२९।१०
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । ५-१६।७
 सुनहु राम अब कहउँ निकैता । २-१२७।३
 सुनहु राम अवतार हरित । १-१२०।१
 सुनहु राम कर सहज सुमाऊ । ७-७३।५
 सुनहु राम जेहिं सिधघनु तोरा । १-२७०।४
 सुनहु राम सब कारनु एहू । २-३९।६
 सुनहु राम सरबम्य सुजाना । २-२५६।८
 सुनहु राम स्वामी सन । ४-९।०
 सुनहु लखन मल भरत सरीसा । २-२३०।८
 सुनहु सकल पुरजन मम बानी । ७-४२।३
 सुनहु सकल रजनीचर जूथा । १-१८०।५
 सुनहु सखा कह कृपानिधाना । ६-७९।४
 सुनहु सखा निज कहउँ सुमाऊ । ५-४७।१
 सुनहु सगासद सकल मुनिदा । १-६३।१
 सुनहु सुमट सब कह दससीसा । ६-३३।१०
 सुना चहउँ प्रभु तिन्ह कर लच्छन । ७-३६।४
 सुना सीर मन महुँ अंसि त्रासा । १-१२४।७
 सुनासीर सत सरिस सो । ६-१०।०
 सुनि अति उकुति पवनसुत केरी । ६-०।४
 सुनि अति बिकल भरत बर बानी । २-२६३।१
 सुनि अनुकथन परस्पर होई । १-४०।३

सुनि अबलोकि सुधित चरख चाही । १-२८।३
 सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे । १-३०३।३
 सुनि आगवनु दसानन केरा । ६-९९।१०
 सुनि आचरज करै जनि कोई । १-२।२
 सुनि आचरजु न मानिहहिं । १-३३।०
 सुनि आनंदु भयउ सब काहू । १-३५।८
 सुनि उमा बचन बिनीत कोमल । १-९६।११
 सुनि उरगारि बचन सुख मान्ता । ७-१९४।१२
 सुनि अंगद सकोप कह बानी । ६-२५।१
 सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । १-२७५।५
 सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । ५-२३।५
 सुनि कठोर बानी कपि केरी । ६-२१।३
 सुनि कपि भालु बले करि हूहा । ६-०।१०
 सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । ६-५९।७
 सुनि कपीस बहु दूत पठाए । ६-१।५
 सुनि कृपाल अति आरत बानी । ३-१।१४
 सुनि कृपाल सागर मन पीरा । ५-५९।६
 सुनि कैवट के बैन । २-१००।०
 सुनि खग हरष सोक जुत बानी । ४-२६।१
 सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी । ५-५५।८
 सुनि गुन गान समाधि बिसारी । ७-४१।८
 सुनि गुन देखि दसा पाछिताही । २-२२२।४
 सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई । १-३२९।८
 सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला । २-४८।२
 सुनि गुर परिजन सचिव महीपति । २-७९।२
 सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा । १-२५३।७
 सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा । २-१९।७
 सुनि जानकी परम सुखु पावा । ३-५।१
 सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी । २-२९।२

सुनि तब प्रसन्न सप्रेम सुहाई । ७-१४१३
 सुनि ता करि बिनती मृदु बानी । ७-६०२
 सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं । ६-५६७
 सुनि दसकंधार बचन तब । ६-६२०
 सुनि दारुन दुखु दुहैं समाजा । २-३१७६
 सुनि दुर्बचन कालबस जाना । ६-८१९
 सुनि नमगिरा सती उर सोचा । १-५६६
 सुनि नारद के बचन तब । १-१८०
 सुनि नारदहि लागि अति दाय्या । ७-५८४
 सुनि निषादु निज भाग बड़ाई । २-११५८
 सुनि नमगिरा हरष मोहि भयऊ । ७-११३७
 सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी । १-२०७७
 सुनि पति बचन कहति बेदेही । २-१६४
 सुनि पति बचन हरष मन माहीं । १-७१५
 सुनि पन सकल भूप अभिलाषे । १-२४१५
 सुनि प्रमु पद रति उपजइ । ७-१६१
 सुनि प्रमु बचन बिभीषन । ६-८०४
 सुनि प्रमु यम सरल कपि बानी । ५-३३२
 सुनि पाती पुलके दौउ भ्राता । ५-२१०११
 सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । ६-१४
 सुनि प्रमु बचन अधिक अनुरागेरें । ७-८३३
 सुनि प्रमु बचन कहैं कपिबृंदा । १-३३५
 सुनि प्रमु बचन जोरि जुग पानी । १-१४८११
 सुनि प्रमु बचन भरत गहे चरना । ७-३५८
 सुनि प्रमु बचन भरत सुखु पावा । २-३०७८
 सुनि प्रमु बचन भालु कपि हरषे । ६-१०७११३
 सुनि प्रमु बचन मगन सब भए । ७-१६११
 सुनि प्रमु बचन मगन सब भए । ७-७११
 सुनि प्रमु बचन लाज हम मरहीं । ६-११७११

सुनि प्रमु बचन बिलोकि मुख । ५-३३०
 सुनि प्रमु बचन हरष हनुमाना । ५-४२१
 सुनि प्रमु बचन हरषि मुनि चारी । ७-३३११
 सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि । २-५४०
 सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी । २-११४२
 सुनि प्रिय बचन भरत तब धाए । ६-५८१
 सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी । २-१३७
 सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना । १-१११११५
 सुनि बचन हरष बिषाद मन । ६-९८१६
 सुनि बन गवनु कौन्ह रघुनाथा । २-२६१४
 सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे । १-३४१६
 सुनि बिधि बिनय समुझि प्रमु बानी । १-८८१५
 सुनि बिनती सबंय्य सिय । ७-१०८१
 सुनि बिराग संजुत कपि बानी । ७-६१२२
 सुनि बिरचि अतिसय सुख मानहिं । ७-४१६
 सुनि बिरचि मन हरष तन । १-१८५०
 सुनि बिरचि रामहि सिरु नावा । ७-५१२
 सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा । २-१५२८
 सुनि बिहंगपति बानी । ७-६११
 सुनि ब्रत नेम साधु सकुवाहीं । २-३२५४
 सुनि बोलीं मुसुकाइ भवानी । १-८१११
 सुनि बोले गुर अति सुखु पाई । १-२१३११
 सुनि भए बिकल सकल नर नारी । २-४५७
 सुनि भरत बचन विनीत अति कपि । ७-११८
 सुनि भसुडि के बचन भवानी । ७-११४५
 सुनि भसुडि के बचन सुन । ७-१२४४
 सुनि भसुडि के बचन सुहाए । ७-१३११
 सुनि भूपाल भरत ब्यवहारु । २-२८७११
 सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ । २-३११४

सुनि मम बचन बिगीत मृदु । ७-११०११
 सुनि महीष तापस बस मयऊ । १-१६२७
 सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी । १-१६६१६
 सुनि मारीष निचावर क्रोही । १-२०९१३
 सुनि मुनि आयसु धावन धाए । २-१५६१७
 सुनि मुनि आसिष सुनु मतिधीरा । ७-११३१५
 सुनि मुनि गिरा सत्य जियै जानी । १-६७११
 सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए । २-३१६
 सुनि मुनि बचन कहल रघुराऊ । २-२५७१२
 सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे । २-२११११
 सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने । २-१२७११
 सुनि मुनि बचन भरत हियै सोचू । २-२१२११
 सुनि मुनि बचन राम मन भाए । ३-१०२२२
 सुनि मुनि बचन राम रथ्य पाई । २-२५१११
 सुनि मुनि बचन राम सकुवाणे । २-१०७११
 सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । १-२७०१६
 सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । २-२०९१७
 सुनि मुनि सुजसु मनाहिं मन राऊ । १-३६०१२
 सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती । १-२१७१७
 सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के । १-२८३१६
 सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना । १-१५०१५
 सुनि मृदु बचन कुमति अति जसई । २-३२१४
 सुनि मृदु बचन भूप हियै सोकू । २-२८१४
 सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । २-६३११
 सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । २-२१५१६
 सुनि रघुनाथ सचिव संबादू । २-१५१३
 सुनि रघुपति अतिसय सुख माना । ६-७४१६
 सुनि रघुपति के बचन सुहाए । ३-४४११९
 सुनि रघुबर आगमनु मुनि । २-१२४१०

सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि । २-२३२१०
 सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी । २-५९१८
 सुनि राजा अति अप्रिय बानी । १-२०७११
 सुनि रावन पठए भट नाना । ५-१७१५
 सुनि सिंधि सिंधि अनिमादिक आई । २-२१२१८
 सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । २-१६२१७
 सुनि लछिमन बिहसे बहुरि । १-२७८१०
 सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । ५-५११७
 सुनि लछिमन सीता के बानी । ६-१०८१३
 सुनि सकुवाइ नाइ महि माथा । २-२६११७
 सुनि सकोप कह निसिचर नाथा । ६-३०१६
 सुनि सनमानहिं सबहिं सुबानी । १-२७१९
 सुनि सनेह बस उठि नरनार्हा । २-७६१५
 सुनि सनेहमय पुरजन बानी । २-२७३११
 सुनि सनेहमय मंजुल बानी । २-११६१२
 सुनि सनेहमय बचन गुर । २-२५५१०
 सुनि सनेहसानी बर बानी । १-३३६१२
 सुनि सनेह साने बचन । १-२९०१०
 सुनि सनेह साने बचन । २-११०
 सुनि सप्रेम मम बानी । ७-८३११
 सुनि सप्रेम समुझाव निधादू । २-२००१७
 सुनि सब कथा समीरकुमारा । ७-६६१३
 सुनि सब कथा हृदय अति भाई । ७-१२८१७
 सुनि सब के मन अचरजु आवा । १-१२६१४
 सुनि सब चरित भूपगृहँ आए । १-१२९१८
 सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी । २-११३१२
 सुनि सब राम कथा खगनाहा । ७-६७१८
 सुनि सबिषाद सकल पछितार्ही । २-१०९१६
 सुनि समुझाहिं जन मुदित मन । १-२१०

सुनि सरोष बोले सुभट बीर । २-११११०
 सुनि सरोष भृगुनायक आए । १-२१२११
 सुनि सरोष भृगुबंसमनि । १-२३३१०
 सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा । २-२८१११
 सुनि सनुघुन मातु कुटिलाई । २-१६२११
 सुनि सिख अभिमत आशिष पाई । २-३१११३
 सुनि सिख पाई असीस बड़ि । २-३२३१०
 सुनि सिय बचन सासु अकुलानी । २-६८१६
 सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी । २-१०२१४
 सुनि सिय सपन भरे जल लोचन । २-२२११६
 सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना । १-११८१७
 सुनि सिव बचन हरषि गुर । ३-१०११३
 सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । १-११२११
 सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । १-३११११
 सुनि सुख लहब राम बैदेहीं । २-१०३१५
 सुनि सुग्रीवें परम भय माना । ४-१८१३
 सुनि सुग्रीव बचन कपि धार । ५-५१११४
 सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । ५-२८१६
 सुनि सुग्रीव हरष कपि । ५-२८१०
 सुनि सुटि सहमेउ राजकुमारु । २-१६०१५
 सुनि सुत बचन कहति कैकेई । २-११५१७
 सुनि सुत बचन प्रीति जति बाढ़ी । ६-११५१४
 सुनि सुत बचन भरोसा आवा । ६-४८१७
 सुनि सुत बचन सनेहमय । २-१५११०
 सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । ५-१८११
 सुनि सुधि सोच बिकल सब लोग । २-२१३१५
 सुनि सुनि राम भरत संवाद । २-३०८१६
 सुनि सुबचन भूपति हरषाना । १-१६३१६
 सुनि सुबचन हरषे दोउ माता । २-२५११४

सुनि सुम कथा उमा हरषानी । ४-५११८
 सुनि सुम कथा लोग अनुरागे । १-२१५१४
 सुनि सुमंत्रु सिय सीताति बानी । २-१८१३
 सुनि सुरगुर सुर संमत सौच । २-२६५१५
 सुनि सुर बचन लखन सकुवाने । २-२३०१५
 सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी । २-२१११३
 सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती । २-१११११
 सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ । २-२६५१०
 सुनि सुरसरि सम पावनि बानी । २-२८२१८
 सुनि सुरभु बृद्धाहिं अकुलाई । २-१२०१७
 सुनि सेवक दुख दीनदयाला । ४-५१११४
 सुनि संदेसु नानुकुलभूषन । ६-१०७१३
 सुनि संदेसु सकल हरषानी । १-२१४१२
 सुनि संपाति बंधु कै करनी । ४-२६११५
 सुनि हरषाहिं बरषाहिं बिबुध । १-३२४१०
 सुनि हर्षी सब सखी सयानी । १-२२८१३
 सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । ३-६०१५
 सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु । ४-३०११४
 सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल । २-२८११०
 सुनी चहहिं प्रभु मुख कै बानी । ३-३५१३
 सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । २-१०३१८
 सुनी सकल लोगन्ह यह वाता । १-३१११८
 सुनु कपि जिय मानसि जनि उना । ४-२३१७
 सुनु कपि तोहि समान उपकारी । ५-३१११५
 सुनु कपीस अंगद लंकेसा । ४-३१२
 सुनु कपीस लंकापति वीरा । ५-४१११५
 सुनु खगपति अस समुद्धि प्रसंगा । ३-१०५११३
 सुनु खगपति यह कथा पावनी । ३-१४१११
 सुनु खगेस कलि कपट । ३-१०११३

सुनु खगेस तेहि अवसर । ७-११७
 सुनु खगेस नहि कछु रिषि दूषन । ७-११२।१
 सुनु खगेस प्रभु के यह बानी । ६-११३।३
 सुनु खगेस रघुपति प्रनुताई । ७-७३।१
 सुनु खगेस हरि भगति बिहाई । ७-११४।३
 सुनु गिरिजा क्रोधानल जासु । ६-५४।१
 सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए । १-१२०।१
 सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम । १-११५।०
 सुनु गंधर्व कहुँ मैं तोही । ३-३२।८
 सुनु जननी सोइ सुनु बड़भागी । २-४०।७
 सुनु जानकी तोहि बिनु आजू । ३-२१।१५
 सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना । ६-७।२
 सुनु दसकंठ कहुँ पन रोषी । ५-२३।७
 सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । ५-८।७
 सुनु नृपु जासु विमुख पछिताहीं । २-३।७
 सुनु नृप विविध जतन जग माहीं । १-१६।११
 सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुगीवा । ४-६।२८
 सुनु प्रभु बहुत अवय्या किएँ । ७-११०।१५
 सुनु ब्यालारि काल कलि । ७-१०२।४
 सुनु बायस तैं सहज सयाना । ७-८४।२
 सुनु विहंग प्रसाद अब मोरें । ७-८४।६
 सुनु मतिमंद देखि अब पूरा । ६-२८।१
 सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । ६-२५।८
 सुनु मम बचन सत्य अब भाई । ७-१०८।१५
 सुनु महीस असि नीति जहैं । १-१६।३।०
 सुनु माता साखामृग नहिं । ५-१६।०
 सुनु मातु मै पायो अखिल । ६-१०६।१५
 सुनु मुनि आजु समागम तोरें । १-१०४।२
 सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । १-१५२।१

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता । ३-७३।१
 सुनु मुनि तोहि कहुँ सहरोसा । ३-४२।७
 सुनु मुनि मोह होइ मन ताकें । १-१२८।१
 सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहुँई । ३-४४।६
 सुनु मुनीस बर दरसन तोरें । १-३४।२।३
 सुनु मथरा बात फुरि तोरी । २-११।५
 सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही । २-१०२।५
 सुनु रावन परिहरि धतुराई । ६-२६।१
 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । ५-२०।४
 सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । ५-४८।१
 सुनु सठ भेट होइ मन ताकें । ६-२०।१०
 सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । ६-२४।१
 सुनु सतिभाउ कहुँ महिपाला । १-१६०।८
 सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिधो । ७-१७।१
 सुनु सरबग्य चराचर नायक । ६-१०१।४
 सुनु सर्वग्य प्रनत सुखकारी । ६-३७।८
 सुनु सर्वग्य सकल उर बारी । ६-१६।३
 सुनु सिय सत्य असीस हमारी । १-२३।५।७
 सुनु सिवा सो सुख बचन मन । ७-४।१४
 सुनु सीता तब नाम सुभिरि । ३-५।४
 सुनु सुग्रीव विमोघन । ६-६७।०
 सुनु सुग्रीव मारिहउ । ४-६।०
 सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । ५-१६।८
 सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । ५-३१।७
 सुनु सुत मयउ कालबस रावन । ६-६३।७
 सुनु सुत सदगुन सकल तब । ६-१०४।०
 सुनु सुरेंस उपदेसु हमारा । २-२९।१
 सुनु सुभ कथा भवानि । १-१२०।४
 सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । ६-११३।१

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ । २-२१७१४
 सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु । १-१४५१९
 सुनु हनुमंत संग तै तारा । ४-९९१३
 सुनु हरिजान ग्यान निधि । ४-९७१०
 सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा । ४-११४१७
 सफल सकल सुम साधन साजू । २-१०६१६
 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । १-२३६१४
 सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई । २-३५३
 सुबस बसउ फिरि सहित समाजा । २-२७२१७
 सुम अरु असुम करम अनुहारी । २-४६१७
 सुम अरु असुम सलिल सब बहई । १-६८१७
 सुम आचरन कतहुँ नहिँ होई । १-१८२१७
 सुमग द्वार सब कुलिस कपाटा । १-२९३१९
 सुमग सकल सुटि बंचल करनी । १-२९७१५
 सुमग सुआसिनि गावहिँ गीता । १-३५२१४
 सुमग सुरभि पय फेन समाना । १-३५५१२
 सुमग सोन सरसीरुह लोचन । १-२९८१६
 सुमट बोलाइ दसानन बोला । ६-७७१४
 सुमट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । ६-३९१५
 सुमट समर रस दुहुँ दिसि माते । ६-८०३
 सुमति कुमति सब कै उर रहहीं । १-३९१५
 सुमति छुधा बाढ़इ नित नई । ७-१२१११०
 सुमति मूमि थल हृदय अगाधू । १-३५३
 सुमन चाप निज सर संधाने । १-८६१२
 सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । १-२३६१३
 सुमन बरषि सब सुर चले । ६-११४१३
 सुमन बरषि सुर धन करि छाहीं । २-३१०१७
 सुमन बरिसि सुर हनहिँ निसाना । १-३०८१४
 सुमन बाटिका बाग बन । १-२१२१०

सुमन बाटिका सबहिँ लगई । ७-२७१५
 सुमनबृष्टि अकास तैं होई । १-१९३१२
 सुमन बृष्टि नम बाजन बाजे । १-१०१८
 सुमन बृष्टि नम संकुल । ७-८१४
 सुमन माल जिमि कंठ ते । ४-१०१०
 सुमन समेत बाम कर दोना । १-२३२१८
 सुमिरत अनुज प्रीति प्रमु । ६-११६१४
 सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना । १-५२१४
 सुमिरत जाहि मिटइ श्रम मारु । २-८६१८
 सुमिरत प्रमु लीला सोइ । ७-४५१४
 सुमिरत मरतहि प्रेम राम को । २-३०३१३
 सुमिरत रामहि तजहिँ जन । २-१४०१०
 सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । १-१९१२
 सुमिरत हरिहि आप गति बाघी । १-१२४१४
 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा । ६-७५११५
 सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना । १-३३८१८
 सुमिरि पवनसुत पावन नामू । १-२५६
 सुमिरि भवानी संकरहि । १-४३१३
 सुमिरि महेशहि कहइ निहोरी । २-४३१७
 सुमिरि मातु पितु परिजन नाई । २-१४०१४
 सुमिरि राम के गुन मन गाना । ७-१२३१९
 सुमिरि रामु गुर आयसु पाई । १-२०१३
 सुमिरि राम पद पंकज पनहीं । २-१९०१४
 सुमिरि राम मागेउ तुरत । २-१९०१०
 सुमिरि राम रघुबंस मनि । ७-११२१३
 सुमिरि राम सिय चरन तब । २-१८७१०
 सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ । १-१४८
 सुमिरि सीय नारद बचन । १-२२९१०
 सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा । १-२७१२

सुमिरि संभु गिरिजा मनराजा । १-३४६।८
 सुमिरि संभु गुर विप्र पद । १-३५७।०
 सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें । १-२०६
 सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें । १-२६०।११
 सुर असिक सब कपि अरु रीछा । ६-११३।८
 सुर काज धरि नरराज तनु चले । २-१२५।१२
 सुर किंनर नर नाग मुनीसा । १-२६४।२
 सुर मन सहित समय सुरराजू । २-२६४।११
 सुर डरत चौदह सहस्र प्रेत । ३-११।२७
 सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं । १-३४६।२
 सुरतरु सरिस सुमार्यो सुहार । २-१३६।७
 सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं । ७-१४।४
 सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं । ६-७०।१९
 सुर नर असुर नाग खग माहीं । ३-२२।१
 सुर नर असुर नाग मुनि माहीं । १-२११।६
 सुर नर नारि सुमंगल गाई । १-३०१।६
 सुर नर मुनि कोठ नाहिं । १-१४०।०
 सुर नर मुनि सधराचर साई । ३-१३।६
 सुर नर मुनि सब कै यह रीती । ७-११।२
 सुरपति निज स्थ तुरत पठावा । ६-८८।२
 सुरपति बसइ बाहँबल जाकें । २-२४।२
 सुरपति सुत जानइ बल थोरा । ६-३५।१२
 सुरपति सुत धरि बायस बेफा । ३-०।५
 सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं । १-३२२।१०
 सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ीं । १-२८७।६
 सुर प्रनामु करि बरिसहिं फूला । १-३२२।५
 सुर प्रसून बरषहिं हरषि । १-३३१।०
 सुरपुर नृपु पाइहिं परितोषू । २-१७४।२
 सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नावा । ६-८०।१

सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब । १-३४४।०
 सुर बानर देखे विकल । ६-१६।०
 सुर बूंद रंजन हूंद मंजन । ६-११२।१९
 सुर महिसुर हरिजन अरु गाई । १-२७२।६
 सुरमाया बस बैरिनिहिं । २-१६।०
 सुरमार्यो सब लोग बिमोहे । २-३०।४
 सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्बां । १-१८३।९
 सुर मुनि नाग नगर नर नारी । १-२६९।६
 सुर मुनि समय प्रभु देखि । ३-११।२८
 सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर । ७-७१।८
 सुर रंजन मंजन महि भारा । ३-२२।३
 सुर रंजन सज्जन सुर्यद । १-१३१।०
 सुर लखे राम सुजान पूजे । १-३२०।११
 सुर समय जानि कृपाल रघुपति । ६-१०१।१४
 सुर समाज सब भौति अनूपा । १-११।८
 सुर समूह बिनती करि । १-१११।०
 सुरसर सुमग बनज बन चारी । २-५९।५
 सुरसरि जल कृत बारुनि जाना । १-६९।१
 सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि । २-३१।६
 सुरसरि नाधि जान तब आयो । ६-१२०।७
 सुरसरि मिलें सो पावन जैसें । १-६९।२
 सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या । २-१३७।४
 सुर स्वास्थ्यी मलीन मन । २-२१५।०
 सुर स्वास्थ्यी सराहि कुल । २-३०८।०
 सुर साधु चाहत माउ सिधु कि । १-३२५।१२
 सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि । २-२७५।११
 सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल । ६-१०२।१४
 सुर सुगंध सुधि बरषहिं बारी । १-३४६।६
 सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध । १-३२६।१४

सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी । ७-१२०।२५
 सुर सुरभी सुरतरु सबही कें । ३-२१४।६
 सुर सुंदरी करहिं कल गाना । १-६०।४
 सुर सेनप उर बहुत उछाहू । १-३१६।५
 सुर सेवा करि आरसु पाई । २-११७।२
 सुरन्ह कही निज बिपति सब । १-८३।०
 सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । २-२१४।१
 सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना । १-३१३।१५
 सुरभि फूल फल अनिज समाना । २-२१४।४
 सुरसा नाम अहिन्ह कै माता । ५-१।२
 सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु । २-३११।०
 सुलभ सुखद मारग यह भाई । ७-४४।२
 सुहृद सुजान सुसाहिबहि । २-३००।०
 सुंदर उपवन देखन गए । ७-३१।२
 सुंदर केकिहि पेरु । १-१६।१०
 सुंदर खग गन गिरा सुहृदि । ३-३१।४
 सुंदर गौर सुबिप्रबर । १-७२।०
 सुंदर बधुन्ह सासु तै सोई । १-३५७।४
 सुंदर बन कुसुमित अति सोभा । ४-१२।१
 सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा । ७-५५।६
 सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । १-३२६।१
 सुंदर मनोहर मंदिरायत । ७-२६।११
 सुंदर सकल अलंकृत सोहे । १-२१।८।६
 सुंदर सदनु सुखद सब काला । १-२१६।७
 सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता । १-२१६।२
 सुंदर स्यामल गौर तन । १-२४३।०
 सुंदर श्रवन सुचारु कपोला । १-११।८।१
 सुंदर सहज अगम अनुमानी । १-१७८।६
 सुंदर सहज सुसील सयानी । १-६६।२

सुंदर सिता सुखद तरु छाहीं । २-२४८।८
 सुंदर सुखद मोहि अति नावा । ७-११२।८
 सुंदर सुखद सकल गुन रासी । १-२४५।४
 सुंदर सुजान कृपा निधान । ७-१२१।१७
 सुंदरता कहुँ सुंदर कइई । १-२२१।७
 सुंदरसा मरजाद भवानी । १-११।८
 सुंदरि सुनु मै उन्ह कर दासा । ३-१६।१३
 सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब । १-३२४।२५
 सूख हाड़ तै भाग सठ । १-१२५।०
 सूखहिं अघर जरइ सबु अंगु । २-३१।१
 सूखहिं अघर लागि मुई लाटी । २-१४४।४
 सूझ न एकउ अंग उपाऊ । १-७।६
 सूझहिं राम चरित मनि मानिक । १-०।८
 सूत बचन सुनतहिं नरनाहू । २-१५२।५
 सूद्र करहिं जप तप द्रत नाना । ७-११।१
 सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं म्याना । ७-१।२
 सून बीत्र टसकंधर देखा । ३-२७।७
 सूपनखा आर्ग करि तीनी । ३-१७।६
 सूपनखा कै गति तुन्ह देखी । ६-३५।१३
 सूपनखा रावन कै बहिनी । ३-१६।३
 सूपनखहि समुझाइ करि । ३-२२।०
 सूपोदन सुरभी सरपि । १-३२८।०
 सूर कवन रावन सरिस । ६-२८।०
 सूर प्रतापी अतुलबल । १-१७८।०
 सूर सचिव सेनप बहुतेरे । १-२१३।३
 सूर समर करनी करहिं । १-२७४।०
 सूल कुलिस असि अँगबनिहारे । २-२४।४
 सूंगबेरपुर भरत दीख जब । २-११६।१
 सूंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा । १-१८८।५

सेज रुचिर रचि रामु उठाए ।१-३१५।५
 सेतुबंध टिंग चट्टि रघुनाई ।६-३।३
 सेतुबंध मइ भीर अति ।६-४।०
 सेतु बंधि कपि सेन जिमि ।७-६७।६
 सेन बिलोकि राउ हरषाना ।१-१५३।४
 सेन बिलोकि सहज अग्निमानी ।१-१८०।४
 सेन मनहुँ करुना सरित ।२-२७५।०
 सेन सकल तीरथ बर बीरा ।२-१०४।६
 सेन समेति जथा रघुबीरा ।७-६६।७
 सेन सहित जतरे रघुबीरा ।६-४।२
 सेन सहित तव मान मयि ।६-२६।०
 सेन संग चतुरंग अपारा ।१-१५३।३
 सेनापति कामादि भट ।७-७१।०
 सेवक कर पद नयन से ।२-३०६।०
 सेवक बचन सत्य सब जाने ।२-२३४।१
 सेवक मन मानस मराल से ।१-३१।१४
 सेवकु राउ करम मन बानी ।२-२८४।४
 सेवक सकल बजनिआ नाना ।१-३५०।८
 सेवक सचिव भरत रन्ध पाई ।२-३१७।५
 सेवक सचिव सकल पुरबासी ।२-२।२
 सेवक सठ नृप कृपन कुनारी ।४-६।९
 सेवक सदन स्वामि आगमनु ।२-८।५
 सेवक स्वामि सखा सिध पी के ।१-१४।४
 सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन ।२-३०८।४
 सेवक सुख ग्रह मान भिखारी ।३-१६।१५
 सेवक सुखट सुमग सब अंगा ।१-२८४।४
 सेवक सुत पति मातु भरोसें ।४-२।४
 सेवक सुमिरत नामु सप्रीती ।१-२४।७
 सेवक सुहृद सचिवसुत साथी ।२-२२०।७

सेवक सेनाप सचिव सब ।२-२४२।०
 सेवक सेव्य भाव बिनु ।७-११९।६
 सेवक हम स्वामी सिधनाहू ।२-२३।६
 सेवक हित साहिव सेवकाई ।२-२६७।४
 सेवकु सो जो करै सेवकाई ।१-२७०।३
 सेवत तोहि सुलभ फल चारी ।१-२३५।१
 सेवत बिषय बिबध जिमि ।६-९२।०
 सेवत सुलभ सकल सुख दायक ।१-१४५।२
 सेवहिं अरैदु कलपतरु त्यागी ।२-४१।३
 सेवहिं लखनु करम मन बानी ।२-१३८।८
 सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि ।२-१४१।२
 सेवहिं सकल चराचर ताही ।१-१३०।४
 सेवहिं सकल सबति मोहि नीके ।२-१७।३
 सेवहिं सानकूल सब भाई ।७-२४।१
 सेवहिं सुकृती साधु सुचि ।२-१०५।०
 सेवा समय दैजें बनु दीन्हा ।२-६८।४
 सेष कमठ सहि सकहिं न भारा ।६-१०३।६
 सेष सहस्रसीस जग कारन ।१-१६।७
 सेस सारदा बेट पुराना ।१-१०७।६
 सेल बिसाल आनि कपि देहीं ।६-१।१
 सेल बिसाल देखि एक आगे ।१-२।८
 सेलराज बड़ आदर कीन्हा ।१-६५।६
 सेल सकल जहँ लगी जग माहीं ।१-१३।३
 सेल सुलच्छन सुता तुम्हारी ।१-६६।७
 सेल हिमाचल आदिक जेतें ।२-१३७।७
 सेलु सुहावन कानन चारु ।२-१३१।४
 सेलोपरि सर सुंदर सोहा ।७-५५।१०
 सो अज प्रेम भगति बस ।१-१९८।०
 सो अनन्य जाकेँ असि ।४-३।०

सो अनुराग कहीं अब भाई । ६-६०।५
 सो अब भिरत काल ज्यों । ६-९४।०
 सो अबहीं बरु जाउ पराई । ६-७७।५
 सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः । २-२७०।३
 सो अबतार सुनेउ जग माहीं । ७-५७।८
 सो अवलंब देव मोहि देई । २-३०६।८
 सो अवसर बिरंचि जब जाना । १-९९०।५
 सो आदरिअ करिअ हित मानी । २-१७७।२
 सो उठि गयउ कहत दुबांदा । ६-४८।५
 सो उमैस मोहि पर अनुकूला । १-१४।७
 सो एक राम अकाम हित । ७-१२३।५८
 सो कछु देव न मोहि निहोरा । ३-७।५
 सो कपि मालु न रन महीं देखा । ६-४९।८
 सो करउ अघारी चित हमारी । १-१८५।१०
 सो करि कहउँ हिए अपने की । २-३००।२
 सो कतिकाल कठिन उरगारी । ७-९६।८
 सो कि देह धरि होइ नर । १-५०।०
 सो कि बंध तर आवइ । ६-७३।०
 सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें । १-२२२।६
 सो कुचालि सब कहैं भइ नीकी । २-३१६।१
 सो कुल धन्य उगा सुनु । ७-१२७।०
 सो कृत निंदक मंदमति । ७-४४।०
 सो कृपाल मोहि तो पर । ७-१२४।४
 सो केवल भगतन हित लागी । १-१२।५
 सो गोसाईं नहीं दूसर कोपी । २-२९८।७
 सो गोसाईं बिधि गति जेहि छेकी । २-२५४।८
 सो चरित्र लखि काहुँ न पावा । १-१३२।८
 सो छबि सीता राखि उर । ३-२९।४
 सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा । १-२७।३

सो जल सुकृत सालि हित होई । १-३५।७
 सो जानब सतसंग प्रमाऊ । १-२।६
 सो जेवनार कि जाइ बखानी । १-२८।५
 सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि । १-३२४।२०
 सो तनु धरि हरि भजहि न जे नर । ७-१२०।११
 सो तनु राखि करब मै काहा । २-१५४।६
 सो तुम्ह करहु करावहु मोहू । २-३०५।३
 सो तुम्ह जानहु अंतरजामी । १-१४८।७
 सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना । २-२७७।१
 सो तैं ताहि तोहि नहि भेदा । ७-११०।६
 सो दई रिपुसूदनहि भूपति । १-३२४।२२
 सो दयाल नहिं कहेउ कछु । ७-१०६।४
 सो दससीस स्वान की नाई । ३-२७।९
 सो दसा देखत समय तेहि । २-१७५।११
 सो दासी रघुबीर कै । ७-७१।४
 सो दुख अरु जुबती बिरह । ६-३१।४
 सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । ७-१२६।७
 सो धनु राजकुअँर कर देहीं । १-२५५।४
 सो न सकहिं कहि कल्प सत । १-३१८।०
 सो न होइ बिनु विमल मति । १-१४।४
 सो नयन गौचर जासु गुन । ७-९।६
 सो नर इंद्रजाल नहिं मूला । ३-३८।४
 सो नर क्यों दसकंध बलि । ६-३३।४
 सो प्रगट करुना कंद सोमा । ३-३१।३
 सो पछिताइ अघाइ उर । २-६३।०
 सो परनारि लितार गोसाईं । १-३७।६
 सो परत्र दुख पावइ । ७-४३।०
 सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा । ७-२४।७
 सो फलु तुरत लहब सब काहूँ । १-६३।२

सो फलु मोहि बिघाती दीनह । १-५८३
 सो बड़ सो सब गुन गन गेह । २-१००३
 सो बन बरनि न सक अहिराजा । ३-१३४
 सो बनु सैलु सुमार्ये सुहावन । २-१३८३
 सो बिचारि सहि संकटु मारी । २-३०५५
 सो बिचारि सुनिहहि सुमति । १-११०
 सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । १-२००५
 सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति । ६-८२१
 सो मनु मनुज खाव हम भाई । ६-८६
 सो भावो बस रानि अयानी । २-२०६६
 सो मुज कंठ कि तव असि घोरा । ५-९४
 सो मुजबत राखेहु उर घाली । ६-२८६
 सो मति मोरि भरत महिमाही । २-२८७५
 सो मति मोहि कहत करु मोरी । २-२९४६
 सो मनि जटपि प्रगट जग अहई । ७-११९१११
 सो मनु सदा रहत तोहि पाही । ५-१४७
 सो मम लोचन गोचर आगे । ३-३०७
 सो मम हित लागी जन अनुरागी । १-११११८
 सो महिमा समुझत प्रभु केशी । ७-२१३
 सो माया न दुखद मोहि काहीं । ७-७७२
 सो मायाबस भयउ गोसाई । ७-११६३
 सो माया रघुबीरहि बाँधी । ६-८८७
 सो मैं कहीं कवन बिधि बरनी । १-३५४६
 सो मैं कुमति कहीं केहि माँती । २-२४०६
 सो मैं तुन्ह सम कहउँ सबु । १-१४११०
 सो मैं बरनि कहीं बिधि केहीं । २-१३८७
 सो मैं सब बिधि कीन्हि दिठाई । २-२९७८
 सो मैं सुनब सहब सुखु मानी । २-१८१४
 सो मो सन कहि जात न कैसे । १-२१२

सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई । ७-१२५८
 सो राम बाम बिभाग राजति । ६-१०८१५
 सो राम रमा निवास संतत । ३-३११७
 सो सकोच रसु अकथ सुबानी । २-३१७३
 सो सतु कोटिक पुरुष समेता । २-१८३७
 सो सब अटमुत देखेउँ । ७-८०१
 सो सब कहिहि देव रघुबीरा । ३-३५१२
 सो सबु कारन जान बिघाता । १-२३०४
 सो सब तव प्रताप रघुसाई । ५-३२१
 सो सब प्रिया सहज बस मोरें । ६-१५५
 सो सबु मोर पाप परिनाम । २-३५३
 सो सब सादर कहिहउँ । ७-५१०
 सो सब हेतु कहब मैं गाई । १-३२२
 सो सिख देइअ अवधि लरि । २-३१३०
 सो सिर धरि धरि करिहि सबु । २-२६९०
 सो सिर परेउ टसानन आगे । ६-७०५
 सो सीता कर खोज कराइहि । ७-३४
 सो सीतापति भजन को । २-२४३०
 सो सुख जानइ मन अरु काना । ७-८७३
 सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ । २-२९०१
 सो सुख धाम राम अस नामा । १-११६६
 सो सुखु सुजसु सुलम मोहि स्वामी । १-३४२५
 सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । ७-८६५
 सो सुत बिछुरत गए न प्राना । २-१४८६
 सो सुतंत्र अवलंब न आना । ३-१५३
 सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं । १-६३
 सो सुनि तिय रिच गयउ सुखाई । २-२४३
 सो सुनि भयउ भूप उर सोचू । २-३१८
 सो सुनि रामहि भा अति सोचू । २-२६३

सो संबाट उदार जेहि बिधि । १-१२०७
 सो हरिभगति काग किमि पाई । ७-५३८
 सोइ अतिसय प्रिय मामिनि मोरें । ३-३५७
 सोइ उपदेस कहहु करि दाय। ७-११०।१०
 सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब । २-८०।०
 सोइ कबि कोबिद सोइ रनधीरा । ७-१२६।४
 सोइ करतूति विभीषन केरी । १-२८।७
 सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । २-१००।४
 सोइ कौसलाधीस रघुराया । ६-६।७
 सोइ गुन सागर ईस । ६-१७।७
 सोइ गुनग्य सोई बड़गागी । ४-२२।७
 सोइ छल हनुमान कहैं कीन्हा । ५-२।४
 सोइ जल अनल अनिल संघाता । १-६।१२
 सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं । १-१२।११
 सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । २-१२६।३
 सोइ दसरथ सुत भगत हित । १-११८।०
 सोइ निज भगति मोहि प्रमु । ७-८४।४
 सोइ प्रमु भू बिलास खगराजा । ७-७।२
 सोइ प्रमु मोर चराचर स्वामी । १-११८।२
 सोइ पावन सोइ सुमग सरीरा । ७-१५।२
 सोइ पुरारि कोदंडु कटोरा । १-२७।१।३
 सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि । १-३०।८
 सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई । ६-२३।७
 सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू । १-७०।६
 सोइ बिजई बिनई गुन सागर । ५-२१।३
 सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रमु । १-१५०।०
 सोइ भ्रम अब हित करि मै माना । ७-६८।२
 सोइ भरोस मोरें मन आवा । १-१८।८
 सोइ भव तर कछु संसय नाही । ७-१०२।७

सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा । १-५०।८
 सोइ मय दानवै बहुरि सैवारा । १-१७७।६
 सोइ मयै दीन्हि रावनहि आनी । १-१७७।३
 सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाई । ७-११४।१०
 सोइ रघुबर सोइ लछिमनु सीता । १-५४।५
 सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी । ६-६।५
 सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन । १-५०।११
 सोइ रावन कहूँ बनी सहाई । ५-३७।१
 सोइ रावन जग बिदित प्रतापी । ६-२४।८
 सोइ तरिकाई मो सन । ७-८२।४
 सोइ सच्चिदानंद घन । ७-२५।०
 सोइ सच्चिदानंद घन रामा । ७-७१।३
 सोइ सब भाँति मोर हितकारी । २-१११।२
 सोइ सब भाँति मोर हितकारी । २-७१।८
 सोइ सयान जो परधन हारी । ७-१७।५
 सोइ सर्वग्य गुनी सोइ ग्याता । ७-१२६।१
 सोइ सर्वग्य तग्य सोइ पंडित । ७-४८।७
 सोइ सादर सर मज्जनु करई । १-३८।६
 सोइ सिय चलन चहति बन साथी । २-५८।७
 सोइ सिव कागमुसुडिहि दीन्हा । १-२१।४
 सोइ सिसुपन सोइ सोभा । ७-८१।४
 सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति । १-१५०।०
 सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ । ४-११।४
 सोइ सूरता कि अब कहूँ पाई । १-२६५।८
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । ७-४२।५
 सोइ सोइ भाव देखावइ । ७-४२।४
 सोइ संपदा विभीषनहि । ५-४१।४
 सोइ हम करब न आन कछु । १-१३२।०
 सोइ हरिमाया सब गुन खानी । १-१२१।५

सोई पद पंकज जेहि पूजत अज । १-२१०।१४
 सोई सुख तबलेस जिन्ह । ७-८।४
 सोउ जाने कर फल यह लीला । ७-२१।५
 सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें । ६-२८।३
 सोउ महिमा खगैस जिन्ह जानी । ७-२१।४
 सोउ मुनि ग्यान निधान । ७-११।५
 सोक कनकलोचन मति छोनी । २-२१६।३
 सोक नेवारेउ सबहिं कर । २-१५६।०
 सोक बिकल अति सकल समाजू । २-२४६।६
 सोक बिकल दोउ राज समाजा । २-२७५।७
 सोक बिकल पुनि पूछ नरेसु । २-१४८।५
 सोक बिकल सब सेवहिं सानी । २-१५५।३
 सोक बिबस कछु कहै न पारा । २-४३।५
 सोक मगन सब सर्माँ रखमारु । २-२६२।२
 सोक मोह संदेह अम । १-११२।०
 सोक सनेहैं कि बाल सुमारै । २-२११।१
 सोक समाजु राजु केहि लेखें । २-१७७।३
 सोक सिथिल रथ सकइ न हौंकी । २-१४२।४
 सोक सिंधु बूडत सबहिं । २-१८४।०
 सोव उसास समीर तरंगा । २-२७५।२
 सोचनीय नहिं कोसलराऊ । २-१७२।५
 सोचनीय सबहीं बिधि सोई । २-१७२।४
 सोच बिकल बिबरन महि परेऊ । २-३७।७
 सोच बिकल मग परइ न पाऊ । २-३८।३
 सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना । २-१४३।३
 सोघु हृदयें बिधि का होनिहार । २-६१।४
 सोघाहिं दूषन देवहिं दैहीं । १-१७४।२
 सोघाहिं सकल कहत सकुवाहीं । १-२४८।२
 सोघाहिं सब निज हृदय मझारी । ६-१३।२

सोचिअ गृही जो मोह बस । २-१७२।०
 सोचिअ जती प्रपंच रत । २-१७२।०
 सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । २-१७१।४
 सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी । २-१७२।२
 सोचिअ पुनि पति बंचक नारी । २-१७१।७
 सोचिअ बटु निज बटु परिहरई । २-१७१।८
 सोचिअ बयसु कृपन धनवानू । २-१७१।५
 सोचिअ बिप्र जो बेट बिहीना । २-१७१।३
 सोचिअ सूदु बिप्र अवमानी । २-१७१।६
 सोधि सुमृति सब बेट पुराना । २-१६१।६
 सोनित स्त्रवत सोह तन कारे । ६-६८।७
 सोपान सुंदर नीर निर्मल । ७-२८।१०
 सोपि राम महिमा मुनिराया । १-४५।५
 सोमत भयउ मराल इव । ६-२२।०
 सोमत तखि बिधु बडत जनु । २-७।०
 सोभा दसस्थ भवन कइ । १-२१७।०
 सोभा देखि हरषि मन । ६-११२।०
 सोभा देखि हरषि सुर । ६-८६।०
 सोभा घाम राम अस नामा । ३-२१।८
 सोभा मंगल मोद भरि । १-३२७।०
 सोभा रजु मंदरु सिंगारु । १-२४६।८
 सोभासिंधु बिलोकत । ६-१११।०
 सोभासिंधु हृदयें धरि । ७-५१।०
 सोभा सीवें सुमग दोउ बीरा । १-२३२।१
 सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ । ५-१।८
 सोवत प्रमुहि निहारि निषादू । २-८१।५
 सोवहिं सिंधु सहित झष ब्याला । १-१४।६
 सोह न राम घेम बिनु ग्यानु । २-२७६।५
 सोह नवल तनु सुंदर सारी । १-२४७।२

सोह मदनु मुनि बैष जनु ।२-१३३।०	संकर रुख अवलोकि भवानी ।१-५७।३
सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा ।७-११७।१	संकर सहज सरुमु सम्हारा ।१-५७।८
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ ।१-६५।३	संकर सहस बिभु अज तोही ।१-२२।८
सोहत जनु जुग जलज सनाला ।१-२६३।७	संकुल मकर उरग झम जाती ।५-४९।६
सोहत दिएँ निषादहि लागू ।२-११६।२	संकुल लता बिटप घन कानन ।३-३२।५
सोहत ब्याह साज सब साजे ।१-३२६।६	संख निसान पनव बहु बाजे ।१-३१२।३
सोहत मौरु मनोहर माथे ।१-३२६।१०	संग तेँ जती कुमंत्र तेँ राजा ।३-२०।१०
सोहत साथ सुभग सुत चारी ।१-३१७।६	संग मालु भूधर तरु धारी ।६-१७।१३
सोहति बनिता बूंद महुँ ।१-३२२।०	संग लाइ करिनीं करि लेहीं ।३-३६।७
सोहति सीय राम के जोरी ।१-२६४।७	संग सरखीं सब सुभग सयानीं ।१-२२७।३
सोहहिं नम छल बल बहु करहीं ।६-१४।७	संग सरखीं सुंदर चतुर ।१-२६३।०
सौपि नगर सुधि सेवकनि ।२-१८७।०	संग सचिव सुधि भूरि भट ।१-२१४।०
सौपि सचिव गुर भरतहि राजू ।२-३२१।७	संग सती जगजननि भवानी ।१-४७।२
सौपे भूप सिधिहि सुत ।१-२०८।३	संग गौतनुधारी भूमि बिचारी ।१-१८३।१०
सौपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी ।६-६०।१५	संग भूत प्रेत पिशाच जोगिनि ।१-१४।१०
सौपेहु राजु राम के जाएँ ।२-१७४।८	संगमु सिंहासन सुठि सोहा ।२-१०४।७
सौभागिनी बिभूषन होना ।७-१८।५	संग्राम अंगन राम अंग ।६-१०२।१५
सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।६-७९।५	संग्राम अंगन सुभट सोबहि ।६-८७।१४
सौरम पल्लव मदनु बिलोका ।१-८६।५	संग्राम पुर बासी मनहुँ ।३-१९।१९
सौरम पल्लव सुभग सुठि ।१-२८।०	संग्राम भूमि बिराज रघुपति ।६-७०।१३
संकट सहत सकोच बसा ।२-२९२।०	संत असंत भेट बिलगाई ।७-३६।५
संकर उर अति छोमु ।१-४८।४	संत असंत मरम तुम्ह जानहु ।७-२०।५
संकर चापु जहाजु ।१-२६१।०	संत असंतन्ह के गुन मापे ।७-४०।८
संकरु जयतबद्य जगदीसा ।१-४९।६	संत असंतन्हि के असि करनी ।७-३६।७
संकर दीनदयाल अन्न ।७-१०८।७	संत उदय संतल सुखकारी ।७-१०।३१
संकरप्रिय मम द्रोही ।६-२।०	संत कहहि असि नीति दसानन ।६-६।३
संकर बिमुख भगति चह मीरी ।६-१।८	संत कहहि असि नीति प्रमु ।१-४५।०
संकर भजन बिना नर ।७-४५।०	संत चरन पंकज अति प्रेमा ।३-१५।९
संकरु राम रूप अनुरागे ।१-३१६।२	संत बिटप सरिता गिरि धरनी ।७-२२।६

संत विसुद्ध मिलहिं परि तेही । ७-६८।
 संतसमा अनुपम अवध । ९-३१।
 संतसमा चहुँ तिसि अवीरई । ९-३६।
 संत समाज पयोधि रमा सी । ९-३०।
 संत सरल चित जगत हित । ९-३।
 संत सहहिं दुख परहित लागी । ७-९२०।
 संत संग अपवर्ग कर । ७-३३।
 संत सुधा ससि धेनु । ९-५४।
 संत संमु श्रीपति अपबादा । ९-६३।
 संत हृदय जस निर्मल बारी । ३-३८।
 संत हृदय नवनीत समाना । ७-९२४।
 संत हंस गुन गहहिं पर । ९-६।
 संतत जपत संमु अबिनासी । ९-४५।
 संतत दासन्ह देहु बड़ाई । ३-९२।
 संतत मो पर कृपा करेह । ३-५३।
 संतन्ह के लखन रघुबीरा । ३-४४।
 संतन्ह के लखन सुनु माता । ७-३६।
 संतन्ह के महिमा रघुसाई । ७-३६।
 संतन्ह सन जस किछु सुनेउ । ७-९२।
 संध्या भइ फिरी द्वौ बाहनी । ६-५४।
 संध्या समय जानि दससीसा । ६-९।
 संधानि धनु रघुबंसमनि हैंसि । ६-९२।
 संधानि धनु सर निकर छाड़ैसि । ६-८९।
 संधानेउ प्रमु विसिख करात्सा । ५-५७।
 संपति बकई भरतु चक । ३-२९५।
 संपति सब रघुपति के आही । ३-९८५।
 संपुट भरत सनेह रतन के । ३-३९५।
 संबत मध्य नास तग होऊ । ९-१७३।
 संबत सप्त सहस्र पुनि । ९-१४४।

संबत सहस्र मूल फल खाए । ९-४३।
 संबत सोरह से एकतीसा । ९-३३।
 संबध राजन रावरे हम । ९-३२५।
 संबुध भेक सेवार समाना । ९-३७।
 संभारि उठि दसकठ धोर । ६-९६।
 संभारि श्री रघुबीर धोर । ६-९४।
 संभावित कहुँ अपजस लाहू । २-९४।
 संमु कीन्ह यह चरित सुहावा । ९-२९।
 संमु कीन्ह संग्राम अपारा । ९-२२।
 संमुगिरा पुनि मृषा न होई । ९-५०।
 संमु चरित सुनि सरस सुहावा । ९-१०३।
 संमुचाप बड़ बोहितु पाई । ९-२९९।
 संमु दीन्ह उपदेस हित । ९-९२७।
 संमु प्रसाद सुमति हियें हुलसी । ९-३५।
 संमु बचन मुनि मन नहिं भाए । ९-९२७।
 संमु बिरोध न कुसल मोहि । ९-८३।
 संमु बिरंचि बिष्नु भगवाना । ९-९४३।
 संमु मंत्र मोहि द्विजवर दीन्हा । ७-१०४।
 संमु समय तेहि रामहि देखा । ९-४९।
 संमु सरासनु काहुँ न टारा । ९-२९९।
 संमु सरासनु तोरि सट । ९-२८०।
 संमु सहज समरथ भगवाना । ९-६९।
 संमु सुक संमूत सुत । ९-८२।
 संशय सर्प ग्रसन उरगादः । ३-१०।
 संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । ७-९२।
 संसय सील प्रेम बस अहहू । ३-१८०।
 संसय सोक निबिड़ तम नानुहि । ७-२९।
 संसार मई पूरज त्रिविध । ६-८९।
 संसार सिंधु अपार पार । ६-१०५।

संसारामयमेवजं सुखकरं ॥४॥सो॥२॥३
 संसृत मूल सूत्रप्रद नाना ॥४॥३॥६
 संसृति रोग सजीवन मूरी ॥४॥१२॥२
 सांत बेषु करनी कटिन ॥१॥२६॥१०

ह

हठ बस सब संकट सहे ॥२॥६॥१०
 हठि फेरु रामहि जात बन ॥२॥४॥१०
 हति नाथ अनाथनि पाहि हरे ॥४॥१३॥८
 हतीं न खेत खेलाइ खेलाई ॥६॥३४॥११
 हथवाँसहु वोरहु तरनि ॥२॥१८॥१०
 हनुमत जन्म सुफल करि माना ॥४॥२२॥१२
 हनुमनादि मुरुछित करि बंदर ॥६॥१४॥११
 हनुमदादि सब बानर बीस ॥४॥४॥२
 हनुमंत अंगद नील नल ॥६॥१५॥११
 हनुमंत संकट देखि मर्कट ॥६॥१४॥११
 हनूमान अंगद के मारे ॥६॥११८॥१०
 हनूमान अंगद रन गाजे ॥६॥४६॥६
 हनूमान तेहि परसा ॥५॥१०
 हनूमान भद्रतादिक त्राता ॥४॥४१॥२
 हनूमान सम नहिं बड़भागी ॥४॥४३॥८
 हने निसाम पनव बर बाजे ॥१॥३४३॥११
 हम अब बन तैं बनाहि पटाई ॥२॥२१॥४
 हम कहैं दुर्लभ दरस तुम्हारा ॥१॥११८॥४
 हम काहू के मरहिं न मारे ॥१॥१०६॥४
 हम कुल घालक सत्य तुम्ह ॥६॥२१॥०
 हम छत्री मृगया बन करहीं ॥३॥१८॥११
 हम जड़ जीव जीव गन घाती ॥२॥२५०॥४
 हम जो कहा यह कपि नहिं होई ॥५॥२५॥४
 हम देवता परम अधिकारी ॥६॥१०१॥११

हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई ॥४॥२४॥२
 हम भरि जन्म सुगहु सब भाई ॥३॥१८॥४
 हम सब धन्य सहित परिवास ॥२॥१३५॥३
 हम सब भाँति करब सेवकाई ॥२॥१३५॥५
 हम सब सकल सुकृत कै रासी ॥१॥३०१॥४
 हम सब सानुज भरतहि देखें ॥२॥२२२॥३
 हम सब सेवक अति बड़भागी ॥४॥२५॥१३
 हम सम पुन्य पुंज जग थोरे ॥२॥२४३॥८
 हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना ॥४॥२५॥११
 हम सेवक परिवार समेता ॥२॥१३५॥८
 हमरें जान सदा सिव जोगी ॥१॥८१॥३
 हमरें तौ अब ईस गति ॥२॥२८४॥०
 हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा ॥२॥२४१॥४
 हमहि कृतार्थ करन लगि ॥२॥२५०॥०
 हमहि तुम्हहि सरिबरि किस नाथा ॥१॥२८१॥५
 हमहि देखि मृग निकर पराहीं ॥३॥२६॥५
 हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती ॥२॥१५॥४
 हमहु उमा रहे तेहिं संग ॥६॥८०॥२
 हय गय कोटिन्ह कैलि मृग ॥२॥८३॥०
 हर उर सर सरोज पद जेई ॥५॥४१॥८
 हर कहुँ हरि सेवक गुर कहेऊ ॥४॥१०५॥५
 हर कोदंड कटिन जेहिं मंजा ॥५॥२०॥८
 हर गन मुनिहि जात पथ देखी ॥१॥१३८॥११
 हर गन हम न विप्र मुनिराया ॥१॥१३८॥३
 हरगिरि मथन निरखु मम बाहू ॥६॥२४॥८
 हर गिरिजा कर मयउ बिबाहू ॥१॥१००॥६
 हर गिरिजा बिहार नित नयऊ ॥१॥१०२॥६
 हर गुर निंदक दादुर होई ॥४॥१२०॥२३
 हर बिरहैं जाइ बहोरि पितु के ॥१॥१४१॥१०

हर हियँ रामचरित सब आए । १-११०।७
 हर हृदि मानस बाल मरालं । ३-१०।८
 हरइ सिष्य धन सोक न हरई । ७-१८।७
 हरत मनोहर मीन छबि । १-३२६।०
 हरद दूब दधि पल्लव फूला । १-३४५।४
 हरन कटिन कलि कलुष कलेसू । २-३२५।६
 हरन मोह तम दिनकर कर से । १-३१।१०
 हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई । ७-४१।५
 हरष बिबस तन दसा मुतानी । १-१४७।७
 हरष बिषाद ग्यान अग्याना । १-११५।७
 हरष बिषाद सहित चले । ६-११८।४
 हरष समय बिसमउ करसि । २-१५।०
 हरष समेत बसिष्ट पद । ७-१०।४
 हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ । ७-११३।१
 हरषवंत सब जहँ तहँ । १-११४।०
 हरषहिं निरखि राम पद अंका । २-२३७।३
 हरषि चले निज निज गृह आए । १-२८६।५
 हरषि चले मुनि बृंद सहाया । १-२११।४
 हरषि चले सुग्रीव तब । ४-२०।०
 हरषि परसपर मिलन हित । १-३०५।०
 हरषि बंधु दोउ हृदयँ लगाए । १-३०६।७
 हरषि भरत कौसलपुर आए । ७-२।१
 हरषि मिले उठि रमानिकेता । १-१२७।५
 हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी । २-५।१
 हरषि राम तब कीन्ह पयाना । ५-३४।४
 हरषि राम भेटेउ हनुमाना । ६-६१।१
 हरषि सुरन्ह दुंदुनी बजाई । १-२४७।५
 हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई । २-११।८
 हरषित गुर परिजन अनुज । ७-३।४

हरषित जहँ तहँ धाई दासी । १-११२।२
 हरषित बरषहिं सुमन सुर । ३-२०।४
 हरषित भयउ नारि मलि पाई । १-१७७।४
 हरषित महतारी मुनि मन हारी । १-१११।२
 हरषित रहहिं नगर के लोगा । ७-२४।४
 हरषित राम घरन सिर नाबहिं । ६-३८।७
 हरषित हृदयँ मातु पहिं आए । २-७२।३
 हरषे जनकु देखि दोउ भाई । १-२४३।४
 हरषे दसरथ सुतन्ह समेता । १-३२२।४
 हरषे पुर नर नारि सब । १-२८५।०
 हरषे बिबुध बिलोकि बराता । १-३०१।४
 हरषे मुनि सब सुनि बर बानी । १-२३१।३
 हरषे लखन देखि दोउ ग्राता । १-३०७।८
 हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी । ७-३।८
 हरषे सब बिलोकि हनुमाना । ५-२७।३
 हरषे हेतु हेरि हर ही को । १-१८।७
 हरषेउ राउ बचन सुनि तासू । १-१६४।७
 हरि अनंत हरिकथा अनंत । १-१३१।५
 हरि अवतार हेतु जेहि होई । १-१२०।२
 हरि इच्छा भावी बलवाना । १-५५।६
 हरि गुन नाम अपार । १-१२०।४
 हरिचरित्र मानस तुन्ह गावा । ७-५२।७
 हरि जन द्विज देखें जरउँ । ७-१०५।४
 हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । ५-१३।१
 हरि जननी बहुबिधि समुझाई । १-२०१।८
 हरि पद बिमुख परम गति चाहा । १-२६६।४
 हरि प्रेरित जेहिं कल्प जोइ । १-१७८।४
 हरि प्रेरित तेहि अवसर । ५-२५।०
 हरि व्यापक सबंत्र समाना । १-१८४।५

हरि बिषइक अस मोह बिहंगा । ७-७२।७
 हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता । १-२४१।५
 हरि माया अति दुस्तर । ७-११८।३
 हरि माया कर अमिति प्रभावा । ७-५१।४
 हरि माया कृत दोष गुन । ७-१०४।३
 हरि माया बल बरनत । ७-११।०
 हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं । १-११४।६
 हरि सन मागी सुंदरताई । १-१३१।१
 हरि सेवकहि न ब्याप अबिद्या । ७-७८।२
 हरि हर कथा बिराजति बेनी । १-१११०
 हरि हर जस राकेस राहु से । १-३।३
 हरि हर निंदा सुनइ जो काना । ६-३१।२
 हरि हर पट रति मति न कुतरकी । १-८।६
 हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं । १-१०५।१
 हरि हित सहित रामु जब जोहे । १-३१६।३
 हरिव भूमि तून संकुल । ४-१४।०
 हरित मनिन्ह के पत्र फल । १-२८७।०
 हरिहुई सकल भूमि गरुआई । १-१८६।७
 हरि नरा भजन्ति येऽतिदुस्तर । ७-१२२।१
 हरु बिधि बेगि जनक जडताई । १-२४८।३
 हा गुन खानि जानकी सीता । ३-२१।७
 हा जग एक बीर रघुरामा । ३-२८।१
 हा जानकी लखन हा रघुबर । २-१५४।८
 हा रघुनंदन प्रान फिरीते । २-१५४।७
 हा राम हा रघुनाथ । ६-१००।११
 हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा । ३-२८।३
 हाट बाट घर गली अथाई । २-१०।३
 हाट बाट नहिं जाइ निहारी । २-१५८।१
 हाट बाट मंदिर सुरबासा । १-२८६।४

हाटक धेनु बसन मनि । १-११३।०
 हानि कि जग एहि सम किछु माई । ७-१११।१
 हानि कुसंग सुसंगति लाहू । १-६।०
 हानि गलानि विपुल मन ब्यापी । २-१४४।६
 हानि तामु जीवनु मरनु । २-१७१।०
 हारि परा खल बहु बिधि । ३-२१।०
 हाहाकार करत सुर भागे । ६-१६।७
 हाहाकार कीन्ह गुर । ७-१०७।७
 हाहाकार भयउ जग भारी । १-८६।७
 हाहाकार भयउ पुर भारी । ६-४१।४
 हाहाकार सुरन्ह जब कीन्ह । ६-१२।५
 हित अगहित पसु पच्छिउ जाना । २-२६३।४
 हित मत तोहि न लागत कैसें । ६-१।५
 हित हमार सियपति सेवकाई । २-१७७।१
 हिम ले अनल प्रगट बरु होई । ७-१२१।११
 हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू । १-४१।२
 हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा । ७-११।३
 हिमगिरि गुहा एक अति पावनि । १-१२४।१
 हिमवंत जिमि गिरिजा महैसहि । १-३२३।२१
 हिये धरि राम रूप सब । ७-१७।३
 हिये सपेम सुमिरहु सब भरतहि । २-२६४।८
 हिये सुमिरी सारदा सुहाई । २-२१६।७
 हिये हरषहि बरषहिं सुमन । १-२२३।०
 हिये हरषे कामारि तब । १-१२०।७
 हिये हरषे मुनि बघन सुनि । १-१०।०
 हिये हरषे सुर सेन निहारी । १-१४।३
 हिरन्याच्छ भ्राता सहित । ६-४८।७
 हिंसा पर अति प्रीति । १-१८३।०
 हुने अनल अति हरष बहु । ६-२८।०

होत प्रतु मुनिबेष धरि ।२-३३।०
 होत मगन बारिधि बिरह ।२-२२०।०
 होत महा स्न रावन रामहिं ।६-५६।५
 होत सगुन सुंदर सबहि ।१-२९१।०
 होनिहार का करतार कौ ।१-८३।११
 होम करन लागे मुनि झारी ।१-२०९।२
 होम समय तनु धरि अनलु ।१-३२३।०
 होहि कि राम सरानल ।५-५६।४
 होहिं उलूक संत निंदा रत ।४-१२०।२६
 होहिं कुठार्य सुबंधु सहाए ।२-३०५।८
 होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग ।१-७।४
 होहिं प्रेमबस लोग इमि ।२-१२१।०
 होहिं विप्र बस कवन बिधि ।१-१६६।०
 होहिं सगुन बरषहिं सुमन ।१-३४७।०
 होहिं सगुन मंगल सुमट ।१-९१।०
 होहिं सगुन सुम बिबिधि बिधि ।४-९।४
 होहिं सनाथ जनम फलु पाई ।२-१०८।८
 होहिं सहस दस सारद सेबा ।१-३४१।२
 होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी ।३-२४।२
 होहु निसावर जाइ तुम्ह ।१-१३५।०
 होहु प्रसन्न देहु बरदानू ।१-१३।७
 होहु सँजोइल रोकहु घाटा ।२-१८९।११
 हो मारिहउं भूप द्वौ भाई ।६-७८।१२
 होहु कहावत सबु कहत ।१-२८।४
 हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू ।२-६२।५
 हंस बंस गुर जनक पुरोध ।२-२७७।२
 हंसबंसु दसस्त्यु जनकु ।२-१६१।०
 हंसत देखि नख सिख रिस ब्यापी ।१-२७६।६
 हंसहि बक दादुर चातकही ।१-८।२

हंसि कह रानि गालु बड़ तोरें ।२-१२।७
 हंसि बोलेउ दसमौलि तब ।६-२३।४
 हंसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी ।१-७।१०
 हंसे रामु श्री अनुज समेता ।६-११६।८
 हंसेहु हमहि सो लेहु फल ।१-१३५।०

त्र

त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं ।४-१०७।१०
 त्राहि त्राहि आरति हरन ।१-४५।०
 त्रिकालग्य सर्वग्य तुम्ह ।१-६६।०
 त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा ।४-१०६।६
 त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊं ।४-१०९।११
 त्रिजटा नाम सच्छस्त्री एका ।५-१०।१
 त्रिजटा सन बोली कर जोरी ।५-११।१
 त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी ।१-३१।४
 त्रिबिध टोष दुख दारिद दावन ।१-३४।१०
 त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया ।१-१०५।३
 त्रिभुवन जय समेत बेदेही ।१-२४९।४
 त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिही ।४-२७।७
 त्रेता बिबिध जग्य नर करहीं ।४-१०२।२
 त्रेलोक पावन सुजसु सुर ।४-२१।१४



मानस-अनुक्रमणिका
आद्याक्षरी प्रथम खण्ड पूर्ण

द्वितीय खण्ड
'मध्याक्षरी'

श्रीरामचरितमानस - अनुक्रमणिका

द्वितीय खण्ड : मध्याक्षरी

अ

अइसिहँ मति उर बिहर न तोस । ६-२११२	अगमु न कछु प्रतीति मन मोरें । १-३४२।३
अकथ अगाध अनादि अनुपा । १-२२११	अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी । १-४६।४
अकथ अनादि सुसामुझि साधी । १-२०।२	अगरु प्रसंग सुगंध बसाई । १-१।१
अकथ अनामय नाम न रूपा । १-२१।२	अग्नि काल जम सब अधिकारी । १-१८१।१
अकथनीय दारुन दुखु भारी । १-५१।१	अग्नि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं । २-२८४।३
अकलकता कि कामी लहई । १-२६६।३	अगुन अनूपम गुन निधान सो । १-१८।२
अकामिना स्वधामदं । ३-३।२	अघ अवगुन धन धनी धनेसा । १-३।५
अकुल अगेह दिगंबर ब्याली । १-४८।६	अघ कि रहहिं हरिचरित बखानें । ४-१११।६
अखिल अमोघसक्ति भगवंता । ४-४१।४	अचर सचर चर अचर करत को । २-२३४।८
अखिल लोक लोचनाभिरामा । ६-८।१	अचल अकिंचन सुचि सुखधामा । ३-४४।४
अखिल लोकदायक विश्रामा । १-११६।६	अचल अवधपुर करिहहिं राजू । २-२८४।६
अखंड अज मानुकोटिप्रकाशं । ४-१०४।१	अचल मोह बस आपुहि लेखा । ४-४२।५
अज जग नाथ अतुल बल जानहु । ६-३५।८	अज अद्वैत अगुन हृदयेसा । ४-११०।३
अज जग नाथु मनुज करि जाना । ६-१०३।१३	अज अनवद्य अकाम अमोगी । १-८९।३
अगनित उडगन रबि रजनीसा । ४-४१।५	अज बिम्यान रूप बल धामा । ४-४१।३
अगनित मूधर भूमि बिसाला । ४-४१।६	अज सच्चिदानंद पर धामा । १-१२।३
अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी । १-१४४।३	अजर अमर मन सम गतिकारी । ६-८८।४
अगनित श्रुति पुरान बिरब्याता । ४-३६।६	अजहँ अनुज तब चितव अनैसं । १-२४।४
अगनित हय गय सेन समाजा । १-१२१।२	अजहँ को जानइ का तेहि भावा । २-१६४।८
अगम अगाध न जाहिं निहारे । २-६१।४	अजहँ गाव श्रुति जिन्ह के लीका । १-१४१।२
अगम लाग मोहि निज कृपनाई । १-१४८।४	अजहँ न हृदय होत दुइ टूका । २-१४३।६

अजहूँ प्रीति उर रहति न रोकी । १-४९१८
 अजहूँ सो देव मोहि पर रूठा । ६-९८७
 अजादि देव सेवितं । ३-३१९
 अजित अमोघसक्ति करुनामय । ६-१०९६
 अति अगाध जानहिं मुनि म्यानी । ६-११३३
 अति अगाध दुस्तर सब भौंती । ५-४९१६
 अति अनंद दासन्ह कहैं दीन्ह । १-२०२११
 अति अपार भवसागर तरहीं । ४-२८३
 अति अभिमानु हृदयें तब आवा । १-५९७
 अति अभिमान त्रास सब मूली । ६-३७१२
 अति असंक मन सदा उछाहू । १-१३६३
 अति आनंद मगन महतारैं । १-२९४४
 अति आनंदु न जाइ बखाना । १-३००५
 अति कृत्य प्रमु परम सुजाना । ६-६१११
 अति कृपाल चित सम्यक बोधा । ७-१०६१२
 अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ । ४-११७
 अति कौतुकी कोसलाधीसा । ६-१११२३
 अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ । ६-३०१२
 अति नय निपुन न भाव अनीती । ५-४५६
 अति प्रसन्न दस दिख बिभागा । ७-२२१०
 अति पावन तीरथ जल जोगा । २-३०९७
 अति पावन पुरान श्रुति सारा । १-१११
 अतिप्रिय जानि महैस सिखाए । १-१२६६
 अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेस । ६-१११९
 अति प्रिय मधुर तोतरे बोला । १-१९८१९
 अति पुनीत आसन बैठारे । १-४४५
 अति पुनीत साधक सिधि दाता । १-१४२१२
 अति बिचित्र कहि जात सो नहीं । ५-४३६
 अति बिचित्र तहैं होइ अखारा । ६-९७७

अति बिचित्र नहीं जाइ बखाना । १-१३१२
 अति बिचित्र बहु बिधि तुम्ह गाईं । ७-६८५
 अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ । ६-६१५
 अति बिसाल तनु मालु सुमह । ६-४०४
 अति बिसाल भय मोहि सुनावा । ६-१५४
 अति भय बिकल न तुम्हहिं सुनाईं । १-१०८३
 अति भय त्रसित न कोउ समुहाईं । ६-६४१०
 अति मारीच सुबाहुहि डरहीं । १-२०५३
 अति रिस ताकि श्रवन लागि ताने । १-८६१२
 अति रिस मेघनाद पर डारा । ६-५०१२
 अति रुचि राम मूल फल खाए । २-१०६३
 अति लघु रूप पवनसुत लीन्ह । ५-११०
 अति लघु लाग तिन्हहिं सुरराजू । १-३१२६
 अति लाघवैं उठाइ धनु लीन्ह । १-२६०५
 अति लाघवैं उठि पुनि तेहि मारा । ६-६५७
 अति लोभी सन बिरति बखानी । ५-५७३
 अति सप्रेम ना बिसरि दुराऊ । ५-५११९
 अति समीत ज़ोरें कर टाढ़ीं । १-२०१३
 अति समीत सब करहैं विचारा । ६-१७१९
 अति सुकुमारि देखि अकुलानी । २-५७१९
 अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी । २-२३२३
 अति हित बहुत भौंति सिख दीन्हैं । २-७७३
 अति हित मनहुं राम फिरि आए । २-१६४१९
 अतिसय क्रोध श्रवन लागि ताने । ६-४९७
 अतिसय जन्म धन्य करि लेखा । ४-३६
 अतिसय दुखित होंति बैदेही । ६-८५६
 अतिसय प्रिय करुनानिधान की । १-१७७
 अतुलित अतिथि राम लघु भाईं । २-११३१२
 अतुलित बल तनु तेज प्रकासा । १-२०८८

अतुलित बल नर केहरि दोऊ । ३-३६।१
 अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं । १-१८०।३
 अतुलित बल प्रताप प्रमुताई । ७-१२३।२
 अदिनु मोर नहिं दूषन काहू । २-१८०।७
 अधम कवन जग मोहि समाना । ७-०।८
 अधम जाति मैं जड़मति भारी । ३-३४।२
 अधम निलज्ज लाज नहिं तोही । ५-८।९
 अधम संरीर राम जिन्ह पाए । १-१७।२
 अधम सो नारि जो सेव न तेही । ३-४।६
 अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा । ३-३०।६
 अधर दसन दसि मीजत हाथा । ६-३०।६
 अधिक एक तैं एक बढ़ेरे । २-२५४।५
 अधिक सनेहु समात न गाता । १-२९०।९
 अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं । २-२०८।८
 अनअहिवातु सूख जनु भारी । २-२४।७
 अन इच्छित आवइ बरिआई । ७-११८।४
 अनघ अनेक एक करुनामय । ७-३३।२
 अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी । ७-४५।६
 अन्न दान अरु रस पीयूषा । ६-२५।६
 अनपायनी भगति प्रमु दीन्ही । ४-२४।८
 अनमल देखि न जाइ तुम्हारा । २-१५।७
 अनन्त प्रगट चंदन ते होई । ७-११०।१६
 अनायास उधरी तेहि काला । २-२९६।४
 अनुचित कहब न पंडित केहीं । २-१७४।५
 अनुचितु छमब जानि तरिकाई । २-४४।६
 अनुज गहे पद बारहिं बारा । ५-४०।६
 अनुज तासु दुख दुखी मलीना । ६-२२।२
 अनुज देखि प्रमु अति दुख माना । ६-५४।६
 अनुज निसाधर कटकु सँघारा । १-२०१।५

अनुज समेत परम सुख पावा । ७-५।२
 अनुज सहित अति पुलक तनोरुह । ७-४।३
 अनुज सहित बहु कोसलधनी । ६-८८।८
 अनुज सहित सुख भवन खरारी । ५-१३।३
 अनुज हमार भौरु अति सोऊ । ६-२२।३
 अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें । २-२०४।२
 अनुपम अज अनादि सोभाकर । ७-३३।४
 अनुभव गम्य अखंड अनूपा । ७-११०।४
 अनुभव गम्य भजाहिं जेहि संता । ३-१२।१२
 अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा । २-२४०।४
 अनूपान श्रद्धा मति पूरी । ७-१२५।७
 अपजस भाजन प्रियजन द्रोही । २-१६३।५
 अपनी भाँति कहब समुझाई । २-२८।११
 अपनी समुझि साधु सुचि को भा । २-२६।२
 अपने बस करि राखे रामू । १-२५।६
 अपने सील सुमार्यँ भलाई । २-२११।६
 अपर कथा सब भूप बखानी । १-२४।२
 अपर जीव केहि लेखे माहीं । ७-७०।८
 अपर तिन्हहि पूँछहिं मगु जाता । २-१३४।३
 अपर मंत्र मंडली बितासा । १-२२३।४
 अपर तगै नुज सिर करि रोषा । ६-१०२।५
 अपर लोक अँग अँग विश्रामा । ६-१४।१
 अप्रतिहत गति होइहि तोसी । ७-१०८।१६
 अपराधिहु पर कोह न काऊ । २-२५१।५
 अपराधी मैं नाथ तुम्हारा । १-२७।४
 अब उर राखेहु जो हम कहेऊ । १-७६।६
 अब कछु कहब जीम करि दूजी । २-१५।१
 अब का कहीं सो कहहु भवानी । ७-५१।७
 अब कीन्हे विरंचि हम साँचे । १-३०३।३

अब कुवालि करि होइहि हानी । २-२१७३	अब सो सुनहु जो बीचहि राखा । १-१८७६
अब जनि नयन देखवावसि मोही । ६-४८३	अब्यक्त जेहि श्रुति गाव । ६-१२१३
अब जनि नाथ कहहु गृह जाही । ७-१७८	अब्याहत गति संभु प्रसादा । ७-१०९/१२
अब जनि रिस उपजावसि मोही । ६-३०५	अबलन्ह उर भय भयउ बिसोषा । १-१५४
अब जो उचित भो कहिअ गोसाईं । १-२८५६	अबला अबल सहज जड़ जाती । ७-११४/१६
अब तव कालु सीस पर नाच्यो । ६-१३७	अबला बिबस म्यानु गुनु गा जनु । २-४७३
अब दुइ कपि आए उतपाती । ६-४३४	अबलानन दौरख नहीं जब लौ । ७-१००/४
अब धौ बिधिहि काह करनीया । १-२६६/७	अबहिं बहुत का करौं बडाईं । ६-७१७
अब न आँखि तर आवत कोऊ । १-२९२/५	अबहीं समुझि परा कहु मोही । ६-२३१/०
अब न तुम्हहि माया निअराई । १-१३७/८	अबिगत अलख अनादि अनूपा । २-१२७
अब प्रभु चरित सुनावहु मोही । ७-११४	अबिचल हृदयें भगति कै रेखा । १-७५४
अब प्रभु देखि जुडानी छाती । ३-७३	अबिरल छाहैं सुखट सब काला । २-२३६/४
अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे । ६-१०९/१२	अबिरल भगति सम पट होई । ७-१०५/२
अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ । २-११३	अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना । ४-१५८
अब पूरे सब काम हमारे । १-१४८/२	अमय भई मरोस जियें जावा । १-१८६/१
अब बहु भए तकहु गिरि कंदर । ६-१५७	अमय भए बिचरत मुनि कानन । ३-२१५
अब बिलंब कर कारनु काहा । १-३१२/१	अमय चरहिं बन करहिं अनंदा । ७-२२३
अब भा मरन सत्य हम जाना । ७-२६५	अमय होइ जो तुम्हहि डेराई । १-२८३/५
अब मितिहहि कृपाल रघुबीरा । ६-१९६	अमिअंतर मल कबहुँ न जाई । ७-४८६
अब मोहि आइ जगाएहि काहा । ६-६२/१	अमिमल आसिष पाइ अनंदे । २-२४१/२
अब मोहि संभुचाप गति तोरी । १-२५७/६	अमिमल बिरवें परेउ जनु पानी । २-४४
अब यहु मरनिहार भा साँचा । १-२७४/४	अमिमान विरोध अकारनहीं । ७-१०१/३
अब लागि गए कहीं लागि भाई । २-१२०/७	अमसावति जसि सक्र निवासा । १-१७७/७
अब लागि तुम्हहि न काहूँ साधा । १-१३६/४	अमिअ अमरपट माहुरुं मीचू । २-२९७/६
अब लागि संभु रहे सबिकारा । १-८९/२	अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा । २-१४७/४
अब सुनि मोहि भयउ संदेहू । २-३१७	अमिअ सुजीवनु माहुरुं मीचू । १-५६
अब सुर काज मरत के हाथा । २-२६४/६	अमित अनेक सुगंध सुहार । २-१६१/३
अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू । २-१४२/१	अमित नाग बल विपुल बिसाला । १-५३/७
अब सो देहू मोहि जो नावा । ३-१०२/७	अमित प्रभाउ एक तें एक । १-५३/७

अमित प्रमाउ बेदु नहिं जाना । १-२३४७
 अमित सुमट सब समर जुझारा । १-१५३३
 अमनु लहेउ जनु संतत रोगी । १-३४९६
 अय इव जरत धरत पग धरनी । १-२९७१५
 अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा । ७-१०६६
 अरघु देइ आसन बैठाए । १-३१८८
 अरथु अमित अति आखर थोरे । २-२९३२
 अरध तजहिं बुध सरबस जाता । २-२५५२
 अरध निमेष कलप सम बीता । १-२६९६
 अरध सिंघासन आसनु देई । २-१७७४
 अरि करनी करि करिअ लराई । १-२७०३
 अरि दल दलन चले रघुनाथा । ६-६७१९
 अरु बाजे गहगहे निसाना । १-१५३७
 अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ । ४-८१२
 अरुन मृदुल सेवक सुखदाता । ५-४११५
 अरुनचूड़ बर बोलन लागे । १-३५७१५
 अलप काल बिद्या सब आई । १-२०३७
 अलप लोम मल कहइ न कोऊ । ५-३७८
 अवगुन आठ सदा उर रहहीं । ६-१५२
 अवगुन कवन नाथ मोहि मारा । ४-८६
 अवगुन बहुत चंद्रमा तोही । १-२३७२
 अवघट घितए सकल भुआला । १-२४७६
 अवटै अनल अकाम बनाई । ७-११६१९३
 अवध काह मैं देखब जाई । २-१४४७
 अवध चले प्रभु कृपा निकेता । ७-६७४
 अवध जन्म जाचहिं बिधि पाहीं । १-३५९२
 अवध तजें तनु नहिं संसारा । १-३४४
 अवध तुम्हार काजु काजु नाहीं । २-७३४
 अवध बिलोकि सूल होइहि उर । २-३६३

अवध सहस सम बनु प्रिय लागा । २-१३९७
 अवध साढ़साती तब बोली । २-१६७
 अवध सौध सत सरिस पहारु । २-६५३
 अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ । ६-५७८
 अवधपुरी यह चरित प्रकासा । १-३३५
 अवधि आस सब राखहिं प्राणा । २-८५८
 अवधि आस सम जीवनि जीकी । २-३१६१९
 अवधि पारु पावौं जेहि सेई । २-३०६८
 अवनि न आवत एकउ तारा । १-११८
 अवर एक बिनती प्रभु मोरी । १-११०७
 अवलोकत अपहरत बिषादा । २-२७८१९
 अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ । १-१८४४
 अवसर सरिस सुआसन दीन्हे । २-२९१७
 अवसि उपाय करबि मैं सोई । १-१२८६
 अवसि देखिअहिं देखन जोगू । १-२२८६
 अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा । २-१७६२
 अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी । १-७८३
 अवसि जो कहहु चहुँ सोइ कीन्हा । २-२६३८
 अवाँ अनल इव सुलगइ छाती । १-११९७
 अस असीस राउरि जगु जाना । २-२५४७
 अस कहि कोपि गगन पर धायल । ६-९६६
 अस कहि चरन गहे बैदेहीं । १-२३५७
 अस कहि चलेउ मनोज नसावन । १-४९३
 अस कहि मन बिहसी एक आली । १-२३३६
 अस कहि राम रहे अरगाई । २-२५८८
 अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई । ६-७८१९२
 अस कहि सो निज भवन सिधारी । ५-११६
 अस कहि हनेसि माइ उर गदा । ६-९३८
 अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई । ४-६८

अस कृपाल को कहहु मवानी । ६-४४।५
 अस जानहिं जियें जाउं उड़ाई । २-१५७।२
 अस जियें जानि नाथ पहिं आए । ६-३७।१०
 अस प्रमु छाड़ि भजिअ कहु काही । १-१९१।५
 अस बर मागउं करउँ टिटाई । ३-४१।६
 अस बिचारि बोलेउं खगराजा । ७-८३।६
 अस बिचारि भजु राम उटारा । ६-२६।७
 अस बिचारि रघुबीर पठावउं । ६-२१।२
 अस बिस्वास तजहु जनि भोरें । ३-४१।५
 अस सुख जस सिध समु रहे तें । २-३१५।८
 अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा । ६-०।१
 असगुन भयउ भयंकर भारी । ६-१३।२
 असगुन भयउ रावनहि सोई । ५-३४।७
 असगुन होहिं न जाहिं बखानी । ६-४७।७
 अस्तुति करत नयन मरि बारी । ३-३१।२
 अस्तुति करहिं देव मुनि झारी । १-२०१।६
 अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई । ५-३७।१
 अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं । ६-७०।१
 अस्तुति करि निज धाम सिधार । ३-४०।३
 अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही । ६-१२०।४
 अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी । ३-१०।१
 अस्थि सैल सरिता नस जारा । ६-१४।७
 असनु अमिअ सम कंद मूल फर । २-१३१।६
 असनु अमिअ सम कंद मूल फल । २-२७१।७
 असमंजस अस मोहि अँदेसा । १-१३।१०
 असमंजस बस भे रघुसाई । २-८४।५
 असरन सरन दौन जन गाहक । ७-५०।४
 अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा । ६-१३।१
 अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना । ६-७२।१

अस्त्र सस्त्र छाँडेसि बिधि नाना । ६-११।३
 असि परतीति तजहु जनि भोरें । १-१३७।६
 असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं । १-३२।५
 असि बुधि तौ बिधि मुहँ मसि लाई । १-२६५।८
 असि मन्मथ महेश की नाई । १-८१।८
 असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई । ६-१।२
 असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई । १-२३१।५
 असिब बेष सिबधाम कृपाला । १-११।४
 असुम रूप श्रुति नासा हीनी । ३-१७।६
 असुर तापसहि खबरि जनाई । १-१७४।३
 अहइ कुआर मोर लघु भ्राता । ३-१६।११
 अहमिति मनहुँ जीति जगु टाढ़ा । १-२८२।६
 अहह नाथ हौं निपट बिसारी । ५-१३।७
 अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी । १-१०।१
 अहि मूषक इव सुनु उरगारी । ७-१०।१८
 अहो मुनिसु महा भटमानी । १-२७२।१
 अहो मोह महिमा बलवाना । ६-१५।१
 अहोभाय मैं देखिहउं तेई । ५-४१।८
 अँत्रिप्रिया मिज तपबल जानी । २-१३१।५

आ

आइ करहिं रघुनायक सेवा । १-३३।७
 आइ करौं जोहिं पूजा तोरी । २-१०२।३
 आइ गए कपि सहित समाजा । ५-२८।२
 आइ गयउ प्रमु रहु खल टाढ़ा । ३-२७।१४
 आइ चरन पंकज सिरु नावा । ६-३७।३
 आइ सबन्हि देखे रघुसाई । २-१३४।४
 आइ सबन्हि सादर सिरु नाए । १-२८६।३
 आइ सबन्हि सादर सिरु नाए । ७-१५।२

आई अगनित जाहि न बरनी । २-२२०।२
 आए अक्ख भरे परितापा । २-८५।७
 आए इहाँ कीन्ह भल नाही । २-२११।२
 आए करे अकंटक सजू । २-२२७।५
 आए जहँ रामानुज आगे । ६-७५।४
 आए जहाँ कोसला धनी । ६-४७।१
 आए तहँ अगनित महिपाला । १-१२१।६
 आए दल बटोरि दोउ भाई । २-२२७।६
 आए द्विजन सहित नृपद्वारा । १-११२।७
 आए भरतु सहित हित भाई । १-२८१।७
 आए भवन ब्याहि सब भाई । १-३५६।५
 आए मिलन जगत आधारा । ३-११।७
 आए सकल महामुनि य्यानी । २-१५५।८
 आए चुनि हम जो पनु ठाना । १-२५०।७
 आएहु बेगि न होइ लखाऊ । २-२७०।८
 आएँ सरन तजउँ नहिँ ताहू । ५-४३।१
 आखर जुग जनु जीव जतन के । २-३१५।६
 आँखि ओट उटि बैठहि जाई । २-१६१।८
 जागम निगम पुरान बखाना । २-१४।५
 आगिल चरित सुनहु जस भयऊ । १-७०।१
 आगिलि कथा सुनहु मन लाई । १-२०५।१
 आगेँ अनी चली चतुरंगा । २-२२१।३
 आगेँ अपराधी गुरुद्रोही । १-२७४।६
 आगेँ गवनु कीन्ह रघुनाथा । २-२७४।१
 आगेँ चले सील गुन धामा । ७-५।८
 आगेँ घरि बोली मृदु बानी । २-७८।२
 आगेँ रामु सहित श्री श्राता । १-५३।४
 आजु दीन्ह बिधि एकहिँ बारा । ४-२६।४
 आजु दीन्ह बिधि बनि भलि मुरी । २-१०१।६

आजु देखिहउँ परम सनेही । ३-२५।८
 आजु निपाती जुड़ावउँ छाती । ६-८२।२
 आजु परेहु अनथ की नाई । ६-१०३।८
 आजु पुरंदर सम कोउ नाही । १-३१६।७
 आजु लगेँ कीन्हउँ तुअ सेवा । १-२५६।७
 आजु सबहि हटि मारउँ ओही । ६-४१।३
 आजु सुधरी सुदिन समुदाई । ७-१।४
 आजु सुफल जप जोग बिसगू । २-१०६।५
 आजु हमहि बड़ अचरजु लागा । २-३७।१
 आठइ नयन जानि पछिताने । १-३१६।४
 आदर दान बिनय बस कीन्हे । २-७१।३
 आदर सहित आचमनु दीन्हा । १-३२८।८
 आदरु कीन्ह पिता सम लेखा । २-३८।६
 आदिसक्ति छविनिधि जगमूला । १-१४७।२
 आदिहु तें सब कथा सुनाई । ५-१२।६
 आन उपायँ न मिटिहि कलेसू । १-७१।२
 आन उपायँ बनिहि नहिँ बाता । २-८४।८
 आन उपायँ मोर हित नाही । २-१७७।२
 आन जीव इव संसृत नाही । ७-७७।२
 आन जीव पाँवर का जाना । १-११०।५
 आन देव निंदक अग्निमानी । ७-१६।२
 आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू । २-६०।२
 आन भाँति नहिँ पावौँ ओही । १-१३१।६
 आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी । ४-२१।१
 आनन अमित मदन छबि छाई । १-११८।७
 आनन अमित मदन मन मोहा । ५-४४।५
 आननु सरद चंद छवि हारी । १-१०५।८
 आनहिँ नृप दसरथहि बोलाई । १-२८६।१
 आनहु चर्म कहति बेदेही । ३-२६।५

आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा । ६-०१९
 आनहु बोलि कहीं कर कीसा । ६-१८१२
 आनहु सकल सुतीरथ पानी । २-५१९
 आनेउ भवन समेत तुरंता । ६-५४४
 आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई । २-१३७
 आनेहु मोल बेसाहि के मोही । २-२९१२
 आनैद अवधि अवध रजधानी । २-२७२६
 आनैद उमगि उमगि उर भरहैं । १-३१११
 आनैद अब अनुग्रह तोरें । २-५२८
 आनैद मगन सकल पुरबासी । १-११२१२
 आनैदहू के आनैद दाता । १-२१६१२
 आपद काल परिधिजहिं चारी । ३-४७
 आपन अति असमय अनुमानी । १-१५७३
 आपन नाम कहन तब लयऊ । १-१६२७
 आपन मोर परमहित धरमू । २-३०४३
 आपनि समुझि कहउ अनुगामी । २-२२६१८
 आपनि पर कछु सुनइ न कोई । १-३१८७
 आपु इहाँ अमरावति राऊ । २-२४७७
 आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई । १-२०४६
 आपु कहहिं सत बार महेसू । १-८०६
 आपु गई जहँ पाक बनावा । १-२००३
 आपु गए अरु घालहिं आनहिं । ७-३१५
 आपु चढ़े प्रनु आयसु पाई । २-१५०४
 आपु निषादहिं लीन्ह बोलाई । २-१९७४
 आपु प्रगत भए बिधि न बनाए । २-११९१२
 आपु प्रतापपुज रनधीरा । १-१५३१२
 आपु बिषय बिस्वास बिसेषी । १-१६०६
 आपु रहे मख की रखवारी । १-२०९१२
 आपु समाज साज सब साजी । २-२९८५

आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ । ६-१०५४
 आपु सरिस सबही चह कीन्हा । १-७८४
 आपुन मंद कथा सुम पावन । ६-७७१९
 आपुनु चलेउ गदा कर लीन्ही । १-१८१४
 आपुहि परम धन्य करि मानहिं । २-११९७
 आयउ कपि केहसी असंका । ६-३५४
 आयउ करन तोहि पर दाया । ६-६७
 आयउ कुसल देव मुनि त्राता । ७-१४
 आयउ जनकराज रनिवासू । २-२८०३
 आयउ जहँ त्रैलोक बिभूषन । ६-४४१९
 आयउ निकट परम सुक संकुल । ६-१२०११०
 आयउ मृगकुल कमल पतंगा । १-२६७१२
 आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा । ५-४२१९
 आयउ इहाँ समाजु सकेली । २-२९७५
 आयउ कुसल कुअँर पहुँचाई । २-१४५७
 आयउ लाई रजायसु बाएँ । २-११९१९
 आयसु आसिष देहु सुबानी । २-१८२७
 आयसु काह होइ रघुनाथा । २-५८७
 आयसु किए मुदित फुर भाषें । २-२५७३
 आयसु दीन्ह न राम उदारा । ६-३३४
 आयसु दीन्ह मुदित जठि धार । १-२९७३
 आयसु देव न करव सँकोचू । २-३२२४
 आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा । १-२३७५
 आयसु पाइ फिरे पहुँचाई । १-३५१११०
 आयसु पै न देहिं रघुनाथा । ५-५४५
 आयसु मागि फिरे अगवाना । १-३०८६
 आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक । ६-३३१९
 आयसु होइ जाउँ बन आना । ३-५१२
 आयसु होइ त आवीं देखी । २-३०७४

आयसु होइ सो करहिं गोसाईं । २-२१२८
 आयहु तात बचन मम पेत्ती । ३-२११२
 आयहु मोहि करन बड़भागी । ५-५८
 आयूहीन भए सब तबहीं । ५-४१११
 आरत अधिकारी जहैं पावहिं । ५-१०९१२
 आरत काह न करइ कुकरमू । २-२०३७
 आरति प्रीति न सो कहि जातो । २-९६११
 आरति प्रीति बिनय नय सानी । २-२६२११
 आरति हरन बेद जसु गावा । १-५८६
 आरति हरहु दीन जनु जानी । २-४३८
 आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ । ४-२१८
 आवत देखि अनुल बल सींवा । ४-०१२
 आवत नगर कुसल रघुसाईं । ७-२१२
 आवत बालितनय के प्रेरे । ६-३१११०
 आवत हृदयै सनेह बिसेषै । ५-२०६
 आवतहीं रघुबीर निपाता । ३-६६
 आवहिं बहुरि रामु रजधानी । २-१८२८
 आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा । ७-५६७
 आवहु बेगि चलहु बन भाई । २-७२११
 आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं । २-१०१२
 आवा कपि लंका जेहिं जारी । ६-१७८
 आवा निकट कपिन्ह भय मानी । ४-२६१९
 आवा निकट जती कें बेधा । ३-२७७
 आवा निसिघर कटकु भयंकर । ३-१७१११
 आवा मिलन दसानन भाई । ५-४२१४
 आवा सो प्रभु हमरें गाऊँ । ४-५१२
 आवै समय सरन तकि मोही । ५-४७१२
 आश्रम कहउँ समय सुखदायक । २-१३११२
 आश्रम जाइ जाइ सिरु नावउँ । ७-१०९११०

आश्रम निकट जाइ निजराने । २-२३४११
 आश्रमु देखि नयन जल छाए । १-४८६
 आस पिआस मनोमल हारी । १-४२१२
 आसन उचित देहु सब काहू । १-२३१८
 आसन जाइ बैठ छलम्यानी । १-१६१११
 आसन दिए समय सम आनी । २-२८०७
 आसन बर बैठारे आनी । ३-१११११
 आसिरबचन लहे प्रिय जी के । २-२४१३
 आसिरबाद पिताँ तब दीन्हा । ६-१११२
 आसिरबादु बहुत बिधि दीन्हा । १-३५२१२
 आसिरबादु बिप्रवर दीन्हा । २-१४११
 आसिरबादु सबहि सन पावा । १-३४०११
 आसिष तव अमोघ बिख्याता । ५-१६६
 आसिष देइ निकट बैठाई । ३-४१२
 आसुतोष पुनि किए कलेसू । १-६९७
 आँसु पौँछि मृदु बचन उचारे । २-१६४७
 आहुति देत रुधिर अरु मैसा । ६-७५११

इ

इत उत वितइ चला भड़िहाई । ३-२७११
 इत उत जय इच्छा नहिं धोरी । ६-५२७
 इत पितु बच इत बंधु सकोचू । २-२२६३
 इदमित्यं कहि जाइ न सोई । १-१२०१२
 इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी । ५-५८१२
 इन्ह कर दरसनु हम कहैं तैसैं । १-३३४६
 इन्ह कर हुनर न कयनिहुँ ओरा । ७-३०६
 इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे । ७-७६
 इन्ह तैं लही दुति मरकत सोने । २-१११५८
 इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना । ५-५४११

इन्ह सम एइ उपमा उर आनी । १-३११।३
 इन्हहि न संत बिदूषहिं काऊ । १-२७८।३
 इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी । १-१३३।४
 इन्हहि हरषप्रद बरषा एका । ३-४३।३
 इष्टदेव इव सब सुख दाता । १-२४१।५
 इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं । २-६७।७
 इहाँ आइ बक ध्यान लगावा । ६-८४।७
 इहाँ उचित नहिं असन अनाजू । २-२७७।७
 इहाँ कहीं सज्जन कर बासा । ५-५।१
 इहाँ जथामति मोर प्रचारु । २-२८७।४
 इहाँ न लागिहि राउरि माया । २-३२।५
 इहाँ न बिषय कथा रस नाना । १-३७।४
 इहाँ बसत बीते बहु काला । १-१६०।८
 इहाँ बसब रजनीं मल नाहीं । २-२८६।७
 इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना । १-२१३।६
 इहाँ सकल रितु रहब सुखारी । २-१३५।४
 इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई । ६-११८।११

इ

इंति भीति जस पाकत साली । २-२५२।१
 ईस अधीन जीव गति जानी । २-२६२।५
 ईस अनीसहि अंतरु तैसैं । १-६९।२
 ईस अनेक करवरें टारी । १-३५६।११
 ईस अंस भव परम कृपाला । १-२७।८
 ईस बस्य माया गुनखानी । ७-७७।६
 ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस । ७-७७।५
 ईस्वर सब भूतमय अहई । ७-१०९।१५
 ईसु काहि धौं टेइ बड़ाई । १-२३१।११
 ईसु टेइ फलु हृदयें बिचारी । २-७६।७
 ईधनु पात किरात मिताई । २-२५०।२

उ

उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला । ७-१६।३
 उग्र साप मुनिबर कर हरहू । ३-१२।१६
 उघरे पटल परसुधर मति के । १-२८३।६
 उचित असीस लही मन मागी । २-२४५।१
 उचित उतर रघुनंदन दीन्हे । २-१८।६
 उचित कहेहु मुनिबर बिम्यानी । १-८१।१
 उचित न तासु निरादरु कीन्हे । २-४२।६
 उचित बास हिम भूधर दीन्हे । १-६४।८
 उचित सिखावनु दीजहु मोही । ७-२१।१०
 उचित होइ तस करब बहोरी । २-२६७।७
 उचित होइ तस करिअ गोसाँई । २-२७७।८
 उजरें हरष बिषाद बसेरें । १-३।२
 उठइ न कोटि भौंति बलु करहीं । १-२४९।७
 उठहु न सुनि मम बच बिकलाई । ६-६०।५
 उठा आपु कपि कें परचारे । ६-३४।१
 उठा सँभारि बहुत रिस मरा । ६-८३।१
 उठि किन मोहि सिखावहु भाई । ६-६०।१६
 उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ । २-२३२।८
 उठि बैठे लछिमन हरषाई । ६-६१।२
 उठि रघुबीर बिदा तब मागा । २-७६।२
 उठि रघुबीर सुधारे बाना । ६-८५।७
 उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी । २-२१२।५
 उठि सुत पितु अनुसासन कौंधी । १-१८१।३
 उठि सँभारि सुमट पुनि लरहीं । ६-६७।६
 उठी उदधि उर अंतर ज्वाला । ५-५७।६
 उठे सकल मय बिकल मुवाला । १-२६८।१
 उठे हरषि सुर काजु सर्वौरन । ३-२६।६
 उठेउ गवौंहिं जेहिं जान न रानी । १-१७।१३

उड़इ अबीर मनुहुँ अरुनारी । १-११४।५
 उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे । १-२४०।३
 उत रजनीचर अति रनधीरा । १-७१।१०
 उत साहिब सेवा बस जोरा । १-२३१।४
 उतपति थिति लय बिषहु अमीदों । १-२८१।५
 उतपति पालन प्रलय समीहा । १-१४।६
 उत्तर दिसि बह सरजू पावनि । ७-३।५
 उत्तर दिसिहि बिमान चलायो । १-११८।२
 उत्तर प्रतिउतर बहु आनसि । ७-१११।१३
 उत्तरहिं नर भवसिंधु अपारा । १-१००।३
 उत्तरि चले हय गय स्थ त्यागे । १-२८७।३
 उत्तरि भरत तब सबहि सँभारा । १-२०१।१
 उत्तरिहि कटकु न मोरि बड़ाई । ५-५८।७
 उत्तरु देउँ फिरि अनुचित भारी । १-२६।८
 उत्तरु न आव बिकल भइ बानी । १-१४७।१
 उत्तरे जहँ तहँ बिपुल महीषा । १-२१३।४
 उत्तरे जाइ बारिनिधि तीरा । ७-६६।७
 उत्तरे तहँ मुनिबृंद समेता । १-२१३।७
 उत्तरे प्रमु दल सहित सुबेला । १-३६।१
 उत्तरे सेन सहित अति मीरा । १-१०।१
 उत्तरेउ तट प्रमु आयसु पायो । १-१२०।७
 उत्तरेउ सेन समेत सुबेला । १-८।५
 उदर्यँ तासु तिमुवन तम भागा । १-२५५।८
 उदर भरे सोइ धर्म सिखावहिं । ७-१८।८
 उदासीन तापस बन रहहीं । १-२०१।३
 उदासीन धनु धामु न जाया । १-१६।३
 उदासीन सब संसय छीना । १-६६।८
 उदासीन हित अनहित मन की । १-३०४।२
 उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा । ७-३०।१

उपकारी के संपति जैसी । ४-१४।५
 उपज क्रोध म्यानिन्ह के हिरै । ७-११०।१५
 उपजइ प्रीति राम पद कंजा । ७-१२५।२
 उपजइ सन्धपात दुखदाई । ७-१२०।३१
 उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं । १-१०।३
 उपजहिं जासु अंस तें नाना । १-१४३।६
 उपजा उर अति छोम बिसेषा । ६-८८।१
 उपजा उर संतोषु बिसेषी । १-३०६।६
 उपजा हियँ अति हरषु बिसेषा । १-४१।१
 उपजा हृदयँ प्रचंड बिषादा । ७-४७।५
 उपजी बिरह बिधा अति तेही । ६-११।२
 उपजी मम उर प्रीति बिसेषी । ७-८२।७
 उपजेहु बंस अनल कुल घालक । ६-२०।५
 उपमा कहूँ त्रिमुवन कोउ नार्हीं । १-३१०।८
 उपमा खोजि खोजि कवि लाजे । १-३११।२
 उपमा बीचि बिलास मनोरम । १-३६।३
 उबरा सो जनवासेहिं आवा । १-३२५।७
 उमय अपार उदधि अवगाहा । १-५।१
 उमय अवधि बिधि रची बनाई । १-३६।४
 उमय प्रकार सुजसु जग तोरा । १-१।१
 उमय प्रबोधक चतुर दुभाषी । १-२०।८
 उमय बेष धरि की सोइ आवा । १-२१५।२
 उमय भाग आधे कर कीन्हा । १-२९।२
 उमय लोक निज हाथ नसावहिं । ७-११।७
 उमय हरहिं भव संभव खेदा । ७-११४।१३
 उमगत पेमु मनुहुँ चहु पासा । १-२११।६
 उमगि अवध अंबुधि कहूँ आई । १-०।३
 उमगे भरत बिलोचन बारी । १-२२३।११
 उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू । १-३८।१०

उमाहि नामु तब भयउ अपरना । १-७३॥
 उमा तासु गुन नर किमि कहहीं । ७-८१॥
 उमा मरम यह काहुँ न जाना । ७-५७॥
 उमा रमा सारद सम जानी । १-३२१॥
 उमा सहित जेहि जपत पुरारी । १-९१२
 उमा सो बचनु हृदयँ धरि सखा । १-६७॥
 उर अति रुचिर नागमनि माला । १-२९८॥
 उर अनुराग रहत नहिँ रोकेँ । २-२९५॥
 उर अपराध न एकउ धरिही । ५-५६॥
 उर अस आनत कोटि कुवाली । २-२६०॥
 उर आनंदु पुलक भर गाता । १-३०४॥
 उर आयत उरभूषन राजे । १-३२६॥
 उर उपजा अति दारुन दाहा । १-५३२॥
 उर उपजा आनंद बिसेषा । ७-५६१०
 उर उपजा संदेहु बिसेषी । १-४९१॥
 उर अंकुरेउ गरब तरु मारी । १-१२८॥
 उर अंतरजामी रघुराऊ । २-२९०॥
 उर गुहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा । ७-११७॥
 उर ताड़न बहु भौति पुकारी । ६-७६॥
 उर धरि चंद्रमौलि दृषकेतू । १-६३॥
 उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन । ७-११२१॥
 उर महीं परी स्यामता सोई । ६-११६॥
 उर लागत मूलक इव टूटे । ६-२४६॥
 उर सर लागत मरइ सुसारी । ६-९८१२॥
 उरय स्वास सम त्रिबिध समीरा । ५-१४॥
 उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू । १-२६१॥
 उहाँ गएँ मारिहि कपिराई । ४-२५॥

ऊ

ऊपर द्वारि देहिँ बहु बालू । ६-८०॥

ऊसर बीज बएँ फल जथा । ५-५७॥

ए

ए चकोर सुख लहहिँ न काऊ । ७-३०५॥
 ए जेहि के सब भौति सनेही । २-१२१॥
 ए पंकज बिकसे बिधि नाना । ७-३०७॥
 ए दोउ बंधु संभु उर बासी । १-२४५॥
 ए बालक असि हठ भलि नाहीं । १-२५५॥
 ए रखिअहिँ सखि आँखिन्ह माहीं । २-१२०॥
 ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना । ७-११४१॥
 ए स्यामल मृदुगात किसोरा । १-२२२॥
 एक अधर राम गुन गाता । ७-१०२॥
 एक उदास भायँ सुनि रहहीं । २-४७६॥
 एक एक के कोटिन्ह पाए । ६-९३६॥
 एक एक बिधि बरनि न जाई । १-३२८॥
 एक एक रस अगनित भौति । १-३२८॥
 एक एक सन कहहिँ बखानी । २-४७५॥
 एक एक सन मरमु न कहहीं । २-३०१॥
 एक कहहिँ यह बात अलीहा । २-४७७॥
 एक ते छीनि एक लै खाहीं । ६-८७२॥
 एक न सुनइ एक नहिँ देखा । ७-९८६॥
 एकनयन करि तजा भवानी । ३-११४॥
 एक प्रतापभानु महिपाला । १-१५३॥
 एक बार कालहु सन लरहीं । ३-१८१०॥
 एक बार बिलोकु मम ओरा । ५-८५॥
 एक विप्रकुल छाडि महीसा । १-१६४॥
 एक विभीषन कर गृह नाहीं । ५-२५६॥
 एक भूप रघुपति कोसला । ७-२११॥
 एक मास तेई जात न जाना । १-११४॥

एक ललित लघु एक बिसाला । २-१३२।८
 एक लालसा उर अति बाढ़ी । ७-१०१।१३
 एक सराहत भरत भलाई । २-३०८।८
 एक हाथ मनुज कपाल । ६-१००।३
 एकटक रहीं रूप अनुरागी । १-३४८।८
 एकटक रहे नयन घट रोकी । १-१४७।५
 एकटक लोचन चलत न तारे । १-२४३।३
 एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं । ६-८०।४
 एकन्ह कें उर तेपि डेराहीं । ६-३।६
 एकहि एकु हनत करि क्रोधा । ६-९४।६
 एकहि भौति भलेहिं भल मोरा । २-२६०।७
 एकहिं ओँक मोर हित एहू । २-१७७।७
 एकहिं एक बढ़ायइ करषा । २-११०।२
 एतना कहा मोर प्रभु कीजे । ५-५६।७
 एवमस्तु इति भइ नभबानी । ७-१०८।२
 एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ । १-१५०।७
 एवमस्तु करुनानिधि बोले । १-१४९।१
 एवमस्तु तब कहेउ भवानी । ५-३३।२
 एहि अवसर सहाय सोइ होऊ । १-१३१।२
 एहि आवरण बस्य मैं भाई । ७-४५।४
 एहि कहैं सिव तजि दूसर नाहीं । १-६९।६
 एहि के हृदयें बसति बैदेही । ६-१८।१३
 एहि तें अधिक कहीं मैं काहा । २-२५१।४
 एहि तें अधिक न मोर सुपासू । २-२५५।८
 एहि तें जसु पैहहिं पितु माता । १-६६।४
 एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा । ६-४५।१४
 एहि बिआहैं बड़ लामु सुनयनी । १-३०९।७
 एहि बिधि कहहु मोरि प्रमुताई । ६-१५।६
 एहि बिधि चरित करत नित नए । ७-४१।३

एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें । ६-११।८
 एहि बिधि प्रमुहि गयउ तैं दूरी । ३-२६।१३
 एहि बिधि बिपुल काल चलि गयऊ । १-१०२।६
 एहि बिधि भरत नगर निअराई । २-१५७।३
 एहि बिधि सदा गगनचर खाई । ५-२।३
 एहि दिबाहैं सब बिधि कल्याना । १-६९।३
 एहि मृग कर अति सुंदर छाला । ३-२६।४
 एहि सम अधिक न अघ अघमाई । २-२१०।२
 एहि सम प्रिय तिन्ह कें कछु नाहीं । ७-१२१।३
 एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं । २-१००।८
 एहि सम बिजय उपाय न दूजा । ६-७९।१०
 एहि सर निकट न जाहिं अमागा । १-३७।३
 एहि स्वल्पउ नहिं ब्यापिहि सोई । ७-१०८।७
 एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं । १-६६।५
 एहिं अवसर को हमहि उबारा । ५-२५।३
 एहिं किए साधु समाज घनेरे । २-२८६।४
 एहिं बिआह अति हित सबही का । १-२२२।१
 एहिं सनेह बस करब अकाजू । २-७२।७
 एही भौति चलेउ हनुमाना । ५-०।८

ऐ

ऐसे नर निकाय जग अहहीं । ६-८।८
 ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा । ५-५४।७
 ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानी । १-२२२।८
 ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी । १-८८।५
 ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा । ५-५०।५
 ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई । २-४५।३
 ऐहहिं बेगि सुनत दोउ आता । २-३०।७

ओ

ओड़िअहिं हाथ असनिहु के चाए । २-३०५८

औ

औरु तुम्हहि को जाननिहारा । २-१२६१२

अं

अंग अंग प्रति छबि बहु काना । ७-७५१५

अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए । १-२४७१३

अंग अंग सुमनोहर बेधा । ३-२६१३

अंग अनंग देखि सत लाजे । ७-१०८

अंग मंग करि पठइअ बंदर । ५-२३१९

अंग मंग करि पठवहु निसिचर । ५-५१३

अंगद कहइ चुनहु हनुमंता । ७-१८११०

अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई । ६-१७११

अंगद सन कह कूपानिधाना । ६-१६१५

अंगद संमत मधु फल खाए । ५-२७७

अंगद हनूमंत बल सीवा । ६-४११२

अंगदादि जे कीस समाजा । १-१७११

अँचइअ नाथ कहहिं मृदु बानी । २-११४११

अंचल बात बुझावहिं दीपा । ७-११७१८

अंड अनेक अमल जसु छावा । २-१५५११

अंडकोस समेत गिरि कानन । ५-२०१६

अंडन्हि कमठ हृदउ जोहि माँती । २-६१८

अंत अमरपति सदन सिधाए । २-१६०१३

अंत राम कहि आवत नाहीं । ४-९१३

अंतकाल रघुपति पुर जाहीं । ७-१४१४

अंतरजामी प्रमुहिं सकोचू । २-२६५५

अंतरधान भए भगवाना । १-१५११६

अंतहुं कीच तहाँ जहँ पानी । २-१८११४

अंध बधिर क्रोधी अति दीना । ३-४१८

अंधहि तोचन लामु सुहावा । १-३४११७

क

कब बिलोकि अलि अबलि लजाहीं । १-२४२१६

कछु अंगद प्रमु पास पबारे । ६-३११६

कछु दिन गए भरत जुवराजू । २-३११३

कछु दिन जाइ रहैं मिस एहीं । १-६०१६

कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा । १-४७१५

कछु दुख तुम्हहि न ब्यापिहि काऊ । ७-११३११

कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी । १-५४१७

कछु न बसाइ भएँ बिधि बामा । २-८११७

कछु निज महिमा प्रगटि जनाई । १-३०५१७

कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे । ५-१७१२

कछुक देवमार्यो मति भोई । २-८४१६

कछुक बनाइ भूप सन माषे । १-१३०१५

कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं । ६-१४१७

कटकटहिं कठिन कराल । ३-११११३

कटकटहिं पूँछ उठाइ । ६-१००११५

कटकटाइ गर्जा अरु धावा । ५-१८१४

कटकटाइ डारहिं ता ऊपर । ६-६४१४

कटत इटिति पुनि नूतन भए । ६-११११२

कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई । ७-७५१८

कटि निषंग कर बान सरासन । ६-१०१८

कटि निषंग कर सर कोदंडा । १-१४६१८

कटि निषंग कसि साजि सरासन । ६-७४१११

कटि भाथी सर चाप चढ़ाई । २-८११४

कटिहउँ तव सिर कठिन कूपाना । ५-१११

कटुक कठोर कुबस्तु दुराई । २-३१०।५
 कटुबादी बालकु बधजोगू । १-२७४।३
 कठिन करम गति कछु न बसाई । २-९८।७
 कठिन काल प्रेरित चलि आई । ५-५२।६
 कठिन कुचाह सुनाइहि कोई । २-२२५।७
 कतहुँ न दीख संभु कर भागा । १-६२।४
 कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा । २-३११।५
 कतहुँ बेट धुनि मूसुर करहीं । १-२९६।६
 कतहुँ राम गुन करहिं बरखाना । १-७५।१
 कतहुँ सुघाइहु ते बड़ दोषू । १-२८०।५
 कथा अपर अब कहउँ बरखानी । १-८७।३
 कथा उमा कै सकल सुनाई । १-८१।२
 कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना । १-९२७।४
 कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं । १-९७।६
 कथा पुरातन कहै सो लागा । १-९६२।४
 कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई । ४-२६।१०
 कथाप्रबंध बिचित्र बनाई । १-३२।२
 कनक कील मनि पान सँवारे । १-३२७।८
 कनक कोट कर परम प्रकासा । ५-२।११
 कनक देह मनि रचित बनाई । ३-२६।२
 कनक तरुहि जनु भेंट तमाला । ३-९।२३
 कनक पिंजरन्हि राखि पढ़ाए । १-३३७।१
 कनक रचित मनिमवन अपारा । १-१७७।६
 कनककसिपु कर पुनि अस हाला । १-७८।२
 कपट कलेवर कलि मल भाँड़े । १-११।२
 कपट कुरंग संग धर धाए । ५-४१।७
 कपट चतुर नहिं होइ जनाई । २-१७।४
 कपट छुरी उर पाहन टेई । २-२१।१
 कपट बेष बिधि कोटिक करहीं । २-६२।१

कपटी भूप उलूक लुकाने । १-२५४।२
 कपटी मित्र सूल सम चारी । ४-६।९
 कपटी मुनि पद रह मति लीनी । १-१७१।७
 कपि केहि हेतु धरी नितुराई । ५-१३।४
 कपि चंचल सबहीं बिधि हीना । ५-६।७
 कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं । ६-५२।५
 कपि जयसील राम बल ताते । ६-८०।३
 कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा । ५-१।७
 कपिदल खरमर भयउ घनेरा । ६-९१।१०
 कपि बल बिपुल सराहन लागा । ६-८३।३
 कपि समीप अति आतुर आए । ६-५८।२
 कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा । ५-२१।३
 कपिकुंजरहि बोलि लै आए । ६-९८।३
 कपिकुल देस परन अब चहई । ६-६९।३
 कपिन्ह देखावत नगर मनोहर । ७-३।१
 कपिन्ह बहोरि मिला संपाती । ७-६६।२
 कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना । ५-५३।३
 कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा । ५-१५।४
 कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ । ५-२८।६
 कब जैहउँ दुख सागर पारा । १-५८।१
 कबहिं लगन मुद मंगलकारी । २-५१।७
 कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा । ५-८।७
 कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं । ७-२४।२
 कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई । १-२७०।७
 कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू । २-२५९।७
 कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं । ७-११२।१३
 कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें । १-१५०।३
 कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना । १-६९।१
 कबहुँ पालनै घालि झुलावै । १-१९१।८

कबहुँक ए आवहिं एहि नातें । १-२२१।८	करगत बेदतत्व सबु तोरें । १-४४।७
कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई । ३-१।१२	करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी । ४-१४।४
कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई । ६-७।१२	करइ द्र उलटि परइ सुरराया । २-२१।१२
कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छपाई । ३-२६।१२	करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा । ७-४।३
कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा । ६-५३।८	करइ निरूपन बिरति बिबेका । १-१६।२।५
कबहुँक सुरति करत रघुनायक । ५-१३।५	करइ बिचार करौ का भाई । ५-८।१
कवि उर अजिर नवावहिं बानी । १-१०४।६	करइ सदा तेहि काजु न दूजा । ७-१०।३
कविकुल अगम करम मन बानी । २-२४।१	करइ सदा नृप सब के सेवा । १-१५।४
कविकुल कानि मानि सकुचानी । २-३०।७	करइ सो राम काज मति आगर । ४-२।१
कवि कोबिद कृतग्र्य संन्यासी । ७-१२।५	करै अन्यथा अस नहिं कोई । १-१२।१
कवि कोबिद न प्रसंसहिं तेही । ७-१।३	करै छोमु संकर मन माहीं । १-८।५
कवि कोबिद बुध बुद्धि विसारद । २-२८।६	करै लाग माया बिधि नाना । ६-५।७
कवित दोष गुन बिबिध प्रकारा । १-८।१०	करै सकल सुख लोभ बिहाई । २-२६।४
कमठ सेष सम धर बसुधा के । १-११।७	करउ सो राम हृदय मम अयना । ३-१०।२०
कमल दलन्हि बैठे जनु मोती । १-११।८	करउँ अकंटक राजु सुखारी । २-१८।५
कमल सरद ससि अहिनामिनी । ३-२१।११	करउँ कथा भव सरिता तरनी । १-३०।४
कर कल्याण अखिल के हानी । ५-४।१२	करउँ कथा हरि पद धरि सीसा । १-३३।४
कर कुठारु आगें यह सीसा । १-२८।७	करउँ नाइ रघुनाथहि माथा । १-२।२
कर कोटंड कठिन सारंगा । ६-८।१०	करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी । १-१।४
कर गहि परम निकट बैठावा । ५-३।४	करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी । १-७।२
कर ते डारि परस मनि देहीं । ७-१०।१२	करउँ सकल रघुनायक लीला । ७-१०।४
कर धरें धनु नाराच । ६-१००।२	करउँ सद्य तेहि साधु समाना । ५-४।३
कर पुस्तक दुइ ब्रि प्रबीना । १-३०।२।८	करौ अजय मख अस मन धर । ६-४।२
कर बिनु करम करइ बिधि नाना । १-११।५	करौ काह असमंजस जीकें । २-२६।५
कर मुद्रिका चोरि चितु लेई । १-३।२६।५	करौ तोहि चख पूतरि आली । २-२।३
करमुद्रिका दीन्हि जन जानी । ४-२।१०	करौ सीस धरि सादर सोई । २-३०।४
कर सर चाप तून कटि भारी । १-२१।८	करौ सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई । ५-५।८
कर सर चाप राम के पाछें । १-२२।७	करगत बेदतत्व सबु तोरें । १-४४।७
कर सर धनुष बाम बर काँधें । १-२४।३।१	करत कठिन रिबिधरम सप्रेमा । २-३।४

करत कथा जेहिं लाग न खोरी । १-३३।२
 करत कथा मन अति कदराई । १-११।१२
 करत कुतरक कोटि मन माहीं । २-२३।७
 करत कोटि बिधि उर अनुमाना । २-२६।६
 करत चरित सुर मुनि सुखदायक । ३-२०।४
 करत जे बन सुर नर मुनि भावन । ३-०।२
 करत टंडवत मुनि उर लाए । २-१०।७
 करत नीक फलु अनइस पावा । २-१६।२।६
 करत प्रकासु फिरइ फुलवाई । १-२३।०।२
 करत परसपर राम बड़ाई । २-२३।३
 करत प्रनामु भरत जिये जाने । २-२३।१।३
 करत फिरत चारिउ सुकुमारा । १-२०।२।४
 करत बदन पर भरत बड़ाई । २-२५।८।७
 करत बिचार उरग आराती । ७-५।७।६
 करत बिचारु न बनत बनाया । १-४।८।२
 करत बिबिध जप जोग बिरागी । १-२२।५।४
 करत मनोरथ आतुर धावा । ३-९।३
 करत मनोरथ बहु मन माहीं । ५-४।१।४
 करत मनोरथ सकुचत अहहीं । १-३४।२।४
 करत राम हित मंगल काजा । २-६।२
 करत सुरति सय बार हिए की । १-२।५
 करतब बायस बेष मराला । १-११।१
 करतल गत आमलक समाना । १-२१।७
 करतल गत न परहिं पहिचार्ने । १-२०।५
 करतल चाप रुचिर सर सौधा । ३-२६।७
 करतल भोगु जोगु जग जेही । २-१९।८।६
 करति न चरन परस अति गीता । १-२६।४।८
 करते नहिं बिलंबु रघुराई । ५-१।१
 करन पुनीत हेतु निज बानी । १-३६।०।८

करनधार बिनु जिमि जलजानू । २-२७।५
 करब कवन बिधि रिपु सैं जूडा । ६-७।७
 करबि जनक जननी की नाई । २-७।१।६
 करवाउब बिबाहु बरिआई । १-८।२।६
 कर्म कि होहिं स्वस्त्वहि चीन्हें । ७-११।३
 करम कथा रबिनंदनि बरनी । १-१।१
 करम प्रधान सत्य कह लोगू । २-१०।८
 करम बचन मन भव कबि कहहीं । २-१६।६।७
 करम बिबस दुख सुख छति लाहू । २-२८।१।३
 करम सुभासुन देइ बिधाता । २-२५।४।६
 करमु कठिन कछु टोसु न मोहू । २-६।८।५
 करहि जाइ तपु अस जिये जानी । १-७।२।५
 करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं । १-२०।५।४
 करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे । २-११।१।१
 करहिं कलप कोटिक भरि लेखा । १-३४।१।२
 करहिं कलपतरु तासु बड़ाई । २-११।२।७
 करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा । १-२०।४।५
 करहिं कोसलाधीस दोहाई । ६-४।३।२
 करहिं गान कल कोकिलबयनीं । १-२८।५।२
 करहिं गान कलकंठि लजाएँ । १-३१।७।३
 करहिं छोहु सब रौरिहि नाई । २-२।४
 करहिं जोग जप तप तन कसहीं । २-१३।१।७
 करहिं ते सहहिं महा भव भीस । ७-४।०।३
 करहिं दिक्स निसि जात न जानहिं । ७-२।५।८
 करहिं न प्रान पयान अभागे । २-७।८।६
 करहिं न सुनि आचरजु सयाने । १-१३।१।४
 करहिं नाद सुनि धीरजु भागा । २-६।१।८
 करहिं निछावरि अगमित भौंती । १-३४।८।२
 करहिं पुनीत सुफल निज बानी । १-१३।८

करहिं बिचारु करीं का भाई । १-५१४	करहुँ बहुत रघुनायक छोहू । १-१६३
करहिं बिधंस आव दसकंधर । ६-८४३	करि अनाथ जन परिजन गाऊँ । २-५६४
करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता । १-३१२४	करि करि सुरति कृपानिधान की । ६-१८११
करहिं भालु कपि एक एक बारा । ६-६४५	करि कुचाति अंतहुँ पछितानी । २-२०६६
करहिं भालु कपि अद्भुत करनी । ६-४६७	करि कुल रीति सुमंगल गाई । १-३२१४
करहिं मेघ तहैं तहैं नम छाया । ३-६५	करि केहरि अहि बाघ बराई । २-१३५५
करहिं राम कल कीरति गाना । १-३३८	करि केहरि मृग बिहग बिहारु । २-१३१४
करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा । ७-२४४	करि केहरि सर सरित अपारा । २-१७७
करहिं सदा सेवक पर प्रीती । ५-६६	करि छल सुअर सरीर बचावा । १-१५६३
करहिं सिद्ध मुनि प्रभु के सेवा । ४-१२४	करि दिन चारि चरन सेवकाई । २-१०३४
करहु कतहुँ अब टाहर टाटू । २-१३२१	करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं । ७-१००६
करहु कवन कारन तपु भारी । १-७७३	करि दंडवत कहत अस भयऊ । ३-११६
करहु क्रिया परिहरि सब सोका । ६-१०४७	करि दंडवत कहत कर जोरी । २-३२२६
करहु कृपा करि होहु सहाई । १-१३१५	करि दंडवत बिनय बहु भारी । २-२१५२
करहु कृपा जन जानि मुनीसा । १-१७६	करि न सकइ कछु निज प्रभुताई । ७-११५७
करहु कृपा बिनवउं कर जोरें । १-१०८५	करि न सकहिं प्रभु गुन मन लेखा । २-१९१८
करहु कृपा सुत सेवक जानी । १-११७	करि प्रनाम बय बिनय निहोरे । २-३२२३
करहु चाप गुरुता अति थोरी । १-२५६८	करि प्रनामु रथ त्वागेउ तबहीं । २-२७४२
करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू । २-७७८	करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई । २-३११४
करहु तात पितु बचन प्रवाना । २-१७३५	करि परितोषु बिदा तब कीन्हे । २-१०३८
करहु तासु अब अंगीकारा । १-८८४	करि पितु मातु सुजन सेवकाई । २-१५१५
करहु प्रजा परिवारु सुखारी । २-३०५५	करि पूजा नृप मुनि बैठाए । १-१२१८
करहु बिचारु सुजन मन माहीं । १-२४४	करि बरुथ महुँ मृगपति जथा । ६-३६३
करहु बिधंस जग्य कर जाई । ६-७४७	करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा । १-२१२२
करहु भरत पद प्रीति सुहाई । २-२१८८	करि बिचार देखैउं कछु नाहीं । ७-११३
करहु मातु पितु पद सेवकाई । २-७०११	करि बिनती आनीं दोउ भाई । १-२०५७
करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं । ६-०६	करि बिनती गिरजहिं गृह त्याए । १-८११
करहु सो बेगि दास मैं तोरा । १-१३१७	करि बिनती रथ रामु चढ़ाए । २-८२१
करहु हरषि हिर्यै रामहि टीका । २-४३	करि बिनती समुझाउ कुमारा । ४-११३

करि बौदिक लौकिक सब रीती । १-३११।१
 करि माया नमु के खग गहई । ५-३।१
 करि मुनि बेष फिरहिं बन बनहीं । २-२१०।८
 करि मुनि बेष लखन सिय साथी । २-२६१।४
 करि सनमानु आश्रमहिं आने । २-१२४।२
 करि सिंगार पलनाँ पौढ़ाए । १-२००।१
 करि सिंगारु सरखी ले आई । १-१९।५
 करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी । ७-१०२।१
 करि हित हरहु चाप गरुआई । १-२५६।६
 करिअ जतन जेहिं होइ निवारन । २-३१।५
 करिअ दैव जौं होइ सहाई । ५-५०।१
 करिअ बिबाहु सुता अनुरूपा । १-७०।३
 करिअ राम पद पंकज नेहा । ७-१२१।१३
 करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना । २-२६७।८
 करिआ मुह करि जाहि अभागे । ६-४८।२
 करिनि कलपतरु मनहुं निपाता । २-३४।१
 करिहुउँ एहि पर कृपा बिसेषी । ७-१०८।४
 करिहुउँ चरित भगत सुखदाता । १-१५१।२
 करिहुउँ जातुधान कर नासा । ३-२८।१
 करिहुउँ बल अनुमान सहाई । ५-५१।३
 करिहुँ बहुत कहीं का थोरा । ६-४८।६
 करिहुँ बाउ मुदित मन माहीं । २-६६।३
 करिहुँ रघुपति कथा सुहाई । १-१३।१
 करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी । १-१३६।७
 करिहहिं कृपा नानुकुल नाथा । ५-६।२
 करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी । २-११।७
 करिहहिं बिधि मो सन ए प्रीती । ४-३।८
 करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा । १-८१।५
 करिहहिं सासु ससुर सम सारा । २-६५।१

करिहि मोहि रघुबर के दासी । १-२५८।५
 करिहिं कथा मुद मंगल मूला । १-१४।७
 करुनाकर राम नमामि मुदा । ६-११०।७
 करुनाकर सुजान भगवाना । २-२४३।१
 करुनामय उर अंतरजामी । २-६५।८
 करुना सागर कीजिअ सोई । २-२६८।२
 करेहु सो जतनु बिबेक बिचारी । १-५१।३
 करै अन्यथा अस नहिं कोई । १-१२७।१
 करै छोमु संकर मन माहीं । १-८२।५
 करै लाग माया बिधि नाना । ६-५०।७
 करै सकल सुख लोभ बिहाई । २-२६७।४
 कलप एक तेहि लागि अवतारा । १-१२३।५
 कलप कोटि लागि जाहिं न जाए । १-३३१।६
 कलपांत न नास गुमानु असा । ७-१०१।४
 कलस मनहुँ रबि ससि दुति निंदत । ७-२६।७
 कलि कुवालि कुलि कलुष नसावन । १-३४।१०
 कलि कौतुक तात न जात कही । ७-१००।२
 कलि प्रमाव बिरोध चहुँ ओरा । ७-१०३।५
 कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ । १-२१।८
 कलिमल तृन तरु मूल निकटिनि । १-३८।१३
 कलि मल विपुल विमंजन नामः । ३-१०।१५
 कलि मल रहित सुमंगल भागी । १-१४।११
 कलि मल समानि मनोमल हरनी । ७-१२८।१
 कलिजुग सोइ म्यानी सो बिरागी । ७-१७।७
 कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना । ७-१७।६
 कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं । ७-४।१
 कलुष अनीक दलन रनधीरा । २-१०४।६
 कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ । २-१०५।१
 कवन प्रकार कहै कवि कोऊ । १-२४।१७

कवन भाँति लंकापति मारा । ४-६७
 कवन भाँति समुद्रावै तोही । ४-६०।३
 कवन सकइ भव बंधन छोरी । १-१११।३
 कवन हेतु उपजा भय तोरें । ६-७।४
 कवन हेतु नहीं करत पयाना । २-१४३।५
 कवन हेतु दिचरहु बन स्वामी । ४-०।८
 कवनि राम बिनु जीवन आसा । २-५०।५
 कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाही । १-१६६।११
 कस न भजहु भंजन भव भीरहि । ४-२९।८
 कस न नरीं रघुपति सर लागें । ३-२५।६
 कस न राम तुम्ह राखहु नीती । १-२१७।७
 कस न सुमनमय मारगु कीन्ह । २-१२०।४
 कस न होइ मगु मंगलदाता । २-२१६।५
 कसमसात आइ अति घनी । ६-८६।११
 कह कपि नहीं अघाउँ थोरें जल । ६-५६।७
 कह कपीस अति भयें अकुलाना । ४-११।२
 कह कर जोरि बचन अति दीना । २-१३।५
 कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे । १-१३७।४
 कह लछिमन सन परम समीता । ३-२७।२
 कह लंकेस मंत्र लागि काना । ६-१०।६
 कह सीता हरु मम दुख मारा । ५-१।६
 कह सुग्रीव सबहि समुद्राई । ४-२१।५
 कह सुनु रावन मोर सिखावा । ३-२८।५
 कह हनुमान सुमति अवगाहा । ४-२५।५
 कहैं अस पुरुष कहैं असि नारी । २-१११।४
 कहैं गए नृपकिसोर मनु चिंता । १-२३१।११
 कहैं चंद्रिका चंदु तजि जाई । २-१६।६
 कहैं दुख समउ प्रानपति पेर्यें । २-६६।४
 कहैं नल नील दुबिद बलवंता । ६-४२।२

कहैं पाइअ प्रभु करिअ पुकारा । १-१८।११
 कहैं प्रिय पुत्रबधू बैदेही । २-१५।२
 कहैं मति मोरि निरत संसारा । १-११।१०
 कहैं यह दरसु पुन्य परिनामा । २-२२२।७
 कहैं रघुनाथु लखनु बैदेही । २-१४।३
 कहैं रघुबीर कौसलाधीसा । ६-१२।८
 कहैं लगी कहैं कुरोग अनेका । ४-१२०।३
 कहैं स्यामल मृदुगात किसोरा । १-२५।४
 कहैं सिय राम लखन प्रिय भ्राता । २-१५।८
 कहैं सिय रामु लखनु दोउ भाई । २-१६।३।३
 कहैं सुंदर सुत परम किसोरा । १-२०।६
 कहइ कपीस सुनहु नरनाहा । ५-४।२।५
 कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना । २-११।३
 कहइ न निज अपराध बिचारी । १-६०।७
 कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी । ५-३१।४
 कहै काह छलि छुअति न छोँही । २-२८।५
 कहउँ कथा निज पूछे तोरें । १-१६।३।४
 कहउँ खगेस सुनहु मन लाई । ४-७।११
 कहउँ जथामति कथा सुहाई । ४-७।३।१
 कहउँ न कछु ममता उर आनी । ४-४।३
 कहउँ न तोहि मोह बस अपने । २-११।६
 कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की । १-२२।३
 कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाही । १-२७।३।३
 कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा । २-२१।६।६
 कहउँ बिचित्र कथा विस्तारी । १-१४।०।११
 कहउँ बुझाइ सुनहु अब सोई । १-१८।०।७
 कहउँ राम कै कथा सुहाई । १-४६।५
 कहउँ सुनहु अब रघुपति लीला । १-१०।४।११
 कहउँ सुमाउ न कछु अभिमानू । १-२५।२।३

कहतै सुमाउ नाथ पतिजाहू । २-७१४
 कहत अनुज सन कथा रसाला । ३-४०४
 कहत कथा अनेक संबादा । ३-३६१२
 कहत दसानन नयन तरेरी । ६-२१३
 कहत दसानन सबहि सुनाई । ५-५६१५
 कहत देव हरभत बरिजाई । २-३०८१९
 कहत न बनइ जान जेहिं जोवा । १-३५५४
 कहत परम हित मंत्र बिचास । ६-६३५
 कहत प्रीति सारद सकुचाई । २-२३७१२
 कहत बचन भरि लोचन बारी । ६-५८४
 कहत बचन मन परम उछाहा । ७-६७१८
 कहत बिराग ग्यान गुन नीती । ३-५६१२
 कहत भरे जल लोचन कोए । २-११७७
 कहत महातम अति अनुरागा । २-१०५४
 कहत रामु सब सन मृदु बानी । २-७१७
 कहत लखन सन रामु हृदयै गुनि । १-२२११९
 कहत सखा सन बचन सुबानी । २-११८४
 कहत समय सम नीति बिचारु । २-२२६६
 कहत साधु महिना सकुचानी । १-२११९
 कहत सुनत एक हर अबिबेका । १-१४१२
 कहत सुनत दुख दूषन हरनू । २-२२२१९
 कहत सुनत सब कर हित होई । १-११२१९
 कहति सचिव सन गिरा सुहाई । २-१६७
 कहतैतै तोहि समय निरबहा । ६-६२६
 कहब काह मैं तिन्हहि बिघाता । २-१४५१९
 कहब ग्यान बिग्यान बिचारी । १-३६१९
 कहबि न तात लखन तरिकाई । २-१५१८
 कहसि न सुक आपनि कुसत्वाता । ५-५२३
 कहहिं जोतिषी आहिं बिघाता । १-३११८

कहहिं परस्पर मिथ्याबादी । ७-७२१६
 कहहिं परसपर लोग लोगाई । २-१०१३
 कहहिं परसपर हरि गुन गाहा । १-४३१८
 कहहिं बचन भय कंपित गाता । १-१४१६
 कहहिं बचन मृदु सरल सुमाएँ । २-११५५
 कहहिं बिरचि रचौ काज नारी । १-३३३१८
 कहहिं बेट बुध ते बुध नार्हौ । २-२३०४
 कहहिं महा मुनिबर दमसीला । ७-२१५
 कहहिं राम कहूँ ब्रह्म अनादी । १-१०७७
 कहहिं सकल तेहि सम न सयानी । २-२२१५
 कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी । २-८८१९
 कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता । २-१११३
 कहहिं सप्रेम बचन सब माता । १-३५५७
 कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा । ७-६८१६
 कहहिं सुनतै हरषित खगनाहा । ७-१०११९
 कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता । १-१३१५
 कहहिं सुनहिं समुझाहिं बिधि नाना । १-२११८
 कहहिं संत तव पद अंबराधक । ४-६१७
 कहहु अमर आए केहि हेतू । १-८७७
 कहहु करहु जस प्राकृत राजा । २-१२६६
 कहहु कवन अघ परम कराता । ७-१२०६
 कहहु कवनि सिधि लोक रिझाएँ । १-१६१२
 कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा । २-१४७१२
 कहहु कहिहि के कीन्ह मलाई । २-१८०५
 कहहु काह निज निज मति माई । ६-११४
 कहहु कृपाल काग कहै पावा । ७-५४१९
 कहहु तात कवनी बिधि पाए । ६-३७७
 कहहु तूल केहि लेखे मार्ही । १-११११९
 कहहु न कहाँ चरन कहै माया । १-२८१५

कहहु नाथ अति विमल विबेका । १-११०।३
 कहहु नाथ का करिअ उपाऊ । १-६७।८
 कहहु नाथ जानि करहु दुराऊ । १-२१५।४
 कहहु नाथ जिमि रावन मारा । १-१०९।७
 कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी । ३-५।१
 कहहु नाथ भव भंजन भौरा । ३-४४।५
 कहहु बनावन बेगि बजारू । २-५।७
 कहहु बिचारि उचित का आजू । २-२७०।५
 कहहु बिदेह भूप कुसलाता । २-२६९।६
 कहहु विप्र निज कथा बुझाई । ४-१।४
 कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही । ४-११४।८
 कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ । १-१०८।१९
 कहहु बेगि का करिअ बिचारा । ६-४७।४
 कहहु मोहि अति कौतुक मारी । ७-५४।२
 कहहु राम रघुपति जनपालक । ७-२७७।७
 कहहु लालसा होहि न केही । १-३४४।४
 कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ । २-२५४।२
 कहहु सुखेन जथा रुचि जेही । २-१८०।४
 कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी । १-४६।१९
 कहहु सो करत न लावउँ बारा । १-२०६।८
 कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नहीं । १-१८४।६
 कहहु सो भगति करहु जेहिं दाय । ३-१३।८
 कहा अनुज सन सयन बुझाई । ३-१६।२०
 कहा कबिन्ह परि कहे न जाना । ७-१२४।७
 कहा घतै कर करहु बनावा । ५-३३।६
 कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई । १-१४९।७
 कहा बिदेह नृपहि समुझाई । १-३३।१६
 कहा बिबिधि बिधि म्यान बिसेषा । ७-१६।३
 कहा बोलाइ बजावहु बाजा । १-११२।६

कहा लाभ आर्गे सुत तोही । ७-४७।७
 कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा । ६-३५।६
 कहाँ रामु रन हतौ प्रचारी । ६-१०२।४
 कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ । १-१३२।२
 कहि अस पैम मगन मुनि भयऊ । २-२०९।६
 कहि अस बचन हैसा दससीसा । ६-२३।९
 कहि असीस पूछी कुसलाई । १-३०७।२
 कहि कछु लखनु बहुरि मुसुकाने । १-२७६।५
 कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई । २-७७।६
 कहि कहि स्वाद भेट गुन नामा । २-२४९।३
 कहि किमि सकहिं सिन्हहि नहिं बयना । ७-८७।४
 कहि गुन राम प्रबोधी रानी । २-३०८।७
 कहि जय जयति कौसलाधीसा । ६-५८।८
 कहि जय जानकि जीवन रामा । २-२२४।७
 कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए । १-३३१।८
 कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी । ५-२।१०
 कहि न जाइ उर आनँदु जेता । १-३२२।४
 कहि न जाइ कपि जूथप भौरा । ६-४।२
 कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई । ५-११।६
 कहि न जाइ जस भयउ बिषादू । २-१४१।६
 कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें । १-१०४।२
 कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देखा । १-३२५।५
 कहि न जाइ जेहि भौंति बनावा । १-११३।१९
 कहि न जाइ मन भाव सुहावनि । १-२१६।३
 कहि न जाइ मनहीं मन भाई । १-११५।४
 कहि न जाइ सो दसा भवानी । ३-१।१०
 कहि न जाहिं जेहि भौंति सँवारी । १-२१९।१९
 कहि न सकइ कछु अति अकुलाना । २-१८।४
 कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी । २-११।१९

कहि न सकइ रावन भय भीता । १-१८३।६
 कहि न सकइ सारद अहिराजा । १-१९४।२
 कहि न सकइ सारदा बिमलमति । १-३४।२
 कहि न सकउँ निज पुन्य प्रमाऊ । १-२१६।१
 कहि न सकहिँ कछु करहिँ बिचारु । २-२५१।२
 कहि न सकहिँ कछु मन सकुचानी । १-२३१।८
 कहि न सकहिँ सारद श्रुति तेते । ३-४५।८
 कहि न सकहिँ सत कोटि अहीत्ता । १-१०४।३
 कहि न सिराहिँ सुनहु रघुनाथा । १-३४१।३
 कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा । ४-२७।१
 कहि निज भाग्य बिभव बहुलाई । १-३२०।२
 कहि नित नेति निरूपहिँ बेदा । २-९२।८
 कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा । १-२७३।४
 कहि परमारथ बचन सुदेसे । २-१६८।८
 कहि प्रमु कुसल भरत समुझाई । ७-२।३
 कहि प्रमु सुजसु देहिँ तब जाना । ६-४।८
 कहि प्रिय बचन काम परितोषा । १-१२६।१
 कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे । २-४५।७
 कहि प्रिय बचन सकल सनमाने । २-१३४।७
 कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्है । ६-१०५।८
 कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई । २-१६६।३
 कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु । ४-२२।११
 कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझायउ । १-१८८।३
 कहि बहु कथा पिता समुझायउ । ६-७।६
 कहि बिबेकमय बचन सुनाए । २-१६६।२
 कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे । २-१३६।२
 कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई । २-५६।८
 कहि मृदु बचन बोलाई रानी । १-३५४।७
 कहि मृदु बचन लिए उर लाई । ७-८७।७

कहि मृदु मधुर मनोहर बचना । १-२२४।३
 कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना । १-१०७।२
 कहि सच्चिदानंद परधाना । १-४९।७
 कहि सचिवहिँ सोवन मृदु बानी । २-८१।१
 कहि सुपथ सुर बरषहिँ फूला । २-२३७।६
 कहि सुमट मौजहिँ हाथ । ६-१००।११
 कहि हरि नाम टीन्ह पट डारी । ३-२८।२५
 कहिअ कृपा करि करिअ समाजू । २-३।२
 कहिअ न आपन जानि अकाजा । १-१६३।२
 कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही । १-४५।६
 कहिअ रमासम किमि बेदेही । १-२४६।६
 कहिअ होइ मल कासु मलाई । २-२६६।७
 कहिहउँ कवन सँदेस सुखारी । २-१४५।२
 कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी । १-११३।५
 कहिहउँ नाइ राम पट माथा । १-१२।९
 कहिहहिँ सुनिहहिँ समुझि सचेता । १-१४।१०
 कही कथा भइ संगति जैसेँ । ५-१२।११
 कही बिभीषन नीति बखानी । ५-४०।१
 कही सहित अभिमान अमार्गे । ३-२४।१
 कही सुनी जिन्ह संकर निंदा । १-६३।१
 कही सो प्रगट होति किन भाई । ५-१२।७
 कही संमु अधिकारी पाई । ५-४७।४
 कही कथा उपदेस बिसेषी । ४-२५।११
 कही कथा सुंदर सुख हेतू । १-५७।५
 कहु केहि नृपहिँ निकासीं देसू । २-२५।२
 कहु जग मोहि समान को जोघा । ३-२५।२
 कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा । १-२६१।३
 कहु पितु मरन हेतु महतारी । २-१५१।६
 कहु सट तोहि न प्रान कइ बाधा । ५-२०।३

कहु सिय राम लखन संदेसू । २-१४८।५
 कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू । २-१५४।१
 कहूँ कहूँ सियँ कहूँ लखन लगाए । २-२३६।७
 कहूँ न राम सम स्वामि सँकोची । २-३१२।४
 कहूँ पट कहूँ निबंघ धनु तीरा । २-२३९।८
 कहे कछुक परमारथ गाथा । २-२४६।२
 कहे कछुक साटर खगनाथा । ७-११०।१
 कहे नाम गनि मंगल नाना । २-५।२
 कहे बिप्र जघापि प्रमु जाना । १-२०९।८
 कहे सकल रघुपति गुन गाथा । ७-१।५
 कहँ कथा तव परम अकाजा । १-१६५।१
 कहेउ जान बन केहिँ अपराधा । २-५३।७
 कहेउ नरस रजायसु देहू । २-२।८
 कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी । ३-२९।४
 कहेउ बजाउ जुझारु ठौलू । २-१११।३
 कहेउ बहोरि देन बलिभागा । २-७।५
 कहेउ भरत सन मुजा उठाई । २-२३६।१
 कहेउ मातु सन अति मृदु बानी । २-५२।५
 कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना । ७-११२।७
 कहेउ रघेहु पुर बिबिध बिताना । २-५।५
 कहेउ राम सब भीति सुहावा । २-८८।५
 कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए । २-१११।४
 कहेउँ तात जानहिँ कोबिद नर । ७-४०।२
 कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तँ । १-२२।५
 कहेन्हि करिअ उत्तपात अरंभा । ६-४३।६
 कहेसि अमित आचरज बखानी । १-१६२।६
 कहेसि जो संसय निज मन माहीं । ७-५८।३
 कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही । ३-१।१०
 कहेसि बजावहु जुद्ध निसाना । ६-८५।२

कहेसि बहुरि रावन अवतारा । ७-६३।८
 कहेसि राम लछिमन संबादा । ७-६४।२
 कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई । ४-०।४
 कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई । २-८१।३
 कहे लाग खल निज प्रमुताई । ६-७।१
 कहे सो अधम अयान असाधू । २-२०६।७
 कहेँ काह मुख एक उछाहू । १-३२०।४
 का चुप साधि रहेहु बलवाना । ४-२९।३
 का देखाइ चह काह देखावा । २-४७।१
 का अनमनि हसि कह हँसि रानी । २-१२।५
 का अपराध रमापति कीन्हा । १-१२३।७
 काई बिषय मुकुर मन लागी । १-११४।१
 काक कहहिँ कलकंठ कठोरा । १-८।१
 काक होहिँ पिक बकउ मराला । १-२।१
 काग देह जेहिँ कारन पाई । ७-११३।१५
 कागमसुडि गरुड़ प्रति गाई । ७-५२।८
 काजु नसाइहि होत प्रमाता । ६-५९।५
 काटइ निज कर सकल सरीरा । ६-२८।१०
 काटँ सीस कि होइअ सूरा । ६-२८।१
 काट्रेसि परम कराल कृपाना । ३-२८।२१
 कानन काह राम कर काजू । २-४९।२
 काम अच्छत सुख सपनेहुँ नाहीं । ७-८९।१
 काम कलम कर मुज बलसीवा । १-२३२।७
 काम कृसानु बढ़ावनिहासि । १-१२५।३
 काम क्रोध कैरव सकुचाने । ७-३०।४
 काम लोम मद रत अति कोही । ६-१०९।१
 कामद घन दारिद दवारि के । १-३१।८
 कामधेनु मै भूमि सुहाई । १-१५४।१
 कामधेनु सय सरिस सुहाई । २-२६।११

कामरूप केहि कारन आया । ५-४२१६
 कामसुरमि सम सील सुहाई । १-३३०१२
 कामहि बोलि कीन्ह सनमाना । १-१२४१५
 कामी काक बलाक बिचारे । १-३७१५
 कामी पुनि कि रहहि अकलंक । ७-११११२
 कामी बचन सती मनु जैसे । १-२५०१२
 कार्य बचन मन पति पद प्रेमा । ३-४११०
 कारन एक कठिन सुनु सोऊ । १-१६४११
 कारन कवन कुटिलपनु ठाना । २-४६१६
 कारन कवन भरत आयवन् । २-२२६११
 कारन बिनु रघुनाथ कृपाला । ३-३२११
 कारन मनुज दनुज कुल घालक । ५-४९१४
 काल करम गति अघटित जानी । २-१६४१६
 काल करम जिव जाके हाथा । ६-५१९
 काल करम बिधि सिर धरि खोरी । २-२४३१८
 काल करम सुभाउ गुन मच्छक । ७-३४१८
 काल कर्म सुभाव गुन घेरा । ७-४३१५
 काल बस्य उपजा अभिमाना । ६-७६
 काल बिबस कहू भेषज जैसे । ६-९१५
 काल बिबस मन उपज न बोधा । ६-३६६
 काल त्रोन सजीव जनु आया । ६-७०३
 कालकूट फलु दीन्ह अमी को । १-१८१८
 कालकूटमुख परमुख नाहीं । १-२७६१७
 कालदंड हरि चक्र कराला । ७-१०८११३
 काल निसा सम निसि ससि नानू । ५-१४१२
 कालनेमि जिमि रावन राहू । १-६१६
 कालसर्प जनु चले सपच्छा । ६-६७३
 कालहु जीति निमिष मुहु आनी । ४-१७१२
 कालहु जीति सकहि संग्रामा । ४-६१२९

कालहु डरहि न रन रघुबंसी । १-२८३१४
 कालु सदा दुरतिक्रम भारी । ७-१३१८
 कासी मरत परम पद लहहीं । १-४५१४
 कासी मुकुति हेतु उपदेसू । १-१८३
 काह करिअ कछु सूझ न काहू । २-४८७
 काह कहिहि सुनि तुम्ह कहू लोगू । २-४९७
 काह कीट बपुरे नर नारी । २-२५३
 काह कीन्ह करतार कुचाली । २-२४५५
 काहि कहै केहि दूषनु देई । २-२७२११
 काहि कहौ यह जान न कोई । ५-१४१५
 काहि न सोक समीर डोलावा । ७-७०३
 काहुहि बादि न देखअ दोसू । २-१२११
 काहुँ न इन्ह समान फल लाधे । १-३०९१२
 काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा । २-४४७
 काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़े । १-२६०७
 काहुँ न संकर घाप चढावा । १-२५१११
 काहू के गृह ग्राम न गयऊँ । १-१६६१४
 काहू तें कछु काज न होई । १-१८३१८
 काहे तव मुख रहे सुखाई । ६-६१८
 काहे न बिपति जाल नर परहीं । ४-१११५
 काहे न बोलहु बचनु सँभारें । २-२९३
 काहे न मागसि अस बरदाना । ७-८४१२
 किए कठिन कछु दिन उपबासा । १-७३१५
 किए जातुघान बिहाल । ६-११२१६
 किए जेहि जुग निज बस निज बूते । १-२२१२
 किए जोग जप तप मख दाना । ७-१५७
 किए बस्य सुर गंधर्व । ६-११२७
 किए बिदा बालक बरिआई । १-२२४१८
 किए विश्रामु न मग महिपाला । २-२७१५

किए सकल नर नारि बिसोकी । ७-५।६
 किएँ काजु मन हरष बिसेषा । १-२८।७
 किएँ जोग तप ग्यान बिरागा । ७-६१।९
 किएँ तिलक गुन गन बस करनी । १-०।४
 किएँ बिचारु न सोचु खरो सो । २-३१३।५
 किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका । २-२६७।५
 किंकर कंचन कोह काम के । १-११।३
 किंनर निसिचर पसु खग ब्याला । ७-८०।२
 किमि कबि कहै मूक जिमि स्वादू । २-२४४।६
 किमि कहि जात मोदु मन जेता । १-३२९।३
 किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना । ७-११०।९
 कियो भूषन तिय भूषन ती को । १-१८।७
 कियो मृगनायक नाद गैभीरा । ६-६८।२
 किलकनि चितवनि भावति मोही । ७-७६।७
 किलकिलाइ धाए बलवाना । ६-६४।३
 की अज अगुन अलखगति कोई । १-१०७।८
 कीचहिँ मिलइ नीच जल संग । १-६।९
 कीजिज काजु रजायसु पाई । २-३७।२
 कीजे सफल मुनिन्ह पर दाया । ३-१२।१७
 कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना । ७-६८।२
 कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना । २-२११।३
 कीन्ह कैकई सब कर काजू । २-१७९।५
 कीन्ह गवन रघुनाथ पिरितेँ । २-२२५।२
 कीन्ह चहउँ निज प्रमु कर काजा । ५-२१।६
 कीन्ह चहत जइ जमपुर गेहूँ । १-२७९।६
 कीन्ह जोहारु माथ महि लाई । २-१९२।८
 कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा । ६-४४।७
 कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू । २-२४२।५
 कीन्ह दूरि दुखु टारुन दाहू । २-२४३।३

कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा । २-१३३।६
 कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी । २-८६।२
 कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा । २-३१८।३
 कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा । २-३२३।२
 कीन्ह निवास रमापति जब ते । ४-१२।५
 कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई । १-५५।२
 कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई । २-१९८।१९
 कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी । १-३३६।३
 कीन्ह प्रनामु त्रिबेनिहिँ आए । २-२०३।३
 कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू । २-१९८।५
 कीन्ह बिचारु न अवसर जाने । १-३३७।७
 कीन्ह बिदेह बिटा कर साजू । १-३३४।२
 कीन्ह भरत दसगात बिधाना । २-१६९।६
 कीन्ह मली बिधि सब ब्यवहारु । १-३१८।२
 कीन्ह मुनीसहिँ दंड प्रनामू । २-१९२।५
 कीन्ह सुजल हित कूप बिसेषा । २-३०९।५
 कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई । २-२९९।५
 कीन्हि तहाँ रावन रजधानी । १-१७८।६
 कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई । २-३१८।१९
 कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी । १-३५१।८
 कीन्हिउ बहु बिधि बिनय बहोरी । ७-८२।८
 कीन्हिहु प्रस्न जागत हित लागी । १-१११।८
 कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अति मूढा । १-४६।४
 कीन्ही कृपा जानि जन दीना । ३-७।४
 कीन्ही जाइ तिलक की रचना । ६-१०५।५
 कीन्ही सुमन वृष्टि हरषे सुर । ६-११८।६
 कीन्हे मुकुत निसाचर झारी । ६-११३।९
 कीन्हे स्वबस नगर नर नारी । १-२२८।५
 कीन्हेसि अस जस करइ न कोई । २-५०।३

कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेषा । ६-४११८
 कीन्हेसि पुनि प्रबंध बिधि नाना । १-१२५६
 कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला । ६-४२१८
 कीन्हेसि रामचंद्र कर फाजा । ५-२७१४
 कीन्हेहु कपट लाग भल मोही । १-१६२१८
 कीन्हेहु सुलम सुधा बसुधाहूँ । २-२०८६
 कीरति कलित लोक तिहुँ मायी । १-३५८१७
 कीरति जासु सकल जग मायी । १-१५१४
 कीरति भूति सुगति प्रिय जाही । २-७११७
 कीरति रही भुवन भरि पूरी । १-३५६१३
 कीरति सुगति भूतिमय बेनी । २-३०५१४
 कुँअरि कुआरि रहउ का करउँ । १-२५१५
 कुँअरि हरषि मेलेउ जयमाला । १-१३४१३
 कुकवि कहाइ अजसु को लेई । १-२४६१३
 कुंचित कच भेचक छवि छाए । ७-७६६
 कुटिल कठोर मुदित मन बरनी । २-१५११८
 कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी । २-१७११७
 कुटिल काक इव सबहि डोराहीं । १-१२४१८
 कुटिल कालबस निज कुल घालकु । १-२७३११
 कुटिल कुचाली कुमति कुजाती । २-२५०१४
 कुटिल केस जनु मधुप समाजा । १-१४६१५
 कुटिल मयंकर बिगत बिबेका । १-१७११७
 कुटिल भूप हरषे मन माहीं । १-२६११५
 कुटिल रानि पछितानि अघाई । २-२५११५
 कुधर डगमगत डोलति धरा । ६-६११८
 कुबरीं टसन जीभ तब चाँपी । २-१११२
 कुमकरन आवत रनघोरा । ६-६४१२
 कुमकरन घननादहि मारेहु । ६-८११६
 कुमकरन सम सोवत नीके । १-३१६

कुंमज लोभ उदधि अपार के । १-३११६
 कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली । २-२७१८
 कुमति कीन्ह सब बिस्य दुखारी । २-११११
 कुयोगिनां सुदुर्लभं । ३-३१११
 कुल कलंकु तेहि पावैर आना । १-२८३१३
 कुल समेत जगु धावन कीन्हा । २-११३१६
 कुलगुरु सम हित माय न बापू । २-२१२१२
 कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू । २-२६११६
 कुलिस चारि जावत अति धाए । ६-३११८
 कुलिस समान लाग छाँड़ै सर । ६-१०११
 कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई । ७-१२०१३४
 कुस किसलयमय मुदुल सुहाई । २-८८१७
 कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तैं । २-१५६१५
 कुसमउ समुझि सोक परिहरहू । २-१६४१५
 कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी । १-४११२
 कुसमयें तात न अनुचित मोरा । २-३०५१७
 कुसल अनुज कपि सेन समेत । ६-१०६१६
 कुसल कुठाहर बास तुम्हारा । १-४११४
 कुसल मातु पितु परिजन माई । २-११६१८
 कुसल हेतु सो भयउ गोसाईं । २-२६११८
 कुसुम कलीं बिच बीच बनाई । १-२४२१७
 कुसुमित किंसुक के तरु जैसे । ६-५३११
 कुसुमित नव तरु राजि बिराजा । १-८५१६
 कूजत कल बहुबरन बिहंगा । १-२१११७
 कूजत बिहग नटत कल मोरा । १-२२६१६
 कूजत मजु मराल मुदित मन । २-२३५१६
 कूजहिं कोकिल गुंजहिं मूंगा । १-१२५१२
 कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़ै । २-११०१६
 कूदि चरन गहि भूमि गिरायो । ६-९६१८

कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं । ६-४०।८
 कूदि परा पुनि सिंधु मझारो । ५-२५।८
 कूर कपूत मूढ़ मन माखे । १-२६।११
 कृत झूरि महा महि भूरि रुजा । ७-१३।३
 कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना । ७-१०।३।२
 कृत भूप बिभीषन दीन रहा । ६-११।०।८
 कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे । २-१५।०।८
 कृपा अंबुनिधि अंतरजामी । २-२६।६।१
 कृपा करहु प्रनतारति मोचन । १-१४।५।६
 कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई । २-१०।२।७
 कृपा तुम्हारि सकल भगवाना । १-१२।८।३
 कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन । ७-५।०।१
 कृपा राम कै जापर होई । १-११।५।६
 कृपा सनेह सदन रघुराऊ । २-१८।३।५
 कृपा निधान प्रान ते प्यारे । ७-४।६।२
 कृपानिधान राम सब जाना । १-२५।८।७
 कृपापात्र रघुनायक केरे । ७-६।१।२
 कृपालु शील कोमल । ३-३।१
 कृपासिंधु के मन अति मार । ७-४।१।१
 कृपासिंधु गुन ग्यान बियच्छन । ७-३।६।४
 कृपासिंधु जन हिल तनु धरहीं । १-१२।१।१
 कृपासिंधु तब अनुज बोलायो । ६-१०।५।१
 कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई । २-७।१।८
 कृपासिंधु बिनती कछु मोरी । ७-४।७।३
 कृपासिंधु बोले मृदु बचना । १-११।०।१
 कृपा सिंधु मानुष तनुधारी । ५-३।८।३
 कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा । १-८।८।२
 कृपासिंधु रघुनायक जहाँ । ५-५।६।१
 कृपासिंधु सेवक मन रंजन । १-६।१।७

कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर । १-१६।८
 कृस तन श्रीरघुबीर बियोगा । ७-४।११
 केई तब नासा कान निपाता । ३-२।१।२
 केवट कुसल उतर सबिबेका । १-४।०।२
 केवट चरन गहे अकुलाई । २-१०।१।४
 केवट पारहि नाव चलाई । २-१५।२।१
 केवल कौसिक कृपा सुधारे । १-३।५।६।६
 केवल कौसिक सील तुम्हारे । १-२।७।४।७
 केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं । ७-११।५।१
 केवल गुरकुल कृपा सँभारी । २-३।०।४।५
 केवल मुनि जड़ जानहि मोही । १-२।७।१।५
 केवल राम चरन लय लागी । ७-१०।१।६
 केवल सकहि दीन्हि बड़ाई । ६-११।३।७
 केहरि सावक जन मन बन के । १-३।१।७
 केहि कर हृदय क्रोध नहीं दाहा । ७-६।१।८
 केहि कं बल घालेहि बन खोसा । ५-२।०।१
 केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी । ७-७।०।६
 केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ । ७-१।२।३।४
 केहि छाया कबि मति अनुसरई । २-२।४।०।३
 केहि दुइ सिर केहि जमु बह लीन्हा । २-२।५।१
 केहि न दीन्हि रघुबीर बड़ाई । २-११।४।१
 केहि न राजमद दीन्ह कलंकू । २-२।२।८।१
 केहि नाते मानिऐ मितार्ई । ६-२।०।२
 केहि बन लखनु रामु बेदेही । २-२।३।५
 केहि बिधि जितब बीर बलवाना । ६-७।१।३
 केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा । ५-४।१।५
 केहि बिधि तात ताड़का मारी । १-३।५।५।८
 केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका । ५-३।२।५
 केहि बिधि मरिहि बिस्व दुखदाता । ६-१।८।४

केहि बिधि लागिअ करहु दियास । ६-३८१२
 केहि सुकृती सन होइहि साथू । २-५७३
 केहि सुख लागि रहत तन माहीं । २-८०६
 केहि सोहाति स्थ बाजि गजाली । २-२२७७
 केहि अपराध आजु बनु देहू । २-४८६
 केहि अपराध नाथ हौ त्यागी । ५-३०४
 केहि अपराध बिसारेहु दाया । ३-२८१९
 केहि न सुसंग बड़प्पनु पावा । १-११८
 केहि पटतरीं बिदेहकुमारी । १-२२९१८
 कैकड़ कुटिल कीन्हि जसि करनी । २-१७०१५
 कैकड़ जननि जोगु सुतु नाहीं । २-२२२१४
 कैकयसुता हटयै अति दाहू । २-२३७
 को अस बीर जो पाइहि पारा । ६-२७४
 को अस मूढ़ न जाहि सोहाई । ७-११८१९०
 को करि तर्क बढ़ावे सारखा । १-५९७
 को कहि सक कपि दल बिपुलाई । ६-३१९
 को कहि सकइ को जाननिहारा । २-२३०१२
 को कहि सकइ बिमोह बिषादहि । २-२०९६
 को कहि सकइ भयउ सुखु जेता । १-३५३३
 को कहि सकइ भरत कर मागू । २-२५८६
 को कहि सकइ सधेतन करनी । १-८४३
 को गुन दूषन करै बिचारा । १-८०२
 को जग काम नचाव न जेही । ७-६९७
 को जग जाहि न ब्यापी माया । ७-७०४
 को जग मंद मलिनमति मोतैं । १-२७१९९
 को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा । २-२३२२
 को जिय कै रघुबर बिनु बूझा । २-१८२१९
 को तू अहसि सत्य कहु मोही । २-१६९७
 को दिनकर कुल भयउ कृतानू । २-५३८

को न चहइ जग जीवन लाहू । २-१८४७
 को नहिं जान बिदित संसारा । १-२७५१९
 को पापी बड़ मोहि समाना । २-१४८१८
 को बापुरो पिनाक पुराना । १-२५२६
 को मैं चलेउं कहीं नहिं बूझा । ३-११९९
 को सिव सम रामहि प्रिय भाई । १-१०३१८
 को सुकृती हम सरिस बिसेयी । १-३०९१५
 को हम कहीं बिसरि तन गए । ७-१६१९
 कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ । ७-८९३
 कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी । ४-१५१९०
 कोउ एक होइ धर्म ब्रतधारी । ७-५३१९
 कोउ कह नृपति निवाहेउ नेहू । २-२०९१५
 कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई । १-१८४१२
 कोउ धनवंत सूर कोउ दाता । ७-८६२
 कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी । १-१९१७
 कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं । २-१८९१३
 कोउ न जान कछु मरमु बिसेया । १-२४३७
 कोउ न मान मद तजेउ निवेही । ७-७०१९
 कोउ न राम सम जान जथारथु । २-२५३१५
 कोउ नहिं मान निगम अनुसासन । ७-१७१२
 कोउ मुनि मिलइ ताहि सब धेरहिं । ४-२३१२
 कोटि अमरपुर सरिस सुपासू । २-२७९१३
 कोटि काम उपमा लघु सोऊ । १-२४२१९
 कोटि कुटिल मनि गुरु पढ़ाई । २-२६६
 कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा । २-१०७१२
 कोटि भाँति कोउ करै उपाई । ७-१९८१५
 कोटि सिंधु सोषक तव सायक । ५-४९७
 कोटिन्ह मौजि मिलव महि गर्दा । ६-६६३
 कोतल संग जाहिं डोरिआए । २-२०२४

कोपमवन गवनी कैकेई । २-२२४
 कोपि माझ उर मारेसि लात । ६-९७।१५
 कोपु मोर अति घोर क्रुसनू । १-२८२।२
 क्रोध देखि जहैं तहैं कपि धार । ४-१८।८
 क्रोध पित नित छाती जारा । ७-१२०।३०
 क्रोध भए तनु राख बिधाता । १-२७।५
 क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा । ६-३१।१
 क्रोधवंत जनु धायउ काला । ६-५०।१
 कोमल कलित सुपेती नाना । १-३५।२
 कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता । १-१११।१
 कोसलपुरी प्रगट नरभूषा । १-१८६।४
 कोहु मोहु ममता महु त्यागी । १-३४०।५
 कौतुक एक मालु कपि करहू । ६-०।८
 कौतुक करत तरत करि क्रोधा । ६-४५।८
 कौतुकु करौ बिलोकिअ सोऊ । १-२५२।७
 कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी । ७-५।४
 कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर । ५-०।१
 कौतुक देखत फिरउँ बेरागा । ७-५५।६
 कौतुक देखहिं अति सच्चु पारै । १-३२०।७
 कौतुक बिबिध होहिं मग जाता । १-९३।१
 कौतुक लागि समी सब आए । ५-११।५
 कौतुक लागि संग कपि सेना । ४-२१।१२
 कौतुकनिधि कृपाल भगवाना । १-१२३।१
 कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए । १-६५।५
 कौतुकहीं प्रमु काटि निवारे । ६-५०।६
 कौतुकहीं पथोधि बैधायो । ६-५।२
 कौसल्याहि सब कथा सुनाई । २-१५४।४
 कौसल्या गृहैं गई लवाई । २-१४७।३
 कौसल्या पहिं गे दोउ भाई । २-१६२।८

कौसल्यो लिए हृदयें लगाई । २-१६६।१
 कौसल्यादि तहों बलि आई । १-१८९।१
 कौसिक मुनि पहिं तुरत पटाए । १-२३८।१
 कंचन मृग खोजन ए आए । ३-३६।६
 कंत उमा मम प्रानपिआरी । १-७०।४
 कंद मूल फल आनहु जाई । २-२१२।५
 कंद मूल फल अंकुर जूसी । २-२४९।२
 कंद मूल फल अंबु अहारी । २-२४७।५
 कंद मूल फल खग मृग मागे । २-१९२।२
 कंद मूल फल फूल अहारी । २-२००।३
 कंद मूल फल मधुर मगाए । २-१२४।३
 कंदुक इव ब्रह्मांड उठावीं । १-२५२।४
 कंदुक इव नल नील ते लेहीं । ६-१।१

ख

खग मृग चरन सरोरुह सेवी । २-५५।३
 खग मृग जीव जंतु तहैं नाहीं । १-२०९।११
 खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा । २-३११।२
 खग मृग बिपुल सकल नर नारी । २-८३।२
 खग मृग बृंद देखि मन भाए । ५-२।७
 खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं । १-६५।१
 खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन । २-३७४।३
 खग मृग सुर तापस हितकारी । २-१४१।३
 खग मृग सुर नर असुर समैते । १-१७।३
 खग मृग हय गय बहु बिधि जाना । १-३०४।४
 खगनाथ जया करि कोप गहा । ६-११०।४
 खचित कनक मनि नाना जाती । ७-४।२
 खर दूषन बिराघ बध पंडित । ७-५०।५
 खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी । ७-१०९।४

खल अति अजय देव दुखदाई । १-१६१।५
 खल के बचन संत सह जैसें । ४-१३।४
 खल के सकल मनोरथ जैसें । ६-१०।६
 खल के प्रीति जथा थिर नहीं । ४-१३।२
 खल तोहि निकट मृत्यु अब आई । ५-४०।२
 खल दलु दलन देव हितकारी । २-२५३।४
 खल परिहरिअ स्वान की नाई । ७-१०५।१५
 खल बघ रत सुर मुनि सुखदाता । ३-२१।७
 खल बृद निकंद महा कुसलं । ६-११०।१०
 खल भए मलिन साधु सब राजे । १-२६४।१
 खल मल रासि मंदमति कामी । ६-३२।५
 खल मायावी देव सतावन । ६-७४।४
 खल सन कलह न मल नहीं प्रीती । ७-१०५।१४
 खल सुधि नहीं रघुबीर बान की । ५-८।८
 खलहु जाहु कहीं मोरें आगे । ६-१६।७
 खलु खद्योत दिनकरहि जैसा । ६-५।६
 खसी माल मूरति मुसुकानी । १-२३५।५
 खाइ महा अहि हृदय कठोरा । ७-३८।८
 खाल कदाइ बिपति सहि मरई । ७-१२०।१७
 खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं । ६-८७।१
 खाहु भालु कपि जहैं जहैं पावहु । ६-३२।१
 खाहु सुरस सुंदर फल नाना । ४-२४।२
 खीर नीर बिबरन गति हंसी । २-३१३।८
 खेलत खुनिस न कबहूँ देखी । २-२५१।६
 खेलत गरुड़ जिमि अहिगन नीला । ६-६५।१
 खेलत रहा सो होइ गै भेटा । ६-१७।३
 खेलहिं खेल सकल नृपलीला । १-२०३।६
 खेलिहहिं भालु कीस चौगाना । ६-२६।५
 खँचहु मिटे मोर संदेह । १-२८३।७

खँचि सरासन छोड़े सायक । ६-११।६
 खोजत आकु फिरहिं पय लागी । ७-११४।२
 खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई । १-४८।७
 खंड खंड होइ फूटहिं आसू । ६-८१।३
 खंड खंड होइ हृदय न गयऊ । २-१६१।१
 खंडि सगुन मत अगुन निरूपा । ७-११०।१२

ग

गइउँ न संग न प्रान पठाए । २-१६५।५
 गई गगन सो सकति कराला । ६-८३।७
 गई तहाँ जहैं सुर मुनि झारी । १-१८३।७
 गई तुरत उटि गिरिजा पाहीं । १-७१।५
 गई मुदित मन गौरि निकैता । १-२२७।५
 गई रही देखन फुलवाई । १-२२७।७
 गई सती जहैं प्रमु सुखघामा । १-५१।८
 गई संमु पहिं मातु भवानी । १-१०६।२
 गए कुअँर सब राज निकैता । १-३३४।८
 गए कौस दुइ दिनकर दरकें । २-२२५।१
 गए जहाँ जग पावनि गंगा । १-२११।१
 गए जहाँ जनवास बराती । १-३१२।५
 गए जहाँ प्रमु सुख आसीना । ३-४०।८
 गए जहाँ सिव कृपानिकैता । १-८७।५
 गए जहाँ सीतल अवेराई । ७-४१।५
 गए जेहिं भवन भूप कैकेई । २-३७।५
 गए पुकारत कछु अधमारे । ५-१७।६
 गए महेसु जहाँ जनवासा । १-१५।५
 गए मातु पहिं रामु गोसाईं । २-५०।७
 गए रहे देखन फुलवाई । १-२१४।४
 गए रामु सब कें अस्थाना । ६-१११।२

गएहुँ न मज्जन पाव अभाग। १-३८।३
 गगन गए रवि निकट उड़ाई। ४-२७।२
 गगन जाइ बरषहु पट भूषन। ६-११६।५
 गगन सुमन झरि अवसरु जानी। १-३२३।७
 गगनु गगन मकु मेघहिँ मिलई। २-२३।११
 गज केहरि निज सुनत प्रसंसा। ३-२१।१२
 गज रथ तुरग मगावत भए। ७-४१।३
 गजमनि रवि बहु चौक पुराई। ७-८।३
 गढ़ ते पर्वत सिखर ढहाए। ६-४८।१०
 गतक्रोध सदा प्रमु बोधमयं। ६-११०।५
 गत मान प्रद दुख पुंज। ६-११२।१२
 गति अनन्य तापस नृप रानी। १-१४४।५
 गति असि तोरि मातु जेहि लागी। २-१६३।६
 गति दीन्ही जो जाचत जोगी। ३-३२।२
 गति पाई जो मुनिबर पाव न। ६-११३।१०
 गति बिलोकि खगनायकु लाजे। १-३१५।७
 गदगद कंठ न कछु कहि जाई। १-४१।७
 गदगद गिरा नयन बह नीरा। ३-१५।११
 गदगद बचन कहति महतारी। २-५३।५
 गनइ न मुजबल गर्ब बिसाला। ६-७७।११
 गनन्ह समेत बसहिँ कैलासा। १-१०२।५
 गनप गौरि तिपुरारि तमारी। २-२७२।४
 गनहिँ न मृत्यु बिबस सब झारी। ३-१७७।७
 गनि गुन दोष बेद बिलगाए। १-५।३
 गनी जनक के गनकन्ह जोई। १-३११।७
 गने को पार निसावर जाती। १-१८०।३
 गयउ काग पहिँ खग कुल केलू। ७-५७।२
 गयउ गगन आपनि गति पाई। ३-३३।४
 गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका। २-३८।५

गयउ तुम्हारेहिँ कोछेँ घाली। ७-१७।२
 गयउ बिभीषनु जहँ जनत्राता। ६-१४।३
 गयउ बिभीषनु मन दुख भारी। ६-१०४।४
 गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई। २-२७७।६
 गयउ मदन तब सहित सहाई। १-१२६।२
 गयउ मोह संसय नाना भ्रम। ७-६३।२
 गयउ राउ गृह बिदा कराई। १-२१६।८
 गयउ सोच सुख भयउ बिसेषा। १-१७८।५
 ग्यान अनल मन कसेँ कनक से। २-३१६।७
 ग्यान उदर्य जिमि संसय जाहीं। ६-४६।४
 ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू। २-२१२।३
 ग्यान जोनि पावक जिमि अरनी। ७-३१।८
 ग्यान नयन निरखत मन माना। १-३६।११
 ग्यान बिराग नयन उरगारी। ७-१११।१४
 ग्यान बिराग बिचार मराला। १-३६।७
 ग्यान बिराग भगति रस सानी। २-११।३
 ग्यान बिराग भगति सुम देनी। ७-१२०।१०
 ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं। १-११८।६
 ग्यान बिराग हृदय नहिँ जाकेँ। १-१२८।११
 ग्यान भगति जनु धरें सरौरा। १-१४२।४
 ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना। ३-१५।१
 ग्यान रंक नर मंद अमागी। ३-४४।३
 ग्यान दृष्टि बल मोहि अधिकाई। ६-५६।६
 ग्यानधाम श्रीपति असुरारी। १-५०।२
 ग्यानिहु ते अति प्रिय बिय्यानी। ७-८५।६
 ग्यानी गुन गृह बहु कालीना। ७-६१।३
 ग्यानी प्रमुहि बिसेषि पिआरा। १-२१।७
 गने को पार निसावर जाती। १-१८०।३
 गर्ज घोर रव बारहिँ बास। ६-७५।५

गर्जत गर्भ खवहिं सुर रवनी । १-१८१।५
 गर्जत तर्जत सन्मुख धावा । ६-८१।२
 गरजत लागत परम सुहाए । ४-१२।८
 गर्जहिं घोर कठोर भयावन । ६-१५।५
 गर्जहिं बानर मालु अपारा । ५-३४।८
 गर्जहिं मालु महाबल कीसा । ५-३४।९
 गर्जहिं मनहुं बलाहक घोसा । ६-८६।४
 गर्जहिं मर्कट भट समुदाई । ६-३।२
 गर्जा अति अंतर बल थाका । ६-२१।२
 गर्जा बजाघात समाना । ६-६३।९
 गरजि अकास चलेउ तेहिं जाना । ६-६५।६
 गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा । ६-४२।५
 गर्जेउ बहुरि टससीस । ६-१००।९
 गर्जेसि जाइ निकट बल पावा । ४-६।२६
 गर्भ खवहिं सुनि निसिघर नारी । १-२७।९
 गरबित भरत मानु बल पी कें । २-१७।३
 गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू । १-४।८
 गरहिं गात जिमि आतप ओरे । २-१४।६।७
 गरि न जीह मुँह परेउ न कीस । २-१६।१२
 गरुअ कठोर विदित सब काहू । १-२४।१।९
 ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई । १-२३।७।९
 ग्रसन चहत मानहुं त्रैलोका । ६-६१।१२
 ग्रससि न मोहिं कहेउ हनुमाना । ५-१।६
 ग्रसिहि न कैकइ करतबु राहू । २-२०।८।७
 ग्रहइ घान बिनु बास असेषा । १-११।७।७
 ग्रथि छूट किमि परइ न देखी । ७-११।६।७
 गवनी भवन चरन सिरु नाई । १-१०।१।९
 गवनु कीन्ह बिधि अंड करौरी । २-२८।६।३
 गवने भवन सकल सिर नाई । ६-१३।५

गहगहि गगन तुंदुभी बाजो । १-११०।७
 गहन टनुज कुल दहन कृसानू । १-२८।४।९
 गहबरि हृदय कहहिं बर बानी । २-१२०।२
 गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू । २-२१।८।३
 गहि कर गदा कुद्ध होइ धायो । ६-१३।४
 गहि कर चरन नारि समुझावा । ४-६।२।७
 गहि कर भिडिफाल बर साँगी । ६-३१।७
 गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा । ५-१८।६
 गहि गिरि मेघनाट कहूँ धावा । ६-४२।६
 गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं । ६-३८।७
 गहि न जाइ अस अटमुत बानी । २-२९।३।३
 गहि पट अयनि पटकि भट डारहिं । ६-८०।६
 गहि पट आरत बचन सुनाए । १-१३।८।२
 गहि पट पटकेउ भूमि भवौई । ६-१७।५
 गहि पट बिनय कीन्हि बिधि नाना । १-१६।३।६
 गहि पट बिनय हिमाचल कीन्ही । १-२०।५
 गहि पट महि पटकइ भट नाना । ६-१७।१।४
 गहि प्रमु पट गुन बिमल बखाने । ६-११।६।२
 गहि भुज लछिमन कंठ लगवावा । ४-११।६
 गहे चरन अति प्रेम अधीरा । २-६१।२
 गहे पाहि प्रनतारति हरना । १-१३।७।२
 गहे सबनि पट कृपाधाम के । ७-४६।९
 गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं । ६-६५।३
 गाइ गौठ महिसुर पुर जारें । २-१६।६।५
 गाड़ि अवधि पदि कठिन कुमंत्रू । २-२१।१।४
 गान करहिं निज सुकृत सराही । १-३४।८।५
 गारि गान सुनि अति अनुरागे । १-३२।८।९
 गारी देत न पावहु सोमा । १-२७।३।८
 गाल बजावत तोहि न लाजा । ६-३२।३

गालु करब केहि कर बलु पाई । १-१३।१
 गावत गीत मनोहर बानी । १-२४७।१
 गावत गुन सुर मुनि बर बानी । १-२४।६
 गावत बलि सिंधुरगामिनी । ७-२।६
 गावत नर पावहिं भव थाहा । ७-१०२।४
 गावत पैठहिं मूप दुआरा । १-११३।४
 गावत सुर मुनि संत समागम । ७-५०।७
 गावत हरि गुन गान प्रवीना । १-१२७।३
 गावहिं कवि श्रुति संत पुराना । ७-१२१।७
 गावहिं किंनर गीत रसात्ता । १-२६।१।६
 गावहिं गीत मनोहर बानी । १-२२७।३
 गावहिं गुन गंधर्व बरुथा । १-११०।६
 गावहिं जनु बहु बेष भारती । १-३४४।६
 गावहिं जसु तिहु लोक उजागर । १-३४७।१
 गावहिं बेद जासु जस लीला । १-७१।२
 गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा । १-११५।१
 गावहिं मंगल सहित सनेहा । १-१३।६
 गावहिं हरि जस कलि मल हारी । १-१०।६
 गाँव निकट जब निकसहिं जाई । २-११३।१
 गिरहिं न तव रसना अभिमानी । ६-३२।८
 गिरा अनयन नयन बिनु बानी । १-२२८।२
 गिरा ग्यान गौतीतमीशं गिरीशं । ७-१०७।३
 गिरि कंदरा खोह अनुमाना । ६-१८।६
 गिरि कंदरा सुनी संपाली । ४-२६।१
 गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू । १-७०।५
 गिरि निज सिरनि सदा तून धरहिं । १-१६६।७
 गिरि पर सकल करहिं अनुरागा । १-६५।२
 गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा । २-२७।५
 गिरि सुंगन्ह जनु प्रबिसहिं ब्याला । ६-८२।६

गिरिजा पूजन जननि पटाई । १-२२७।२
 गिरिजा बोली गिरा सुहाई । ७-१२८।७
 गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई । १-११७।३
 गीघ मइत्री पुनि तेहिं गाई । ७-६५।१
 गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के । १-२३२।२
 गुन गति नट पाठक आधीना । २-२९।८
 गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी । ६-११०।३
 गुनगाहकु अवगुन अघ हारी । २-२९७।३
 गुन दूषक बात न कोपि गुनी । ७-१००।१
 गुन प्रगट अवगुनन्हि दुसावा । ४-६।४
 गुन सागर नागर नाथ दिभो । ६-११०।२
 गुन सागर बर बालक चारी । १-२९३।७
 गुणागार संसारपार नतोऽहं । ७-१०७।४
 गुनातीत अरु भोग पुरंदर । ७-२३।२
 गुप्त प्रगट इतिहास पुराना । ७-११३।२
 गुप्त प्रगट जहें जो जेहि खानिक । १-०।८
 गुर अनुसासन मागि नहाए । ७-१०।७
 गुर अवमान दोष नहिं दूषा । २-२०८।५
 गुर कर कोमल सील सुमाऊ । ७-१०१।२
 गुर कर द्रोह करुँ दिनु राती । ७-१०५।७
 गुर द्विज पुरबासी सब आए । ७-४२।१
 गुर पद कमल पलोटत प्रीते । १-२२५।५
 गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा । २-८०।१
 गुर पद रजहिं लाग छरुमारु । २-३१४।७
 गुर पहिं चले निसा बड़ि जानी । १-२३७।४
 गुर पितु मातु मोद मन भरहिं । १-२७६।३
 गुर बिरोध नहिं कोउ जग त्राता । १-१६५।६
 गुर बोलाइ पटयउ दौउ भाई । २-११६।३
 गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीके । १-२७५।२

गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ । २-२४४७
 गुर समीप गवने दोउ भाई । १-२३६।१
 गुर हित कहइ न मोहि सोहाई । ७-१०५।१६
 गुरु गोबिंद बिप्र पद प्रेमा । ३-४५।३
 गुरु प्रसाद सब विद्या पाई । १-३५६।२
 गुरु पितु मातु बंधु प्रमु नाहीं । ४-११।१
 गुरु साहिब अनुकूल अघाई । २-२५१।१
 गुरहि जरिन होतेउँ श्रम थोरें । १-२७४।८
 गुरहि साँपि बोले कर जोरी । २-७१।५
 गृह राउतहि जोहारे जाई । २-११०।७
 गृह प्रेम लखि परइ न काहू । १-२६३।३
 गृह आनहिं चेरि निबेरि गती । ७-१००।३
 गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी । १-२८८।६
 गृह गृह प्रति मनि दीप बिराजहिं । ७-२६।८
 गृह बैठे अहार विधि दीन्हा । ६-३१।४
 गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू । २-२१३।४
 गे बनु राम लखनु बैदेही । २-१४५।४
 गे रघुनाथ नयउ अति सोरू । २-८५।१
 गे मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई । २-४३।३
 गोदावरि तट आश्रम जहवाँ । ३-२१।५
 गोपद सिंधु अनल सितलाई । ५-४।२
 गौतम श्रापु परम हित माना । १-३१६।६
 गुंजत अलि तै चलि मकरंदा । ७-२२।४
 गुंजत चंचरीक मधु लोमा । ५-२।६
 गुंजत मधुप निकर मधु लोमा । ४-१२।१
 गुंजत मंजु मधुप रस भूले । २-१२३।७
 गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा । १-२८७।५
 गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई । ७-४३।३

घ

घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई । २-३२४।१
 घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना । २-२०८।२
 घन घमंड दामिनी बिलासा । ६-१२।१
 घर घर उत्सव बाज बधावा । १-१७१।५
 घर घर नगर अनंद बधावा । २-२६।२
 घर घर बाजन लगे बधाए । १-२१०।६
 घर घर रुदनु करहिं पुरवासी । २-१५।५
 घर तुन्हार तिन्ह कर मनु नीका । २-१३०।२
 घर बन गुर प्रसाद रखवासा । २-३०५।१
 घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं । २-११४।३
 घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागी । २-७७।५
 घाट सुबद्ध राम बर बानी । १-४०।४
 घायल मै निसिचर समुदाई । ६-८६।८
 घालेसि सब जगु बारहबाटा । २-२११।५
 घाले लिए सहित समुदाई । १-१७३।१
 घुमिं घुमिं जहँ तहँ महि परहीं । ६-८६।१
 घुमिंत भूतल परेउ तुरंता । ६-६४।८
 घृत कि पाव कोइ बारि बिलोएँ । ७-४८।५
 घेरि सकल बहु नाच नचावहिं । ६-४।७
 घोर क्रोध तम निसि जो जागा । ४-२०।४
 घोर घामु हिम बारि बयारी । २-६१।४

च

चकइहि सरद चंद निसि जैसे । २-६३।२
 चकई साँझ समय जनु सोहीं । २-१२०।१
 चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा । १-१७१।६
 चकित बिलोकत कान उटाएँ । १-१५५।८
 चकित भए भ्रम हृदयँ बिसेषा । १-५२।१

चढ़त मत गज जिमि लघु तरनी । ६-२४॥
 चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रानी । २-१८६।८
 चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता । १-९१॥
 चढ़ि बिमान आए नम सर्वा । ६-७६।२
 चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी । ६-१२०।५
 चढ़ी चंग जनु खँच खेलारु । २-२३९।६
 चढ़े जाइ सब संगु बनाई । १-२५९।७
 चढ़े बिमानन्हि नाना जूधा । १-३१३।२
 चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू । २-१५३।६
 चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई । २-१८०।१
 चतुराई तुम्हारि मैं जानी । १-४६।३
 चतुरगिनी अनी बहु धारा । ६-७८।१
 चरइ हरित तिन बलिपसु जैसे । २-२१।२
 चरन कमल चापत बिधि नाना । ६-१०॥
 चरन कमल बंटउँ सब लायक । १-१७।९
 चरन कमल बंदि अज संकर । ७-३४।७
 चरन पखारि पलंग बैठाए । ४-९९।५
 चरन परत नृप रामु निहारे । २-४३।२
 चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही । ५-५६।८
 चरन बंदि निज भाग्य सराही । १-१५९।२
 चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना । ४-१९।४
 चरन बंदि पायोधि सिधावा । ५-५९।८
 चरन बंदि बोले कर जोरी । २-२१२।२
 चरन रेनु सिर नयनन्ह लाई । १-३४२।२
 चरन लागि करि बिनय बिसाला । १-१८८।२
 चरन सरोज पखारन लागा । २-१००।७
 चरन सरोज सुभग सिर नाए । १-२३८।८
 चरन सरोरुह प्रीति अमंगा । ३-१२।११
 चरन सलिल सबु भवनु सिंवावा । १-६५।७

चरनन्हि लागि हरषु अति तेही । ७-६।१
 चरनाबुंज प्रेम सदा सुमदं । ६-११०।२२
 चरित एक प्रभु देखिअ जाई । १-२०९।९
 चरित किए श्रुति सुधा समाना । ३-२।१
 चरित पवित्र किए संसारा । १-१२२।४
 चरित पुनीत राम के गावहिं । ७-४१।४
 चलउँ भागि तब पूष देखावहिं । ७-७६।१०
 चलत देह धरि जनु अनुरागू । २-२१५।४
 चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा । ५-३।६
 चलत भगति बल धीरज धोरी । २-२३३।५
 चलन चहत अब कृपानिधाना । ३-३०।४
 चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना । २-६१।५
 चलहिं तुरत गृहकाजु बिसारी । २-११३।२
 चलहिं न चरन सिथिल नाए गाता । १-३४५।१
 चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती । ७-२०।२
 चला उताइल त्रास न थोरी । ३-२८।२३
 चला दुर्ग तजि सैन न संग । ६-६३।२
 चला प्रमंजन सुत बल भाषी । ६-५५।१
 चला बिमानु तहाँ ते चोखा । ६-११९।४
 चला मवन कहि बचन कठोरा । ६-९।४
 चला बिलोचन बारि प्रबाहू । २-४३।४
 चला माजि बायस भय पावा । ३-१।१
 चला महाकपटी जतिरोषी । १-१७०।६
 चला राम पद प्रेम अमंगा । ३-२५।७
 चला संग लै सुमट अपारा । ५-१७।७
 चलि रघुबीर सिलीमुख धारी । ६-११।७
 चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ । २-२७०।६
 चलिहउँ बनहि बहुरि पग लागी । २-४५।४
 चली बिचारि बिबुध मति पोची । २-११।५

चली बिपति बारिधि अनुकूला । २-३३४
 चली राखि उर स्यामल मूरति । १-२३४।१
 चली उमा तप हित हरषाई । १-७२।७
 चली कहत मतिमंद अमागी । २-५०।२
 चली तहाँ जहाँ रहे गिरीसा । १-५४।८
 चले असीस पाइ रघुराई । २-८०।२
 चले इष्टदेवन्ह सिर नाई । १-२४१।६
 चले उतरि उमगत अनुसागा । २-११२।७
 चले क्रोध करि सुमट लजाने । ६-४१।१
 चले गगन महि इच्छावासी । १-३४।१
 चले चाप कर बरबस हारी । १-२५०।४
 चले चाप सायक गहि हाथा । ४-६।२५
 चले चित्रकूटहिं चितु दीन्हें । २-२१५।३
 चले जनक जननिहिं सिरु नाई । २-७।८
 चले जमुन उतरन सबु लागा । २-२७।१६
 चले जहाँ रघुपति करुनाकर । ५-४४।१
 चले जहाँ रावन ससि राहू । ३-२७।६
 चले जान वढ़ि जो जेहि लायक । १-२११।५
 चले जाहिं परबस मन मारें । २-३११।८
 चले जाहिं सब लोग अचेता । २-३११।७
 चले थलहिं सिय देखी आई । २-२८५।३
 चले दूत बरनत युन गाथा । ५-५२।५
 चले धरम मरजाद मेटाई । २-२२७।३
 चले न प्रीति रीति कहि जाती । १-३५१।१
 चले बनहिं सुर नर मुनि ईसा । ३-६।१
 चले बस्तु भरि अगनित भाँती । १-२११।६
 चले बसहैं वढ़ि बाजहिं बाजा । १-११।५
 चले बिप्रवर आसिष देता । १-२१४।८
 चले बिलोकत बन बहुताई । ३-३२।४

चले बिलोकन आरत भारी । २-२०।२
 चले बिलोकन राम बिआहू । १-३१३।३
 चले बिसिख निसित निकाम । ३-११।२
 चले बेग बर बाजि लजाए । २-१५६।४
 चले मरत पहिं सहित समाजा । २-२११।६
 चले भवन बरनत निज भागा । १-११५।२
 चले भवन सुमिरत रघुबीरा । १-५६।३
 चले भवन सँग टच्छकुमारी । १-४७।६
 चले भाजि भय मारुत ग्रसे । ६-३१।४
 चले नाट हिये हरषु न थोरा । १-२४।८
 चले महीपति संख बजाई । १-३०१।३
 चले मुदित मन डर न खरो सो । २-३२०।८
 चले मुदित मुनि आयसु पाई । १-३२१।२
 चले राम बन अटन पर्यादें । २-३१०।३
 चले रंक जनु लूटन सोना । २-१३४।२
 चले लवाइ समेत समाजहि । २-२७४।८
 चले लेन सादर अगवाना । १-१४।२
 चले लोक लोचन सुख दाता । १-२१८।१
 चले लोग सब ब्याकुल भागी । २-८३।४
 चले सकल घर बिदा कराई । २-१८४।३
 चले सकल चरनन्हिं सिर नाई । ४-१८।७
 चले सकल तप तेज निधाना । २-१८६।६
 चले सकल प्रेरित रघुनाथा । ४-१०।१०
 चले सकल मन परम हुलासा । ६-१०७।१
 चले सकल सुर जान बनाई । १-६०।२
 चले सकल सुर साजि बिमाना । १-११०।५
 चले सकोप महा बलसाली । ६-६१।६
 चले सहित श्री सर धनु पानी । ३-१७।१२
 चले सहित सुर थपति प्रधाना । २-१३२।६

चले सीस धरि राम रजाई । २-३१७॥
 चले सुधारि सरासन बाना । ६-६१५
 चले संग नृपमंदिर आए । २-७५२
 चले संग मुनि साधु समाजा । १-३१२८
 चले संग सिय अरु लघु भाई । २-१६५४
 चले हरषि सुमिरत रघुराई । ४-२२१८
 चले हृदय अवधहि सिरु नाई । २-८२२
 चले हृदय अहमिति अधिकाई । १-१२८७
 चलेउ गगन कपि चूँछ पसारी । ६-१४४
 चलेउ पवनसुत बिदा कराई । ५-७५
 चलेउ बराह मरुत गति भाजी । १-१५६१
 चलेउ बिहंग सुनत बिधि बानी । ७-५१८
 चलेउ लवाइ नगर अयनीसू । १-२१६६
 चलेउ सर्मा ममता अधिकाई । ५-३६५
 चलेउ समर जनु सुमट पराई । २-१४३८
 चलेउ सो गा पाताल तुरंता । ५-०७
 चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई । ७-६१६
 चलेउ हरषि हियेँ जलचरकेतू । १-१२४६
 चलेउ हरषि हियेँ धरि रघुनाथा । ५-०४
 चलेउ हृदय धरि कृपानिधाना । ४-२२१२
 चलेउ हृदय पद पंकज राखी । ७-१८५
 चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू । २-३२०१
 चलेहुँ कुमग पग परहिँ न खालेँ । २-३४५
 चलेहुँ प्रसंग दुराएहु तबहूँ । १-१२६८
 चहत उड़ावन फूँके पहारु । १-२७२३
 चहत देवरिषि मम पुर बासा । १-१२४७
 चहत पारु नहिँ कोउ कड़हारु । १-२५१८
 चहत प्रात उर अररत भारी । २-१८६१
 चहत बारि पर भीति उठावा । १-७०५

चहत सकुच गूँह जनु भजि पैठे । २-२०५६
 चहत सकल परमारथ बादी । ३-५५
 चहिन अमिज जग जुसई न छाछी । १-७७
 चहिन बिप्र उर कृपा घनेरी । १-२८१४
 चहु दिसि कानन बिटप सुहाए । ३-३१५
 चहुँ दुजार लागे कपि नाना । ६-७१९
 चहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुंदर । ७-२८४
 चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा । २-१३२२
 चहुँ दिसि बरूथ बनाइ । ६-१००१४
 चातक बंदी गुन गन बरना । ३-३७८
 चाप चढ़ाई बान संधाना । ६-१२८
 चाप समीप महीप न जाहीं । १-२४९८
 चापिँ मालु मर्कट समुदाई । ६-१०२६
 चामुंडा नाना बिधि गावहिँ । ६-८७८
 चारि अनी कपि कटक बनावा । ६-३८४
 चारि चारु मोरे मन माए । ७-५५८
 चारि प्रकार जीव सचराचर । ७-७९८
 चारि पदास्थ करतल नोरेँ । १-१६३७
 चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा । ४-१८२
 चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा । १-१४६१
 चारु चपल जनु दमकहिँ दामिनि । १-३४६४
 चारु चरित नानाबिधि करहीं । १-१३१२
 चारु चाप सर सोहत हाथा । १-२१८३
 चारु चित भीती लिखि लीन्ही । १-२३४३
 चारु चिबुक आनन छबि सीवा । ७-७६२
 चारु जनेउ माल नृगछला । १-२६७७
 चाति बिलोकि काम गज लाजहिँ । १-३१७४
 चाहत उठन करत मति धीरा । १-११२४
 चाहत जासु चरन सेवकाई । ६-२११

चाहत देन बुन्हहि जुबराजू । २-१।२
 चाहिअ धरमसील नरनाहू । २-१७।१५
 चाहिअ सदा सिवहि भरतारा । १-७७।७
 चितइ कृपा करि राजिव नैना । १-३४।२
 चितइ पितहि दीन्हैउ दृढ़ ग्याना । ६-१११।५
 चितइ मानु लागी अति मूखा । ७-८७।६
 चितव कृपाल सिंधु बहुताई । ६-३।३
 चितव गरुरु तधु ब्यालहि जेसैं । १-२५।८।८
 चितव न सठ स्वारथ मन राता । ६-८४।८
 चितवत कामु मयउ जरि छारा । १-८६।६
 चितवत चकित धनुष मखसाला । १-२२४।५
 चितवत चले जाहिं सँग लागे । २-११३।७
 चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं । १-२१।८।७
 चितवति कृपासिंधु रनधीरहि । ७-६।६
 चितवनि ललित भावैती जी की । १-१४६।३
 चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई । ४-१६।७
 चितवहिं राम कृपा करि जेही । ७-६।८।७
 चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं । ७-३५।२
 चिंता अमित जाइ नहिं बरनी । १-५७।१५
 चिंता गुरहि नृपहि घर बन की । २-३१४।१५
 चिंतामनि पुनि उपल दसानन । ६-२५।७
 चिदाकाशमाकाशवासं नजेउहैं.... । ७-१०७।२
 चिदानंदु निरगुन गुनरासी । १-३४०।६
 चिबुक अघर चुंदर नृदु बोला । १-२४२।४
 चिरु अहिवात असीस हमारी । १-३३३।४
 चित्रलिखित कपि देखि डेराती । २-५१।४
 चित्रकूट आए जगदीसा । ६-१११।३
 चित्रकूट आए तेहि काला । २-१३३।१५
 चित्रकूट कहैं कीन्ह पयाना । २-१८६।७

चित्रकूट चर अचर मतीना । २-३२०।६
 चित्रकूट जसु पावहिं तेते । २-१३७।७
 चित्रकूट जिमि बसे. मगवाना । ७-६४।४
 चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें । १-२१२।५
 चोरि कोरि पचि रचे सरोजा । १-२८७।४
 चुकइ न घात नार मुठभेरी । २-१३२।४
 चेतन अमल सहज सुख रासी । ७-११६।२
 चेरि छाड़ि अब होव कि रानी । २-१५।६
 चैल चारु नूषन पहिराई । १-३५२।४
 चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई । २-२६।५
 चोरहि चंदिनि राति न भावा । २-१०।७
 चौथें दिवस अवधपुर आए । २-३२१।५
 चौथें दिवस मिलब मैं आई । १-१७०।५
 चौथेंपन जाइहि नृप कानन । ६-६।३
 चौथेंपन जेहिं अजसु न होई । २-४२।५
 चौदह बरिस रामु बनबासी । २-२८।३
 चंचरीक जिमि वंपक बागा । २-३२३।७
 चंचरीक पटली कर गाना । ३-३१।७
 चंदन तरु हरि संत समीरा । ७-१११।१५
 चंदबदनि दुरगु कानन भारी । २-६२।८
 चंदिनि कर कि चंडकर घोरी । २-२१४।६

छ

छन बन रचि छन सदन सोहाहीं । २-३०१।५
 छन महुँ जरे निसाघर तीरा । ६-१०।३
 छन महुँ मिटे सकल श्रुति सेतू । १-८३।६
 छन महुँ सकल कटक उन्ह मारा । ३-२१।१५
 छबि धाम नमामि रमा सहित । ६-११०।१५
 छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी । १-२६४।७

छविगन मध्य महाछवि जैसें । १-२६३।१
 छविगृहं दीप सिखा जनु बरई । १-२२१।७
 छमब तात लखि बाम बिधाता । २-२९२।६
 छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी । २-६३।५
 छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता । १-२८४।६
 छमहु नाथ सब अवगुन मेरे । ५-५८।९
 छमहु बिप्र अपराध हमारे । १-२८१।८
 छमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी । ६-२१।७
 छमा कृपा समता रजु जोरे । ६-७९।६
 छमा दया दम लता बिताना । १-३६।१३
 छमि सब करिहहि कृपा बिसेषी । २-१८२।४
 छमिअ देबि बड़ि चूक हमारी । २-१५।८
 छमिहि देउ अति आरति जानी । २-२९१।८
 छरस असन अति हेतु जेवाँए । १-३३५।३
 छरस चारि बिधि जसि श्रुति गाई । १-१७२।१
 छल बल कीन्ह चहइ निज काजा । १-१५१।६
 छल बिहीन सुनि सिब मन माई । १-११०।६
 छली मलीन कतहूँ न प्रतीती । २-३०१।२
 छत्री रूप फिरहु बन बीरा । ४-०।७
 छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा । २-१०४।७
 छाइ मवन पर पावकु धरेऊ । २-४६।२
 छाड़इ स्वास कारि जनु साँपिनि । २-१२।८
 छाड़ि न सकहि तुम्हार सँकोचू । २-३१।८
 छाड़िअ सोच सकल हितकारी । २-१४१।८
 छाड़िसि ब्रह्मलीन जो सांगी । ८-२२।८
 छावा परम बिचित्र बजारू । १-२९५।७
 छाँड़हु नाथ नृषा जल्पना । ६-५५।५
 छाँड़ै अति कराल बहु सायक । ६-६८।५
 छिनु छिनु चरन सरोज निहारी । २-६६।१

छीर फेन मृदु बिसद सुहाई । २-१०।१
 छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी । २-४५।६
 छुटिहहि अति कराल बहु सायक । ६-२६।६
 छुघावंत सब निसिचर मेरे । ६-३९।३
 छुमित पयोधि कुधर डगमगहीं । ६-७८।६
 छुमित सिंधु सरि दिग्गज भूधर । ६-१०२।५
 छूट न अधिक अधिक अरुझाई । ७-११६।६
 छूट न ग्रथि न होइ सुरखारी । ७-११६।५
 छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें । ३-२८।१०
 छूटइ राम करहु जौं दाय। ४-२०।२
 छूटउ बेगि देह यह मोरी । १-५८।७
 छूटहि सकल राम कीं दाय। ३-३८।३
 छूटि समाधि संभु तब जागे । १-८६।३
 छूटे कच नहीं बपुष सँभारा । ६-१०३।३
 छूटे केस न देह सँभारा । ४-१०।२
 छूटे तीर . सरीर समाने । ६-६९।७
 छोट कुमार खोट बड़ भारी । १-२७७।५
 छोटे बदन बात बड़ि कहसी । ६-३०।७
 छोहु सनेहु कीन्ह नहीं थोरा । २-२६५।८
 छंढ प्रबंध अनेक बिधाना । १-८।९

ज

जग अभिराम राम अभिषेका । ७-१।७
 जग असि जुबति कहाँ कमनीया । १-२४६।४
 जग केहि कहहु न होइ कलेसू । २-३०४।७
 जग जनमइ बायस सरीर धरि । ७-१२०।२४
 जग जोधा को मोहि समाना । ६-७।२
 जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही । २-१६७।२
 जग पालक बिसेषि जन भ्राता । १-१९।५

जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू । १-२५३
 जग बिख्यात नाम तेहि लंका । १-१७७।८
 जग बीराइ राज पदु पाएँ । २-२२७।८
 जग मंगल हित एक उपाऊ । २-२६८।८
 जग हित निरुपधि साधु लोग से । १-३११।३
 जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन । १-११६
 जगत जनक सब के हितकारी । १-६३।५
 जगत जननि अतुलित छबि भारी । १-२४७।२
 जगत जननि दामिनि दुति गाता । १-२३४।६
 जगत पिता मैं सुत करि जाना । १-२०१।७
 जगत बिदित निगमागम गाई । २-२९८।१
 जगत बिदित सुरपति मट मोघन । १-१२१।६
 जगत मोरि उपहास कराई । १-१३५।३
 जगदातमा मूम जग जानी । ७-२२।७
 जगदंबा जानहु जिये सीता । १-२४५।२
 जगदंबा तव सुता भवानी । १-१७।२
 जगदंबा संततमनिदिता । ७-२३।९
 जगदंबिका रूप गुन खानी । १-२४६।१
 जगमगात मनि खंभन माहीं । १-३२४।३
 जगमय प्रभु का बहु कल्पना । ६-१४।८
 जगु जप राम रामु जप जेही । २-२१७।७
 जगु मल मलेहि पोच कहूँ पोचू । २-२१६।७
 जच्छ जीव तै गए फराई । १-१७८।४
 जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा । १-११।१
 जटा मुकुट निज सीस बनावा । २-१५०।२
 जटा मुकुट परिधन मुनिवीर । ३-१०।३
 जटा मुकुट सिर उर बनमाला । ३-३३।७
 जट्ट धरेउ जेहिं कपिल कृपाला । १-१४१।६
 जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे । २-१२६।७

जड़ता परबंधनताति घनी । ७-१०१।९
 जथा अवध नर नारि बिलीना । २-१९८।५
 जथा उलूकहि तम पर नेहा । ६-४४।८
 जथा चक्र मय रिबि दुर्वासा । ३-१।३
 जथा जोग जेहि भाग बनाई । १-१८८।८
 जथाजोगु तहैं तहैं सब छाए । १-१३।७
 जथा जोगु निज कुल अनुहारी । १-२२३।७
 जथाजोगु पीढ़न्ह बैठारे । १-३२७।३
 जथाजोग मिले सबहि कृपाला । ७-५।५
 जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ । ४-१३।३
 जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू । ७-१२०।२०
 जथा लाम संतोष सदाई । ७-४५।२
 जदपि असत्य देत दुख अहई । १-११७।१
 जदपि भगत हित तुम्हहि सोहाई । १-१४१।५
 जदपि मृषा छूटत कठिनई । ७-११६।४
 जदपि मोह बस कहहु भवानी । १-११३।७
 जदपि सहज जड़ नारि अयानी । १-१११।४
 जद्यपि अखिल लोक कर राऊ । १-५६।५
 जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे । ६-४२।१
 जद्यपि छाड़ि न सकहु सनेहू । १-३३१।७
 जद्यपि जानत अंतरजामी । ३-४१।२
 जद्यपि ताहि कामना नाही । १-२१३।२
 जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी । ७-१२७।१
 जद्यपि प्रथम बरजि सिवें राखे । १-१२७।७
 जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं । ७-४१।७
 जद्यपि रामु सीम समता की । २-२८८।६
 जद्यपि सो सब भौंति अयाना । ७-८६।५
 जन अभिमान न राखहिं काऊ । ७-७३।५
 जन प्रह्लाद सुजस बिस्तारा । १-१२१।८

जन मन अमित नाम किए पावन । १-२३॥७
 जन रंजन सज्जन प्रिय एहा । ७-१२१॥२
 जन सन कबहुँ कि करऊँ दुराऊ । ३-४१॥३
 जन हित प्रभु चित छोभु न होई । २-२६७॥२
 जनक अवधपुर दीन्ह पठाई । १-३३३॥१
 जनक एक जग जलधि अगाधु । १-४॥६
 जनक पत्रिका बाचि सुनाई । १-२१४॥१
 जनक समाज जयामति बरनी । २-२७१॥१
 जनक समान अपान बिसारे । १-३२४॥६
 जनकप्रिया गह पाय पुनीता । २-२८४॥१
 जनकसुता के चरनन्हि परी । १-१०॥८
 जनकसुता के कुसल सुनाई । ६-१०७॥२
 जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही । ६-१०६॥४
 जनकसुता रघुबीर बिआहू । १-२१५॥३
 जनकु प्रेमबस फिरै न चहहीं । १-३३१॥४
 जननि जनक गुर बंधु बिरोधी । २-१७२॥२
 जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा । २-११०॥४
 जननी कुमति जगनु सब सारखी । २-२६१॥१
 जननी जनक बंधु सुखदाता । २-४२॥३
 जननी जिअत बदन बिधु जोईहि । २-६७॥८
 जननी जौबन बिटप कुठारु । २-१८१॥८
 जननी जौ यह जानौ भेऊ । २-१६७॥८
 जननी निदुर बिसरि जनि जाई । २-६७॥६
 जननी सकल भरत सनमानी । २-११७॥३
 जन्म कर्म अनंत नामानी । ७-५१॥३
 जन्म कोटि अघ नासहिँ तबहीं । ५-४३॥२
 जन्मदरिद्र मनहुँ निधि पाई । १-२८५॥३
 जन्म सहस अवस्य यह पाइहि । ७-१०८॥६
 जन्म सहस्र पाव तन सोई । ७-१२०॥२३

जन्म हमार सुफल भा आजू । ५-२१॥४
 जन्म अनेक रचित अघ दहहीं । १-११८॥३
 जन्म करम अगनित श्रुति गाए । १-११३॥३
 जन्म जनम सिव पद अनुरागा । १-६४॥५
 जन्म लाभ कह अवधि अघाई । २-५१॥८
 जन्मत काहे न मारे मोही । २-१६०॥७
 जन्मत भयउँ सूद्र तनु पाई । ७-१६॥१
 जन्मि कीन्ह गुन दोष बिनागा । २-२३१॥६
 जन्मी जाइ हिमाचल गेहा । १-८२॥२
 जन्मी पारबती तनु पाई । १-६४॥६
 जनवासे कहूँ चले लवाई । १-३०५॥४
 जनि अबला जिमि करुना करहू । २-३४॥७
 जनि आचरजु करे सुनि सोई । १-३२॥३
 जनि दिनकर कुल होसि कुठारी । २-३३॥६
 जनि मन गुनहु मोहि करि काटर । ६-८॥७
 जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू । १-२७३॥७
 जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू । २-४४॥५
 जन्मित बियोग बिपति सब नासी । ७-५॥३
 जनु अपबरग सकल तनुधारी । १-३१४॥६
 जनु उदार गृह जाचक भीरा । ३-२८॥८
 जनु उमगत आनंद अनुरागा । २-२७८॥२
 जनु एतनिअ बिरचि करतूती । २-०॥५
 जनु कज्जल के आँधी चली । ६-७७॥८
 जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे । ६-६८॥७
 जनु करि करिनि चले तकि बारी । २-१८७॥१
 जनु करुना बहु बेष बिसूरति । २-२८०॥७
 जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी । २-११७॥४
 जनु खग मुखर समर्ये जनु सानी । १-११४॥७
 जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई । २-११॥८

जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा । २-१८४/१
 जनु घेरी अमरावति आई । ७-२६/५
 जनु चकोर पूरन ससि लोभा । १-२०६/६
 जनु चातकी पाइ जलु स्वाती । १-२६२/६
 जनु छुड़ गयउ पाक बरतोरु । २-२६/४
 जनु जारि पंख परेउ संपाती । २-१४७/७
 जनु जलचर गन सूखत पानी । २-५०/६
 जनु जलनिधि महुँ बिकल जहाजू । २-२४८/१
 जनु जिय राउ रामु भए राजा । २-२५५/५
 जनु जीवहि माया लपटानी । ४-१३/६
 जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के । २-३१५/५
 जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं । ६-१७/८
 जनु जोगी परमारथु पावा । २-२३८/३
 जनु टीडी गिरि गुहाँ समाई । ६-६६/२
 जनु तनु धरें करहीं सुख सेवा । १-३१४/५
 जनु तनु धरें बिनय अनुरागु । २-१९६/२
 जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा । १-२९९/४
 जनु तहैं बरिस कमल सित श्रेनी । १-२३१/२
 जनु दहैं दिसि दामिनी दमकहैं । ६-८६/३
 जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा । ४-१४/६
 जनु घन धरमादिक तनुधारी । १-३०८/२
 जनु नावरी खेलहैं सरि माहीं । ६-८७/६
 जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ । ६-१२/४
 जनु पाठीनु दीन बिनु पानी । २-३४/२
 जनु पुर दहैं दिसि लागि दवारी । २-१५८/१
 जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे । २-२३५/१
 जनु फिरि अबध चले रघुराजू । २-२२४/८
 जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू । १-१५५/५
 जनु बरषी कृत प्रगट बुढ़ाई । ४-१५/२

जनु बहु मनसिज रति तनुधारी । १-१२५/१
 जनु बानैत बने बहु बाना । ३-३४/३
 जनु बिधु उदरौ चकोरकुमारी । १-२८५/४
 जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं । २-७५/५
 जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं । २-१४१/८
 जनु बिनु पंख बिहग बेहालू । २-३६/१
 जनु बिरञ्चि निज हाथ सँवारे । १-३१०/५
 जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही । २-१२२/४
 जनु बंसी खेलत चित दए । ६-८७/५
 जनु भट बिलग बिलग होइ छाए । ३-३७/४
 जनु भैंटी संपति अति रंका । २-२४४/३
 जनु मधु मदन मध्य रति लसई । २-१२२/३
 जनु मनोज निज हाथ बनाए । १-३४९/१
 जनु मरुमूमि कलपतरु जामा । २-२२२/८
 जनु महि लुठत सनेह समेटा । २-२४२/६
 जनु महि करति जनक पहुनाई । २-२७८/५
 जनु मारेसि गुर बाँभन गाई । २-१४६/३
 जनु मुनि बेष कीन्ह रति कामा । २-२३८/७
 जनु रतिपति निज हाथ सँवारे । २-८९/८
 जनु राकेस उदय भएँ तारे । १-२४४/१
 जनु सन्नान बन झपटैउ लावा । २-२८/५
 जनु सनेह रजु बँधे बराती । १-३३१/५
 जनु सनेह सुरतरु के फूला । २-५२/३
 जनु सपच्छ कज्जल गिरि जूथा । ३-१७/७
 जनु सपच्छ धावहैं बहु नागा । ६-४१/५
 जनु खव सैल गेरु के धारा । ३-१७/१
 जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी । २-१५३/२
 जनु सरि तीर तीर बन बागा । १-३९/६
 जनु सहमेउ करि केहरि नादा । २-१५९/३

जनु सुबेलि अवलीं हिम मारीं । २-२४३।६
 जनु सुरपुर सौपान सुहाई । २-१६१।४
 जनु सुराज मंगल चहु ओरा । २-२३५।७
 जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवीं । १-२४२।८
 जपति हृदयें रघुपति गुन श्रेनी । ५-७।८
 जापि जेईं पिय संग भवानी । १-१८।६
 जब उर बल बिराग अधिकाई । ७-१२१।९
 जब उर बसहिं रामु धनुपानी । ७-९६।७
 जब जब मिरउं जाइ बरिआई । ६-२४।५
 जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई । १-२।५
 जब तब सुमिरन मजन न होई । ५-३१।३
 जब तें जारि गयउ कपि लंका । ५-३५।९
 जब ते रघुनायक अपनाया । ७-८।३
 जब ते श्रवनपूर महि खसैऊ । ६-१३।६
 जब न उठइ तब करहिं प्रसंसा । ६-७।२
 जब बहु काल करिअ सतसंगा । ७-६०।४
 जब लागि गंग जमुन जल धारा । २-६८।८
 जब लागि तुम्ह ऐहहु मोहिं पाहीं । १-५।२
 जब लागि प्रभु प्रताप रबि नाहीं । ५-४६।४
 जब लागि मिलौं तुम्हहिं तनु त्यागी । ३-७।६
 जब सब बिषय बिलास बिरागा । २-१२।४
 जम कर धार किधौं बरिआता । १-१४।७
 जम जातना सरिस संसारु । २-६४।५
 जमुनहिं कीन्ह प्रनामु बहोरी । २-१११।१
 जमुना कलि मल हरनि सुहाई । ६-१११।५
 जमपुर पंथ सोच जिमि पापी । २-१४४।६
 जय अरु बिजय जान सब कोऊ । १-१२१।४
 जय कृपाल जय जयति मुकुंदा । ६-१०२।११
 जय कै आस तजहु अब भाई । ६-१५।६

जय जय जगदंबिके भवानी । १-८०।८
 जय जय जय कहि देहिं असीसा । १-२६४।२
 जय जय जय कृपाल सुखकंदा । ५-३३।५
 जय जय जय दिनकर कुल नाथा । १-३३०।७
 जय जय जय संकर सुर करहीं । १-१००।४
 जय जय धुनि करि भय उपजावहिं । ६-१२।७
 जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर । ७-५०।६
 जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई । १-१७१।१
 जय मद मोह कोह भ्रम हारी । १-२८४।२
 जय महेस भलि भगति दृढ़ाई । १-५६।४
 जय महेस मन मानस हंसा । १-२८४।५
 जय महेस मुख चंद चकोरी । १-२३४।५
 जय रघुबीर कहइ सबु कोई । ६-११८।३
 जय रघुबीर कोसलाधीसा । ६-३८।८
 जय रघुबीर प्रताप टिवाकर । ६-४१।२
 जय रघुबीर प्रताप समूहा । ६-०।१०
 जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा । ६-१०२।१०
 जय सरीर छबि कोटि अनंगा । १-२८४।४
 जयति जयति जय कृपानिधाना । ६-६५।८
 जयति जयति जय परी तराई । ६-४०।७
 जयति प्रनत हित करुना कंदा । ३-८।४
 जयति बचन रचना अति नागर । १-२८४।३
 ज्योतिषु झूठ हमारें भाएँ । २-१११।५
 जरइ नगर अनाथ कर जैसा । १-२५।५
 जरत जंतु जलनिधि जब जाने । ५-५७।७
 जरत महानल जंतु घृत परा । ६-२६।८
 जरहिं गात रिस कछु न बसाई । १-१६२।१
 जरहिं दुसह जर पुर नर नारीं । २-२६१।२
 जरहिं सदा पर संपति देखी । ७-३८।३

जस न सो तेहि कारन गिरिजा । १-२५॥
 जरित कनक मनि पत्नी डसाए । १-३५५१
 जरे न पाव देह बिरहानी । १-३०१८
 जलजारुन लोचन भूपबर । ६-११०११३
 जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू । २-२४४८
 जल प्रबाहैं जल अलि गति जैसी । २-२३३॥
 जल बिनु रस कि होइ संसारा । ७-८१५
 जल बिलोकि तिन्ह के परिछाहीं । १-२१२
 जल भाजन सब दिए चलाई । २-३०९११
 जलखग कूजत गुंजत मृंगा । १-२२६८
 जलज जाँक जिमि गुन बिलगाहीं । १-४१५
 जलदाता न रहिहि कुल कोऊ । १-१०३१३
 जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई । ६-८९११०
 जल्पहिं कल्पित बचन अनेका । १-११४१५
 जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसैं । १-११५१३
 जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना । १-१२०१४
 जस काछिअ तस चाहिअ नाचा । २-१२६८
 जस थोरैहुं धन खल इतराई । ४-१३१५
 जस धवलिहउँ भुवन दस चारी । २-१८९१५
 जस मरु धरनि देवधुनि धारा । २-२४९१०
 जस मोहि गरुअ एक परद्रोही । १-१८३१५
 जस यह भयउ महा परितापा । १-६२१६
 जस सुराज खल उद्यम गयऊ । ४-१४१३
 जसि कछु संमु बिमुख के होई । १-६४१३
 जसु जग जाइ होइ अपबादू । २-७६१४
 जसु प्रतापु बलु तेजु गर्वौई । १-२४४१४
 जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरु । २-१४३१४
 जहैं खेलहिं नित चारिउ भाई । ७-७५१३
 जहैं घटसंभव मुनिबर म्यानी । ७-३११७

जहैं जल पिअहिं बाजि गज ठाटा । ७-२८१९
 जहैं जहैं जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ । २-१२११६
 जहैं जहैं नाथ पाउ तुम्ह धारा । २-१३५१९
 जहैं तहैं कटकटाइ भट भिरे । ६-४५१५
 जह तहैं कायर गर्वहिं पराने । १-२८४८
 जहैं तहैं गाल बजावन लागे । १-२६५१२
 जहैं तहैं चले न सकहिं पुकारी । ६-१०१६
 जहैं तहैं चौकें चारु पुराई । १-३४३१५
 जहैं तहैं जुबतिन्ह मंगल गाए । १-२६२१२
 जहैं तहैं देख धरें धनु बाना । २-१३०१०
 जहैं तहैं देहिं कैकइहि गारी । २-४६१९
 जहैं तहैं नाचइ परिहरि लाजा । ६-२३१९
 जहैं तहैं पटक पटक भट डारेसि । ६-६४१९
 जहैं तहैं प्रगट टसानन तेते । ६-१५१२
 जहैं तहैं पुरुजन उतरन लागे । २-२७८१०
 जहैं तहैं भजे मालु अरु कीसा । ६-१५१३
 जहैं तहैं मनहुं अर्घजल परे । ६-८०१४
 जहैं तहैं मनहुं चित्र तिखि काढ़े । २-३११९
 जहैं तहैं मनहुं सैन चतुरंगा । २-२३५१४
 जहैं तहैं मरकट कोटि पटाइहि । ४-३१४
 जहैं तहैं मैं देखउँ दोउ भाई । ३-२४१०
 जहैं तहैं लगे महि परन । ३-१११९
 जहैं तहैं सुनिहिं राम गुन ग्रामा । १-७४८
 जहैं धनुमख हित भूमि बनाई । १-२२३१९
 जहैं न जाइ मनु बिधि हरि हर को । २-२४०१५
 जहैं न राम पद पंकज भाऊ । २-२१०१९
 जहैं नहिं राम पेम परधानू । २-२९०१२
 जहैं नाहिन गज बाजि निबाहू । १-१५६१५
 जहैं बस राम पेम मृगरूपा । २-२०९१९

जहाँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाया । १-१२७१४
 जहाँ बसंत रितु रही लोमाई । १-२२६१३
 जहाँ बूड़े बहु सुर नर सूर । ६-२७६३
 जहाँ लगे धर्म कहत श्रुति सज्जन । ७-४८१२
 जहाँ सब कहूँ सब भीति सुपासा । १-३०५१६
 जहाँ सब भीति मोर बड़ काजू । २-५२६
 जहाँ सिय लखनु रामु रहे आई । २-१३८१५
 जहाँ सुख सकल सकल दुख नाहीं । २-२४८१५
 जहाँ कुमति तहाँ बिपति निदाना । ५-३११६
 जहाँ जाइ मन तहाँ लोमाई । १-२१२१५
 जहाँ प्रगट रघुबीर बिराजा । ३-१३१४
 जहाँ बसहु सिय लखन समेता । २-१२७१३
 जहाँ राम सुखधाम सुहार । ७-४७०१५
 जहाँ स्वयंवर भूमि बनाई । १-१३२१४
 जा पर कृपा राम कै होई । ६-५४६३
 जा पर नाथ करहु तुन्ह दाय । ५-२११५
 जा पर होइ सो नट अनुकूला । ३-३८१४
 जा बस जीव परा भवकृपा । ३-१४१५
 जाइ अवध अब यहु सुखु लेबा । २-१४५१५
 जाइ कमल पद नाएसि माथा । ४-२४१७
 जाइ कीन्ह अमरावति बासा । १-१५११८
 जाइ जनकपुर आइअ देखी । १-२१७१५
 जाइ जननि उर पुनि लपटानी । १-१०१८
 जाइ न कोटिहुँ बदन बखानी । १-१११८
 जाइ न बरनि अनीति अपारा । ७-११११०
 जाइ न बरनि बिचित्र बिताना । १-२८८१३
 जाइ न बरनि बिरंचि बनावा । १-१११३
 जाइ न बरनि समउ सुखु सोई । १-३४४१७
 जाइ न सीलु सनेहु बखानी । २-१३८१८

जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं । २-२४८१८
 जाइ बिपिन लागी तपु करना । १-७३१५
 जाइ रही पाई बिनु पाई । ५-२२१५
 जाइ लोकु परलोकु नसाई । २-६२१७
 जाइ सुपनखीँ रावन प्रेरा । ३-२०१५
 जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं । २-७२१८
 जाइअ अवध देव हिल लागी । २-१११४
 जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा । १-६११५
 जाउँ कहीं तजि पद जलजाता । ७-१७१४
 जाके दूत केर यह कामा । ६-३५१३
 जाके हनुमान से पायक । ६-६२१३
 जाके पद सरोज रति होई । ७-४८१८
 जागत नहिँ बहु भीति जगावा । ६-५८१३
 जागत सौवत सरन तुम्हारी । २-१२११४
 जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा । १-१७११४
 जाग न ध्यानजनित सुख पावा । ३-१११७
 जागन लगे बैठि बीरासन । २-८११२
 जागि करहिँ कटु कोटि कलपना । २-१५६१६
 जागे जग मंगल सुखदास । २-१३१३
 जागे सौर्य सपन अस देखा । २-२२५१३
 जागे जथा सपन भ्रम जाई । १-११११२
 जागे समुझत मन सकुचाई । ४-६१२०
 जाचक गुन गन गावन लागे । १-३२११२
 जाचक चातक दादुर मोरा । १-३४६१५
 जाचक सकल अजाचक कीन्हे । ७-१११७
 जाचत जलु पबि पाहन डारउ । २-२०४१३
 जाचहिँ भगति सकल सुख खानी । ७-११५१८
 जात चलै सुंदर बिधि नाना । १-६०१३
 जात न जानिअ दिन अरु राती । १-११६१५

जात नचावत वपल तुरंगा । १-३१५।५
 जात पथिक जनु लेत बोलाई । ३-३१।४
 जातहिं नीट जुडाई होई । १-३८।१
 जातहिं राम तिलक तेहि सारा । ५-५३।२
 जाति जीव जल थल नम बासी । १-७।१
 जातुधान अति भट बलवाना । ५-१५।६
 जातुधान बोला सुख पाई । १-१७०।२
 जातुधान चुनि सेन बनाई । ३-१७।३
 जातुधान सेना सब मारी । ५-१०।३
 जातें अवध अनाथ न होई । २-१४।१
 जातें रह नरनाहु सुखारी । २-१५१।२
 जान बसन मनि मूषन दीन्हे । १-३५०।४
 जान मुसुंडि संमु गिरिजाऊ । ५-४७।१
 जान महेस राम प्रमुताई । ७-५१।६
 जान सिरोमनि कोसलराऊ । १-२७।१०
 जानइ सो अति कपट घनेरा । १-१६१।४
 जानउँ नहिं कछु भजन उपाई । ४-२।३
 जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी । ३-१२।५
 जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई । २-१२६।३
 जानत प्रिया एकु मनु मोरा । ५-१४।६
 जानत हीं कछु मल होनिहारा । १-१५८।७
 जानतहूँ पूछहु मतिधीरा । ३-३५।१२
 जानति हहु बस नाहु हमारें । २-१३।५
 जानहि कहु करिबरगामिनी । ३-३५।१०
 जानहिं भगत भगत उर बंदन । २-१२६।४
 जानहिं रामु न सकहिं बखानी । २-२८८।२
 जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा । ७-५५।४
 जाना अनुज न मातु पिताहूँ । ७-७८।५
 जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा । ५-४३।२

जानि ईस सम भाउ न दूजा । १-३२०।१
 जानि काज प्रमु निकट बोलावा । ४-२२।१
 जानि कुटिल किछी मोहि बिसरावउ । ७-०।२
 जानि न जाइ काह परिनामा । २-५८।४
 जानि न जाइ नारि गति भाई । २-४६।८
 जानि न जाइ राम प्रमुताई । ७-८८।६
 जानि पिता प्रमु करउँ ढिटाई । १-१५१।३
 जानि बिलंबु त्रास मन माहीं । १-२२४।६
 जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे । १-२१४।२
 जानि मनुज जनि हट मन धरहू । ६-१३।८
 जानि मोहि सिख देइअ स्वामी । २-२१२।४
 जानि राम बनबास एकाकी । २-२२७।४
 जानि राम सम प्रेम बढ़ावा । ७-१२।४
 जानि लेउ जो जाननिहारा । २-१३६।१
 जानिअ सत्य मोहि निज दासी । १-१०७।१
 जानु पानि बिचरनि मोहि भाई । १-११८।११
 जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं । ५-१४।७
 जानेउ सती जगतपति जागे । १-५१।३
 जानैउँ स्वामि सहज अनुकूला । २-२११।३
 जानेसु संत अनंत समाना । ७-१०८।१२
 जानेहु अघम नारि जग सोई । ३-४।१५
 जानेहु तब प्रमान बागीसा । १-७४।४
 जानेहु तात संत संतत फुर । ७-३७।७
 जानेहु लेइहि मागि चबेना । २-२१।६
 जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा । ५-१।१
 जाप जग्य पाकरि तर करई । ७-५६।५
 जामवंत अंगद सुमसीला । ७-७।१
 जामवंत कर गहि सोइ धायो । ६-७३।६
 जामवंत कह पद सिरु नाई । ६-१६।२

जामवंत धायउ स्नधीस । ६-१७।१२
 जामवंत मतिधीर सुजाना । ४-२२।१
 जामवंत मन सोच बिसेषी । ४-२६।६
 जामवंत मारुति नयसीला । ६-१०५।२
 जामवंत रघुपतिहि सुनाए । १-२१।६
 जारइ भुवन चारिदस आसू । ६-५४।१
 जारत नगरु कस न धरि खाहू । ६-८।३
 जारत बिरहवंत नर नारी । ६-११।१०
 जारिउं जायँ जननि कहि काकू । २-२६०।६
 जारेहुँ सहजु न परिहर सोई । १-७१।६
 जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती । १-२७।३
 जासु कृपाँ निरमल मति पावउं । १-१७।८
 जासु चरित लखि काहुँ न पावा । ७-७।११
 जासु छाँह छुइ लेइअ सीधा । २-११३।३
 जासु नाम बल करउं बिसोकी । १-११८।११
 जासु नेम ब्रत जाइ न बरना । १-१६।३
 जासु मजन बिनु जरनि न जाहीं । २-३।७
 जाहि न मोह कवन अस ग्यानी । ७-६।११०
 जाहि न रघुपति चरित सोहाहीं । ७-५२।५
 जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई । ७-१२७।८
 जाहि मृत्यु आई अति नेरी । ५-५२।४
 जाहि राम पद गूढ़ सनेहू । १-१६।११
 जाहिं जे मज्जन तीरथराजा । १-४३।७
 जाहिं सनेह सुराँ सब छाके । २-२२४।३
 जिअइ कि लवन पयोधि मराली । २-६२।६
 जिअत जीव जड़ सबइ सहाई । २-२६।१७
 जिअत धरहु तापस द्वी माई । ६-३२।२
 जिअत न करबि सवति सेवकाई । २-२०।१
 जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ । २-१८।१२

जिअत फिरेउं लेइ राम सँदेसू । २-१५२।३
 जिअहिं बिचारे निसिचर खाई । ५-३६।३
 जिअहु जगतपति बरिस करोरी । २-४।५
 जिअहु सुखी सय लाख बरीसा । २-११५।५
 जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी । २-१४४।४
 जिए मालु कपि नहिं रजनीचर । ६-११३।६
 जिए सकल रघुपति कीं ईछा । ६-११३।८
 जिता काम अहमिति मन माहीं । १-१२६।५
 जितिहहिं राम न संसय या महिं । ६-५६।५
 जिन्ह के बस सब जीव दुखारी । ७-१११।८
 जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी । ५-५२।८
 जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं । ७-१३।१११
 जिन्ह कें राम चरन भल गाऊ । १-३८।७
 जिन्ह कें लरिबे कर अभिमाना । १-१८।१२
 जिन्ह कें सतसंगति अति प्यारी । ७-१२७।६
 जिन्ह कें सूझ लामु नहिं हानी । १-११५।३
 जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई । २-२६२।८
 जिन्ह जग मगु परमारथु सीधा । २-२७७।२
 जिन्ह जिन्ह प्रमु महिमा कछु जानी । ६-१५।८
 जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू । २-५१।३
 जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोग । ७-१२०।२८
 जिन्ह ते मै उन्ह कें बस रहऊँ । ३-४४।६
 जिन्ह तें मै नरसृष्टि अनूपा । १-१४।११
 जिन्ह पटए बन बालक ऐसे । २-८८।२
 जिन्ह पटए बन बालक ऐसे । २-११०।७
 जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा । १-१३।४
 जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे । २-१०८।५
 जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी । ४-१७।७
 जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे । १-२२०।४

जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना । १-१३।२
 जिन्हहि देखि दिसिकुंजर लाजे । १-२३२।७
 जिन्हहि न रघुपति कथा सोहाती । ७-५२।६
 जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई । २-१६७।६
 जिन्हहि बिलोकत मुनि मन मोहे । १-२९।६
 जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना । २-१८।११
 जिन्हहि रामु जानत करि मोरे । २-२७।१८
 जिमि अकाल के कुसुम भवानी । ३-२३।८
 जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि । २-१४।१२
 जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका । १-१९।८
 जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना । ४-१४।१२
 जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई । ३-२३।७
 जिमि कपिलहि घालइ हरहाई । ७-३८।२
 जिमि कुठार चंदन आचरनी । ७-३६।७
 जिमि खगपति जल कै चिकनाई । ७-८।८
 जिमि गज अर्क फलनि को मार्यो । ६-६४।६
 जिमि गज हरि किसोर के तार्क । १-२९।२।४
 जिमि गवें तकड़ लेउँ केहि माँती । २-१२।४
 जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं । २-२४।३।४
 जिमि टिट्टिम खग सूत उताना । ६-३९।६
 जिमि जग जामवंत हनुमानू । १-६।७
 जिमि जनु रामभगति के पाएँ । १-६।३
 जिमि जलहीन मीन गमु धरनी । २-२८।१९
 जिमि जवास परें पावस पानी । २-५३।२
 जिमि तून पाइ लाग अति डाढ़ा । ६-७।१२
 जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी । ५-६।१
 जिमि दामिनि घन माझ समाहीं । ६-६८।६
 जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया । ६-५।७
 जिमि द्विज द्रोह किरैं कुल नासा । ४-१६।८

जिमि दुर्जन पर संपति देखी । ४-१६।४
 जिमि परद्रोह निरत मनसा के । ६-१।१।४
 जिमि परद्रोह संत मन माहीं । ७-१।१।९
 जिमि प्रति लाम लोभ अधिकाई । १-१७।१।२
 जिमि प्रतिलाम लोभ अधिकाई । ६-१०।१।१
 जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं । २-१४।०।६
 जिमि बालक राखइ महतारी । ३-४।२।५
 जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई । ७-८।१।६
 जिमि बुध तजहिं मोह मद माना । ४-१४।८
 जिमि मुजंग बिनु रजु पहिचानें । १-११।१।१
 जिमि मद उतरि गएँ मतवारे । १-८।५।३
 जिमि मन माहँ मनोरथ गोई । २-३।१।१।९
 जिमि मलेछ बस कपिता गाई । ३-२८।८
 जिमि यह कथा सुनायहु मोही । १-१२।६।७
 जिमि रबि उरें जाहिं तम फाटी । ६-१६।१
 जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी । ३-१६।६
 जिमि लोभहि सोषइ संतोषा । ४-१।५।३
 जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा । ४-१३।७
 जिमि सब मरमु दसानन जाना । ७-६।५।४
 जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारी । ४-१४।७
 जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं । ७-१२।०।१९
 जिमि ससु चहै नाग अरि भागू । १-२६।६।१
 जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही । ४-१६।५
 जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए । २-४।२।८
 जिमि सो असन पचवै जठरागी । ७-११।८।१९
 जिमि हरिजन हिये उपज न कामा । ४-१४।१।०
 जिमि हरि सरन न एकउ बाधा । ४-१६।१
 जिमि हिम उपल कृमी दलि गरहीं । १-३।७
 जिय की जरनि हरत हँसि हेरत । २-२३।८।८

जियै संसय कछु फिरती बारा । ४-२९।१
 जिवनु जासु रघुनाथ अधीना । २-१४५।६
 जीअत भवन जाहु द्वौ भाई । ३-१८।६
 जीतन कहैं न कतहुँ रिपु तार्क । ६-७९।११
 जीतहु समर सहित दोउ भाई । १-२६।५
 जीति न जाइ प्रभंजन जाया । ५-१८।९
 जीते सकल भूप बरिआई । १-१५३।६
 जीतेहु लोकपाल सब राजा । ६-१९।४
 जीतेहु सहसबाहु बलि बाली । ६-२८।८
 जीत्यौं अजय निसाचर राऊ । ६-१११।३
 जीव अनेक एक श्रीकंता । ७-७७।७
 जीव चराचर जाचत तेही । ७-१२०।९
 जीव घराघर बिबिधि प्रकारा । ७-८५।३
 जीव धर्म अहमिति अभिमाना । १-११५।४
 जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला । ७-१२१।१६
 जीव नित्य केहि लागि तुम्ह रोवा । ४-१०।५
 जीव पाव निज सहज सरुपा । ३-३५।९
 जीवत सब सम चौदह प्रानी । ६-३०।४
 जीवत सब समान तेइ प्रानी । १-११२।५
 जीवत हमहि कुअरि को बरई । १-२६।५।४
 जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ । २-२००।१
 जीवन जनम लाहु किन लेहू । २-१।८
 जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी । ७-५३।६
 जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ । ७-५३।४
 जीवन मुक्ति हेतु जनु कासी । २-३०।११
 जिवनु मोर राम बिनु नाहीं । २-३२।२
 जिवनु राम दरस आधीना । २-३२।३
 जीह जसौमति हरि हलधर से । १-१९।८
 जीह नामु जप लोचन नीरु । २-३२।१

जीह सो दादुर जीह समाना । १-११२।६
 जुग सम मई सिराति न राती । ६-१९।३
 जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई । १-३६।४
 जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई । ६-१७।४
 जुगल पुनीत मनोहर चरिता । १-१४।१
 जुबती सास्त्र नृपति बस नाहीं । ३-३६।९
 जुबती सजें करहिं सुम गाना । ७-८।६
 जूथप सकल बोलि तब लोन्हे । ६-३८।५
 जे अबिवेक अंध अभिमानी । १-२४४।५
 जे आचरहिं ते नर न घनेरे । ६-७७।२
 जे कहूँ सत मारग प्रतिपालहिं । ७-११।३
 जे चितए प्रमु जिन्ह प्रमु हेरे । २-२१६।१
 जे जड़ चेतन जीव जहाना । १-२।४
 जे जप जोग अनल तन दहहीं । ७-८४।४
 जे जानहिं रघुवीर प्रमाऊ । १-३२०।६
 जे तरजनी देखि मरि जाहीं । १-२७२।३
 जे ताकहिं परधनु परदारा । २-१६७।३
 जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे । २-११९।८
 जे न नमत हरि गुर पद मूला । १-११२।४
 जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई । १-७।१३
 जे नित नूतन अमल सुहाए । ३-४।३
 जे पर दूषन भूषनधारी । १-७।१०
 जे प्रिय परम कैकई केरी । २-४८।३
 जे बितान बिधि कुसल सुजाना । १-२८६।७
 जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ । १-३।१
 जे बिनु काम राम के चरे । १-१७।४
 जे मनि लागि सुजतन कराहीं । ७-११९।१०
 जे मिथिलापति नगर निवासी । २-२७७।१
 जे मुनिनायक आतमबादी । ७-६९।६

जे मुनिबर परमास्थवादी । ६-१०४।२
 जे मुनिबर विम्यान बिसारद । १-१७७।५
 जे मुनि ब्रह्म विचार बिसारद । ७-१२१।१२
 जे यह कथा कपट तजि गावा । ७-१२८।५
 जे लपट परधन परदास । १-१८३।५
 जे श्रुति कह सुम धर्म अचारा । ७-११६।१०
 जे सपनेहुँ निज धरम न डोले । २-१८५।६
 जे सुख चाहिँ आन उपाई । ७-११४।३
 जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं । २-२१३।७
 जे सुरतिय सुधि सहज सयानी । १-३१७।६
 जे हमारे अरि मित्र उदासी । २-२।२
 जे हर हृदय कमल महुँ गोए । १-३२७।५
 जेउ कहावत हितू हमारे । १-२५५।१
 जेहि कहुँ नहिँ प्रतिभट जग जाता । १-१७९।३
 जेहि कारन नहीप सब आए । १-२६१।१
 जेहि कारन मुनि जतन कराहीं । १-१४५।४
 जेहि गति मोरि न दूसरि आसा । ७-८५।७
 जेहि गावहिँ श्रुति संत पुराना । ७-१११।८
 जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही । २-२७१।४
 जेहि चिंतहिँ परमास्थवादी । १-१४३।४
 जेहि जनेसु टेइ जुबराजू । २-१३।२
 जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनू रानी । २-१२४।८
 जेहि तें रहै मुआल सुखारी । २-७१।८
 जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना । २-१७१।४
 जेहि न मोह अस को जग जाया । १-१२७।८
 जेहि न लाग धुन को अस धीरा । ७-७०।५
 जेहि न सुलमु तेहि सरिस बाम को । २-३०३।३
 जेहि प्रकार नारी मुनिद्रोही । ३-१२।३
 जेहि प्रकार मोहि बरे कुमारी । १-१३०।७

जेहि प्रकार सीता हरि आनी । ६-६१।१
 जेहि प्रकार सुरसरि महि आई । १-२११।२
 जेहि पितु देइ राजु सो लहई । २-२०६।३
 जेहि पितु देइ सो पावइ टीका । २-१७४।३
 जेहि बिधि गए दूत समुदाई । ४-११।१
 जेहि बिधि गए सरोबर तीरा । ७-६५।८
 जेहि बिधि जनकमुता तहँ रही । ५-७।३
 जेहि बिधि तबहिँ ताहि लइ आवा । ६-६१।४
 जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई । ७-८१।४
 जेहि बिधि भई सो सब तेंहिं कही । ७-६५।५
 जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई । ७-४।८
 जेहि बिधि मोर परम हित होई । २-६३।६
 जेहि बिधि मोह मिटे सोइ करहू । १-१०८।२
 जेहि बिधि राम राज रस भंगू । २-२२१।७
 जेहि बिधि सीता के सुधि पाई । ४-२०।८
 जेहि बिधि सोकु कलंकु नसाई । २-४१।८
 जेहि बिधि संकर कहा बखानी । १-३२।१
 जेहि बिधि हरि आनी नृपनारी । ३-२४।२
 जेहि बिलोकि बिलखाहिँ बिमाना । २-१३।४
 जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई । ६-१७।१०
 जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू । २-१०७।३
 जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं । २-१६१।६
 जेहि लगि राम धरी नरदेहा । १-१२३।३
 जेहि लगि सीय राम बनबासू । २-१७८।३
 जेहि श्रुति गाव धरहिँ मुनि ध्याना । १-११३।८
 जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा । २-१३०।३
 जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीं । २-१८०।६
 जेहि सिहात अमरावतिपालू । २-११८।७
 जेहिं करना करि कीन्ह न कोहू । १-१२।६

जेहिं छीजै निसिचर सुनु भाई । ६-७४।९
 जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोस । २-१००।४
 जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना । ६-७९।४
 जेहिं तनु परिहरि प्रेम निबाहा । २-१७०।६
 जेहिं दब दुसह दसहुं दिसि दीन्ही । २-८३।३
 जेहिं न प्रेम पनु मोर निबाहा । २-१५४।६
 जेहिं न बहोरि होइ उर दाहू । १-७०।६
 जेहिं न होइ पाछे पछिताऊ । २-३।५
 जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ । १-१८९।८
 जेहिं पावा राखा नहिं ताहू । १-१९३।७
 जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया । ३-१४।२
 जेहिं बिग्यान मगन मुनि ग्यानी । १-११०।१
 जेहिं मुद मंगल कानन जाता । २-५२।७
 जेहिं यह सुजसु लोक तिहुं गाइअ । ५-५९।४
 जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं । २-४३।६
 जेहिं सपनेहुं परिनारि न हेरी । १-२३०।६
 जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलंकू । २-११८।३
 जेहिं सूकर होइ नृपहि भुलावा । १-१६९।३
 जेहिं हौं हरि पद कमल बिछोही । ६-१८।६
 जैसें दिवस दीप छबि छूटे । १-२६२।५
 जैसें परम कृपन कर सोना । १-२५८।२
 जैसें बिनु बिराग संन्यासी । १-२५०।३
 जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा । ५-२६।१
 जैहसि तैं समेत परिवारा । १-१७३।२
 जो अवतरेउ भूमि भय टारन । १-१६।७
 जो अवलोकि मोर मनु छोभा । २-१३।४
 जो आघरत मोर भत्त होई । २-१७६।५
 जो उपमा कछु कहीं सो थोरी । १-३२४।२
 जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा । १-५८।३

जो कछु करहिं उनहि सब छाजा । ३-१६।१४
 जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी । १-२७२।५
 जो कछु कहिअ थोर सबु तासू । २-१।५
 जो कछु चरित रक्षा भगवाना । ३-२३।५
 जो कर दंभ सो बड़ आचारी । ७-१७।५
 जो कर हित अनहित ताहू सों । ७-३८।६
 जो कर्ता पालक संहर्ता । ६-६।४
 जो कीजिअ सों सुम सिव साखी । २-२५७।८
 जो गिरिजा प्रति संभु बखानी । १-१५२।१
 जो छल छाडि भजइ रघुबीरा । ७-१२६।४
 जो जग जोगु भूप अभिषेका । २-५।४
 जो जग जंगम तीस्थराजू । १-१।७
 जो जस करइ सो तस फलु चारखा । २-२९।४
 जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही । २-२८५।१
 जो जेहि भाव नीक तेहि सोई । १-४।९
 जो जेहि लायक सो तेहिं राखा । २-१८५।७
 जो तजि कपटु करइ द्विज सेवा । ७-४४।८
 जो तनु पाइ भजिअ रघुबीरा । ७-१५।२
 जो तिहुं काल एकरस रहई । १-३४०।८
 जो तृन तोरि लाज परिहरई । ३-१६।१८
 जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राणा । २-८०।७
 जो न अतिथि सिव भगति सुजानू । २-१७१।५
 जो न छाडि छलु हरि जन होई । २-१७२।४
 जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं । ५-५४।४
 जो न भजइ सचराचर स्वामिहि । ७-१२७।४
 जो न मोह यह रूप निहारी । १-२२०।१
 जो नहिं गुर आयसु अनुसरई । २-१७१।८
 जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं । ४-२९।५
 जो पथ पाव कबहुं मुनि कोई । २-१२३।२

जो पय फेनु फोर पबि टौकी । २-२८०८
 जो पितु मातु बचन अनुरागी । २-४०७
 जो बड़ होत सो राम बड़ाई । २-१९८८
 जो बर मागहु देउँ सो तोही । ३-१०१२३
 जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं । २-२४८३
 जो बिलोकि बहु काम लजाहीं । १-२३२१६
 जो बिलोकि मुनिबर मन नाचा । ७-२६१६
 जो भागि रन ते जाइ । ३-१११४
 जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई । ७-५१६
 जो मन भाव मधुर कछु खाहू । २-५२१९
 जो मन लाइ न सुन हरि लीलहि । ७-१२७१३
 जो मारइ तेहि कोउ न जाना । ६-७२१४
 जो मारीच सुमुज मटु मोचन । १-२२०१५
 जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी । १-१४११५
 जो मुनिबर न सकहु तुम्ह मागी । ३-४११४
 जो मैं तुम्ह सन कही भवानी । ७-६७७
 जो मैं सुना सो सुनहु सयानी । १-२२०१२
 जो रघुबीर चरन अनुरागी । ४-२२७
 जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता । ३-१८
 जो रघुबंसतिलक तुम्ह त्यागी । २-५५५
 जो सब पातक पीतक डाकिनि । २-१३११६
 जो सुख पावहिं जो गति लहहीं । १-१७११८
 जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला । २-२०६५
 जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा । ७-५४८
 जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी । ७-३५३
 जो सुम असुम सकल फल दाता । २-२८१४
 जो सुर असुर चराचर खाई । ५-२११९
 जोग जग्य जप तप व्रत पूजा । ७-१२११५
 जोग चरित्र रहस्य विभागा । ७-८४७

जोग न मख जप तप उपवासा । ७-४५१९
 जोग सिद्धि निगमागम गाई । २-२५३७
 जोग बिराग म्यान निपुनाई । ७-१२५४
 जोगवत रहहिं मनहि मनु दीन्हें । २-२९३१६
 जोगवहिं जननि सकल दिन राती । २-२००१२
 जोगु जानकिहि यह बरु अहई । १-२२११९
 जोजन सत प्रमान लै धावैं । १-२५२८
 जोजन सत्तरि नगरु तुम्हारा । १-१५८८
 जोते रबि हय निंदक बाजी । १-३००६
 जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी । ७-४३४
 जोरि पानि कर बिनय ससंका । ५-३५
 जोरि पानि बिनबत प्रनामु करि । २-२४१८
 जोरि पानि बोले सब सादर । ६-१७७६
 जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई । १-२७७३
 जो लागि करी निसाधर नासा । ३-२३१२
 जो लागि कामु संभु पहिं गयऊ । १-८५१९
 जोँ असि मति सहाय कृत कीसा । ५-५५४
 जोँ एहि भाँति बनै संयोगा । ७-१२१५
 जोँ एहि मारग फिरिअ बहोरी । २-११७१२
 जोँ कछु पुन्य प्रभाउ हमारे । १-२५४७
 जोँ कृपाल मोहि उपर भाऊ । ७-१२०१९
 जोँ जड़ दैव जिआवे मोही । ६-६०११०
 जोँ जननी यहु संमत मोरा । २-१६७४
 जोँ जनमि त भइ काहे न बाँझा । २-१६३४
 जोँ तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया । ५-४५८
 जोँ तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा । १-१७७०३
 जोँ तुम्ह सुख मानहु मन माहीं । ५-१६१९
 जोँ तैं जिअत रहेसि सुरद्रोही । ६-८३४
 जोँ न उपासिउँ तव दस जीहा । ६-३३७

जौ न कहउँ बड़ होइ अकाजा । १-४४।८
 जौ बिधि कुसल निबाहै काजू । २-१।३
 जौ बिनु जतन चलीं तजि ताही । २-१८५।३
 जौ बिरंचि संकर सम होईः । ४-१२।५
 जौ भगवंत लीन्ह अवतारा । ३-२२।३
 जौ मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू । १-१११।५
 जौ मो पर रघुपति अनुकूला । ६-५८।४
 जौ यह मत मानै महीप मन । २-२८३।२
 जौ यह होइ मोर मत माता । २-१६६।८
 जौ रन भूप भाजि नहिं जाही । ६-८१।४
 जौ सत सहस होहिं सहसानन । २-१३८।६
 जौ सनमानहिं सेवकु मानो । २-२३३।१
 जौ हरि हर कोपहिं मन माही । १-१६५।४
 जौ हरि कृपाँ हृदयँ बस आई । ४-११६।१

झ

झपट लपट बहु कोटि कराला । ५-२५।२
 झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी । १-११६।२
 झुकी रानि अब रहु अरगानी । २-१३।४
 झूठ काह पछिताउँ अनागी । २-१८१।८
 झूठइ भोजन झूठ चबेना । ४-३८।४

ट

टरइ नू कीस चरन एहि भौंती । ६-३३।१३
 टाप न बूड़ बेग अधिकाई । १-२१८।४
 टारि न सकहिं चाप तम भारी । २-२३८।१
 टूट न द्वार परम कठिनाई । ६-४२।४

ठ

ठगनि जुबा मृगसजु लजाएँ । १-२५३।८

ठाटहु सकल मरै के ठाटा । २-१८१।१
 ठाढ़े रहे एक पद टोऊ । १-१४४।१
 ठाढ़े सकल सिंधु कें तीरा । ४-२४।६
 ठावै ठावै राखे अति प्रीती । २-८१।३
 ठुमुकु ठुमुकु प्रभु चलहिं पराई । १-२०२।४

ड

डगमगानि महि दिग्गज डोले । १-२५३।१
 डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं । ५-३४।१०
 डरपहिं एकहिं एक निहारी । २-८२।६
 डरपावै गहि स्वल्प सपेला । ६-५०।८
 डरपे सुर भए असुर सुखारी । १-८६।४
 डरहु दरिद्रहिं पारसु पाएँ । २-२०१।२
 डाबर कमठ कि मंदर लेहीं । २-१३८।४
 डाबर जोगु कि हंसकुमारी । २-५१।५
 डारइ जहै मर्कट मट भारी । ६-६८।३
 डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं । ४-२२।१
 डारि सुधा बिषु चाहत वीखा । २-४६।३
 डारेन्हि ता पर एकहिं बारा । ६-८१।२

ढ

ढेक महोरख ऊँट बिसराते । ३-३४।५

त

तउ न तजा तनु जीव अभागें । २-१६५।६
 तकि तकि मार बार बहु मारी । ६-१८।१
 तजउ चउथि के चंद कि नाई । ५-३४।६
 तजत बमन जिमि जन बड़भागी । २-३२३।८
 तजन चहत सुचि स्वामि सनेही । २-६३।३
 तजहिं बिषम बिषु तामस तीछी । २-२६१।८

तजहु सत्य जग अपजसु लेहू । २-२१।५
 तजहु सोचु बिधि बात बनाई । २-२६।२
 तजहु सोच मन आनुहु धीरा । ४-४।७
 तजि अधर्म रति धर्म कराहीं । ७-१०३।६
 तजि निज धरमु बिषय लयलीना । २-१७।३
 तजि रघुबीर आन गति नाहीं । ६-१०८।७
 तजि सकोच सिखइअ अनुगामी । २-३१३।७
 तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा । ७-५६।६
 तजिअ बिषादु काल गति जानी । २-१७।५।२
 तजी समाधि संभु अबिनासी । १-५१।२
 तजे राम हम जानि कलेसू । २-८५।४
 तजें तिहें पुर अपजसु छावा । २-९४।६
 तड़ित बिनिदक बसन सुरंगा । १-३१५।१
 तत्व बिचार निपुन भगवाना । १-१४।१।७
 तथा कथा कीरति गुन नाना । १-११३।४
 तथा हृदयें मम संसय होई । १-१४।८।६
 तदपि अधिक सुख सागर रामा । १-११।७।६
 तदपि कहउँ अवसर अनुसारा । २-३०४।४
 तदपि कहें बिनु रहा न कोई । १-१२।१
 तदपि न कछु महिमा तब जानी । ७-१६।४
 तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती । १-५६।८
 तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा । ६-२३।६
 तदपि न मृग मग तजइ नरेसू । १-१५६।६
 तदपि बनी संध्या अनुमानी । १-११।४।४
 तदपि बात एक सुनहु हमारी । १-८२।४
 तदपि भगति बस बिनकउँ स्वामी । १-८।८
 तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा । १-१४।४।४
 तदपि महाबल भूमि न परेऊ । ६-७।२
 तदपि समीत रहउँ मन माहीं । ४-५।१३

तदपि हतउँ रघुबीर दोहाई । ६-७।१४
 तदपि हृदयें नहिं लाज बिसेषी । ६-३५।१३
 तदपि हृदयें संतोष न आवा । १-१३।५।१
 तदपि होत परितोषु न जी कें । २-१७।६।६
 तदपि होति नहिं सीतलि छाती । २-९।५
 तन बहु ब्रन चितौं जर छाती । ४-१।३
 तन बिनु बेट मजन नहिं बरना । ७-१५।५
 तन बिभूति पट केहरि छाला । १-११।२
 तनय बिलोकि नयन जल छाए । ६-१११।१
 तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी । २-१६।५
 तनु धनु तजेउ बधनु पनु राखा । २-२१।७
 तनु धनु भवन सुहृद परिवारा । ५-४।४
 तनु धरि धरि दसस्थ गृहँ छाए । १-३४।३
 तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन । २-२।७
 तनु परिहरेउ पैम पन लागी । २-२६।६
 तनु परिहरेउ राम बिरहागी । २-१७।३।४
 तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ । ७-८।२
 तनु बिसाल पीवर अधिकाई । १-१५।७
 तनु भा कुलिस गई सब पीरा । ४-७।६
 तप तैं अगम न कछु संसारा । १-१६।२।३
 तपइ अबौं इव उर अधिकाई । १-५।४
 तपबल बिधु भए परित्राता । १-१६।२।२
 तपबल बिधु सकल जग त्राता । १-७।३
 तपबल संभु धरइ महिमारा । १-७।२।४
 तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू । २-१७।२।१
 तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा । १-७।२।२
 तब कलंकु अब जीवन हानी । २-१८।६
 तब गहि पद लंका पर डारा । ६-७।१
 तब चलि गयउ निकट मय त्यागें । ६-५।३।८

तब जानेसु निसिचर संधारे । ५-३७
 तब तजि दोष गुनहिं मनु राता । ५-६।५
 तब तब बारि बिलोचन भरहीं । ३-१४०।३
 तब ताकिसि रघुनायक सरना । ३-२५।५
 तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा । ६-४१।१०
 तब तें आजु सौचि सुधि पाई । ५-२९०।४
 तब तें भयउ बनु मंगलदायकु । २-१३६।५
 तब तें सिव मन भयउ बिरागा । १-४४।७
 तब धरि जीम कदावउँ तोरी । २-१३।८
 तब धरि धीर सुमित्राँ कहैऊ । २-२८३।७
 तब घावा करि घोर विकारा । ६-४५।५
 तब नारद मुनि गरुड पढायो । ७-५७।४
 तब निज जन्म सफल करि लेखीं । ७-१०९।१४
 तब पथ परत उताइल पाऊ । २-२३३।६
 तब प्रमु अनुजहि आयसु दीन्ह । ६-१०४।५
 तब प्रमु काटि कीन्ह दुइ खंडा । ६-४०।६
 तब प्रमु कोपि कारमुक तीन्ह । ६-९२।५
 तब प्रमु निकट बिभीषनु आए । ६-११५।१
 तब प्रमु परम क्रोध कहूँ पावा । ६-९०।८
 तब प्रमु मरदाज पहिँ गयऊ । ६-१२०।३
 तब प्रमु सीता बोलि पढाई । ५-१०।६
 तब बाली मोहि कहा बुझाई । ४-५।५
 तब बिरचि के लोक सिघाए । १-१२७।२
 तब बोला तापस बगध्यानी । १-१६१।६
 तब भव मूल भेद भ्रम नासा । ७-११७।२
 तब मम धर्म उपज अनुरागा । ३-१५।७
 तब मागेहु जेहिं बचनु न टरई । २-२९।७
 तब मारीच कपटमृग भयऊ । ३-२६।१
 तब भारत सुत प्रमु संभार्यो । ६-१४।८

तब मुनि आत्रम दिए सुहाए । २-१२४।४
 तब मुनि बोलेउ बचन सक्रोपा । ७-१११।१२
 तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी । ४-२८।८
 तब मैं रघुपति कथा सुनाई । ७-१२७।२
 तब यह जीव कृतारथ होई । ७-११७।५
 तब रघुनाथ चरन अनुरागा । २-१२।५
 तब रह सम भगति उर छाई । ७-१२१।११
 तब रावन माया बिस्तारी । ६-८८।६
 तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी । २-३५।७
 तब लगै कीस परान । ६-१००।६
 तब सक्रोप बोलेउ घननादा । ६-४८।५
 तब सठ निज नार्यहि लइ आइहि । ५-२४।१
 तब सर हति प्रमु कृत दुइ खंडा । ६-१०२।३
 तब सिरु नाइ मरत कर जोरे । २-२५४।४
 तब सिसु चरित कहैसि मन लाई । ७-६३।९
 तब सुनिहउँ निर्गुन उपदेसा । ७-११०।११
 तब संग्राम जितेहु किन ताही । ६-३५।११
 तबहिं गीघ घावा करि क्रोधा । ३-२८।१८
 तबहिं दीप बिग्यान बुझाई । ७-११७।१३
 तबहुँ कदाचित सो निरुअरई । ७-११६।८
 तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा । ५-४३।६
 तम पुंज दिवाकर तेज अनी । ७-१३।६
 तम बरुख्य कहैं जांतुधान की । ५-१५।२
 तमसा तीर तुरत स्यु आवा । २-१४६।१
 तरकि न सकहिं सकल अनुमानी । १-३४०।७
 तर्कि न जाहिं बुद्धि बल बानी । ६-७३।१
 तरकेउ पवनतनय बल भारी । ५-०।६
 तर्जन क्रोध लोभ मद कामः । ३-१०।१३
 तरल तमकि संजुग महि आए । ६-१६।४

तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे । ५-५१२
 तरी अहल्या कृत अध भूरी । ५-२२२।५
 तरु छाया सुख जानइ सोई । ७-६८।३
 तरु बिलोकि उर अति सुखु भयऊ । ५-१०५।४
 तरु सिंसुपा मनोहर जाना । २-८८।४
 ततफत मौन पाव जिमि बारी । ५-२७।५
 तब कटु रटनि करउँ नहिं काना । ६-२३।४
 तब दुख दुखी सुकृपा निकेता । ५-१३।९
 तब प्रमाउ जग बिदित न केही । २-१०२।५
 तब प्रसाद सब संसय गयऊ । ७-६८।८
 तब प्रसाद संसय सब गयऊ । ७-१२४।९
 तब बस होइ भूप सुनु सोऊ । १-१६७।७
 तब भक्ति बिना भव भूलि परे । ६-११०।१८
 तब भयँ डरत सदा सोउ काला । ३-१२।८
 तब भ्रातहि पूँछेउ नय नागर । ५-५५।२
 तब हित कारन आयउँ भाई । ६-११।२
 त्वदीय भक्ति संयुताः । ३-३।२४
 तस कहिहूँ हियँ हरि के प्रेरें । १-३०।३
 तस तुम्हार लालचु नरनाहा । १-२६६।४
 तस फलु उन्हाहिं देउँ करि साफा । २-३२।८
 तसि पुनीत कौसल्या देवी । १-२९३।४
 तसि पूजा चाहिअ जस देवता । २-२१२।७
 तहैं कि तिमिर जहैं तरनि प्रकासू । २-२१४।७
 तहैं तस सहस भौति सबु कीन्हा । २-१६१।७
 तहैं तहैं ईसु देउ यह हमहाँ । २-२३।५
 तहैं तहैं करहिं सप्रेम प्रनामा । २-२२०।८
 तहैं तहैं चकित यितव सबु कोऊ । १-२४३।६
 तहैं तहैं राम भजन अनुसरउँ । ७-१०१।९
 तहैं तहैं सिद्ध चला बहु भौंती । १-३३२।३

तहैं तहैं सुर बैठे करि थाना । ७-११७।११
 तहैं तुम्हार सब भौति सुपासू । २-१३१।३
 तहैं दसकंधर देख अखारा । ६-१२।४
 तहैं पुनि करउँ संमु सेवकाई । ७-१०४।२
 तहैं पुनि रहिं कछु काल गवौंयउँ । ७-८१।२
 तहैं बरत देखहिं आगि । ६-१००।७
 तहैं बस नुपति कपट मुनिदेया । १-१५७।९
 तहैं भ्रम अति अबिहित तब बानी । १-११८।५
 तहैं मुज हरि देखउँ निज पासा । ७-७८।८
 तहैं रह काकमुसुडि सुसीला । ७-६१।२
 तहैं रह रावन सहज असंका । ४-२७।११
 तहैं राखइ जननी अरगाई । ३-४२।६
 तहैं हियँ हरषि चलेउ मनु राजा । १-१४२।३
 तहैं होइहिं सुग्रीव मिताई । ३-३५।११
 तहैंई दिवसु जहैं मानु प्रकासू । २-७३।३
 तहाँ गएँ कल्यानु न होई । ५-६१।६
 तहाँ न पुरुष करहिं अरनाना । ७-२८।२
 तहाँ परंतु एक कठिनाई । १-१६६।२
 तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला । १-२१६।७
 ता कहैं बिबुधनदी बैतरनी । ३-१।७
 ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा । ४-१७।६
 ता कहुँ संत कहइ सब कोई । ७-१७।४
 ता ते मैं नहिं प्रमु पहिचाना । ४-५।९
 ता पर धाइ चढ़ेउ मय त्यागें । ५-२।८
 ता पर राम पैमु सिसु सोहा । २-२८५।६
 ताकर नाम भरत अस होई । १-११६।७
 ता कर सील कस न अस होई । ३-५।८
 तात अनत पूछहुं जनि काहू । ७-५१।७
 तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा । ७-१०।६

तात कर्म निज तें गति पाई । ३-३०८
 तात करिअ जनि चिंता मोरी । २-१५०७
 तात कहाँ तें पाती आई । १-२८९८
 तात जतन करि आनउँ सोई । ४-१७७३
 तात तरनिकुल पालक होहू । २-३०५३
 तात तासु तुम्ह प्रान अघारा । ६-६०१४
 तात धरम मनु तुम्ह सबु सोधा । २-१४२२
 तात न रामहि सौंपेहु मोही । २-१५१५
 तात निरंतर बस मैं ताकें । ३-१५१२
 तात बाउ तन लाग न काऊ । २-११९३
 तात बिगतभय कानन चरहू । २-३०७५
 तात सकल मोहि कहहु बुझाई । ७-९३३
 तात सत्य कहु पूछउँ तोही । ६-३७५
 तात सुनहु सादर मन लाई । ७-१४४
 तात सुनाएहु बिनती मोरी । २-१५१९
 ताते तात न कहि समुझायउँ । ३-१२२
 ताते तेहि डरपति अति माया । ७-११५५
 ताते नाथ संग नहिं लीन्हा । ७-०४
 ताते बार बीस तें कही । ६-२८७
 ताते मैं सब कहेउँ बखानी । ७-१२१२
 ताते मैं संछेप बखानी । १-६४४
 ताते मोहि परम प्रिय स्वामी । ७-१५४
 ताते मोहि ममता अधिकाई । ७-१४७
 ताते तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें । ५-४८१
 ताते पुर प्रमोदु अधिकाई । १-३०८७
 ताते बिनय करउँ सब पाहीं । १-७४
 ताते मोहि पूछेहु रघुसाई । ३-१२१४
 तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा । १-१६९७
 तापस वेष बिराजत काछें । २-१२२१

तामस असुर देह तिन्ह पाई । १-१२१५
 तारकु असुरु समय जेहिं मारा । १-१०२७
 तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा । ५-२४
 तासु कहा नहिं मानेहि नीचा । ६-३५१९
 तासु कुसल तै तुम्ह घलि आवहु । ६-१०६२
 तासु चरित मन महुँ सबु गावा । ६-८२
 तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी । १-१४०५
 तासु तेज बल विपुल बखानी । ६-७१५
 तासु दूत पन कहु किमि टरई । ६-३४८
 तासु दून कपि रूप देखावा । ५-१९
 तासु द्रोहें सुख चहसि असागी । ७-१०५४
 तासु नारि निसिघर पति हरिही । ४-२७७
 तासु नारि समीत बड़ि हासा । ५-३६४
 तासु नास कल्यांत न होई । ७-५६१९
 तासु निकट पुनि सब घलि आए । ४-२४३
 तासु पयान सगुन यह नीती । ५-३४५
 तासु पंथ को रोकन पारा । ६-५५४
 तासु बचन सुनि अति सुख माना । ५-३११
 तासु बचन सुनि आतुर आवहु । ३-१८७
 तासु बिमुख किमि लह विश्रामा । ६-३४६
 तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा । १-१५८१
 तासु सुजसु त्रैलोक उज्जगर । ५-२९३
 तासो कबहुँ भई ही भेटा । ६-२०३
 ताहि एक छन मुरुछा आई । ५-१८८
 ताहि कि सोहड़ ऐसि लराई । ६-६५२
 ताहि धरै जननी हटि धावा । १-२०२८
 ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला । ५-४६६
 ताहि निपाति महाधुनि गर्जा । ५-७७८
 ताहि बधें कछु पाप न होई । ४-८८

ताहि भजनु तजि भाव न आना । ५-३३३
 ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता । ६-४२७
 तिन्ह कर कहा करिअ नहिँ काना । ९-११४८
 तिन्ह कर चरित बिदित संसारा । ९-४५७
 तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा । ९-१८२१२
 तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु । ७-१२०१५
 तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने । २-१०१४
 तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नहिँ । १-६८६
 तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई । ३-४३४
 तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू । १-८३
 तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा । २-२७१७
 तिन्ह कहूँ जग दुर्लभ कछु नहिँ । ३-३०१९
 तिन्ह कहूँ मधुर कथा रघुबर की । १-८६
 तिन्ह कहूँ मैं पूरब बर दीन्हा । १-१८६३
 तिन्ह कहूँ राम भगति निज देहीं । ६-१११७
 तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी । १-११९१२
 तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा । १-१६४३
 तिन्ह के बघन बाघ हरि ब्याला । १-३७७
 तिन्ह के भाग सराहन लागे । २-२५०८
 तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे । २-१२१८
 तिन्ह कें मन अति बिसमय भयऊ । ४-२८५
 तिन्ह के संग नारि एक स्थामा । ३-२१८
 तिन्ह के हिय तुम्ह कहूँ गृह रूरे । २-१२७५
 तिन्ह कें तिलक छोभु कस तोरें । २-१४८
 तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा । ७-१३१५३
 तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराय । २-१२११२
 तिन्ह तन चितव न अनहित जानी । ७-११७१९
 तिन्ह ते पुनि उपजहिँ बहु सुता । ७-१२०२१
 तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा । १-४११

तिन्ह पर प्रमुहि प्रीति अधिकाई । ७-३६३
 तिन्ह प्रमु प्रगट कालसम देखा । १-२४०७
 तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा । १-२१५
 तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई । १-७८१९
 तिन्ह बहु बिधि गज्जन करवायो । ६-१०७६
 तिन्ह महुँ मैं मतिमंद अधारी । ३-३४३
 तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी । ७-८५५
 तिन्ह रावनहि कही सब बाता । ६-४१९
 तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्हें । २-२५१४
 तिन्ह सन बयरुँ किरै मल नहिँ । ३-२४६
 तिन्ह समान अमरावति नहिँ । २-११२३
 तिन्ह सिय रामु न देखन पाए । २-१२०६
 तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी । १-८५
 तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ । २-११२
 तिन्हहि कहत कछु अघटित नहिँ । १-११४६
 तिन्हहि को मारइ बिनु भगवता । ३-२२२
 तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता । ४-२७१
 तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना । ५-१७५
 तिन्हहि देव सर सरित सराहहिँ । २-११२६
 तिन्हहि धरन कहूँ भुजा पसारी । ६-१७७
 तिन्हहि न पाप पुंज समुहहिँ । २-११३५
 तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहिँ । २-११२१९
 तिन्हहि बिरोधि न आइहि पूरा । ३-२४८
 तिन्हहि बिलोकत पातक भारी । ४-६१९
 तिन्हहि मिलें तै होब पुनीता । ४-२७८
 तिन्हहि राम पद अति अनुरागा । १-४३१९
 तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा । १-१३४८
 तिन्हहि सराहहिँ सुरपुरवासी । २-११२४
 तिनि तिनि नृपहि उपज बिस्वासा । १-१६१५

तिमि धाए मनुजाद अबुझा । ६-३११९०
 तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें । २-२०४१५
 तिय जिय की रूचि लखि कह राऊ । २-२८८३
 तिय मिस मीघु सीस पर नाची । २-३३१५
 तिय सुभार्य कहु पूँछत डरहीं । २-११५१६
 तिल प्रवान करि काटि निवारे । ६-८२१४
 तिलक बिभीषन कहैं पुनि सार्यो । ६-११७१४
 तिलक रेख सोमा जनु चौकी । १-२१८८८
 तिलक ललाट पटल दुतिकारी । १-१४६१४
 तिलक सारि अस्तुति अनुसारी । ६-१०५१६
 तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई । १-२५११२
 तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं । १-१५१५
 तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना । १-१२२१९
 तीनि सहस संबत सोई खाई । १-७३१६
 तीरथ आवाहन सुरसरि जस । २-२४७१३
 तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं । १-३३१६
 तीरथपतिहिं आव सब कोई । १-४३१३
 तीरथराज समाज सुकरमा । १-१११९
 तीरथराजु दीख प्रमु जाई । २-१०४१२
 तुम्ह अति क्रोध तजे तब प्राणा । ७-५५१३
 तुम्ह उदार उर अंतरजामी । ७-८३१८
 तुम्ह एहि भौंति तात कदराहू । २-१७५१३
 तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना । २-५६१२
 तुम्ह कहैं जम दुर्लभ कछु नाहीं । ७-१०८११५
 तुम्ह कहैं नाथ निहोरा नाहीं । ३-१११३
 तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ । २-१८१६
 तुम्ह कहुँ सुकृत सुजसु नहिं दोषू । २-१७४१२
 तुम्ह कृतांत मच्छक सुर त्राता । ६-८३१६
 तुम्ह गृह गवनहु मयउ बिलंबा । १-८०१७

तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा । १-७८१५
 तुम्ह जानहु जिय जो जेहि केहीं । २-२९०१३
 तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ । २-१११३
 तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पास । २-४८१८
 तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी । ७-४६१५
 तुम्ह तैं प्रेम राम कैं दूना । ५-१३११०
 तुम्ह देखी सीता मृगनैनी । ३-२९१९
 तुम्ह देखे दयाल रघुसाई । ७-२१८
 तुम्ह नीकें निज नयन निहारे । १-२९०१४
 तुम्ह प्रमु सब देवन्हि निस्तारा । ६-७६१४
 तुम्ह परस्सहु मोहि जान न कोई । १-१६७१५
 तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू । २-१८१३
 तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू । २-१२५१८
 तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू । २-४२१४
 तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि माई । ४-२०१७
 तुम्ह पूछहु कस नर की नाई । ४-११८
 तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा । १-७५१६
 तुम्ह बिनु जितत बहुत दिन बीते । २-१५४१७
 तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ । १-२०७११०
 तुम्ह रघुपतिहिं प्राणहु तैं प्यारे । २-१६८१९
 तुम्ह रामहिं प्रतिकूल न होहू । २-१६८१३
 तुम्ह रीझहु सनेह सुटि थोरें । १-३४११४
 तुम्ह सन प्रमु दुराव कछु नाहीं । ३-१२१९
 तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी । ७-१२४१५
 तुम्ह सम रामहिं कोउ प्रिय नाहीं । २-२०७१८
 तुम्ह सम सील घोर मुनि ग्यानी । १-२७६१४
 तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी । १-११११६
 तुम्ह सर्वग्य कृपा अधिकाई । ७-१२०१७
 तुम्ह सारिखे गलित अभिमाना । १-१६०१९

तुम्ह सुर असुर चराचर जीते । ६-६१२
 तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं । ३-१८१९
 तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता । ५-२०७
 तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा । ६-११७८
 तुम्हरी कृपा पाव कोई कोई । ४-२०६
 तुम्हरी कृपा लहेऊँ विश्रामा । ४-११४७
 तुम्हरे हृदय होइ संदेह । २-५५६
 तुम्हरेँ इरिषा कपट बिसेषी । १-१३५७
 तुम्हरेँ दरस आस सब पूजी । २-१०६७
 तुम्हरेँ दरस जाहिँ अघ खीसा । ४-३२७
 तुम्हरेँ लाज न रोष न माखा । ६-२३८
 तुम्हहि अछत को बरनै पारा । १-२७३१५
 तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई । २-३०५६
 तुम्हहि उचित तप मो कहूँ भोगू । २-६६८
 तुम्हहि कि करइ मनोभव पीरा । १-१२८१२
 तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अहई । २-२७१९
 तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ । २-७८१४
 तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा । १-१०३१४
 तुम्हहि बिदित रघुपति प्रमुताई । १-४६१२
 तुम्हहि बिदित रघुबीर सुमाऊ । २-२११८
 तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा । १-१८६११
 तुम्हहि सुगाइ मातु कुटिलाई । २-१८३६
 तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा । २-१७५४
 तुम्हहू तात कहत अब जाना । ५-२६७
 तुरत उटाए करुनापुंजा । १-१४७८
 तुरत उठै प्रनु हरष बिसेषा । ५-४५११
 तुरत कपिन्ह कहूँ आयसु दीजे । ५-३३७
 तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू । २-११७८
 तुरत तुरग स्थ नाग सँवारे । २-१८६१४

तुरत दिव्य सिंघासन मागा । ४-१११९
 तुरत देखें मैं धैली खोली । १-२७५४
 तुरत पवनसुत बतिस भयऊ । ५-११८
 तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना । १-१८६८
 तुरत भयउ खल अंतरधाना । ६-७५११
 तुरतहिँ पंचवटी निअराई । ३-१२११८
 तुरतहिँ बिधि गिरिभवन पटाए । १-८८७
 तुरतहिँ हरी राम रनधीरा । ५-१९६
 तुरीयमेव केवल । ३-३११८
 तुलसिदास के प्रमुहि उदारहि । ४-२११०
 तुलसिदास प्रमु पाहि जनत जन । ४-५०१९
 तुलसिदास प्रमु त्रास बिखंडन । ६-११४१९
 तुलसिदास प्रमु त्रिभुवन भूषन । ४-३४१९
 तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी । १-३०११२
 तू छल बिनय करसि कर जोरें । १-२८०११
 तून कसेँ कर सरु धनु काँधें । २-२३८१५
 तून जिमि तनु परिहरिहि नरेसू । २-१४५१८
 तून सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा । ४-४५७
 तून सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी । ३-१४८
 तून समान सुग्रीवहि जानी । ४-४११
 तून समान त्रैलोकहि गनहीं । ५-५४१२
 तृप्ति न मानहिँ मनु सतरूपा । १-१४७८
 तृषावंत जिमि पाइ पियूषा । ४-१६
 ते अति दुर्गम सैल बिसाला । १-३७८
 ते कायर कलिकाल बिगोए । १-४२७
 ते गोपट इव भवनिधि तरहीं । ४-१२८६
 ते चमगादुर होइ अवतरहीं । ४-१२०१२
 ते जन बवित किए बिघाता । १-२०३१२
 ते जनु सकल बिभव बस करहीं । २-२१५

ते जलचर अगनित बहुमाँती । १-३१।७
 ते जानेहु निसिचर सब प्राणी । १-१८३।३
 ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं । ६-२।१
 ते तनु तजि सुरलोक सिधारे । १-२०४।३
 ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते । १-२१८।५
 ते द्दो बंधु तेज बल सीवा । ४-६।२८
 ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी । ७-१०८।५
 ते दिसि बिदिसि गगन महि पाटे । ६-९३।६
 ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे । ७-४०।८
 ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं । १-१०५।११
 ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाणा । १-४१।११
 ते नरबर थोरै जग माहीं । १-२३०।८
 ते नररूप चराचर ईसा । ३-२४।३
 ते नरेस बिनु पावक दहहीं । २-१२५।३
 ते नहिं बोलहिं बचन बिधारे । १-११४।७
 ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं । २-१२१।२
 ते पद गहि प्रमु पास चलावहिं । ६-४४।११
 ते प्रिय तुम्हहि करुइ मै माई । २-१५।३
 ते प्रिय राम लखन सम लेखे । २-२२३।७
 ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं । १-७।१२
 ते बिचित्र जल बिहग समाना । १-३६।११
 ते बिरचि जनि पारहिं लेखें । १-३५६।८
 ते मन बच क्रम पति हितकारी । ७-२१।८
 ते रतिनाथ सुमन सर मारे । २-२४।३
 ते लोकहुँ बेदहुँ बड़मागी । २-२५८।५
 ते सट कत हटि करत मिताई । ४-६।३
 ते सब कहहिं देखि जे आए । १-३१०।४
 ते सब जलचर चारु तड़ागा । १-३६।१०
 ते सब सिव पहिं मै अनुमाने । १-६८।३

ते सब सुरन्ह समर संघारे । १-१७८।११
 ते सब सूल नाम को जाना । ७-१२०।३२
 ते सब हँसे मष्ट करि रहहु । १-३६।८
 ते सुकृती मन मुदित नहाहीं । १-४०।६
 ते हटि देहिं कषाट उधारी । ७-११७।१२
 तेइ एहि ताल चतुर रखावारे । १-३७।११
 तेइ सिय रामु कहेउ कामारी । १-३१४।२
 तेइ सुक पिक बहुबरन बिहंगा । १-३६।१५
 तेइ सुरबर मानस अधिकारी । १-३७।२
 तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारों । २-१७४।६
 तेज निधान लखनु पुनि तैसैं । १-२१२।३
 तेज प्रताप सील बलवाना । १-१५२।३
 तेज पुंज गुन सील सुहाए । ७-३१।३
 तेज पुंज लछिमन उर लागी । ६-१३।७
 तेजपुंज लघुबयस सुहावा । २-१०९।७
 तेज हीन पावक ससि तरनी । ६-१०३।५
 तेजवंत लघु गनिअ न रानी । १-२५५।६
 तेपि कामबस मए बियोगी । १-८४।८
 तेरहुति चले साजि सबु साजू । २-३२१।७
 तेहि अवसर करुना महि छाई । २-२४५।८
 तेहि आएँ पुर कवन नलाई । १-३५।३
 तेहि आधीन म्यान बिग्याना । ३-१५।३
 तेहि उठाइ रावन पहिं आई । ६-१०३।२
 तेहि उर बसहु सहित बैदेही । २-१३०।४
 तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें । ७-१११।११
 तेहि कि मोह सक बिषय बिलासू । २-१३१।८
 तेहि किमि कहिअ विमोह प्रसंगा । १-११५।४
 तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई । २-१३०।६
 तेहि को कहहु सीस नहिं धरई । २-११३।७

तेहि कोसलाधीस के आना । ५-५१६
 तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं । ७-५६३
 तेहि तेहि के तसि तसि रुख राखी । २-२४३।२
 तेहि तें अजहुँ करहिं अपमाना । १-६१३
 तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू । २-२६३।७
 तेहि तें उबर सुमट सोइ भारी । ३-३७।१२
 तेहि तें परेउ मनोरथु छूछें । २-३५।२
 तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा । ५-६।८
 तेहि पर चढ़ेउ मदनु मन माखा । १-८६।१
 तेहि पर देन कहहु तुम्ह टोका । २-१७१।६
 तेहि पर बाँधेउ तनयें तुम्हारे । ५-२१।५
 तेहि पर ममता कर सब कोई । ७-१४।८
 तेहि बिधि दीप को बार बहोरी । ७-११७।१६
 तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा । ७-१४।६
 तेहि बिलोकि मन बिसमय भयऊ । १-१७६।६
 तेहि बुझाव घन पदवी पाई । ७-१०५।१०
 तेहि भ्रम तें नहिं मारेउं सोऊ । ४-७।५
 तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई । ६-३६।८
 तेहि मग देखिअ नम परिछाहीं । ६-११।८
 तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई । ७-१११।७
 तेहि महीं कुसमउ बाम बिधाता । २-२५२।५
 तेहि महीं साथ नारि सुकुमारी । २-१११।६
 तेहि महुँ बिप्र मौंसु खल साँधा । १-१७२।३
 तेहि लघु लगहिं भुवन दस चारी । १-२८।७
 तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारु । २-८६।८
 तेहि सम अमित बीर बलवाना । १-१७१।६
 तेहि समेत नृप दल मद गंजा । ५-२०।८
 तेहि ससि महुँ जानि होहु कलंक । ५-२२।२
 तेहि सारदउ न बरने पारा । १-३१६।१

तेहि सीता पर प्रीति घनेरी । ५-३१।८
 तेहि असोक बाटिका उजारी । ५-१७।३
 तेहिं आश्रम निवसे कछु काला । १-१५१।७
 तेहिं आसन आसीन कृपाला । ६-१०।४
 तेहिं इरिषा बन आनि दुराए । २-१११।६
 तेहिं कीन्ह कपट बहोरि । ६-१००।१२
 तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही । ३-३०।२
 तेहिं जड बरु बाउर कस कीन्हा । १-१५।८
 तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ । १-२४१।८
 तेहिं धरि देह चरित कूल नाना । १-१२।४
 तेहिं पटए बन राजकुमारा । २-११८।४
 तेहिं प्रमु हरषि हृदयें मोहि लावा । ५-४६।८
 तेहिं प्रसंग सहजेहिं बस देवा । १-१६८।२
 तेहिं पुनि यह दारुन दुख दीन्हा । ६-५८।५
 तेहिं बल ताहि न जितहिं पुरारी । १-१२२।७
 तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई । १-१२।१०
 तेहिं मध्य कोसलराज । ६-१००।१६
 तेहिं सब कही साप के बाता । ३-३२।६
 तेहिं समाज अस कहइ न कोई । १-२५२।१
 तेहिं स्यामल बरु रचेउ बिचारी । १-२२२।७
 तेहिं सर हतौं मूढ़ कहैं काली । ४-१७।५
 तेहिं सिंगारु न कहउं बखानी । १-१०२।४
 तेहिं हमार हित कीन्ह बैसूला । २-२११।३
 तेही समय गयउ खगनाहा । ७-६२।५
 तेही समय जाइ दससीसा । १-४८।३
 तेही समय देवरिषि आए । ६-७०।१०
 तेहीं समय बिभीषनु जागा । ५-५।२
 तेसइ सील रूप सुबिनीता । ३-२३।४
 तेसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी । २-६४।७

तैसेइ भूप संग दुइ ढोट । १-३१०३
 तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना । ४-२७
 तैं मैनाक होहि श्रमहारी । ५-०९
 तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे । ६-१३१५
 तो कहूँ आजु सुलभ भइ सोई । ३-३५८
 तो कहूँ देउँ काह सुनु भ्राता । ७-११२
 तोर कहा फुर जेहि दिन होई । २-१४२
 तोर नास नहि कवनेहु काला । १-१६४६
 तोरन केतु पताक बिताना । १-३४३६
 तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं । १-२५४८
 तोषे रामसखा की सेवीं । २-२२०३
 तोहि अबहिं का करीं बड़ाई । ६-३४१११
 तोहि देखत अस कौतुक करजौं । ६-२९८
 तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें । २-१०२६
 तो अस जाइ सिखावनु देहू । १-७१११
 तो कत दोसु लगाइअ काहू । १-१६७
 तो कत लीन्ह संग कटकाई । २-१८८४
 तो कस मरनु न मागें दीन्हा । २-८५६
 तो कहि प्रगट जनावहु सोई । २-४९६
 तो कानन सत अवध समाना । २-५५२
 तो कि बराबरि करत अयाना । १-२७६२
 तो किन जाइ परीछा लेहू । १-५११
 तो कृतकृत्य होइ सब लोगू । १-२२१७
 तो घर रहहु न आन उपाई । २-१८८
 तो जनि जाहु जानि बड़ि माता । २-५५१
 तो तुअ बस बिधि बिभु महैसा । १-१६४४
 तो तुम्ह दुसु पाउब परिनामा । २-६१३
 तो तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा । ५-६५
 तो पनु करि होतेउँ न हँसाई । १-२११६

तो प्रसन्न होइ यह बर देहू । १-१४५३
 तो पुनि मोहि जिअत नहिं पावा । ५-२६६
 तो बहोरि सुर करहिं उपाधी । ७-११७१०
 तो बिधि देइहि हमहिं सजाई । २-१८५
 तो मारउँ रन राम दोहाई । २-२२९८
 तो मैं काह कोपु करि कीन्हा । १-२७८८
 तो मैं मारबि काढ़ि कृपाना । ५-१९
 तो मोहि बरजहु भय बिसराई । ७-४२६
 तो रघुपति सेवक न कहावौं । ६-७४१३
 तो हमार पूजिहि अभिलाषा । १-१४३८

थ

थकित भई रजनीचर धारी । ३-१८१
 थकित होहिं सब लोग लुगाई । १-२०३८
 थकित होत जिमि चंद चकोरा । १-२१५३
 थके बिलोकि पथिक हिये हारे । २-२७५५
 थन पय खवहिं नयन जल छाए । २-१६८५
 थलबिहीन तरु कबहुँ कि जामा । ७-८९२
 थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा । २-१३२५
 थापिय जनु सब लोगु सिंहाऊ । २-८७७
 थोरे महुँ जानिहहिं सयाने । १-११६

द

दच्छ प्रजेस मए तेहि काला । १-५९५
 दच्छ सुक संभव यह देही । १-६३६
 दच्छ त्रास काहुँ न सनमानी । १-६२१
 दच्छसुता कहूँ नहिं कल्याना । १-५१५
 दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक । १-५९६
 दनुज गहन घन दहन कृसानुहि । ७-२९७
 दनुज विमोहनि जन सुर्यकारी । ७-७२१

दनुज महाबल मरइ न मारा । १-१२२।६
 दम अघार रजु सत्य सुबानी । ७-११६।१५
 दया लागि बलि दीन्ह छोडाई । ६-२३।१४
 दया लागि हँसि तुरत छोडाए । ५-५१।७
 द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी । १-१११।४
 द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा । २-२८०।५
 दरस लागि लोचन अकुलाने । १-२२८।७
 दरसन लागि कोसलाधीसा । ७-२६।१
 दरसन देत रहब मुनि मोहू । १-३५९।७
 दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा । १-२३।५
 दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं । १-६।३
 दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू । २-१६२।५
 द्वापर धर्म हरष भय मानस । ७-१०३।४
 द्वापर परितोषत प्रमु पूजें । १-२६।३
 द्वार आइ पद नायउ माथा । २-८।२
 द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई । २-१५८।३
 द्विज गुर कोप कहहु को राखा । १-१६५।५
 द्विज विन्ह जनैउ उघार तपी । ७-१००।७
 द्विज दयाल अति नीति निकेता । ७-१०४।५
 द्विज देवता घरहि के बाढ़े । १-२७५।७
 द्विज पट ग्रीति धर्म जनयत्री । ७-३७।६
 द्विज सेवक अधिकारी तेई । ७-१२७।७
 द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए । ७-१४।१०
 दस दिसि सुनिअ सुमंगल सानी । १-३४७।२
 दसकंधर में कीन्हि टिठाई । ६-२३।७
 दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं । ६-४०।६
 दसमुख बसबर्ती नर नारी । १-१८१।१२
 दस मुख बोलि उटा अकुलाना । ६-४।१०
 दसरथ अजिर बिचर प्रमु सोई । १-२०२।५

दसरथ कौसल्या बिख्याता । १-१२२।३
 दसरथ गवनु सोहाइ न काहू । १-३३।१४
 दसरथ घरिनि राम महतारी । २-२८४।२
 दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई । २-३२३।६
 दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई । १-२८९।२
 दसरथ भेट भगति मन लाखे । ६-१११।६
 दसरथ सुजन राम प्रिय भ्राता । २-२०७।२
 दसरथ सुकृत रामु धरें देही । १-३०९।१
 दसरथ हरषि गए सुरधामा । ६-१११।८
 दसहुँ चाप सायक संधाने । ६-८१।८
 दसा एक समुझब बिलगाना । १-६७।२
 दसा कवनि बिधि कहैं बखानी । २-६८।६
 दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं । २-२१९।५
 दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी । १-१०३।३
 दहइ कोटि कुल मूसुर रोषू । २-१२५।४
 दहन अनल सम जासु कुठारा । ६-२५।२
 दहिनि अखि नित फरकइ मोरो । २-११।५
 दाइज दीन्ह न जाइ बखाना । १-१००।८
 दान अनेक द्विजन्ह कहैं दीन्हे । ७-२३।१
 दान मान परिपूरन कीन्हे । १-३३८।६
 दान मान बिनती बर बानी । १-३२०।५
 दानि मुकुति धन धरम धाम के । १-३१।२
 दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू । २-२८।६
 दायक प्रनत विश्राम । ६-११२।१
 दारुन असंभावना बीती । १-११८।८
 दारुन दोष घटइ अति मोही । १-१६१।४
 दारुन बिपति हमहि एहिं दीन्ही । ६-८५।५
 दासी मन क्रम बचन तुम्हारी । १-१०९।१
 दासी देखि सुअवसरु आई । २-२८०।२

दाहिन वाम न जानउँ काऊ । २-११७
 दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के । २-१०६।२
 दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइ चाहे । ७-४१।४
 दिए डारि तन भूषन नाना । २-२४।६
 दिए दान बहु बिप्र हैकारी । २-७।४
 दिए दान महिसुर सनमाने । २-२०३।४
 दिए बूझि रुचि रबिकुलनंदन । १-३३।०।६
 दिए मूल फल प्रभु मन भाए । ३-२।८
 दिए सबहि जनवास सुहाए । १-१५।१
 दिए सुआसन विनु पहिचाने । १-३२।०।८
 दिऐँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ । २-१४।८
 दिच्छा देउँ म्यान जेहिं पावहु । ६-५६।८
 दिन चलि गए ब्याज बड़ बाड़ा । १-२७।५।३
 दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाए । ३-१३।२
 दिन प्रति नृपहि देखवाहिं आनी । १-२०।४।२
 दिन प्रति सहस भौति पहनाई । १-३३।१।३
 दिन बहु चले अहार विनु मरऊँ । ४-२६।३
 दिनकर कुल कैरव बन चंदू । २-२६।२।४
 दिनमनि चले करत गुनगाना । १-११।५।१
 दिनहीं लूक परन बिधि लागे । ६-३।१।७
 दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाए । ६-१।०।२
 दीरख दरसु भरि नयन तुम्हारा । २-१३।५।३
 दीखि जाइ जग पावनि गंगा । २-११।६।३
 दीन जानि तेहि अमय करीजे । ४-३।३
 दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा । १-२०।८।६
 दीन दयाकर आरत बंधो । ७-१७।१
 दीन पुकारत तदपि न त्यागे । ५-५।१।५
 दीन मलीन दरिद्र दुखारी । ७-१०।४।१
 दीनदयाल अनुग्रह तोरें । २-१०।१।७

दीनदयाल सकल दुख हरेऊ । ७-८।२।४
 दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ । ७-०।६
 दीन बंधु प्रनतारति हरना । ५-३।०।३
 दीन बंधु मृदु बचन उचारे । ३-५।६
 दीनबंधु उर अंतरजामी । २-७।१।६
 दीन बंधु प्रनतारति मोचन । ६-१।१।७।७
 दीनबंधु समता बिस्तारय । ७-३।४।४
 दीन्ह कुल्ल न जाइ बखाना । १-१३।२।७
 दीन्ह म्यान हरि लीन्ही माया । ४-१।०।३
 दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता । १-२०।३।३
 दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा । १-११।५।७
 दीन्ह लखन सिख अस मन मोरें । २-१।२।७
 दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि । १-१।८।१।४
 दीन्ह हमहि जोइ लोचन लाहू । २-१२।१।३
 दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे । २-२०।५।५
 दीन्हि असीस देखि भल जोटा । १-२६।८।७
 दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा । १-२।१।४।१
 दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी । १-२।३।१।३
 दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ाई । २-१।८।०।२
 दीन्हि राम तुम्ह कहैं सहिदानी । ५-१।२।१०
 दीन्हिसि अचल विपति कै नेई । २-२।८।१९
 दीन्ही सिख बलु बयरु बड़ावा । १-१।८।१।१
 दीन्हे नृप नानाबिधि घीरा । १-११।५।८
 दीन्हे पलक कपाट सयानी । १-२।३।१।७
 दीन्हे भूषन बसन प्रसादा । ७-११।१
 दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू । २-१।७।१।४
 दीन्हेउ मोहि राज बरिआई । ४-५।१
 दीप बाति नहिं टारन कहऊँ । २-५।८।६
 दीप सहाय कि दिनकर सोहे । २-२।८।५।५

दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा । ७-११७।१
 दुइ कै चारि मागि मकु लेहू । २-२७।३
 दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे । ७-७६।३
 दुख दंपतिहि उमा हरषानी । १-६७।१
 दुख न पाव पितु सोच हमारें । २-१५।२
 दुख न समुझ तेहि सम को खोटी । ३-४।१७
 दुख लबलेस न सपनेहूँ ताकें । ७-१११।१
 दुखा सुख सरिस प्रसंसा गारी । २-१२१।३
 दुख सो सुख मानि सुखी चरिरे । ६-११०।२०
 दुखद लहरि कुतक बहु ब्रता । ७-१२।६
 दुखप्रद उभय बीच कछु बरना । १-४।३
 दुखित दोष गुन गनहिं न साधू । २-१७६।८
 दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी । २-१२१।७
 दुखी भयउँ बियोग प्रिय तोरें । ७-५।५
 दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन । ७-१०।७
 दुर्लभ जननि सकल संसारा । २-४०।८
 दुर्लभ ब्रह्मलीन बिग्यानी । ७-५३।५
 दुर्लभ साज सुलभ करि पावा । ७-४३।८
 दुराधरष दुर्गम भगवाना । १-८५।४
 दुरे नखत जग तेजु प्रकासा । १-२३८।४
 दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई । ७-४५।८
 दुष्ट संग जनि देइ विधाता । १-४५।७
 दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी । ३-१६।३
 दुसह दाहु उर मिटा उछाहू । २-४८।२
 दुसह दाह दुख दूषन मागी । २-१६३।८
 दुसह बिरह संगव दुख मेटे । ७-५।१
 दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई । ५-११।२
 दुह कहैं काम क्रोध रिपु आही । ३-४२।१
 दुहु मुजदंड तमकि महि मारी । ६-३।१।३

दुहु समाज हियै हरषु बिषादू । २-३०८।६
 दुहुँ औंचरन्हि लगे मनि मौती । १-३२६।७
 दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारु । १-३२२।८
 दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी । ४-२५।३
 दुहुँ मिलि कीन्ह छीटु हटि मोहू । २-३१३।६
 दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी । २-११६।३
 दुहुँ भाँति उर दारुन दाहू । २-४।१
 दुहुँ हाथ मुट मोटक मोरें । २-१८१।६
 दूत पठाइअ बालिकुमारा । ६-१६।४
 दूत पठायउ तव हित हेतू । ६-३६।२
 दूत बोलाइ बहुरि अस माषा । २-१५६।१
 दूतन्ह देन निछावरि लागे । १-२२२।७
 दूरि न करहु इहाँ हृद कोऊ । ५-३१।३
 दूषन कोटि देइ किन कोई । २-१८५।१
 दूसर गोमति तीर निवासू । २-१८७।८
 दूसर तेज पुंज अति भ्राजा । १-३००।८
 दूसर हेतु तात कछु नाहीं । २-४४।३
 दूसरि रति नम कथा प्रसंगा । ३-३४।८
 दे भक्ति रमानिवास । ६-११२।१६
 देइ असीस सिखावनु देहीं । १-३३३।३
 देइ देवतन्ह गारि पचारी । १-१८१।८
 देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ । १-१।१३
 देउ दुहू दिसि ओर निबाहू । २-३१३।४
 देउ देउ फिरि सो फलु ओही । २-१७।८
 देउँ काह तुम्ह पूरनकामा । ३-३०।१०
 देउँ भरत कहुँ राजु बजाई । २-३०।८
 देउँ मागु मन भावत आली । २-१४।४
 देख ब्रह्म समान सब माहीं । ३-१४।७
 देखउँ अति असंक सठ तोही । ५-२०।२

देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छती । २-११२।२
 देखउँ बालचरित बहु रंगा । ४-४४।७
 देखउँ बालबिनोद अपारा । ४-८०।८
 देखउँ मैं तिन्ह कै प्रमुताई । ५-२४।२
 देखत कपि दल उपजी त्रासा । ६-६५।१०
 देखत केहि कर मन नहिं छोभा । ३-३६।३
 देखत कोटि मदन मनु मोहा । २-११४।६
 देखत गरब रहत उर नाहिन । २-१३।३
 देखत छोट खोट नृप ढोटा । १-२४१।७
 देखत जिन्हहि अमर अगिलाषे । २-२१३।५
 देखत तोहि अच्छ तेहिं मासा । ६-३५।५
 देखत दया लागि अति मोरें । १-१५८।४
 देखत बनइ न जाइ बखाना । ४-८१।५
 देखत बनइ बरनि नहिं जाई । ३-३१।३
 देखत बालक बहुकालीना । ४-३१।४
 देखत बिरति बिसारहिं ग्यानी । २-२१४।२
 देखत रन नम चढ़े बिमाना । ६-८०।१
 देखत राम चरित रन रंगा । ६-८०।२
 देखत राम बिआहु अनूपा । १-३२४।४
 देखत रामहि भए सुखारे । १-३४४।५
 देखत रुचिर बेष कै रचना । ४-१।६
 देखत रूप चराचर मोहा । १-२०३।७
 देखत हृदयै क्रोध भा तेही । १-१३३।८
 देखन चले धनुषमख साला । १-२३१।४
 देखन दसरथ सुअन सुहाए । २-१०४।६
 देखब सुनब बहुत अब आगे । २-१४१।२
 देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं । ६-४२।५
 देखहिं दरसु नारि नर धाई । २-१०८।७
 देखहु काम प्रताप बड़ाई । २-२४।३

देखहु नारि सुभाव प्रमाऊ । १-५२।५
 देखा प्रगट बिरह दुखु तार्के । १-४८।८
 देखा बाल तहाँ पुनि सूता । १-२००।५
 देखा मैं चरित्र कलिजुग कर । ४-११।२
 देखा राम नयन के मोरें । १-२४१।२
 देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं । २-२१४।७
 देखि अमित आपन परिवारा । १-१८०।२
 देखि कटक मट अति हरषाहीं । ३-१४।८
 देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई । २-१०१।२
 देखि कुमाँति कुमति मन माखा । २-२१।१
 देखि कृपानिधि के मन भावा । ६-३।१
 देखि चरित हरषइ मन राजा । १-२०४।८
 देखि जानकिहि भए दुखारी । १-२५१।७
 देखि तात बिधुबदन तुम्हारा । १-३५६।७
 देखि दसा चुप सारद साधी । २-३०६।२
 देखि दसा दुखु दारुन भयऊ । २-२४।५
 देखि दसा निज जन मन भाए । ३-१।६
 देखि दसा मुनिराज लजाहीं । २-३२५।४
 देखि दसा सुर समा दुखारी । २-३१६।६
 देखि दसा हर गन मुसुकाहीं । १-१४४।२
 देखि दसानन बिसमय पायो । ६-८३।५
 देखि दीन प्रमु के मन भायउँ । ६-६३।६
 देखि दुखी निज धाम पठावा । ३-६।७
 देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी । १-३४४।८
 देखि देवरिषि मन अति भावा । १-१४४।२
 देखि धनदु धन मदु परिहरहीं । १-३०५।५
 देखि न मोह धीर मन जाका । ३-३४।२
 देखि न सकहिं पराइ विमृती । २-११।६
 देखि नगरु बिसागु बिसरावहिं । ४-२६।२

देखि निकट बटु सीतल पानी । २-१२३।३
 देखि निशाचरपति मय पावा । ६-४३।३
 देखि नृपति उर सुर्यु न समाई । १-३०७।३
 देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई । १-७।१४
 देखि बदन पंकज गव मोचन । ३-१।१
 देखि बिकल भइ जुगल कुमारा । ३-१६।४
 देखि बिभीषन भयउ अधीरा । ६-७१।१
 देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए । १-३११।२
 देखि भयावन जात डेराहीं । २-३७।३
 देखि भवन अति अचरजु माना । १-१७७।२
 देखि भानुकुल कैरव चंद्र । २-१२।११
 देखि भूप गति गयउ सुखाई । २-३७।६
 देखि महिष बृष साजु सराहा । २-२३।३
 देखि मुएहुँ मन मनसिज जागा । १-८५।८
 देखि मुदित नित धरित तुम्हारे । २-५३।६
 देखि मोहि जियै भेट बढ़ावा । ४-५।१०
 देखि मोहि पल जिमि जुग जाता । २-२४७।६
 देखि राम पद कमल तुम्हारे । १-४६।५
 देखि राम गए पूरनकामा । १-३२२।३
 देखि रामु आतुर बलि आए । ३-३।५
 देखि राम बन सकल सिहाहीं । २-१३७।३
 देखि रूप मोहे नर नारी । १-२४७।४
 देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं । २-३८।८
 देखि लोग सकुचात जमी से । २-२१४।५
 देखि लोग सब गए सुखारे । १-२६१।१
 देखि सकल जननीं सुख भरहीं । ७-२।३
 देखि सती अति भई समीता । १-५४।५
 देखि सबल रिपु जाहिं पराई । १-१८०।६
 देखि सबहि सब भीति बनाऊ । १-३०१।२

देखि समय सुर दुख अति मोही । ६-७४।८
 देखि सरासन गर्वहिं सिधारे । १-२११।२
 देखि सराह महामुनिसाऊ । १-३५१।४
 देखि सुदेव महामुनि जाना । १-११७।७
 देखि सुमट रघुपति मन भाए । ६-४५।१
 देखि सुमंत्र नयन जल छाए । २-१३।४
 देखि सुरन्ह दुंदुर्भा बजाई । ६-१०२।८
 देखि सुरन्ह दुंदुर्भा बजाई । ७-११।८
 देखि सुरन्ह मै प्रीति न थोरी । १-३१४।७
 देखि सोचु अति हृदय हमारें । २-१११।४
 देखि हृष्य बिसमय बस लोगा । २-२१७।८
 देखि होहिं दुख दारिद भंगा । २-१०४।८
 देखिअ कपिहि कहाँ कर आही । ५-१८।२
 देखिअ नयन परम प्रभु सोई । १-१४३।३
 देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हे । १-२११।३
 देखिअ सपन अनेक प्रकारा । २-१२।२
 देखिअत बिपुल काल जनु कुन्दे । ६-८०।८
 देखिहउँ नयन मनोहर जोरी । २-६७।७
 देखी बहउँ जानकी माता । ५-७।४
 देखी नहिं असि सुंदरताई । ३-१८।४
 देखी भगति जो छोरेइ ताही । १-२०१।४
 देखी सासु आन अनुहारी । २-२२५।५
 देखु बिचारि त्यागि मट मोहा । ५-२३।३
 देखु बिचारि मातु मन माहीं । २-४१।४
 देखे चापरखंड महि खारे । १-२६१।२
 देखे जहँ तहँ अगनित जोधा । ५-४।५
 देखे जिते हते हम केते । ३-१८।३
 देखे प्रभु महि धरि धनु सायक । ७-४।२
 देखे बिधि सब देव दुखारे । १-८१।८

देखे लोग बिरह दय दाटे । २-७११
 देखे सकल अनेक प्रकारा । १-५४१२
 देखे सुने ब्याह बहु तब तैं । १-३१११५
 देखेउ रघुकुल कमल पतंगा । १-१७७
 देखेउँ करि बिचार मन माहीं । ५-३१७
 देखेउँ खोजि लोक तिहु माहीं । ३-१६१९
 देखेउँ जिनस अनेक अनूपा । ७-८०१५
 देखेउँ नयन राम कर दूता । ५-३१८
 देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया । ७-७९१३
 देखेउँ बालबिनोद रसाला । ७-८८१९
 देखेउँ सो प्रभाव कछु माहीं । ७-५७१८
 देखीं जाइ ताप त्रय मोघन । ६-३२१८
 देखीं नयन स्वाम मृदु गाता । ६-१०७१९
 देत असीस चले मन तोषे । १-३५१७
 देत ईस विनु हेतु सनेही । ७-४३१६
 देत राजु सुखु धरमु बडाई । २-२०६१४
 देत सबहि सम गति अबिनासी । ४-९१४
 देति मनहुँ मधु माहुर घोरी । २-२११३
 देवि देव सरनागत पाही । २-२१४१९
 देवि न हम पर छाड़ब छोहू । २-११७१९
 देवि न होइ मुघा मुनि भाषा । २-२८४१८
 देवि मायु बरु जो रुचि तोरें । १-५४९१३
 देव कीन्हि देवन्ह पर दाया । ६-१०९१३
 देव देहु जग जीवन लाहू । २-२७२१८
 देव बिप्र गुरु मान न कोई । १-१८२७
 देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी । ७-९८१३
 देवबधू नाचहिं करि गाना । १-२६११४
 देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा । १-१८११६
 देवन्ह सुमन वृष्टि झारि लाई । ७-१०१९

देस काल अवसर अनुहारी । २-२५६७
 देस कोस के सुरति बिसारी । ३-२०१६
 देह गेह परिवार सनेही । ७-१५१६
 देह गेह सब सन तुनु तोरें । २-६९१६
 देह जनित अभिमान छड़ावा । ४-२७१६
 देहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आवा । ६-७७१६
 देहि अग्नि जनि करहि निदाना । ५-१११११
 देहि भगति संसृति सरि तरनी । ७-३४१६
 देहिं असीस मुदित बनदेवा । २-३११७
 देहिं असीस मुदित मृदु बानी । २-२४४१२
 देहिं असीस हरष उर भरहौं । ७-८१५
 देहिं कुचालिहि कोटिक गारी । २-५०१४
 देहिं कैकड़हि खोरि निकामा । २-२०१३
 देहिं निछावरि बित्त बिसारी । १-२६४१६
 देहिं परसपर मंगल गारी । १-३५७१२
 देहिं सम तिन्हहू निज धामा । ६-४४१२
 देहु एक बर भरतहि टीका । २-२८१९
 देहु कृपा करि अनपायनी । ५-३३१९
 देहु कृपाल कपिन्ह कहूँ मुदा । ६-११११६
 देहु दया करि सो बरदानू । २-७१६
 देहु धेनु सब भौंति बनाई । १-३२१७
 देहु लेहु सब सवति हुलासू । २-२११६
 देहु सदा सिव मन भावनी । ५-४८१७
 दैअहि दोषु देहिं मन माहीं । २-१९८१९
 दैव दैव जालसी पुकारा । ५-५०१४
 दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं । २-४४१७
 दोउ हरिभगत काग उरगादा । ७-५४१५
 दोना मरि मरि राखेसि पानी । २-८८१८
 दोषउ गुन सम कह सबु कोई । १-६८१४

टंड एक भइ मुरुछा तैही । ३-२८।२०
 टंड प्रनाम करन प्रमु लागे । २-२४२।३
 टंड समान भयउ जस जाळ । १-१६।६
 टंडक कानन पावनकारी । ५-४१।६
 टंडक बन जहँ परम सुहावा । ६-१११।१
 टंडक बन बिचरत अबिनासी । १-४४।८
 टंम कपट जियँ धरँ सुवेधा । ७-३१।८
 टंम कपट मद मान नेहरूआ । ७-१२०।३५

ध

धन बल परिजन गुन चतुराई । ३-३४।५
 धनहीन दुखी ममता बहुधा । ७-१०।११
 धन्य अवध जो राम बखानी । ७-३।८
 धन्य जटायू सम कोउ नाहीं । ४-२६।७
 धन्य जन्म द्विज भगति अमंगा । ७-१२६।८
 धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी । ७-१२६।५
 धन्य पुन्यमय परम सुहाए । २-११२।२
 धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी । ७-१२६।७
 धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई । ७-१२६।६
 धन्य सो नगर जहाँ तें आए । २-१२१।५
 धन्वी कामु नदी पुनि गंगा । ६-२५।५
 धन्वी सकल लोक बिख्याता । ६-४१।११
 धनु पराव बिष तें बिष भारी । २-१२१।६
 धनु सर कर कुठारु कल कौधें । १-२६।४।८
 धनुष चढ़ाइ गहें कर बाना । ४-१७।८
 धनुषजग्य जेहि कारन होई । १-२३०।१
 धनुषमंग धुनि जात न जानी । १-२६१।७
 धर ते मित्र तानु सिर कीन्हा । ६-७०।४
 धर परत कुधर समान । ३-११।१०

धरुँ देह नहीं आन निहोरें । ५-४४।८
 धरति चरन नग चलति समीता । २-१२२।५
 धरनि परेउ करि घोर पुकारा । ३-२६।१४
 धरम अवधि गुन रूप निधानु । २-१५५।६
 धर्म कि दया सरिस हरिजाना । ७-१११।१०
 धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू । २-५४।४
 धरमु जाइ सिर पातक भारु । २-१७६।४
 धरमु धरैउ सहि संकट नाना । २-४४।४
 धरम धुरीन विषय रस रूखे । २-४१।३
 धरम धुरंधर धीर सयाने । २-७७।२
 धरम धुरंधर नृपरिषि जानी । १-१४२।६
 धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा । ७-४।५
 धर्म निरत पंडित दिग्यानी । ७-१२३।६
 धरम नीति गुन ग्यान निधाना । २-२५६।८
 धरम सारु जग होइहि सोई । २-३२२।८
 धरम सील ग्यानी गुनवंता । १-२१२।६
 धरम सील गुन बिमल बिभूती । २-२८७।७
 धरमसील पहिं जाहिं सुमाएँ । १-२१३।३
 धरमसील सुंदर नर नारी । १-१५४।२
 धरमसील हरिभगत सयाने । १-२४४।८
 धरमु बिचारि सबहैं सुखु माना । १-२१३।८
 धरहिं भगत हित मनुज सरीरा । ७-११३।१२
 धरहु धरनि धरि धीर न डोला । १-२११।११
 धरहु धीर लखि बिमुख बिधाता । २-१४२।२
 धरि धरि मालु कीस सब खाहू । ६-३१।५
 धरि धीरजु उर अबनिकुमारी । २-६३।४
 धरि धीरजु तब नयन उधारे । २-४३।११
 धरि धीरजु प्रतीति उर आनी । १-२५८।३
 धरि धीरजु बोली मृदु बानी । १-१४८।११

धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही । २-६८७
 धरि बटु रूप अवधपुर जाई । ६-१२०११
 धरि बराह बघु एक निपाता । १-१२१७
 धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ । १-२६५३
 धरि मारहु तिय त्हेहु छडाई । ३-१७१९
 धरि सर चले जहाँ जगदीसा । ६-१०२७
 धरि सिर सिय पद पदुम परागा । २-२४१३
 धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा । १-१९६३
 धरिहिहिं बिष्णु मनुज तनु तहिआ । १-१३८६
 धरी कृबरी सान बनाई । २-३०२
 धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं । ६-६७८
 धरे मनोहर मनुज सरीरा । ७-७१२
 धरे राम के आर्गे आनी । १-३२३६
 धरेउ नाम हिये हेरि हरषि हर । १-३४१२
 धरेउ सरीर भगत अनुरागी । १-१२२२
 धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ । २-१६३
 धरें चाप सायक कटि भाथा । ५-४६३
 धरें देह जनु राम सनेहू । २-२०७८
 धरें सरीरु सांतरसु जैसें । १-१०६११
 धरं त्रिलोक नायकं । ३-३६
 ध्वज पताक पट चमर सुहाए । १-२८८२
 ध्वज पताक मनि मूषन लाए । १-२९८३
 धवल धाम बहुवरन बनाए । १-२२३६
 धवल धाम रवि रवि श्रमु कीन्हा । २-११८८
 धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा । ६-२३१५
 धाए कटकटाइ मट मारी । ६-१९१११
 धाए कपि जय राम पुकारी । ६-५२३
 धाए कपि बलु पाइ बिसेषी । ६-८८५
 धाए करि दससीस दोहाई । ६-४५४

धाए करि रघुबीर दोहाई । ६-७८१३
 धाए कोपि मालु मट कीसा । ६-१७१२
 धाए गहे पाषाण । ६-१००११३
 धाए निज निज काज बिसारी । २-१०९११
 धाए रामु सरासन साजी । ३-२६११०
 धाए हरष ब्रिगत श्रम त्रासा । ६-४६५
 धायउ दसहु सरासन तानी । ६-१२१२
 धायउ हनुमान गिरि धारी । ६-१४१५
 धावहिं जहैं तहैं रुंड प्रबंदा । ६-५२७
 धावहिं सट खग मांस अहारी । ६-३९१९
 धिग जीवन रघुबीर बिहीना । २-१४३३
 धिग जीवनु रघुबीर बिहीना । २-८५५
 धिग धिग अधम मंदमति तोही । ६-१९१८
 धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता । ३-१७१२
 धीर कृपाल भगत उर चंदनु । २-१४०७
 धीर धर्म गति परम प्रबीना । ३-४४१९
 धीर धरम धुर दीनदयाला । २-२४२२
 धीर धुरंधर धीरजु त्यागा । २-३१६५
 धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी । १-१०१६
 धीरज तट तरुंबर कर मंगा । २-२७५२
 धीरज धरम ग्यान बिग्याना । १-८३७
 धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी । २-१४०५
 धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी । २-१९३
 धीरजु धरहु मातु बलि जाई । २-१७५५
 धीरजहु कर धीरजु भागा । २-१५२८
 धीरन्ह कें मन बिरति दृढाई । ३-३८२
 धींग धरमध्वज धंधक धोरी । १-११४
 धुव हरि भगत भयउ सुत जासु । १-१४१३
 धृत बर चाप रुचिर कर सायक । ६-११४११

धृत सायक चाप निबंघ बरे । ७-१३५
 धृति सम जावनु देह जमावै । ७-११६।१४
 धेनु अलंकृत कामदुहा सी । १-३२५।४
 धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा । १-१००।७
 धेनु बाजि गज बाहन नाना । २-१६९।८
 धोए चरन जनक निज पानी । १-३२७।६

न

नई नाव सब मातु चढ़ाई । २-२०९।८
 नकुल दरसु सब काहूँ पावा । १-३०२।३
 नख दुति मगत हृदय तम हरना । १-१०५।७
 नख सिख ते सब अंग अनूपा । १-३१०।७
 नख सिख मंजु महाछबि छार । १-२४३।२
 नख सिख सुमग भावते जी के । २-११४।७
 नखत भरत हिय विमल अकासा । २-३२४।४
 नखन्हि लिलार बिदारत भयऊ । ६-९७।६
 नगर कोलाहलु भयउ घनेरा । ६-४८।९
 नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं । १-१८२।६
 नगर देखाइ तुरत लै आवीं । १-२१७।६
 नगर नारि नर देखन धार । १-३३४।१
 नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी । ५-२४।७
 नगर लोग सब अति हरषाने । १-९८।२
 नगर लोग सब ब्याकुल धावा । ४-१०।१
 नगरु बाजि गज भवन भँडारु । २-१८५।२
 नगरु बिसेषि भयावनु लाग । २-१५७।६
 नगरु सँवारहु चारिहुँ प्रासा । १-२८६।४
 नट सेवकहि न ब्यापइ माया । ७-१०३।८
 न त मारे जैहहिं सब राजा । १-२७०।१
 नतरु तात होइहि बड़ टोपू । २-७०।५

नतोऽहमुर्विजा पति । ३-३।२१
 नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं । ७-१०७।१५
 नदी कुतकं मयंकं नाना । १-३७।९
 नम अरु नगर सुमंगलचारा । १-३१७।५
 नम उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता । ७-९०।५
 नम तम धूम धूरि जिमि सोहा । १-११६।४
 नम तें भवन चले सुर हखी । ५-३३।८
 नम ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे । ६-१०७।१३
 नम दुहिं दूध चहत ए प्राणी । ३-१६।१६
 नम सत कोटि अमित अवकासा । ७-९०।८
 नम सराहि सुर बरिसहिं फूला । २-२४२।७
 नम सुर नगर लोग अनुरागे । १-३४७।३
 नम सुर मुनि जय जयति पुकारे । ७-११।४
 नमग नाथ पर प्रीति न थोरी । ७-६९।१
 नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज । ७-४।६
 नमत राम अकाम ममता जहि । ७-२९।५
 नम परमास्थ स्वस्थ सानी । २-२५४।३
 नयन अतिथि कीन्ह विधि आनी । १-३३४।४
 नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई । १-३०९।८
 नयन अमिअ दूग दोष बिभंजन । १-१।१
 नयन उधारि सकल दिसि देखी । १-८६।४
 नयन तीनि उपबीत भुजंगा । १-९।३
 नयन दिवाकर कच घन माला । ६-१४।२
 नयन नवल राजीव लजावन । १-३१५।३
 नयन नेह जलु पुलकित गाता । २-५१।३
 नयन पंचदस अति प्रिय लागे । १-३१६।२
 नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं । २-१५५।७
 नयन मूटि चरननि सिरु नावा । १-२०१।५
 नयन मूटि बैठीं मग माहीं । १-५४।६

नयन लामु सब सादर लेहीं । १-३२४/१
 नयन सनेह सलिल अन्हवार । २-२४४/५
 नयन खवत जल पुलकित गाता । ७-११०
 नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी । ६-१११/४
 नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढ़ी । १-१०३/२
 नयनानंद दान के दाता । ५-४४/२
 नर अरु नारि चलुस सब गुनी । ७-२०/७
 नर अरु नारि हरषि सब धाए । ७-२/४
 नर कपि मालु अहार हमारा । ६-४/१९
 नर गति भगत कृपाल देख्याई । ६-६०/१८
 नर नारायन की तुम्ह दोऊ । ४-०/१०
 नर नारिन्ह परिहरीं निमेषे । १-२४८/१९
 नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए । १-२५१/३
 नर पावैर के केतिक बाता । ७-१०५/३
 नर बानर केहि लेखे माहीं । ५-३६/१९
 नर भव तरहिं उपाय न दूजा । ७-१०२/३
 नर भक्तिमंद ते परम अभागी । ६-४४/६
 नर हतभाग्य देहिं भटमेरे । ७-१११/१२
 नरपति सकल रहहिं रुख ताकें । २-२४/२
 नरभूषण लोचन सुखदाई । १-२४०/८
 नरहरि किए प्रगट प्रह्लादा । २-२६४/५
 नरक परीं बरु सुरपुरु जाऊ । ३-४४/१९
 नरक सरिस दुहु राज समाजा । २-२८९/८
 नरादरेण ते पदं । ३-३/२३
 नल नीलहि सब कथा सुनाई । ६-०/५
 नव गुन परम पुनीत तुम्हारें । १-२८१/७
 नव तुलसी दल मंगल मूला । ७-२/५
 नव राजीव नयन जल बाढ़े । ७-४/८
 नव सरोज लोचन रतनारे । १-३३२/४

नबहि बिरोधे नहिं कल्पाना । ३-२५/३
 नबहिं आइ नित घरन विनीता । १-१८१/१३
 न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे । २-२८१/२
 नहिं अघात श्रवनामृत जानी । ५-४८/३
 नहिं अपराध भूष कछु कीन्हा । १-१७३/५
 नहिं आचरण मोह खगराजा । ७-५१/५
 नहिं आचरणु न्हि जस जानी । १-३२/४
 नहिं आदरेहु भगवत की नाई । ७-११४/१०
 नहिं आवत तजि बाल समाजा । १-२०२/६
 नहिं आवीं तब जानेसु मारा । ४-५/६
 नहिं कछु बहिअ दिआ घृत बाती । ७-१११/३
 नहिं कछु दुलैम ग्यान समाना । ७-११४/१९
 नहिं कछु भय न दीनता आई । ७-१११/१६
 नहिं कोउ अबुध न लच्छन होना । ७-२०/६
 नहिं कोउ मोहि समान । ६-११२/१९
 नहिं कोउ राम चरन अनुरागी । ७-४१/८
 नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी । ५-३/५
 नहिं गजारि जसु बधे सूकाला । ६-२९/३
 नहिं जग कोउ तोहि सम बडभागी । ७-२४/३
 नहिं जानउँ कछु अउर कबाल । २-११/७
 नहिं जैहें जुबराज प्रबीना । ४-२५/९
 नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा । ४-२८/७
 नहिं तहें पुनि बिग्यान बिहाना । १-११५/६
 नहिं तहें मोह निसा लवलेसा । १-११५/५
 नहिं तहें रमा न राजकुमारी । १-१३४/१९
 नहिं दुखु जियै जगु जानिहि पौछू । २-२१०/४
 नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा । ३-१/७
 नहिं निसिचर कुल केर उबारा । ५-३५/२
 नहिं निस्तार कल्प सत कोरी । ७-०/५

नहीं पट कटि नहीं पेट अघाहीं । २-२५०५
 नहीं पावहिं परतिय मनु डीठी । १-२३०७
 नहीं बरात दूलह अनुरुष्य । १-१९१८
 नहि बिष बेलि अभिज फल फरहीं । २-१८८१८
 नहि भलि बात हमारे भाएँ । १-६९१८
 नहि मानत क्यौ अनुजा तनुजा । ७-१०९५
 नहीं रसना पहिं जाइ बखाना । ७-८७१३
 नहीं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे । २-४९१५
 नहीं सारद पहिं जाहिं बखाने । १-३००७
 नाइ माथ स्वार्थ रत नीचा । ३-२३१६
 नाइ मुनिहि सिरु सहित समाजा । २-२९५१९
 नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं । २-१०९१३
 नाकनटीं नाचहिं करि गाना । १-३०८१४
 नाक पिनाकहि संग सिधाई । १-२६५७
 नागपास देवन्ह भय पायो । ६-७२१९३
 नागपास बाँधेसि लै गयऊ । ५-९९३२
 नाघत भयउ पयोधि अपारा । ७-६६३३
 नाघत सरित सैल बन बाँके । २-९५७१९
 नाच नटी डब सहित समाजा । ७-७९१२
 नाचहिं करहिं बहु गान । ६-१००७४
 नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा । १-३४८१६
 नाचहिं नट मर्कट की नाई । ७-९८१९
 नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारे । ७-७६१८
 नाथ करिअ कत बादि बिषादू । २-२००७
 नाथ कहिअ हम केहि भग जाहीं । २-१०८१९
 नाथ कालि जल बिनु सबु रहेऊ । २-२७७१५
 नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा । ७-१२२१४
 नाथ कृपा तब जापर होई । १-२३११२
 नाथ कृपीं मन भयउ अलोला । ४-६११५

नाथ जिअत रावनु बल तार्के । ६-१०९५
 नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ । २-२५७१२
 नाथ न कछू मोरि प्रमुताई । ५-३२१९
 नाथ न पूर आव एहि भौंती । ६-८१९
 नाथ न मैं समुझे मुनि बैना । १-७७०१२
 नाथ न सकुचब आथसु देता । २-१३५५८
 नाथ न होइ मोर अब नासू । १-१६४७
 नाथ नाम निज कहहु बखानी । १-१५९१४
 नाथ निगम असि नीति बखानी । १-१६६६६
 नाथ प्रमुन्ह कर सहज सुभाऊ । १-८८१३
 नाथ पुरान निगम अस कहहीं । ५-३११५
 नाथ बचन पुनि भेटि न जाहीं । १-७६१९
 नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती । ५-५५१९
 नाथ बियोग ताप तन ताए । २-२२५१४
 नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि । ६-७४१५
 नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी । ४-२०१९
 नाथ मोहि सम धन्य न दूजा । १-३५९५५
 नाथ राम सन तजहु बिरोधा । ५-५६१४
 नाथ सकल जगु काल कलेवा । ७-९३७
 नाथ सनाथ भए हम आजू । २-१३३३३
 नाथ साथ धनु हाथ हमारें । २-२२८१८
 नाथ सो समुझि करहु जानि क्रोधा । १-१०८६
 नाना अस्त्र सस्त्र गहि धार । ६-५२१२
 नाना तनु धरि तुम्हई नसायो । ६-१०९१८
 नाना बरन बलीमुख भारे । ६-४५७
 नाना भौंति करेसि दुर्बादा । ६-१०१५
 नाना भौंति न जाहिं बखाने । १-३०४१२
 नाना भौंति मुनिन्ह जो गाई । ७-६०१५
 नाना भौंति सिखावहिं नीती । ७-२४३३

नाना भाँति सृष्टि बिस्तार । ७-७१।॥
 नानायुध धर घोर अपार । ३-१७।५
 नाना रूप धरहिँ करि माया । १-१८२।४
 नाना रंग अनूप सुहार । ७-१६।५
 नाना रंग रुधिर नद्य दारी । ७-२६।३
 नाभि गभीर जान जेहिँ देखा । १-१९८।४
 नाम अखिल अध पूग नसावन । ७-९१।२
 नाम अनेक अनाम निरंजन । ७-३३।६
 नाम उमा अंबिका भवानी । १-६६।२
 नाम कोटि खल कुमति सुधारी । १-२३।३
 नाम जप्त मंगल दिसि दसहूँ । १-२७।१
 नाम जीहँ जपि जानहिँ तेऊ । १-२१।३
 नाम धरमरुचि सुक्र समाना । १-१५३।१
 नाम प्रताप प्रगट कति माहीं । ७-१०२।७
 नाम प्रतापभानु अस ताही । १-१५२।५
 नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी । १-२५।२
 नाम प्रसाद सोच नहिँ सपनेँ । १-२४।८
 नाम सत्रुहन बेद प्रकासा । १-१९६।८
 नाम सुतीछन रति भगवाना । ३-९।१
 नाम सुमति समस्य हनुमानू । १-२६।८
 नामु भोर सुनु कृपानिधाना । ७-१।८
 नामु रामु धनु सायक पानी । १-२२०।६
 नामु लखनु लघु देवर मोरे । २-११६।५
 नामु सकल कति कलुष निकटन । १-२३।८
 नामु सत्य अस लाग न केहूँ । २-२७०।२
 नामु सती सुंदर तनु पाई । १-१७।५
 नारद कहा सो सत्य बिचारी । १-७२।१
 नारद चले सोच मन माहीं । १-१३०।६
 नारद जानि सबहिँ सिर नावा । १-१३२।८

नारद बचनु अन्यथा नाही । १-७०।८
 नारद बिभुभगत पुनि म्यानी । १-१२३।६
 नारद मन भा सोच बिसोषी । ३-४०।५
 नारि चरित करि द्वारइ आँसू । २-१२।६
 नारिचरित जलनिधि अवगाहूँ । २-२६।७
 नारि निबिड रजनी अँधिआरी । ३-४३।७
 नारि पाव जमपुर दुख नाना । ३-४।९
 नारि पुरुष सचरावर कोई । ३-३५।६
 नारि बगँ जानइ सब कोऊ । ७-११५।३
 नारि बिरहँ तुम्ह होब दुखारी । १-१३६।८
 नारि समेत गवन बन कीन्हा । १-१४२।१
 नारि सिखावन करसि न काना । ४-८।९
 नारि हानि बिसेष छति नाही । ६-६०।१२
 नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई । ६-६०।११
 नारिधर्म कछु ब्याज बखानी । ३-४।४
 नारि धरम सिखवहिँ नृदु बानी । १-३३३।६
 नारिधरमु कुलसीति सिखाई । १-३३८।१
 नारिधरमु पति देउ न दूजा । १-१०१।३
 नाव नाव कहँ लोग बोलाए । ६-१२०।६
 नास तुम्हार सत्य मम बानी । १-१६५।२
 नास तोर सुनु भानुप्रतापा । १-१६५।३
 नास न पावहिँ जन परितापी । ७-१२१।३
 नासहिँ बेगि नोति अस सुनी । ३-२०।११
 नासा तिलक को बरने पारे । १-१९८।८
 नाहिन आलि इहाँ संदेहूँ । १-२२१।६
 नाहिन साधुसमा जेहिँ सेई । २-२२०।७
 नाहिँ त अस होइहि बहुबाहूँ । ३-२८।१६
 नाहिँ त छाड़ कहाउब रामा । १-२८०।२
 नाहिँ त जतन कोटि नहिँ जाहीं । ७-१२१।८

नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती । २-३३।८
 नाहिं त बुडिहि सबु परिवारु । २-१५३।७
 नाहिं त मौन रहब दिनु राती । २-१५।४
 निकट न आव मरमु सो जाना । ६-५०।४
 निकसि भए पुर बाहर ठाढ़े । १-२९८।११
 निगम नीति असि कह सबु कोई । २-७६।८
 निगम नीति कहूँ ते अधिकारी । २-७१।२
 निगम सेष सारदा बखाना । ७-८।८
 निगम सेष सिव पार न पावहिं । ७-९०।४
 निगमागम गुन दोष बिभागा । १-५।९
 निगमागम पुरान अस गावा । ७-९६।५
 निघटत नीर मौनगन जैसें । २-१४६।८
 निज अम्यानु राम पर आना । १-५३।१
 निज अम्यान राम पर धरहीं । ७-७२।९
 निज अध गयउ कुमारगामी । ६-१०९।४
 निज अनुरूप सुमग बरु मागा । १-२२७।६
 निज अपराध रिसाहिं न काऊ । २-२१७।४
 निज आश्रम आवउं खगभूषा । ७-११३।१४
 निज आश्रम तापस तै गयऊ । १-१५८।१
 निज आसन बैठारेन्हि आनी । १-२०६।२
 निज इच्छा लीला बपु धारिनि । १-१७।४
 निज कर भूषन राम बनाए । ३-०।३
 निज कर राम जटा निरुआरे । ७-१०।४
 निज करनी कछु कतहुँ न देखी । १-३१३।८
 निज कृत करम भोग सबु धाता । २-९१।४
 निज गुन देइ सुगंध बसाई । ७-३६।८
 निज गुन सील राम बस करतहिं । २-२६७।८
 निज छबि निदरहिं मदन बिलासिनि । १-३०७।५
 निज छबि रति मनोज महु हरहीं । २-९०।२

निज जन जानि लीन्ह अपनाई । १-३४१।५
 निज जस जगत कीन्ह उजिआरी । २-२३१।४
 निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई । ४-२।५
 निज तनु प्रगटेसि मरती बारा । ६-५७।५
 निज तनु पोषक निरदय भारी । २-१७२।३
 निज दिसि देखि दयानिधि पोसे । १-२७।४
 निज नयनन्हि देखौं रघुसाया । ७-११०।१०
 निज निज कर्म निरत श्रुति रोती । ३-१५।६
 निज निज काज पाइ सिख ओधे । २-३२।११
 निज निज काज लगे सब जाई । २-३१७।५
 निज निज बल पौरुष उच्चरहीं । ६-७८।१०
 निज निज भवन गए महिपाला । १-३११।३
 निज निज भवन चले सिर नाई । १-३५४।३
 निज निज मुखनि कही निज होनी । १-२।३
 निज निज लोक सबहिं लघु लागे । १-३१३।४
 निज निज साजु समाजु बनाई । १-२९९।८
 निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही । १-३५५।६
 निज निज सेन सहित बिलगाने । १-९२।२
 निज पति कहेउ तिन्हहिं शिव सयननि । २-११६।७
 निज पद प्रीति देखि मन मावा । ३-३३।३
 निज पद सरसिज सहज सनेहू । २-१०६।८
 निज पन राखैउ जन मन चोरा । ३-७।५
 निज प्रगाउ कछु प्रगटि जनावा । १-५३।३
 निज पराइ कछु सुनिअ न काना । १-३००।२
 निज पुर गवने जय जसु पाई । १-१७४।८
 निज बस कीन्ह सकल संसारा । १-८३।५
 निज भयौं डरेउ मनोमद पापी । १-१२५।७
 निज मन फनि मूरति मनि करहू । १-३३४।७
 निज माया प्रमृता तब रोकी । ७-८२।३

निज माया बसंत निरमयऊ । १-१२५।१
 निज मुख कहै सुकृत जेहि भौंती । ६-७१।३
 निज मुख तापस दूत कहायहु । ६-२०।६
 निज मुख निज गुण कहसि न काऊ । ६-२८।६
 निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई । १-१३४।६
 निज लोचन जल सीधे जुडावा । ४-२।६
 निज सनेह सुरपति छल भारे । २-३०२।१
 निज समाज ले गई सयानी । १-२६८।५
 निज सरूप रति मानु बिमोचनि । १-२९६।२
 निज सारथि सन खीझन लागे । ६-९९।७
 निज सेवक तन मानस बानी । २-२५८।२
 निज संदेह सुनावत भयऊ । ७-५९।१
 निज संपति सुर स्ख लजाए । १-२२६।५
 निज हित चहइ तासु मति पौत्री । २-२६७।३
 निज हित अनहित पसु पहिचाना । २-५८।२
 निजानंद निरुपाधि अनुषा । १-१४३।५
 नित नव नेह राम पद होऊ । ७-१९३।३
 नित नव मंगल मोद बघाए । २-०।५
 नित नूतन सुंदर सब काला । १-१०५।२
 नित नै ह्येइ राम पद प्रीती । १-७५।३
 नित राम नमामि बिभुं बिरज । ६-११०।९
 नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए । १-२२६।१
 नित्य निरंजन सुख संदोहा । ७-७१।६
 निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ाई । २-१७८।८
 निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने । १-२१७।६
 निदरे कोटि कुलिस एहिं छाती । २-१९१।४
 निदरे रामु जानि असहाई । २-२२८।३
 निदहिं जोग बिरति मुनि प्यानी । २-२७३।१
 निपट बिकल नरनायकु देखी । २-४१।५

निपट निरंकुस अबुध असंकू । १-२७३।२
 निबुकि गयउ तेहि मृतक प्रलीती । ६-६१।५
 निमिष टंड मरि एकठ बारा । ७-१२२।६
 निमिष निमिष उपजत सुख नए । ७-७।९
 निमिष बिहात कल्प सम तेही । १-२६०।९
 निमिष सरिस दिन जागिनि जाहीं । १-३२९।१
 निरखत जन्म कोटि अघ भागा । ६-११९।७
 निरखहिं छवि जननीं तून तोरी । १-१९७।५
 निरखहिं राम रूप अनुरागीं । १-२९९।४
 निरखहिं हरषि टंडवत करि करि । २-२४८।४
 निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा । २-२२३।२
 निरखि नीरु लोचन जल छाए । १-२९९।८
 निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई । ७-५।९
 निरखि बदनु सब होहिं सनाथा । ४-२१।२
 निरखि बिदेह सनेह बिसेषी । २-२९३।६
 निरखि रामु दौउ गुर अनुरागे । १-३५८।४
 निरखि राम मनु भवैरु न भूला । २-५२।४
 निरखति तवानन सादर ए । ६-११०।१७
 निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु । ४-२।१२
 निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी । १-१०९।४
 निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा । ४-१६।२
 निर्गुन मत मम हृदयें न आवा । ७-११०।७
 निरत निरंतर सज्जन धरमा । ३-३।२
 निर्दय कपटी कुटिल मलायन । ७-३८।५
 निर्बिकार निरवधि सुख रासी । ७-११०।५
 निर्भय चलेसि न जानेहि मोही । ३-२।११
 निर्भय जय करहु तुम्ह जाई । १-२०९।१
 निर्भय होहु देव समुदाई । १-१८६।७
 निर्मर प्रेम मगन हनुमाना । ५-१६।४

निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ । ७-८१३
 निर्मल मन अहीर निज दासा । ७-११६।१२
 निरबधि निरुपम प्रभु जगदीसा । ७-११८
 निरस बिसद गुनमय फल जासु । १-१५
 निराचर सठ वृषली स्वामी । ७-११८
 निरीहमीश्वरं विभुं । ३-३।१७
 निसरस प्रान करहिं हठि बाधा । ५-३०६
 निसरि गए चले रुधिर पनारे । ६-९१८
 निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा । ६-६६४
 निसरी रुधिर धार तहैं भारी । ४-५७
 निसि अरु दिवस निमेष अपास । ६-१४३
 निसि दिनु देव जपत हहु जेही । ३-११८
 निसि दिनु नहिं अबलोकहिं कोका । १-८४।५
 निसि दंपतिहि फलक सम बीती । २-२८१।१
 निसि न नीद दिन अन्न न खाहीं । ३-२७८
 निसि सब तुम्हाहि सराहत बीती । २-२०७।४
 निसि सुंदरी केर सिंगारा । ६-११३
 निसिचर गन बधि बिपिन उजासा । ५-३२८
 निसिचर छल बल करइ अनौती । ६-५३।३
 निसिचर निकट गयउ कपि तबहीं । ६-५७।३
 निसिचर निकर देव परितापी । १-१८२।३
 निसिचर निकर नारि नर घोरा । २-६२।३
 निसिचर बध मैं होब सनाथा । १-२०६।१०
 निसिचर बंस जनम सुरत्राता । ५-४४।७
 निसिचर सुमट महाबल नारे । ७-६।८
 नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई । १-१३३।३
 नीच निसील निरीस निसंकी । २-२९८।२
 नीच बीघु जननी मिस पासा । २-२६०।१
 नीघु नीघु सम देख न मोही । १-२४६।८

नीति धरममय बचन उचारे । २-१७०।४
 नीति धर्म मैं जानत अहऊँ । ६-२१।४
 नीति न तजिअ राजपदु पाएँ । २-१५।३
 नीति निपुन नृप कै जसि करनी । ४-१५।७
 नीति प्रीति पालक रघुराजू । २-३०३।६
 नीति बिरोध न मारिअ दूता । ५-२३।४
 नीति बिरोध सोहाइ न मोही । ७-१०६।३
 नीरज नयन नेह जल बाढ़े । २-२५१।३
 नीरज नयन भावते जी के । १-२४२।२
 नील कंज बरिद गंभीरा । १-१९८।१
 नील जलज तनु स्याम तमाला । ५-२०८।१
 नील नलिन लोचन भरि नीरा । २-२४५।७
 नील पीत जलजाम सरिआ । १-२३२।१
 नील सैल एक सुंदर मूरी । ७-१५।७
 नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना । ५-२७।३
 नूपुर चारु मधुर स्वकासी । ७-७५।७
 नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे । १-१९८।३
 नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी । २-५७।५
 नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना । ६-९।९
 नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा । ६-३७।९
 नृप गूह कलस सौ इंदु उदास । १-१९४।६
 नृपगूह सरिस सदन सब केरे । २-११३।३
 नृप तब तनय होब मैं आईं । १-१४९।२
 नृप मनि मुकुट मिलित पद पीटा । २-१७।१
 नृप सन अस बरु दूसर लेहू । २-४९।४
 नृपु सब भीति सराह बिभूती । १-३३१।१
 नृपसमाज दुहैं हरषु बिसेषी । १-११६।८
 नृप समाज महुँ सिध धनु तोरा । १-३५६।४
 नृपसमाज सब भयउ निरासा । १-१३४।४

नृप सुधि कतहुँ कहहु जानि काहू । २-१५६।२
 नृप संदेह नास कहँ पावा । १-२०७।८
 नृप हित हेतु सिखव नित नीती । १-१५४।३
 नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने । २-४७।४
 नृपहि मते सब कहि समुझावा । १-१७१।८
 नृपहि सराहत सब नर नासी । १-२७।७
 नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे । १-३१४।८
 नेकु न संक सकुच मन माहीं । ३-२१।१३
 नेकु नयन मन जरनि जुडाऊ । २-११७।६
 नेगसहित सब सीति निबेरी । १-३२४।७
 नेम पेम निज निपुन नबीना । २-२३३।३
 नेमु पेमु अति पावन पावन । २-३०८।४
 नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं । २-३११।१
 नीमि निरंतर श्रीरघुवीर । ३-१०।४
 नीमि राम उर बाहु विशाल । ३-१०।८
 नीमि राम भंजन महि भार । ३-१०।१२

प

पच्छहीन मंदर गिरि जैसा । ६-६१।११
 पच्छिम द्वार रह बलवाना । ६-४२।३
 पट उर लाइ सोच अति कीन्हा । ४-४।६
 पट पाँवडे परहिं बिधि नाना । १-३१८।३
 पटतार जोग बनावे लाग । २-१११।५
 पटइ अमरपुर पति हित कीन्हा । २-१७१।३
 पटइअ काज नाथ असि नीती । २-८।६
 पटइअ किमि सब ही कर नायक । ४-२१।२
 पटइन्हि आइ कही तोहिं बाता । ५-१।२
 पटई जनक अनेक सुसारा । १-३३२।५
 पटए अवध चतुर घर चारी । २-२७०।७

पटए जनक बोलाइ बराती । १-३२७।१
 पटए दूत बोलि तेहि काता । १-२८६।२
 पटए बोलि भरत दोउ नाई । २-१७०।३
 पटएसि मेघनाद बलवाना । ५-१८।१
 पठवउं तहाँ सुनहु सुन्ह जाई । ७-६०।४
 पठवौ तोहि जहाँ कृपानिकेता । ६-५१।६
 पठवन चले भगत कृत चेत । ७-१८।१
 पठवहु कंत जो चहहु भलाई । ५-३५।८
 पठवहु जहाँ तहाँ बानर जूहा । ४-१८।४
 पठवा खबरि लेन हम सोई । ६-२२।१०
 पठवा पुनि बल देइ बिसाला । ४-७।७
 पट्टे सुने कर फल प्रभु एका । ७-४८।३
 पति पद सुमिरि तजेउ सब भोगू । १-७३।२
 पति पहिचानि देहिं बर बाटा । ३-६।४
 पति बिहीन सब लोक समाजू । २-६४।४
 पति रुच लखि आयसु अनुसरेहु । १-३३३।५
 पति हित करइ धर्म निपुनाई । ६-२३।२
 पतिदेवता करम मन बानी । २-१४४।१
 पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई । ३-४।१८
 पतिन्ह सौमि बिनती अति कीन्ही । १-३३५।८
 पथ श्रम लेसु कलेसु न काहू । २-२७४।३
 पथिक समाज सोह सरि सोई । १-४०।३
 पद गहि धरनि पछारहु कीसा । ६-३३।१०
 पद न तरइ बैठहिं सिरु नाई । ६-३३।१२
 पद परवारि पादोदक लीन्हा । ७-४७।२
 पद परवारि बर आसनु दीन्हा । १-६५।६
 पद परवारि सादर बैठाए । १-१७२।४
 पद पंकज प्रेम न जे करते । ७-१३।१०
 पद पंकज बिलोकि भव तरिहउं । ७-१७।७

पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ । ७-१३।१५
 पद पंकज सेवित संगु उमा । ६-११०।२१
 पद रज सिर सिमु धरत गोसाई । १-२८१।३
 पद सरोज पुनि पुनि सिरु नाई । ७-११३।८
 पद सरोज मेले दोउ भाई । १-२६८।६
 पदज रुधिर नख ससि दुति हरना । ७-७५।६
 पदाब्ज भक्ति देहि मे । ३-३।२२
 पदिक हार भूषन मनिजाला । १-१४६।६
 पदुम अठारह जूथप बंदर । ५-५४।३
 पदुम पत्र जिमि जग जल जाए । २-३१६।८
 पन परिहरि हटि करइ बिबाहू । १-२२१।२
 पन हमार सेवक हितकारी । १-१२८।५
 पन्नगरि यह रीति अनुषा । ७-११५।२
 प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू । २-२२१।५
 प्रगट कीन्हि चह अंतर सारथी । ६-१०७।१४
 प्रगट जुगल ससि तेहि के भाएँ । १-११६।३
 प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं । १-२१७।२
 प्रगट न कहेउ मोर अपराधा । १-५७।२
 प्रगट न ग्यान हृदयै भ्रम छावा । ७-५८।१
 प्रगट न लाज निसा अवलोकी । १-२५८।१
 प्रगट प्रभाउ महेश प्रतापू । १-१४।६
 प्रगट भए नम जहै तहै केतू । ६-१०१।८
 प्रगट भए सब जलचर बृंदा । ६-३।४
 प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी । १-३२४।५
 प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी । १-२३८।६
 प्रगटे अग्नि घरु कर लीन्हें । १-१८८।६
 प्रगटे हृदयै हरन भव भीरा । ३-१।१४
 प्रगटेउ प्रमु कौतुकी कृपाला । १-१३।३
 प्रगटेउ बिषमवान झषकेतू । १-८२।८

प्रजा पाँच कत करहु सहाई । २-१७१।८
 प्रजा पालि परिजन दुखु हरहु । २-१७५।६
 प्रजा बाढ जिमि पाइ सुराजा । ४-१४।११
 प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसैं । २-११।१
 प्रजा सचिव संमत सबही का । २-१७६।१
 प्रजा समाजु न जाइ बखाना । २-२३५।२
 परत खगेस होइ नहिं बारा । ७-११८।१
 प्रतिमट खोजत कतहुं न पावा । १-१८१।१
 प्रतिमा श्रवहिं नयन मग बारी । ६-१०१।१०
 परतिहुं बार कटकु संघारा । ५-११।१
 प्रथम अविद्या निसा नसानी । ७-३०।३
 प्रथम गनिज मोहि मूढ समाजा । २-४१।२
 प्रथम तासु गृह गए भवानी । ७-१।१
 प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ । २-३१।३
 प्रथम पूजित नाम प्रनाऊ । १-१८।४
 प्रथम सरखन्ह अन्हवावहु जाई । ७-१०।२
 प्रथमहिं भेट भगति बर लयऊ । ३-८।२
 प्रथमहिं मोहि न सुनाएहि आई । ६-६२।४
 प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा । ६-११।१
 प्रनत कुटुंब पाल रघुनाई । २-२०७।७
 प्रनतपाल उर अंतरजामी । ५-४८।५
 प्रनतपाल पन आपन पाला । २-२६६।५
 प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई । ७-३६।५
 प्रनतपाल सचराचर नायक । १-१४५।२
 प्रनतपाल सबंम्य सुजानू । २-२१७।२
 प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक । ६-१०१।४
 प्रनतारति मंजन पन मोरा । ६-१३।१
 प्रनतारति मंजन रघुनाथा । ५-३८।५
 प्रनमामि निरंतर श्रीरमन । ७-१३।११

प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी । १-१४३	प्रमु पद पीठ रजायसु पाई । २-३२३।१
प्रनवउँ सबहि रूपट सब त्यागै । १-१३६	प्रमु पद प्रीति सरित सो बही । १-४८६
प्रबल अमिति को बरनै पास । ४-४०७	प्रमु पद पैखि मिटा सो पापा । ३-३२७
प्रबल तुषार उदार पार नन । ६-११४।५	प्रमु पद प्रेमु सकल जगु जाना । २-२२४।२
प्रबल पवन जिमि घन समुदाई । ६-४१३	प्रमु पद बादि निजाश्रम आयउँ । ४-८८।२
प्रमु अपमानु समुझि उर दहेऊ । १-६२।५	प्रमु पर मोह धरहिं इमि स्वामी । ४-४२।२
प्रमु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी । ४-६४।८	प्रमु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी । १-११६।१
प्रमु अबतरेउ हरन महि भासा । १-२०५।६	प्रमु प्रताप कपि चले असंका । ६-३८।१
प्रमु असीस जनु तनु धरि सोही । २-२३	प्रमु प्रताप जो कालहि खाई । १-२।१
प्रमु आयसु नहिं राम दोहाई । १-१५।३	प्रमु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि । १-११।५
प्रमु आयसु सब बिधि प्रतिपाला । १-१४१।८	प्रमु प्रताप महिमा खगराई । ४-१०।१
प्रमु कर जोरें सीस नवावहिं । ४-३२।४	प्रमु प्रताप रबि छबिहि न हरिही । २-२०८।३
प्रमु कहैं देइ भगति बर लीन्हा । ३-४।७	प्रमु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया । १-२३८।५
प्रमु कारज लागि कपिहि बैधावा । १-११।४	प्रमु प्रतिपाद्य राम भगवाना । ४-१०।६
प्रमु कृत खेल सुरन्ह विकलई । ६-१३।३	प्रमु प्रभाउ जानत मतिधीरा । १-५२।२
प्रमु के एकहु काज न आयउँ । ६-११।३	प्रमु प्रभाउ तस बिदित न तेही । १-४८।५
प्रमु केहि कारन करै न दीन्हा । ३-४२।३	प्रमु प्रभाउ सूचक मृदु बानी । १-२३४।८
प्रमु गति देखि सभा सब सोची । २-२६१।३	प्रमु प्रसाद दुर्लभ बर पायउँ । ४-११३।१
प्रमु गुन कस न कहसि एहि भौंती । ६-२।३	प्रमु प्रसाद धनु मंजेउ रामा । १-२८५।५
प्रमु गुन कहत सुनत घर आए । २-१३।३	प्रमु प्रसाद पट भूषन धरही । २-१२८।२
प्रमु चित हित थिति पावत नाही । २-२६।४	प्रमु पुनि कृत धनु सर संधाना । ६-११।१
प्रमु तजि नवन काज मम काहा । ४-१४।५	प्रमु पुलके लखि प्रीति बिसेषी । १-२६०।४
प्रमु तहैं प्रगट सदा तहैं रीती । १-१८४।३	प्रमु प्रेरित नहिं निज बल ताकैं । ३-१४।६
प्रमु देखै तरु ओट लुकाई । ३-१।५	प्रमु प्रेरित ब्यापह तेहि बिद्या । ४-४८।२
प्रमु धनुष सर संधानि । ३-११।७	प्रमु बरजे बड़ अनुचित जानी । २-१५।४
प्रमु पद कमल बिलोकहिं आई । २-३११।८	प्रमु बिनु बादि परम पद लाहू । २-३१३।२
प्रमु पद जलज सीस तिन्ह नाए । १-१२।५	प्रमु बिलोकि जनु करत प्रसंसा । ३-३१।२
प्रमु पद धरि हियै अनल समानी । ३-२३।३	प्रमु बिलोकि बोले मृदु बानी । ३-१६।१२
प्रमु पद परत हरषि उर लाए । ३-२०।२	प्रमु बिधि बचनु कीन्ह चह साचा । १-४८।१

प्रमु भुज करि कर सम दसकंधर । ५-११३
 प्रमु महिदेव श्राप अति घोरा । १-१६५८
 प्रमु मानी सनेह सेवकाई । २-२१७८
 प्रमु मूरति तिन्ह देखी तैसी । १-२४०१४
 प्रमु मोहि कीन्ह बिदित जग पावन । ७-१२२८
 प्रमु मोहि लजेउ हृदयें अकुलानी । १-५७३
 प्रमु लछिमन पहिं बहुरि पटाई । ३-१६१७७
 प्रमु सकोच डर प्रगत न कहीं । १-२५७१५
 प्रमु सन कछु कहि सकत न औऊ । ६-१०८४४
 प्रमु सर प्रान तजें भव तरऊँ । ३-२२४
 प्रमु सुगाउ परिजनन्हि सुनावा । ७-१११५
 प्रमु सुगाव कपि कुल मन भावा । ५-४१२
 प्रमु सेवक जसि प्रीति बडाई । १-११७४४
 प्रमु सोउ भुजा काटि महि पारी । ६-६१११०
 प्रमु सँग मंजु मनोज तुराई । २-६५१२
 प्रमु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी । १-२००८
 प्रमुता पाइ जाहि मट नाहीं । १-५१६
 प्रमुहि जानि मन हरष कपीसा । ४-६१५४
 प्रमुहि प्रसंसहिं देखिं असीसा । १-२६१५
 प्रमुहि बिलोकत अति अनुरागें । २-८७३
 प्रमुहि बिलोकहिं अति अनुरागें । २-१३४५
 प्रमुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी । ३-३४११
 प्रमुहि मिलन आईं जनु राती । १-११४३
 प्रमुहि सकुच एहिं नहिं कछु दीन्हा । २-१०१२
 प्रमुहि समर्पिं कर्म भव तरहीं । ७-१०२१२
 प्रमो पाहि आपन्नमानीश शंभो । ७-१०७११६
 प्रमोऽप्रमेय वैभव । ३-३५
 प्रमथ महा झोटिंग कराला । ६-८७११
 प्रमुदित निज निज काज सिधाए । २-२१२६

प्रमुदित पुरजन सकल बराती । १-३११४
 प्रमुदित प्रेम अत्रि अस नाभा । २-२०१३
 प्रमुदित फिरब द्विवेक बडाई । २-२११४
 प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई । २-१०१८
 प्रमुदित मन तापस बनबासी । २-२६१२
 प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई । २-१५१८
 प्रमुदित मनहुँ थकोरकुमारी । २-१३१२
 प्रमुदित राउ देखिं सोइ सोई । १-३५०७
 प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी । १-३२१३
 प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई । १-३२२७
 प्रमुदित हृदयें चले रघुराई । २-१०८६
 प्रमुदित होइ देखि सुनि राज । २-०८
 प्रयाति ते गतिं स्वकं । ३-३१५
 पर अकाज प्रिय आपन काजू । २-२०११
 पर अकाज मट सहसबाहु से । १-३३
 पर अध सुनइ सहस दस काना । १-३१
 पर मुन सुनत अधिक हरषाहीं । ३-४५१
 पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता । ७-१२४८
 पर दुख दुख सुख सुख देखे पर । ७-३७११
 परदुख हेतु असंत अभागी । ७-१२०१५
 परनिंदक जे जग मो दगरे । ७-१०११०
 पर निदा सम अध न गरीसा । ७-१२०१२२
 पर पीड़ा सम नहिं अधमाई । ७-४०११
 परबस परी बहुत बिलपाता । ४-४४
 पर हित घृत जिन्ह के मन माथी । १-३४
 परहित निति सह बिपति बिसाला । ७-१२०१६
 पर हित हेतु सबन्ह के करनी । ७-१२४६
 परब जोग जनु जुरे समाजा । १-४०७
 परबत फोरि करहिं गहि बाटा । ६-४०५

परस अकिंचन प्रिय हरि केरें । १-१६०।३
 परस अमागिनि आपुहि जानी । २-१६।६
 परस उग्र नहीं बरनि सो जाई । १-१७।१५
 परस क्रुद्ध तब भयउ अहीसा । ६-७५।१३
 परस कृपाल प्रनत अनुरागी । १-१२।५
 परस कौतुकी कृपा निकेता । ६-११६।८
 परस गमौर कृपामृत सानी । १-१४४।६
 परस वतुर न कहेउ निज नाना । १-१५७।८
 परस वतुर मैं जानत अहऊँ । ६-१६।७
 परस धरमु यह नाथ हमारा । २-२१२।३
 परस धरमु यह नाथ हमारा । १-७६।२
 परस धीर धन्वी गुन नाना । ३-२१।६
 परस धीर नहीं चलहिं चलाए । १-१४४।३
 परस प्रताप तेज बल रासी । ६-११।१
 परस प्रीति राखे उर लाई । ३-१।२२
 परस पुनीत प्रद्वय बनाई । १-१३१।३
 परस प्रेनु कछु जाइ न बरना । १-१०१।७
 परस प्रेम लोचन न अघाता । ३-२०।३
 परस विचित्र एक तैं एका । १-१२१।२
 परस विचित्र बिमानु बनावा । २-१६१।१५
 परस मनोहर बचन उचारे । ७-३२।६
 परस रम्य मुनिबर मन भावन । १-४३।६
 परस रम्य सम सुभ्र बिसेयी । ६-१०।२
 परस रहस्य मनोहर गावउँ । ७-७३।४
 परस रूपमय कच्छु सोई । १-२४६।७
 परस रंक जनु पारसु पावा । २-११०।१५
 परस सवित समेत अवतरिहउँ । १-१८६।६
 परस समीत धरा अकुलानी । १-१८३।४
 परस सुभग सब दिसा बिभागा । १-८५।७

परस सुमट रजनीचर मारी । १-१६।८
 परस सुंदरी नारि लतामा । १-१७७।२
 परमानंद अमित सुख पावा । १-११०।८
 परमानंद परेस पुराना । १-११५।८
 परमानंद मगन महतासी । १-३४।३
 परमानंद हरष उर भरहीं । ७-६।५
 परमारथ पथ परस सुजाना । १-४३।२
 परमारथ पथ बिमुख अभागे । २-१६७।५
 परमारथी प्रपंच बियोगी । २-१२।३
 पर्यो धरनि ब्याकुल सिर घुन्यो । ६-६४।७
 प्रलयकाल के जनु घन घट्टा । ६-८६।२
 प्रलय समय के घन जनु गाजहिं । ६-७८।८
 परलोकहु कर नाहिन सोवू । २-१८१।५
 परस कि होइ दिहीन समीरा । ७-८१।७
 परसत तुहिन तामरसु जैसें । २-७०।८
 प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं । ७-३५।६
 प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी । ७-१४।२
 प्रसन्नानन नीलकंठ दयाल । ७-१०७।७
 परसि अखय बटु हरषहिं गाता । १-४३।५
 प्रसीद प्रमो सर्वभूताधिवास । ७-१०७।१४
 प्रसीद प्रसीद प्रमो मन्मथासी । ७-१०७।१२
 परसु बिलोकु महीपकुमारा । १-२७१।८
 परसु सहित बड नाम तोहारा । १-२८१।६
 परसु सुधारि धरेउ कर घोरा । १-२७७।२
 परसुराम मन बिसमय भयऊ । १-२८३।८
 परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका । ७-११।४
 परहिं भूमितल बारहिं बास । २-१५१।४
 परा भूमि घुर्मित सुरघाती । ६-७३।७
 प्राकृत नारि अंग अनुरागी । १-२४६।२

प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी । २-३१७११
 प्रातकाल चलिहउँ प्रमु पाहीं । २-१८२१२
 प्रात नहाइ चले रघुराई । २-१२३१४
 प्रात नहान लाग -सबु कोऊ । २-२४२१३
 पराधीन नहिं तोर सुपासा । ३-१६११३
 पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं । १-१०११५
 प्राण जाहुँ बरु बचनु न जाई । २-२७१४
 प्राण प्राण के जीवन जी के । २-५५१४
 प्राण लेहिं एक एक चपेटा । ४-२३१११
 प्राण समान राम प्रिय अहहू । २-१८३१५
 प्राणप्रिया केहि हेतु रिसानी । २-२४१८
 प्राबिट जलट मरुत जनु प्रेरे । ६-७८१३
 परि मुह भर महि करत पुकारा । २-१६२१४
 परिछन चली हरहि हरषानी । १-१५१३
 परिछनि करहिं मुदित मन रानी । १-३१८११
 परिछनि साजु सज्जन सब लागीं । १-३४५१२
 परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा । २-२४११८
 परिजन प्रजा सकल बस तोरें । २-२५१५
 परिजन सहित संग निज नारी । ६-१११७
 परिहरि अमृत लेहिं बिषु मागी । २-४११३
 परिहरि कोपु करिअ अब दाया । १-२७७११
 परिहरि सोद्यु चलहु बन साथ्या । २-६७१३
 परिहहिं धरनि राम सर लागें । ६-२६१४
 पसी जासु फल बिपति घनेरी । १-४०१८
 परुष बचन कबहुँ नहिं बोलहिं । ४-३७१८
 परे चरन तन टसा बिसारी । २-१६३१२
 परे टंड इव गहि पद पानी । १-१४७१७
 परे पेम ब्याकुल सब गाता । २-२४४१४
 परे भूमितल ब्याकुल भारी । २-१५११४

परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे । ६-११३११
 परे सकल कपि चरनन्हि जाई । ५-२८१८
 परे समर महि सब रनधीरा । ६-६१११२
 परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही । ६-१२०१११
 परेउ चरन निज नाम सुनायउ । ६-६३१३
 परेउ चरन भरि लोचन बारी । ७-१११४
 परेउ चरन मुख आव न बानी । १-३५११८
 परेउ जाइ तेहि सोज अनूपा । १-१७१११
 परेउ धरनि उर टारुन दाहू । २-१५२१५
 परेउ धरनितल ब्याकुल भारी । २-१४११७
 परेउ धरनि तल सुधि कछु नाहीं । ६-८२१७
 परेउ भूमितल निपट मलीना । २-१४७१५
 परेउ भूमि जय राम पुकारेसि । ६-१०१७
 परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा । ६-८३१२
 परेउँ भूमि करि घोर धिकारा । ४-२७१४
 परेहु कटिन रावन के पाले । ६-८११८
 पल सम होहि न जनिअहिं जाता । २-२७११८
 पलक नयन इव सेवक त्राताहि । ७-२११३
 पलक बिलोचन गोलक जैसें । २-१४१११
 पलकन्हिहुँ परिहरीं निमेषें । १-२३११५
 पलटि सुधा ते सट बिष लेहीं । ७-४३१२
 पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई । ३-४३१६
 पहिरावहु जयमाल सुहाई । १-२६३१५
 पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए । ६-११७११
 पहुँचाएसि छन माझ निकेता । १-१७०१७
 पहुँचैहउँ सोवतहि निकेता । १-१६८१८
 पाइ असीस मुदित सब प्राता । १-३५७१७
 पाइ जनम फल होहिं बिसोकी । २-१३८११
 पाइ जासु बल विरचति माया । ५-२०१४

पाइ न जेहिं परलोक सँवासा । ७-४२८
 पाइ नयनफलु होहिं सुखारी । २-११३।३
 पाइ नयन फलु होहिं सुखारी । १-३४२।८
 पाइ प्रदोष हरष दसकंधर । ६-१७।११
 पाइ रजायसु चले नहाना । २-२७७।८
 पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए । ४-१५।६
 पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा । १-३४।११
 पाइहि लोकउ बेदु बडाई । २-२०६।२
 पाउं देइ एहिं मारग सोई । ७-१२।८।४
 पाएहुं प्यान भगति नहिं तजहीं । ३-४३।१०
 पाकरि जंबु रसाल तमाला । २-२३६।२
 पाकें छत जनु लाग अँगारु । २-१६०।५
 पाछें अनहित मन कुटिलाई । ४-६।७
 पाछें रावन दूत पठाए । ५-५०।८
 पाछें सुमिरेसि मन महुँ रामा । ३-२६।१५
 पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू । ६-५७।४
 पाटल पनस परास रसाला । ३-३१।६
 पान पूगफल मंगल मूला । १-३४।५।४
 पानि कटवता भरि लेइ आवा । २-१००।६
 पाप पयोनिधि जन मन मीना । १-२६।४
 पाप परायन सब नर नारी । ७-१६।८
 पाप सिरोमनि साई दोहाई । २-१८।५।४
 पापिनि सबहि भाँति कुल नासा । २-१६०।६
 पाय पलोटिहि सब निसि दासी । २-६६।५
 पाय पुनीत परखारन लागे । १-३२३।८
 पायउ अचल अनूपम टाऊँ । १-२५।५
 पायहु कहीं कहहु नभगामी । ७-१३।४
 पायसो सो फलु पापिष्ट । ६-११२।१
 पाय जाइ कर संसय राखा । ४-२८।६

पारबती कर जन्मु सुनावा । १-७५।७
 पारस परस कुधात सुहाई । १-२।१
 पारावत मराल सब ताजी । ३-३७।६
 पालु बिबुध कुल करि छल छाया । २-२१।४।२
 पालत नीति प्रीति पहिचानी । २-२७।५।५
 पालत सूजत हरत दससीसा । ५-२०।५
 पालहु अवघ अवधि भरि जाई । २-३१।४।६
 पालहु प्रजा सोकु परिहरहू । २-१७।४।१
 पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी । २-३१।४।८
 पाव भगति मनि सब सुख खानी । ७-१११।१५
 पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी । ६-१०८।२
 पावक प्रगटि काठ बहु त्पाए । ६-१०८।५
 पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू । १-२२।४
 पावक सायक सपदि चलावा । ६-४६।३
 पावति नाव न बोहितु बेरा । २-२५।६।३
 पावन काल लोक बिश्रामा । १-११०।२
 पावन गुन गावहिं रघुनायक । १-११३।६
 पावन गंग तरंग माल से । १-३१।१४
 पावन जस त्रिभुवन बिस्तारयो । ६-११५।३
 पावन परम सुहावन भ्राता । २-३०७।६
 पावन पुरी रुचिर यह देसा । ७-३।२
 पावन पंचबटी तेहि नाऊँ । ३-१२।१५
 पावन सुजस पुरान बेद बट । ७-३३।५
 पावन सुंदर सुधा समाना । २-२७।८।८
 पावहिं गति जो जाचत जोगी । ६-४४।३
 पावहिं सब निज निज मन भाए । १-३०३।७
 पावहुगे फल आपन कीन्हा । १-१३६।५
 पावा अनिर्वाच्य बिश्रामा । ५-७।२
 पावा राज कोस पुर नारी । ४-१७।४

पावा दरसनु राम प्रसादा । २-२४९।६
 पावा दरसु हमहुँ बड़नागी । ६-२९।८
 पावैर प्रान अघाइ अमागे । २-१७९।११
 पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी । ६-२।९
 पाहन तें न काठ कठिनाई । २-१९।५
 पाहि पाहि प्रनतारति हारी । ६-६९।४
 पाहुनि पावन पेम प्रान की । २-२८५।४
 पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू । २-४५।१
 पितहि बिलोकि लाज अति लागी । ६-७४।११
 पितहु मरन कर मोहि न सोकू । २-२९०।५
 पिता जग्य सुनि कछु हरषानी । १-६०।५
 पिता बचन मनतेउँ नहिँ ओहू । ६-६०।६
 पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा । २-१७३।३
 पिता रामु सब भौति सनेही । २-७३।२
 पिता समेत लीन्ह निज नामू । १-५२।७
 पितु अग्र्यौ अघ अजसु न भयऊ । २-१७३।८
 पितु आयसु सब धरमक टोका । २-५४।८
 पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने । १-२४१।७
 पितु दरसन लालचु मन माहीं । १-३०६।५
 पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोमा । १-२५७।११
 पिय तन चितइ भौह करि बाँकी । २-११६।६
 पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते । २-६४।३
 पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं । २-६३।७
 पिय बिहीन मन भाव न भोरें । २-१७।२
 पियहि काल बस मतिभ्रम भयऊ । ६-१५।८
 प्रिय न काहि अस सासुर माई । १-३१०।११
 प्रिय परिजन कर कौन बिचारू । २-२४६।८
 प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं । २-३२०।३
 प्रिय परिवार सदन सुखदाई । २-१३०।५

प्रिय परिवारु कुसंग बिहंगा । २-१३९।१५
 प्रिय परिवारु मातु सम सासू । २-१७।५
 प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई । २-६४।११
 प्रिय पालक परलोक लोक के । १-३१।५
 प्रिय पाहुने भूप सुत चारी । १-३३४।३
 प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें । २-४५।२
 प्रिय संत अनंत सटा तिन्ह कें । ७-१३।१२
 प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ । २-१४१।११
 प्रिया अनुज सन कहत बखानी । २-३२०।४
 प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई । २-१५०।३
 प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं । ३-२९।१५
 प्रिया हीन डरपत मन मोरा । ४-१३।११
 प्रिया हीन मोहि मय उपजावा । ३-३६।१०
 प्रियं शंकरं सर्वनाथं मजामि । ७-१०७।८
 पिसुन पराय पाप कहि देहीं । २-१६७।११
 पीत बरन ससि कहुँ कह सोई । ७-७२।३
 प्रीति अलौकिक दुहु दिसि मावी । १-३१९।७
 प्रीति कइ नहिँ पाछिति बावा । ३-४२।७
 प्रीति कहत कबि हियें न हुलासू । २-३१९।२
 प्रीति कि रीति न जाति बखानी । १-३०८।११
 प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला । ७-१६।८
 प्रीति न पट सरोज मन माहीं । ५-६।३
 प्रीति प्रतीति जाइ नहिँ तरकी । २-२८८।५
 प्रीति प्रतीति जान सबु देखू । २-४८।७
 प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई । २-७१।५
 प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई । १-१६३।३
 प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें । १-१६५।३
 प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी । १-२०।११
 प्रीति पुरातन लखइ न कोई । १-२२८।८

प्रीति रही कछु बरनि न जाई । ४-५१५
 प्रीति राम पद कमल अमाया । ६-५८६
 प्रीति रीति संपदा सुहाई । १-३५३७
 प्रीति समेत अंक बैठावा । ६-४८७
 प्रीति समेत कर्म मन बानी । १-८९४
 प्रीति समेत निकेत बखाने । १-२२४११
 प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी । २-१२८३
 पीपर पात सरिस मनु डोला । २-४४३
 पुन्य प्रदेस टेस अति चारु । २-१०४४
 पुन्य पुरुष कहूँ महि सुख छाई । १-२९३११
 पुन्यसिलोक तात तर तोरें । २-२६२६
 पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही । १-७८८
 पुनि अस बचन कहत सब भए । ४-२५८
 पुनि असोस दुहु भाइन्ह दीन्ही । १-२३६३
 पुनि आगें बर बसह चत्तावा । १-३१४३
 पुनि आपन संदेह सुनावा । ७-६०१५
 पुनि उठत करि पाषंड । ३-१९१११
 पुनि उठि बैठ देखि प्रमु आगें । ४-८११
 पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी । २-४४४
 पुनि कपि सन बोले बलबीरा । ६-५९४
 पुनि कह राम लखन बैदेही । २-१४७८
 पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ । ७-७९११
 पुनि तव चरन देखिहउँ देवा । ७-१८८
 पुनि तापस बोलेउ मृदु बानी । १-५५८३
 पुनि तैं मम सेवों मन दयऊ । ७-१०८११
 पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई । १-१७७४
 पुनि न बनिहि अस अवसरु आई । ३-४०७
 पुनि नम धनु मंडल सम भयऊ । १-२६०६
 पुनि नारद बोले मृदु बानी । ३-४२१५

पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा । ७-९१२
 पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई । ७-१०५१२
 पुनि नृप बचन राज रस मंगा । ७-६४१५
 पुनि पठए मुनि बृट बोलाई । १-३२१८
 पुनि पतिबचनु मृषा करि जाना । १-५८१२
 पुनि प्रगटे खल रूप अनेका । ६-९५१५
 पुनि परिचारक बोलि पठाए । १-२८६५
 पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगबर । ७-१२४१०
 पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा । ६-२७६
 पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें । ६-२८४
 पुनि पुनि कहहिं धन्व सुखरासी । ७-१९६
 पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना । ६-५५३
 पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं । ७-१६४
 पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं । ७-४१६
 पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा । ३-३३१९
 पुनि पुनि पारबती पद बंदे । १-९८१५
 पुनि पुनि पुलकत कृपानिकैता । १-४९४
 पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा । ७-१०५८
 पुनि पुनि हरष मुसुडि सुजाना । ७-१२३११
 पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा । ६-११७३२
 पुनि फिरि मिरैउ प्रबल हनुमाना । ६-९४५
 पुनि बिबेक पावक कहूँ अरनी । १-३०६
 पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई । ७-११२१०
 पुनि ना प्रगट कहइ दुर्बादा । ६-७३३
 पुनि मो कहूँ सोइ दिनु सो राती । १-२६८
 पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ । ६-११५७
 पुनि रिपुदवनु हरषि हियँ लाए । २-३१७४
 पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ । १-१५१९
 पुनि लाग बरषै बालु । ६-१००८

पुनि सठ कपि निज प्रमुहि सराहू । ६-२७८
 पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं । १-४४१
 पुनि सब बरनहु सहित बिभागा । १-११०१२
 पुनि सब बिग्रह आयसु दीन्हा । ७-११५
 पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा । ७-६६४
 पुनि सुंदर आसन बैठारे । ३-३३११०
 पुनि हनुमान हरषि हिये लाए । ५-२९७
 पुनि त्रिजटा निज मयन सिधाई । ६-१११९
 पुर खरभरु सोमा अधिकाई । १-१४१९
 पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोघी । ७-६६५
 पुर न जाउँ दस चारि बरीसा । ४-११७
 पुर नर नारि न जानेउ केहीं । १-१७१४
 पुर नर नारि सुखी सब भए । ७-११३
 पुर प्रबेसु रपुकुलमनि कीन्हा । १-३३६७
 पुर प्रमोदु नहिँ जाइ बखाना । २-१०१९
 पुर परिजन गृह सुरति बिसारी । २-१३११९
 पुर बरनत नृपनीति अनेका । ७-६७६
 पुरजन द्वार जोहारन आए । १-३५७६
 पुरजन परिजन सचिव सुवाती । २-३१८६
 पुरजन पेमु न जाइ बखाना । २-२११७
 पुरजन सकल सराहहिँ भागा । २-२४३५
 पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी । २-२८१२
 पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी । १-१४८७
 पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे । १-१३३
 पुरबासिन्ह सब पूछत नयऊ । १-१२१७
 पुरुष जुगल बल रूप निधाना । ४-०३
 पुरुष परिखिअहिँ समर्ये सुभारै । २-२८२६
 पुरुष मनोहर निरखत नारी । ३-१६५
 पुरुष सिंघ बन खेतन आए । ३-२१३

पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे । १-२९१९
 पुरोडास चह रासम खावा । ३-२८५
 पुलक अंग अंबक जल छाए । १-३०६७
 पुलक गात आई मरि छाती । १-२८९४
 पुलक गात उर अधिक उछाहू । १-२९६५
 पुलक गात गिरिजा हरषानी । १-४४५
 पुलक गात लोचन जल बरषेउ । ७-११९
 पुलक पूरि तन भए सुखारी । १-२५४६
 पुलक बपुष लोचन जल भरई । ७-४९७
 पुलक सरीर नयन जल बाढे । २-१३४६
 पुलक सरीर पनस फल जैसा । ३-११५
 पुलक सरीर बिलोचन बारी । २-३००५
 पुलक सरीर मरे जल नैना । १-६७३
 पुत्तकि प्रसंसत राउ बिदेहू । २-३०८३
 पुत्तकि सरीर भरत कर जोरे । २-२०३५
 पुत्तकित गात बिलोचन बारी । २-११७६
 पुत्तकित तन अस्तुति अनुसारी । ७-३३१९
 पुष्पक जान जीति लै जावा । १-१७८८
 पुत्रकाम सुम जग्य करावा । १-१८८५
 पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू । २-८१४
 पूछत चले लता तरु पीती । ३-२९८
 पूछ रानि पुनि सपथ देवाई । २-१८१९
 पूछत अति सनेहँ सकुचाहीं । २-११५४
 पूछत कहत नवल इतिहासा । १-२७६
 पूछत राउ नयन मरि बारी । २-१४८१२
 पूछत सरखहि कहत मुदु बानी । २-२१५६
 पूछति नैहर कुसल हमारै । २-१५८६
 पूछहिँ कुसल खेम मृदु बानी । २-२३१२
 पूछहिँ सकल देखि मनु मारै । २-३८४

पूछा मत सब सचिव बोलाई । ६-१६।१
 पूछा सिवाहि समेत सकोवा । १-५६।६
 पूछी मुनिन्ह लागि अति दाय । ३-८।६
 पूछी कुसल निकट बैठाई । २-८७।४
 पूछी कुसल सुमंगल खेमा । २-१९।३
 पूछी निज कुल कुसल भलाई । २-१५।७
 पूछी मधुर बचन महतारी । २-३९।४
 पूछें निज वृत्तांत सुनावा । ४-२४।१
 पूछे बचन कहत अनुरागे । २-२३।४
 पूछेउ नगु लोगन्हि मृदु बानी । २-१७।५
 पूछेहु नाथ मोहि का जानी । ३-१२।४
 पूछेहु मोहि मनुज की नाई । ३-१२।९
 पूज्य परम हित अंतरजामी । २-२९।१
 पूजहि तुम्हहि सहित परिवास । २-१२।६
 पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना । १-२०।२
 पूजि जथाविधि तीर्थ देवा । २-१०।६
 पूजि पारथिव नायउ माथ्य । २-१०।११
 पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे । २-१०।११
 पूजि पुरारि साधु जनमाने । २-२२।८
 पूजि भली विधि भूप जेवाँए । १-३५।३
 पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे । १-३३।११
 पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें । २-२।७
 पूजिहि विधि अमिलापु हमारा । २-१०।४
 पूजिहि मन कामना तुम्हारी । १-२३।५।७
 पूजि सकल बासना जी की । १-३५।११
 पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि । १-३४।३
 पूजे रिधि अखिलेस्वर जानी । १-४७।२
 पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी । ६-२४।३
 पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई । ६-२४।२

पूत पथ्य गुर आयसु अहई । २-१७।११
 पूरनकाम रामु परितोषे । १-३४।६
 पूरन किए दान सनमाना । १-३५।८
 पूरहिं न त भरि कुधर दिसाला । १-५४।६
 पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं । ७-२०।३
 पूरुब कथाप्रसंगु सुनावा । १-१७।१
 पूरुब जन्म कथा चित आई । १-१०।६।४
 पेखि प्रहस्ये मुनि समुदाई । ७-११।३
 पेमु नेमु ब्रत धरमु अमाया । २-२१।५
 प्रेम पयोधि अमिर्जं जनु सानी । २-२०।११
 प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ । २-२३।८
 प्रेत पिशाच मृत बेताला । १-८।६
 प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई । २-२४।४
 प्रेम उमगि लोचन जल छाए । १-३३।४
 प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना । १-१८।५
 प्रेम तें प्रमु प्रगटइ जिमि आगी । १-१८।७
 प्रेम प्रताप बीर रस पागी । १-२९।२।६
 प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढ़े । १-३३।६
 प्रेम प्रमोदु कहे को पास । १-३४।११
 प्रेम प्रमोद मगन नर नारी । १-३२।६
 प्रेम पावु तुम्ह सम कोउ नाहीं । २-२०।३
 प्रेम पुलक लोचन जल छाए । १-११।७
 प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी । २-२६।१
 प्रेम पोषि जाढ़े सब कीन्हे । १-३३।२
 प्रेम पंक जनु निस समानी । १-३३।११
 प्रेम बारि अवगाहु सुहावन । १-२६।२
 प्रेम बारि द्वी जन अन्हवाए । ३-२।६
 प्रेमबिबस तन दसा बिसारी । १-३४।८
 प्रेम बिबस पहिसाइ न जाई । १-२६।३।६

प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ । १-२१०६
 प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लागीं । १-३३५१
 प्रेम बिबस सीता पहिं आई । १-२२७८
 प्रेम बिबस सेवक सुखदाता । १-२१७८
 प्रेम मरा मन निज गति छूँछ । २-२४१७
 प्रेम मगन तेहि उठब न भावा । ५-३३११
 प्रेम मगन नाहिं गृह कै ईछ । ६-११७/१०
 प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू । २-३०२५
 प्रेम मगन मुनिबर बड़भागी । ३-९१२१
 प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा । २-२३७५
 प्रेम मगन सब भए सुखारी । ६-१०७३
 प्रेम मगन सब संसय मयऊ । ७-११३७
 प्रेम मुदित मुनिबर उर लाए । १-३०७५
 प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि । ७-१०२६
 प्रेम समेत निकट बैतारे । १-२५३७
 प्रेम समेत पलंग पौढ़ाए । १-३५५५
 प्रेम सहित कर सादर गाना । ७-५६८
 प्रेम सहित बहु भाँति बखानी । ३-४०१९
 प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी । ७-६०३२
 प्रेम सहित सब कथा सुनाई । ३-३५१३
 प्रेरि सतिहि जेहिं झूठ कहावा । १-५५१५
 पैठ भवन रथु राखि दुआरें । २-१४६५
 पैठा नगर सुमिरि भगवाना । ५-४१४
 पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा । ४-२३३८
 पैठे रावन भवन असंका । ६-८४५
 पैरत थकें थाह जनु पाई । १-२६२४
 पैरि पार चाहिं जड़ करनी । ७-११४४
 पैहु सीतहि जनि पछिताहू । ४-२४१५
 पौढ़े धरि उर पद जलजाता । १-२२५८

पंकज कोक लोक सुखदाता । १-२३७७
 पंकज कोस ओस कन जैसें । २-२०३११
 पंच रचित अति अधम सरीरा । ४-१०१४
 पंचम मजन सो बेट प्रकासा । ३-३५११
 पंडित मूढ़ मलीन उजागर । १-२७६६
 पंडित सोइ जो गाल बजावा । ७-१७३
 पंथकथा खर आतप पवनू । १-४१४
 पंपा नाम सुमग गंभीरा । ३-३८६

फ

फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं । १-२११०
 फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई । १-३५७४
 फरकहिं मंगल अंग सुहाए । २-६१४
 फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू । २-२२४११
 फरकहिं सुमद अंग सुनु ब्राता । १-२३०४
 फरकि उठीं द्वै मुजा बिसाला । ४-५१५
 फरकि बाम अंग जनु कहि देहीं । ५-३४६
 फरकेउ बाम नयन अरु बाहू । ६-११५
 फरसा बाँस सेल सम करहीं । २-११०५
 फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे । २-२५५७
 फल खाएसि तरु तौरें लाग्य । ५-१७११
 फल प्रसून पल्लव बहु भाँति । २-२४८७
 फल ब्रह्मांड अनेक निकाया । ३-१२६
 फलइ तबहिं जब करिअ दुराऊ । १-१६७४
 फलित बिलोकि मनोरथ बेली । २-०७
 फरत करिनि जिमि हतेउ समूला । २-२८८
 फिरइ त होइ प्रान अवलंबा । २-८१६
 फिरत विपिन निसिचर बहु भाई । ३-२६८
 फिरब बहोरि तुन्हहि सिरु नाई । २-१११८

फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी । ५-७११
 फिरहिं दुखित मनु संग पठाई । २-१०८८
 फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं । २-८२४
 फिरहिं रामु सीता में हारी । ६-३३१९
 फिरहु त सब कर निटै खमारु । २-९६३
 फिरा ब्रोध करि भइ मन ग्लानी । ६-६५१९
 फिरा श्रमित व्याकुल भय सोका । ३-९१४
 फिरि आवइ समेत अमिमाना । १-३८३
 फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी । ७-२१४
 फिरि दसकंधर कर अनुमाना । ३-२८१२
 फिरि फिरि चितव राम की ओरा । ७-१८१२
 फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ । ३-१२१९३
 फिरि बैठै मन बिसमय भयऊ । ५-१२८
 फिरि सुकठ सोइ कीन्हि कुवाली । १-२८६
 फिरिअ महोस दूरि बड़ि आए । १-३३१५
 फिरिहिं मृग जिमि जीव दुखारी । १-४२८
 फिरी अपनपउ पितुबस जाने । १-२३३८
 फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता । २-२९१९
 फिरे एक एकन्ह तव टेरै । ६-१६३
 फिरे पायँ परि विकल बिबादा । २-१४६३
 फिरे बदि पग आसिष पाई । २-३१८५
 फिरे भालु मर्कट भट नाना । ६-४५३
 फिरे मरन मन महुँ ठानि । ३-१११५
 फिरे महीसु आसिषा पाई । १-३४२६
 फिरे सकल रामहि उर राखी । १-३३१३
 फिरे सराहत सुंदरताई । २-१०७८
 फिरे सुमन बहु प्रमु पर बरषे । ६-१६३
 फिरेउ बनिक जिमि मूर गर्वाई । २-१८८
 फिरेउ महाबन परेउ मुलाई । १-१५६८

फिरेउ राउ मन सोच अपारा । १-१७३७
 फुकरत जनु बहु ब्याल । ३-१११९
 फूलहिं सदा बसंत कि नाई । ७-२७३
 फेरत राम दोहाई देहीं । २-२४१४
 फेरि सुभट लंकेस रिसाना । ६-४१६
 फेरिअ प्रमु मिथिलेसकिसोरी । २-८१२
 फेरिअहि लखन सीय रघुसाई । २-२५१३
 फेरे फिरे जोहारि जोहारी । २-३२०२

ब

बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू । १-२८०६
 बकिहि सराहइ मानि मराली । २-११४
 बचउँ बिचारि बंधु लघु तोरा । १-२७७७
 बचन अगोवर किमि कहि जाई । २-१२२७
 बचन अगोवर सुखु अनुभवहीं । २-१०७४
 बचन कहहिं जनु परमारथी । ६-१०९२
 बचन कहहिं सब गाल फुलाई । ६-८६
 बचन कहे कछु जनककुमारी । ५-३०३
 बचन किरन मुनि कमल बिकास । २-२७६१
 बचन तुंगहार न होइ अलीका । १-२१५६
 बचन नखत अदली न प्रकासी । १-२५४१९
 बचन बानसम लागहिं ताही । २-४८४
 बचन बिनीत कहहिं कर जोरी । २-१३४८
 बचन बियोगु न सकी सैभारी । २-६७१
 बचन मंजु मृदु मंगलमूला । २-२५८३
 बचन सनेह सुधौं जनु बोरी । १-३३१७
 बचन सप्रेम राम मन भाए । २-१३१९
 बचन सप्रेम लखन सन कहई । २-८१६
 बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं । २-२८०१९

बचन ससोक मिलत नद नारे । २-२७५।१
 बचनु अन्यथा होइ न मोस । १-८७।२
 बचनु न आव बिकल भइ भारी । २-६८।१
 बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तैं । २-२१।८
 बचनु हमार मानि गृह रहहू । २-६०।३
 बज्रपात जनु बारहिं बारा । ६-८६।७
 बट तर गखउ हृदयैं हरषाना । ७-६२।३
 बट पीपर पाकरी रसाता । ७-५५।१
 बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी । २-१०७।५
 बड़ अपराध कीन्ह फल पाया । १-१३८।३
 बड़ प्रमाउ देखत लघु अहहीं । १-२२२।४
 बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं । २-४४।८
 बड़ विषादु नहिं धीरजु होई । २-४५।८
 बड़मागिनि आपुहि अनुमानी । २-२१३।१
 बड़ रखवार रमापति जासू । १-१२५।८
 बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझैं । २-१११।८
 बड़ी बार लगि रहे निहारी । १-१३०।१
 बड़ीं चूक साहिब अनुसगू । २-२११।४
 बड़े भए परिजन सुखदाई । १-२०२।२
 बड़े भाग उर आवइ जासू । १-०।६
 बड़ें भाग असि पाइज मीचू । २-१८१।४
 बड़ें माग देखेउं पद आई । १-१५८।६
 बद्धत धरम दलु मनु न मलीना । २-३२४।२
 बद्धत बिधि जिमि घटज निवारा । २-२१६।२
 बद्धत बीधि पुलकावलि भारी । १-२६१।३
 बद्धत बौंड जनु लही सुसाखा । २-४।७
 बद्धहू दिवस निसि बिधि सन कहहीं । १-३०८।८
 बद्धी परस्पर प्रीति न थोरी । १-३३६।७
 बड़ें प्रेमु सब भाँति भलाई । २-२०४।४

बदन कोटि सत बरनि न जाई । ५-५३।५
 बदन दीख मुनि बारि निहारी । १-१३४।७
 बदन मयंक तापत्रय मोचन । १-२१८।६
 बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा । २-१।६
 बदनु सकल सौंदर्ज निघाना । १-३२६।८
 बध लायक नहिं पुरुष अनूपा । ३-१८।५
 बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही । ७-६५।७
 बधुन्ह समेत चले सुर सर्वा । १-६०।१
 बधे सकल अतुलित बलसाली । ५-२०।८
 बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा । ६-८१।५
 बध्यो चहत एहि कृपानिघाना । ६-४८।४
 बंध्या सुत बरु काहुहि मारा । ७-१२१।१५
 बँध्यो कीर मरकट की नाई । ७-११६।३
 बन असोक महें राखत भयऊ । ३-२८।२६
 बन असोक सीता रह जहवैं । ५-७।६
 बन उपवन बापिका तड़ागा । ७-२८।८
 बन बाटिका बिहग मृग नाना । २-२१४।३
 बन मृग मनहुं आनि रथ जोरे । २-१४२।५
 बन मृगया नित खेलहिं जाई । १-२०४।१
 बनइ न कहत प्रीति अधिकाई । २-११८।२
 बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबोना । ३-४३।८
 बनहि चले पितु आयसु पाई । २-१०९।५
 बनहिं देव मुनि रामहि सजू । २-१८६।३
 बना जाइ असमंजस आजू । १-१६६।५
 बय किसोर कौसिक मुनि साथी । १-२१०।५
 बय किसोर सब भाँति सुहाए । १-२२८।१
 बय बिलोकि हियैं होइ हरींसू । २-५५।४
 ब्यजन चारु चामर सिर दरहीं । १-३४१।४
 बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर । ६-४४।४

बयर सँभारि हृदयै हरषाना । १-१५१।८
 ब्यस्थ काहि पर कीजिअ रूसू । २-१७१।१
 व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा । १-२७२।८
 ब्यसनी धन सुभ गति बिभिचारी । ३-१६।१५
 ब्याकुल बिलख बदन उठि धारै । २-६१।१
 ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी । २-७५।८
 ब्याघ बिबस जनु मृगौ समीता । ३-२८।२४
 व्यापक अजित अनादि अनंता । ५-३८।२
 ब्याल कपाल बिमूषन छारा । १-१४।८
 ब्यास समास स्वमति अनुरूपा । ७-१२२।१
 व्योम बरात बाजने बाजे । १-३०१।५
 बर कन्या अनेक जग माहीं । १-८०।४
 बर करि कृपासिंधु उर लाए । ७-४।७
 बर दूसर असमंजस मागा । २-३१।४
 बर दोउ दल दुख फल परिनामा । २-२२।६
 बर बिग्यान कठिन कोदंडा । ६-७१।८
 बर लायक दुलहिनि जग नाहीं । १-११।६
 बरइ सीलनिधि कन्या जाही । १-१३०।४
 बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी । १-८०।५
 बरजि राम पुनि मोहि निहोस । २-१५१।७
 बरत अनल घृत आहुति पाई । २-१६२।३
 बरदायनी पुरारि धिआरी । १-२३५।१
 बरन बरन बर बाजि बिराजे । १-२१७।४
 बरन बरन बर बेलि बिताना । १-२२६।४
 बरन बिलोचन जन जिय जोऊ । १-११।१
 बरनउँ बिसद तासु गुन गाथा । १-१०४।७
 बरनउँ बिसद राम गुन गाथा । १-३३।३
 बरनउँ रामचरित चित चाऊ । १-१४।८
 बरनउँ राम चरित भव मोचन । १-१।२

बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ । १-३६०।२
 बरनत प्रमु बतकही सुहाई । ७-४६।८
 बरनत मोहि होति अति ब्रीडा । ७-७६।१
 बरनब सोइ बर बारि अगाधा । १-३६।२
 बरनाहिं सब दसरथ गुन गाथा । २-१७२।७
 बरनाश्रम धर्म अचार गए । ७-१०१।८
 बरनि न जाइ देखि मनु मोहा । १-२२७।४
 बरनि न जाइ बिषादु अपारा । २-७५।६
 बरनि न जाइ मनोज बरस्था । ३-३७।७
 बरनि न जाइ समर खगकेतू । ६-७१।११
 बरनि न जाहिं बिलाप कलापा । २-५६।७
 बरनि न जाहिं बिस्व परितापी । १-१७५।८
 बरनि न सकइ फनीस सारदा । ७-२१।६
 बरनै छबि अंस जग कबि को है । १-११।६
 बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा । १-२१५।५
 बरबस राति दिवस की नाई । २-१७१।६
 बरष घीच तहै रहउँ लोभाई । ७-७४।४
 बरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा । ६-५१।३
 बरषहिं सुमन करहिं कल गाना । १-२४५।८
 बरषहिं सुमन बजाइ निसाना । १-३१३।१
 बरषहिं सुमन सुमंगल दाता । १-३०१।४
 बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखहिं । ५-२२।६
 बरषि दिए मनि अंबर सबही । ६-११६।६
 बरषि प्रसून अपछरा गाई । १-२४७।५
 बरषि प्रसून प्रसंसन लागै । २-२४०।८
 बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू । १-३१२।८
 बरषि बान रघुपति स्थ तोप्यो । ६-१२।३
 बरषि सुमन कहि गति घर घर की । २-३२०।७
 बरषि सुमन जय जय सुर साई । १-८८।६

ब्रह्म अनादि मनुज करि माना । ७-१२३
 ब्रह्मगिरा मे गगन गभीरा । १-७३८
 ब्रह्मगिरा भइ गगन गभीरा । ७-११३५
 ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू । १-२१६४
 ब्रह्म जीव बिच माया जैसी । ३-६३
 ब्रह्म जीव बिच माया जैसैं । २-१२२१२
 ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती । १-११४
 ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी । ७-७१७
 ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूषा । १-१४०१२
 ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही । ६-२६१२
 ब्रह्म सकल उर अंतरजामी । १-१४१६
 ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं । ७-४१५
 ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू । १-६५४
 ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिंघाए । १-८४४
 ब्रह्मानंद मगन सब लोई । १-११३१२
 ब्रह्मानंद रासि जनु पाई । २-१०५८
 बरिआई बिमोह मन करई । ७-५८५
 बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा । १-२५४३
 बरु जामहिं सस सौस बिषाना । ७-१२११७
 बरु दुलहिनि बैठे एक आसन । १-३२४१०
 बरु द्विचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा । २-४७३
 बरु साँवरी जानकी जोगू । १-२४८६
 बल अनुमान सदा हित करई । ७-६५
 बल प्रताप बुधि तेज न ताकैं । ६-३०८
 बल बिलोकि बिहसति नहिं छाती । ६-३२४
 बवा सी लुनिअ लहिअ जो दीन्हा । २-१५५
 बस मारीच सिंधु तट जहवाँ । ३-२२७
 बसइ अनंद अवध सब तर तैं । १-३६०५
 बसइ अवध नहिं आन उपाएँ । २-११६

बसइ गरुड़ जाके उर अंतर । ७-१११२
 बसइ जासु उर सदा अबाधी । ७-११५६
 बसइ भगति जाके उर माहीं । ७-१११६
 बसउ मवनु उजरउ नहिं डरऊँ । १-७१४
 बसतु मनसि मम काननचारी । ३-१०१८
 बसन बिभूषन बिबिध बनाई । २-१६२१२
 बसन भरत निज हाथ बनाए । ७-१६६
 बससि सदा हम कहुँ परिपालय । ७-३३७
 बसहिं ग्यान रत मुनि संन्यासी । ७-२८५
 बसहिं निरंतर जे तेहिं ताला । ७-५६१
 बसहिं बिपिन सुम आश्रम जानी । १-२०५१२
 बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई । २-१३६४
 बसाहिं भवन जेहिं मातु भवानी । १-१८५
 बसहु जाइ सुरपति रजधानी । १-१५०८
 बसहु निरंतर जन मन कानन । ६-११४४
 बसहु बंधु सिय सह रघुनायक । २-१२७८
 बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका । ६-३३३
 बसहु राम नृप मम उर अंतर । ६-११४८
 बसहु सदा उर पुर सबही कैं । १-२३५३
 बसहु हृदयें श्री अनुज समैता । ३-१२१०
 बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ । २-१२३११
 बसिहि कल्प सत नरक निकेता । २-१८३७
 बसिहि सदा प्रसाद अब मोरैं । ७-११२११६
 बसे सुखेन राम रजधानी । २-३२१८
 बह समीप सुरसरी सुहावनि । १-१२४११
 बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे । २-३१०६
 बहु खग मृग तहैं गज पंचानन । ३-३२५
 बहु गज रथ पटाति असवारा । ६-८५३
 बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन । १-२०११

बहु प्रकार नृपनीति सिखाई । ४-११६
 बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी । ६-१२०८
 बहु प्रकार रविं मातु सँवारे । १-११८।१०
 बहु बनाव करि सहित समाजा । १-१३२।५
 बहुबिधि झीड़हिं पानि पतंगा । १-१२५।५
 बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं । ७-२७।६
 बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा । १-६२।८
 बहु बिधि बेट पुरानन्ह गाई । ७-३६।२
 बहुबिधि राम लोग समुझाए । २-८४।३
 बहुबिधि राम सासु सनमानी । १-३३६।२
 बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा । १-११०।८
 बहु मुख कर पग लोचन सीसा । १-२४१।१
 बहु संपति मागत सकुचाई । १-१४८।५
 बहुत उपाय किए छलु त्यागी । २-७७।१
 बहुत जनम के सुधि मोहि आई । ७-१४।३
 बहुत दिवस भए सहत कलेसू । २-२८९।५
 बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए । १-२१२।१
 बहुत भाँति दुखु पावा आपू । २-३१२।७
 बहुत भाँति महिपाल पटाए । १-३०४।५
 बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं । ४-२३।६
 बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं । ६-६७।७
 बहुतक बीर होहिं सत खंडा । ६-६७।५
 बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाय। १-१२७।६
 बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका । ७-३०।२
 बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा । ४-१।५
 बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा । १-२९।३
 बहुरि गाधिसुत कथा बखानी । १-३६०।१
 बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई । २-२४१।१
 बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं । ७-२५।६

बहुरि विभीषन प्रभु पहिं आयो । ६-१०४।६
 बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी । १-१०१।७
 बहुरि हरवि मुनिबर उर लाए । ३-१०।२२
 बहुरिअ सीय सहित रघुसाई । २-२६८।१
 बहे जात कह भइसि अधारा । २-२२।२
 बाघउ सनमुख गए न खाई । ६-६।१
 बाघत प्रीति न हृदयँ समाती । १-१०।६
 बाज गहागह अवध बघावा । २-६।३
 बाज झपट जनु लया लुकाने । १-२६७।३
 बाज सुराग कि गौडर ताँती । २-२४०।६
 बाजि चारि महि मारि गिरावा । ६-११।५
 बाजि बेषु जनु काम बनावा । १-३१५।८
 बाजे सकल जुझाऊ बाजा । ६-७७।७
 बाँझ कि जान प्रसव के पीरा । १-१६।४
 बाट परइ मोरि नाव उड़ाई । २-११।६
 बाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ । १-११।५
 बाढ़हिं असुर अघम अभिमानी । १-१२०।६
 बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला । १-२४।५
 बातें सरल सनेह सुहाई । २-१२१।४
 बादि बिरति बिनु ब्रह्म बिचारु । २-१७७।४
 बादि बिषादु करिअ तेहि लागी । २-१७३।१
 बादि मोर सबु बिनु रघुसाई । २-१७७।६
 बादि सुधादि असन जग माहीं । २-११९।१
 बाघक बधिक बिलोकि पराहीं । २-२६३।३
 बाँघा सिंधु इहइ प्रभुताई । ६-२७।१
 बाँघि कटक चहु पास फिराए । ५-५१।४
 बाँघि तुरग तरु बैठ महीसा । १-१५९।१
 बाँघे घाट मनोहर चारी । ३-३८।७
 बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु । ५-२६।५

बान बुंद मै वृष्टि अपारा । ६-८६।६
 बान संग प्रभु फेरि चलाई । ६-१०४
 बानर जूथ जाहु घुँ ओरा । ४-२१।६
 बानर मालु चपेटन्हि लागें । ६-३२७
 बानर मनुज जाति दुइ बारें । १-१७६।४
 बानर रूप धरें सुर कोई । ५-२५।४
 बानरराज दुबिट बलसीला । ६-१७।३
 बानी मधुर अमिज रस बोरी । २-१२७।२
 बानी सविनय तासु सोहाती । २-३०।४
 बाम दहिन दिसि चाप निर्धगा । ६-१०।५
 बाम विधातहि दूषन देहीं । २-२०।४
 बाम भाग आसनु हर दीन्हा । १-१०६।३
 बामन परसुराम बपु धरी । ६-१०९।७
 बायस इब सबही ते डरही । ७-१११।१४
 बायस बिसद चरित सब गाए । ७-६७।५
 बार अनेक भाँति बहु बरनी । १-२७३।६
 बार बार आरती उतारी । ७-११।६
 बार बार कुसुमाजलि छूर्ती । १-२६४।३
 बार बार पद पंकज गहेहू । २-१५०।६
 बार बार पद रज धरि सीसा । १-३०७।१
 बार बार प्रभु गात निहारहिं । ७-६।४
 बार बार प्रभु निज मुख गाई । ७-४१।१
 बार बार प्रभु पूछहु काहा । ६-७।८
 बार बार बड़ि बुद्धि बखानी । २-२३।१
 बार बार बिनवउँ प्रभु तोही । ७-६३।४
 बार बार भेटहिं महतारीं । १-३३६।६
 बार बार मोहि कहेउ महीपा । २-२८२।५
 बार बार मोहि लागि बोलावा । १-२७४।१
 बार बार सिसु चरनन्हि परहीं । १-१९३।५

बार बार हियँ हरामि दुलारी । १-३५३।४
 बारय तारय संसृति दुस्तर । ६-११४।६
 बारहिं बार पाय लै परहीं । २-१०।८
 बारहिं बार भूपवर बरनी । १-२९४।६
 बारि अघार मूल फल त्वागे । १-१४३।२
 बारि बिलोचन पुलक सरीरा । १-३४७।६
 बारि बिलोचन पुलकित गाता । १-२१४।७
 बारि बोधि इब गावहिं बेदा । ७-११०।६
 बारिद तपत तेल जनु बरिसा । ५-१४।३
 बारिधि पार गयउ मतिधीस । ५-२।५
 बाल केलि रस तेहिं सुख माना । १-११७।२
 बाल केलि सम विधि मति भोरी । २-२८१।२
 बालचरित बिलोकि हरषाऊँ । ७-७४।३
 बालचरित पुनि कहहु उदारा । १-१०९।५
 बाल जुबान जरठ नर नारी । १-२३१-६
 बाल दोष गुन गनहिं न साधू । १-२७४।५
 बाल बचछ जिमि धेनु लवाई । १-३३६।८
 बाल बृद्ध कहीं संग न लावहिं । ७-२।७
 बाल मराल कि मंदर लेहीं । १-२५५।४
 बाल मरालन्हि के कल जोटा । १-२२०।३
 बालक जानि करब नित नेहू । १-३३५।६
 बालक बचनु करिअ नहिं काना । १-२७८।२
 बालक सब लै जीव पराने । १-१४।५
 बालक सुत सम दास अमानी । ३-४२।८
 बालमीकि आश्रम प्रभु आए । २-१३३।५
 बालमीकि भए ब्रह्म समाना । २-१९३।८
 बालि कहा सुनु कृपानिधाना । ७-१।२
 बालि बधब इन्ह मइ परतीती । ७-६।१३
 बालि महाबल अति रनधीरा । ४-६।११

बालि सीस परसेउ निज पानी । ४-२११
 बालितनय अतिबल बाँकुरा । ६-१८७
 वाली रिपु बल सहै न पारा । ४-५३
 बास चले सुमिरत रघुबीरा । २-२०११
 बासर जाहिं पलक सम बीती । २-२५११
 बासु करौ कछु काल कुपाला । २-१२५६
 बासुदेव अपिंत नृप म्यानी । १-१५५१२
 बाहु बिभूषन सुंदर तेऊ । १-१४६७
 बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर । १-३२६७
 बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर । ७-७६१९
 बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी । ३-२११९
 बाहेर नगर परम रुचिराई । ७-२८७
 बिकट बंध मुख पंच पुरारी । १-२९९७
 बिकटानन बिसाल भयकारी । ५-५३६
 बिकल पुकारत आरत बानी । ६-६१२
 बिकल मयउ जिमि फनि मनि त्यागै । ६-७०५
 बिकल मनहुँ मारखी मधु छीने । २-७५७
 बिकल मीनगन जनु लघु पानी । १-३३३१२
 बिकल लोग सब लागे साथी । २-८२३
 बिकल हीन मनि फनिबर जैसें । ३-११९९
 बिगत बिकार जान अधिकारी । २-१२६५
 बिगतबेर बिचरहिं सब संगी । २-१३७१९
 बिगतमोह मन हरष बिसेषी । १-१३८१९
 बिगत सोक ए कोक अनेका । ७-३०८
 बिघ्न अनेक करइ तब माया । ७-११७६
 बिघ्न मनावहिं देव कुवाली । २-१०६
 बिघ्न मुक्ता दाम सुहाए । १-२८७३
 बिचरत अजिर जननि सुखदाई । ७-७५७
 बिचरत सबहि चुनौती दीन्हें । ३-३७१०

बिचलत सेन कीन्हि इन्ह माया । ६-४५१०
 बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा । २-१७८७
 बिछुरत त्रान न कीन्ह पयाना । ५-३०५
 बिजय बिभूति कहीं जग ताकें । ५-५१७
 बिंजन बहु गनि सकड न कोई । १-१७२१२
 बिंजन बिबिध नाम को जाना । १-३२८३
 बिटम ओट देखहिं रघुराई । ४-७८
 बिटम फूलि फलि तुन मुदुताहीं । २-३१०७
 बिडरि चले बाहन सब भागे । १-१४७
 बिदइ सुकृत जसु कीन्हैउ भोगू । २-१६०१२
 बिद्यकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू । १-२१२७
 बिद्यामान रघुकुल मनि जानी । १-२५२१२
 बिद्या अपर अबिद्या दोऊ । ३-१४७
 बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई । ७-१२५६
 बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दोन्ही । १-२०८७
 बिदा किए सब सानुज रामा । २-३१८७
 बिदा किए हरि हर सम जाने । २-३१८७
 बिदा होन हम इहाँ पठाए । १-३३५५
 बिदित कृपालहि गति सब नीकें । २-२९०७
 बिघवन्ह के सिंगार नबीना । ७-१८५
 बिघवा होइ पाइ तरुनाई । ३-४१९९
 बिधि अब सँवरी बात बिगारी । १-२६९७
 बिधि करतब पर किछु न बसाई । २-२०१८
 बिधि करतब उलटै सब अहहीं । २-११८१२
 बिधि करतबु कछु जाइ न जाना । २-५७७
 बिधि के लिखे अंक निज भाला । ६-२८१९
 बिधि गति बडि बिपरीत बिचित्रा । २-२८११९
 बिधि गति बाम सदा सब काहू । २-५४१२
 बिधि गति बिषम काल कठिनाई । २-२६६७

विधि ते डेवढ लोचन लाहू । १-३१६५
 विधि निधि दीन्ह लैत जनु छीने । २-११७७
 विधि निर्मित दुर्गम अति भारी । १-१७७१५
 विधि प्रपञ्च अस अचल अनादी । २-२८१६
 विधि प्रपञ्च गुन अदगुन साना । १-५७४
 विधि प्रपञ्च महीं सुना न दीसा । २-२३०८
 विधि बस कुमलि बसी जिय तोरें । २-३५१९
 विधि बस हटि अबिदेकहि भजई । १-२२१७
 विधि बिपरीत वरित सब करई । ६-९८१५
 विधि बिपरीत भलाई नाहीं । १-५११६
 विधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई । ७-११५
 विधि सन विनय करहिं मन माहीं । १-२४८१२
 विधि सब कीन्ह हमहि जो दाहिन । २-२२२५
 विधि सब विधि मोहि सनमुख आजू । २-४११९
 विधि हरि संभु नचावनिहारे । २-१२६१९
 विधि हरि हर बंदित पद रेनु । १-१४५१९
 विधिवत देस काल जिय जानी । ६-१०४१८
 विधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही । २-१६११५
 बिधु कर निकर बिनिंदक हासा । १-१४६१२
 बिधुबदनी भृगसावकनयनी । २-७७
 बिनती करउँ तात कर जोरें । २-१५१९
 बिनती सुनहु सदासिय मोरी । २-४३७
 बिनय करिअ सागर सन जाई । ५-४९१८
 बिनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागें । १-३०५१२
 बिनय विवेक बिरति बिस्तारक । ७-३४१५
 बिनय सप्रेम करत कर जोरी । २-१९४१६
 बिनय सुनत पहिचानत प्रीती । १-२७५५
 बिनय सुनहु प्रभु सारंगपानी । ६-११५१२
 बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी । २-१०३१३

बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी । २-२७२१५
 बिनहिं कहें मलि दीनदयाला । ५-३०१९
 बिनहिं प्रयास होहिं भव मंगा । ७-३२१८
 बिनहिं बिचार करिअ सुम जानी । १-७६१३
 बिनहिं बिचार बरइ हटि तेही । १-२४१७
 बिनु अघ अजस कि पावइ कोई । ७-१११७
 बिनु अघ तजी सती असि नारी । १-१०३७
 बिनु अधार मन तोषु न साँती । २-३१५१२
 बिनु अत्र दुखी सब लोग मरे । ७-१००११०
 बिनु औषध बिआधि विधि खोई । १-१७७७
 बिनु जल जारि करइ सोइ छारा । २-१६७
 बिनु जल बारिद देखिअ जैसा । ३-३४१६
 बिनु जागें न दूरि दुख होई । १-११७७१२
 बिनु तोरें को कुअँरि बिआहा । १-२४४१६
 बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू । १-९२७
 बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती । ७-८८७
 बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै । ६-१०१५
 बिनु प्रयास रघुनाथ दहाए । ४-६११२
 बिनु पहिचानि प्रानहु ते प्यारीं । १-३२११६
 बिनु पंखन्ह हम वहहिं उड़ाना । १-७७१६
 बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा । ३-२४१५
 बिनु बानी बकता बड़ जोगी । १-११७७१६
 बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही । २-२७४७
 बिनु मनि फनिक बिकल जेहि माँती । २-४२१८
 बिनु महि गंध कि पावइ कोई । ७-८९७
 बिनु मौलि धावत रूंड । ३-११११२
 बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू । २-८३६
 बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती । १-२४७
 बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी । ७-४४१५

बिनु सिय राम फिरब मल नहीं । २-२७१२
 बिनु सुधि लएँ करब का भ्राता । ४-२५२
 बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता । ५-६४
 बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया । ७-७७८
 बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा । २-१७७५
 बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा । ७-८८५
 बिनु हरि भजन न भव भय नासा । ७-८९८
 बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू । १-५२८
 बिपिन बसइ तापस कें साजा । १-१५७५
 बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी । २-६२२
 बिपिन सुहावन पावन देसू । २-२३४३
 बिपुल बरन पताक ध्वज नाना । ६-७८२
 बिपुल बार जेहिं मोहि नचावा । ७-५९४
 बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही । १-२७१७
 बिपुल बिसट निगमागम गाए । १-१२०१९
 बिपुल बीर आए रनधीरा । १-२५०८
 बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी । ७-२३५
 बिप्र कहहु निज कथा बुझाई । ५-५६
 बिप्र चरन देखत मन लोभा । १-१९८६
 बिप्र चरन पंकज सिरु नावा । ६-८९१९
 बिप्र चरन सेवक नर नारी । ७-२१७
 बिप्र जेबौइ देहिं बहु दाना । २-१२८७
 बिप्रद्रोह पावक सो जरई । ७-१०८१९४
 बिप्र घेनु हित संकट सहहीं । २-१३०१९
 बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाई । ७-१०४६
 बिप्र पूज्य अस गावहिं संता । ३-३३१९
 बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही । ४-११३
 बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी । १-२०७१२
 बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही । १-२७५६

बिप्र वृंद रघुबीर बोलाए । २-७१२
 बिप्रबेष गति लखइ न कोऊ । १-१३३१२
 बिप्र रूप आयउ तजि माना । ५-५७८
 बिप्रश्राप किमि होइ असाँचा । १-१७४७
 बिप्र संत सुर देखि दुखारे । १-१६९६
 बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई । १-२०२३
 बिप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा । २-२०२२
 बिबिध जतन करि ताहि जगावा । ६-६९६
 बिबिध दान महिदेवन्हि पाए । १-२११३
 बिबिध बस्तु को बरनै पारा । १-२१९७
 बिबिध बितान दिए जनु तानी । ३-३७१९
 बिबिध बेप देखे सब देवा । १-५३८
 बिबिध भाँति करि जतन बनाई । ७-२७१९
 बिबिध भाँति नित होइ लराई । १-१७४५
 बिबिध रूप भरतादिक भ्राता । ७-८०७
 बिबुध धारि मइ गुनद गोहारी । २-३६३
 बिबुध नदी महिमा अधिकाई । २-८६६
 बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका । २-१९४८
 बिबुध बैद भव भीम रोग के । १-३१३
 बिभव विलोकि लोकपति लाजे । १-३१८५
 बिमल जलासय बिबिध बिधाना । २-१९४४
 बिमल नयन सेवा सुधरम के । २-३१५७
 बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन । १-४२५
 बिमल बिराग सुभग सुपुनीता । ७-११६१९६
 बिमल बेदिका रुधिर सँवारी । १-२२३२
 बिमुख राम सुख पाव न कोई । ७-१२११९९
 बिमुख राम त्राता नहिं कोपी । ५-२२७
 बिरचत हंस काग किय जेहीं । १-१७४१२
 बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई । १-२२१६

बिरवी बिधि सँकलि सुषमा सी । २-२३६।५
 बिरचे कनक कदलि के खंभा । १-२८६।८
 बिरचेउ संमु सुहावन पावन । १-३४।९
 बिरति चर्म संतोष कृपाना । ६-४९।७
 बिरति बिबेक जोग बिग्याना । ७-९४।५
 बिरति बिरंघि प्रपंच बियोगी । १-२१।९
 बिरथ कीन्ह लंकेस कुमार । ५-१८।५
 बिरिदावली कहत चलि आए । १-२४८।७
 बिरह बिबेक धरम निति सानी । ६-१०८।३
 बिरहित बैर मुदित मन चरहीं । २-१२३।८
 बिरहु बिषादु बरनि नहिं जाई । २-१४३।९
 बिलगु न मानब जानि गवौरी । २-११५।७
 बिलपत लखन सीय सब रानी । २-२४६।५
 बिलपति अति कुररी की नाई । ३-३०।३
 बिलसत बेतस बनज बिकासे । २-३२४।३
 बिष रस मरा कनक घटु जैसें । १-२७७।८
 बिष्णु बिमुख श्रुति संत बिरौधी । ६-३०।३
 विष्णु बिरंघि देव सब जाती । १-९८।६
 बिष्णुभगत बिग्यान निधाना । १-१७५।५
 बिषय आस दुर्बलता गई । ७-१२१।१०
 बिषय बिमुख बिराग रत होई । ७-५३।२
 बिषय भोग पर प्रीति सदाई । ७-११७।१५
 बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही । २-८३।८
 बिषयें मोर हरि लीन्हैउ म्याना । ४-१८।३
 बिषया बन पावैं भूलि परे । ७-१३।८
 बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती । ७-१००।९
 बिस्व ग्रसिहि जनु एहि बिधि अर्पा । ६-६६।५
 बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा । ५-३८।७
 बिस्व बदर जिमि तुम्हरें हाथा । २-१२४।७

बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई । १-२६३।२
 बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही । १-२७१।६
 बिस्व बिमोहन रकेउ बिताना । १-२९६।४
 बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि । १-२३४।८
 बिस्व बेगि सब चौपट होई । १-१०९।५
 बिस्व नार भर अचल छमा सी । १-३०।१०
 बिस्व सुखद खल कमल तुसारु । १-१५।५
 बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी । ७-१२०।२९
 बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा । १-५७।६
 बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई । ७-५३।८
 बिस्वबास प्रगटे मगवाना । १-१४५।८
 बिस्वरूप ब्यापक रघुराई । ४-२१।४
 बिस्वामित्र निकट बैठाए । १-२९४।६
 बिस्वामित्र नृपहि बैठारा । १-२९४।३
 बिस्वामित्र महानिधि पाई । १-२०८।३
 बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी । १-७५।८
 बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई । १-४१।६
 बिसमय हरष न हियें कछु धरहु । १-१३६।२
 बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी । ६-१२।९
 बिसरि गयउ मोहि भोर सुगाऊ । २-२७।२
 बिसरी देह ताहिं मनु लागा । १-७३।३
 बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछ । ६-४९।७
 बिसरे हरष सोक सुख दुख गन । २-२३१।९
 बिहबल बचन पेम बस बोलहिं । २-२४४।७
 बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं । ७-७९।२
 बिहसा जगत बिदित अभिमानी । ५-३६।९
 बिहँसा जबहिं निकट कपि आए । ६-६८।८
 बिहसि उमा बोली प्रिय बानी । १-१०६।५
 बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा । ३-१७।१३

बिहसि कहा रघुनाथ गोसाईं । ६-१०४।१२	बुधि विवेक विग्यान निधाना । ४-२१।४
बिहसि कृपानिधि बोले बचना । ६-१।२	बुद्धि बिकल भइ विषय बतासा । ४-११४।१४
बिहसि गयाउ गृह करि मय भोरी । ६-५।१	बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई । ४-११४।१४
बिहसि चले कृपाल रघुराई । ६-४।१	बुझत कहहु काह हनुमाना । ४-३५।४
बिहसि निसाचर सेन बोलाई । ६-३१।२	बुझत बिकल परस्पर बाता । १-३३।२।१
बिहसि बचन कह कृपानिधाना । ६-८१।१	बुझत मरतु दिव्य सब देखी । २-३११।३
बिहसि बचन कह जुगुति बनाई । ६-१३।३	बुझेहु कुसल सखा उर लाई । ६-२०।८
बिहसि बचन तब अंगट कहई । ६-२०।४	बुझत कछु अघार जनु पाई । २-१४।८।१
बिहसे सिव समाज निज देखा । १-१२।६	बुझत लहेउ बाल अवलंबनु । २-२८।४।४
बिहसे सो सुनु चरित बिसेषा । ४-४८।४	बुद्धि न मरहु धर्म ब्रतधारी । ६-२१।६
बीचु पाइ निज बात सँवारी । २-१४।१	बुडे नृप अगमित बहु बारा । ६-२५।३
बीज सकल ब्रत धरम नेम के । १-३१।४	बुकु शिलोकि जिमि मेघ बरुखा । ६-६१।१
बीती अवधि काजु कछु नाहीं । ४-२५।१	बुंद बुंद बहु मुनिन्ह लगाई । ४-२८।६
बीते कल्प सात अरु बीसा । ४-११३।१०	बृष्टि होइ रुधिरापल छारा । ६-४५।१।१
बीते मनहुँ कल्प सत एका । ४-८१।१	बेगि करहु बन गवन समाजू । २-६४।४
बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले । १-११५।५	बेगि न हरहुँ मूढ कर प्राना । ५-२३।५
बीथी चौहट रुचिर बजारु । ४-२४।८	बेगि पाइअहिं पीर पराई । २-८।२
बीना बेनु संख धुनि द्वारा । २-३६।५	बेगि प्रिया परिहरहिं कुबेधू । २-२५।८
बीर धुरीन धरें धनु माथा । २-१८।१	बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी । २-६१।१
बीर बसंत सेन जनु साजी । ६-४।५	बेगि बिदेह नगर निअराया । १-२११।४
बीर बिहीन मही में जानी । १-२५।१३	बेगि बेदबिधि लगन धराई । १-१०।४
बीरमडु करि कोप पठाए । १-६।१	बेगिअ नाथ न लाइअ बारा । २-४।६
बुध कछु तिन्ह कर दोषु न धरहीं । १-६।५	बेद तत्त्व नृप तव सुत चारी । १-११४।१
बुध नहिं करहिं अघम कर संग । ४-१०५।१३	बेद धर्म रच्छक सुनु श्राता । ५-३८।४
बुध समाज बड़ अनुचित होई । १-२५।३	बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई । ४-१४।१
बुधि बल तेज धर्म गुन रासी । ६-१६।३	बेद पुरान उदधि घन साधू । १-३५।३
बुधि बल मरमु तोर में पावा । ५-१।१२	बेद पुरान प्रसंसहिं जाही । १-१४।१।४
बुधि बल सकिअ जीति जाही सों । ६-५।५	बेद पुरान बिदित जगु जाना । ४-३।३
बुधि विवेक बल समय बिचारी । ३-२६।१	बेद पुरान बिदित मनु गाए । २-२४।६

बेट पुरान साधु सुर साखी । २-२९८।७
 बेट पुरान सुमृति कर निंदा । ७-४७।६
 बेट पुरान संत मत भाषउँ । ७-११५।१
 बेट पुरान संत सब कहहीं । ३-४।११
 बेट बिदित जग प्रगट प्रभाऊ । २-२०३।६
 बेट बिदित तेहि दसरथ नाऊँ । १-१८७।७
 बेट बिदूषक परधन स्वामी । ७-३९।७
 बेट बिदूषक बिस्व बिरोधी । २-१६७।२
 बेट बिरचि महेस गनेसू । १-३५४।५
 बेनुमूल सुत भयहु घमोई । ६-१।३
 बेलि बिटप जिमि देखि टवारी । २-४५।७
 बेघ प्रताप पूजिअहिं तेऊ । १-६।५
 बेषु देखि भए निपट दुखारे । २-२६९।५
 बैखानस बटु गृही उदासी । २-२०५।१
 बैखानस बटु जती उदासी । २-२२३।४
 बैठ बात सब सुनउँ सचेतू । २-१७८।५
 बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा । ४-४।३
 बैठत पठए रिषयँ बोलाई । २-२५२।८
 बैठन सबहिं कहेउ गुर म्यानी । २-२४६।१
 बैठहिं गीध उड़ाइ सिरन्ह पर । ६-८५।१
 बैठहिं नगर लोग जहँ जाई । १-२२३।५
 बैठहिं रामु होइ चित चेत । २-१०।५
 बैठहिं समी संग द्विज सज्जन । ७-२५।१
 बैठाए समीप गहि पानी । २-३००।७
 बैठारे रघुपति गहि बाँहा । २-७६।५
 बैठि परसपर इहइ सिखावहिं । ७-२९।१
 बैठि बरासन कहहिं पुराना । ७-११।१
 बैठि मनहुँ तनु धरि नितुराई । २-४०।४
 बैठिअ होइहिं पाय पिराने । १-२७७।२

बेटे अनुज सहित रघुराया । ३-४०।२
 बेटे आसन रिषिहिं समेता । १-१२७।५
 बेटे कपि सब दर्म डसाई । ४-२५।१०
 बेटे निज निज जाइ समाजा । १-२५०।५
 बेटे प्रमु सेवहिं सब माई । ७-४९।६
 बेटे पुनि तट दर्म डसाई । ५-५०।७
 बेटे फटिक सिला पर सुंदर । ३-०।४
 बेटे बट तर करि कमलासन । १-५७।७
 बेटे राम द्विजन्ह सिरु नाई । ७-११।२
 बेटे सकल बस्तु ले नाना । १-२१२।३
 बेटे सब सुनि मुनि अनुसासनु । २-२५६।६
 बेटे सहजहिं संभु कृपाला । १-१०५।५
 बेटे हरषि रजायसु पाई । १-३५।११
 बेटे हृदयँ छाडि सब संग । ३-७।८
 बेटेहिं बीति गई सब राती । २-१६८।६
 बेटेहिं बीति जात निसि जामा । ५-७।७
 बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी । १-१३२।१
 बैद बंदि कबि मानस गुनी । ३-२५।४
 बैदेही की कुसल सुनाई । ७-६६।६
 बैमव बिपुल तेज बल होऊ । १-१३८।५
 बैर पेम नहिं दुरइ दुराएँ । २-२६३।२
 बैरु अंध प्रेमहिं न प्रबोधू । २-२९२।८
 बैरु प्रीति नहिं दुरई दुराएँ । २-१९२।१
 बोध जधारथ बैद पुराना । ३-४५।५
 बोलत खग मृग अलि अनुकूला । २-२७८।३
 बोलत बचन झरत जनु फूला । १-२७९।४
 बोलत मधुर उड़ात सुहाए । ७-२७।४
 बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं । २-११९।७
 बोलसि निदरि बिप्र के भोरें । १-२८२।५

बोला कपि मृदु बचन बिनीता । ५-१३८	बोलु सैंगारि अधम अभिमानी । ६-२५१
बोला चितइ राम की ओरा । ४-८४	बोले अति पुनीत मृदु बानी । १-४४६
बोला तापस कपट प्रबीना । १-१६०११	बोले अति सनेहमय बानी । १-२५३१५
बोला बचन क्रोध मद सानी । १-१८०४	बोले अंगदादि कपि नाना । ६-४४६
बोला बचन जोरि कर कीसा । १-१६१५	बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी । १-३२९१५
बोला बचन पाइ अनुसासन । ५-३०३	बोले गुर अनुसासन पाई । १-२९०४
बोला बचन बिगत अभिमानी । ५-३२६	बोले गुर सन राम पिरीते । २-२४०४
बोलि न सकहिं नयन बह नीरा । ४-२५७	बोले घन इव गिरा गैशीरा । ६-४४१२
बोलि न सकहिं प्रेमबस सासू । १-३३५७	बोले चर बर जोरें हाथा । २-२६९७
बोलि लिए जुबराज बिभीषन । ६-१००१३	बोले तब रघुबंस पुरोधा । २-२९५३
बोलि सुमंत्रु कहन अस तागे । २-८०५	बोले नारद दीनदयाला । १-१३८४
बोलि सूपकारी सब लोन्हें । १-३२७७	बोले प्रमु अति बचन सुहाए । १-४६८
बोली अति बिनीत मृदु बानी । ४-५१८	बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ । २-९१
बोली असुम भरी सुम छूछी । २-३४८	बोले परसुघरहि अपमाने । १-२००६
बोली कपट सनेहु जनाई । २-४२१	बोले पानि पंकरुह जोरी । २-३०६५
बोली गौरि हरखु हियँ भरेऊ । १-२३५६	बोले बचन परम सुखदायक । ४-८४१
बोली जुत बिबेक मृदु बानी । १-१६१५	बोले बचन प्रेम जनु जाए । १-३४०३
बोली देखि राम महतारी । २-५०७	बोले बचन बिनीत बिचारी । २-४४५
बोली परम मनोहर बानी । ६-५३	बोले बचन भगत भव भंजन । ४-४२२
बोली बचन धीर धरि भारी । २-५४७	बोले बचन भगत भयहारी । ५-४५३
बोली बचन नीति रस पागी । ५-३५५	बोले बचन मनुज अनुसारी । ६-६०१
बोली बचन बहुत मुसुकाई । ३-१६७	बोले बचन रोष जनु साने । १-२५०६
बोली बचन समय अनुसारी । २-१५३४	बोले बचन श्रवन सुखदाई । २-१२४६
बोली बिहसि नयन मुहु मोरी । २-२६८	बोले बानि सनेह सुहाई । २-३००२
बोली मधुर बचन तिय दूजी । २-२२१६	बोले बिहंसि कृपाल खरारी । ६-३०४
बोली मधुर बचन पिकबयनी । २-११६४	बोले बिहंसि रामु धनुषानी । ४-६१२२
बोली मधुर बचन महतारी । २-५१६	बोले बिहंसि रामु मृदु बानी । १-५२६
बोली मन क्रम बचन पुनीता । ६-१०८११	बोले भरत जोरि जुग पानी । २-१६६४
बोली सुर स्वास्थ्य जड़ जानी । २-२९४३	बोले भरतु धीर धरि भारी । २-२९२१

बोले मधुर बचन छल सानी । १-८८८
 बोले मधुर बचन धरि धीरा । २-१५०५
 बोले मुनि तन पुत्रकि सपेमा । २-३२२७
 बोले मृदुल बचन रघुराया । ६-११७३
 बोले रामु कमल कर जोरी । २-८१५
 बोले रामु जोरि जुग पानी । १-२७८११
 बोले शिषि लखि सीलु सँकोचू । २-२०५७
 बोले सत्य सरल मृदु बानी । २-२१५६
 बोले सत्य सहज बलु भाषी । २-२२८६
 बोले सब बरात सनमानी । १-३२५८
 बोले समउ समुझि मन माहीं । २-६०११
 बोले सहित सनेह गिरीसा । १-७०७
 बोले सिव सादर सुख पाई । ७-५४६
 बोलेउ अधिक सनेह जनाई । १-१६०७
 बोलेउ उमा परम अनुरागा । ७-१४११
 बोलेउ गरुड हरषि मृदु बानी । ७-११४१५
 बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा । १-१७६६
 बोलेउ राउ रहैसि मृदु बानी । २-३११
 बोलेउ श्रवन सुघा सम बानी । ७-१२२
 बोलेहु बचन दुष्ट की नाई । ३-२७११२
 बीरे बरहि लागि तपु कीन्हा । १-१६१२
 बंचक बिरचि बेष जगु छलहीं । २-१६७७
 बंदउँ तव पद बाराहिं बारा । ७-१२४४४
 बंदनीय जेहिं जग जस पावा । १-११६
 बंदि चरन कह कपि कर जोरी । ६-५१८
 बंदि चरन कह सहित सनेहा । ६-७१२
 बंदि चरन बोली कर जोरी । १-२३४४
 बंदि चरन बोले रुख पाई । २-२८१३
 बंटी बिरिदावलि उच्चरहीं । १-२६४४

बंधु न होइ मोर यह काला । ४-७७
 बंधु निघन सुनि उपजा क्रोधा । १-१८३
 बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू । २-१७
 बंधु बिलोकि कहन अस लागे । १-२३७६
 बंधु सदा तव मृदुल सुमाऊ । ६-६०३
 बंधु समेत धरें मुनिबेषा । १-१४०३
 बंधु समेत परेउ नृप धस्नी । १-१७४६
 बंधु सहित न त मारउँ तोही । १-२८०३
 बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई । ६-७१४
 बंस प्रसंसक बिरिद सुनावहिं । १-३१५६
 बंस सुमार्यै उतरु तोहिं दीन्हा । १-२८१२

भ

भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही । १-३८१
 भइ गति साँप छुछुंदरि केरी । २-५४३
 भइ जुग सरिस सिराति न राती । २-१५४३
 भइ तब बिमल बारि बर बानी । २-१०२४
 भइ बडि बार जाइ बलि मैजा । १-५२२
 भइ मृदु बानि सुमंगल देनी । २-२०४६
 भइ मृदु मूमि सकुचि मन मनहीं । २-३१०४
 भइ मृदु महि मगु मंगल मूला । २-२१५८
 भइ रघुबंस बेनु बन आगी । २-४६४
 भइ सरजू अति निर्मल नीरा । ७-२१०
 भइ सहाय सारद मै जाना । १-५४३
 भइउँ सरोज बिपिन हिमराती । २-१११
 भइन्ह धन्य जुबती जन लेखें । २-२२२३
 भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला । २-२०७४
 भई सकल सोभा कै खानी । ७-२११
 भई सभय जब नाम सुनावा । ३-२७१३

मई सनेह बिकल सब रानी । २-२८२।८
 मई सनेह सिथिल सब रानी । १-३३६।५
 मई समीत निसावर नारी । ५-२४।९
 मई हृदय हरषित सुख भारी । १-१८९।५
 मए अकंटक साधक जोगी । १-८६।८
 मए अनेक धीर नुनि ग्यानी । १-७४।९
 मए अलेख सोच बस लेखा । २-२९३।८
 मए उपल बोहित सम तेई । ६-२।८
 मए कामबस समय बिसारी । १-८४।४
 मए घरावर जीव दुखारी । ३-२८।६
 मए जग जनभि जनकपुर बासी । १-३०९।४
 मए दुखी मन महुँ पछिताने । ६-५९।२
 मए देव सकल सनाथ । ६-११२।४
 मए देव सुख संपति शीते । १-८१।६
 मए नखत जनु बिधु उजिजारी । १-३१३।७
 मए नाम जपि जीव बिसोका । १-२६।९
 मए निसावर कालहि पाई । १-५३।८
 मए निसावर धीर घनेरे । १-७४।५
 मए पच्छजुत मनहुँ गिरिदा । ५-३४।३
 मए प्रगट जंतु प्रचंड । ६-१००।९
 मए प्रबल रन रहहि न रोके । ६-५१।८
 मए परम पद के अधिकारी । २-१३।८
 मए प्रसन्न चंद्र अवतंसा । १-८४।६
 मए प्रेम बस बिकल विसेषी । २-२९।५
 मए बहुत जब ते प्रभु आए । ४-१२।२
 मए बहुरि सिसुस्म खरारी । १-२०।६
 मए बिकल जस प्राकृत दीना । ३-२९।६
 मए बिकल मुख आव न बाता । १-७२।८
 मए बिगतश्रम परम सुखारे । ६-४।२

मए बिगतश्रम बानर तबही । ६-४४।२
 मए मगन मन सके न रोकी । ७-३२।२
 मए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ । १-२५।७
 मए मोहबस सब नरनाहा । १-२४।७
 मए माहि एहिं आश्रम जाएँ । ३-११।२
 मए राम सब बिधि सब लायक । २-२।९
 मए रूप गुन सील घनेरे । ७-२४।८
 मए सकल बीर अचेत । ६-१००।१०
 मए समीत सकल कपि जाने । ६-५१।६
 मए समर सागर कहै बेरे । ७-४।७
 मए सुकृत सब सुफल हमारे । २-१२।९
 मए सुखी जनु लखनु निहारी । २-११।६
 मए सोचबस सोच बिमोचन । २-२२।६
 मएसि कालबस खल मनुजादा । ६-३२।६
 मएसि कालबस निसिचर नाहा । ३-२४।९
 मए बिधि बिमुख बिमुख सब कोऊ । २-१८।२
 मक्त हेतु लीला बहु करहीं । ७-४।२
 मवित विवेक धर्म जुत रचना । १-७६।५
 मवित हीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ । ७-४।४
 मगत अमगत हृदय अनुसारा । २-२९।५
 मगत प्रेम बस सगुन सो होई । १-११।२
 मगत बछल कृपाल रघुराई । ७-१०।५
 मगत बछलता हियें हुलसानी । १-२९।३
 मगत बिपति भंजन सुख दायक । १-१४।१०
 मगत बिरह दुख दुखित सुजाना । १-७५।२
 मगत सिरोमनि भे प्रह्लाद । १-२५।४
 मगत सुखद मृदु बचन उचारे । ७-१५।३
 मगत हेतु लीलातनु गहई । १-१४।३
 मगत होहिं मुद मंगल बासा । १-२३।२

भगति आपनी देन न कही । ७-८३४
 भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई । १-१०७
 भगति प्रताप तेज बल सानी । १-१६१
 भगति बिबेक बिरति नय सानी । १-२३१
 भगति बिरति गुन बिमल बिभूती । २-३२४
 भगति बिरति न ग्यान मन माहीं । ३-९६
 भगति बिरति नृपनीति बिदेका । ४-१२७
 भगति मोरि तेहि संकर देइहि । ६-२३
 भगति मोरि पुरान श्रुति गाई । ७-४४
 भगति मोरि मति स्वामि सराही । १-३८
 भगति सुभायै सुमति हियै हुलसी । २-३०२
 भगति होइ सुनि अनपायनी । ७-११५
 भगिनी मिली बहुत मुसुकाता । १-६२
 भजत कृपा करिहहि रघुराई । १-११९
 भजन प्रभाउ देखावत सोई । १-२२४
 भजन प्रभाउ नाँति बहु भाषा । १-१२२
 भजनु मोर तेहि भाव न काऊ । १-४३
 भजसि न कृपासिधु रघुराई । ६-२६
 भजहिं जे मोहि तजि सकल नरोसा । ३-४२
 भजहिं नारि पर पुरुष अमागी । ७-१८
 भजहिं मोहि सुर नर मुनि नायक । ७-४०
 भजहिं मोहि संसृत दुख जाने । ७-४०
 भजहु कृपानिधि परम सनेही । ६-४८
 भजहु न रामहि सो फल लेहु । ६-४३
 भजहु नाथ ममता सब त्यागी । ६-६५
 भजहु राम बिनु हेतु सनेही । १-३८
 भजहु राम होइहि कल्याना । ६-६२
 भजिअ न रामहि नर तनु पाई । ७-१११
 भजिअ राम सब काम बिहाई । ४-२२

मजी तुम्हहि सब देव बिहाई । ३-५७
 भजेहु राम सोभा सुख सागर । ६-६३
 भजेइहं भवानीपति भावगम्यं । ७-१०७
 भजे मोहि मन बच अरु काया । ७-८६
 भजति मुक्तये मुदा । ३-३१
 भजति हीन मत्सराः । ३-३१
 भजतीह लोके परे वा नराणां । ७-१०७
 भट अतिकाय अकंपन भारी । ६-६१
 भट मुहुं प्रथम लीक जग जासू । १-१०७
 भटमानी अतिसय मन माखे । १-२४
 भनिति भगति नति गति पहिचानी । १-२७
 भय अबिबेक असौच अदाया । ६-१५
 भय ब्याकुल सब भए बिसेषी । ६-३४
 भय बस अगहुड परइ न पाऊ । २-२४
 भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ । १-५५
 भय बिषाद परिताप घनेरे । २-६५
 भय भंजनि भ्रम भेक भुआगिनि । १-३०
 भय भ्रम भवैर जबर्त अपारा । २-२४
 भय संकोच प्रेम रस सानी । १-६०
 भयउ क्वाल कालु बिपरीता । २-५६
 भयउ कुअबसर कठिन संकोचू । २-२९
 भयउ कुठाहर जेहिं बिधि बामू । २-३५
 भयउ कौपु कपेउ त्रैलोक्य । १-८६
 भयउ कंत पर बिधि बिपरीता । १-३६
 भयउ गहरु सब कहहिं समीता । १-२३
 भयउ जयाथिति सबु संसारु । १-८५
 भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा । १-४८
 भयउ दुखित सुनि सकल समाजू । २-२०
 भयउ न मुअन मरत सम भाई । २-२५

भयउ न हे कौउ होनेउ नार्हीं । १-२१३/५
 भयउ निसाचर सहित समाजा । १-१७५/१
 भयउ परब बिनु रवि उपरागा । ६-१०१/१
 भयउ परम लघुरूप तुरंता । ५-२४८
 भयउ पुनीत आजु यहु गेहू । २-८७
 भयउ पेमु परितोषु बिसेषी । २-२८६/१
 भयउ प्रेम बस हृदयँ बिषादू । २-८९/५
 भयउ बहोरि रहव दिन चासे । २-२७२/२
 भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी । २-९८/३
 भयउ बिकल बड़ बनिक समाजू । २-८५/३
 भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी । ५-२९४/८
 भयउ विभय बिनु तबहिँ जनागा । ५-४९/३
 भयउ विमात्र बंधु लघु तासू । १-१७५/४
 भयउ बिलंबु मातु भय मानी । १-२३३/७
 भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू । २-२८५/५
 भयउ मोरु निसि लो सुख बीती । २-३१०/१
 भयउ मनहुँ मारुत अनुकृता । २-२४८/२
 भयउ मृदुल चित सिंधु बिभारा । ५-५२/७
 भयउ मोहबस तुम्हरिहिँ नाई । ७-५८/२
 भयउ रमापति पट अनुसागा । १-१२४/३
 भयउ रोषु रन रावनु मारा । १-४५/८
 भयउ लान बड़ गड़ बड़ि हानी । २-७२/२
 भयउ सकल मख हाहाकारा । १-६३/८
 भयउ सनेह सिधिल मुनिराऊ । २-२९०/५
 भयउ सपरिजन बिकल निषादू । २-९५/३
 भयउ समय सम सबहिँ सुपासू । २-२२०/१
 भयउ सुद्ध करि उतटा जापू । १-१८/५
 भयउ सो कुंभकरन बलधामा । १-१७५/३
 भयउ हृदयँ मन संसय भारी । ७-६८/१

भयउँ आजु में पूरनकाजा । १-३२९/६
 भयउँ एक में इन्ह के लेखें । ६-१६/५
 भयउँ जथा अहि दूध पिआरें । ७-१०५/६
 भयउँ भ्रमित मन मोह बिसेषा । ७-८९/८
 भयउँ भागमाजन जन लेखें । २-८७/५
 भयउँ भुवन भूषन तबही तें । २-१९५/२
 भयहु तात निसिचर कुल भूषन । ६-६३/८
 भयहु तात मो कहुँ जलजाना । ५-९३/२
 भरत आगमनु सूधक अहहीं । २-६/५
 भरत कथा भव बंध विमोचनि । २-२८७/३
 भरत कहाउति कही सुहाई । २-२१५/४
 भरत गए जहैं प्रमु सुख रासी । ७-६४/६
 भरत दरस भेटा भव रोगू । २-२९६/२
 भरत दोसु नहिँ राउर मोहू । २-२९९/२
 भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे । २-२८८/७
 भरत प्रनाम करत रघुनाथा । २-२३१/७
 भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ग्यानो । २-२६२/३
 भरत प्रानप्रिय मे सबही के । २-१८४/२
 भरत प्रान सम मम ते प्रानी । ७-३७/४
 भरत बंधन सुनि भयउ उछाहू । २-३०८/२
 भरत बौलाए सचिव सुजाना । २-१८६/२
 भरत भगति बस भइ मति मोरी । २-२५७/७
 भरत भगति सब कै मति जंत्री । २-३०२/२
 भरत भारती मंजु मराली । २-२९६/८
 भरत मुआल होहिँ यह सौबी । २-२०/७
 भरत नूप दल कीन्ह पयाना । २-३११/६
 भरत भूमि रह राउरि राखी । २-२६३/१
 भरत भूमिसुर तेरहुति राजू । २-३१२/१
 भरत राम आरस अनुसारी । २-२९१/१

भरत सनेहँ बिचारु न राखा । २-२५७।६
 भरत सनेहु सीलु सुवि सौँचा । २-२०५।२
 भरत सनेहु सीलु सेवकाई । २-१४०।४
 भरत सरिस बय राजकुमारा । १-२९७।७
 भरत सौधु सबही कर लीन्हा । २-१९७।१
 भरत हमहि उपचार न थोत्त । २-२२८।७
 भरत हाथ सबु काजु अकाजू । २-२१५।१
 भरतु कहे महुँ साधु सयाने । २-२२६।५
 भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं । २-३२५।२
 भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा । २-१९२।६
 भरतहि चितवत एक टक टाढ़ा । २-१९४।५
 भरतहि जानि राम परिछाहीं । २-२६५।४
 भरतहि देखि जनम फलु लहहीं । २-२२३।६
 भरतहि निरखि हरषु हियँ लहहीं । २-२१६।६
 भरतहि मिलिअ न होइहि सारी । २-१९१।५
 भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ । ७-३५।७
 भरतहि रामु करहुँ जुबराजा । २-२७२।७
 भरतहि समर सिखावन देखै । २-२२९।३
 भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे । ७-७।८
 भरतागवन प्रेम बहु बरना । ७-६४।५
 भरद्वाज मुनि अति सुखु पावा । १-१०३।१
 भरद्वाज मुनिबर पहिँ आए । २-२०५।३
 भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई । १-२९।१
 भरद्वाज मुदु बचन उचारे । २-१०६।४
 भरद्वाज राखे पद टेकी । १-४४।४
 भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी । ५-२१।८
 भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर । ६-११४।३
 भ्रम बस बेधु सीय कर लीन्हा । १-१७।८
 भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा । ७-१०६।४

भ्राजत भाल तिलक गौरोचन । ७-७६।५
 भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए । ७-३५।१
 भ्राता चरन सीसु तेहिँ नावा । ५-३७।२
 भ्राता पिता पुत्र निज जैसेँ । ३-४।१३
 भरि आए जल राजिव नयना । ५-३१।१
 भरि पूरि रही समता बिगता । ७-१०१।७
 भरि भरि कौँवरि चले कहारा । १-३०४।६
 भरि भरि भार कहारन्ह आने । २-१९२।३
 भरि लोचन छबि लेहु निहारी । १-२४५।३
 भरी क्रोध जल जाइ न जोई । २-३३।२
 भरी प्रमोद मातु सब सोहीं । १-३४९।५
 भरे भुवन धुनि घोर कटोरा । १-२६०।८
 भरेउ बहोरि भयउ तेहिँ खारा । ६-०।३
 भल मूलिहु ठग के बौराएँ । १-७८।७
 भलि बनाइ बिधि बाल बिगारी । २-७५।३
 भली भौँति पछिताब पिताहूँ । १-६३।२
 भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा । २-१५।२
 भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई । १-६।२
 भव तरिहहिँ ममता मद त्यागी । १-१५१।३
 भव ताप मयाकुल पाहिँ जर्न । ७-१३।१
 भव निधि तर नर बिनहिँ प्रयासा । ७-५४।१
 भव बारिधि गोपद इव तरहीं । १-१९८।४
 भव बंधन काटहिँ नर ग्यानी । ५-१९।३
 भव भय भंजन नाम प्रतापू । १-२३।६
 भव रोग महागद मान अरी । ७-१३।१८
 भवदधि निरादर के फल ए । ७-१३।१
 भवन चलेउ निरखत मुज बीसा । ६-९।६
 भवननि पर सोमा अति पावत । ७-२७।५
 भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा । १-१६।१

भवहि समरपीं जानि भवानी । १-१००।२
 भवान्भुनाथ मंदरं । ३-३।३
 भवैर कुबरी बचन प्रचारा । २-३३।३
 भवैर तरंग मनोहरताई । १-३१।८
 भा कुठारु कुंठित नृपधाती । १-२७।११
 भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू । २-२०६।४
 भा निषाद तेहि समय बिदेहू । २-१९७।४
 भा निषाद तेहि समय बिदेहू । २-२३३।८
 भा प्रमोदु मन मिटी गलानी । २-२१९।३
 भा भिनुसार गुदारा लागा । २-२०१।७
 भा मनु मगनु मिले जनु रामू । २-१९६।४
 भा मिथिलेसहि हृदयें हरींसू । २-२७०।४
 भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू । २-४१।७
 भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता । २-१६४।७
 भा सबु बिकल बिषाद बिसेषी । २-२८५।२
 भाइन्ह सहित चले रघुसाई । १-३३६।४
 भाइन्ह सहित मरत पुनि आए । ७-१८।६
 भाइन्ह सहित राम कल्याना । १-३५०।२
 भागि चलहिं एक लातन्ह मारी । ६-१७।५
 भागि पैठ गिरिगुहँ गभीरा । १-१५६।७
 भागी तुरत तजौ यह सैला । ४-०।५
 भाजन ललित अनेक प्रकारा । १-३०४।१
 भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए । १-३२।७
 भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना । ७-१८।७
 भाँति भाँति बहु मोल न थोरे । १-३२५।३
 भाथीं बीधि चढ़ाइन्हि धनहीं । २-१९०।४
 भानु जान सोभा अपहरहीं । १-२१८।४
 भामिनि भइहु दूध कइ माखी । २-१८।७
 भामिनि राम सपथ सत मोही । २-२५।६

भायप भगति भरोस मलाई । २-२८२।३
 भाल तिलकु रुचिरता निवासा । १-३२६।१
 भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा । १-२६७।४
 भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी । ६-१७।१
 भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई । ७-११६।११
 भाव भगति आनंद अघाने । २-१०७।१
 भावइ मनहि करहु तुम्ह सोई । १-१३६।१
 भावति हृदय जाति नहीं बरनी । १-२४२।३
 भाविउ मेँटि सकहिं त्रिपुरारी । १-६९।५
 भावी बस न आव मुख बानी । १-१७२।८
 भावी बस न प्यानु उर आवा । १-६९।७
 भावी बस न जान कछु राज । १-१६९।८
 भाषीं जिन्ह हरि चरित बखाने । १-१३।५
 भास सत्य इव मोह सहाया । १-१९६।८
 भिन्न बिष्णु सिव मनु दिसित्राता । ७-८०।१
 भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा । ६-५३।२
 भिरे जुगल मानहुँ गजराजा । ५-१८।७
 भीतर बसहिं न जानहिं आना । ३-१२।७
 भीर प्रतीति प्रीति करि हौंती । २-३०।५
 भुईं भइ कुमति कैकई केरी । २-२२।५
 भुज प्रताप बल तेज बिसाला । १-८१।५
 भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा । १-१०५।६
 भुज बिसाल गहि हृदयें लगावा । १-४५।२
 भुजगराज मूषन सुरनाथा । १-१०८।८
 भुजबल अतुल अचल संग्रामा । १-१५२।६
 भुज बल अतुल जासु जग लीका । ६-३७।६
 भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं । ५-४०।४
 भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला । ६-७।३
 भुजदंड प्रबल प्रताप । ६-११२।१

भुजन्हि समेत सीस महि पारे । ६-५११०
 भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी । २-२९८७
 भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ । २-९७३
 भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ । २-१७२५
 भुवनेस्वर कालहु कर काला । ५-३८१५
 भूख न बासर नीट न जामिनि । २-२०६
 भूख न बासर नीट न राती । २-२१११
 भूत पिसाध बधू नम नंचहिं । ६-८७७
 भूतद्रोह तिष्ठइ नहिं सोई । ५-३७७
 भूतल परे मुकुट अति सुंदर । ६-३१५
 भूतल परे लकुट की नाई । २-२३९१२
 भूप गयउ जहैं भोजन खानी । १-१७३६
 भूप द्वार स्थु देखन आए । २-१४६६
 भूप पहुनई करन पठाई । १-३०५८
 भूप बिदेकी परम सुजाना । १-१५५१
 भूप बोलि पटए मुनि ग्यानी । १-१९६१२
 भूप भरत जस पिता तुम्हारा । २-१७२६
 भूप भीर नट मागध भाटा । १-२१३११
 भूप राजु तजि होहिं बिरागी । ६-६६
 भूप सुजस खल मोहि सुनावा । ६-२७५
 भूप सुभंगल बचन सुनाए । २-४१२
 भूप सुसेवित बस नहिं लेखिअ । ३-३६८
 भूप सुहृद सो कपट सयाना । १-१५१५
 भूप सोक बस उतरु न टीन्हा । २-४५५
 भूप सोच कर कवन प्रसंगू । २-२१०७
 भूपकिसोर देखि किन लेहू । १-२३३१२
 भूपति बिहसि गोद बैठाए । १-२०२१९
 भूपति भली भाँति सनमाने । १-३५२७
 भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ । २-१५१२

भूपति संग द्वार पगु धारे । १-३५७८
 भूमि बिबर एक कौतुक पेखा । ४-२३५
 भूमि सहित मन कहूँ विश्रामा । १-१८७११
 भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी । १-३५४६
 भूरि कृपा प्रमु दूरि सनेही । ३-२८४
 भूरिभाग को तुम्हहि समाना । २-२०७११
 भूरि भाग दसरथ सम नाहीं । २-१४४
 भूलि न देहिं कुमारग पाऊ । ३-४५६
 भूलेहुँ संगति करिअ न काऊ । ७-३८११
 भूषन बसन निछावरि कीन्हे । २-५१२
 भूषन बसन बेष सुटि सार्दें । २-२२०६
 भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए । २-७११
 भूषन बहु पट पीत अनूपा । ३-३१११
 भूषन रजहि मनोहर गाता । २-२५७
 भूकुटि बिलोकत सकल समीता । ५-११७
 भूकुटी बिकट मनोहर नासा । १-२४२५
 भृगुपति गए बनहि तप हेतू । १-२८४७
 भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे । १-१२४
 भे अति बिकल धीर धुर धारी । २-२४६४
 भे न भाइ अस अहहिं न होने । २-१९१११
 भे निसोच उर अपडर बीता । २-२४१६
 भे प्रमोद परिपूरन गाता । २-२५५४
 भे पुनीत पातक तम तरनी । २-२४७११
 भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू । २-७५११
 भे सनेहैं सब अंग सिथिल तब । २-१९६११
 भे सब लोक सोक बस बौरा । २-२७०११
 भे सब सोच सनेहैं बिकल अति । २-२७११२
 भे सुर सुरपति निपट निरासा । २-२६४४
 भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा । ४-३७

मेंटेल रामभद्र भरि बाहू । २-११५४७
 भेट भगति बाटइ बिहंगबर । ७-७८१३
 भेरि डोल दुंदुभी सुहाई । १-२६२११
 भेरि संख धुनि हय गय गाजे । १-३४३११
 भे अकासबानी तेहि काला । १-१७२१५
 भे गलानि मोरें सुत नाहीं । १-१८८१५
 भे बकसीस जाचकन्ह दीन्हा । १-३०५१३
 भे बहोरि बर गिरा अकासा । १-१७३१४
 भे मोहि कारन सकल उपाधी । २-१८२१३
 भे मंथरा सहाय बिचारी । २-१५१११
 भे लरिकहि रिस बीरु बिचारी । १-२८११५
 भे सुखमूल मनोहर जामिनि । १-३५४१५
 भोजन करत देख सुत जाई । १-२००१४
 भोजन सयन केलि लरिकई । २-११५
 भोजन साजु न जाइ बखाना । १-३३२१४
 भोरु भएँ रथ चढ़ि पुनि घावा । ६-११११९
 भंजब धनुषु राम सुनु राने । १-२५६१२
 भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा । ७-६५१२
 भंजेउ राम संभुधनु भारी । १-२६११८
 भंजेउ रथ सास्थी तुरता । ६-५३१४

म

मकर उरग झष धरि धरि खाहीं । ६-४६१८
 मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृंदा । १-४४१२
 मय गृह गलीं सँवास्न लागे । १-२१५१४
 मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही । ५-१४१८
 मगन मए हरि रूप निहारी । ६-३१८
 मगन सनेहें देह सुधि नाहीं । २-२४११५
 मगन होहिं तुम्हरेँ अनुरागा । २-२०७१५

मगहँ गयादिक तीरथ जैसे । २-४२१७
 मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा । १-११३१८
 मज्जनु करिअ समर श्रम छीजै । ६-११११५
 मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा । ३-४०११
 मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर । ७-२८१३
 मत अति नीक कहइ सबु कोई । १-८२१७
 मत हमार अस सुनहिं सयानी । १-१२०१३
 मत मंजु बर कुंजर गामी । १-२५४१५
 मति अकुठ हरि भगति अखंडा । ७-६२११
 मति अनुमानि निगम अस गावा । १-११७१४
 मति अनुरूप अनूप सुहाई । ३-०११
 मति अनुरूप कहउँ हित ताता । ५-३७१४
 मति अनुरूप राम गुन गावउँ । १-१११९
 मति गति बाल बचन की नाई । २-३०२१८
 मति थोरि कठोरि न कोमलता । ७-१०११२
 मतिभ्रम तोर प्रगट मै जाना । ५-२३१४
 मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा । १-२००१७
 मति मोरि बिभेदकरी हरिरे । ६-११०११९
 मति हमारि असि देहि सुहाई । १-२४८१३
 मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसे । ६-४४१८
 मथै पानि पंकज निज मारु । १-२४६१८
 मय मार मुधा ममता समनं । ६-११०११४
 मदन दहन सुनि अति दुखु पावा । १-१०११
 मदन सकुन जनु नीड़ बनाए । १-३४५१६
 मदादि टोष मोचनं । ३-३१४
 मध्य दिवस जिमि ससि सोहई । ६-३४१४
 मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी । २-२४१११
 मधुकर सरिस संत गुनग्राही । १-११६
 मधुप निकर कोकिला प्रवीना । ३-२१११०

मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ।३-१३।
 मधुबन के फल सकहिं कि खाई ।५-२८।
 मधुर बचन तब बोलेउ कागा ।७-६२।
 मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ।९-१२।
 मधुर मनोहर बचन उचारे ।९-२९०।
 मधुर मनोहर मंगलकारी ।९-३५।
 मधुर मुखर गुंजत बहु मृंगा ।३-३१।
 मधुर मंजु मुद मंगल करनू ।२-३२५।
 मन अनुमान करन तब लागेउ ।७-८३।
 मन अस रहन कहहिं मोहि रामा ।७-९८।
 मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ।२-७४।
 मन क्रम बचन धर्म अनुसारेहू ।७-९९।
 मन क्रम बचन विप्र पद पूजा ।७-४४।
 मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ।३-१५।
 मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा ।३-२२।
 मन क्रम बचन राम अनुरागी ।२-१०९।
 मन क्रम बचन राम पद नेहा ।७-९५।
 मन क्रम बचन राम पद नेहू ।२-९२।
 मन क्रम बचन सत्य ब्रतु एहू ।९-५८।
 मन जोगवत रह नृपु रनिवासू ।९-३५१।
 मन तन बचन तजे तिन तुरी ।२-३२३।
 मन तन बचन भगत तै मोरा ।९-१६७।
 मन धरि धीर कही मृदु बाता ।५-४४।
 मन प्रसन्न निर्मल नम आसा ।६-११८।
 मन बच क्रम मम भगति अमाया ।७-३७।
 मन बुधि चित अहमिति बिसराई ।२-२४०।
 मनभावती असीसै पाई ।९-३७७।
 मनभावतो धेनु पय खवहीं ।७-२२।
 मन मति रंक मनोरथ राऊ ।९-७६।

मन महीं होइ हरष अति भारी ।७-८२।
 मन महुँ चरन बंदि सुख माना ।३-२७१।
 मन महुँ रामहि सुमिर सयानी ।९-५८।
 मन मुसुकाहिं रामु सिर नाएँ ।९-२८०।
 मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ।९-२९५।
 मन मोटकन्हि कि भूख बुताई ।९-२४५।
 मन संभव दारुन दोष हरं ।६-११०।
 मन हरषित सब भए सुखारे ।६-३७।
 मनसा बिस्व द्विजय कहैं कीन्ही ।९-२२९।
 मनसिज करि हरि जन सुखदातहिं ।७-२१६।
 मनहु अनल आहुति घृत परई ।२-३२।
 मनहुँ इंद्रधनु उए सुहाए ।६-८६।
 मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ।२-२७५।
 मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ।२-७३।
 मनहुँ कमल बन परेउ तुसारू ।२-२६२।
 मनहुँ कृपन धन रासि गवौई ।२-१४३।
 मनहुँ क्रोध बस जगित नहौं ।९-१५५।
 मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ।२-३४३।
 मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ।२-१७।
 मनहुँ जरे पर लोनु लगावति ।२-१६०।
 मनहुँ दीन मनिहीन मुअंगु ।२-३१।
 मनहुँ निसान बिबिध बिधि बाजहिं ।२-२३५।
 मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारे ।९-३४६।
 मनहुँ बलाक अवलि मनु करवहिं ।९-३४६।
 मनहुँ बिबुध बन परिहरि आए ।२-१३६।
 मनहुँ बीर रसु धरें सरीरा ।९-२४०।
 मनहुँ बीररस सोवत जागा ।२-२२९।
 मनहुँ भयानक मूरति भारी ।९-२४०।
 मनहुँ मनोमर्द फंद सँवारे ।९-२८८।

मनहुँ मनोहरता तन छाए । १-२४०।१
 मनहुँ महा बिरही अति कामी । ३-२९।१६
 मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना । २-४०।२
 मनहुँ मोनगन नव जल जोगा । २-२९।३।५
 मनहुँ मुदित दव लाइ किराती । २-१५।१५
 मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से । २-११५।३
 मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू । २-५३।३
 मनहुँ रोष तरवारि उघारी । २-३०।१
 मनहुँ रंक निधि लूटन लागी । १-२११।२
 मनहुँ सकल मंगल कहि देई । १-३०२।२
 मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल । १-२२१।४
 मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी । २-१५०।८
 मनहुँ सरोबर तकेउ पिआसे । १-३०६।८
 मनहुँ सौंझ सरसिज सकुवाने । १-३३२।२
 मनहुँ सौंझ सरसीरुह सोना । १-३५०।१
 मनहुँ सिखिनि सुनि बारिद बानी । १-२१४।३
 मनहुँ सुमग सावन घन राजी । १-२१९।२
 मनि गन बसन बिमान भरायो । ६-११६।३
 मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी । १-१३४।५
 मनि बिनु फनि करिबर कर हीना । ६-६०।९
 मनि बिनु फनिकु जिऐ दुख टीना । २-३२।१
 मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू । २-१५३।१
 मनिमय आलबाल कल करनी । १-३४३।८
 मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी । १-२१२।२
 मनिमय बिबिध भाँति अति रूरी । २-०।३
 मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं । ६-११६।१०
 मनि मुदरी मन मुदित उतारी । २-१०१।३
 मनि सोपान देखि मन मोहा । ७-५५।१०
 मनि सोपान बिचित्र बनावा । १-२२६।७

मनु कुपंथ पयु घरइ न काऊ । १-२३०।५
 मनु तव आनन चंद चकोरु । २-२५।४
 मनु परिहरै चरन जनि भोरें । १-३४१।५
 मनु माना कछु तुम्हहि निहारी । ३-१६।१०
 मनु रघुनंदन जानकि साथी । २-०२।४
 मनु समीप आए बहु बर्रा । १-१४४।२
 मनुज घरित कर अज अबिनासी । ३-२९।१०
 मनुज दसा कैसैं कहि जाती । १-३३०।३
 मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ । १-११५।४
 मनोभूत कोटि प्रमा श्री शरीर । ७-१००।५
 मम अनुसासन मानै जोई । ७-४२।५
 मम इच्छा कह दीनदयाला । १-१३०।३
 मम कर तीरथ छाँडिहि देहा । ३-२८।१४
 मम जीवन तिमि तुम्हहि अधीना । १-११०।६
 मम धामटा पुरी सुख रासी । ७-३।१०
 मम पद गहें न तोर उबारा । ६-३४।२
 मम पद मनहि बाँध बरि डोरी । ५-४०।५
 मम पन सरनागत भयहारी । ५-४२।८
 मम प्रसाद नहिं साधन खेदा । ७-८।८
 मम बल जान सहित पति सोई । ३-२८।१३
 मम भरोस हियँ हरष न टीना । ३-३५।५
 मम मन सीता आश्रम नाहीं । ३-२९।३
 मम लीला रति अति मन माहीं । ३-१५।८
 मम समीप नर पावहिं बासा । ७-३।६
 मम हित लागि नरस पठाए । १-२१५।८
 मम हित लागि भवन सुख त्यागे । ७-१५।५
 मम हृदयँ करहु निकेत । ६-११२।१५
 ममता केहि कर जस न नसावा । ७-०।२
 ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी । १-१५।२

ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी । ४-१५५
 मयतनयाँ कहि नीति बुझावा । ५-९७
 मयन सयन सय सम सुखदाई । २-१३१७
 मरजाटा पुनि तुम्हरी कीन्ही । ५-५८५
 मरती बार कपटु सब त्याग । ६-७५/१६
 मर्दन निसाचर धारि । ६-११२३
 मर्दहिं निसिघर सुमट बरुथा । ६-४११
 मर्दहु मालु कपिन्ह के लट्टा । ६-७८/११
 मर्द लाग भयउ अति क्रोधा । ६-८१५
 मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही । २-१६१३
 मरन कोटि सम दारुन दाहू । २-१४७
 मरन चहत सब बिनु जल पाना । ४-२३४
 मरनु ठानि मन रवेसि उपडई । १-८५५
 मरनु नीक तेहि जीवन चाही । २-२०२
 मरन भयउ कछु संसय नाही । ४-२५६
 मरमु पाँछि जनु माहुर देई । २-१५९७
 मरु मारव महिदेव गवासा । १-५४
 मरुत थकित बसुधा अकुलाई । ६-७८७
 मष्ट करहु अनुचित भल नाही । १-२७७४
 मसक कहूँ खगपति हित करहीं । ६-११७१९
 महा घोर त्रयताप न जरई । १-३८६
 महा प्रलयहुँ नास तब नाही । ७-१३५
 महा बिपति किमि जाइ बखानी । २-१५२७
 महा महा जोधा संघारे । ६-६११०
 महा महीप भए पसु आई । १-२८२३
 महा मुदित मन सुख न समाहीं । १-३४७४
 महा मंदमति पावन चाह । ३-०६
 महादेव तब कहा बखानी । १-४६८
 महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं । १-३२१४

महाबीर दितिसुत संघारे । ६-५७
 महामुनिन्ह सो सब करवाई । १-१००११
 महामोद मन पुलकित गाता । १-३१४४
 महामोह निसि दलन दिनेसू । २-३२५६
 महा मोह निसि सूतत जागू । ६-५५७
 महाराज कहीं तिलक करीजे । ७-१८
 महाराज तुम्ह पंडित ज्ञानी । २-१४१३
 महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई । १-३३१८
 महि खनि कुस साँथरी सँवारी । २-३२३३
 महि ते प्रगट होहिं जलधारा । ६-५११
 महि न बीचु बिधि मीचु न देई । २-२५१६
 महि नख लिखन लगीं सब सोचन । २-२८०६
 महि पछारि निज बल देखरायो । ६-७३८
 महि पटकत मजे भुजा मरोरी । ६-१७१९
 महि मार विमंजन ग्यानघन । ६-११०६
 महि मिलि गयउ बिलोकत बाना । १-१५६२
 महि सोवत तेइ राम गोसाई । २-१०५
 महिपाल बिलोक्य दीन जन । ७-१३२०
 महिमा अनित जाइ नहिं बरनी । ६-१३
 महिमा अवधि राम पितु माता । १-१५८
 महिमा उदार अपार । ६-११२५
 महिमा जासु जाइ नहिं बरनी । १-११७८
 महिमा सिय रघुबर सनेह की । २-२५४८
 महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना । १-३३२८
 महेश चाप खंडन । ३-३७
 मागत पंथ कृपा मन माहीं । ५-५५३
 मागध सूत बिदुष बंदीजन । १-३०८५
 मागहु आजु जुड़ावहु छाती । २-२१५
 मागहु बर प्रसन्न मैं ताता । १-१७६२

मागा तुरत सिंधु कर नीरा । ५-४८८
 मागा बिदा ताहि सिरु नावा । ५-१११
 मागि अगम बर होउं असोकी । ५-१६३।८
 मागि मातु गुरु सचिव नियोगा । २-२३२।५
 मागु जो तोहि भाव मन माहीं । ७-८३।२
 मागु जो भूप भाव मन माहीं । १-१६३।५
 मागु मागु तुम्ह केहि बल कहेऊ । २-३४।४
 मागेउं जो कछु मोहि सोहाना । २-३९।७
 मागेसि नीद मास षट केरी । १-१७६।८
 मागेहु भगति मोहि अति भाई । ७-८४।५
 माजहि खाइ मीन जनु मापी । २-५३।४
 माजा मनहुं मीन कहूँ ब्यापा । २-१५२।६
 मातलि चलेउ वरन सिरु नाई । ६-१०९।११
 मातु अनल पुनि देहि लगाई । ५-११३
 मातु चिसव कटिन की नाई । ७-७३।८
 मातु तोहि नहि थोरिउ खोरी । २-११।२
 मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना । १-१९७।८
 मातु पालकीं सकल चलाई । २-२०२।१
 मातु पिता अग्या अनुसरहीं । १-२०४।४
 मातु पिता गुरु नावहिं माथा । १-२०४।७
 मातु पिता स्वास्थ्य रत ओऊ । ७-४६।४
 मातु व्यर्थ जनि तेहु कलका । १-१६।८
 मातु बिपति संगिनि तैं मोरी । ५-११।१
 मातु मनोरथ पुरउबि मोरी । २-१०२।२
 मातु समर जीत्यो दससीसा । ६-१०६।७
 मातु सुखद बोलीं मृदु बानी । १-७१।८
 माथ नाइ पूछत अस भयऊ । ४-०।६
 माथें मानि करौं सिख सोई । २-२५७।४
 माधव सरिस मीतु हितकारी । २-१०४।३

मान ते म्यान पान तैं लाजा । ३-२०।१०
 मान न ताहि कालु निअराना । ६-३४।९
 मानउं एक भगति कर नाता । ३-३४।४
 मानत रामु सुसेवक सेवा । २-२६४।७
 मानत साधु पेम पहिचानी । २-२४९।५
 मानति भूरि भूरि निज भागा । २-११२।८
 मानस तैं मुख पंकज आई । २-२६।७
 मानस पुन्य होहिं नहिं पापा । ७-१०२।८
 मानहु कहा क्रोध तजि तैसैं । ५-५३।१
 मानहु मोर वचन हित जानी । २-१७४।४
 मानहु सत्य वचन कपि मोरा । ६-५७।२
 मानहुं अपर गिरिन्ह कर राजा । ४-२९।७
 मानहुं अबहिं भवन ते आए । १-१४४।८
 मानहुं अमित केतु अरु राहु । ६-११।१४
 मानहुं उमगि चला चहु ओरा । १-२९।६।८
 मानहुं कमल मूलु परिहरेऊ । २-३७।७
 मानहुं कालराति अँधिआरी । २-८२।५
 मानहुं कालु देह धरि बैसा । ६-६१।७
 मानहुं प्रसन चहत हहिं लंका । ५-५४।८
 मानहुं चित्र माझ तिखि काढ़ा । ३-९।२४
 मानहुं तुहिन बनज बनु मारा । २-१५८।४
 मानहुं पारसु पायउ रंका । २-२३७।३
 मानहुं ब्रह्मानंद समाना । १-१९२।३
 मानहुं बिपति बिषद बसेरा । २-३७।४
 मानहुं मघा मेघ झरि लाई । ६-७२।३
 मानहुं मीचु घरीं गनि लेई । २-३९।२
 मानहुं मोरि करत हहिं निंदा । ३-३६।४
 मानहुं मोहि जानि हत भागी । ५-११।१
 मानहुं मोहि सिखावनु देहीं । ३-३६।७

मानहुँ राजु अकाजेउ आजु । २-२४६।६
 मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी । २-३३।१
 मानहुँ लौन जरे पर देई । २-२९।८
 मानहुँ समर सूर जय पाई । १-३४१।८
 मानहुँ संपति सकल गैवाई । ६-३४।५
 मानुष करनि मूरि कलु अहई । २-९९।४
 मानुष तनु गुन ग्यान निधाना । २-२६३।४
 माया कृत परमास्थ नाही । ४-६।१८
 माया कोटि प्रपंच निधाना । ७-९१।७
 माया खलु नर्तकी बिचारी । ७-११५।४
 माया जनित बिपति सब गई । ७-१२४।२
 माया जीव करम कुलि काला । २-२५३।६
 माया तैं असि रचि नहिं जाई । ५-१२।३
 माया बल कीन्हैसि सर पंजर । ६-७२।६
 माया बस कवि कोबिद ग्याता । ७-५९।३
 माया बस न रहा मन बोधा । १-१३५।६
 माया बस्य जीव सचराचर । ७-७७।४
 माया मोह पार घरमीसा । ७-५७।७
 माया मोह सोच सब गयऊ । ७-६२।२
 माया सब सिय माया माई । २-२५१।३
 माया हास बाहु दिगपाला । ६-१४।५
 मायाधीस ग्यान गुन धामू । १-११६।७
 माया पति कृपाल भगवाना । ७-८१।६
 मायापति दूतहि चह मोहा । ६-५६।३
 मायामृग पाछें सो धावा । ३-२६।११
 मारग अगम भूमिधर नारे । २-६१।६
 मारग जनित सकल श्रम हरिहीं । २-६६।२
 मारतहुँ पा परिज तुम्हारें । १-२७२।७
 मारन लगे पचारि पचारी । ६-९७।१३

मारसि गाइ नहरलु लागी । २-३५।८
 मारहिं चरन करहिं बहु हौंसी । ५-२४।६
 मारहिं मोहि कुमारग गामी । ५-२१।४
 मारा चहसि अधम अभिमानी । ४-८।१०
 मारी मालु लोक सब सारखी । २-१७३।७
 मारु काटु धुनि बोलहिं नाची । ६-५१।२
 मारुत स्वास निगम निज बानी । ६-१४।४
 मारुत त्रिविधि सदा बह सुंदर । ७-२७।३
 मारु राग सुभट सुखदाई । ६-७८।९
 मारें मरिज जिआरें जोजे । ३-२४।४
 मारेसि मनुहुँ पिता महतारी । २-१४४।५
 मारेहु मोहि ब्याध की नाई । ४-८।५
 मास दिवस महीं आएहु माई । ४-२१।७
 मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा । ७-७८।१
 मिटइ न मलिन सुभाउ अनंगू । १-६।४
 मिटइ भगति पथु होइ अनीती । १-५५।८
 मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी । १-२१।५
 मिटहिं दोष दुख भव रजनी कै । १-०।७
 मिटहिं पाप परिताप हिए तैं । १-४२।६
 मिटहिं सकल भवसंभव सोका । ४-२२।५
 मिटा तात मुनिबर कर सापा । ६-५७।१
 मिटा बिबादु बड़ी अति प्रीती । १-२५६।३
 मिटा मोह सरदातप भारी । १-११९।१
 मिटा सोचु जनि राखे राऊ । २-१०।८
 मिटि गै सब कुतरक कै रचना । १-१९८।७
 मिटिहि न बेगि कहेँ खग मोरें । ७-५८।७
 मिटी मलिन मन कलपित सूला । २-२६६।२
 मिटी महामरजाद ग्यान की । १-३३७।६
 मिटे दुसह दुख दोष हमारे । २-२५०।७

मिटै दोष दुख दारिद्र्य दावा । २-१०१५	मिले आजु मोहि राम पिरिते । ७-१११
मिटैउ छोमु नहिं मन संदेह । २-२६७/१	मिले प्रेम परिपूरित गाता । १-३०७/८
मितप्रद सब सुनु राजकुमारी । ३-४/५	मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई । २-१९५/३
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता । ६-६०/८	मिलेउ महानदु सोन सुहावन । १-३९/२
मिलइ न जल धन गहन गुलामे । ४-२३/३	मिलेउ मुदित लखि राम सनेही । २-११०/५
मिलइ जो संत होई अनुकूला । ३-१५/४	मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा । ५-२८/३
मिलइ रचइ परपंचु बिधाता । २-२३१/५	मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा । ४-६/१९
मितत एक दुख दारुन देहीं । १-४/४	मित्रक दुख रज मेरु समाना । ४-६/२
मितत धरें तन कह सबु कोऊ । २-११०/२	मीत पुनीत प्रेम परितोषे । २-७९/४
मितत पुलक परिपूरित गाता । २-१९३/४	मीत महीपति माहुर दीन्हें । २-१६६/६
मिततेउँ तात कवन बिधि तोही । ७-६८/४	मीन जिजन निति बारि उलीचा । २-१६०/८
मितन कठिन मन भा संदेह । १-६७/५	मीन मनोहर ते बहुभाँती । १-३६/८
मितन गयउ लै बिप्र समाजा । १-२०६/१९	मीनु दीन जनु जल तें कादे । २-६९/३
मितन ब्रतेउ हियै हरषु अपारा । २-८७/२	मुएहि बर्धे नहिं कछु मनुसाई । ६-३०/९
मिला न राजहि नृप अभिमानि । १-१५७/४	मुएँ करइ का सुधा तड़ागा । १-२६०/२
मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी । ५-२३/२	मुएहुँ न मिटिहि न जाइहि काऊ । २-३५/५
मिलि तपसिन्ह ते भएसि लबारा । ६-३३/६	मुक्त भए छूटे भव बंधन । ६-११३/७
मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं । २-२३/१९	मुकता प्रसव कि संबुफ काली । २-२६०/४
मिलि सप्रेमु पुनि आसिष दीन्ही । १-३४१/८	मुक्ति निरादर भगति लुमाने । ७-११८/७
मिलिहहिं निज सेवक की नाई । ३-९/५	मुकुट न होहिं भूप गुन चारी । ६-३७/८
मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाह । २-२२४/२	मुकुट परे कस अवगुन ताही । ६-१३/४
मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई । ७-०/७	मुख पर केहि बिधि करै बड़ाई । ७-१५/४
मिलिहि उमहि तस संसय नार्हो । १-६८/२	मुख मुसुकाइ कही तेहिं दाता । ३-३०/५
मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला । ५-११/७	मुखर मानप्रिय ग्यान गमानी । २-१७१/६
मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी । ४-४/२	मुखहिं निसान बजावहिं मेरी । ६-३८/१०
मिली भेमु कहि जाइ न जेता । २-२४५/२	मुठिका मारि महाघुनि गर्जा । ४-७/२
मिली बहोरि सुसील बिनीता । ३-४/१	मुडित सिर खंडित भुज बीसा । ५-१०/४
मिली सुकीरति सरजु सुहाई । १-३९/१९	मुदित करहिं कल मंगल गाना । १-३४५/८
मिली सकल रनिवासहिं जाई । १-३१७/७	मुदित गए सब निज निज धामहि । १-३५०/५

मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू । १-२३४।२
 मुदित छोट बड़ सब समुदाई । १-३४२।७
 मुदित देव दुंदुभी बजाबहैं । १-३०५।१
 मुदित देव लहि लोचन लाहू । २-१३३।२
 मुदित नगर नर नारि बिसेषी । १-३०८।३
 मुदित ब्रह्ममय बारि निहारो । २-११६।५
 मुदित बसतिन्ह हने निसाना । १-३०४।८
 मुदित बसिष्ट बिपुल बिधि बरनी । १-३५८।६
 मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं । १-२५३।३
 मुदित भए लहि लोचन लाहू । २-१०७।७
 मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हैं । १-३३०।३
 मुदित महोप आपु उठि लोन्ही । १-२८९।३
 मुदित महीपति पाइ असीसा । १-३३८।७
 मुदित महीपति सहित समाजा । १-३४६।८
 मुदित मातु अंचल भरि लेहीं । १-३५०।३
 मुदित मातु पद नायउ माथा । २-५१।१
 मुदित नंडपहि चली लवाई । १-३२१।८
 मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई । २-८७।१
 मुदित सकल पुलकावलि गाता । १-३४३।३
 मुदित सफल जग जीवन लेखी । १-३४८।४
 मुदित सीय सुरसरि अनुकृता । २-१०३।१
 मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा । २-११०।६
 मुदिता मन पद प्रीति अमाया । ३-४५।४
 मुघा मान ममता मद बहहू । ६-३६।५
 मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ । १-२०६।७
 मुनि असीस धुनि मंगल मूला । १-३२२।५
 मुनि आश्रम पहुँचे सुरमूपा । ३-११।५
 मुनि उदबेगु न पावै कोई । २-१२५।२
 मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ । ७-१११।११

मुनि कहैं वल्ले बिकल की नाई । १-१३५।५
 मुनि के बचन समुझि जियेँ माए । ३-३३।६
 मुनि तन पुलक नयव भरि आए । ३-४४।१
 मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा । ७-११०।१४
 मुनि त्यागत जोग भरोस सदा । १-१३।१४
 मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना । ३-२६।१७
 मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना । ७-८३।१
 मुनि निज आश्रम कहूँ पगु धारा । ५-५६।१२
 मुनि पद कमल गहे तब जाई । १-२४३।४
 मुनि पटकमल मुदित सिरु नावा । २-३०७।८
 मुनि पद लागहु सकल सिखाए । ७-७।५
 मुनि पालक खल सालक बालक । ३-१८।११
 मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी । २-२५२।३
 मुनि पुलके लखि सीलु सुमाऊ । २-२८९।७
 मुनि बसिष्टेँ तुनि बेगि बोलाए । २-२६९।४
 मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू । १-२७१।३
 मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी । २-२६६।२
 मुनि मति पुनि फेरी भगवाना । ७-११२।३
 मुनि मन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं । १-१४७।१
 मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए । १-३२६।२
 मुनि मन मोह आचरज भारी । १-१२३।८
 मुनि मन मोह करइ छन माहीं । ४-११।७
 मुनि महेश मन मानस हेसा । १-३४०।४
 मुनि मिथिलेस राखि सबु लोन्हा । २-३०४।८
 मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन । ७-५०।३
 मुनि समेत सादर सनमाने । १-२२१।३
 मुनिकुल विलक कि नृप कुल पालक । १-२१५।१
 मुनिन्ह सकल सादर करवाए । १-१४२।७
 मुनिनायक सोइ करौँ उपाई । १-२४८।६

मुनिबर तुरत बिटा चर कीन्हे । २-२७१८
 मुनिबर निज निज आश्रम आए । ६-२३५
 मुनिबर बृंद विपुल रँग लागे । ३-८५
 मुनि बर बेस बने अति काछें । ३-६२
 मुनिबर सकल बोलि लै आए । ६-१५
 मुनिबर हृदयै हरष अति पाव । १-२०६४
 मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नाव । १-१२६४
 मुनिहि बूझि जल पियौ जाइश्रम । ६-५६२
 मुनिहु कहें जतु काहुँ न लीन्हा । २-२४६८
 मुनिहु हृदयै का नर बापुरे । ७-१२१४
 मुरि चले निस्चिचर बीर । ३-११३
 मुरुछित अवनि परी झड़ैं आई । २-१६३१
 मुरुछित बिकल धरनि खासि परी । ६-१०३१
 मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं । ६-७६६
 मुष्टि प्रहार बज्र सम लाग । ४-७३
 मुष्टि प्रहार हनत सब भागे । १-२७१८
 मूड मुडाइ होहि संन्यासी । ७-११६
 मूढ न जानेहि मोहि सुरारी । ६-२०११
 मूढ मोह बस होहिं जनाई । २-२२७११
 मूढ मंदमति कारन कागा । ३-०७
 मूढ सिखिहि कहैं बहुत झुटाई । ६-३३५
 मूढे नयन सहनि सुकुमारी । २-२७५४
 मूढें आंखि कतहुँ कोउ नाही । १-२७१८
 मूरतिमंत तपस्या जैसी । १-७७११
 मूरतिमंत भाग्य निज लेखे । २-२०५४
 मृग पुनीत बहु मारत भयऊ । १-१५५४
 मृग लोग कुभोग सरैन हिए । ७-१३७
 मृगया कर सब साजि समाजा । १-१५५३
 मृगजलु निरखि मरहु कत धाई । १-२४५५

मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुमारै । २-६२४
 मृगिन्ह चितव जनु बाधिनि भूखी । २-५०११
 मृगी कहहिं तुम्ह कहैं भय नाही । ३-३६५
 मृगी देखि दब जनु चहु ओरा । २-७२६
 मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा । ४-१०८
 मृतक सरीर प्राण जनु भेंटे । १-३०७४
 मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन । २-४०६
 मृदुल बिनीत प्रेम रस पागे । १-१४५७
 मूका न कहउँ मोर यह बाना । ७-१५७
 मेकलसुता गोदावरि धन्या । २-१३७४
 मेटत कटिन कुअंक माल के । १-३१११
 मेटहु तात जनक परितापा । १-२५३६
 मेरु के सुंगनि जनु घन बेसे । ६-४०११
 मेरु सुंग जनु घन दामिनी । ६-१८१५
 मैलि जनेऊ लेहि कुटाना । ७-१८२
 मैलिहि सीय राम उर माला । १-२४४३
 में अब जाब जहाँ रघुराई । ४-२४४
 में अमिमानी रबि निअरावा । ४-२७३
 में एहिं बेष न आउब काऊ । १-१६८३
 में कछु करबि ललित नरलीला । ३-२३११
 में कछु कहा सहित अमिमाना । १-२७२४
 में करि प्रीति परीछा देखी । २-१४६
 में केवल सब अनरथ हेतू । २-१६३७
 में केहि भौंति कहउँ भगवाना । ७-४७१५
 में केहि हेतु करीं अमिमाना । १-२८२८
 में खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं । ७-१५८
 में जनु नीचु सहित परिवारा । २-८७६
 में जस बिप्र सुनावउँ तोही । १-२८२११
 में जाचन आयउँ नृप तोही । १-२०६११

में जोहि समय गयउँ खन पासा । ७-५७।१
 में तिहुँ काल कुशल निज लेखी । २-११४।७
 में न जिअब जिमि जल विनुमीना । २-१५।८
 में निज श्रवन सुने सुनु जेते । ६-२३।१२
 में नृप कह्य स्वमति अनुरूपा । १-११६।४
 में पावैर पसु कपि अति कामी । ४-२०।३
 में पुनि गयउँ बंधु सँग लाग । ४-५।४
 में पुनि दीन्हि कोप करि सापा । ७-१०।३
 में पूछउँ निज प्रभु की नाई । ३-१३।६
 में बन गयउँ भजन जनत्राता । ७-१०१।१
 में ब्रह्मों भित्ति तेहि बर दीन्ह । १-१७६।५
 में मतिमंद जानि नहीं पाई । ३-१।१२
 में यह पावन चरित सुहावा । ७-१२१।४
 में रघुपति सेवक कर दूता । ६-२१।७
 में रघुबीर दूत दसकंधर । ६-११।१
 में रघुबीर भजन अधिकारी । ७-१२२।७
 में सप्रेम मुनि षट् सिरु नावा । ७-११२।१४
 में सब कही मोरि मति जथा । ७-५१।१
 में सिख देउँ जानकिहि सोई । २-५१।६
 में सिसु सेवक जद्यपि बामा । २-१८।२।६
 में सुनि बचन बैटि पछिताऊँ । २-५५।८
 में सेवक तुम्ह जन सुखदाई । ७-३६।१
 में सेवक रघुपति पति मोरे । ३-१०।२१
 में सेवकु समेत सुत नारी । १-३५१।६
 में सो दीन्ह सब संसय नाहीं । १-१५०।२
 में संछेप कहउँ यह नीती । ७-१२०।८
 मो कहैं नाथ विविध सुख टए । ७-१२४।३
 मो कहूँ सकल भए विपरीता । १-५४।१
 मो कहूँ सब काल कत्याना । १-१६४।८

मो कहूँ सुखद कतहूँ कछु नाहीं । २-६४।६
 मो कहूँ होउ श्रीखंड समाना । ६-१०।८
 मो पर कहु कृपा अरु नेहू । ७-८३।७
 मो पर करिअ दास की नाई । १-२७।१५
 मो पर कृपा करिअ अब स्वामी । १-१६।०।५
 मो पर कृपा कीन्हि बहु भीती । ६-११५।४
 मो पर कृपा परम मृदुलाई । ७-१२३।३
 मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह टाया । ७-६१।३
 मो सन भिरिहि कवन जोधा बट । ६-२२।१
 मो साम आजु धन्य नहीं दूजा । १-२०।६।३
 मो से सठ पर करिहहिं टाया । ३-१।४
 मोतें संत अधिक करि लेखा । ३-३५।३
 मोर अभाग उदधि अवगाहू । २-२६।०।५
 मोर अहार जहाँ लगि जोरा । ५-३।३
 मोर कह्य सब भीति भदेसू । २-२१५।७
 मोर कहा अति हित हियँ धरहू । ५-३५।६
 मोर कहा कछु हृदयँ विचारहू । ६-३५।७
 मोर जाब तव नगर न होई । १-१६६।३
 मोर दरसु अमोघ जग माहीं । ५-४८।११
 मोर मनोरथु सफल न कीन्ह । २-६।८।४
 मोर हृदय संत कुलिस समाना । २-१६५।८
 मोरि सपथ तोहि कहु सतिमाऊ । २-४१।८
 मोरे अनुचर कहैं कोउ नाहीं । ३-२२।११
 मोरे कहैं जानकी दीजे । ५-२१।१०
 मोरे हृदयँ कृपा कसि काऊ । १-२७।१२
 मोरे हृदयँ परम कलपना । ६-१।४
 मोरें अधिक दास पर प्रीती । ७-१५।८
 मोरें कर ता कर बध होई । ७-१८।५
 मोरें गृह आवा प्रभु सोई । १-११२।५

मोरें नहिं अदेय कछु तोही । १-१४८८	मोहि तोहि मूप गेट दिन तीजे । १-१६८७
मोरें नीति न धरम बिचारु । २-२६८३	मोहि दीन्ह पितु आयसु जाना । २-८७८
मोरें मार चलिहि किमि बाना । ६-५१७	मोहि न बहुत प्रपन्न सोझाहीं । २-३२६
मोरें मन प्रतीति अति सोई । १-५५३	मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही । ३-३२८
मोरें मन प्रबोध जेहि होई । १-३०२	मोहि निति पिता तजेउ भगवाना । १-२०८४
मोरें सनमुख आव कि सोई । ५-४३४	मोहि नीति बहु भांति सिखाई । ७-१०५१
मोरें सोचु भरत कर भारी । २-२८३३	मोहि पद पदुम पखारन कहहू । २-१९१८
मोरें हृदय प्रीति अति होई । ५-५७	मोहि परम अधिकारी जानी । ७-११०२
मोह आदि तम मिटइ अपारा । ७-११७३	मोहि परम प्रिय बचन सुनाए । ७-१७
मोह कलिल व्यापित मति मोरी । ७-८१७	मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी । ७-८५१०
मोह जनित संसय सब हरना । १-१३	मोहि बड़ मूढ़ कहे किन कोऊ । १-१५०५
मोह द्रोह ममता लपटाने । ७-११११	मोहि बिलोकु तोर मैं कालू । ६-८२१
मोह नदी कहैं सुंदर तरनी । ७-१४७	मोहि लखि परत भरत मत एहू । ३-२८८८
मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गत । ७-१२०३६	मोहि लभि मे सिय राम दुखारी । २-१८१६
मोह बिटप नहिं सकहिं उपासी । ६-३३१४	मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरें । २-१८२
मोह बिपिन कहुं नारि बसंता । ३-४३१	मोहि सब सुखद प्रानपति संगी । २-१७८
मोह मगोज आदि अबिदेका । ७-५६२	मोहि सन भाग्यवंत नहिं दूजा । ३-१११२२
मोह मूल परमास्थु नाहीं । २-११८	मोहि समान मैं साईं दोहाई । २-११७४
मोहि अनुहरत सिखावनु देहू । ३-१७६७	मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतु । १-१११७
मोहि अवकलत उपाउ न एहू । २-५२२	मोहि से सठ पर ममता जाही । ७-१२२३
मोहि अहार दीन्ह जगदीसा । ४-२६२	मोहि सेवक अति आपन जानी । १-१६१८
मोहि कपट छल छिद्र न भावा । ५-४३५	मोहि सेवक सप प्रिय कोउ नाहीं । ७-८५८
मोहि कहैं होइ बहुत अवलंबा । २-५१७	मोहेहु मोहि सुनइ रघुराया । ३-४२२
मोहि केउ सपनेहुं सुखद न लागा । २-१७६	मौन मलिन मैं बोलब बाउर । २-२१२५
मोहि जनि तजहु भगत हितकारी । ७-१७३	मंगल कलस दसहुं दिसि साजे । १-१०८
मोहि जानिअ आपन अनुगाभी । १-२८०८	मंगल कलस सगुन सुभ साजे । १-३१२३
मोहि जिआयउ जन सुखदायक । ७-१२७	मंगल कलस सजन सब लागीं । २-७२
मोहि तजि आनहिं बरिहि न भोरें । १-१३२६	मंगल गन जनु दीन्हि देखाइ । १-३०२६
मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका । १-११८	मंगल जानि नयन जल रोकाहिं । ७-६३

मंगल द्रव्य लिए सब ठाहीं । १-२८०१६
 मंगलमय जति पावन पावन । २-१३८१३
 मंगलमय मुकुता मनि गाथे । १-३२६१९०
 मंगल महुँ भय मन अति कावा । १-३६१२
 मंगल मुदित सुमित्राँ साजे । १-३४११३
 मंगल मूरति नयन निहारी । २-१२४१५
 मंगल मूल अमंगल दमनू । २-८१५
 मंगलमूल सगुन भए नाना । १-३३८१८
 मंगल मूल सगुन सुभ पाए । २-१९२१४
 मंगल मोद बिनोद न थोरे । १-३५६१९
 मंगल मोद मूल मग एकू । २-२५४१९
 मंगल मोद मूल मन भाए । २-३६
 मंगल रचना रची बनाई । १-२९५१६
 मंगल सकल सजाहिँ सब रानी । १-३४५१७
 मंगल सकल साजि सब ल्याए । १-३१२१२
 मंगल सब सब भाँति सुहाए । १-३१५१२
 मंजु बलित बर बेलि बिताना । २-१३६३६
 मंजु बिसाल देखि मनु मोहा । २-२३६३३
 मंजुल मंगल बाज बधावा । २-१२१९
 मंजुल मंगल मोद प्रसूती । १-०३
 मंजुल मंजरि तुलसि बिसजा । १-३४५१५
 मंद करत जो करइ भलाई । १-४००७
 मंद महीपन्ह कर अभिमानू । १-२५११४
 मंदर मेरु सकल सुरबासू । २-१३०१६
 मंदरु मेरु कि लेहिँ मराला । २-४१३
 मंदाकिनि कर करहिँ बखाना । २-१३४१५
 मंदाकिनी पुनीत नहाए । २-२३२१४
 मंदिर तें मंदिर घड धाई । १-२५१९
 मंदिर महुँ न टीख बैदेही । १-४४७

मंदोदरी अधिक जकुलानी । १-३५१४
 मंदोदरी आदि सब रानी । १-८४
 मंत्र सबीज सुनत जनु जागे । २-१८३१२

य

यह अनुचित नहिँ नेवत पठावा । १-६९१९
 यह कहि चलयो बालि नृप जायो । ६-३४१९०
 यह कुवालि कछु जान न कोई । २-२२१८
 यह कोउ नृपबालक नर भूपन । १-१८१२
 यह खल खाइ काल की नाई । ६-८१७
 यह छवि सखी पटतरिअ जाही । १-२९१८
 यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई । १-२०१४
 यह दिनकर कुल रीति सुहाई । २-१४३
 यह निरजोसु दोसु बिधि बामाहि । २-२००८
 यह प्रतापरवि तेहिँ तब चीन्हा । १-१५४१६
 यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें । १-२२२१६
 यह प्रमुता कछु बहुत न तासू । ७-२१२
 यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ । ७-३४
 यह बरगत हीनता घनेरी । ७-२१३
 यह मत लछिमन के मन भावा । १-५४१५
 यह मम भगत कर्म मन बानी । ७-११३१६
 यह महिमा जानहिँ दुरबासा । २-२१४१६
 यह मोहि कहैं कछु अनुचित नाहीं । २-१४१७
 यह रघुनंदन दरस प्रमाऊ । २-२५०१६
 यह लालसा एक मन माहीं । २-३४
 यह सब मैं निज नयनन्हि देखी । ७-१०२
 यह सिय राम सनेह बड़ाई । २-४६१२
 यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी । १-२२२३
 यह सुनि परा निसानहिँ घाऊ । १-३१२१७

यह सँजोग विधि रचा बिचारी । ३-१६।८
यह हमरें मन बिसमय आवा । ६-१०१।१०

र

रखिहउँ इहाँ बरख परवाना । १-१६।८।५
रखिहउँ ताहि प्रान की नाई । ५-४३।८
रखिहहिँ भवन कि लेहहिँ साथ । २-६१।५
रघुकुल कमल बिपिन दिनकर केँ । ७-८।७
रघुकुल तिलक नारि पहिचानी । ३-२८।७
रघुकुल तिलक मुजा सोइ काटी । ६-६१।१९
रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई । १-१८६।५
रघुकुलदीपहिँ चलेउ लेयाई । २-३८।७
रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा । ७-१३।२
रघुनायक सायक चाप धरे । ६-११०।१५
रघुपति कथा कहहु करि दाया । १-१०१।३
रघुपति कुपौं मरनु मैं पावा । ७-६१।७
रघुपति चरन प्रीति अति जाही । ७-१०३।७
रघुपति चरन प्रीति नहिँ थोरी । ७-५४।७
रघुपति चरन भगति सोइ पावा । ५-३३।७
रघुपति चरित न बरनि सिराहीं । ७-५१।४
रघुपति चरित ललित कर गाना । ७-८७।८
रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं । ७-३१।६
रघुपति चले संग सब भाई । १-३४२।५
रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही । ७-६१।४
रघुपति दूत जानकी चीन्हा । ६-१०६।५
रघुपति पट सरोज वितु राचा । १-२५८।४
रघुपति प्रेरित ब्यापी माया । ७-७७।१५
रघुपति बिरह अनल संजात । ५-१।५
रघुपति भक्त जानि मन नायो । ६-६३।४

रघुपति भगतु जासु सुतु होई । २-७४।१५
रघुपति भगत भगति बस अहहीं । २-२६४।३
रघुपति भगति केर पंथाना । ७-१२८।३
रघुपति भगति बिना सुख नाहीं । ७-१२१।१४
रघुपति महिना बहुबिधि बरनी । ४-२६।१५
रघुपति रावन समर बखाना । ७-६७।१५
रघुपति सयनहिँ लखनु नेवारे । १-२७५।८
रघुपति हृदयें लाइ सोइ लीन्ही । ५-३०।१५
रघुबर किकर कुमुद चकोरा । २-२०८।१५
रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही । १-२२५।६
रघुबर परनकुटी जहँ छाई । २-२३६।६
रघुबर बिरह पीर उर बाँकी । २-१४२।४
रघुबर भगति प्रेम परमिति सी । १-३०।१४
रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिँ । २-२३७।४
रघुबर सब उर अंतरजामी । १-११८।२
रघुबर संघ्या करन सिधाए । २-८८।६
रघुबीर महा रनधीर अजे । ७-१३।१७
रघइ जासु अनुसासन माया । १-२२४।४
रच्छक कोटि जच्छपति केरे । १-१७८।२
रच्छक कोपि निवारन धाए । ६-१०७।१०
रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे । ५-१७।४
रघना अधिक एक ते एका । ७-७१।४
रघना देखि मदन मनु मोहा । १-३४४।१५
रघना सकल अलौकिक नाना । १-३१३।५
रवी बिरचि विषय सुख मोरी । २-५१।१५
रवे कँगूरा रंग रंग बर । ७-२६।४
रवे जहाँ बैठहिँ महिपाला । १-२२३।३
रवे परन तृण सदन सुहाए । २-१३२।७
रवे बादि बिधि ब्राहन नाना । २-११८।६

रज होइ जाइ पषान पवारें । १-३००।३
 रटहिं कुमाँति कुखेत करारा । २-१५७।४
 रटहु निरंतर गुन गन पाँती । ७-१।३
 रति अति दुखित अतनु पति जानी । १-२४६।५
 रति सत कोटि तासु बलिहारी । ३-२१।९
 रथ गज बाजि बरतिन्ह साजे । १-३३८।५
 रथ चढ़ि चलत मए दोउ भाई । २-१८७।७
 रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ । २-१८६।५
 रथ बैलारेउ बरबस आनी । २-१४२।३
 रथ रव बाजि हिंस चहु जोरा । १-३००।१
 रथ सारथी तुरग सब खोई । ६-५०।३
 रथी सारथिन्ह लिए बोलाई । १-२१८।८
 रदपट फरकत नयन रिसींहे । १-२५१।८
 रन दुर्मद रावन अति कोपी । ६-८१।४
 रन बाँकुरा बालिसुत बेका । ६-१७।२
 रन बाँकुरे बीर अति बाँके । ६-३६।४
 रन महि परे निसाघर भारे । ६-११८।१०
 रन रस बिटपु पुलक मिस फूला । २-२२८।५
 रन सन्मुख जा कर मन डोला । ६-७७।४
 रन सन्मुख घरि काहुँ न धीरा । ६-१०३।४
 रन हति राम परम पट दयाऊ । १-१२३।२
 रबि आतप मित्रममित्र जया । ६-११०।१६
 रबि पावक सुरसरि की नाई । १-६८।८
 रबि रूख नयन सकळ किमि जोरी । २-५८।८
 रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी । ३-१०।२
 रबि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं । ७-७१।८
 रबिकुल रबि अँथयउ जियेँ जाना । २-१५३।३
 रबितनुजा कइ करत बड़ाई । २-१११।२
 रबिहि न दोसु देव टिसि भूलें । २-२६६।३

रसा समेत रसापति मोहे । १-३१६।३
 रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं । ७-५२।१
 रसा रसातल जाइहि तबहीं । २-१७८।२
 रह न तेज तन बुधि बल लेसा । ३-२७।१०
 रहइ असोच बनइ प्रमु पोसेँ । ४-२।४
 रहइ न नीच मतं चतुराई । २-२३।८
 रहइ न राम घरन अनुरागी । २-१६५।२
 रहइ न सीलु सनेहु न कानी । १-६१।४
 रहत न आरत कें चित चेत् । २-२६८।४
 रहति करति रब्धा स्वप्नान की । ५-२१।८
 रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ । १-१८१।३
 रहसी घेरि घात जनु फाबी । २-१६।२
 रहा कनक मनि मंडपु पूरी । १-३२५।२
 रहा न कोउ कुल रोवनिहारा । ६-१०३।१०
 रहा न म्यानु न धीरजु लाजा । २-२७।५।७
 रहा बालि बानर मैं जाना । ६-२०।४
 रहा बिबाहु घाप आधीना । १-२८।५।७
 रहा हृदयें भरि पूरि उछाहू । १-३५३।१
 रहहिँ एक सँग गज पंचानन । ७-२२।१
 रहहिँ दरस जलधर अभिलाषे । २-२२७।६
 रहहिँ धीर तिन्ह के जग लीका । ३-३७।११
 रहहिँ न जतन किए रघुनाथा । २-१६५।३
 रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी । १-२६३।४
 रहि न जाइ बिनु किएँ बरेषी । १-८०।३
 रहि न सकइ हरि भगति बिहाई । ७-११८।६
 रहि पूरि धुनि चहुँ ओर । ६-१००।५
 रहि गए कहत न खाटी मीठी । १-२८१।५
 रहित निसाघर करिहहिँ घरनी । ३-२१।४
 रहिहउँ निकट सैल पर छाई । ४-११।८

सहिहउँ मुदित दिवस जिनि कोकी । २-६५४
 सही सकल मग कानन छाई । २-१२१८
 सही सीय दुहु प्रीति समाई । २-३११३
 सही रानि दरसन अभिलाषी । २-५६११२
 सहु अघमाधम अघगति पाई । ४-१०६८
 रहे कक्षयत परम बिरागी । १३३०१५
 रहे कीन्हि बिग्रन्ह पर दाया । १-२०९७
 रहे तहँ अनुज सहित सुरमूपा । ४-१२३
 रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला । ६-३५११०
 रहे निज निज अनोक रचि रूसी । १-१८७१५
 रहे प्रान सहि जग उपहासू । २-१४८१६
 रहँ नीक मोहि लागत नाहीं । २-२८३७
 रहेउ छटुकि एकटक पल सोकी । ५-४४३
 रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी । २-८१५
 राउ बृद्ध मम दुखु मन माहीं । २-४०१२
 राउरि सपथ सही सिर सोई । २-२१५८
 राखहिँ जनकु सहित अनुरागा । १-३३११२
 राखहु सरन नाथ जन दीना । ४-१४६
 राखहुँ पलक नयन की नाई । २-५६१९
 राखा जिअत आँखि गहि फौरा । ६-३५११२
 राखा राम निहोर न जोही । ४-२५१५
 राखि को सकइ राम कर द्रोही । ३-१५
 राखिअ बाँधि मोहिँ जस भावा । ५-४२७
 राखीँ नाथ सकल रुचि मोरी । २-३१२६
 राखे बहुत बार उर लाई । ३-४०११०
 राखे सकल कपिन्ह के प्राना । ५-२८१५
 राखे सरन जान सबु कोऊ । १-२४१९
 राखे सीस सीय सम देखे । २-११८३
 राखेउ बाँधि सिसुन्ह ह्यसात्ता । ६-२३११३

राखेउँ प्रान जानकिहिँ लाई । २-५८१२
 राखेहु सीस्य जलु थल तेहीं । २-३०७७
 राखेहु नयन पलक की नाई । ५-३५४८
 राखीँ देह नाथ केहिँ खाँगे । ३-३०७
 राग द्वेष उलूक सुखकारी । ५-४६३
 राच्छस भयउ प्रान जबसेषा । ६-५३५
 राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी । ५-५६११९
 राज करत एहिँ मृत्यु हँकारी । ६-४१५
 राज काज सब साज सँभारी । २-३२१६
 राज तजा सो दूषन काहीं । १-१०९१६
 राज बिभीषन देव असोका । ४-६४२
 राज देहु सुग्रीवहिँ जाई । ४-१०१९
 राजु करत निज कुमति बिगोई । २-२२७
 राजत बाजत बिपुल निसाना । १-२१६१५
 राजन राम सरिस सुत जाकें । १-२१३६
 राजनीति मय प्रीति देखई । ३-२४११९
 राजनीति राखत सुरत्राता । ४-२२१३
 राजसर्मा रघुबीर ब्रखाने । १-२८८
 राजसर्मा रघुराजु बिराजा । २-११९
 राज समाज आजु जोइ तोरा । १-२४१३
 राजसमाज जाइ सबु पाछें । २-२०१५
 राजसमाजहिँ लाज लजानी । १-२६५६
 राजहिँ तुम्ह पर बहुत सनेहू । २-३१६
 राजा रामु स्वबस भगवानू । २-२५३२
 राजाँ मुदित महासुख लहेऊ । १-२४३८
 राजीव नयन बिसाल । ६-११२१०
 रानिन्ह कर दारुन दुख दावा । १-२५१६
 रानिन्ह तब महिँदेव बोलाए । १-२१४७
 रानिन्ह बार बार उर लाई । १-३३३७

रामिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी । १-३५१।६
 रानी रायें कीन्ह भल नाहीं । २-१०१।६
 रानी कहहिं बिलोकहु सजनी । १-३५०।३
 रानी सब प्रमुदित सुनि करनी । १-३५३।८
 राम अनादि अवधपति सोई । १-११६।६
 राम अत्रि गुर आयसु पाई । २-३१०।२
 राम उठाइ अनुज उर लायउ । ६-६०।२
 राम उमा सब अंतरजामी । ३-३८।१
 राम कथा गावहिं श्रुति सूरी । ७-१२८।२
 राम कथा जग मंगल करनी । १-१।१०
 राम कथा ता कहैं दृढ़ नावा । ७-५२।३
 राम कथा रुचिराकर नाना । ७-१११।१३
 राम करहु तेहि कें उर डेरा । २-१३०।८
 राम कहा प्रनाम कऊ सीता । ६-१०१।६
 राम काजु छनमंगु सरीरा । २-१८१।३
 राम काजु सुग्रीवें बिसारा । ४-१८।१
 राम कुसल जोहि पूछी नाहीं । ४-२१।३
 राम कृपा करि दितवा जाही । ५-४।३
 राम कृपा बिनु आज न जाई । १-३०।६
 राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई । ७-१११।११
 राम कृपा बिनु सुलम न सोई । १-२।७
 राम कृपा आपनि गति पाई । ५-५६।१०
 राम कृपा कस भयउ सरीरा । ४-२८।२
 राम कृपा काहूँ एक पाई । ७-१२५।८
 राम कृपा जसु भयउ उजागर । ६-२।७
 राम कृपा बैकुंठ सिधारा । ३-८।१
 राम कृपा मा काजु बिसोषी । ५-२८।४
 राम कृपाल कहत सकुचाहीं । २-३१२।२
 राम कृपाल सुसील बिसोषी । २-११४।२

राम गमनु मंडप तब कीन्हा । १-३१८।४
 राम गहन कहैं मुजा पसारी । ७-७८।७
 राम गवनु बिधि अवध कि नाहीं । २-२५१।८
 रामघाट सब लोग नहाए । २-२०६।६
 राम चरन अनुराग जगाधू । २-२०४।७
 राम चरन आश्रित चित चाऊ । २-२३४।८
 राम चरन उपजेउ नव नेहा । ७-१२८।८
 राम चरन जा कर मन राता । ७-१२६।२
 राम चरन बिस्वास बिसोषी । ७-११२।४
 रामचरन रति अति अधिकाई । ७-२४।१
 राम चरन रति निपुन बिबेका । ५-१०।१
 राम चरन होइहि अति नेहा । ७-६०।८
 राम चाप तोरब सक नाहीं । १-२४४।२
 राम जनक मुनि आयसु पाई । २-२७८।६
 राम जननि सिख सुनि सुखु पावा । २-७८।५
 राम जननि हठ करबि कि काऊ । २-२५२।४
 राम जनमु जग मंगल हेतू । २-२५३।३
 राम जासु जस जाप बखाना । १-१६।१०
 राम तिलकु सुनि भा उर टाहू । २-१२।२
 राम तिलक हित लगन घराई । २-१४।६
 राम तुम्हहि अवलोकत आजू । २-१०६।६
 राम तोर आता बड़ पापी । १-२०६।६
 राम तैं अधिक राम कर दासा । ७-१११।१६
 राम दरसु मुद मंगल माला । २-२०१।६
 राम दरस लालसा उछाहू । २-३६।८
 राम देखि मुनि देह बिसारी । १-२०६।५
 राम देत नहिं बनइ गोसाई । १-२०७।५
 राम देहु गौरव गिरिबरहू । २-१११।८
 राम नमामि नमामि नमामी । ७-१२३।७

राम नाम अवलंबन एकू । १-२६७
 राम नाम अंकित अति सुंदर । ५-१२१
 राम नाम जस अंकित जानी । १-९५
 राम नाम बिनु सोह न सोऊ । १-९३
 राम फदारबिंदु अनुसंगी । ७-०३
 राम प्रताप प्रगट एहि माहीं । १-१७
 राम प्रताप ब्रियमता खोई । ७-१९८
 राम प्रताप सुमिरि उर अंतर । ३-७३१
 राम परायन सो परि होई । ७-९६६
 राम पुरी मंगलमय पावनि । १-२१५५
 राम प्रेम अतिसय न बिछोहे । २-३०१४
 राम प्रेम मूरति लनु आही । २-१८३४
 राम प्रेम रसु कहि न परत सो । २-३१६४
 राम बचन सुनि अति दुख पावा । ५-५०२
 राम बयर अस होइहि हाल । ६-२६३
 राम बरी सिय भंजोउ चाया । १-२६४५
 राम बसहु तिन्हके मन माहीं । २-१२८५
 राम बसहु तिन्हके मन माहीं । २-१२९५
 राम बहोरि भुजा सिर छीने । ६-९११९९
 राम बाम दिसि सीता सोई । १-१४७७
 राम बिभीषन तन तब देख । ६-१०१२
 राम बिमल जस जल भरिता सो । १-३८१९
 राम बिमुख काहुं न सुख पायो । ६-४७८
 राम बिमुख थलु नरक न लहहीं । २-२५१७
 राम बिमुख न जीव सुख पावै । ७-१२११८
 राम बिमुख यह अनुचित नाहीं । ६-१०३१२
 राम बिमुख राखा तेहि नाहीं । ३-१२
 राम बिमुख सिधि सपनेहुं नाहीं । २-२५५१
 राम बिमुख सुख कबहुं न सोवा । ७-१५६

राम बिमुख सुतें तें हित जानी । २-७४२
 राम बियोग कुरोग बिगोए । २-१५७७
 राम बियोग पयोधि अघारु । २-१५३५
 राम बियोगिं बिकल दुख तीछें । २-१४२६
 राम बिरह करि मरनु सँवास । २-१५५२
 राम बिरहँ जनि मारसि मोही । २-३३७
 राम बिरहँ जानकी दुखारी । ६-९९४
 राम बिरहँ सबु साजु विहालु । २-३२११
 राम बिलोकत प्रगटेउ सोई । १-९६२
 राम बोलाइ अनुज तन कहा । ३-१७१०
 राम भगत अधिकारी चीन्हा । १-२९४
 राम भगत कर लच्छन एहू । १-१०३६
 राम भगत जन जीवन धन से । १-३११२
 राम भगत जन जीवन सोई । १-३५७
 राम भगत महुं जासु न रेखा । २-१८९७
 राम भगत समरथ भगवाना । १-५६५
 राम भगति उपजिहि उर तोरें । ७-१०८१०
 राम भगति तेहि सुलम बिहंगा । ७-११११९
 राम भगति महिमा अति भारी । ७-११३१९
 राम भगति रत गत मद माया । ७-५३७
 राम भजिअ सब काज बिसारी । ७-१२२२
 राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा । २-१२८४
 राम भजें गति केहिं नहिं पाई । ७-१२१८
 राम मातु अस काहे न होई । २-१६४३
 राम मातु कछु कहेउ न काऊ । २-३११
 राम मातु पहिं गे दौउ भाई । २-१९७२
 राम मातु मलि सब पहिचाने । २-३२७
 राम मातु मत जानव रउरें । २-१७२
 राम मातु मृदु बानी बोरी । २-१८७४

राम मानु सुनि उठी सप्रीती । २-२८३।८
 राम मुनिन्ह सन आयसु मागा । १-२५४।४
 राम रजाइ सीस सबही केँ । २-२५३।८
 राम रजायस आपन नीका । २-२६५।७
 राम रहस्य अनूपम जाना । ७-९२।८
 राम रहित धिग जीवन आसा । २-१५४।५
 राम राज नहिं काहुहि ब्याषा । ७-२०।१
 राम राम कहि चहुँदिसि धावहिं । २-८५।२
 राम रूप दूसर नहिं देखा । १-५४।३
 राम रूप देखहिं किमि दीना । १-१९४।४
 राम रोष पावक सो जरई । २-२९७।५
 राम लखन उर अधिक उछाहू । १-३५८।८
 राम लखन सम प्रिय तुलसी के । १-१९।३
 राम लखन सिय बिनु सुखु नाहीं । २-८३।५
 राम सचिव सन कहेउ सप्रीती । २-८४।७
 राम सचिव सब निकट बोलाए । ६-३८।१
 राम सनेह सुघाकर सारू । २-३२५।८
 राम सनेह सुधीं जनु पाये । २-९८३।१
 राम सपथ दीन्हें हम त्यागे । ५-५३।४
 राम सप्रेम बिनय बस रहहीं । १-३५९।३
 राम समर महि सोमत भए । ६-७०।१२
 राम समीप बसिअ बन तबही । २-२७९।५
 राम समीप सपदि सो आयो । ६-७३।१०
 राम सरन सब गे मन माहीं । २-२६४।२
 राम सरिस सुत मैं महतारी । २-१६५।७
 राम सरूप सिंधु समुहानी । १-३९।४
 राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ । १-११९।२
 राम सीय जसु मंगल खानी । १-३६०।७
 राम सीय पद सहज सनेहू । २-७४।४

राम सीय महि लयन निहारी । २-९१।२
 राम सीयें सादर सनमाने । २-२३०।५
 राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही । १-३८।५
 राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू । २-१।२
 राम सुजान जानि जन जीकी । २-३०३।४
 राम सुमाउ सबहि सुखदाता । २-१९१।६
 राम सुर्यामि टोसु सब जनहीं । २-२३३।२
 राम हृदयें अस बिसमउ भयऊ । २-९।४
 राम हृदयें आनंदु बिसेषी । २-२५८।१९
 राम हृदयें धरि करहु उपाई । ४-२८।४
 रामु खगेस बेद अस गावत । ४-६३।४
 रामु चराधर नायक अहहीं । २-७६।६
 रामु न सकाहिं नाम गुन गाई । १-१५।८
 रामु निरखि नर नारि सुखारी । २-२७९।१९
 रामु प्रबरषन गिरि पर छाए । ४-११।१०
 रामु पुनीत प्रेम अनुगामी । २-३।८
 रामु बिलोकहिं गंग तरंगा । २-८६।५
 रामु भरत कहुँ प्रान पिजारे । २-४७।८
 रामु भरतु दौउ सुत सम जानी । २-४४।६
 रामु भजें हित नाथ तुम्हारा । ५-४०।८
 रामु राउ गुरु साधु निहारे । २-२६।५
 रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं । २-२२।१९
 रामु लखनु सिय आनि देखाऊ । २-८।८
 रामु लखनु सिय नयन देखाऊ । २-१४९।२
 रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी । २-१५३।८
 रामु लखनु सुनि भए सुखारे । १-२३६।४
 रामु सगुन भए भगत प्रेम बस । २-२९।६
 रामु सहज आनंद निधानू । २-४०।५
 रामु सूत्रधर अंतरजामी । १-१०४।५

रामकथा कलि कलुष बिग्नजनि । १-३०५
 रामकथा कालिका कराला । १-४६।६
 रामकथा पर प्रीति पुनीता । १-११९।८
 रामकथा पर रुचि मन माहीं । १-१०८।७
 रामचरित पावन बिधि नाना । ७-२५।७
 रामचरित सर कहेसि बखानी । ७-६३।७
 रामचरित सेवक सुखटायक । ७-७५।११
 रामचरितमानस कबि तुलसी । १-३५।११
 रामचरितमानस तब भाषा । ७-११२।११
 रामधाम सिख देन पठाए । २-८।११
 राम बंधु अस काहे न होई । २-२२२।२
 रामबंधु धरि धीरजु भारी । २-२१६।११
 राममातु पहिं भरनु सिधारै । २-१८५।८
 राम सखौं सब कीन्ह सुपासू । २-३२१।४
 रामचंद्र आयसु अनुसरई । ७-२३।६
 रामचंद्र कर काजु सँवारेहु । ४-२२।३
 रामचंद्र कर सुजसु सुनाबहि । ६-४३।५
 रामचंद्र पद प्रीति न धोरी । २-११६।६
 रामचंद्र बैठहिं सिंघासन । ७-१।५
 रामचंद्र मुख चंद्र चकोर । २-११४।५
 रामचंद्र मुख चंद्रु निहारी । २-०।६
 रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन । २-२७३।२
 रामहिं जाइ कहे जनि कोई । २-३६।२
 रामहिं तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी । २-१६।५
 रामहिं ते सपनेहुँ न सोहाहीं । १-१०३।५
 रामहिं बोलि कहिहि का राजु । २-३८।३
 रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी । ६-७३।२
 रामहिं भरतहिं भेट न होई । २-२१६।८
 रामहिं समर न जीतनिहारा । २-१८८।७

रामहिं सहज सुमार्ये पिआरी । २-१४।५
 रामहिं सेवकु परम पिआरा । २-२१८।११
 रामहिं होत सुनत संतोषू । २-२०६।८
 रामायन सत कोटि अपारा । १-३२।६
 राय रजायसु सब कहैं नीका । २-१८०।३
 रावन उर ना क्रोध बिसेषी । ६-१८।८
 रावन चरन सीस तिन्ह नाए । ५-५२।२
 रावन तोहि समान कोउ नाहीं । ६-२८।५
 रावन नाम वीर बरिबंडा । १-१०५।२
 रावन मातु पिता मंत्रीवर । ६-४७।५
 रावनु कालनेमि गृह आवा । ६-५५।२
 रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी । ६-४।५
 रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई । १-३४४।२
 रिपु अनीक नाना बिधि आई । ६-६६।८
 रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा । ५-४०।३
 रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा । ६-६७।२
 रिपु पर कृपा परम कदराई । ३-१८।१३
 रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई । ५-५१।६
 रिपु सिन रंघ न सखब काऊ । २-२२८।२
 रिपु सन करेहु बतकली सोई । ६-१६।८
 रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा । ६-२७।७
 रिपु सन्मुख अति आतुर आए । ६-८३।८
 रिपुरुप कुटुंब भए तब तैं । ७-१००।५
 रिपुहिं जीति आनिबी जानकी । ५-३१।४
 रिष्टपुष्ट कोउ अति तनखीना । १-१२।८
 रिथ्यमूक पर्वत नियराया । ४-०।११
 रिषि अति प्रीति किलि उर लाई । ३-११।१०
 रिषि धरि धीर जनक पहिं आए । २-२१०।६
 रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन । २-२४।७

रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी । १-२८२।
 रिस तन जरइ होइ बल हानी । १-२७७।
 रिस परिहास कि सँधिहुँ सौँचा । १-३१५।
 रिस बस कछुक अरुन होइ आवा । १-२६७।
 रिष बस भूप घलेउ सँग लागा । १-१५६।
 रौद्रत राम जानि जन जी की । १-२८।
 रुचि अनुरूप भूप मनि देखैं । १-३५२।
 रुचि जागत सोवत सपने की । १-३००।
 रुचि बिचारि पहिरावनि टीन्हीं । १-३५२।
 रुचि तालसा रहनि जन जी की । १-३१३।
 रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा । १-२०८।
 रुचिर ब्रीररस प्रभु मन भाए । १-७०।
 रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी । १-२२५।
 रुंड मुंडमय मेदिनि करहीं । १-११२।
 रुद्र कोटि सत सम संहर्ता । १-११।
 रुधिर बमत धरनीं टनमनी । ५-३।
 रूँधहु करि उपाउ बर वारी । १-१६।
 रूप अनूप नयन मनु लोना । १-११४।
 रूप अनूप बिलोकन लागे । १-२४५।
 रूप अपार मार मद मोघन । १-२६८।
 रूप म्यान नहीं नाम बिहीना । १-२०।
 रूप तेज बल नीति निवासा । १-१२१।
 रूप बिंदु जल होहि सुखारी । १-१२७।
 रूप भयंकर प्रगटत भई । १-१६।
 रूप रासि गुन कहि न सिराई । १-१२८।
 रूप रासि गुन सील सुहाई । १-५८।
 रूप रासि पति प्रेम पुनीता । १-५७।
 रूप रासि सब भौंति पुनीता । १-३२२।
 रूप सील गुन निधि सब आता । १-३४०।

रूप सील निधि तेज बिताला । १-७५।
 रूप सील व्रत नेम पुनीता । १-२९।
 रूप सील सुख सब गुन सागर । १-१११।
 रूप सील बलु तेजु बखानी । १-१५५।
 रे सठ सुनेहि सुमाउ न मोरा । १-२७१।
 रे हत भाग्य अग्य अभिमानी । १-१०६।
 रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेस । १-५।
 रोपे बकुल कटय तमाला । १-३४३।
 रोम पाट पट अगनित जाती । १-५३।
 रोमावली लता जनु नाना । १-९८।
 रोवत करहिं प्रताप बखाना । १-१०३।
 रोवहि बालक आतुर नारी । १-४१।
 रोबहिं खर सूकाल बहु रचाना । १-१०१।
 रोबहिं सोक सिंधु अवगाही । १-२७५।
 रौरव नरक कल्प सत परई । १-४१६।
 रौरव नरक कोटि जुग परहीं । १-१०६।
 रौरव नरक परहिं तैं प्राणी । १-१२०।
 रंक घनट पदवी जनु पाई । १-५१।
 रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं । १-११६।
 रंग अबनि सब मुनिहि देखीं । १-२४३।

ल

लखन कही सब कता विसेधी । १-४२।
 लखन चलहिं मगु दाहिन लारै । १-१२२।
 लखन बाहुबलु बिपुल बखानी । १-२३०।
 लखनु राम डर बोलि न सकहीं । १-२६६।
 लखन राम सिय दरसनु पावा । १-२०९।
 लखन राम सिय विनु पद देखें । १-१७७।
 लखन सखीं सब कीन्ह सुपासू । १-१०४।

लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई । २-१५/५
 लखहु न भूप कपट चतुराई । २-१३/६
 लखि अमिलायु सुरेस सची कें । २-२१४/६
 लखि गति ग्यानु बिरागु बिरागे । २-२११/११
 लखि नहिं परइ सपरन सुहाई । १-२८७/२
 लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी । २-३८/२
 लखीं सीर्यें सब प्रेम पिआसी । २-११७/३
 लखेउ न लखन सघन बन ओटा । २-२३८/११
 लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारु । १-३११/६
 लगीं देन गारीं मृदु बानी । १-१८/८
 लगे उठावन टरइ न टारा । १-२५०/११
 लगे कटन बिकट पिसाच । ३-११/८
 लगे कटन भट बिकट पिसाच । ६-६७/४
 लगे करन रघुनायक घ्याना । १-८१/४
 लगे करन सब दंड प्रनामा । १-२६८/२
 लगे करन सिंसु कौतुक तेई । ७-८७/५
 लगे कहन कछु कथा पुरानी । १-२३६/५
 लगे घसीटन धरि धरि झाँटी । २-१६२/७
 लगे चरन चापन दोउ भाई । १-२२५/३
 लगे चलन के साजन साजा । २-३१७/६
 लगे मातु कपि चारिहुं द्वारा । ६-७७/३
 लगे मातु पद आसिष पाई । २-६७/५
 लगे ललकि लोचन निधि पाई । १-२४७/८
 लगे लेन दल फूल मुदित मन । १-२२७/११
 लगे सराहन भरत सुभाऊ । २-२११/४
 लगे सँभारन निज निज अनी । ६-५४/४
 लगे संग लोचन मनु लोभा । १-२१८/२
 लघु तापस कर बाग बिलासा । ५-५६/२
 लघु तिय कुल करतूति मलीनी । २-२२२/६

लघु बिसाल नहिं बरनि सिराही । १-१३/३
 लघुमति चापलता कवि छमहूँ । २-३०३/११
 लघु मति बहुत मनोहरताई । १-३२२/११
 लघुमति मोरि चरित अवगाहा । १-७/५
 लघुता ललित सुबारि न थोरी । १-७२/११
 लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा । १-५/७
 लछिमन अभय बांह तेहि टोन्ही । ६-११/११
 लछिमन इहाँ इत्यो ईंद्रजीता । ६-११८/११
 लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची । ६-८८/७
 लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर । ६-५४/५
 लछिमन कहूँ कटु बचन कहाए । ६-१८/८
 लछिमन किए सकल सत खंडा । ६-८२/३
 लछिमन कृपासिंधु पहिं आए । ६-७६/५
 लछिमन छजड़े बिसिख कराला । ६-७५/१०
 लछिमन तेहि बहुबिधि समुझावा । ४-११/८
 लछिमन देखहु परम सुहाई । ४-१५/११
 लछिमन प्रनु चरनन्हि सिरुनावा । ३-१६/११
 लछिमन बचन कहे छल हीना । ३-५३/५
 लछिमन बचन बाबु कुल घाती । ५-५१/८
 लछिमन बिहसि कहा सुनु माता । ३-२७/३
 लछिमन रधि निज हाथ डसाए । ६-१०/३
 लछिमन राम चरन रति मानी । १-११७/३
 लछिमन राम चरित सब भाषा । ४-४/११
 लछिमन राम सरिस सुत पाए । २-२१०/६
 लछिमन सादर चरन पखारे । ३-४०/११
 लता निहारि नवहिं तरु साखा । १-८४/११
 लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे । ६-४५/११
 लरत सुगट नहिं मानहिं हारी । ६-४५/६
 लरिकाईं शिषि आसिष पाई । ५-५१/११

लरहिं सुखेन कालु किन होऊ । १-२८३।२
 लव कुस बेद पुरानन्ह गाए । ७-२४।६
 लव निमेष जुग सय सम जाहीं । १-२५७।८
 लवन बिना बहु बिंजन जैसे । ७-८३।५
 लसन्नाल बालेन्दु कंठे मुजंगा । ७-१०७।६
 लहत सुजस अपलोक बिभूती । १-४।७
 लहहिं दरसु निज निज अनुहारी । २-२७३।३
 लहहिं भगति गति संपति नई । ७-१४।५
 लहहिं लोग सब लोचन लाहू । २-३।३
 लहहिं सकल सोमा अधिकाई । १-१०।२
 लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी । २-११३।५
 लहिअ न कोटि जोग जप साधे । १-६९।८
 लहेउं आजु जगजीवन लाहू । १-३३।७
 लहेउं लाहु जग जनमु भए को । २-३०६।६
 लाग कहै रघुपति गुन गाहा । ७-६३।६
 लाग सो कहै राम गुन गाथा । ६-५६।४
 लागइ लघु बिरंचि निपुनाई । १-९३।८
 लागत मोहि नीक परिनामू । २-२६।०।८
 लागि अगम अपनी कदराई । २-७।१
 लागि दया कोमल चित संता । ३-१।९
 लागि देखि सुंदर फल रूखा । ५-१६।७
 लागि समाधि अखंड अपारा । १-५७।८
 लागिहि तात ब्यारि न मोही । २-६६।६
 लागी दया देखि करि मोही । ४-२७।५
 लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा । ६-४८।८
 लागे कहन कथा अति सुंदर । ५-३२।३
 लागे किंनर गुन गन गावन । ६-९।८
 लागे घर घर होन बधाए । १-२९।५।२
 लागे परुसन निपुन सुआरा । १-९।८।७

लागे मर्दे मुज बल नारी । ६-४३।७
 लागे रवै मूढ़ सोइ रचना । ५-२४।४
 लागेउ वृष्टि करै बहु बाना । ६-७२।२
 लागेसि अघम पचारै मोही । ६-७३।५
 लागेसि अघम सिखावन मोही । ५-२३।३
 तातन्हि हति हति चले पराई । ६-७।३
 ताम कि रघुपति भगति अकुंठा । ६-२।८
 लिए उठाइ लाइ उर रामा । १-३०७।७
 लिए चोरि चित राम बटोही । २-१२२।८
 लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई । ४-३।५
 लिए बोलि अंगद हनुमाना । ६-४६।१
 लिए बोलि पुनि जाचक बृंदा । १-३३।०।५
 लिए सुभट साहनी बोलाई । २-२७।३
 लिए संग बिहसे झौ भाई । ३-१।७
 लिए आरती मंगल शारी । १-३०७।४
 लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू । १-२५।१।४
 लिखा बिरंचि जरठ मति भोरै । ६-२८।३
 लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई । १-६।११
 लीन्ह अवधपति सबु सुखु माने । १-३२।५।६
 लीन्ह उठाइ उमगि अनुसारा । २-११।०।३
 लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी । ७-११।२।२
 लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी । १-१।५।६
 लीन्हे सकल विमान चढ़ाई । ६-११।८।१
 लीन्हसि परम भगतिबर मागी । ४-१।०।६
 लीलहिं नाघउं जलनिधि खारी । ४-२९।८
 लबुध मधुप इव तजइ न पासू । १-१६।४
 लूक न असनि केतु नहिं राहू । ६-३।१।९
 लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू । २-२२।६।६
 लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि । २-६।७

लेन प्रसून चले दोउ माई । १-२२६।२
 लेब मली बिधि लोचन लाहु । १-३०१।६
 लेहउँ दिनकर बंस उदास । १-१८६।२
 लेहि न बासन बसन चोराई । २-२५०।३
 लेहु तात जग जीवन लाहु । २-७३।८
 ले उछंग सुंदर सिख दीन्ही । १-१०१।२
 ले जातेउँ सीतहि बरजोरा । ६-२१।५
 ले पादुका अवधपुर आए । ७-६४।७
 ले रथु जाहु राम के साथ । २-१३।६
 ले रथु संग सखा तुम्ह जाहु । २-८०।८
 ले ले दंड छाडि नृप दीन्हे । १-११३।७
 ले ले नाम पुरुष अरु नारी । १-३२८।६
 ले ले नामु रामु अरु सीता । १-२१६।७
 ले ले नाम सकल सनमाने । २-११०।८
 ले सहाय धावा मुनि द्रोही । १-२०९।३
 लोक बिसोक बनाइ बसाए । १-१५।३
 लोक बेद मत मंजुल कूला । १-३८।१२
 लोक बेद बर बिरिद बिराजे । १-२४।२
 लोक बेद बाहेर सब भीती । २-११५।१
 लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना । २-३०३।८
 लोक बेद बिधि सादर कीन्ही । १-३५।११
 लोक बेदु बुध संमत दोऊ । २-२०६।१
 लोक बेद मल भूप भलाई । २-३१४।४
 लोक लाहु परलोक निबाहु । १-११।२
 लोक समस्त बिदित अति पावनि । १-३४।३
 लोकप करहि प्रीति रूख राखें । २-१।३
 लोकप जाके बंदीखाना । ६-२१।४
 लोकहुँ बेद न आन उपाऊ । १-२।६
 लोकहुँ बेद बिदित नहिं गोई । २-२६६।६

लोकहुँ बेद बिदित सब काहू । १-६।८
 लोग कहेउ गुर साहिब द्रोही । २-२०४।११
 लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे । २-८४।४
 लोग सिहाहिं प्रेम कै सीती । २-११३।११
 लोचन ओट बैठ मुह गोई । २-५।६
 लोचन ओट रामु जनि होही । २-४४।२
 लोचन जल बह पुलक सरीरा । ३-५।१०
 लोचन नीर पुलक अति गाता । ५-३१।८
 लोचन मोरपरख कर लेखा । १-११२।३
 लोचन ललित भरे जल सिय के । २-६३।११
 लोचन लाम अवधि अनुमानी । १-३५।८।२
 लोचन लाहु लेहु छन एही । २-११३।६
 लोचन सहस न सूझ सुमेरु । २-२१४।४
 लोचन सुखद बिस्व चित चोरा । १-२१४।५
 लोचन सुफल करउँ उरगारी । ७-७४।६
 लोचन सुफल करौं मैं जाई । ६-६२।७
 लोपेउ काल बिदित नहिं केहू । २-३०९।४
 लोम न छोम न राग न द्रोहा । २-१२१।११
 लोम बात नहिं ताहि बुझावा । ७-१११।४
 लोम मोह मच्छर मद माना । ५-४६।११
 लोमानरथ हरष भय त्यागी । ७-३०।२
 लोमी हृदय बसइ धनु जैसैं । ५-४७।७
 लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा । २-८८।३
 लोलुप भूमि मोग के मूखे । २-१७८।७
 लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी । १-३।१
 लंका अचल राजु तुम्ह करहू । ५-२२।१
 लंका गहि समुद्र महैं बोरौं । ६-३३।२
 लंका जाहु कहेउ भगवाना । ६-१०६।११
 लंका जाहु तात मम कामा । ६-१६।६

लंका द्वार राखि पुनि आयो । ६-७६।१
 लंका मनहुँ विभीषन पाई । ५-१०।५
 लंका सन्मुख सिखर चलावहिं । ६-४।६
 लंका रहइ को पटई लेना । ६-५४।७
 लंकापति रघुपति मन भाए । ७-१६।७
 लंपट काम लोम अति क्रोधी । ७-३९।४

व

वितर्क वीथि संकुले । ३-३।१४
 विभु व्यापक ब्रह्म वेदस्वरूप । ७-१०७।१

श

शची पति प्रियानुज । ३-३।१२
 शमन सुकर्कश तर्क बिधादः । ३-१०।९
 श्रद्धा रितु बसंत सम गाई । १-३६।१२
 श्रम फल पढ़े किएँ अरु पाएँ । ३-२०।९
 श्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई । २-१३।७।८
 श्रमित बसन बिनु जाहिँ न जोए । २-९०।३
 श्रवन नयन मन गोचर बरनी । २-११९।३
 श्रवन प्रजंत सरासनु तान्यो । ६-७०।१
 श्रवन मूदि न त चलिअ पराई । १-६३।४
 श्रवन रंध अहिमवन समाना । १-११२।२
 श्रवन रंध होइ उर जब आई । १-१४४।७
 श्रवन सुखद अरुमन अभिरामा । ७-५२।४
 श्रवन सुमग भूषन छबि छाए । १-२३२।३
 श्री बिमोह जिसु रूमु निहारी । १-१२१।४
 श्री समेत प्रभु बैठे ता पर । ६-११८।४
 श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी । १-७१।३
 श्रीमुख तीरथ राज बड़ाई । २-१०५।३
 श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी । २-३२०।५

श्रीरघुनाथ विमल जसु गावहिं । ६-७६।३
 श्रीरघुपति प्रताप उर आना । ७-१२।२
 श्रीरघुबीर चरन रति चहहीं । ७-२४।५
 श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना । ७-६५।६
 श्रीरघुबीर हृदय नहिँ जाकेँ । ६-२०।१०
 श्रीराम सगुन सरूप । ६-११२।१४
 श्रुति कह अधिक एक तेँ एका । ३-४१।७
 श्रुति कह परम धरम उपकारा । १-८३।१
 श्रुति कह संत मित्र गुन एहा । ४-६।६
 श्रुति बिरोध रत सब नर नारी । ७-१७।१
 श्रुति सारदा न बरने पारा । ७-५१।२
 श्रुति सिद्धांत नोक तेहिँ जाना । ७-१२६।३
 श्रुति संभव नाना सुम कर्मा । ७-४८।१

ष

षन्मुख जन्नु सकल जग जाना । १-१०२।८

स

सकइ को टारि टेक जो टेकी । २-२५४।८
 सकइ न बरनि सहस मुख जाहू । १-३३०।८
 सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी । १-२५२।५
 सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते । १-५४।१
 सकल अमित अनंत रघुनाथा । ७-१०।३
 सकल अमंगल मूल नसाहीं । १-३१४।१
 सकल असमसर कलाँ प्रबीना । १-२१५।४
 सकल एक तेँ एक सचेता । १-११६।५
 सकल कथा मुनि कहा बिसेषी । १-२०९।१२
 सकल कपट अघ अवगुन खानी । २-१६।१४
 सकल कपिन्ह कहूँ आयसु दीन्ह्य । ६-४।३
 सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा । ६-८४।६

सकल कपिन्ह महें तेहि बनु थोरा । ५-५३७	सकल भार्ये सेवहिं सनमानी । २-१२८८
सकल करइ सादर सुख माने । १-११४१५	सकल भुवन अपनै बस कीन्हे । १-२५६१९
सकल करहिं पद पंकज सेवा । १-१०६१८	सकल भुवन भरि रहा उछाहू । १-१००१६
सकल करहिं रघुपति गुन गाना । १-१०४१६	सकल भुवन में फिरेउं बिहाला । ४-५१२
सकल कला सब बिद्या हीनू । १-८१८	सकल भुवन सोभा जनु रोकी । १-२१२१८
सकल कलुष कलि साउज नाना । २-१३२१३	सकल लोक जग पावनि गंगा । १-१११७
सकल कहहिं जय कृपा बरुथा । ५-४८१२	सकल लोक सुख संपति छाए । १-१८९१६
सकल कहहिं दसकंधर पोधा । ६-४६१८	सकल सनेहैं बिकल नए भारी । २-१८३१३
सकल कहहिं मगु दीख हमारा । २-१०८१४	सकल समौ सुख लहेउ बिसेषी । १-२१०१२
सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता । ४-११४११९	सकल सराहत कृपा निधानहिं । २-२४३१४
सकल कहहु संकर सुख सीसा । १-१०९१८	सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती । ४-४१४
सकल काजु मा सिद्ध तुम्हारा । १-१८८१७	सकल सँवारे नख अरु सीसा । १-३३२१६
सकल काम दायक भगवाना । ४-९११४	सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी । १-३४५
सकल बलै कर साजहिं साजू । २-१८४१५	सकल सिद्धि सुख संपति रासी । १-३०११३
सकल कुअर ब्याहे तेहिं करनी । १-३२५१९	सकल सिद्धि संपति तहैं छाई । १-६४१७
सकल जनक कर करहिं बखाना । १-३०६१२	सकल सुकृत फल राम सनेहू । १-२६१२
सकल जिजाउ सुरेस सुजाना । ६-११३१२	सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू । २-२६४१६
सकल जीव जग दीन दुखारी । १-२२१७	सकल सुखद ससिकर सम हासा । ४-४६१४
सकल जीव तहैं आनहि भौती । ४-८०१३	सकल सुखद सेवक सुर धेनू । २-११६१७
सकल ताड़ना के अधिकारी । ५-५८१६	सकल सुनहु बिनती कछु मोरी । ६-०१७
सकल दोष छल बरजित प्रीती । १-१५२१७	सकल सुमार्य सुंदरी त्यामा । १-३२११५
सकल धरम धरनीधर सेषू । २-२०५१२	सकल सुमंगल सदन सुहावन । २-२३८१२
सकल धरम धुर धरनि धरत को । २-२३२१९	सकल सुरन्ह बिधिवत फलु दीन्हा । १-६४१२
सकल नगर बसिन्ह सुख दीन्हा । १-११९१७	सकल सैल सर लिए बोलाई । १-१०२१९
सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें । ३-३५१७	सकल सोक कूस नहिं मग जोगू । २-१८४१६
सकल परम गति के अधिकारी । ४-२०१४	सकल सोक दायक अनिमाना । ४-४३१६
सकल बरातिन्ह मंदिर भूले । १-३०३१८	सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे । ४-१६१२
सकल बाँधि कपीस पहिं आने । ५-५११२	सकहिं न खेइ ऐक नहिं आवा । २-२४५१४
सकल विभूषन सजें सरीरा । १-३१४१२	सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू । १-३६०१६

सकहीं न राखि राम कर द्रोही । ५-२२।८
 सकलित श्रवणमग चलैउ सुहावन । ५-३५।८
 सकुच सनेह बिबस रघुराजू । २-३५।३
 सकुच सनेहैं सिधिल सब गाता । २-२३।४
 सकुच स्वामि मन जाई न पावा । २-२६।४
 सकुचत बोलत बचन सिखे से । २-३०।३
 सकुचति महि जिमि हृदय हमारे । २-१२।३
 सकुचि राम फिरि अरवि बिलोकी । २-३१।३
 सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने । २-१२।१
 सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी । १-१४।७
 सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई । २-१४।८
 सुकुची सिय मन महुँ मुसुकाने । २-११।२
 सखा धरम निबहइ केहि भाँती । ५-४५।५
 सखा बचन मम मृषा न होई । ४-६।३
 सखा सुसील दास अरु दासी । २-१०।४
 सखि इन्ह कौटि काम छदि जीती । १-२१।५
 सखि बिधि गति कछु जाति न जानी । १-२५।५
 सखि संदेहु होइ एहिं भेदा । २-२२।४
 सखीं उछँग बैठी पुनि जाई । १-६।६
 सखीं तबाइ गई जहँ रानी । १-२६।५
 सगुन अगुन उर अंतरजामी । ३-१०।११
 सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा । १-१४।५
 सगुन उपासन कहहु मुनीसा । ४-११।८
 सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं । २-११।६
 सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी । ४-११।१३
 सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी । २-६।६
 सगुन ब्रह्म रति उर अधिछाई । ४-१०।१६
 सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके । १-३०।११
 सगुन भए सुंदर सुभ नाना । ५-३४।४

सघट सबाल आव बर नारी । १-३०।४
 सचिव महाजन सकल बोलाए । २-१६।४
 सचिव महाजन सकल बोलाए । २-१७।२
 सचिव सभासद सब अनुरागे । २-३०।५
 सचिव सहित रथ देखेसि आई । २-१४।५
 सचिव बोलि सठ लाग बचावन । ५-५।१०
 सचिव हृदयें तिनि टारुन दाहू । २-१४।२
 सचिवन अस मत प्रमुहि सुनावा । ६-८।४
 सचिवन्ह सहित विभीषनु आए । ५-२३।६
 सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे । १-२४।२
 सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी । ५-१३।१
 सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ । २-१७।४
 सजल भए द्यौ नयन बिसाला । ६-११।८
 सजहि सुलोचनि मंगल साजू । २-२६।३
 सजहु बरात बजाइ निसाना । १-२३।८
 सजि नवसप्त सकल दुति दामिनि । १-२६।१
 सजि सजि सेन भूप सब घाए । १-१७।४
 सजि सुंदर पालकीं मगाई । १-३३।८
 सजे सबहिं हाटक घट नाना । १-१८।३
 सठ अजहूँ जिन्ह कें उर सात्वा । ६-२४।४
 सठ चाहत रघुपति बल देखा । ३-०।५
 सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती । ५-४०।५
 सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई । ६-८।३
 सत चेतन घन आनंद रासी । १-२२।६
 सत जोजन गा सागर पारा । १-२०।४
 सत जोजन तन परम बिसाला । ६-३।५
 सत समाज नित सुनिहि पुराना । १-१४।२।८
 सत हरि भजनु जगत सब सपना । ३-३।५
 सतसंगति महिमा नहिं गोई । १-२।२

सतसंगति संसृति कर अंता । ७-४४४
 सत्य कहउँ करि संकरु सारखी । २-३०६
 सत्य कहउँ दोउ मुजा उठाई । १-१६४।५
 सत्य कहउँ मोहि जान दे माई । ५-१।५
 सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें । १-८।११
 सत्य कहें नहिं दोषु हमारें । २-१८।४
 सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा । २-३०।३
 सत्य नाम करु हरु मम सोका । ५-११।१०
 सत्य पयनसुत मोहि सुनाई । ६-२३।५
 सत्य सत्य पन सत्य हमार । १-१५।१५
 सत्य सदा संतत सुचि जानी । १-४४।२
 सत्य सनेह सील सुख सागर । २-३०।५
 सत्य सपथ करुनानिधान की । ५-१२।६
 सत्य सील दृढ ध्वजा पताका । ६-७९।५
 सत्य सुकृत सुख सोवैं सुहाई । २-३००।१
 सत्य सुगम निगमादि बखानी । ७-८।११
 सत्यकेतु तव पिता नरेसा । १-१६।३।१
 सत्यकेतु तहैं बसइ नरेसु । १-१५।२।२
 सत्यधाम प्रभु दीनदयाला । ५-५६।७
 सत्यसार कबि कोबिद जोगी । ३-४४।८
 सत्यसंध कहूँ तून सम बरनी । २-३४।८
 सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं । २-२१।४
 सत्यसंध दृढ़व्रत रघुराई । २-८।११
 सत्यसंध पितु कीरति प्रीती । २-३०।११
 सतिहि बिलोकि जरे सब गाता । १-६२।३
 सती नाम तब रहा तुम्हारा । ७-५।२
 सती संरीर रहिहु बौरानी । १-१४।०।४
 सती जो कीन्ह चरित सबु जाना । १-५।४
 सदय हृदयै दुर्यु भयउ बिसेषी । २-८।११

सदा एक रस अज अबिनासिहि । ७-२१।१
 सदा एकरस बरनि न जाई । १-४१।८
 सदा एकरस सहज उदासी । ६-१०९।५
 सदा कहहु यहु सबु जगु जाना । २-४८।५
 सदा काम के चरे जानी । १-८।७
 सदा जहाँ सिव उमा निवासू । १-१०।४।८
 सदा रहेहु पुर आवत जाता । ७-११।३
 सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी । ७-१०।१।११
 सदा स्वतंत्र एक भगवाना । ६-७।२।२
 सदा सहाय महेशु भवानी । २-२८।४।४
 सदा सुखद दुख पुंज नसावनि । ७-६।३।३
 सदा संभु अरधग निवासिनि । १-१७।३
 सनमाने सब रवि कुल दीपा । २-२९।२।२
 सनमुख चला काल जनु क्रुद्धा । ६-६६।१
 सनमुख चले हूह दे बंदर । ६-८।१।१
 सनमुख ते करहिं प्रहार । ३-११।६
 सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे । ५-२३।३।३
 सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ । २-२६।८।८
 सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो । ७-४३।७
 सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला । ६-१३।२
 सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू । २-३०।६।३
 सनमुख संकर आसनु दीन्हा । १-५।१।४
 सनमुख होइ न सकत मन मोरा । ५-३।१।६
 सन्मुख होइ न सके तेहि अवसर । ६-४।१।६
 सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी । ७-१२।०।२
 सपदि चले कमलापति पाहीं । १-१३।५।२
 सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई । ६-८।१।१
 सपदि होहि पच्छी चंडाला । ७-११।१।१५
 सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी । १-४।२।६

सपनेहुँ आन पुरुष जग नाही । ३-४।१२
 सपनेहुँ आन भरोस न देवक । ३-९।२
 सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा । ४-८६।४
 सपनेहुँ जिन्ह केँ धरम न दाया । १-१८०।१
 सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही । २-१४।१
 सपनेहुँ नहिँ अग्यान प्रसंगा । ४-४२।७
 सपनेहुँ नहिँ देखइ परदोषा । ३-३५।४
 सपनेहुँ नहिँ प्रतिपच्छिन पावा । २-१०४।५
 सपनेहुँ प्रमु परमारथ नाही । ४-४६।६
 सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही । ५-३१।२
 सपनेहुँ समर कि जीतिअ सोई । ६-५५।८
 सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही । १-४९।८
 सपनेहुँ सुनिअ न बेट पुराना । १-१८२।८
 सपनेहुँ सो न राम हियेँ हेरी । १-२८।७
 सपनेहुँ संकट परइ कि सोई । ३-२७।४
 सपनेहुँ संतसगा नहिँ देखी । १-११४।२
 सफल करहिँ जग जाचक बानी । २-२०३।८
 सफल जनम भए तुम्हहिँ निहारी । २-१३५।२
 सफल होन हित निज बागीसा । २-१०२।८
 सब अपराध छमिहिँ प्रमु तोरा । ६-१९।६
 सब कर करिँ जनमान बहता । ४-१८।६
 सब कर धरम सहित हित होई । २-२१०।८
 सब कर पट प्रहार नित सहई । ४-१०५।११
 सब कर फल हरिँ नगति भवानी । ४-१२५।७
 सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना । १-१०२।२
 सब कर भल सबकेँ मन माही । २-२८८।४
 सब कर मरन बना एहिँ देखेँ । ६-५१।५
 सब कर सब बिधि करिँ परितोषू । २-१६५।१
 सब कहैँ सुनिअ उचित फलदाता । १-२२१।५

सब कहैँ सुलम पदारथ चारी । २-२१४।७
 सब कहैँ परइ दुसह दुख मारु । २-४०।४
 सब कहैँ लै सोइ बिबर देखवावा । ४-२३।७
 सब कृतग्य नहिँ कपट सयानी । ४-२०।८
 सबकेँ हृदयेँ निरंतर बासी । ३-१०।१७
 सब केँ उर अनंत कियो बासू । १-३५३।५
 सब केँ जिन्हहिँ नमत सिव मुनि अज । ४-१४।९
 सब केँ जाइ करहुँ तुम्ह बाधा । १-१८०।८
 सब गुन धाम महा रनधीरा । १-१५२।४
 सब गुन धाम राम प्रमुताई । २-३५।३
 सब चितवहिँ चित मन मति लाई । २-११५।२
 सब चुप चाप चले मग जाहीँ । २-३२।१२
 सब जाति कुजाति भए मगता । ४-१०१।६
 सब जीवहुँ सम प्रिय मोहिँ सोई । ४-८५।९
 सब तजि करीँ चरन रज सेवा । ३-१३।७
 सब तजि मजनु करीँ दिन राती । ४-६।२१
 सब तरु कुसुमित पल्लव नए । ४-३१।२
 सब तीरथन्ह बिचित्र बनाए । १-१५४।८
 सब ते अधिक मनुज मोहिँ भाए । ४-८५।४
 सब ते दुर्लभ कवन सरीरा । ४-१२०।३
 सब तेँ कटिन जाति अदमाना । १-६२।७
 सब तेँ कटिन राजमदु माई । २-२३०।६
 सब तेँ सेवक धरमु कटोरा । २-२०२।७
 सब द्विज उठेँ मानि बिस्वासू । १-१४२।७
 सब दुखु मिटिहिँ राम पग देखी । २-२११।८
 सब निज तन छवि रति मदु मोचनि । १-३१०।१
 सब निज भाग सराहन लागे । २-२७३।७
 सब पर पितहिँ प्रीति सम होई । ४-८६।३
 सब पर मोहिँ बराबरिँ दाया । ४-८६।७

सब प्रकार प्रभु पूरन कामा । ५-२६।३
 सब प्रपंच तहैं आनइ आना । ४-२०।४
 सब परिहरि करिहउँ सेवकाई । ४-६।१६
 सब बिधि अगहु अगाध दुराज । २-४६।७
 सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा । २-५।८
 सब बिधि कुसल कुबेण बनाई । १-१६०।२
 सब बिधि कुसल कोसला भंडन । ४-५०।८
 सब बिधि घटय काज मैं तोरें । ४-६।१०
 सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी । ४-४६।३
 सब बिधि तोर सँवारब काजा । १-१६८।६
 सब बिधि भरत सराहन जोगू । २-३२५।३
 सब बिधि भामिनि भवन भलाई । २-६०।४
 सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा । ४-१०३।३
 सब बिधि सुखट परमहित जानी । ६-६०।१५
 सब भइ मगन करुन रस सानी । २-२८३।५
 सब भए मगन देखि दौड बीरा । २-११३।४
 सब भूषन भूपित बर नारी । ५-२२।४
 सब मानिअहिं राम के नातें । २-४३।७
 सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू । १-४।३
 सब मिलि देहिं नहीपन्ह गारी । १-२६।१५
 सब मिलि होहिं न कृपानिधाना । २-६५।६
 सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए । १-४४।३
 सब मोहि कहैं जानै दृढ़ सेवा । ३-१५।१०
 सब लघु लगे लोकपति लोका । २-२१४।१९
 सब सन कहेसि सुभट जे मारे । ६-४४।३
 सब सनमानि कृपा निधि फेरे । २-३१८।८
 सब सनमानि बहोरि बहोरी । २-३१७।८
 सब समाजु मुट मंगल मूला । २-२३५।८
 सब समेटि बिधि रची बनाई । १-३३३।२

सब साधन कर यह फल सुंदर । ४-४८।४
 सब सिधि तव दरसन अनुगामी । १-३४२।५
 सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू । १-१११।३
 सब सुख करनि हरनि सब सूला । २-८६।४
 सब सुधि सरस सनेहैं सगाई । २-३१३।१९
 सब सुंदर सब बिरुज सरीरा । ४-२०।५
 सब सुपास सब भाँति सुहाई । १-२१३।५
 सब सुभगुन बसिहहिं उर तोरें । ४-८४।६
 सब सेवक गन गरहिं गलानी । २-२०२।८
 सब संत सुखी बिचरति मही । ४-१३।१६
 सब संपदा चहे सिव द्रोही । १-२६६।२
 सब हमार प्रभु पग पग जोहा । २-१३५।६
 सब उतपातु भयउ जेहि लागी । २-२००।५
 सबु कोउ कहइ रामु सुटि साधू । २-३१।६
 सबु तजि राम चरन मनु लावा । २-१८९।७
 सबु पायउँ रज पावनि पूर्जे । २-२६
 सबु सुखु सुकृतु सिसान हमार । २-६१।४
 सबुइ उचित सब जे कछु कहहू । २-१८०।८
 सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा । ५-२४।२
 सबदरसी अनवद्य अजीता । ४-४१।५
 सबदरसी तुम्ह अंतरजामी । ३-८।७
 सबदरसी सब अंतरजामी । १-५२।३
 सबरी कें आश्रम पगु धारा । ३-३३।५
 सबरी गान मृगी जनु मोही । २-१६।१९
 सबरी परी चरन लपटाई । ३-३३।८
 सबरूप सदा सब होइ न गो । ६-११०।१५
 सबहि जयोचित आसन दीन्है । १-११।१९
 सबहि जिअत जेहिं भेंटहु आई । २-५६।३
 सबहि नचावत राम गोसाई । ४-१०।७

सबहि भीति भल मानेउ मोरा । २-२११।२
 सबहि भीति संकरु अकलंका । १-४१।४
 सबहि सहित सुशु पायउ समा । २-८६।३
 सबहि सुनाइ कहत जस भयउ । ५-४०।९
 सबहि सोहाइ मोहि सुठि नोका । २-१७।७
 सबहिं कीन्हि बहु भीति बड़ाई । २-२११।७
 सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे । ७-८।९
 सबहिं मनोहर मंगल साजे । १-२८५।९
 सबन्हि परस्पर श्रुति बड़ाई । ७-२२।२
 सबन्हि बनाए मंगल हेतु । ७-८।२
 सबहीं कहा मंत्र भल भाई । ५-२३।८
 सबहीं संघ्याबंदनु कीन्ह्य । १-२२५।९
 सम कै सकति संनु धनु भानी । १-२९१।६
 समय दिसिप नित नावहिं माथा । ६-१०३।११
 समय बिबेक कटकु सबु भागा । १-८३।८
 समय सप्रेम परम सबु पाएँ । १-२२५।७
 समय हृदयें बिनवति जेहि तेही । १-२५६।४
 समयें सकौच जात कहि नाहीं । २-३०७।१
 सभा माझ पन करि पद रोषा । ६-३३।८
 सभा सहित मुनि नए बिदेहू । २-२५६।१
 सभां गयउ उठि होत बिहाना । ६-३७।१
 सभां बहोरि बैठ सो जाई । ६-७।५
 सम जम नियम सिलीमुख नाना । ६-७९।१
 सम दुख सुख सब रोवहिं सानी । २-२५५।६
 सम सनेहें जननीं पहुँचाई । २-३११।५
 सम समधी देखे हम आजू । १-३११।६
 समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते । २-१६।६
 समउ सनेहु न जाइ बखाना । २-६८।२
 समउ सनेहु न सो कहि जाई । २-३००।६

समउ सनेहु सुभिरि सकुचानी । २-३१७।३
 समउ समाजु मनोहरताई । १-३५४।४
 समदरसी मुनि बिगत बिमेदा । ७-३१।५
 समधी दसरथु जनकु पुनीता । १-३०३।२
 समधी सम सादर सब भीती । १-३२०।३
 समन कोटि सत सरिस कराला । ७-११।१
 समन दुरित दुख दासिद दोषा । १-४२।४
 समन सकल भव रुज परिवारु । १-०।२
 समन सकल संताप समाजु । २-३२५।७
 समबल अधिक होउ बलबाना । १-२८३।१
 समय चुकें पुनि का पछितानें । १-२६०।३
 समय बिचारि पत्रिका काढ़ी । ५-५५।८
 समय सुहावनि पावनि मूरी । १-४१।१
 सम्यक ग्यान सकृत् कोउ लहई । ७-५३।३
 समर जाय्य जप कोटिन्ह कोन्है । १-२८२।४
 समर जलंधर सन सब हारे । १-१२२।५
 समर बिमुख मैं हतउ न काहू । ३-१८।१२
 समर भई सुमटन्ह श्रम घनी । ६-७१।९
 समर भयंकर अतिबल बीरा । १-१५।८
 समर सरोष राम मुखु मेखी । २-२२८।४
 समर सूर जानहिं बहु माया । ६-७८।४
 समर सेन तजि गयउ पराई । १-१५७।२
 समरभूमि तेहि जीतन कोई । १-१३०।३
 समर भूमि नए बल्लभ प्राणा । ६-४१।८
 समस्त दूषणापहं । ३-३।१०
 समाचार तब पूछेहु आई । २-३८।९
 समाचार पुरबासिन्ह पाए । १-२११।११
 समाचार पुरलोगन्ह पाए । १-१७७।११
 समाचार मिथिलापति पाए । १-२१३।८

समाचार रावन्हा जनावा । ६-१८/१
 समाचार ते तुम्ह चलि आएहु । ६-१२०/२
 समाचार सब गुरहि सुनाए । ७-२/१
 समाचार सब ताहि सुनाए । ५-४२/३
 समाचार सुनि सुनि मुनि आए । २-१३३/५
 समाधानु करि सुबस बसाए । २-३२२/५
 समिटे सुमट एक तें एका । १-२९१/४
 समुझइ खग खगही कै भाषा । ७-६१/१
 समुझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा । ७-१०९/५
 समुझस घरित होति मोहि ब्रीडा । ७-५७/३
 समुझत देह दसा बिसराई । ७-८२/१
 समुझत नहिं कछु लाभु न हानी । १-२५७/२
 समुझत बनइ न जाइ बखानी । ७-११६/१
 समुझत मन दुख भयउ अपारा । ७-०/१
 समुझत सुखद न परति बखानी । १-२०/७
 समुझत सुरउट सुनत भय मोचनि । ६-१५/७
 समुझहु छाडि प्रकृति अभिमागी । ५-५६/३
 समुझाई गहि बाँह उठाई । ३-२१/१
 समुझाई सब समा सुबानी । २-२४७/४
 समुझि करिअ मल कह सबु कोऊ । २-२३०/३
 समुझि तासु बघ चुप करि रहहीं । ६-१७/७
 समुझि न परइ झूठ का साचा । ३-१०/२४
 समुझि न परइ बुद्धि भ्रम सानी । १-१३३/६
 समुझि परइ जस कारन मोही । १-१२०/५
 समुझि परा प्रसाद अब तौरें । ६-१५/५
 समुझि परी कछु मति अनुसारा । १-३०/१
 समुझि प्रताप प्रेम अति छावा । ७-५१/२
 समुझि हृदयें परिनाम उछाहू । २-६१/८
 समुझी नहिं हरि गिरा निगूढा । १-१३२/३

सम सुसेव्यमन्वहें । ३-३/२०
 स्याम सरोज नयन भरे बारी । १-१५/७
 स्यामल गात अरुन कर चरना । ७-७८/६
 स्यामल गात प्रनत भय मोचन । ५-४४/४
 स्यामल गौर किरोर सुहाए । १-२३१/३
 स्यामल गौर मनोहर जोरी । १-२९८/४
 स्यामा बाम सुतरु पर देखी । १-३०२/७
 स्यंदन घालि तुरत गृह आना । ६-४२/८
 स्यंदनु मंजि सारथी मारा । ६-८२/५
 सर छौंइइ होइ लागहिं नागा । ६-७२/१०
 सर निरझर जल टाउं देखाउब । २-१३५/७
 सर निंदा करि ताहि बुझावा । १-३८/४
 सर पावक तेज प्रचंड दहे । ७-१३/४
 सर मंदिर बर बाग बनाया । ६-५६/१
 सर सम लगे मातु उर करके । २-५३/१
 सर संधान कीन्ह करि दाषा । ६-७५/१५
 सर हति कृत अनंत जुग खंडा । ६-७५/७
 सरगु नरकु जहैं लगी ब्यवहारु । २-११/७
 सरजू भिन्न भिन्न नर नारी । ७-८०/६
 सरजू सरि कलि कतुष नसावनि । १-१५/१
 सरद बिमल बिधु बटनु निहारें । २-६४/८
 सरद ससिहि जनु धितव चकोरी । १-२३१/६
 सरनागत मागत प्राहि प्रभो । ७-१३/२
 सरनागत बच्छल भगवाना । ५-४२/१
 सरन्हि काटि रज सम करि डारे । ६-६८/४
 सरन्हि मारि कीन्हैसि जर्जर तन । ६-७२/१
 सरन्हि नार घायल कपि कीन्है । २-३/१०
 सर्प होहि खल मल मति व्या । ७-१०/३
 सर्व रहित सब उर पुर बासा । १-१११/६

सर्वरूप सब रहित उदासी । ५-४१३
 सब करहिं पाइक फहराहीं । १-३०१७
 सबस देउं आजु सहरोसा । १-२०७३
 सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हें । १-२८७११
 सरल सबल साहिब रघुराजू । १-१२७
 सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता । ७-६३५
 सरल सुमाउ छुअत छल नाही । १-२३६१२
 सरल सुमाउ सबहिं सन प्रीती । ३-४५१२
 सरल सुमार्यो भगति मति मेई । २-२४३७
 सरस राग बाजहिं सहनाई । १-३०१६
 सरस राग बाजहिं सहनाई । १-३४३१२
 सरस होउ अथवा अति फीका । १-७१११
 सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा । १-१८
 सरसी सीपि कि सिंधु समाई । २-२५६७
 सरित सरोवर देखि न जाहीं । २-८२८
 सरित सिंधु संगम जनु बारी । २-३०१६
 सरित सुहावनि सो छबि छाई । १-४०११
 सरितन्हि जनक बँधाए सेतु । १-३०३५
 सरिस स्वान मधवान जुबानू । २-३०१८
 स्रग सुगंध भूषित छबि छाए । १-३५४१२
 स्रग सुगंध मनि मंदिर माहीं । १-३५५३
 स्रवत नयन जल पुलक सरीरा । ७-३२५
 स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए । २-५१४
 स्रवत सलिल राजिव दल लोचन । ६-६०१७
 स्रवहिं गर्भ रजनीघर घरनी । ५-३५७
 स्रवहिं सकल सरिताऽमृत धारा । १-१९०४
 सलम समूह अनल कहैं जैसें । ६-८५४
 सलिल सुदासम मनि सोपाना । १-२११६
 सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी । २-१७५

सर्वदरसी जानहिं हरिलीला । १-२१६
 स्वपद्य किरात कौल कलवारा । ७-११५
 स्वबस अनंत एक अबिकारी । ६-७२१११
 स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी । ७-१४६
 स्वगंत स्वत्य अंत दुखदाई । ७-४३११
 स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा । ७-६२७
 स्वाति सारदा कहहिं सुजाना । १-१०८
 स्वामि सनेहैं सराहत साधू । २-२६८६
 स्वामि समाज सकोच बिहाई । २-२९१७
 स्वामि सुरति सुरबीधि बिकासी । २-३२४५
 स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं । २-२१४
 स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी । ४-२२४
 स्वार्थ छल फल चारि बिहाई । २-३००३
 स्वार्थ रत प्रमु भगति बिसारी । ६-१०१११
 स्वार्थ रत परलोक नसाना । ७-४०४
 स्वार्थ रहित सखा सबही के । २-४३६
 स्वार्थ लागि करहिं सब प्रीती । ४-११२
 स्वार्थु सुजसु धरमु परमारथु । २-३१४३
 स्वास जरइ छन माहिं सरीरा । ५-३०७
 स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई । ७-३१२
 ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू । २-२८४
 ससि केसरी गगन बन चारी । ६-११२
 ससि मलीन रबि सीतल लागे । १-२११२
 ससि महुं प्रगट भूमि कै झाई । ६-११५
 ससि समाज मिलि मनहु सुराती । १-१४११
 ससिहि चकोर किसोरकु जैसें । १-२६२७
 ससिहि भूष अहि लोम अनी के । १-३२४११
 ससिहि समीत देत जयमाला । १-२६३७
 ससुर सुरेस सखा रघुराऊ । २-१०६

सहगामिनिहि बिभूषन जैसें । २-३६७
 सहज कृपन सन सुंदर नीती । १-५७१२
 सहज छमा बरु छाई छोनी । २-२३११२
 सहज पुनीत मोर मनु छोमा । १-२३०१३
 सहज बिमल मन लागि समाधी । १-१२४१४
 सहज सनेहु बरनि किमि जाई । १-२३५१२
 सहज सनेहु सराहन लाये । १-२३७१७
 सहज सिंगार किए उटि धाई । १-११३१३
 सहज सुभाये बिबस रघुराज । २-२६५१३
 सहज सुहृद बोली मृदु बानी । २-७३११
 सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते । १-२६७१६
 सहत दुसह बन आतप बाता । ४-०११
 सहत राम नाना दुख भारा । ३-४०१६
 सहस नयन पर दोष निहारा । १-३११११
 सहसनयन बिनु लोचन जाने । २-२१७११
 सहस बदन बरनइ पर दोषा । १-३३६
 सहसबाहु सन परी लराई । १-२१११
 सहसबाहु सम सौं रिपु मोरा । १-२७०१४
 सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी । १-२१११५
 सहि कि दरिद्र जनित दुखु सोई । १-१०७१३
 सहि दुखु कंट मूल फल खाई । ५-०१२
 सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू । २-१५१६
 सहि संकट किए साधु सुखारो । १-२३१११
 सहसा कपि उपारि गिरि लीन्ह । ६-५७१७
 सहसा करि पछताहिं बिमूढा । २-११११७
 सहसा लखि न सकाहिं नर नारी । १-३१०१६
 सहित अनुज अरु मातु जानकी । ६-५१११
 सहित कोटि कुल मंगल मोरें । २-११४१८
 सहित गए जहँ कृप अगाधू । २-३०११२

सहित धरमनय बिरति बिबैका । २-२७७१३
 सहित पयाग सुभाग हमार । २-२०११५
 सहित पवनसुत उपवन जाई । ७-२५१४
 सहित पवनसुत सुख अधिकाई । ७-३२११
 सहित प्रान कज्जलगिरि जैसें । ६-१८१४
 सहित बहुतिन्ह कुअर निहारे । १-३५३१२
 सहित बिप्रतिय जे सँग आई । २-२४४११
 सहित बिभोवन प्रभु पहिं आए । ६-१०५१७
 सहित बंधु सिय सुंदर बेधा । १-५३१५
 सहित सनेह कहहिं मृदु बानी । २-७७१७
 सहित सनेह गोद बैतारी । १-७११६
 सहित सनेह जाहि दोउ भाई । १-२२४१२
 सहित समाज काननाहिं आयउ । २-३१८१२
 सहित समाज प्रेम मति माती । २-२७७१५
 सहित समाज राज पुर करहू । २-१६०१४
 सहित समाज राम पहिं आए । २-२५६१५
 सहित समाज सराहत राऊ । २-२१३११
 सहित समाज सहित बर नारी । १-१३१५
 सहित समाज सुसरित नहाए । २-२४६१७
 सहित समाज सोह नित बोखा । २-३२४१६
 सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी । १-२३१४
 सहिहि नितुर कठोर उर मोरा । ६-६०११३
 सहे धरम हित कोटि कलेसा । २-११३१३
 सहेउ कठोर बचन सठ तेरे । ६-२११४
 सहेहु बिपिन हिम आतप बाता । ६-६०१४
 साई दोह मोहि कीन्ह कुमार्ता । २-२००१६
 साक बनिक मनि गुन गन जैसें । १-२११२
 साखा तें साखा घर जाई । ५-३२१७
 सागु खाइ सत बरष गवाए । १-७३१४

सागर निग्रह कथा सुनाई । ७-६३।८
 सागर सन ठानी मधलाई । ५-५५।५
 सागर सर सरि निर्मल बारी । ६-१९८।७
 सागर सीप कि जाहि उलीचे । २-२८२।४
 साविहें सपथ अघाइ अकाजू । २-२९०।९
 सावेहें कीस कीन्ह पुर दाहा । ६-२२।७
 साजि सरासनु सायकु हाथा । २-२२९।२
 साजु अमंगल मंगल रासी । ९-२५।९
 साँझ समय तब अवसरु पावा । २-१४६।४
 सांत सुद्ध सन सहज प्रकासा । १-२४१।४
 सांति पदाहिं महिसुर अनुकूला । १-३९८।६
 सांति बिरति बिनती मुदितावन । ७-३७।५
 सांति सुमति सुधि सुंदर रानी । २-२३४।७
 साथ निषादनाथ दोउ भाई । २-२२०।४
 साथ निषादनाथ लघु भाई । २-२३२।६
 सादर उठीं माय बड़ जानी । १-३५१।२
 सादर करइ सरिस सेवकाई । २-२५१।२
 सादर जनकु मंडपहिं ल्याए । १-३९९।८
 सादर जनकसुतहिं ले आवहु । ६-१०७।४
 सादर जपहु अनैग आराती । १-१०७।७
 सादर जासु लहइ नित नासा । २-१२८।९
 सादर तासु चरन सिरुनावा । ३-५।९
 सादर निज आश्रम तब आने । ३-२।७
 सादर पाय पुनीत पखारे । १-३४९।२
 सादर प्रमुहिं देखावहिं रचना । १-२२३।८
 सादर बोलेउ काग सुजाना । ७-११४।१२
 सादर भरत सीस धरि लीन्ही । २-३१५।४
 सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी । १-४३।४
 सादर मिलन परसपर लागे । २-२७४।६

सादर मुनिबर लिए बोलाई । १-१०।३
 सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई । ७-११२।५
 सादर सकल जोहारी रानी । २-१९५।४
 सादर सकल मागने टेरे । १-३३९।९
 सादर सतानंदु सुनि आए । १-३२५।९
 सादर सब बरनहिं अति प्रेमा । ७-७।३
 सादर सासु ससुर पद पूजा । २-६०।५
 सादर सुनहिं परम अधिकारी । ७-४९।८
 सादर सुनहिं बिबिध बिहंगबर । ७-६१।४
 सादर सुनहिं बिहंग सुजाना । ७-११३।११
 सादर सुनहु सुजन मन लाई । १-३४।१३
 सादर सुनु गिरिराजकुमारी । १-११३।२
 साधक मन जस मिले बिबेका । ४-१४।२
 साधन कठिन न मन कहूँ टेका । ७-४४।३
 साधन सकल सफल करि लेखाहिं । २-१३३।८
 साधु असाधु सुजाति कुजाती । १-५।५
 साधु ते होइ न कारज हानी । ५-५।४
 साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि । १-३०।९
 साधु समीं बड़ आदर तासू । २-२७६।४
 साधु समाज भनिति सनमानू । १-१३।७
 साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा । २-१४९।४
 साधु सराहि सुमन सुर बरषे । २-२०९।७
 साधु सराहि सुमन सुर बरषे । २-२६९।९
 साधु साधु करि ब्रह्म बखाना । १-१८४।८
 साधु साधु बोले मुनि ग्यानी । २-१२५।७
 साधुन्ह सन करवावहिं सेवा । १-१८३।२
 सानुज निदरि निपातउं खेता । २-२२९।७
 सानुज भरत पयादेहिं जाहीं । २-१८७।२
 साबर मंत्र जाल सिरिजा । १-१४।५

साम दान भय भेद देखावा । १-८१३
 सार भाग ससिकर हरि लीन्हा । ६-११७
 सारद उपमा सकल डँडोरीं । १-३४८७
 सारद सेष संभु श्रुति गाए । १-२०३१
 सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा । ६-१०५१
 सावधान सुनु धरु मन माहीं । ३-३४७
 सावधान सुनु सुमति भवानी । १-१२१३
 सावधान सोउ सुनु बिहंगबर । ७-११४११४
 सावन घन घमंडु जनु टयाऊ । १-३४६११
 सावँर कुअँर सखी सुटि तोना । १-२३२८
 सास ससुर परिजनहि पिआरी । २-५७८
 सासु ससुर पितु सुख समुझाए । २-७७४
 सिअनि सुहावनि टाट पटोरे । १-१३१११
 सिख आसिप हित दीन्हि सुहाई । २-२८६१६
 सिंघ बहुहि जिमि ससक सिआरा । २-६६७
 सिखइ धनुषदिद्या बर बीरु । २-४०३
 सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ । २-३००८
 सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि । २-२८३१६
 सिथिल सरीरु सनेह न थोरें । २-११७१५
 सिद्ध भएँ नहिँ मरिहि अभागा । ६-८४१२
 सिंधु कोटि सत सम गंभीरा । ७-११३
 सिंधु पार सेना सब आई । ५-३६७
 सिंधु समीप गए रघुराई । ५-५०६
 सिंधुर मनिमय सहज सुहाई । १-२८७७
 सिबिका रुचिर साजि पुनि त्याए । ६-१०७७
 सिबिका सुभग सुखासन जाना । १-२१११३
 सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा । १-२३६७
 सिय मुख ससि भए नयन चकोरा । १-२२११३
 सिय रघुबीर वरन रत होहू । २-१३११

सिय रघुबीरहि प्रानपिआरे । २-११११२
 सिय सनेहु बरनत मन माहीं । १-२६६१६
 सिय समीप राखे रिपुदवनू । २-२४२११
 सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ । २-१२५१५
 सिय हित समर जितब हम सोऊ । १-२४४७
 सिय हियँ अति उतकटा जानी । १-२२८१३
 सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने । १-२५३१२
 सियँ जयमाल राम उर मेली । १-२६३१८
 सियँ न दीन्ह पगु अवनि कठोर । २-५८५
 सियँ निज पानि सरोज सुहाई । २-२३६१८
 सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना । २-१६१२
 सिर कर कमल परसि ब्रैठाए । २-२४११४
 सिर धरि गुर पद पंकज धूरी । १-३३११
 सिर धरि बचन बले सधु पाई । १-२८६१६
 सिर धरि राज रजायसु करहू । २-१७३१२
 सिर घुनि गिरा लगत पछिताना । १-१०७
 सिर मुज हीन रूढ महि नाचा । ६-१०२१२
 सिरन्हि समेत समर महि माहीं । ६-३२११
 सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा । १-२५७१५
 सिला देइ तहँ चलेउँ पराई । ४-५१८
 सिव अग्निषेक करहिँ बिधि नाना । २-१५६७
 सिव उपदेसु करत करि दाय । १-४५१५
 सिव उर भयउ बिषाद बिसेष । १-५५७
 सिव प्रसाद मति मोहँ न घेरी । ७-१५११०
 सिव बिरोध ध्रुव मरनु हमार । १-८३४
 सिव बिरधि पूजेहु बहु मांती । ६-११३
 सिव बिरधि सुर जाके सेवक । ६-६२१५
 सिव विश्राम बिपट श्रुति गाया । १-१०५१३
 सिव भगवान ग्यान गुन रासी । १-४५३

सिव समाधि बैठे सबु त्यागी । १-८२।३
 सिव समान प्रिय मोहि न दूजा । ६-१।६
 सिव सर्वय्य जान सब कोई । १-५०।३
 सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं । १-५६।२
 सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न । ४-३९।९
 सिंसिर सुखद प्रमु जनम उछाहू । १-४९।२
 सिसु सम प्रीति न जाति बखानी । १-२४९।३
 सिमुलीला बिलोकि सुख लहऊँ । ४-१९३।१३
 सीकर तें त्रैलोक सुपासी । १-१९६।५
 सीक धनुष सायक संधाना । ३-०।८
 सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली । २-५८।३
 सीतल अमल स्वाद सुखकारी । ४-२२।८
 सीतल सुभग भगत सुखदाता । १-१६।५
 सीतहि देखि कहहु सुधि आई । ४-२९।१९
 सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई । १-९।८
 सीतहि राखि गीध पुनि फिरा । ३-२८।१९
 सीतहि सखा पयादें आनहु । ६-१००।११
 सीतहि सेइ करहु हित अपना । ५-१०।२
 सीता अनुज सहित सुखधामा । ३-१।२०
 सीता उर भइ त्रास घनेरी । ६-९८।२
 सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौ । ५-१।४
 सीता खोज सकल दिसि धाए । ४-६६।९
 सीता गमनु राम पहिं कीन्हा । १-२६।२८
 सीता देइ करहु पुनि प्रीती । ६-८।१०
 सीता नयन चकोर निशेशं । ३-१०।४
 सीता बैठि सोच रत अहई । ४-२७।१२
 सीता सन बोली गहि पानी । १-२३३।९
 सीता लखन सहित घनस्यामहि । २-११२।५
 सीता सहित अनुज प्रमु आवत । ४-१।५

सीता सहित चले द्वौ भाई । ३-२।३
 सीता सहित न बेष घनेरे । १-५४।४
 सीता सीत निसा सम आई । ५-३५।९
 सीता सुधि पूछेहु सब काहू । ४-२२।२
 सीतहिं बिप्र धेनु सुर धरनी । १-१२०।४
 सीय बदन सम हिमकर नाहीं । १-२३६।८
 सीय बोलाइ प्रनामु करावा । १-६८।४
 सीय मातु किमि जाइ बखानी । १-३२३।९
 सीय राम कर करे बिबाहू । १-४४।४
 सीय रामु गुह लखन समेता । २-१०।१९
 सीय राम पद पदुम सनेहू । २-२२३।३
 सीय राम पद सहज सनेहू । २-१९६।८
 सीय राम पद होइ न रत को । २-३०३।२
 सीय सकुच महुँ मनहु समानी । २-२६।५
 सीय समेत बसहिं दोउ बीस । २-२२४।६
 सीय सहित निज पुर पगु धारा । १-२४।५
 सीय सहित राजत रघुराजू । २-२३८।६
 सील सनेह न छाडिहि भीस । २-४८।३
 सील सनेह सकुचमय बानी । १-३३५।४
 सील सनेह सरल रस सानी । २-१०५।८
 सील सनेह सरल सुख सागर । २-६९।४
 सील सनेह सुघाँ जनु सानी । २-१५।८
 सील सनेह सुभाय सुभागी । २-२२९।८
 सील सनेह सुभायँ सुहाए । २-२९०।४
 सीलु सनेहु जाइ नहिं बरना । १-३३४।४
 सीलु सनेहु निबाहनि हारा । २-२३।४
 सीलु सनेहु सराहत जाहीं । २-१८४।४
 सीलु सनेहु सरिस सम चाली । २-२२९।२
 सीस तोरि गहि मुजा उपाळ । ६-५२।६

सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं । ६-८०१५
 सीस परे महि जय जय बोल्नहिं । ६-८०१६
 सुक सनकादि संभुमन भावनि । ७-१२२५
 सुकवि लखन मन की गति मनई । २-२३९५
 सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता । १-११०११
 सुकृत प्रनामु किए अपनाए । २-२९८३
 सुकृत मेघ बरषहि सुख बारी । २-०१२
 सुकृत सनेह अवधि रघुराई । २-२०७
 सुकृत सुमंगल मूरति मानी । १-१५६
 सुकृती अवधि अवघपति रानी । २-२८१८
 सुकृती चास्ति अनघ उदास । १-२१६
 सुख आसीन तहाँ द्वी भाई । ४-१२६
 सुख जीवन जग जस जड़ नर के । २-२०७६
 सुख बसिहहि अपने अपने थल । २-२८४७
 सुखमय ताहि सदा सब आसा । ७-४५५
 सुख महुँ सोक ठाटु धरि ठाटा । २-४६५
 सुख मंदिर सुंदर अति नागर । ७-३३३
 सुख सनेह सोमा गुन खानी । १-२३४१२
 सुख संपति नाना विधि पावहिं । ७-१४३
 सुख संपादन समन बिषादा । ७-१२१११
 सुख सागर जहाँ कीन्ह निवासू । २-१३८४
 सुख सागर रघुबर सुखु पावा । २-१०५१२
 सुखी कि होहिं कबहुँ हरि निंदक । ४-१११५
 सुखी न भयउँ उबहिं की नाई । ७-१५११
 सुखी प्रजाजनु पाइ सुराजा । २-२३४५
 सुखी भए निज हृदयँ बिसेषी । ३-८३
 सुखी भए मानहुँ जग नृपती । ७-३९३
 सुखी भए मुनि बीती त्रासा । ३-१३११
 सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा । १-१११३

सुखी सकल रजनोघर कीन्हें । १-१७८७
 सुखी सकल ससि पुर नर नारी । १-३४६६
 सुखु सोहागु तुम्ह कहूँ दिन दूना । २-२०४
 सुखद सीत रुचि चारु चिराना । १-३५११
 सुखद संत संमत मोहि भाई । १-११३६
 सुखाकर सतां गति । ३-३१११
 सुगम जगम अति धरम बिचारू । २-३०१६
 सुगम अगम कहि जाति सो नाहीं । १-१४८३
 सुगम पंथ मोहि पावहिं प्राणी । ३-१५५
 सुगम सकल मग तुम्ह कहूँ अहलीं । २-१०८१२
 सुग्रीवहि तब खोजन लागी । ६-६५४
 सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए । ७-१०३
 सुघर सुघरम सुसील सुजाना । १-३१३६
 सुचि अमोल सुंदर सब गाँती । २-०४
 सुचि जलु पिअत मुदित मन मकऊ । २-८६७
 सुचि सुगंध मंगल जल पूरे । १-३२३५
 सुचि सुजान बट छीर मगावा । २-१३३
 सुचि सुबंधु नहि भरत समाना । २-२३१४
 सुचि सुरसरि रुचि निंदर सुधाहू । २-२८७८
 सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे । १-३३८१२
 सुचि सेवक सिष निकट बोलाए । २-२१२४
 सुचि सेवक सब लिए हैंकारी । १-३३१७
 सुजन सजीवनि मूरि सुहाई । १-३०७
 सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी । १-३५१२
 सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ । २-२८६१२
 सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा । १-३६०४
 सुजसु सराहन लगे मुदित मन । २-२८७१२
 सुजसु सुमति सुभगति सुखनाना । ५-३०५
 सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन । ६-६८

सुत तप ते दुर्लभ कछु नाही । १-१६२।१
 सुत परिजन बल बरनि न जाई । १-१०३।१
 सुत सुतबधू देवसरि बारी । १-२८२।१
 सुत सुंवर सुसील सुखदाई । २-६४।२
 सुत संपदा राखि सब आगें । १-३५२।१
 सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू । २-४४।८
 सुत हित मीत मनहुं जमदूता । २-८२।७
 सुतन्ह समेत गवन कियो मूपा । १-३२४।२
 सुतन्ह समेत ठाढ़ मे आगे । १-३५१।५
 सुतन्ह समेत नृपति गृहें गयऊ । १-३६०।३
 सुता तुम्हारि सकल गुन खानी । १-६६।१
 सुता बोलि मेली मुनि घरना । १-६५।८
 सुंदर अगम सुगम बर दायक । ३-४१।१
 सुंदर अनुज जानकी संग । ३-६।८
 सुंदर खग रव नाना रूपा । ४-१६।३
 सुंदर गिरि काननु जलु पावन । २-१२३।६
 सुंदर जुबा जीव परहेलें । १-१५।८।३
 सुंदर सब गुन निधि बृषकेतू । १-४१।३
 सुंदर स्यामल गौर सरीरा । १-२४०।२
 सुंदर सुखद जथा रुचि जेही । २-२१३।८
 सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे । १-१३१।१
 सुंदर सुत जनमत मे ओऊ । १-११४।१
 सुंदरता मंदिर भव मोचन । ४-३२।३
 सुंदरि तव अहिवात अमंगा । ६-१२०।१
 सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी । २-६०।७
 सुंदरि सिखवनु सुनहु हमार । २-६१।२
 सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई । १-१५३।५
 सुधा देखइ दीन्ह बिषु जेहीं । २-४८।१
 सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने । १-३२८।२

सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना । ३-१६।
 सुधि न तात सीता के पाई । ४-१४।१
 सुधि नहिं तव सिर पर आराती । ३-२०।७
 सुनइ न श्रवन बिकल मति भोरो । २-१४४।३
 सुनइ सास्त्र बर बेद पुराना । १-१५४।६
 सुनत कठिनता अति अकुलानी । २-४०।५
 सुनत कोपि कपिकुजर घाए । ६-४६।२
 सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी । ३-२५।१
 सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा । २-२२३।१
 सुनत नसाहिं काम मट टंमा । १-३४।६
 सुनत नृपहिं जनु लागहिं सायक । २-२६।६
 सुनत पुलक पूरे टोउ आता । १-२१४।२
 सुनत फिरा मन अति सकुचाई । ६-३४।३
 सुनत बचन कह पवनकुमारा । ५-१।३
 सुनत बचन कह बालि कुमारा । ६-२२।६
 सुनत विभीषन उठि तहें आए । ५-५।५
 सुनत बिहसि कह बचन भवानी । १-४१।४
 सुनत भरत मँटेउ उठि सादर । ४-१।१
 सुनत मालु कपि जहें तहें घाए । ६-४।४
 सुनत महामुनि हरषित मयऊ । ३-२।४
 सुनत राम बनवास कहानी । २-२२३।८
 सुनत राम बोलै मुसुकाई । ३-१८।८
 सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी । २-४०।७
 सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका । ७-१।२
 सुनत श्रवन छूटहिं भव पासा । ७-१२।५।१
 सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना । १-६०।४
 सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा । १-३४।७
 सुनत सकल बिग्रन्ह अति भार । ७-१।६
 सुनत सकल मुद मंगल देनी । १-१।१०

सुनत सचिव लोचन जल छाए । २-१४८/४
 सुनत सुआसिनि सादर त्यागई । १-३२३/३
 सुनत सुखद बरनत कठिनाई । २-३०२/४
 सुनत सुजन मन पावन करिहीं । १-३१/५
 सुनत सूख मुखु भा उर दाह । २-१०३/२
 सुनताहैं भयउ पर्वताकारा । ४-२१/६
 सुनताहैं सीता कर दुख भागा । ५-१२/५
 सुनतिउं सिख तुम्हारि धरिसीसा । १-८०/१
 सुनहि सुद्र मम बचन प्रवाना । ७-१०८/८
 सुनाहैं जे कथा श्रवन मन लाई । ७-१२५/३
 सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रमु थोरे । ६-८/९
 सुनहिं महीसु सहित रनिवासा । १-३५८/५
 सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता । १-७/९
 सुनहिं सम जघापि सब जानहिं । ७-२५/२
 सुनहिं लखनु सिय अतिसुखु मानी । २-१४०/२
 सुनहु उमा सो कथा सुहाई । ३-२२/८
 सुनहु कठिन करनी तेहि केरी । १-१२८/८
 सुनहु करहु जो तुम्हहिं जोहाई । ७-४२/४
 सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी । १-६६/७
 सुनहु तात काहु मोर सिखावन । ६-४७/६
 सुनहु तात मति मन चितलाई । ३-१४/१
 सुनहु टीनदयाल भगवंता । ७-३५/५
 सुनहु देव सब धनुष समाना । १-२७/११
 सुनहु नाथ प्रनतारति हरना । ७-३५/८
 सुनहु नाथ बल अतुल उदार । ६-७४/३
 सुनहु प्रानपति परम सनेही । २-१६/४
 सुनहु प्रानपति बिनती मोरी । ६-१३/७
 सुनहु बचन पिय परिहरि कौपा । ६-५/४
 सुनहु भगति मनि कै प्रमुताई । ७-१११/५

सुनहु मान तजि मोर सिखावन । ५-२१/७
 सुनहु राम ब्रिग्यान बिसारत । ३-४४/४
 सुनहु राम भंजन भव नीरा । ३-३०/९
 सुनहु सभासद भरत सुजाना । २-२५/३१
 सुनहु सुमंत्र-अवध जिमि आवा । २-१४१/४
 सुनहु सो लावधान हरिजाना । ७-७७/३
 सुनहु संनु कर चरित सुहावा । १-७४/६
 सुनहुं सकल संजजन सुखु मानी । १-२१/२
 सुना दसानन अति अहंकारी । ६-३१/१
 सुनि अघ नरकहुं नाक सखोरी । १-२८/९
 सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू । २-६२/५
 सुनि अस बचन सत्य को कहई । ६-२२/८
 सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू । २-३१/१२
 सुनि कपि प्रयाट कीन्हि निज देहा । ५-१५/७
 सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा । ५-२१/२
 सुनि कपि बचन हरष उर छायो । ६-१०६/८
 सुनि कपि सिधनाट करि धाए । ६-३८/६
 सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा । ६-७३/४
 सुनि कलरव कलकंठि लजानी । १-२१६/३
 सुनि कादर उर जाहिं दरारा । ६-४०/३
 सुनि कुबरीं तिय माया टानी । २-२०/३
 सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ । ७-१०५/५
 सुनि खरदूजन उर अति दहेऊ । ३-१८/१४
 सुनि गुन भेटु समुझिहहिं साधू । १-२०/३
 सुनि गुन साधु समाज बखाने । २-२९/८
 सुनि तब भगिनि करहिं परिहासा । ३-२१/१०
 सुनि ताड़का क्रोध करि घाई । १-२०/८
 सुनि दससीस जरै सब गाता । ३-२१/१२
 सुनि घाई रजनीचर घारी । ६-६६/७

सुनि धीरजु परिहरइ न केही । १-३३७।२
 सुनि धुनि होइ भटन्ह मन चाऊ । ६-४०।२
 सुनि न जाइ पुर आरत नादू । २-८०।३
 सुनि निस्त्रिचरी निसाचर धाए । ६-१०६।३
 सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाई । १-१६१।७
 सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी । २-१००।५
 सुनि प्रसंगु भाए सीतल गाता । २-४४।८
 सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने । १-२९०।८
 सुनि मन भवउ न हरषु हरीसू । २-१४८।७
 सुनि मन मुदित करिअ मति जानी । २-१७६।३
 सुनि मन मुदित पचासक आए । २-१०८।३
 सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना । ६-५७।६
 सुनि मम बचन करहु प्रभु काजु । ४-२७।१०
 सुनि मम बचन तजहु कटराई । ५-१४।१०
 सुनि मम बचन हृदयँ दृढ गहइ । ७-४४।११
 सुनि मैं नाथ अमिति सुख पावा । ७-५२।७
 सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा । २-२४६।३
 सुनि रघुनाथ हृदयँ हरषाने । ७-४६।४
 सुनि रघुबीर रनयन जल छाए । ३-८।८
 सुनि रघुबीर भगति रस रानी । ७-१२४।११
 सुनि रजाइ कटराई न कोऊ । २-१९०।११
 सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरही । ३-३९।९
 सुनि रिसाइ कह भृगुकुल केतू । १-२७०।८
 सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही । १-२७०।२
 सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी । ३-५।४
 सुनि सुखु लहहि लखनु अरु सीता । २-१४०।८
 सुनि सुनि अवध लोग सुखु लहहीं । २-१९४।२
 सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा । २-२०९।८
 सुनि सुनि हरषु होत सब काहू । १-३५३।६

सुनि सुनि होइ भरत मन सूला । २-१५७।१५
 सुनि सौमित्रि बिहसि सिरु नावा । १-२७९।३
 सुनि हनुमंत हृदय अति भाए । ५-०।९
 सुनि हरिचरित न जो हरषातो । १-११२।७
 सुनि हिमवत बहुत सुखु माना । १-९०।२
 सुनिअ कथा सादर रति मानी । १-३३।८
 सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजाटा । १-६३।३
 सुनिअ माय मै परम जनागी । २-६८।३
 सुनिहहि बालबचन मन लाई । १-७।८
 सुनिहहि सुजन सराहि सुबानी । १-८।७
 सुनी कथा मुनि निकर बिहाई । ७-५४।४
 सुनी महेश परम सुखु मानी । १-४७।३
 सुनु खग प्रबल राम कै माया । ७-५८।४
 सुनु गिरिजा अति दृढ मति तोरे । १-१९५।३
 सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं । ६-८९।३
 सुनु मन धरु सब तजि मजु मोही । ७-८५।२
 सुनु मम बचन मान परिहरही । ६-२९।११
 सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी । १-१२३।४
 सुनु सखि तासु सुमित्रा माता । १-२२०।८
 सुनु सठ अस्त प्रवान पन मोरु । ५-९।४
 सुनु सठ कन्या सम ए चारी । ४-८।७
 सुने जे मुनि सँग आए काली । १-२२८।४
 सुने भरत हिय हित जनु चंदनु । २-१७५।७
 सुनेउँ राम गुन भव भय हारी । ७-५१।९
 सुनेउँ श्रवन बन ऐहहि रामा । ३-७।२
 सुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी । ६-२४।८
 सुने को श्रवन सूल सम बानी । ५-११।४
 सुने राम के चरित सुहाए । ७-६२।४
 सुफल जन्म माना प्रभु चीन्ह । ४-८।३

सुफल होन हित आसिष देहीं । २-१३३७
 सुम अरु असुम कर्म फल दाता । ७-४०१५
 सुम आघरनु कीन्ह नहिं काऊ । ५-४६७
 सुम उपदेश बिबिध विधि कीन्हा । ७-१०४७
 सुम गति पाव कि परत्रिय गामी । ७-१११४
 सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए । १-३५८३
 सुभग सुमंगल गावहिं नारी । १-१९१२
 सुभग सेज कत सृजत बिघाता । २-११८७
 सुमति सुसील सरल आचारा । ७-१३१९
 सुमन धनुष कर सहित सहाई । १-८३३३
 सुमन बरषि जसु गावन लागे । १-३११४
 सुमन बाटिका सुंदर बाग । १-१५४७
 सुमन बृष्टि नभ भई अपारा । ५-४८११०
 सुमन बृष्टि नभ मै विधि नाना । ५-१००१५
 सुमिरत जिनिहि राम मन माहीं । २-२१६३
 सुमिरत दिव्य दृष्टि हियें होती । १-०१५
 सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा । ३-२९११८
 सुमिरत राम राम रघुनायक । ६-५८१९
 सुमिरत रामु हृदयें अस आवा । १-५६१९
 सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा । २-२२०७
 सुमिरत सकल सुमंगल खानी । २-२०८७
 सुमिरत सकल सुमंगल देनी । २-१०५१५
 सुमिरत सकल सुमंगल मूला । २-२४७१२
 सुमिरत समन सकल जग जाला । १-२६१५
 सुमिरत सारद आवति धाई । १-१०१४
 सुमिरत सीय सहित दौउ भाई । २-३१११६
 सीमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा । १-१४३११
 सुमिरहिं मोहिं दास की नाई । ७-१११६
 सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी । १-६११०

सुमिरि अवधपति परम सनेही । ५-८६
 सुमिरि गिरापति प्रमु धनु पानी । १-१०४४
 सुमिरि पिता पनु मनु जति छोमा । १-२३३४
 सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई । २-१४५३
 सुमिरि राम करि अटभुत करनी । ३-२८१२
 सुमिरि राम सुखधाम सनेही । ६-१०७८
 सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ । २-१४८६
 सुमिरि सुमिरि सोचत हंसि मिलनी । ७-१८४
 सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा । ५-३३१२
 सुमिरि हृदयें दिनकर कुल भूषन । ६-३८३
 सुमिरु राम सेवक सुखदाता । ५-१४१९
 सुमिरे लखन सहित सिय रामू । २-२०२३
 सुमिरेसि रामु समेत सनेहा । ३-२६१६
 सुमिरेसुं नजेसु निरंतर मोही । ७-८७१९
 सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू । ६-१०४५
 सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ । २-२७३६
 सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे । २-१६१९
 सुमुखि मातु हित राखउँ तोही । २-६०८
 सुमुखि होति न त जीवन हानी । ५-११२
 सुर गुर संग पुरंदर जैसे । १-३०११
 सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई । ७-१०९३
 सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा । ७-४२७
 सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई । २-८३७
 सुर नर नाग बिदित सब काहू । १-२८५८
 सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर । १-२९१२
 सुर नर मुनि सब के मय बीते । ३-२०१९
 सुर नर मुनि सब नावत सीसा । १-४११६
 सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे । १-२३५२
 सुर मुनिबरन्ह केरि कटसाई । १-२५९१५

सुर मुनि सबहिं अचंभव माना । ६-७०।८
 सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना । ६-१०४।१
 सुर सब निज निज लोक सिंघाए । १-१०२।३
 सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला । २-११३।२
 सुर सास्थी हहरि हिये हारे । २-२१३।७
 सुर हित दनुज बिमोहनसीला । १-११२।८
 सुरकुल सालि सुमंगलकारी । १-४१।५
 सुरगन समय धकधकी धरकी । २-२४०।७
 सुरतरु लहै जनम कर मूखा । १-३३४।५
 सुरन्ह कीन्ह अस्तुति करजोरी । ७-६७।३
 सुरन्ह प्रेरि बिषपान करायाहु । १-१३५।८
 सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा । १-११।७
 सुरपति बंदि परे जनु मंदर । ६-७२।७
 सुरपति सदनुं न पटसर पावा । २-८१।७
 सुरपति समो जाइ सब बरनी । १-१२६।३
 सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ । ७-१२७।५
 सुरपुर तें जनु खैंसेउ जजाती । २-१७७।६
 सुरपुर नितहिं परावन होई । १-१७१।८
 सुरपुर सरिस संपटा छाय । १-३०३।६
 सुरसरि उत्तरि निवास प्रयागा । ७-६४।३
 सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई । १-६८।७
 सुरसरि तीर आपु तब आए । २-११।२
 सुरसरि सम सब कहैं हित होई । १-१३।१
 सुरसुख सकल सुलभ सब भाँती । १-३०६।१
 सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा । १-३०२।५
 सुरारि वृंद संजन । ३-३।८
 सुरुचि सुबास सरस अनुरागा । १-०।१
 सूखत धान पराजनु पानी । १-२६२।३
 सूचत किरन मनोहर हासा । १-११७।७

सूझ जुआरिहि आपन दाऊ । २-२५७।१
 सूझ न आपन हाथ पसारा । ६-५१।४
 सूझन कछु जस मनि बिनु ब्यालहि । २-२७०।३
 सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरें । ६-६६।६
 सूझ न गुन गन म्यान प्रबीना । ३-३३।२
 सूध दूधमुख करिअ न कोहू । १-२७६।१
 सूने सकल दसानन पाए । १-१८१।७
 सूने हरि आनिहि परनारी । ६-२१।६
 सूपनखा जिमि कीन्हि वुल्ला । ७-६५।३
 सूपशास्त्र जस कछु ब्यवहारा । १-१८।४
 सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा । ६-२७।२
 सूर सकल रन रूवइ सरी । २-११०।३
 सूर सुसील भरत अनुगामी । १-१६।१
 सुल कृपान परिघ गिरिखंडा । ६-३१।८
 सुंगबेरपुर पहुँचे जाई । २-८६।१
 सुंगबेरपुर सब निअराने । २-१८८।१
 सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए । १-५८।३
 सेइअहिं सकल प्रान की नाई । ७-३।५
 सेएहु मातु सकल सम जानी । २-५५।७
 सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा । १-२४।३
 सेन समेत रहेहु तीनिउ जन । ६-७४।१०
 सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई । १-१७८।३
 सेन संग चतुरंग न थोरी । २-२२६।२
 सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं । ७-२३।८
 सेवक जानि तजेहु जनि नेहू । ३-५।३
 सेवक पर ममता अति भूरी । ७-७३।७
 सेवक पर ममता अरु प्रीती । ३-४४।२
 सेवक प्रमुहिं परै जनि भोरें । ७-२।१
 सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ । ७-२।८

सेवक बैर बैर अधिकाई । २-२१८१२
 सेवक सकुच सोचु उर अपनै । २-२१८१६
 सेवक सचिव सुमंतु बोलाए । २-४११
 सेवक सालि पाल जलधार से । १-३१११०
 सेवक सुखद कृपा संदीहा । ४-८२५
 सेवकु लहइ स्वामि सेवकाई । २-८१८
 सेवकु समर्थ न दूटि टिटाई । २-२२६७
 सेवत जाहि सदा मुनि धीरा । १-५०१८
 सेवत सादर समन कलेसा । १-१११२
 सेवत सुलभ सकल दुख हारी । १-१३११८
 सेवत सुलभ सकल सुख दायक । ४-३४१३
 सेवत सुलभ सुखद हरिहर से । १-३११११
 सेवति चरन कमल मन लाई । ४-२३१४
 सेवहिं सकल राम प्रिय जानी । २-३१०१८
 सेवहिं सब निशिचरि बिनोता । ६-१०४५
 सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबोना । १-५३१६
 सेवहिं सुर नर अग जग जाही । ६-५४१२
 सेवहु जाइ कृपा आगारा । ४-१८१४
 सेवा करहु सनेह सुहाए । २-१०४१८
 सेवा जोगु न भाग हमारे । २-२५०१५
 सेवा धरनु कठिन जगु जाना । २-२१२१७
 सेवौ अवध अवधि भरि जाई । २-३१२१८
 सेष कोटि सत सकहिं न गाई । ४-१०१६
 सेष सहस सत सकहिं न गाई । ५-५१११
 सेस गनेस गिरा गनु नही । २-३२४१८
 सैल सिरोमनि सहज चुहावा । २-२२४१५
 सो अवतार मयउ जेहि हेतु । १-१४०१८
 सो उचाटु सबके सिर मेला । २-३०११३
 सो उर धरहु जो कहत विभोषन । ५-३११२

सो करि कहउं सखी सति भाऊ । २-२८२१२
 सो कह बलेसि मोहि निंदरी । ५-३१२
 सो कह पच्छिम उगउ टिनेसा । ४-४२१४
 सो कि मान अब परमसिखावन । ६-६३१७
 सो कि होइ अब समारुद्ध । ६-२२१४
 सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला । २-३११८
 सो किमि जानै तीर सुभाऊ । २-१६१५
 सो किमि सोव सोच अधिकाई । १-१६११२
 सो कैवल्य परम पद लहई । ४-११८१२
 सो खोवे चह कुपानिधाना । ४-६११८
 सो गुर घोर नरक महुं परई । ४-१८१४
 सो छन कपिहि कल्प सम बीता । ५-११११२
 सो जानइ जगु आइ खुटानी । १-२६८१३
 सो जानइ जगु मरदनि मारी । २-१८४१६
 सो जानइ सपनेहुं जेहिं देखी । १-११८११२
 सो जामिनि सिगरीर गवाई । २-१५०११
 सो तनु भूमि परेउ भरि छासा । ६-१०३१६
 सो तेहिं काजु प्रथम जगु कीन्हा । २-६११
 सो तेहिं भांति रहै सुख लहई । ५-२६१४
 सो तेहिं मिलइ न कछु संदेह । १-२५८१६
 सो दिसि तेहिं न बिलोकि भूली । १-१३४११
 सो न टरइ जो रचइ विधाता । १-१६१६
 सो न पाव मुनि भगति हमारी । १-१३४१७
 सो नर क्यों दससीस अमागा । ६-२५१४
 सो नर तुम्ह समान रघुराया । ४-२०१५
 सो नर सपनेहुं मोहि न पावा । ६-११७
 सो नहिं कछु आचरज गोसाई । ४-६११५
 सो नारकी मूढ़ मति थोरी । ६-११८
 सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई । ३-४११४

सो निम्तरइ तुम्हारेहि छोहा । ४-२१२
 सो नृप अवसि नरक अधिकारी । २-७०६
 सो प्रथमहिं मैं तुम्हहिं सुनावा । ७-११२८
 सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा । ७-१०५१
 सो प्रमु जन कर प्रीति परीछा । ६-१०१३
 सो प्रमु मैं देखब भरि नयना । १-२०५८
 सो प्रसादु जन पावै देवा । २-३००४
 सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा । २-१०१८
 सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि । ७-५५१
 सो प्रिय जाके गति न आन की । ३-११८
 सो पुलस्ति मुनि जाइ छोडावा । ६-२३१६
 सो फलु पायउँ कीन्हैउँ रोसा । ३-२८३
 सो फलु मली भाँति हम पावा । १-१०८४
 सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राजा । १-२३५८
 सो बरने असि मति कवि केही । १-२८८४
 सो बल तात न तोहि देखायउँ । ६-७१८
 सो बासरु बिनु नोजन गयउ । २-३२१३
 सो बासरु बीतेउ बिनु बारी । २-२७६७
 सो बितानु तिहुँ लोक उजागर । १-२८८१५
 सो बिनु श्रम भवसागर तरिहौ । ६-२१४
 सो बिनु संत न काहू पाई । ७-११११८
 सो बिलोकि सुरनायक मोहा । १-२८८८
 सो मम भगति भगत सुखदाई । ३-१५२
 सो माया प्रमु सौं मय भाखे । १-११११७
 सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी । २-१७०१९
 सो मुदमंगलमय रितुराजू । १-४१३
 सो मूरख जो करन बह लेखा । ४-२११
 सो मैं हतब कराल कृपाना । ६-४१७
 सो मोहि देहु दास सुखदाई । ३-१०१२५

सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ । १-१०१५
 सो श्रम बादि बाल कवि करहीं । १-१३८
 सो सतसंग करउ मन लाई । १-३८८
 सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया । १-२४१६
 सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं । २-१६८४
 सो सब करहिं बेद प्रतिकूला । १-१८२५
 सो सबु करै मोर मत एहू । २-२१५५
 सो सब कहिहउँ मति अनुसारा । १-१४०६
 सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ । १-१८२१९
 सो सब तोहि सुनाइहिं सोई । ६-२०१९
 सो सबबिधि तुम्हसन भल मानिहि । २-१७४७
 सो सब मयउ दरस तब पायउँ । ७-६३१९
 सो सब भाँति घटिहि सेवकाई । २-२५७५
 सो सब माया जानेहु भाई । ३-१४३
 सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा । २-२४१६
 सो सरूप नृपकन्यौं देखा । १-१३३७
 सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि । ६-२१२
 सो सुख उमा जाइ नहिं बरना । ४-१५
 सो सुग्रीव केर लघु धावन । ६-२२१९
 सो सुग्रीव दास तब अहई । ४-३१२
 सो सुधि राम कीन्हि नाहिं सपनें । १-२८१२
 सो सुनि तमकि उठी कैकेई । २-७८१९
 सो सुनि सबन मयउ दुखारा । ६-३४१२
 सो सुनि समुझि सहिउँ सब सुला । २-२६१३
 सो सुनु उमा सहित अनुरागा । ७-५६४
 सो सुम उमग सुखद सब काहू । १-४०५
 सो सेवकु लखि लाज लजाई । २-२६८५
 सो हरि पद यह कौतुक भारी । १-२७३५
 सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई । २-१७७१९

सोइ अति बड़ जद्विबेकु तुम्हारा । १-८१६
 सोइ अवतरैउ हरन महि मारा । ६-५८
 सोइ कछु करहु मदन मद मोचन । १-८८१
 सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई । २-१००१
 सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ । ७-२३७
 सोइ करहु अब कृपानिधाना । ७-१०८१
 सोइ करिहुँ रघुबीर दोहाई । २-१०३६
 सोइ कृपाल मोहि अतिप्रिय लाग । १-१४१४
 सोइ करहुँ जेहि हौंइ निदेसा । ७-५८८
 सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा । ६-१७१४
 सोइ गुन अमल अनुषम पाया । १-४१७
 सोइ गुन गृह बिद्यान अखंडित । ७-४८७
 सोइ जनु जलट घटा अतिकारी । ६-१२१५
 सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा । १-१३६६
 सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला । ७-१७८
 सोइ प्रनु जनु दामिनी दमका । ६-१२६
 सोइ प्रनु प्रगट समुझु जियै रावन । ५-३८८
 सोइ परान मकरंट सुवासा । १-३६६
 सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका । २-२०१५
 सोइ पूछन बह सैलकुमारी । १-१०६६
 सोइ फल सिधि सब साधन फूला । १-२८
 सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही । ७-५८६
 सोइ बहुरंग कमल कुल सौहा । १-३६५
 सोइ बिधि ताहि जिआब न आना । ६-१८१०
 सोइ मधुरता सुसौतलताई । १-३५६
 सोइ महि मंडित पंडित दाता । ७-१२६१
 सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहलीं । २-१४०१
 सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया । २-१५७
 सोइ रव मधुर सुनहु सुरनूपा । ६-१२७

सोइ सबंग्य समु भगवाना । १-५२४
 सोइ स्वच्छता करइ मलहानी । १-३५५
 सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई । १-१६७६
 सोउ अवतरिहि मोरि यह माया । १-१५१४
 सोउ तेहि समौ परामउ पावा । १-२११८
 सोउ दयाल राखहु जानि गोई । १-११०४
 सोउ देखा जो सुना न काऊ । १-२०१२
 सोउ न भरत मति सकइ निहारी । २-२१४५
 सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई । ६-३५२
 सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें । १-२२१८
 सोउ मुनि देउं निमिष एक माहीं । १-२०७४
 सोउ मोरें मन संसय अहई । ७-१३६
 सोउ सनेह जड़ता बस कहहु । २-१७७८
 सोउ सब कथा सुनावउं तोही । ७-७३२
 सोउ सबंग्य जया त्रिपुरारी । १-५०१
 सोउ संछेपहिं कहहु दिचारी । ७-१२०४
 सोउ हियै हारि गयउ करि फेरु । १-२११७
 सोक कलंक कोटि जनि होहु । २-४११
 सोक जनिउ उर दारुन दाहु । २-७६१
 सोक बिकल बनवास दुखारी । २-२८१४
 सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी । २-१७०८
 सोक सनेहैं सयानप थोरा । २-२८२७
 सोक हरष भय प्रीति बियोगी । ७-१२११
 सोकु सनेहु न हृदयै समाई । २-१६४२
 सोच जोगु टसरथु नृपु नाहीं । २-१७१२
 सोच मोर जेहिं करै न काऊ । २-१५१६
 सोचत भरतहि रैनि बिहानी । २-२५२७
 सोचहिं चाहत होन अकाजू । २-२६४१
 सोचहिं दंपति सखीं सयानी । १-६७७

सोचहिं सकल त्रास उर भारी । १-२६१।६
 सोचिअ सखितरिख निजहितहानी । २-२८१।७
 सोधि सुगममगु तिन्हकपि दीन्हा । २-११७।८
 सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं । २-२११।२
 सोन सुगंध जुधा ससि सारु । २-२८७।१
 सोनित सरि कादर भयकारी । ६-८६।१०
 सोमा असि कहूँ सुनिअत नाहीं । १-२११।६
 सोमा कहि न जाति बिधि केहीं । १-३२४।८
 सोमा कोटि मनोज लजावन । १-३२६।१
 सोमा खानि सुसील बिनीता । ७-२३।३
 सोमा तासु कि जाइ बखानी । १-१२१।५
 सोमा बपुष कोटि सत कामा । ७-४४।५
 सोमा बहुत थोरि मति मोरी । २-११५।१
 सोमा सील तेज की खानी । १-१८१।७
 सोमा सील रूप गुन धानहि । ७-२१।२
 सोरह भीति पूजि सनमाने । २-८।३
 सोरत माहे बिधि बान न केही । २-१०।७
 सोवहुँ समर सेज दोउ भाई । २-२२१।४
 सोबिअ सिंधु करिअ मन रोसा । १-५०।३
 सोषेउ प्रथम प्रयोनिधि बारी । ६-०।२
 सोषी बारिधि बिसिख कृसानू । ५-५७।१
 सोह कि कोकिल बिपिन करीला । २-६२।७
 सोह चाप कर कटि तूनीरा । ३-२७।१
 सोह न बसन बिना बर नारी । १-१४।४
 सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही । ६-३५।१
 सोहति सहित सुबिरति बिचारा । १-३१।३
 सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा । २-११४।८
 सोहहिं सुमन बीच बिध गाथे । ६-८५।८
 सोपी सकल मातु सेवकाई । २-३२२।२

संकट सोच बिबस भइ रानी । २-५४।५
 संकट भयउ हरिहि मम प्राणा । ६-५३।६
 संकर बिमुख जिआवसि मोही । १-५८।४
 संकर मानस राजमराला । ३-७।१
 संकरु साखि रहेउँ एहि घाएँ । २-२६१।५
 संकर सोइ मूरति उर राखी । १-४६।७
 संग चले पहुँचावन राजा । १-३३८।४
 संग नारि बहु किऐँ बनावा । ५-८।२
 संग नारि सुकुमारि सुहाई । ४-१।२
 संग परम प्रिय पवन कुमारा । ७-३१।१
 संग पितु मातु रामु सिय जानू । २-७४।७
 संग रमा सोइ राज कुमारी । १-१३५।४
 संग लिए सेवक सुखदाता । ७-४१।२
 संग लीन्ह गुह हृदयै हुलासू । २-१०३।७
 संग सुमंगल गावहिं नारी । १-१५।२
 संग संग सब भए उछाहा । २-१।६
 संगम करहिं तलाब तलाई । १-८।२
 संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने । १-५।२
 संजम दम जप तप मख नाना । ७-१२५।५
 संजम यह न बिषय कै आसा । ७-१२१।६
 संजुग बिमुख भएँ न भलाई । ६-७७।५
 संत कंज बन रबि रनधीरहि । ७-२१।४
 संत चकोर करहिं जेहि पाना । १-४६।७
 संत टरस जिमि पातक टरई । ४-१६।६
 संत पुरान उपनिषद गावा । १-४५।२
 संत पुरान निगम आगम बढ । ७-११८।३
 संत मिलन सम सुख जग नाहीं । ७-१२०।१३
 संत सरोरुह कानन भानु । ३-१०।५
 संत सहज सुनाउ खगराया । ७-१२०।१४

संत सुमति तिय सुमग सिंगारु । १-३१११
 संत संग हरि कथा न भावा । ४-३११६
 संत हृदय जस गत मद मोहा । ४-१५१४
 संतत करहिं प्रनत पद प्रीती । ६-२१६
 संतत धरनि धरत सिर रेनु । १-१६६४
 संतत बहइ मनोहर बाऊ । ३-३११८
 संतत रहहिं सुगंध सिंचाई । १-२१२४
 संतत शं तनोतु मम समः । ३-१०१५
 संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी । ४-२५११३
 संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि । ४-१२१६
 संतत सुरानीक हित जेही । १-३११०
 संतत संत प्रसंसहिं तेही । १-८३१२
 संतत हृदयै धरेहु मम आजू । ४-११११
 संध्या करन बत्ते दोउ भाई । १-२३६६
 संपति बिपति करमु अरु कालू । २-१११६
 संबत मरि संकल्प करेहू । १-१६७१८
 संग्रम बलि आई सब सनी । १-११२११
 संमु उपासक नहिं हरि निंदक । ४-१०४१४
 संमु गए कुमजरिषि पाहीं । १-४७११
 संमु प्रसादु तात मैं पावा । ४-११२१११
 संसय आसन धरिअ उर काऊ । १-१०१६
 संसय बिपिन अनल सुर रंजन । ६-११४१२
 संसय बिहग उड़ावनि हारो । १-११३११
 संसय सकल सैकोच निवेशी । २-११३१८
 संसय लोक मोह भ्रम नाहीं । ४-११४१६
 संसृति मूल अबिद्या नासा । ४-११८१८

ह

हइ तुम्ह कहैं सब भौति भलाई । २-१७३१६
 हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू । १-२४८१५
 हठ न छूट छूटै बरु देहा । १-७११५
 हठ परिहरिं घर जाएहु तबहीं । १-७७१३
 हठि पंथ सब कें लगाम । ६-११२१८
 हठि राखें नहिं राखिहि प्राणा । २-६७१२
 हठि सबही के पंथहिं लगाम । १-१८११११
 हतउं न तोहि अधम अभिमानी । ६-२३१११
 हतहिं कोप तेहि घाउ न बाजा । ६-७५१८
 हतहु नाथ खल नर अधारासी । १-१११५
 हति छन माझ निसाबर धारी । ६-६८११
 हति त्रिसूल उरधरनि गिसए । ६-७५१६
 हनुमदादि अंगद सब धार । ६-८७१४
 हमूमान हियै हरष अपारा । ४-४११२
 हम कहैं स्थ गज बजि बनाए । २-२०२१६
 हम तुम्ह कहैं बरु नोक बिचारा । १-७१११
 हम ती आजु जनम फलु पावा । १-२४११६
 हम पितु बचन मानि बन जाए । ४-११११
 हम सँग बलहिं जो आयसु होई । २-१११७
 हम सन सत्य मरमु किन कहहू । १-७७१३
 हमरे बेसी बिबुध बरुथा । १-१८०१५
 हमरें कुल इन्ह पर न सुराई । १-२७२१६
 हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया । ४-४११४
 हमरें बबर तुम्हउ बिसराई । १-६११२
 हमरें होत बचन सुनि मोहा । ६-११७१७
 हमहिं तुम्हहिं सपनेहुँ न कतेसू । २-३१४१२

हमहि देखि दीन्हैउ पट डारी । ४-४१५
 हमहि सहित सबु होत खुआरु । २-३०४६
 हमहि सीय पट जनि परिहरहीं । २-५०१६
 हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी । ६-२१५
 हय गय गाजहिं हने निसाना । १-३०३४
 हय गय रथ बहु जान सँवारे । २-२०५४
 हय गय रथ संकुल सब काला । १-२१३१२
 हय गय स्पंदन साजहु जाई । १-१०११
 हय गृहँ बाँधेसि बाजि बनाई । १-१००१८
 हर अंतरजामी सब जानी । १-५०१५
 हरइ गरल दुख दारिद दहई । २-१८३१८
 हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा । ६-३६७
 हरइ पाप कह बेद पुराना । १-३४११
 हरउ भगत मन कै कुटिलाई । २-१८
 हरगिरि जान जासु मुज लीला । ६-२४११
 हरगिरि तैं गुरु सेवक धरम् । २-२५२६
 हरत सकल कलि कतुष गलानी । १-४२३३
 हरति बाल सबे दामिनि जोती । १-३२६३
 हरद दूब दधि अच्छत माला । १-२९५१८
 हरनि सोक हरि लोक निसेनी । ६-१९९१८
 हरष बिबस सब काहुँ न जानी । १-३१०१८
 हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी । ५-१२१२
 हरष बिषाद गरह बहुताई । ७-१२०१३३
 हरष बिषाद बिबस सुरलोकू । २-८०४
 हरष समेत पवनसुत लयऊ । १-२६१२
 हरष समय बिसमउ कत कीजै । २-४६१३
 हरष सहित मातलि तै आवा । ६-८८१२
 हरष सोक मय नहिँ मन भारी । ५-४०१६

हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही । ४-१७
 हरषु बिषादु न कछु उर आवा । १-२५३७
 हरषु हृदयँ परमान पयाना । २-१८५११
 हरषहिँ निरखि कुअर बर चारी । १-३४०७
 हरषहिँ मनहुँ परी निधि पाई । ७-३८७
 हरषहिँ सुनि सुनि पनव निसाना । १-२९८१२
 हरषि उठाइ लियो उरलाई । ६-१२०१२
 हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना । ६-३३१११
 हरषि उठे सब प्रभु पहिँ आए । ६-११३५
 हरषि कीन्ह गुरु गवतु निकैता । १-३५२३
 हरषि गहे कर बान कराला । ६-१०१६
 हरषि गहे पद कृपा धाम के । ६-११६११
 हरषि चढे कोसलपुर भूषा । ६-८८१३
 हरषि चले कुंभज रिषि पासा । ३-११११
 हरषि चले मुनिबर के साथे । १-२०९११०
 हरषि नगर निसान बहु बाजे । ७-८४
 हरषि नहाने निरमल नीरा । १-१४२१५
 हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी । ५-५१७
 हरषि भेंट हित मूप पटाई । १-३०४३
 हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी । १-१००११
 हरषि सप्तरिषि गवने गेहा । १-८५३
 हरषि सुधासम गिरा उचारी । १-११११५
 हरषि हने गहगहे निसाना । १-२९५११
 हरषित आसिष दीन्ह मुनीसा । ७-१५२१५५
 हरषित खगपति पंख फुलाए । ७-१२११
 हरषित ते अपने गृह आए । १-१००११
 हरषित निज निज सदन सिधाए । २-१३३७
 हरषित नए गए सब सोका । ७-११७

हरषित रहति दिवस जिमि कोकी । २-१३१३
 हरषित रहिहैं लोग सब कुरी । ७-१४८
 हरषित राममंत्र तब दीन्हा । ७-११२६
 हरषित सुर संतन मन चाऊ । १-११०३
 हरषी सबकुल जलरुह चंदिनि । २-१५८२
 हरषी समा बात सुनि साँची । १-२८१६
 हरषे अनुज समेत बिसेषी । १-२११५
 हरषे कपि रघुपति तन हेरी । ६-०४
 हरषे जनु नव निधि घर आई । २-१३४११
 हरषे जनु निज निधि पहिचाने । १-२३१४
 हरषे देखि संभु चतुरानन । ६-१०२१
 हरषे देव बिलंब न कीन्हा । १-१८७२
 हरषे नगर बिलोकि सुहावन । १-२८१११
 हरषे प्रेम न हटयै समाई । ७-४१११
 हरषे बोलि लिए दौड भाई । १-२३८१०
 हरषे मुनि सब सुर समुदाई । १-१०७
 हरषे सकल निरा अवसाना । १-२३८२
 हरषे सकल पाइ जनु राजू । ३-२१११४
 हरषे सकल मालु कपि ब्राता । ६-६१३
 हरषे सब बिलोकि सुखकंटा । ३-११११३
 हरषे हटयै हेतु पहिचानी । १-३०६३
 हरषेउ बायस सहित समाजा । ७-६२६
 हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा । १-१२०८
 हरहु नाथ करि जन पर छोहू । १-४५११
 हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी । १-१०७४
 हरहु नाथ मम संकट भारी । ५-२६३४
 हरि आनन मैं करि निज माया । १-१६८३४
 हरि आनिहु सीता जगदंबा । ६-१११५

हरि के बिंग्य बचन नहिं जाहीं । १-१२३
 हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता । ७-७३३
 हरि गुन सुनहिं निरंतर तेज । ७-५२२
 हरि जन इव परिहरि सब आसा । ४-११११
 हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं । १-१६१११
 हरि तजि होहिं द्विष्य अनुरागी । ३-३२३
 हरि पदु रति रस बेद बखाना । १-३६११४
 हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर । ७-२४७
 हरि प्रसाद करहुँदुर्लभ नाहीं । ७-११३४
 हरि पुर गयउ परम बड़भागी । ७-२६८
 हरि प्रेरित लछिमन मन डोला । ३-२७५
 हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी । १-२०५५
 हरि बिलोकि लोचन जल छाए । ३-११११
 हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा । ७-८८४
 हरिमायाँ मोहहिं मुनि म्यानी । १-१३१७
 हरि मारग चितवहिं मति धीरा । १-१८७४
 हरि मंदिर तहैं मित्र बनावा । ५-४८
 हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा । १-४७७
 हरि लीन्हैसि सर्वसु अरु नारी । ४-५१११
 हरि सेवक अति निकट निवासी । ७-५४३
 हरि सेवक संत सही कति सो । ७-१००८
 हरि हित आपु गवन बन कीन्हा । १-१५२८
 हरितोषन ब्रत द्विज सेवकाई । ७-१०८१११
 हरिहउँ नारि जीति रन दौऊ । ३-२२६
 हरिहि देखि अति भए सुखारी । १-१४३
 हरिहि समर्थे बिनु सतकर्मा । ३-२०८
 हरी बिमल गुन गन जग जोनी । २-२१६३
 हसेउँ जानि बिधि गिरा असौँची । ६-२८२

हहरि मरत सब लोग कुरोगा । २-३१६।२
 हहिं सब कें लखि बिरलेन्ह पाए । ७-१२१।२
 हा पितु हित चित चातक जलधर । २-१५४।८
 हा रघुकुल सरोज दिन नायक । ३-२८।२
 हाँक सुनत रजनीधर भाजे । ६-४६।६
 हानि गलानि सोच बस भयऊ । २-१५२।४
 हानि लामु प्रिय मिलन बियोगा । २-१४९।५
 हाय हाय सब समा पुकारा । १-२७५।५
 हारहिं सकल सलम समुदाई । ७-११९।५
 हारे सकल बीर बरिआरा । १-२९१।५
 हारे सकल मूप करि दापा । १-२५५।३
 हारे सुर करि बिबिध लराई । १-८१।७
 हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाइ । ७-१०९।८
 हारेहुँ खेल जितावहिं मोही । २-२५९।८
 हास कुसल कल गान सुजाना । १-३०१।८
 हास बिलास लेत मनु मोला । १-२३२।५
 हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही । २-१४२।७
 हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा । २-११।५
 हित अनहित मानहु रिपु प्रीता । ५-३९।७
 हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें । ५-३५।१०
 हित निरुपधि सब बिधि तुलसीके । १-१४।४
 हित परलोक लोक पितु नाता । १-२६।६
 हित परिनाम सुनत ससि रसु से । २-३०३।७
 हित सबही कर रौरें हाथा । २-२८९।६
 हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ । १-८९।७
 हिम रिपु अगहनु मासु सुहावा । १-३११।५
 हिमगिरि निम तनु कछु एक लाला । ६-५३।१
 हिमगिरि सब कहूँ नेचत पठावा । १-९३।४

हिमगिरि संग बनी जनु मयना । १-३२३।४
 हियें हरषे तब सकल सुरेसा । १-१००।३
 हियें हरि नख अति सोमा रुरी । १-११८।५
 हियें हँसि बोले दीनदयाला । १-१३१।८
 हृदय कंज मकरंट मधुप हरि । ७-५०।२
 हृदय कंज मुख दुति कुमुलानी । १-२०४।१
 हृदय माझ तेहि मारेसि लाता । ६-९४।२
 हृदयें कंज मन धीर न होई । १-२००।६
 हृदयें चतुर्गुंज रूप देखावा । ३-९।१८
 हृदयें जमनिका बहुबिधि लानी । ७-४२।८
 हृदयें टंभ अहमिति अधिकार्इ । ७-१०४।८
 हृदयें न अति आनंदु अमाई । १-३०६।४
 हृदयें बिचारत संभु सुजाना । १-५५।६
 हृदयें बिचार करइ सबिषादा । २-१८८।२
 हृदयें भगति मति सारंगपानी । १-१८७।८
 हृदयें राखि कोसलपुर राजा । ५-४।१
 हृदयें राखु लोचनाभिरामा । ६-५५।६
 हृदयें राम माया के प्रेरे । ७-१०३।१
 हृदयें रत्न अहमिति अधिकार्इ । १-१३३।१
 हृदयें लगाइ जुड़ावहिं छाती । १-२९४।५
 हृदयें लगावत बारहिं बारा । २-४३।५
 हृदयें लाइ बहु नौति सिखाए । १-२०४।९
 हृदयें समात न प्रेमु अपारा । १-४८।८
 हृदयें सराहत बचनु न आवा । १-२२९।५
 हृदयें सराहत सीलु सुमाऊ । २-२६।८
 हृदयें सुमिरि निज प्रमु रघुराई । १-१९।४
 हृदयें हरष कपि सज्जन चीन्हा । ५-५।३
 हृदयें हरष नहिं प्रगट बखाने । १-१३०।२

हृदयें हरष नहीं भय कछु तेही । ६-१०८।६
 हृदयें हरष बीती सब सुला । ४-३।१
 हृदयें हरष माना मुनि म्यानी । १-२०७।७
 हृदि बसि राम काम मट गंजय । ७-३३।८
 हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला । १-१३०।८
 हेठ टाबि कपि मालु निसाचर । ६-७०।७
 हेतु कृसानु मानु हिमकर को । १-१८।११
 हेतु न दूसर मैं कछु जाना । २-४२।२
 हेतु नाम गुन पुन्य प्रमाऊ । २-३११।४
 हेतु रहित पसहित रत सीला । ३-४५।७
 हे कछु कपट भाउ मन माहीं । २-१८८।३
 हे कपि एक महा बलसीला । ६-२२।५
 हे तुम्हरीं सेवा बस राज । १-२०।८
 हे नहीं कतहूँ होनेउ माहीं । १-३०१।३
 हे बडि हानि अत्र जनि खाहू । १-१७२।६
 होइ अकाजु कवनि बिधि राती । २-१२।३
 होइ अचल जिमि जिव हरि पाई । ४-१३।८
 होइ अचल तुम्हर अहिवाता । ७-६।२
 होइ करे जौ देउ सहाई । १-६८।११
 होइ कि खेम कुशल सैताई । २-३४।६
 होइ ग्रीषम सोषइ सब नारी । ३-४३।२
 होइ जलट जग जीवन दाता । १-६।१२
 होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे । १-२३७।३
 होइ न तड़ित न बारिद माला । ६-१२।३
 होइ न नृपमदु भरतहि भाई । २-२३१।३
 होइ न हृदयें प्रबोध प्रचारा । १-१०।४
 होइ प्रसन्न दीजे प्रमु यह बरु । ७-३४।२
 होइ पाप गोघात समाना । ६-३१।२

होइ बारिचर बारि बिरागी । २-१६८।२
 होइ बिस्व पुनि पावइ नासा । ६-३४।७
 होइ बृष्टि जनि उपल कटोरा । ६-१२।२
 होइ सबहि बिधि अवध अनाथा । २-७०।३
 होइ सुखी जौ एहिं सर परई । १-३४।८
 होइ सुखी सब राज समाजू । २-२१३।३
 होइ सुत्रि सहज पुनीत नहाने । १-२३८।७
 होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा । ३-४३।५
 होइअ नाथ अस्य असवारा । २-२०२।५
 होइहहिं टूटें धनुष सुखारे । १-२३८।३
 होइहहिं निरखि स्वाम मृदु गाता । १-१३।६
 होइहहिं बिमल करम मन बानी । २-३०१।८
 होइहहिं सकल बिप्र बस तोरें । १-१६८।११
 होइहहिं सब पुर लोग सुखारी । १-३१०।२
 होइहउं प्रगट निकेत तुम्हारें । १-१५१।११
 होइहहु मुकुत न पुनि संसारा । १-१३८।७
 होइहि इंस्वर करिहि सहाई । १-८२।११
 होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी । १-०।३
 होइहि काजु हिऐं हरषाने । १-१३१।४
 होइहि केउ एक दास तुम्हारा । १-२७०।११
 होइहि जब कर कीट अमागी । १-५२।५
 होइहि जात गहरु अति भाई । १-१३१।११
 होइहि जातुधान पति जानी । १-१७७।३
 होइहि तिहुं पुर राम बडाई । २-३५।४
 होइहि प्रिय परिवारु दुखारी । २-१८७।५
 होइहि प्रेम विकल मति मोरी । २-६०।६
 होइहि भीर सबहि मोहिं जाना । ३-२।२
 होइहि मोह जनित दुख दूरी । ७-६१।५

होइहि रघुकुल भूषण भूषा । ७-४०१८
 होइहि सकल सलम कुल तोरा । ३-२८१७
 होइहि सत्य गएँ दिन चासी । १-१०७
 होइहि सब उजारि संसारु । १-१७६७
 होइहि संवत पियाहि पियारी । १-६६१३
 होइहि हरन महा महिनारा । १-८७११
 होइहि हृदयँ तुरत विश्राम । १-१३७१५
 होउ नात यह जोर निबाहु । ३-२३१६
 होउ नाथ अघ खग गन बधिक । ३-४११८
 होउ नास नाहि सोच हमारे । १-१६५७
 होत तरन तारन नर तेऊ । २-२९६४
 होत बिरंघि सियाहि संदेहा । १-१६०४
 होत बिलंबु उदारहि पारु । २-१००१२
 होत मोह मम हृदयँ अपास । ७-४७४
 होति प्रतीति न मोहि महतारी । २-४११६
 होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी । १-२५७७
 होहि छन्हि छन भगन बिषादा । २-१४३१२
 होहि जाहि जग बारहि बास । ६-६०७
 होहि निरामिष कबहुँ कि कागा । १-४१२
 होहि पृथक गुन सील अचार । ७-८६११
 होहिं बिषय रत मंद मंद तर । ७-१२०१११
 होहिं भरत गति तेहि अनुहारी । २-२३४४
 होहिं मुदित नृमबृद बिसेषी । २-१३७१२
 होहिं सगुन सुभ मंगल रासी । १-३३८१३
 होहिं सगुन सुंदर सुमदाता । १-३०२११
 होहिं सनेह बिकल नर नारी । २-११०१८
 होहिं सिथिल तन मन बर बानी । २-११३१८
 होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ । १-२१४

होहिं सुखी लोचन फल पाई । १-२१११३
 होहिं सुद्ध ननामि अबिनासी । ७-२३३८
 होहु तात बल सील निधाना । १-१६१२
 होहु प्रसन्न महेश भवानी । १-२५६११
 होहु सकल गुन ग्यान निधाना । ३-१०१२६
 होहु सजग सुनि आयसु मोरा । १-२५११२
 होहुँ राम सिय पूत पुतोहु । २-१४७
 हंसत राउ सुनि सहित समाजा । १-३२८७
 हंसब ठटाइ फुलाउब गाला । २-३४१५
 हंसहिं मलिन खल बिमल बलकही । १-८१२
 हंसहिं संनु गन अति सवुपाएँ । १-१३३१५
 हंसि करि कृपासिंधु तब नाथा । ६-११६४
 हंसिबे जोग हंसैं नहिं खोरी । १-८४
 हंसिहु सुनि हमारि जडताई । १-७७४
 हंसी करैहु पर पुर जाई । १-१२११

त्र

त्रसित परेउ अबनीं अकुलाई । १-१४३१८
 त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः । ३-१०११४
 त्रातु सदा नो कृपा बरुथः । ३-१०११०
 त्रातु सदा नो भव खग बाजः । ३-१०६
 त्राहि त्राहि आरत जन त्राता । ७-८२१२
 त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना । ६-८१६
 त्राहि त्राहि दयाल रघुसाई । ३-११११
 त्राहि त्राहि लछिमन रघुवीरा । ६-१५४
 त्रिजग देव नर असुर समेते । ७-८६६
 त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई । ६-१८११
 त्रिजटा सन बोली तब सीता । ६-१८१३

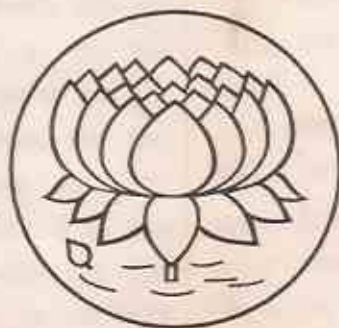
त्रिबिध जीव जग बेट बखाने । २-२०६।३
 त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह मारी । २-२३४।३
 त्रिबिध ताप भव मय दावनी । ७-१४।१
 त्रिबिध ताप भव रोग नसावनी । ६-११९।१
 त्रिबिध तापहर त्रिबिध बयारी । २-२४८।६
 त्रिबिध बयारि बसीलीं आईं । ३-३७।१
 त्रिबिध बयारि बहड़ सुख देनी । २-१३६।८
 त्रिबिध समीर सदा सुखदाता । १-२११।८
 त्रिबिध समीर सुखद सब काहू । २-२७८।४

त्रिबिध ईषना तरुन तिजारी । ७-१२०।३६
 त्रिबिध ताप भव दाप नसावनी । ७-३४।१
 त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी । १-१८८।४
 त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी । १-१०६।७
 त्रिय चडिहहिं पतिव्रत असिधारा । १-६६।६
 त्रेतीं मईं कृतजुन के करनी । ७-२२।६

ज

ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं । ३-१०।११

मानस अनुक्रमणिका मध्याक्षरी (द्वितीय खण्ड) पूर्ण



हमारे उपलब्ध प्रकाशन

● राम प्रताप

छत्तीसगढ़ी कवि संत मास्कर ब्रह्मानि गोपाल दास कृत 'राम प्रताप' ग्रंथ १४० वर्ष पुरानी पांडुलिपि का प्रकाशित स्वरूप है। विविध भाषाओं, विभिन्न छंदों तथा अनेक राग-रागिनियों से युक्त यह पुस्तक राम-काव्य परंपरा की एक महत्वपूर्ण कृति है।

पृष्ठ संख्या : ६४४

मूल्य : २०० रु.

● फिर से बनी अयोध्या योध्या

अयोध्या में श्री राम मंदिर के उद्धार हेतु चले जन-आंदोलन को अपनी ओजस्वी वाणी में अभिव्यक्त करती हुई ४२ कवियों की ४८ रचनायें।

पृष्ठ संख्या : १५

मूल्य : ३० रु.

● अमर आग है

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, वर्तमान प्रधानमंत्री के कुमारसमा पुस्तकालय में १९९४ में आयोजित 'एफएल काव्य पाठ' के अवसर पर प्रकाशित ४१ प्रमुख कविताओं का संग्रह।

पृष्ठ संख्या : ६४

मूल्य : २५ रु.

● सूरदास : विविध संदर्भों में

सूर-पंचशती के अवसर पर प्रकाशित आलोचनात्मक ग्रंथ, जिसमें देश के शीर्षस्थ विद्वानों एवं लेखकों के आलेख संकलित हैं।

पृष्ठ संख्या : ३८६

मूल्य : १०० रु.

● बड़ाबाजार के कार्यकर्ता : स्मरण एवं अभिनंदन

कलकत्ता महानगर के पिछले १५० वर्षों के कालखण्ड में कर्मरत लगभग ७०० साहित्यकारों, कलाकारों तथा सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं का इतिवृत्त।

पृष्ठ संख्या : ४३८

मूल्य : १०० रु.

● महान विप्लवी चिन्तानायक सावरकर (बंगला)

स्वातंत्र्यवीर सावरकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बंगला भाषा में एक प्रामाणिक कृति।

पृष्ठ संख्या : २८४

मूल्य : २५ रु.

● महाप्राण निराला : पुनर्मूल्यांकन

जन्मराती के अवसर पर हिन्दी के कालजयी साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साहित्य पर देश के ३४ शीर्ष विद्वानों के आलेखों वाला

۱۰۰